वंश भास्कर

(सप्तम खण्ड)

[बारहठ श्री कृष्णसिंह विरचित उदधि–मंथिनी टीका सहित]

मूल लेखक :

सूर्य मल्ल मिश्रण

सम्पादक

स्वर्गीय पंडित रामकर्ण आसोपा

भूतपूर्व प्राध्यापक

इतिहास विभाग

कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता

एकाधिकारी वितरक

बाफना बुक डिपो

चौड़ा रास्ता, जयपुर–३

एकाधिकारी वितरक

बाफना बुक डिपो

चौड़ा रास्ता, जयपुर-३

मुद्रक

प्रताप प्रेस

जोधपुर।

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

अथ उम्मेदसिंहचरित्रप्रारम्भः ॥

॥ चूलिका पैशाची भाषा ॥

॥ गीतिः ॥

तुसटकतनपलपञ्जो हवति सता य्येव पीतपङ्गुरनो ॥
स्ता पउमाए सन्तलपामङ्गो खां नमिय्यते तेवो ॥ १ ॥
सम्फुं कन्तप्पहलं चराडीसं कजमुहं कनाधिपतिं ॥
तन्तून फारतिं मं करेमि अथउत्तलत्थकं कंथम् ॥ २ ॥

गीर्वाणभाषा ॥ अनुष्टुप्युग्मविपुला ॥

वन्देऽस्मद्दीपवप्तारं चराडीदानं महामतिम् ॥
त्रैगुण्यतिमिरध्वंसं विद्यावाग्भूषिताननम् ॥ ३ ॥
बुधसिंहेऽथ बुन्दीन्द्रे प्रयाते पञ्चतत्वताम् ॥
सूनुरुम्मेदसिंहोऽस्याऽभिषिक्तोऽभून्महामनाः ॥ ४ ॥
पक्षनवाद्रीन्दु १७९६ संख्याब्दे विक्रमान्दोत्तरायणे ॥
वसन्ताऽर्जुनवैशाखे त्रयोदश्यां १३ नरेन्द्रता ॥ ५ ॥

दुष्टकदनपरमाङ्गो भवति सदा एव पीतप्रावरणः ॥ स पद्मया सुन्दरवामाङ्गो ननु नम्यते देवः ॥ १ ॥ शंभुं कन्दर्पहरं चराडीशं गजमुखं गणाधिपतिम् ॥ नत्वा भारतीं अहं करोमि अथोत्तरस्थकं ग्रन्थम् ॥ २ ॥

लक्ष्मी सहित सुन्दर है वाम अंग जिनका और सदैव पीत वस्त्रवाला, बुद्धिमान् निश्चयही दुष्टों के नाश में तत्पर होता है, उस देव को मैं नमस्कार करता हूँ ॥ १ ॥ चंडी के पति, कामदेव को नाश करने वाले, शिव को और गज के मुखवाले गणपति (गणेश) को और सरस्वती को, मैं नमस्कार करके पिछले पीछे ग्रन्थ करता हूं ॥ २ ॥ विद्या और वाणी से शोभायमान है मुख जिनका, त्रिगुण रूपी अन्धेरे के सूर्य, बड़े बुद्धिमान्, मेरे पैदा करने वाले (पिता) चंडीदान को नमस्कार करता हूं॥३॥अब बुधसिंह का देहांत होने पर उनका पुत्र महात्मा उम्मेदसिंह अभिषिक्त (राजा) हुआ ॥ ४ ॥ विक्रम के सत्रह सौ छिनवे १७९६ के संवत् के जाने पर उत्तर अयन में वैशाख सुदि तेरस के दिन वह उम्मेदसिंह राजापन को प्राप्त हुआ ॥ ५ ॥ (ज्योतिष में

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ मलम्बकम् ॥

*पानिग्गहन चउ४हि करि पाये†सुत पंचक५‡उम्मेद१९८४सधीर
उभय२खवासि तहाँ इक §औरस सुत दुव२दुव२हि¶सुतासम सीर
प्रथम१०व्याह झल्ला दलपतिकी तनया गर्गराटपुर थान ॥
क्रमनंबरात पहुँचि अभिधा करि चिमनकुमारि१९८।१परन्यो चहुवान६
दूजी२रासि नगर पति दुहिता नव बय कुंदनकुमारि१९८।२सनाम ॥
ऊदाउति रट्ठोरिं बरी इम करि बखतेस स्वसुर जस काम ॥
बखतकुमारि१९८।३ईडरेची बलिं जुग२कर जुग२ अंचल जुग२जोरि
परनी ईडर भूप पितृव्यक रामसुता तीजी३ रट्ठोरि ॥ ७ ॥
अजितसिंह ईडर पहु पुत्री क्रमचोथी४ तिम उदयकुमारि१९८।४ ॥
विजय नरेस जोधपुर बुल्लि रु व्याही नृपहिं सनेह बिथारि ॥
तनय बड्डो१इनमें तीजी३में संजव मरयो सु१९९।१न भो तस नाम
पुनि सुत हुव दूजी२ पतनीके अजितसिंह१९९।२दूजो२अभिरामा८।
तीजो३तनय बहादुर१९९।३तासहि क्रम सोदर ए दुव२हि कुमार ॥
पुत्र दुव२हि चोथी४पतनीके सुत चोथो४तिनमें सरदार१९९।४ ॥
पुत्र त्रिलोकसिंह१९९।५हुव पंचम५ सिसु बय हुव तासहु अवसान॥
सुनहु खवासि रूपरसराय१ रु अपर२ गुमानराय२अभिधान ॥ ९ ॥
दूजी२के संतति चउ४विधि दिय सुत सिवसिंह१तथा संग्राम २ ॥

सम्वत् को गत मानते हैं, वर्तमान नहीं मानते) * विवाह † पांच पुत्र पाये ‡ धीरज वाले उम्मेदसिंह ने § विवाहिता स्त्री के उदर से ¶ दो पुत्रियें १ शीलवाली २ पुत्री ३ सुन्दर ४ नाम (संज्ञा) करके ॥ ६ ॥ ५ पुत्री ६ नवीन अवस्थावाली ७ पुनि ८ दोनों हाथ ९ दोनों वस्त्र जोड़कर १० ईडर के पति के काका रामसिंह की पुत्री ॥ ७ ॥ ११ प्रभु (राजा) १२ राजा विजयसिंह ने जोधपुर बुलाकर १३ पुत्र १४ जन्मा सो १५ शीघ्र मर गया १६ स्त्री के १७ सुन्दर ॥ ८ ॥ १८ उस सहित अथवा उसी स्त्री के १९ सहोदर (सगेभाई) २० अन्त २१ दूसरी २२ नाम ॥ ९ ॥ २३ ब्रह्मा वा भाग्य ने

अनिरुद्धकुमारि१बडी१अरु*अनुजा२सुता भई ब्रजकुमरि२सनाम ॥
जेठी१जनक२ दई जयसिंह३हिं जामाता४ जदुकुल सम५ जानि ॥
सुत तस सप्त६राजसिंहा१दिक प्रकट भये कुल निय७ति प्रमानि१०
दूजी२सुता जैतसिंह१२हिं दिय तकि सम कुल रट्ठोर सतेज ॥
नवलसिंह१ताकै इक१नंदन भयो प्रकट हड्ड९१न भानेज ॥
दीपसिंह१९८।६इत भूप सहोदर दिय जिहिं थान कापरनि१०ग ॥
भये बिबाह तास खट भावी सुव इक१दोइ२सुता बिधिसंग ॥११॥
अनुपमकुमरि१९८।१बडी१ठकुराइनि११सावर दीपसिंह१९८।६हित सत्थ
इंद्रसिंह तनया सगताउति सील१चरित२गुन३रूप४समत्थ ॥
अरु उम्मेदकुमरि१९८।२गागरनी दूजी२ अभय सुता रट्ठोरि ॥
तीजी३तिय ईडरपति तनया गदित१२ भवानकुमरि१९८।३गुन गोरि१२
जादव सोनपाल तनया जिम फतैकुमरि१९८।४चोथी४निज नारि ॥
नृप सामंत सुता रूपनगर क्रम पंचम५सु किशोरकुमारि १९८।५ ॥
परनाई जु पितृव्य१३ बहादुर यह रट्ठोरि कृष्णगढ आसु१४ ॥
१५क्रमि सीहोर छठी६अमर कुमरि१९८।६सगताउत्त अमान सुतासु१३
अजित सुता तीजी३ तिय इनमैं अग्रजकी साली जुहि१६ आस ॥
सुत जेठो१सुरतानसिंह१९९।१हुव तनया चंद्रकुमरि१९९।१हुव तास
तिय चोथी जद्दोनि जनी तिम दूजी२सुता बिचित्रकुमारि२ ॥
परिनाई जयनैर प्रतापहिं सो श्रीजित१८ श्रुति१९ बिधि अनुसारि ॥१४॥
अधिपति१को रु अनुज२को२० अक्खिय इहाँ बिबाह१प्रजा२क्रम एस

* छोटी१पुत्री२पिता उम्मेदसिंह ने३जयसिंह को४जमाई५समान (बराबरीवाला) ६राजसिंह आदि ७ भाग्य के अनुसार ॥ १० ॥ ८ पुत्र ९ उम्मेदसिंह का छोटा भाई १० आगे आने वाले समय में ॥ ११ ॥ ११ नगर का नाम है।१२ ईडर के पति की पुत्री जिसका नाम भवानकुमरी कहते हैं ॥ १२ ॥१३जिसका विवाह काका बहादुरसिंह ने किया १४ शीघ्र १५ जाकर ॥ १३ ॥ १६ उम्मेदसिंह की साली १७ है१८बुन्दी का राज्य छोडकर वानप्रस्थ हुए पीछे उम्मेदसिंह ने अपना पद (खिताब) श्रीजित (लक्ष्मी को जीतनेवाला) रक्खा था १९ वेद की विधि के अनुसार ॥ १४ ॥ २० उम्मेदसिंह को

जो सब प्रभु[1] भावी[3] विधि जानहु वर्त्तमान[2] अब सुनहु विसेस ॥
पाइ जनक पट्टहिं दुर्गत पन करि जो जो दुष्कर रन काम ॥
पुहवि लई[1] रु दई[2] जिम पुत्रहिं रोचक सकल सुनहु प्रभु राम[4] २०३।१४

॥ दोहा ॥

पन[5] पटु रन[2] पटु वचन[3] पटु, बार बरस दस[10] वेस ॥
बैठि तखत बुधसिंहकै, हुव उम्मेद नरेस ॥ १६ ॥

॥ हरिगीतम् ॥

कोटेस दुर्जनसल्ल यह सुनि सोचि कछु हित हेरयो ॥
बखतेस पृथ्वीसिंह सुत द्विज वंधु बेघम प्रेरयो ॥
तिहिं खग्ग[6] निज कर वंधि अो नृप भाल[7] तिलकहु मंडयो ॥
नजरि रु निछावरि ठानिकैं निज थान परिखद बैठयो॥ १७ ॥
तिमही पुरोहित व्यास चारन भट्ट नजरि निवेदई ॥
भट वर्ग पुनि कछु हे जिन्हैं इम भप भूपतितां[10] लई ॥
गोस्वामि गोपिपनाथ नृप नव लैन मंत्रहि[11] बुल्लये ॥
करि नाँहिं आयउ नाँहिं जे जयसिंहके[12] भय भुल्लये ॥ १८ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

कुम्मँ दलेलैं[13] कानि वँसु[14] कामी, गोपिपनाथ नटिय गोस्वामी ॥
कहिय मैं न कोटापुर छोरौं, दिन चँउ[4] मास[15] कितहु नहिं दोरौं १९
यह सुनि पुर बेघम नृप माता, बिपति स्वीय लखि नीति बिधाता
पुनि बिन्नति पठई कोटा पुर, धारक तँहँ रामानुज मत धुर॥२०॥
द्विज नागर उपपद सहोदर, बेगागाम सनाम भट्ट वर ॥
पठयो दँल[16] चुंडाउति तिन प्रति, तुम समदिठि[17] गिनहु सेवक तँति[18]

१हे प्रभु रामसिंह २दरिद्रपन में ३रुचिकारक ४हेप्रभु रामसिंह॥१५॥ ५ प्रतिज्ञा में चतुर॥१६॥६खड्ग ७ललाट ८सभा में बैठा॥१७॥९उनने भी नजर न्यौछावर की १०राजापन ११गुरु मंत्र लेने को बुलाया॥१८॥१२कछवाहा (जयसिंह) १३ बुन्दी का वर्तमान राजा दलेलसिंह के भय से १४धन की कामनावाला १५चौमासे के दिनों में ॥ १९ ॥ २० ॥१६पत्र १७ समदृष्टि १८सेवकों की पंक्ति में ॥ २१ ॥

मम सुत कालिह सत्रु निज मारहिँ, बुंदिय अप्पन आन बिथारहिँ॥
जो यह नियति जोग नहिँ पावहिँ, तोपै तुमहिँ सदा सिर लावहिँ२२
जो तुम मंत्र दैन हित हेरहु, तो आवहु पुत्रहिँ वा प्रेरहु ॥
वेणिपराम सोधि यह बत्ती, बिरचि अनुग्रह जानि बिपत्ती ॥ २३ ॥
दैन मंत्र पठयो बेग्रम द्रुत, श्री गोविंद नाम जेठो सुत ॥
तिहिँ आय रु उपदेस मंत्र दिय, नृप उमेद सानुज सिच्छा लिय२४
चहि बुंदिय पति भक्ति धर्म चित, गेह रु देह निवेदिय गुरुहित ॥
श्रद्धामय अर्पित गहि भूँसुर, पुनि फिरि सिक्ख गयउ कोटा पुर२५
गहिय जबहि बुधसिंह मरन गति, उदयनैर हो तब वेग्रमपति ॥
अब ईस मास माँहिँ वह आयो, उर जार्मासैं सोक अकुलायो॥२६॥
नयन श्रॅवत जलधार निरंतर, आँधि अतुल छिज्जत अँसु अंतर॥
सुद्ध भूँसम पूजन मसान किय, अरु स्वर उच्च टेरि यह अक्खिय२७
बिनु सेवक तुम त्वरा बिचारी, करिहौं मैं सेवन द्रुतकारी ॥
इम कहि देवसिंह गृह आयउ, लालित जामि तैनय हिय लायउ२८
अजितसिंह मरुईस अग्ग मृत, सुत सप्तक७ हे तास कलुख कृत
हो दिल्लिय पट्टप नैय हीनों, तदनुजैं बखत जनक जिय लीनों२९
पंच५ हुते तासों लघु भाई, उनकों कैद करन मति आई ॥
भाजे सुनत कितेक महा भय, डारे कैद कितेकन निर्दय ॥ ३० ॥
रायसिंह१ आनंद२ भ्रात दुव२, ईडरपुर अधिराज जाय हुव ॥

१भाग्य के योग से २ तो भी ॥ २२ ॥ ३ अथवा तुम्हारे पुत्र को भेजो ४बार्ता ५ आपदा जानकर ॥ २३ ॥ ६ शीघ्र ७ छोटे भाई सहित शिक्षा ली ॥ २४ ॥ ८ अर्पण किया सो लेकर ९ वह ब्राह्मण ॥ २५ ॥ १० आश्विन मास में ११ पद्मिन के पति के ॥ २६ ॥ १२ बहती हुई १३ मन की पीड़ा से १४ भाग १५ बुधसिंह की मरघट का ॥ २७ ॥ १६ शीघ्रता की १७ शीघ्रता करनेवाला अर्थात् मैं भी शीघ्र [illegible] तुम्हारे [illegible] करूँगा १८ लाड करके १९ भानजे को ॥ २८ ॥ २० पाप करनेवाले २१ [illegible]वाले २२ इसके छोटे भाई बखतसिंह ने २३ पिता को मारा ॥ २९ ॥ ३० ॥ २४ ईडर के पति होगये

इक१ईडर तजि मालव आयो, जोर मँहँदपुर अमल जमायो।३१।
यह सुनि आनि लगे दक्खिन दल, काढ्यो वह रट्ठोर बंधि बल॥
आतुर पुर बेघम तब आयो, देवसिंह अति मोद दिखायो ॥ ३२ ॥
रुप्पय पंच५नित्य तँहँ दैकरि, धन्वपं भ्रात रक्खि लिय हित धरि ॥
तदनंतर सक खट नव सत्रह१७९६, अगहन मास बिसदं पंचमि ५ अह्न ॥ ३३ ॥
बेघमपति देवहु वपु छोरयो, जिहिँ जसहेत कँपर्द न जोरयो ॥
पट्ट सु दुनियसिंह तस पायो, रान सुनत हिय लोभ रचायो॥३४॥
ताके सिर दुवलक्ख२०००००द्रम्म किय, बलि लिय तबहिँ उदैपुर बुल्लिय ॥
रस नव सत्त इक१७९६ मित बच्छर, बिसंद माघ मासगं पंचमि ५ पर ॥ ३५ ॥
दुनियसिंह गय रान सभा जब, अद्वरि रान समुख आयउ तब ॥
दंड लियउ वहँ दोस दबावन, अक्खिय रान कियउ मैं पावन ३६
इम कहि तिलक भाल तस कीनौं, अच्छत मुत्तिय मंडि नवीनौं ॥
निज हत्थहि तरवारि बँधाई, सयनं जोरि कहि मेघँसिवाई ॥३७॥

॥ दोहा ॥

नाम सिवाईमेघ तस, कहिय रान कर जोरि ॥
पुर बेघम करि सिक्ख पुनि, वह आयउ मन मोरि ॥३८॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशौ भूभृ-

॥ ३१ ॥ १ सेना ॥ ३२ ॥ २ मारवाड़ के पति के भाई को ३ जिसपीछे ४ शुक्ल पच्च ५ दिन ॥ ३३ ॥ ६ देवसिंह ने भी शरीर छोड़ा ७ कोडी भी इकट्ठी नहीं की ॥ ३४ ॥ ८ फिर ९ सम्वत १० सुदि ११ माघ मास में गई हुई ॥ ३५ ॥ १२ दंड लिया जिस दोष को दबाने के लिये ॥ ३६ ॥ १३ मोतियों के आखे चढ़ाकर १४ हाथ जोड़कर १५ सवाई मेघसिंह नाम रक्खा॥३७॥३८॥

श्री * वंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में, भूपति उमेद

* यहां पर हमको उम्मेदसिंह चरित्र और अजितसिंह चरित्र के मयुखों की इतिश्रियें ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल)

दुम्मेदसिंहाऽभिषेचनवल्लभसम्प्रदायशिक्षानमिलनश्रीरामानुजशि-क्षाप्रापणबेघमपतिदेवसिंहमरणदुर्नीसिंहतत्पीठोपवेशनासिवाईमेघ नामभवनं प्रथमो १ मयूखः ॥ १ ॥ ॥ २३८ ॥

मायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहादिवृत्तोत्पादिनीचूलिआला ॥

इत बेघम बुंदीस अब, वय दस१० *हायन मान बिराजत ॥
हय बिद्या सिक्खत हुलसि, नय[†] दम[?]धर्म निधान बिराजत ।१।
तोमर असि[१] पट्टिस[२] तुपक्क, चापन[३] सायक चंड चलावत ॥
खुरली[४] बिनु बित्तैं खिन न, मन,जाको ब्रह्मंड न मावत ॥२॥
ब्रह्ममुहूरत[५] जग्गि बलि, संध्या न्हावन आदि सुधारत ॥
सावित्री[६] जप इक सहँस१०००, अरु हरि नाम अनादि उचारत३
ब्रत संजम[७] उपवास बिधि, इक १ न टारत अप्प इलापति[८] ॥
सच्चीमैं हित अनुसरैं, गिनैं न मूढन गप्प महामति ॥ ४ ॥
स्वीयजनक[९] बुधसिंह सठ, अति आसव[१०] अधिकार उपायो ॥
सो मग करि उच्छिन्न[११] सब, वैष्णव धर्म बिचार बढायो ॥५॥
हरिपूजन नति[१२] जुत हुलसि, बिधि सह खोड़स १६ अंगबनावैं[१३]॥

सिंह का अभिषेक होकर बल्लभसंप्रदाय की शिक्षा नहीं मिलने के कारण श्रीरामानुज संप्रदाय की शिक्षा लेना १ बेघमनगर के पति देवसिंह का मरना २ उसकी गद्दी पर बैठकर दुर्नीसिंह का सवाई मेघ के नाम से प्रसिद्ध होने का प्रथम १ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ बियासी २८२ मयूख हुए ॥

* दश वर्ष के प्रमाणवाली अवस्था † नीति और दंड ? शोभायमान ॥ १ ॥ १ कटारी ३ धनुषों से भयंकर बाण ४ शस्त्राभ्यास के बिना ॥ २ ॥ ५ चार घड़ी रात्रि बाकी रहे ६ गायत्री के ॥ ३ ॥ ७ इन्द्रियों का रोकना ८ भूपति ॥ ४ ॥ ९ अपने पिता १० मद्य का ११ उस मार्ग को उखाड़कर अर्थात् बुधसिंह के वाममार्ग को छोड़कर ॥ ५ ॥ १२ नम्रता सहित १३ सौलह अंगों सहित

की कोईई मिलगई हैं जिनका भाषानुवाद करके आगे विष्णुसिंह चरित्र और रामसिंह चरित्र की इतिश्रि-ये नवी बनावेंगे ॥

पंच५जज्ञ करवाए पुनि, लघुभोजी[1] मन जंग लगावैं ॥ ६ ॥
भारत स्मृति पुनि भागवत, बेद बचन धरि चेत बिचारैं ॥
मृगया[2] रस रत्तो मुदित, सिंहन स्वकुल[3] समेत बिडारैं ॥ ७ ॥

॥ पज्झटिका ॥

उम्मेदनृपति बुधसिंह पट्ट, दस१० अब्द बेस[4] अति छक उछट्ट ॥
अरु मंजु[5] बालससि[6] जिम अनूप, भल बैन सबन मन हरत भूप।८।
कर्कादि[7] निसा मकरादि[8] दीह, इम बढत रक्खि भुव लैनईह[9] ॥
तिम सारदूल[10] सिसु निस रु द्यौस, हत्थीन हनन मन धरत हौंस[11] ९
इम नृपहिं लैन बुंदिय उमंग, आयुध समस्त सज्झत अभंग ॥
बुधसिंह सुतहिं सुनि इम समत्थ[12], सब मिलिय आनि भेंट[13] सचित्र सत्थ ॥ १० ॥
धरि सबहि महासिंहोत धर्म, भृत्या[14] बिनु अद्दरि भृत्य कर्म ॥
जे बीर रहे नृप पास जाय, पति आधिपत्य[15] चिंतत उपाय ॥ ११ ॥
इम भुप बढत दिन दिन अमान[16], अवनी[17] निज लेबेकौं उफान ॥
इहिं बेरहिं दौलतसिंह रंच, हरदाउत हड्डा किय प्रपंच ॥ १२ ॥
नृप अनुज दीपसिंहाभिधान[18], किय तास पृथक परिखेद[19] बिधान ॥
बहु नरन फोरि अप्पिय बिसास, पुनि यह नृप माता हुव सत्रास१३
सुखसिंह महासिंहोत बुल्लि[20], अक्खिय सुलाह[21] गति समय खुल्लि ॥
मम पुत्र हुवरहि अब बय[22] महंत, चैंल[23] सुभट इनहिं फोरन चहंत१४

पूजन करता है १ लघुभोजन करना वीरता का सूचक है ॥ ६ ॥ २ शिकार के रस में प्रीति करके ३ उनके कुल सहित ॥ ७ ॥ ४ दश वर्ष की उमर में ५ मनोहर ६ द्वितीया के चन्द्रमा के समान ॥ ८ ॥ ७ कर्क संक्रांति के आदि से रात्रि बढै जैसे ८ मकर संक्रांति के आदि से दिन बढै जैसे ९ इच्छा से १० जैसे सिंह का बचा ११ चाहना ॥ ९ ॥ १२ समर्थ १३ उमराव ॥ १० ॥ १४ तनखा अथवा जागीर (वेतन) विना ही १५ भूपति होने का ॥ ११ ॥ १६ अमाप १७ अपनी भूमि ॥ १२ ॥ १८ नाम १९ उस दीपसिंह की जुदी सभा करने लगा ॥ १३ ॥ २० बुलाकर २१ सलाह कही २२ अवस्था में बडे होगये हैं २३ चंचल

हम गेह हुती जो राजरीति, आपत्ति सु पै पलटी अनीति ॥
छोटे रु बडे बैठै समस्त, अंजलि[1] बिनु बुल्लत तिन्ह अत्रस्त[2]।१५।
दोलतसिंह सु बिग्रह बढात, दुवबंधुन बिच अंतर दिखात ॥
ऐसे भट बहु बिरचत अकाज, तस्समात[3] हमहिँ यह उचित आज१६
धारत तुम नय जुत[4] स्वामि धर्म, बिस्वासहु तुमरो भक्ति बर्म[5] ॥
यातैं समस्त ऐसे निकासि, बलि[6] लेहु सुद्ध हृदयन बिसासि।१७।
रहिहैं समस्त जो राजरीति; तो हमहिँ बढन व्हैहैं प्रतीति ।
सुखसिंह महासिंहोत बीर, धरि हिय यहैहि किय धर्म धीर॥१८॥
दोलतसिंहादिक वे दुर्बुद्धि[7], सब दिय बिडारि[8] किय रीति सुद्धि ॥
नृप[9] मातहिँ पुनि अक्खिय निदान, स्वनिलय[10] निबाह चिंतहु सु-
जान ॥ १९ ॥
जयसिंह गिनहु अति उग्र जोर, दिल्ली रु दक्खिनहु सहत दोर[11]॥
तस्मात[12] हमहिँ इक मंत्र आय, नृप अनुज[13] हेत बिरचहिँ उपाय२०
जगतेस रान सन यह निवेदि, कछु लेहु पटा भट तास भेदि[14] ॥
सुनि यह नरेस जननी सुभाय, अब रान हिंतु[15] चिंतिय उपाय।२१।

॥ दोहा ॥

इत मरुपति अभमल्ल नृप, सजि अनीक[16] अमान[17] ॥
बीकानैर अधीस सन, चिंतिय लरन पयान ॥ २२ ॥

॥ षट्पात् ॥

नृप अनंद अभिधान अग्ग बीकानैर पै[18] स्तत ॥
तब काका सुत तास भटन गजसिंह भूप कृत[19] ॥

॥ १४ ॥ १ हाथ जोड़े विना २ निर्भय होकर बोलते हैं ॥ १५ ॥ ३ इस कारण से ॥ १६ ॥ ४ नीति सहित ५ हे भक्ति के कवच ६ पुनि ॥ १७ ॥ १८ ॥ ७ दुर्बुद्धि ८ निकाल दिये ९ उम्मेदसिंह की माता को १० अपने घर का ॥ १९ ॥ ११ फैलाव १२ इसकारण से १३ उम्मेदसिंह के छोटे भाई के अर्थ ॥ २० ॥ १४ उनके किसी उमराव को मिलाकर १५ से ॥ २१ ॥ १६ सेना १७ प्रमाण रहित ॥ २२ ॥ १८ पति १९ उमरावों ने गजसिंह को राजा बनाया.

यह इक्क नव हय इंदु १७९१ भयउ जंगलधर भूपति ॥
अब हय नव मुनि इंदु १७९७ मरुप[1] तिहिं लरन किन्न मति ॥
यह सुनि नरेस गजसिंह अब कूरमपति[2] प्रति पत्र दिय ॥
हरि[3] गज सहाय तिम तुम हुलासि मम सहाय रक्खहु महिय[4] २३
सुनि यह नृप जयसिंह रान[5] अरु अप्प इक्क बनि ॥
पठये दोउन२ पत्र सजव[6] मरु देस क्रोध सँनि ॥
इन्ह तुम गिनि अंकस्थ[8] बिभव निज करन बिगारत ॥
उचित नीति नन एह मूढबनि बंधुन मारत ॥
इत रूपनगर[9] उत वहँ[10] अतुल दुरग जोधपुर पंच्छ[12] दुव२ ॥
बिनु पच्छ गिद्ध संपाति बिधि धरिहो नहिन उडान ध्रुव।२४।
यह कग्गर[13] दुत बचि मरुप नैंकनमन्नैं मन ॥
अक्खी स्वसुर[14] असंक रानजुत[15] बनत किंत्ति[16] धन ॥
सुभट[17] मोर गजसिंह ताहि क्यों नहि समुझाऊँ ॥
मैं[18] गुज्जर धर जैतवार[19] अरि गरद मिलाऊँ ॥
यह कहि कबंध लै दल[20] अतुल बीकानैरहिं बिंटि लिय ॥
तरकाव ताव तोपन तपिय मनहुँ दाव तिंदुन[21] मचिय ॥२५॥
जिम दंतन बिच जीहँ[22] इंच्छु[23] जिम जंत्र अरोहितैं[24] ॥
इम आतुर गजसिंह मन्नि संकट हुव मोहितैं[25] ॥
सुनि आरति[26] जयसिंह कुंच जैपुर सन किन्नों ॥

१मारवाड़ के राजा ने २जयपुर के राजा जयसिंह के नाम ३जिसप्रकार विष्णु भगवान ने गज की सहाय की तिसप्रकार मेरी सहाय करके ४भूमि रक्खो॥ २३ ॥ ५महाराणा और आप एक बनकर ६ शीघ्र ७ क्रोध में भीजकर ८ गोद बैठे हुए जानकर ९ किसनगढ की प्राचीन राजधानी का नाम है १० बीकानेर ११जोधपुर के गढ की१२दोनों पांखें हैं ॥ २४ ॥१३पत्र१४मेरा श्वशुर (जयसिंह) १५ उदयपुर के राणा सहित हुआ तोभी१६क्या धन है१७मेरा उमराव१८गुजरात की भूमि को १९ जीतनेवाला हूं २० सेना२१तींदू वृक्ष विशेष जिसकी लकड़ी जलाते समय अग्नि कण बहुत उडते हैं ॥ २५ ॥ २२ जिव्हा २३ इक्षु (गन्ना) २४ चरखी में चढाया २५ मूर्छित (घबराया) हुआ २६ पीड़ा के वचन

बुल्ल्यो रानहु बेग लैन मरुधर पन किन्नौं ॥
दरकुंच चलिय कूरम दुसह खंड चउद्दह१४खलभलिय ॥
सुरलोक वत्त फुट्टिय सहज किहिँसिर कूरम कोपकिय २६
नागराज[1] फन फटिय कमठ रीढक[2] बरगक्किय ॥
वसुधा[3] भर बिद्दरिय मनहुँ दारिम[4] दररक्किय ॥
रवि लुक्किय[5] रज मेघ दान दिग्गज़ गन सुक्किय ॥
मग रुक्किय पवमान[6] तान अच्छरि चकि चुक्किय ॥
अतुलित[7] अनीक जयसिंह इभ जाय रु बिंटिय जोधपुर ॥
रानहु प्रयान यह सुनि रचिय प्रबल सेन हंकत प्रचुर[8] ॥२७॥

दोहा-बिंटयो कूरम जोधपुर, जोरयो तोपन जाल ॥
मनहुँ भगाली[9] दच्छमँख[10], किन्नौं समय कराल ॥ २८ ॥
सुनि मरुपति अभमल्ल यह, सत्थ अलपतम[11] सज्जि ॥
बल बदलि आधी निसा, पैठो निजपुर भज्जि ॥ २९ ॥
इत कूरम नागोर पुर, दिन्नौं पत्र पठाय ॥
बखतसिंह आवहु तुम्हैं, दैहैं तखत बठाय ॥ ३० ॥
हेरतहो बखतेस यह, भज्यो त्वरित[12] तजि भौन[13] ॥
जिहिं सठ जनक[14] निपात किय, भ्राता तिहिं चित कौन ३१
सजवँ[15] आनि जयसिंहसौं, मिल्यो मूढ भुव लोभ ॥
मरुपति हिय यह सुनि अमित, छयो अनुज सिर छोभ[16] ॥ ३२ ॥
जान्यौं अग्गहि[17] कुंम्म यह, उभय लक्ख २००००० चतुरंग[18] ॥
पीछैं आवत गन पुनि, सहँस असी ८०००० दल संग ॥ ३३ ॥

॥ २६ ॥ १ शेष नाग के २ पीठ ३ भार से भूमि ऐसी विदीर्ण हुई ४ मानों दाड़िमवृक्ष का फल फटा. रज रूपी मेघ से सूर्य ५ छिपा ६ पवन का ७ अतोल सेना से ८ बहुत ॥ २७ ॥ ९ शिव ने १० दक्ष प्रजापति के यज्ञ में ॥ २८ ॥ ११ थोड़ा साथ सझकर ॥ २९ ॥ ३० ॥ १२ शीघ्र १३ घर छोडकर १४ जिस दुष्ट ने पिता को मारडाला उसके लिये भाई कौन बात है ॥ ३१ ॥ १५ शीघ्र १६ क्रोध ॥ ३२ ॥ १७ यह जयसिंह १८ सेना ॥ ३३ ॥

जित्तैं बिनु नहिं जीवनौं, अरु जित्तन बहु दूर ॥
ध्रुवहि अनुज सिर छत्र धरि, जैहैं स्वसुर जरूर ॥ ३४ ॥
यातैं नतिही[1] उचित अब, मंगैं सुहि दै दम्म[2] ॥
कूरम कुंच कराइये, कछुदिन जीवन कम्मं[3] ॥ ३५ ॥
स्वसुर पितासम निगम[4] मत, अरु सुत सम जामात[5] ॥
यहै गली[6] अब कहिकैं, भुव रक्खहिं निज हात ॥ ३६ ॥
कूरम प्रति कहि मुक्लिय[7], इम बिचारि अभमल्ल ॥
वंदनीय[8] तुम स्वसुरहो, हम करैं न रन हल्ल ॥ ३७ ॥
जो मंगहु सो देहिंगे, लै जावहु निज गेह ॥
मम सोदर[9] सठ फोरिकैं, अनुचित करहु न एह ॥ ३८ ॥

॥ षट्पात् ॥

नृप कूरम बाईस लक्ख२२०००००रुप्पय तब मंगिय ॥
इक्खि[10] समय मरुईस[11] अखिल रुप्पय किय अंगिय[12] ॥
रट्ठोरन यह जानि बहुत बरज्यो मरु भूपति ॥
दम्म इते क्यौं देत मरन मंडहु निसंक मति ॥
सचिवन तथापि[13] अभमल्लसौं दंड दैन अक्खिय उचित ॥
सो सब कबंध[14] स्वीकार किय देस काल निब्बल[15] दुचित३९

॥ दोहा ॥

कूरम तब जामात[16]कौं, नमितजानि इम साफ ॥
निज तनयाकौं चोलि[17]मैं, तीनलक्ख३०००००किय माफ४०
सेस[18] लक्ख गुनहगार[19] रहि, तिनमैं बहु भरि लिन्न ॥

॥ ३४ ॥ १ नम्रता २ रुपये ३ जीने के काम से; अथवा जीवन से काम है ॥ ३५ ॥ ४ वेद के मत से ५ जमाई ६ मार्ग ॥ ३६ ॥ ७ अभयसिंह ने ८ नमस्कार योग्य ॥ ३७ ॥ ९ मेरे सगे भाई को ॥ ३८ ॥ १० समय देखकर ११ मारवाड़ के पति ने १२ सब रुपये स्वीकार (मंजूर) किये १३ तोभी १४ अभयसिंह ने १५ निर्बल ॥ ३९ ॥ १६ जमाई अभयसिंह को १७ अपनी पुत्री को कांचली में ॥ ४० ॥ १८ बाकी के

अवसेसन[1] हित ओलिमैं[2], निज प्रधान उन दिन्न ॥ ४१ ॥
रतनसिंह अभिधान[3] यह, मरुपति सचिव सुभाय ॥
दर्म[4] के लक्खन दम्मलै, कूरम डेरन आय ॥ ४२ ॥
बट्टेके रुप्पय निरखि, पुनि किय कूरम रोस ॥
रतनसिंह तब उच्चरिय, देहु न नाहक दोस ॥ ४३ ॥
जैसे रुप्पय जोरकरि, हमतैं छिन्नत हाल ॥
तैसेही तुम दीजियो, हमकौं कोउक काल ॥ ४४ ॥
यह सुनि कुम्म सिराहि अरु, ओलिमाँहिं तिहिं डारि ॥
करिय कुंच निज गेहकौं, बिनु रन बिजय बिचारि ॥ ४५ ॥
मिले स्वसुर जामात[5] गिनि, लगी[6] बखत हिय लाय ॥
मुह बिगारि नागोरकौं, कुँम्महि निंदत आय ॥ ४६ ॥
प्रत्यागम[7] जयसिंह किय, अतिदल अतुल उछाह ॥
नगर नाम सरवाड़ ढिग, मिलिय रान कछवाह ॥ ४७ ॥
रानहि कूरम कहिय इम, कियउ जोधपुर जेर ॥
अप्पहु अब अच्छे फिरहु, बढहिं खरच बिनु बेर[8] ॥ ४८ ॥
कहिय रान आयउ निकट, पुसकर तीरथ एह ॥
यों न अबहि फिरनौं उचित, न्हाय रु जैहैं गेह ॥ ४९ ॥
इम कहि गिनि न्हावन उचित, पुसकर रान पधारि ॥
कूरम आयउ आगरा, सूबा करन सम्हारि ॥ ५० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ पौ-गण्डकालोम्मेदसुरत्तीमाधनश्रोतव्यश्रवणमहासिंहोतन्वामिसेत्र -

१ बाकी रहे जिसमें २ रुपयों के एवज की कैद में ॥ ४१ ॥ ३ नाम ४ दंड के लाखों रुपयों से ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ५ जमाई अभयसिंह ६ बखतसिंह के हृदय में ७ जयसिंह की निन्दा करता हुआ ॥ ४६ ॥ ८ पीछा गमन ॥ ४७ ॥ ९ बिना समय ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में दश वर्ष की अवस्था में उम्मेदसिंह का शस्त्राभ्यास करना सुनकर, महासिंह के वंशवालों का

नदौलतसिंहादिनिष्कासनयोधपुरराजाऽभयसिंहबीकानेरयुद्धकर - णातन्नृपगजसिंहजैपुरसहायपत्रप्रेषणाजयसिंहजामातृवारणाकूर्मक टकयोधपुरवेष्टनदराडद्रव्यानयनसरवाड़राणाजगत्सिंहाऽऽगरानग - रगमनं द्वितीयो २ मयूखः ॥ २ ॥ ॥२८३॥

प्रायोब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

अग्गैं नादरसाहके समय जयसिंह दिल्ली न गयो ॥

मुहुम्मदसाहनैं किल्ला रनथंभोर दैनौं करि बुलायो तथापि टरि-बेकौं बहानौं लयो ॥

तदनंतरं नादरसाह दिल्लीकी कतलकरि तमाम बादसाही वैभ-व लूटि अपनैं मुलक ईरान सिधायो ॥

अरु मुहुम्मदसाहनैं सरबस्वके साथ अपनौं तेजहीं गुमायो ।१।

ऐसी अनेक बदफैली जयसिंहनैं कीनी तथापि हिन्दुस्थानमैं बरजोरं जान्यौं ॥

अरु पहिलैं याकौं सूबा दयेहे ते रंजूही राखे रु बिनयसौं बखान्यौं॥

राजाधिराजराजराजेन्द्र सवाईजयसिंह ऐसो उपटंक लिखायो॥

अरु अग्गैं काहूको न भयो ऐसो फरमानमैं सतकार बिसेस बढायो ॥ २ ॥

यातैं जयसिंह जोधपुरकी फतै करि दरकुंच आगराप्रवेस कीनौं॥

अरु रानौं जगत्सिंह पुष्कर सेमहातीर्थके स्नान को लाह लीनौं॥

स्वामि की सेवा करना १ दौलतसिंह आदि को निकालना २ जोधपुर के राजा अभयसिंह का बीकानेर से युद्ध करना ३ बीकानेर के राजा गजसिंह का, सहाय के अर्थ जयपुर पत्र भेजना ४ जयसिंह का अपने जमाई (अभयसिंह) को मना करना ५ कछवाहों की सेना का जोधपुर को घेरना ६ दंड के रुपये लेकर सरवाड़ में राणा जगत्सिंह से मिलकर जयसिंह का आगरे जाने का दूसरा २ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ तियासी २८३ मयूख हुए ॥

१ नादरसाह ने दिल्ली की लूट की तब २ तोभी ३ जिस पीछे ॥ १ ॥ ४ बल-वान् ५ आधीन ६ खिताब ॥ २ ॥

तहाँ व्यास दोलतराम रानाँ सौं अरजकरि मेवारके उदकौनकी बेगारि मिटाई ॥

अरु अपने हाथ मैं उदक[2] झेलि दोऊरनकी कीर्त्ति चोतरफ चलाई ॥ ३ ॥

अग्गैं राननकी बिपत्तिमैं यह बेगारि जारी भई ॥

अब व्यासके आतंक[3]सौं तमाम मेवार छोरि गई ॥

या रीति पुष्करमैं पाप धोय रानाँ जगतसिंह उदैपुर प्रविष्ट भयो॥

अरु रट्ठोर बखतसिंहनैं पछिताय हाथ जोरि अपनैं अग्रज जोधपुरके राजा अभयसिंहको प्रसाद[6] लयो ॥ ४ ॥

कही स्वामिसौं हरामी भयो सो अपराध मेरो माफ कीजिये ॥

अरु अपनैं घरके बिगारे कछवाहके ऊपर फोजबंधीको हुकम दीजिये ॥

राजा अभयसिंह यह बात बिचारमैं लीनी ॥

अरु अधर्मी अनुजके बिगारबेकी सारे रट्ठोरनकौं एकांतमैं सुनाय फोजैं जयसिंहपैं जंगकौं सज्जीभूत कीनी ॥ ५ ॥

अठ नव सत्रह१७९८के साल मारवारमैं नर तुरंग न माये ॥

नव९ कोटी नाथके सेनाके संभार हजारही भोग भोगीसके भमाये ॥

बैंडे हत्थीनपैं लंबी लालरंगकी पताका फैरकानैं लगी ॥

मानौं रक्तबीजैं[11]के समय कालिका जिव्हाकौं थरकानैं लगी६

१ उदक भूमिवालों की २ पानी ॥ ३ ॥ ३ भय से ४ प्रवेश किया ५ अभयसिंह की ६ प्रसन्नता ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ भार से ८ फण ९ शेषनाग के १० ध्वजा उडनेलगी (जोधपुरवालों का निशान लाल रंग का है) ११ रक्तबीज नाम राक्षस को वरदान था कि तुम्हारे रुधिर की जितनी बूंदें भूमि पर गिरेंगी उतने ही शरीर उठकर शत्रु से युद्ध करेंगे, सो कालिका से रक्तबीज का युद्ध हुआ तब, उसका रुधिर भूमि पर नहीं गिरने देने के अभिप्राय से अपनी जिव्हा को फैलाकर रक्तबीज का सम्पूर्ण रुधिर

कैधौं पिंगल नागराज गरुड़के आतंक बचिबेकौं बडे मात्राछं-
दकी पताका बनाई ॥
कैधौं अंधकके ऊपर त्रिलोचनके त्रिसूलकी तीखी नौंख न-
जरि आई ॥
कैधौं चंदनके दंडपै पलेटा डारि रक्तराग राजमान नागराज
लहरानौं ॥
कैधौं दुस्सासनके भुजदंडतैं सैरंध्रीकी साटीको समूह लहरानौं ७
कैधौं प्रचंड पवनके पातसौं होरीकी झार बढनैं लगी ॥
अरु भद्दवकी मेघमालामैं इंद्रके रोहितं चापसौं लागि चंचैला
की चलाकी कढनैं लगी ॥
कैधौं सुमेरुके शृंगतैं संभुसेखरास्त्रवंतीके सोधे स्रोतं छूटे ॥
अरु कल्पकारस्करके कंधतें साखाके समह फैलि फूटे ॥८॥
ऐसैं अनेक फैतूहैं फीलनपैं फहराय छोनिछाई ॥
अरु राजा रट्ठोर जयसिंहकौं जीतिबेकौं जैपुरपैं चंड चैतुरंगिनी
चलाई ॥
या रीति सोदर बखतसिंह सहित राजा अभयसिंह बडी धकसौं
मेरता नगर आय मुकाम दीनैं ॥
अरु बागनके विलासकी मरजी मानि मालीकारननैं प्रसूननके

पाटलिपा, जिसकी कथा मार्कंडेय पुराण आदि ग्रंथों में विस्तार से लिखी हुई है, वही उपमा यहां दी है ॥ ६ ॥ १ गरुड़ के भय से बचने के अर्थ पिंगल नागराज ने मात्रा छंद की उतनी बडी २ पताका (छन्दों के षोड़श कर्मों के अन्तर्गत एक कर्म है) बनाई जो समुद्र के तट तक पहुंचगई तब, पिंगल गरुड़ को फंद में लाकर समुद्र में कूद पड़ा ३ अंधक नामक दैत्य के ऊपर ४ शिव के ५ लाल रंग वाला सर्प ६ शोभायमान ७ द्रौपदी की ८ साड़ी का ॥ ७ ॥ ९ प्रचंड पवन के पड़ने से १० इन्द्र के सीधे धनुष से (जिसको लौकिक में मच्छ कहते हैं) ११ बिजुली की १२ शिव के मस्तक से बहनेवाली (गंगा नदी) के १३ प्रवाह १४ कल्पतरु के १५ मूल से ॥ ८ ॥ १६ ध्वजा १७ हाथियों पर उड़ कर १८ भूमि को. पर्यंक १९ सेना २० सहोदर (सगेभाई) २१ मालियोंने २२ पुष्पों के

पूर[1] नजरि कीनैं ॥ ९ ॥

ते प्रसून राजा रट्ठोर अपनैं उमरावनकौं बखसीस बँटि दये ॥
अरु रट्ठोर उमराव अनेक ऐंडी बैंडी तरह लपेटनपैं[2] धारत भये॥
तहाँ आउवानगरके अधिराज[3] चाँपाउत रट्ठोर कुसलसिंह राजा सौं प्रसून नाँहिं लीनौं ॥
अरु कारनके पूछैं अहंकारके उफान अपुव्व[4] उत्तर दीनौं॥१०॥
अज्ञानतैं आपकौं प्रसूननके[5] पैसारिबेमैं[6] लज्जाको लेसहू हमैं न जान्यौं परैं ॥
रट्ठोरनके पाघ अरु नासिका कछवाहननैं छीनिलीनैं यातैं अज्ञानके प्रसून लेकैं कोन ठाम धारन करैं ॥
यहै सुनतही राजा अभयसिंहको सोदरानुज[7] नागोरको अधिराज[8] रट्ठोर बखतसिंह खिसाय[9] ऊठि बुल्ल्यो ॥
अरु मेरे मिलौं[10] यह भई ऐसैं अग्रजसौं[11] अक्खी[12] अरु जुद्दाही जुद्ध करिबेकौं जयसिंहपैं जनूनसौं[13] चंड[14] चंद्रहास[15] तुल्ल्यो ॥ ११ ॥
अरु यातरफ जोधपुरसौं फौजबंधी करि रट्ठोरनके चलायवेकी सुनि बड बिस्तारकी वरूथिनी[16] लै जयसिंह आगरासौं कुंच कीनौं॥
अरु जोधपुरकीही सीमामैं जाय सज्जीभूतह्वै निसाननपैं[17] निहाव[18] को हुकम दीनौं ॥
वातरफसौं रट्ठोर बखतसिंह अपनैं पाँचहजार५०००पखरैतौं सैं बागैं उठाईं ॥
अरु धूलीकी धुंधिमैं धकाय संजोगी चक्क[19] चक्कीनके चाहकी[20] चौंपैं मिटाईं ॥ १२ ॥

---

१ पुड़े (समूह) ॥ ९ ॥ २ पगड़ियों पर ३ पति ४ अपूर्व ॥ १० ॥ ५ पुष्पों के ६ फैलाने (देने) में ७ सगा छोटा भाई ८ राजा ९ चिढ़ा (लज्जित होकर) १० मैं जयसिंह से मिल गया तब ११ अभयसिंह से १२ कहकर १३ क्रोध के साथ १४ भयंकर १५ खड्ग उठाया ॥ ११ ॥ १६ सेना १७ नगारों पर १८ बल पूर्वक निरन्तर प्रहार (बजाने) का १९ चकवा चकवी के २० लाग

मकराकर मेखला मही महानागके मस्तकके हजारे[3] पैं नचन लगी

अरु बागहकी तुंडापैं मचक्कनकी मार मचनलगी ॥

अतल १ बितल २ सुतल ३ तलातल ४ रसातल ५ महातल ६ पाताल ७ सातौंही धराके अधोभाग धूजिगये ॥

अरु भूलोक १ भुवर्लोक २ स्वर्लोक ३ महर्लोक ४ जनलोक ५ तपलोक६सत्यलोक७सहित ऊपरके ओकबासी व्याकुलभये।१३।

ऐरावत१पुंडरीक २ बामन३कुमुद ४ अंजन५ पुष्पदंत ६ सार्वभौम ७सुप्रतीक८अ.ठौंही आसाके अनेकपन[7] कांपकैं कातर[8] कूक करी।

अरु पुरुहूत १ पावक २ प्रेतपति ३ पुण्यजन ४ परंजन५प्रभंजन ६ पौलस्त्य ७ पिनाकपाणि ८ आठौंही लोकपालनकौं लोक रक्षामैं बिपत्ति बिसेस जानिपरी ॥

लवणोद१ इक्षुरसोद२ मद्योद३ आज्योद४ क्षीरोद५ दधिमंडोद ६ शुद्धोद७ सातौंही समुद्रन क्षोभ पायो ॥

अरु अनूरुनैं[10] अब्बर्नकौं[11] अवछेपैंनी खैंचि आदित्यकौं[12] अरजी अक्खि अपुब्ब आहव आलोकन[13] उछाह लगायो ॥ १४ ॥

अष्टापद[14] अद्रिसौं[15] अतित्वर[16] आय महानट[17] मनोज्ञ[18] मुंडमालाको मिलाप मान्यौं ॥

अरु डाकिनीन डिंडिम डमरूक डाहलादिकनपैं[19] डंके डारि हल्लीसैंक[20] नच्च तान्यौं ॥

गोदैंनके[21] गूंदनके[22] ग्रासकौं गिद्धि गन गैनमैं[23] गरूरीसौं गहकानैं ॥

(इच्छा) ॥ १२ ॥ १ समुद्र की है २ कटिमखला (कर्धनी) जिसके ऐसी भूमि ३ हजार फणों पर ४ नीचे के भाग (लोक) ५ ऊपर के स्थानों में रहने वाले ॥ १३ ॥ ६ आठों ही दिशा के ऊपर कहेहुए नामोंवाले ७ हाथी ८ कायर (यहां कहेहुए दिग्गज और लोकपालों के नाम पूर्वदिशा से प्रारंभ करके यथाक्रम से हैं) ९ चलायमान हुए१०सूर्य के सारथि ने घोड़ों की११बाग खैंच कर१२सूर्य को१३युद्ध देखने का ॥ १४ ॥१४सुवर्ण के १५ पर्वत (सुमेरु) से१६शीघ्र१७शिव ने १८ मनचाही (इच्छानुसार) १९ डाहल आदि बाजों पर २० घूमर का नाच २१ मस्तिष्क (भेजा) २२ मींजी २३ आकाश में उमंग

अरु कराल कलहके कोलाहल कातरनके[1] कलाप डहकानैं १५ बावन५२ बीर चउसट्ठि६४ जोगिनीनके जाल[2] जुद्धकी जैलूसी[3] जोयबेकौं जारी भये ॥

अरु रठोर कछवाह दोहू२सेनाके सरदार तत्काल तुमुल[4]युद्धमैं तीखे तोरसौं तत्ते[5] तुरंगन तोकिबेकौं[6] तयारी भये ॥

राजा जयसिंह जंगी होदेके हत्थीपैं आरूढ होय संग्रामभूमिकी सीमाके समीप अपनी अनीकके[7] अंतर[8] अतीव[9] उच्छाहसौं उद्धत[10] होय आनि खरो रह्यो ॥

अरु रचनाबिसेससौं सेनाको व्यूह बनाय बाँई दाहिनी दोऊ २ तरफ खवासीके हत्थी लगाय सूरबीरनकौं श्रवन करायबेकौं पंडितनकौं उच्चारनको आदेस[11] कह्यो ॥ १६ ॥

सो आदेस सुनिकैं दोऊ२खवासीके हत्थीनपैं पंडितराज रामायन लंकाकांड१ महाभारत द्रोनपर्व२ कहन लगे ॥

अरु बैंडे बीरनकौं बंदीजन[12] बीररसमैं बिरुदाय चतुरंग[13]की चलाकी चहन लगे ॥

कछवाहकी सेनाको संभार[14] झेलिबेकौं पुहवीहू[15] वासमय समर्थ न भई ॥

अरु राजा जयसिंह ऐसे अनीकके[16] उफानसौं रठोरनपैं अर्ब[17] उठायबेकी आज्ञा दई ॥ १७ ॥

जा सेनामैं साहिपुराके अधिराज[18] रानाउत उम्मेदसिंहसे बाईस २२ राजा सज्जीभूत खरे ॥

अरु ओरहू अधीन होय आहवपैं उमाहे[19] अनेक सूरबीरनके

से प्रसन्नता की बोली बोले. कायरों के १ समूह चौंके ॥ १५ ॥ २ समूह ३ शोभा ४ अवकाश रहित युद्ध में ५ चंचल घोड़े ६ उठाने को ७ सेना के ८ भीतर ९ अत्यन्त १० अनम्र ११ हुक्म ॥ १६ ॥ १२ भाट लोग १३ सेना की १४ भार १५ भूमि भी १६ सेना के बढाव से १७ घोड़े ॥ १७ ॥ १८ पति १९ उत्साह

संघट्ट अरे ॥

वा समय रठोर बखतसिंह पाँचहजार ५००० पखरैतनसौं बडे वेग बाजी बीच डारे ॥

अरु द्वैलाख २००००० सेनाके समुद्रमैं पार पूगिबेकों पोतके प्रमान पधारे ॥ १८ ॥

दोऊ[२] कटकनके कंकटी क्रूर कालरूप बैंडेबीर कालिंग कुटिल कोसनतैं कालायस कराल करवालनके कलापैं काढि कज्जलसे कारे कुंजरनके कूटसे कुंभनपैं भारन लगे ॥

अरु धीर बीर धन्वदेसी बडी धकसौं धकाय धूँपकी धारासौं धपाय पंचरंगी ध्वजादंडनकों पारिडारन लगे ॥

पर्वतसौं मयूरके माफिक कुंभीनके कलापनके कलापनतैं पताकानके पुंज उडन लगे ॥

अरु गाढे गरूरी रठोरनके गंजे गिरन लगे गजराज गुडन लगे१९

हयनकी हयछटाँ कबंधनके कराल करवालनतैं कटि कटि कलहमें कूदते कबंधनके कंधनपैं फहरन ठहरन लागी ॥

कैधौं हयग्रीवावतारकी हजारन प्रतिमा लास्यके लालित्यसौं छाकि लहरन लगी ॥

दोऊ[२] चमूके मजबूत मगरूरी महावीरनके मंडलाग्रनकी भार भरैसैं मचन लगी ॥

युक्त हुए १ समूह २ नाव के समान ॥ १८ ॥ ३ सेना के ४ कवच धारण किये हुए (सिलहपोश) ५ काले और ६ टेढे ७ म्यानों से ८ भयंकर काल की आज्ञा के समान; अथवा काले लोहे के ९ खड्गों के १० समूह निकाल कर ११ हाथियों के १२ शिखर रूपी कुंभस्थलों पर प्रहार करने लगे १३ मारवाड़ देशवाले १४ तरवार की १५ जयपुर की ध्वजा का रंग पचरंगा है १६ हाथियों के १७ समूह को १८ कारचोनियों (कणगातियों) से कसे हुए १९ ध्वजाओं के समूह उडने लगे २० घमंडी राठोड़ों के २१ मारे हुए ॥ १९ ॥ २२ घोड़ों के कंधे २३ राठोड़ों के भयंकर खड्गों से २४ युद्ध में २५ विना मस्तक वाले क्रियावान शरीरों के कंधों पर २६ उडकर ठहरने लगी २७ नृत्य की सुन्दरता से २८ तरवारों

मानौं होलीके हुलास[1]पामर[2] पुरुषनके पानितैं चर्चरी[3]कीडंडे[4]हरिरचनलगी
तेगनकी तराकन पोंगरनके[5] पलोटेदेत सिंधुरनके[6] सुंडादंडझारन लगे
मानौं जन्मेजयके जिँह्मग[7] जज्ञमैं मंत्रनके मारे पन्नगनके[8] पूर परनलगे
गिरे टोपनकौं ग्रहनकरि जोगिनीनकी जमाति वैंडे वीरनके
वंपासौं[9] भरन लगी ॥
अरु लोहितं[10]की लालीमैं कालीकूदि कूदि सोसनी[11]रंग धारनकरनलगी
सचे सूरनके सीस महेसकी मनोज्ञ[12] मुंडमालामैं गुंफेगये[13] तथापि
देहु देहु यौं दकालन लगे ॥
तिनको सोर सुनि अनेक अभ्रपिशाच[14] आये मानि आतंकसौं
भालचंद्र[15]के प्रान चालन लगे ॥
जावकके जंत्र[16] जिम सोनितके स्रोतं[17]की छछकैं छूटि छूटि
छोनीतल छायबेकौं परन लगी ॥
तिनकौं साकिनीनकी संहति[18] आनन[19] उबाय ऊपरही झेलि झे-
लि पान करन लगी ॥ २२ ॥
कबंधनके कलापं[20] मानौं अपने उत्तमागं[21]की अंखिनसौं देखि
देखि दाव दैबेकौं दोरन लगे ॥
अरु पैने मंडलाग्रैं[22] मारि मदमत्त मातंगनके[23] मत्थ[24] फोरन लगे ॥
सकंचुक[25] पंच ५ फनके पन्नगके प्रमान बाँहुल[26] समेत बाँहुल[27]

का.१ उत्साह में २ नीच (ग्रामीण) लोगों के हाथ से ३ फाग (वसन्त की क्रीड़ा विशेष) की ४ गेहर (डंडों का खेल विशेष) ॥ २० ॥ ५ हाथी की सुंड के अग्रभाग (पुष्कर) के ६ हाथियों के ७ सर्पयज्ञ में ८ सर्पों के समूह ९ गूद (चरबी) से १० रुधिर की ललाई में ११ लाल में काला रंग मिलाने से सोसनी रंग होता है ॥ २१ ॥ १२ मनोहर १३ गुथेगये १४ राहु १५ शिव के ललाट के चन्द्रमा के प्राण (ग्रहण के) भय से चलायमान होने लगे १६ फुहारे १७ रुधिर की पिचकारियें १८ समूह १९ मुख फाड़कर ॥२२॥ २० राठोड़ों के समूह २१ मस्तकों की आंखों से (कटेहुए मस्तकों की आंखों से) २२ तीक्ष्ण खड्ग मस्त २३ हाथियों के २४ मस्तक २५ काँचली सहित पाँच फणोंवाले सर्पों के समान २६ दस्ताने सहित २७ बहुल हात

बाहु तूटन लगे ॥

अरु अवमर्द[1]के आतंक[2] कातरनके गाढ छूटन लगे ॥ २३ ॥

वाग टल्लाके इसारैं वेगवान बाजी जंगी होदनकी बरब्बर झंप लैन लगे ॥

अरु सादीन[3]के सस्त्र[4] संपात करि नष्ट नूर[5] होय निसादान[6]के नैन नैँन[7]लगे ॥

वंके कमनैत कठोर कोदंडनकौं गोसपेची[8]की बरब्बर तानि तानि तीर मारन लगे ॥

ते तीर कितेक आसमानमैं उडान लैकैं सरदकालके सलभन[9] की सोभा धारन लगे ॥ २४ ॥

रट्ठोर बखतसिंह जयसिंहकौं जोपिबे[10]कौं घनैं हत्थानके होदे हेरिडारे

अरु दुैलाख २००००० सेनाके पार निकसि बचे वीरनसौं वैरी की वरूथिनी[11]मैं बड वेग बाजी[12] फेरिडारे ॥

ऐसैं दूजावर पेलन[13]कौं पृतना[14]मैं पैठत देखि राजा जयसिंह साहिपुराके अधि[15]राज राजाउत उम्मेदसिंहसौं राजा कहि बुल्ल्यो ॥

अरु बखतसिंहकौं पै[16]ने लोह चखायबेकौं सिद्धांत खुल्ल्यो ॥२५॥

अगैं राजा न कहतो रु अब कह्यो यातैं साहिपुराके अधीस राजा उम्मेदसिंह बडी उम्मेदसौं ओट होय कबंधनको लँ[17]काप झेल्यो

अरु मारवनको मगरूर मारि खासी खग्गनको फाग खेल्यो ॥

वा जुद्धमैं राजा रट्ठोर बखतसिंहके च्यारि हजार सातसै ४७०० पखरैत झरि परे ॥

अरु तीनसै ३०० पखरैतन सहित उम्मेदसिंहकी असिवग्ग[18]सौं

---

१ संकलित युद्ध के २ भय से ॥ २३॥ ३ घोड़ों के सवारों के ४ शस्त्रों के प्रहार से ५ शोभा बिगड़कर ६ हाथियों के सवारों के नेत्र ७ नीचे होने लगे ८ कान की बराबर ९ टीडियों की ॥२४॥ १० देखने की ११ सेना में १२ घोड़े १३ शत्रुओं को १४ सेना में घुसते देख कर १५ पति १६ तीखे शस्त्र ॥२५॥ राठोड़ों के १७ समूह की १८ श्रेष्ठ खड्ग से

अच्छक[1] छाकि मरिबोही मानि कछवाहके कादंबिनी[2] रूप कटक सौं टरि परे ॥ २६ ॥

या रीति पलायन[3] होय रठोर बखतसिंह नागोरको मार्ग लीनों॥

अरु राजा अभयसिंहहू याहीके बिगारिबेकौं आयोहो यातैं पच्छो जोधपुरकौं कुंच कीनों ॥

ऐसैं द्वै २ बेर कछवाहकी सेनाको समुद्र तरि तीजी ३ बेरकी ताकत न जानि बखतसिंह निकसि नागोर आयो ॥

अरु जाके इष्ट गिरिधर[4] परमेश्वरके हाथी तथा पातुरिखानैं सहित डेरनकौं कछवाहको कटक[5] लूटि लायो ॥ २७॥

तब वह बखतसिंहको इष्ट परमेश्वरतो जयसिंहनैं नाँहिं पठायो ॥

अरु पातुरिखानैंकौं पच्छो भेजि कग्गरमैं[6] कातर[7] कहि लिखायो ॥

कह्यो अंतहपुर[8] हमारे भेट कीनों परन्तु हमकौंतो अभुक्तके[9] ग्राहक जानों ॥

१तृप्त होकर २ जयसिंह की मेघमाला रूपी सेना से ॥ २६ ॥ ३ भागकर ४ *गोवर्धननाथ की मूर्ति सहित ५ सेना ॥ २७ ॥ ६ पत्र में ७ कायर ८ जनाना ९ जिसका भोग पहिले किसीने नहीं किया होवे उसके

---

*उम्मेदसिंह को जयसिंह का राजा नहीं कहना और इस समय राजा कहने के कारण उम्मेदसिंह का वखतसिंह से युद्ध करना लिखा सो यह वात समझ में नहीं आती क्योंकि शाहपुरा के राजा भारतसिंह को दिल्ली के वादशाह आलम (वाहादुरशाह) ने विक्रमी संवत १७६६ में राजा का खिताव देकर साढा तीन हजारी का मनसव देदिया था सो कई प्रमाणों से सिद्ध है, और भारतसिंह के पुत्र राजा उम्मेदसिंह ने वखतसिंह से गिरधारी की मूर्ति सहित सेवा की हथनी छीनली सो वह मूर्ति इस समय तक शाहपुरा में लक्ष्मीनारायण के मंदिर में विद्यमान है और इसी युद्ध में इस टीकाकार (वारहठ कृष्णसिंह)के वृद्ध प्रपितामह वारहठ देवसिंह वडी वीरता के साथ घायल हुए और नागों की जमात के एक वीर के हाथ से हाथी की सुंड कटजाने के कारण उस नागेको मारकर देवसिंह ने वह तरवार छीनली जो इस समय शाहपुरा के शस्त्रागार (सिलहखाने) में नागावाली तरवार के नाम से विद्यमान है, इस खड्ग की लंवी चौड़ी कथा है सो विस्तार के भय से यहां नहीं लिखी जासकती इस युद्ध की किंवदन्ती ऐसी प्रसिद्ध है कि शाहपुराका राजा उम्मेदसिंह एक ओर खड़ा था जिनको हठजाने को राठोड़ों ने कहलाया जिनको उम्मेदसिंह ने पीछा कहलाया कि यदि वीरता का घमंड है तो युद्ध करके हटाकर आगे जाओ इसीपर इनसे युद्ध हुआ जिसमें राजा उम्मेदसिंह के छोटे भाई कुसलसिंह आदि वडे वडे वीर मारे गये ॥

यातैं तुमारो तुम अबेरि फेरि ढुंडाहरसौं लरिबेकी न *होंस आनौं ॥ २८ ॥

या रीति अड नव सत्रह १७९८ के साल राजा जयसिंह रट्ठौरनसौं जंग जीति आयो ॥

अरु या जंगको जस साहिपुराके †अधिराज रानाउत राजा उम्मेदसिंह पायो ॥

या तरफ बेघम नगर रावराजा उम्मेदसिंहकी माता कुंडाउति अपने निर्बाहको ‡अवलंब विचारत बरस तीन३ निकारे ॥

अरु सुखसिंह महासिंहोतके §सम्मतसौं अपने छोटे पुत्र दीपसिंहके अर्थ रानाँ जगतसिंहसौं पटा लैबेकौं पुरोहित दयारामकौं उदयपुर पठावनमैं कारन विचारे ॥ २९ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७ राशौ राणा जगत्सिंहपुष्करस्नानलोदकदत्तसुग्विष्टित्यजनबखतसिंहस्वाऽग्रजमिलनसेनासज्जीकरणजयसिंहतदभिमुखाऽऽगमनमरुराजानुजकूर्मराजकलहकरणबखतसिंहपराभवनं तृतीयो३मयूखः ॥ ३ ॥२८४॥

प्रायोब्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

कहिय मास बाहुल विसद, प्रतिपद१ दिन अति प्यार॥
सत्त७ रूप इकत करिय, कोटानृप श्रीद्वार ॥ १ ॥

---

* इच्छा ॥ २८ ॥ † स्वामी ‡ आधार § सलाह से ॥ २९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, राणा जगतसिं का पुष्कर स्नान करके उदकवालों की बेगार छोडना १ बखतसिंह का अपने बडे भाई से मिलकर सेना सजना २ जयसिंह का इनके सम्मुख आना मारवाड़ के पति (अभयसिंह) के छोटे भाई (बखतसिंह) का जयसिंह से युद्ध करना ४ और बखतसिंह का पराजय होने का तीजा मयूख ३ समाप्त हुआ और आदिसे दोसौ चोरासी २८४ मयूख हुए॥

१ कार्तिक सुदि एकम के दिन कोटा के राजा ने १ नाथद्वार में २ सात

विठ्ठल१ अरु नवनीत प्रिय२, बहुरि द्वारकानाथ३ ॥
गोकुल४ मथुरा५धीस गिनि, गोकुलचंद्र६ *सुगाथ ॥ २ ॥
मदनमोहन७हु सत्त७ †मित, ए वल्लभकुल इष्ट ॥
कोटानृप इक्कत करिय, अप्पन दहन ‡अरिष्ट ॥ ३ ॥
खरचि दम्म इक लक्ख१००००० मित, उच्छव रचिय अपार ॥
रानहिं तब §निमंत्रदै, बुल्ल्यो विहित विचार ॥ ४ ॥
तँहँ रानाँ कोटेस प्रति, विरचि नेहमय वैन ॥
माधव१ निज भानेज हित, अक्खी जैपुर लैन ॥ ५ ॥
कोटेसहु तब रान प्रति, नय वैंच२ अक्खिय नूँन३ ॥
जब मरिहै जयसिंह तब, अ४ हैं पहुमि दुरहून ॥ ६ ॥
बुंदिय मिलहिं उमेदकौं, माधवकौं जयनैर ॥
पैं जौलग जयसिंह प्रभु, वदहु न तौलग बैर ॥ ७ ॥
कोटापति अरु रान दुवरु, किय रहस्य५ यह वत्त ॥
इहिं६ तुम जावहु उदयपुर, रान करहु अनुरत्त ॥८॥
रानाउति पीहर ससुत७, रहत कुंम्म८सौं रुट्ठ ॥
इहिं रानहु कूरम अहित, बप्प९ बहिनि हित बुट्ठि ॥ ९ ॥
अप्पन पुव्वहि कुंम्म अरि, अब रानहु अरि आहि ॥
यातैं१० कछु दीपहिं१२ पटा, दैहिं११ तु१३ दैहिं सिराहि ॥ १० ॥
यह विचारि निज विप्र वह, दयाराम संबोधि ॥
पठ्यो मति१४गति उदयपुर, समय देस हित सोधि ॥ ११ ॥

रूप इकट्ठे किये ॥ १ ॥ * अष्ट कथा वाले ॥ २ ॥ † प्रमाण ‡ पाप जलाने के लिये ॥ ३ ॥ § नेता देकर उचित विचार से बुलाया ॥ ४ ॥ १ माधोसिंह ॥ ५ ॥ २ नीति के वचन कहे ३ निश्चय ही ४ उमेदसिंह के बुंदी और माधवसिंह के जयपुर आवेगा ॥ ६ ॥ ७ ॥ ५ एकान्त में ६ इस कारण ॥ ८ ॥ ७ पुत्र (माधवसिंह) सहित ८ कछवाहा जयसिंह से रूठ (क्रोधित हो) कर ९ पिता की बहिन (भुआ) पर हित की दृष्टि करके जयसिंह से रूठे हैं ॥ ९ ॥ १० जयसिंह के ११ हैं १२ दीपसिंह को १३ तो ॥ १० ॥ १४ अपनी बुद्धि की गति से दया-

तानैं जाय रु *तक्क्यो, नगर सलूमरि नाह ॥
जान्यौं या बिनु होय नहिं, सब इहिं हत्थ सलाह ॥ १२ ॥
अक्खी केसरिसिंहसौं, बत्त यहै तब बिप्र ॥
बुंदीपति लघु पुत्र हित, पटा चहत हम †छिप्र ॥ १३ ॥
यह ‡उदंत कहि रानसौं, §बिहित दिवावहु वेग ॥
हैं हठ्ठे बाल न गिनहु, कल्हि कसैंगे तेग ॥ १४ ॥
सुनि यह केसरिसिंह सठ, मानि[1] लोभ निज मित्त ॥
संभरपर[2] उपकृत समय, चाह्यो नेह न चित्त ॥ १५ ॥

॥ षट्पात् ॥

इहिं चुंडाउत अग्ग मुख्य भुव लोभ सोधि मन॥
सजि दलेल सन साम प्रकट अहरि किंकर पन ॥
रोरैं[3] नाम लघु सुवन अप्प बुंदियपुर रक्ख्यो ॥
पटा सहँस पैंतीस ३५०००लेरु[4] अधिपति वह अक्ख्यो ॥
तिहिं लोभ अबहु उलटी तकत यह न पुरोहित अहरिय ॥
बिनु समय कछु न हम सन बनहिं कहि यहै रु उपहास किय१६

॥ दोहा ॥

दयाराम यह सुनि दरिंत[5], इंच्छि[6] अवर आलंब ॥
दौलतराम सु व्यास सुत, सोध्यो दुख गिरि संबँ[7] ॥ १७ ॥

॥ षट्पात् ॥

पहिलैंही यह व्यास छोरि कोटा किहिं कारन ॥
रहिय रान ढिग आय मंत्र नय चतुर महामन ॥
तबहि पुरोहित ताहि मिलि रु अक्खिय उदंत सब ॥
समग्गो देन सहाय आहि बुधसिंह सुतहिं अब ॥

राम को समझा कर ॥ ११ ॥ *देखा ॥ १२ ॥ †शीघ्र ॥ १३ ॥ ‡वृत्तान्त ॥ १४॥ § उचित १ लोभ को अपना मित्र मानकर २ चहुवाण पर उपकार करने के समय ॥ १५ ॥ ३ रोड़सिंह नामक ४ दलेलसिंह को स्वामी कहा ॥ १६ ॥ ५ डरकर ६ अन्य आधार चाहा ७ दुःख रूपी पर्वत का वज्र ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥

बिनु धन निबाहि सकत न बिभव यातैँ रानहिँ करि अरज।
कछु देहु पटा लघु भ्रात हित गिनि बिपत्ति कहहु गरज॥१८॥

॥ दोहा ॥

द्विजबर दौलतराम सुनि, अक्खिय रानहिँ एह ॥
दीपसिंहहित दीजिये, कछुक पटा करि नेह ॥ १९ ॥
सु सुनि रान जयसिंहको, चिंत्यो *तहर प्रचंड ॥
अक्खी यह कूरम अतुल, दिय †मरुपहु जिहिँ दंड ॥ २० ॥
कियँ[1] अहित यह कुम्म को, बिगरहिँ राज बिसाल[2]
यातैँ तुम उनसौं कहहु, कहहु कछु बिधि काल ॥ २१ ॥
यह उत्तर जगतेस दिय, सो सुनि कुमर [3]प्रताप ॥
अक्खी घर आयेन कौं, क्यौं नहिँ रक्खत आप ॥ २२ ॥
सत्रुकोहु आयैँ सदन, मानत [4]अग्घ महंत ॥
[6]सुपहु अप्प[5] असे समय, कूरम त्रास कहंत ॥ २३ ॥
यह कहि कुमर प्रताप न[8], पटा हजार पचीस २५००० ॥
[7]जनकहुसौँ बरजोर बनि, किय तयार बखसीस ॥ २४ ॥
नगर पटा बिच मुख्य लिखि, लाखोला अभिधान ॥
अवरहु वस्तु अनूप चउ ४, चित्त करिय पहुँचान ॥ २५ ॥
इक कृपान हय २ खास इक, इक चामर ३ बर बेस ॥
इक सिरुपेच ४ उमेद हित, किय तयार कुमरेस ॥ २६ ॥
सगताउत सुरतेस सुत, निडर उमेद सनाम ॥
किय तयार बुंदीस प्रति, बधम भेजन काम ॥ २७ ॥

॥ षट्पात् ॥

यह कुमार अति जोर बढ्यो जुब्बन बय उब्बट ॥

---

* भयंकर प्रताप † मारवाड़ के राजा को भी ॥ २० ॥ १ जयसिंह का २ बड़ा ॥ २१ ॥ ३ राणा जयसिंह के कुमर प्रतापसिंह ने कहा ॥ २२ ॥ ४ च-५ आघ ६ आप श्रेष्ठ राजा होकर ॥ २३ ॥ ७ पिता से ॥ २४ ॥ ८नाम॥२५॥२६॥ २७ ॥

अगमि जनक[1] अमात्य भेदि क्रति लिय मिलाय भट[2]॥
भिल्लाड़ा पुर भिन्न बंधि अप्पन रजधानी ॥
दखल राज बिच डारि रहैं उद्धत अभिमानी ॥
यह सोधि[3] रान जगतेस अब पकरन पुत्तहिं किन्न मत ॥
तिन दिनन भूप बुंदीसको उदयनेर यह बिप्र गैंत ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

नटत रान इम निंदि द्रुत, उद्धत कुमर प्रताप ॥
संभर हित स्वच्छंद[6] तब, लिखि पटा रु किय छाप ॥ २९ ॥
लखि सुतको यह मत्तपन; सोचि रान जगतेस ॥
हे भट निज अनुकूल ते, इक दिन बुल्लि असेस ॥ ३० ॥
कहिय कैद मम सुत करहु, अनर्थ प्रचारत एह ॥
निज निज सुत या ढिग रहत, तिनहिं पठावहु गेह ॥ ३१ ॥
यह बिचही एते दिनन, करत रह्यो अपकार ॥
पै हम बिनु पैले नृपन, हुव अब रक्खन हार ॥ ३२ ॥
यातैं अब अज्ञान द्रुत, मेटहु गाहि उमराव ॥
अरु जो नहिं तो अग्गें यह, सजलनदहन स्वभाव ॥ ३३ ॥
दृढ प्रपंच इम रान करि, भटन सिक्ख दिय भाय ॥
इन निज पुत्र अनेक मिस, दिन्नैं घरन पठाय ॥ ३४ ॥
सगताउत दारूनगर, पति सुरतेस[12] स नाम ॥
स्वसुतहिं[13] अक्खिय ताहुनैं, घरजावहु कछु काम ॥ ३५ ॥
यह उमेदसिंह सु कुमर, जो किय बेघम त्यार ॥
ताहूसौं इम पितु कहिय, जावहु गेह कुमार ॥ ३६ ॥

---

१ पिता के सचिव को पकड़ कर २ उमरावों को ३ विचार कर ४ गया ॥ २८ ॥ ५ शीघ्र ६ स्वतंत्र ॥ २९ ॥ ७ सबको बुलाए ॥ ३० ॥ ८ अनीति ॥ ३१ ॥ यह जलती हुई ९ अग्नि है जिसका १० जलाने का ही स्वभाव है ॥ ३३ ॥ ११ रीति पूर्वक ॥ ३४ ॥ १२ सुरतसिंह १३ अपने पुत्र से कहा

इहिँ कुमार मतिबल[1] कछुक, जान्यौँ रान प्रपंच ॥
अक्खिय स्वामि प्रताप अब, जानि न छोरौँ रंच ॥ ३७ ॥
तदनंतर इकदिन यहै, रान कुमार प्रताप ॥
अलपसत्थ रहि जनक[2] को, परिखद[3] पत्तो आप ॥ ३८ ॥
उपबँन कृष्णाबिलास नृप, बैठो गैहन उपाय ॥
इहिँ बिच कुमर प्रताप यह, डोढी पहुँच्यो आय ॥ ३९ ॥
प्रतिहारन[6] अक्खिय अरज, लीजे दुवरचरँ पास ॥
लै जानन अवर न हुकम, चतुर अप्पनय चास ॥ ४० ॥
निज सत्थहिँ तँहँ रक्खि तब, लै अनुचर दुवरसंग ॥
परिखद पत्त[10] प्रताप तँहँ, रानहिँ नमि रुचि रंग ॥ ४१ ॥
अप्प मिसल बैठिय उचित, रचि सैंन रु तब रान ॥
सुभट चपारि४ निज पुत्र सिर, डारिय भरत उडान ॥ ४२ ॥
नाथनाम१लघु भ्रात निज, पुर बँग्घोर[11] अधीस ॥
रानाउत भारत बहुरि, नगर जाजपुर ईस ॥ ४३ ॥
चुंडाउत पुर देवगढ, पति जसवंत३ स एव ॥
देलवाड़पुर पति बहुरि, झल्ला राघवदेव४ ॥ ४४ ॥
ए भट रान अधीस को, सैंन होत छल सोर ॥
चंड परे प्रतिमल्ल चउ४, जानि कुमर अति जोर ॥ ४५ ॥
तिनके परत प्रताप तब, जनक[12] गहन मत जानि ॥
ह्वो कितेक पै पितु हुकम, कहि छोरिय असिँ[13] पानि ॥ ४६ ॥
इन तथापि सूढन चउ४न, गहि दिखाय बल दिट्ठि ॥
नाथसिंह तस बाहु गहि, जाँनु[14] सचक्क दिय पिट्ठि ॥ ४७ ॥

॥ ३५ ॥ ३६ ॥ १ बुद्धि बल से ॥ ३७ ॥ २ पिता का ३ सभा में गया ॥ ३८ ॥ ४ पास ५ पकड़ने के उपाय से ॥ ३९ ॥ ६ द्वारपालों ने ७ सेवक ८ दूसरों को लेजाने का हुकम नहीं है ९ नीति की खबर है ॥ ४० ॥ १० सभा में गया ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ११ बागोर पुर का पति ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ १२ पिता पकड़ता है यह जानकर १३ हाथ से तरवार छोड़दी ॥ ४६ ॥ १४ छुटने का ॥ ४७ ॥

कहिय पटा फैंकत कुमर, मल्लन लरत *उमाहि ॥
अज्ज कहाँ वह बल्ल गयउ, होत निबल को †चाहि॥४८॥
कहि इम कुमरहिँ कैद किय, चउ४ भट कुबच प्रचार ॥
सक नव अंक९९ ‡सहस्य गत, §विसद तीज३रवि बार॥४९॥
अग्गैं अनुचित कुमर करि, इहाँ उचित [१]अवधान ॥
पकरन जानत पहिल किय, खग्ग रु खेटक[२] हान ॥ ५० ॥
गहत अचानक इम कुमर, फुट्टिग[३] हक्क अपार ॥
डोढीपर निज सत्थ सुनि, भज्यो बिकल भय भार ॥ ५१ ॥
कुमर[४] जु कुमर तयार किय, बेघम भेजन बीर ॥
सगताउत उम्मेद सो, धँप्यो[५] सभा बिच[६] धीर ॥ ५२ ॥
असि झारत मारत अरिन, रान लियउ नियराय ॥
जिहिँ पिल्लितँ[७] तिहिँ बपु जुगल[८]२, करत खंड अतिकाय ॥ ५३॥
ताहीको काका तबहि पिल्ल्यो रान पचारि ॥
स नंति[९] पुब्ब इक बार सहि, मरद सोहु लिय मारि ॥ ५४ ॥
सुरतसिंह तब तस जनक[१०], रोकन पिल्ल्यो[११] रान ॥
तिहिँ लखि कुमर उमेद तजि, असिबर[१२] नमिय अमान[१३]॥५५॥
जानि धरम इहिँ असि तजिय, इहिँ मूरख किय एह॥
नमत बेर निज पुत्र सिर, कट्टयो नूतन नेह[१४] ॥ ५६ ॥
कुमर प्रताप सु कैद करि, इम खिजि जनक अमान[१५] ॥

---

* उत्साह करके † चाह कर कौन निर्बल होता है ॥ ४८ ॥ ‡ पौष § सुदि ॥ ४९ ॥ १ सावधानी २ तरवार और ढाल का त्याग कर दिया ॥५०॥३हाक फूटी ॥ ५१ ॥ ४ कुमर प्रतापसिंह ने जिस कुमर को बेघम भेजने को तैयार किया था वह उम्मेदसिंह५दौड़ा॥५२॥६समीप७जिसको भेजते हैं उसी के शरीर के८दो टुकड़े करता है॥५३॥९नम्रता पूर्वक, पहिले उसका एक वार सहकर ॥ ५४ ॥ १० उस कुमर के पिता सुरतसिंह को ११ राना ने रोकने को भेजा १२ श्रेष्ठ तरवार छोड़कर १३ मान रहित नमा ॥ ५५ ॥१४नवीन स्नेह को काट दिया अर्थात् पुत्र उम्मेदसिंह को मारडाला॥५६॥१५ अमाप (प्रमाण रहित)

पकरन वारे चउ४नकौं, मुख्य सचिव किय रान ॥ ८७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७ राशौ कोटापतिदुर्ज्जनशल्यश्रीद्वारगमनसप्त ७ स्वरूपैकत्रकरणबुन्दीन्द्रपुरोहितदयारामोदयपुरप्रेषणदीपसिंहार्थपटोपनामकनिर्वाहवसुप्रार्थनतत्सलूमरीशकेसरिसिंहाऽपहसनव्यासदोलतरामवाक्सहायविरचनराणाजगत्सिंहाऽनङ्गीकरणतद्राजकुमारप्रतापसिंहस्वीकरणपटावेघमप्रेषणविचारणाद्यौद्धत्यधारणतद्राणाकुमारकाराक्षेपणतद्भटोम्मेदसिंहकुमाररणमरणराणासोदरनाथादिसचिवचतुष्टयी ४ करणं चतुर्थो४मयूखः ॥ ४ ॥ ॥ २८५ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ चूलिकाआला ॥

नृप उमेद इत व्याह किय, मालव धर पुर गर्गराट पति ॥
झल्ला दलपतिकी सुता, चिमनकुमरि अभिधान महामति॥१॥
सक नव नव सत्रह१७९९समा, नवमी९राधं बैलच्छ लगन किय॥
गुर्न३वासर रहि स्वसुर ग्रह, बेघम आनि मिलान बहुरि दिय॥२॥
प्रतिदिन बुंदिय लैन पटु, बढत भूप उम्मेद बलापति ॥

॥ ८७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में कोटा के पति दुर्जनसाल का नाथद्वारा में जाना सात स्वरूपों को इकट्ठा करना बुन्दी के राजा के पुरोहित दयाराम को उदयपुर भेजना दीपसिंह के अर्थ पटा है उपनाम जिसका ऐसे निर्वाह (खरच निबाहवे) की प्रार्थना करना उसकी सलूमर के पति केसरीसिंह का हँसी करना व्यास दोलतराम के वचन की सहायता करने को राणा जगत्सिंह का अस्वीकार करना उसको राणा के राज कुमार प्रतापसिंह का स्वीकार करके पटा बेघम भेजने का विचार करना आदि उद्धतता धारण करने से राणा का उस कुमर को कैद करना उस कुमर के वीर कुमर उम्मेदसिंह का युद्ध में मरना राणा का सगा भाई नाथसिंह आदि चारों को सचिव करने का चौथा ४ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ पिच्यासी २८५ मयूख हुए ॥

१ नाम ॥ १ ॥ २ वैशाख ३ सुदि ४ तीन दिन ५ मुकाम ॥ २ ॥ ६ आगा चला

सावन गत आसार[1] कै, कै सित पक्खग[2] द्वैज[3]कलापति ॥३॥

॥ सोरठा ॥

सुनि बुंदिय यह सोर, चूक दलेल बिचारिकैं ॥
चूंडाउत वह रोर[4], मारन वेघम मुक्कलिय ॥ ४ ॥
भोपसिंह तस संग, हरदाउत हड्डा दियउ ॥
जो पति धोवड़ ढंग, सालम सुत हितकर[5] कुटिल ॥ ५ ॥
दोउ२न वेघम आय, द्विरद[6] मत्त निज छोरि दिय ॥
जान्यौं कोतुक[7] पाय, सिसु उमेद ऐहैं लखन ॥६॥
तबहि दगा बल ताहि, मारि रु बुंदिय मुक्कलहिं[8] ॥
इम सठ उभय२ उमाहि, पहर तीन३ गज सँग फिरिय॥७॥
सो सुनि लखन न आय, सानुकूल नृपकी नियति[9] ॥
छन्न गये दुख छाय, मुह बिगारि दुव२ सठ दुमन ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

जैपुर नृप जयसिंह इत, जित्ति मरुस्थल जुद्ध ॥
अद्वितीय अप्पहिं समुझि, मान गहिय बनि मुद्ध[10] ॥ ९ ॥
मद्य पान हित गिनि मुदित, निस दिन रचत अनंत ॥
निधुंवन[11] रुचि धप्पत नहिन, दम हुव आगम अंत[12] ॥ १० ॥
निस रु दीह आसव नसा, रक्खत हृदय अरूढ[13] ॥
छोरत नहि कामुक छगल[14], मंजों[15] नारिन मूढ ॥ ११ ॥
ऐसी विधि अवसानके[16], आगम हुव कछवाह ॥

नामक पर्वत का पति कहता है १ श्रावण की मेघ धारा बहै जैसें २ किंवा शुक्ल पक्ष के द्वितीया के ३ चन्द्रमा की कला बढै जैसे ॥ ३ ॥ ४ वह सलूंमर के रावत का छोटा पुत्र रोड़सिंह ॥ ४ ॥ ५ सालमसिंह के पुत्र (दलेलसिंह) का हित करने वाला ॥ ५ ॥ ६ मस्त हाथी ७ तमाशा जान कर ॥ ६ ॥ ८ भेजे-में ॥ ७ ॥ ९ भाग्य ॥ ८ ॥ १० सुखी बन कर ॥ ९ ॥ ११ मैथुन से १२ अंत समय का आगम हुआ ॥ १० ॥ १३ हृदय पर चढा हुआ १४ मद कामी नगारा १५ स्त्रियों रूपी झाड़ियों ([illegible]) को नहीं छोड़ता ॥ ११ ॥ १६ कछवाह के अन्त का ॥ १२ ॥

राजामल सिर राज्यकी, रक्खी निबहन राह ॥ १२ ॥
बैद्न[1] सेन ओषधि बल्लन, अधिक ठानि आहार ॥
उभय[2] घटी ओदन[3] अदन, बढ्यो कुरम इहिं बार ॥१३॥
आगम[4] सकल अनंग[5]के, सठ एकांत सुधाय ॥
मोहन[6] मेहन[7] वृद्धि सुख, सेध[8] देवा[9] दरसाय ॥ १४ ॥
बरज्यो जदपि चिकित्सकन[10], मन्न्यो तदपि न मंद[11] ॥
आराधत अदिरैत[12] अतुल, आसव सुरत अनंद ॥ १५ ॥
राजामल इक दिन कहिय, क्यों नृप करत कुजोग ॥
अक्खी तुम छत हम अभय, भुग्गत अब यह भोग ॥१६॥
हुव प्रमत्त जयसिंह इम, मन लगि मोहन[13] मद्य ॥
अवर कोन मम सम यहै, सोधि गरब गहि सद्य[14] ॥ १७ ॥

॥ रोला ॥

इकदिन आसव मत्त होय कछवाह मूढ मति ॥
उदयनैर लिखवाय पत्र पठयो रानाँ प्रति ॥
मम आदेस[15] अमोघ[16] चतुर जगतेस बिचारहु ॥
बेघम जे बुधसिंह नंद निज देस निकारहु ॥ १८ ॥
सुनि यह कूरम कथित[17] रान जगतेस भीरु[18] बनि ॥
दिय बेघम आदेस देस मम तजहु भूप भनि ॥
यह सुनि भूप उमेदसिंह अरु दीप भ्रात हुव २ ॥
कछु दिन कठिन निकारि धारिय धरनैन चित्त ध्रुव ॥ १९ ॥

---

१ वैद्यों से बल बढाने की औषधियों के सेवन से बहुत भोजन करके दो दो घड़ी में २ अन्न ३ खाना ॥ १३ ॥ ४ सब शास्त्र ५ कामदेव के. एकान्त में दिखवा कर ६ मैथुन की और ७ लिंग की वृद्धि (बढाना) ८ आदि ९ औषधी का सेवन करके दिखाया अर्थात् औषधिय खाकर मैथुन और लिंग की वृद्धि दिखाई ॥ १४ ॥ १० वैद्यों ने मना किया तो भी ११ वह मूर्ख नहीं माना १२ निरन्तर, मद्य और मैथुन के अत्यन्त आनंद का आराधन (साधन) करता रहा॥१५॥१६॥१३मैथुन१४तुरंत (शीघ्र)॥१७॥१५मेरा हुकम१६ पीछा नहीं फिरने (खाली नहीं जाने) वाला॥१८॥१७जयसिंह का कहा हुआ१८कायर॥१९॥

सक ख अभ्र बसु सोम१८००असित पंचमि५असाढ गत॥
कोटा जनपद्[2] कामिय[3] छोरि बेघम रन उद्धत ॥
सुनि यह दुज्जनसल्ल भीरु कूम्म भय भाखिय ॥
निज ढिग बुल्लिय नाँहिं दुहुँन मधुकरगढ राखिय ॥ २० ॥
रहिय तत्थ चउ४मास भूप उम्मेद अनुजें सह ॥
मृगयादिक कोतुक अनेक रचि बीर महा[6] मह ॥
घाँट[7] रुक्कि गिर घेरि झुंड तुपकन नृप झारे ॥
अति प्रगल्भ आयुधन सद्धि मृगपति बहु मारे ॥ २१ ॥

॥ रुचिरा ॥

इत[9] कूरम नृप रोग बिबसि हुव देह बिकसि कृमि[10] पुंज[11] परे ॥
मास बहुत यह दुक्ख सह्यो अरु गूद[12] पैलल[13] तनु[14] बिकृन[15] गरे ॥
इक१अंगुल परिमित[16] लंबे कृमि स्याम लैंगन[17] सब देह धसे ॥
त्वच[18]१लोहित[19]२पल[20]३मेद[21]४न खावत अस्थिन[22] अंतर बिबिध बसे२२
भस्म तल[23]पै सोवत दुख भाजन[24] नैंक न पीड़ित निंद लहैं ॥
जिम बिकसत तरबूज पक्यो इम बिग्रह[25] रंचन गाढ गहैं ॥
सुप्त[26]हि मूत्र तथा मल मोचन निज[27]कृत दुरितन[28] चिंतिकैं[29] ॥

१ कृष्णपक्ष की २ देश में ३ गये ॥ २० ॥ ४ छोटे भाई दीपसिंह सहित ५ शिकार आदि ६ बड़े उत्सव रचकर ७ घाटा रोककर ८ शस्त्रों में बुद्धिमान् अथवा उस बुद्धिमान् ने शस्त्रोंका साधन करके बहुत सिंह मारे ॥ २१ ॥ ९ कछवाहों का राजा जयसिंह रोग वश हुआ जिसका शरीर फटकर उसमें १० कीड़ों के ११ समूह पड़गये सो कई मास तक यह दुःख सहा और १२ चरबी व १३ मांस १४ शरीर से १५ ग्लानि युक्त होकर गिरा १६ एक अंगुल के प्रमाण वाले १७ काले मुख के कीड़े सब शरीर में घुस गये वे कीड़े१८चमड़ी१९रुधिर२०मांस२१चरबी नहीं खाकर २२ हड्डियों के भीतर घुसगये ॥ २२ ॥२४उस दुःख के पात्र (राजा जयसिंह) ने २३ भस्म की शय्या पर शयन करके उस पीड़ा में नींद नहीं ली २५ शरीर २६ वह राजा सोया हुआ ही मल मूत्र का त्याग करता था और २७ अपने किये हुए२८पापों को २९ याद करता था

अनुज[1] विजय तिय मात सुतादिक[2] मारिय ते सब दिट्ठि[3] परि॥२३॥
इम अति कष्ट बिकल कूरम नृप संचित अघ भर[4] भूरि[5] भज्यो ॥
खखवसुससि१८००बिक्रमसक इसगत[6] बिसँद[7] चतुर्दसि१४देहतज्यो
हुव जैपुर घर घर हाहारव[8] अंतहपुर[9] अति त्रास परयो ॥
ईस्वरिसिंह तबहि पट्टप सुत देखि निगम[10] बिधि दाह करयो।२४।

॥ दोहा ॥

इम उमेद नृप भाग बल, तजिग देह कछवाह ॥
यह उदंत[11] दिस दिस उडिग, हुव अरि घग्न उछाह॥ २५ ॥
यह कथ सुनि कोटा अधिप, खुसिय मन्नि तजि खेद ॥
मधुकरगढतैं अनुज जुत, बुल्ल्या निकट उमेद ॥ २६ ॥
मधुकरगढ सामंत हर, हड्डा हरजन नाम ॥
किल्लापति कोटेसको, जु हो भुजिष्या[12] जाम ॥ २७ ॥
मुख्य सचिव बुंदीसको, कोटापति वह किन्न ॥
कोटा आय उमद नृप, हयन हेर चउ४लिन्न ॥ २८ ॥
लेत हैयन[13] कोटेस लखि, अक्खी भूपहिँ एहु ॥
तुम हित हम रक्खत कँटक[14], लग्गैं खग्च सु देहु ॥ २९ ॥
सुनि नृप निज भूखन दये, मोल लक्ख दुव२ दम्म ॥
इक१ किलंगिय कँटक[15] जुग२, करन जंग भुव कॅम्म[16] ।३०।
लोभी दुज्जनसल्ल सठ, लखी बिपत्ति न रंच ॥
इम भूखन बुंदीसके, लिन्नँ कपट प्रपंच ॥ ३१ ॥

---

१ छोटे भाई विजयसिंह, माता और २ पुत्र आदि को मारे थे वे सब ३दीखने लगे ॥ २३ ॥ ४ संचय किये हुए पाप के भार को ५ बहुत भोगा ६ आश्विन मास के ७ शुक्ल पक्ष की ८ शब्द ९जनाने में १० वेद विधि से॥२४॥११वृत्तान्त ॥ २५ ॥ २६ ॥ १२ पासवान स्त्री का पुत्र ॥ २७ ॥ १३ अच्छे हेर कर चार घोड़े लिये ॥ २८ ॥ १४ तुम्हारे लिये सेना रखते हैं जिसका खरच लगै सो दो ॥ २९ ॥१५मस्तक पर लगाने की एक जड़ाऊ किलंगी और हाथों के १६ दो कड़े दिये पृथ्वी के लेने के अर्थ युद्ध का १६ कार्य करने को ॥ ३० ॥ ३१ ॥

तदनंतर[1] दल[2] इक्क सहँस१०००, पठयो बुंदिय सीम ॥
आय रु तिहिँ लुट्टिय मुलक, भेद मचायउ भीम[3] ॥ ३२ ॥
नृपति ईस्वरीसिंह हुव, इत जैपुर लहि पट्ट ॥
श्रद्धाजुत करि जनकको[4], प्रेतकरम विधि वट्ट[5] ॥ ३३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ भूभृदुम्मेदसिंहमालवगगराटपतिझल्लादलपतिसिंहपुत्रीप्रथमोद्वहनतन्मारणदलेलसिंहविचारणकूर्मराजमद्यमदमज्जनललनालोलुपाभवनोदयपुरदलप्रेषणराणाहदेन्द्रदेशनिष्कासनजयसिंहमरणतदुम्मेदकोटाऽऽह्वयनकोटेशतद्रूपणमार्गणसेनासमुच्चयनबुन्दीदेशविग्रहकरणजयपुरेशेश्वरीसिंहपट्टप्रापणं पञ्चमो ५ मयूखः ॥ ५ ॥ ॥ २८६ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

कोटापुर इत मंत्र किय, दुज्जनसल्ल उमेद ॥
इक्कत करि हड्डे अखिल, भाखिय संगर[6] भेद ॥ १ ॥
काह भट वेणीरामसौं, कोटापति कर जोरि ॥
गिनत तुम्हैं सब भूप गुरु, छल रु छोनि[7] छक्क छोरि ॥ २ ॥
यातैं जैपुर जाहु तुम, बुंदिय लैन उपाय ॥

१जिस पीछे २ सेना ३ भयंकर ॥ ३२ ॥ ४ पिता का ५ रीति के मार्ग से॥ ३३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में भूपति उम्मेदसिंह का मालवे में गागरूण के पति झाला दलपतसिंह की पुत्री से प्रथम विवाह करना १ उम्मेदसिंह को मारने का दलेलसिंह का विचारना २ कछवाहों के राजा (जयसिंह) का मद्य के नसे में डूबकर स्त्रियों का लोलुपि होना और उदयपुर पत्र भेजना ३ राणा का उम्मेदसिंह को देश बाहर निकालना ४ जयसिंह का मरना और उम्मेदसिंह को कोटा में बुलाना ५ कोटा के पति का उम्मेदसिंह से भूषण लेना ६ सेना एकत्र करके बुन्दी के देश में उपद्रव करना ७ जयपुर के राजा ईश्वरीसिंह के पाट बैठने का पांचवां ५ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ छियासी २८६ मयूख हुए ॥

६ युद्ध का ॥ १ ॥ ७ भूमि का घमंड छोडकर ॥ २ ॥

कूर्म जो यह स्वीकरैं, तो लग्नौं न हिताय ॥ ३ ॥
हम जावन श्रिपद्वार पुनि, मिलहिं रानसौं तत्थ ॥
करहिं न हित कछवाह तो, सज्जहिं उभय समत्थ ॥ ४ ॥
यह सुनि भट जैपुर चलिय, दुज्जनसल्ल श्रिपद्वार ॥
अन्नकूट सद्दिय समय, अधिक भक्ति उपचार ॥ ५ ॥

॥ हीरकम् ॥

पुनि रानहिं पठयो दलैं अप्प मिलन आइये ॥
माधव्व निज भागिनेय हित हु हृदय लाइये ॥
बुंदिय पुर लैन कोहु मंत्र मिलि रु ठानिहैं ॥
ढुंढाहर मद्दिनि पर सज्जि समर तानिहैं ॥ ६ ॥
यह सुनि जगतेस रान कुंच करिय बेगहीं ॥
कोटापतिके मिलाप नीति रीति के गही ॥
उदयनगरके समीप सेनहिं फरमानदे ॥
नाहरमगराभिधान थान तहँ मिलानदे ॥ ७ ॥
कोटापति पाँय पास प्रीति पत्र प्रेरयो ॥
आवहु मिलिहैं इहाँहिं जो तुम हित हेरयो ॥
कोटेसहु सुनत एह नाहरमगर गयो ॥
रानहिं मिलि रीतिसहित मंत्र सहित मंडयो ॥ ८ ॥
अग्गैं असमंस रानकी पुत्रिय ब्याहिवे ॥
रौनाउ त दुर्लभ गिनि चिंतित जस चाहिवे ॥
निजकर जयसिंह कुंम्भ कग्गर लिखी की सही ॥

१ कछवाहा ईश्वरीसिंह २ स्वीकार करै तो लड़ना ३ हित नहीं है ॥ ३ ॥ ४ लड़ें ५ समर्थ ॥ ४ ॥ ६ पूजना ॥ ५ ॥ ७ पत्र ८ आपके भानजे माधवसिंह के हित को ९ भूमि १० युद्ध ॥ ६ ॥ ११ नाम १२ मुकाम ॥ ७ ॥ १३ पावों के पास (आगामि समय में बुंदी को दबावेगा इससे यह विशेषण दिया है) १४ हित के साथ सलाह की ॥ ८ ॥ १५ राणा की पुत्री को १६ कछवाहा जयसिंह ने पत्र लिखकर १७ सही की

रानाउति पुत्र होहिँ ढुंढाहर ईस ही[1] ॥ ९ ॥
पहिलैं इतनी लिखाय रानहु तनया[2] दई ॥
चिंतहु पटु[3] नीति अप्प तथ्य[4] न सब जो भई ॥
जिट्ठहि जयसिंह पुत्र राज्य अखिल अंगम्यौं[5] ॥
माधव हित कछु दयो न नँति जुत तुमसौं नम्यौं ॥ १० ॥
बुंदिय दुवरहत्थनं गाह छोरनहु न उच्चरैं ॥
अप्पन इहिँ कारन दुवर सज्जित दलकौं करैं ॥
दोउनर यह मंत्र थाप्प इक्कत पृतना[10] करी ॥
बिप्र सु उत बखिराम कूर्म प्रति उच्चरी ॥ ११ ॥
छिन्निय जयसिंह सोहि बुंदिय अब दीजिये ॥
कूर्म उपकार यहहि काटा सिर कीजिये ॥
राजामल्ल जुत नरेसैं[11] बिप्रहिँ तब अक्खई ॥
बुंदिय हमरे पिचंडैं[12] क्यौंकरि काढिहै गई ॥ १२ ॥
अक्खिय सुनि एह बिप्र तुंद कैंतरि[13] कढ्ढिहैं ॥
दुंदर[14] दल हंकि हड्ड जैपुर सिर चढ्ढिहैं ॥
यह कहि द्विज आय बत्त हड्डनपति सौं कही ॥
सो सुनि चहुवान रान सज्जिय पृतना[15] सही ॥ १३ ॥
लंबित धुजदंड मत्त हत्थिन सिर खुल्लये ॥
बीरहु निज निज समस्त बंधन[16] बल बुल्लये ॥
त्रंबक डक बज्जि बेग सिंधुन[17] स्वर लग्गये ॥
पव्वय डगमग्गि भोग भोगियं[18] भैर[19] भग्गये ॥ १४ ॥

१इस रानावती के पुत्र होगा सोही निश्चय जयपुर का पति होगा॥९॥२ पुत्री ३ आपनीति चतुर हो सो विचारो४वह सत्य नहीं हुई ५ जयसिंह के ज्येष्ठ पुत्र (ईश्वरीसिंह) ने६सब राज्य दबालिया७नम्रता सहित ॥ १० ॥ ८ दोनों हाथों से पकड़कर ९ सेना को १० सेना एकत्र करी ॥ ११ ॥ ११ ईश्वरीसिंह ने १२ हमारे पेट में है सो ॥ १२ ॥ १३ पड़े पेट को चीरकर १४ दुःख से घर्षण की जावै ऐसी सेनाको १५ सेना ॥ १३ ॥ १६ सेना बांधने के लिये बुलाये १७ वीर रस को बढानेवाला राग विशेष १८ नाग के फण १९ भार से टूटे ॥ १४ ॥

*संकुलि धर धूलि धुंधि रुंधि रु रवि ढंकयो ॥
†चिक्कार लखि चंड चेत दिग्गज गन संकयो ॥
दिकपालनके ‡कपाल नाटसालसे चुभे ॥
बीर सु मगरूर मंडि हूरन हित के लुभे ॥ १५ ॥
सागर सब लै हिलोर ओर ओर उज्झले ॥
हाटक[1]गिरिके समस्त शृंग भंग ह्वै हले ॥
कोटापति सेन रान सेन उभय२ यों चली ॥
सो सुनि कछ्वाह भूप इक्कत[2] दल कैं बली ॥ १६ ॥
मंडिय दरकुंच रान सम्मुह [3]मगरूरतैं ॥
मानहु घन भद्द मास पाय पवन पूँरतैं[4] ॥
राजामल कग्गर लिखि रान निकट पिछ्यो[5] ॥
हड्डनके पेचमाँहिं [6]मानस तुम क्यौं दयो ॥ १७ ॥
जो हित हमसौं बनैं सु आगन [7]सन नाँ बनैं ॥
आवत हमहू हजूर अप्पन सिरही[8] मनैं ॥
माधव निज जामिंज[9] हिन बंटि पहुमि लीजिये ॥
हड्डन सन भिन्न होय नैं[10]कहु न पतीजिये ॥
॥ दोहा ॥
यह दल[11] अग्गाहि मुक्कल्यो, राजामल्ल सचिवेन[12] ॥
पुनि नृप ईस्वरिसिंह जुत, सम्मुह हंकिय सेन ॥ १९ ॥
इत रान रु कोटेस दुव२. बग सु [13]कग्गर बंचि ॥

*भूमि पर रज छाकर †इस सेना को नाद्यना देखकर चीत्कारों कर के चित्त से दिशा-ओं के हाथियों का समूह शंकायुक्त हुआ ‡नहीं निकलने वाले साल. 'कि' से मानों अथ समझा जाता है इसीप्रकार 'कै' से कितने यह अर्थ सब जगह जानना चाहिये) ॥ १५ ॥ [1] सुमेरु पर्वत के शिखर [2] सेना इकट्ठा की ॥ १६ ॥ [3] घमंड से [4] पवन के समूह से [5] भेजा [6] मन ॥ १७ ॥ [7] आपको मस्तक पर मानते हैं [8] वाहिन का पुत्र [10] विश्वास मत करो ॥ १८ ॥ [11] पत्र [12] सचिवों का पति ॥ १९ ॥ [13] वह पत्र बांचकर

धाये सम्मुह स्वरचि धन, सेना अतुलित संचि¹ ॥ २० ॥
नगर जाजपुरके निकट, जामोली इक ग्राम ॥
उतरि तहँ भूपति उभयर, किय चालीस मुकाम ॥ २१ ॥
सगताउत सावर² अधिप, इंद्रसिंह अभिधान³ ॥
तिहिं दब्यो इक रानको, नगर देवली थान ॥ २२ ॥
ताहि तजन जगतेस तब, बहुत कहाई बत्त ॥
सगताउत मन्नी न सो, सुररि रह्यो जिम मत्त⁴ ॥ २३ ॥
इहिं रानौ अब देवली, रचन लैन⁵ गढ गारि ॥
राजाउत भारत⁶ सहित, पठयो कटक⁷ प्रचारि ॥ २४ ॥
दलहिं⁸ जात अब देवली, सुनि सावर पति पुत्त⁹ ॥
सालम नाम सु सांजि बनि, धम्यो लरन गढ धुत्त¹⁰ ॥ २५ ॥
दिन पंचक५ पहिलैं सहे, व्याह्यो सालम वीर ॥
कंकन मोचन हू न किय, हुव जुज्झन हमगीर ॥ २६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७ राशावुम्मे-
दसिंह १ दुर्जनशल्य २ मन्त्रणावर्णनरामभट्टजैपुरप्रेषणकोटेशश्रीद्वा
रगमनराणासमाह्वयननाहरमगराभय २ मिलनवर्णनरामेश्वरीसिं-
हविरसीभवनभट्टपत्यागमनराणामहारावसेनाभिनिर्याणतदभिमुख
कूर्मराजाऽऽगमनदेवलीकुमारसालमसिंहसज्जीभवनतद्राणासैन्य

१ एकत्र करके ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ २ सावर का पति ३ नाम ॥ २२ ॥ ४ मस्त हाथी के जिसप्रकार ॥ २३ ॥ ५ इस कारण देवली नामक नगर लेने को ६ भारतसिंह ७ सेना भेजी ॥ २४ ॥ ८ सेना को देवली जाती हुई सुनकर ९ पुत्र १० अनम्र ॥ २५ ॥ २६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह और दुर्जनसाल का सलाह करना १ भट्ट वर्णराम को जयपुर भेजना २ कोटा के पति का नाथद्वारे जाकर राणा को बुलाना ३ नाहरमगरा नामक स्थान पर दोनों का मिलना ४ वर्णराम और ईश्वरीसिंह का परस्पर विरस होना ५ भट्ट के पीछे आने पर राणा और महाराव का सेना सहित गमन करना ६ इन के सम्मुख कछवाहों के राजा का आगमन ७ देवली में कुमर सालमसिंह का

भारतसिंहप्रेषणाशंसनं षष्ठो ६ मयूखः ॥ ६ ॥ ॥२८७॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ मुक्तादाम ॥

गह्यो जिहिँ अग्ग प्रताप कुमार, वहै हुव भारतसिंह तयार ॥
दयो तस संग अभंग अनीक, सजे भट उद्धत चाहि समीक ।१।
सिगाहि कह्यो सबसौँ इम रान, लहो गढ घोर रचो घमसान ।
चल्यो सुनि भारतसिंह प्रचंड, उमंगत हंक्किय सेन अखंड ॥ २ ॥
भयो दिक्कपालन मोह भेपान, प्रकंपत दिग्गज भुल्लिय प्रान ॥
मचक्किय पन्नगकी फनमाल, भचक्किय पक्किय सूकर भाल ॥३॥
छुछक्किय अद्रिनतेँ कटि धातु, लचक्किय लोक कहैँ हरि पातु ॥
सरक्किय एम उदैपुर चंक, फरक्किय हत्थिनपैँ बैहरक्क ॥ ४ ॥
करक्किय कंकटकी कटिकालि, ढरक्किय पब्बय शृंगन ढालि ॥
खरक्किय खप्पर जोगिनि संग, झरक्किय नालन अग्गि दमंग ॥५॥
घुरक्किय अक्खर पक्खर घोर, थरक्किय अच्छरि अंबर ओर ॥

सज्ज होना ८ उस पर महाराणा का सेना सहित भारतसिंह को भेजने के कथन का छठा ६ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ सित्यासी २८७ मयूख हुए ॥

जिसने पहिले राणा के कुमर १ प्रतापसिंह को पकड़ा था वह भारतसिंह तैयार हुआ २ सेना ३ युद्ध करना चाहकर ॥ १ ॥ ४ युद्ध ॥ २ ॥ ५ भयंकर ६ धूजते हुए ७ शेषनाग का (यहां फनमाल शब्द के योग से शेषनाग का ग्रहण है) भचक लगने से ८ वराह का ललाट पक गया ॥ ३ ॥ पर्वतों से धातु की पिचकारियें छूटने लगीं और भूलोक आदि लचककर कहने लगे कि हे परमेश्वर ९ रक्षा करो १० इसप्रकार उदयपुर की सेना चली और हाथियों पर ११ ध्वजायें उड़ीं ॥ ४ ॥ १२ कवच की १३ कड़ियों की पङ्क्तियें टूटने लगीं और १४ पर्वतों के शिखर चलायमान होकर गिरने लगे और योगिनियों के साथ खप्पर बजने लगे १५ घोड़ों की नालों के साथ १६ अग्नि के कण झड़ने लगे (डिंगल भाषा में दमंग शब्द अग्नि और अग्निकण दोनों का वाचक है ॥ ५ ॥ घोड़ों की पाखरों का आकाश में घोर शब्द हुआ; अथवा नहीं च्युत होने (गिरने) वाली पाखरों का भयंकर शब्द हुआ १७ आकाश की ओर अप्सराएं ठहरीं

दरक्किय छोनिय दारिम रीति, भरक्किय खंड चउद्दह१४भाँति[2] ॥ ६ ॥
घमंकिय घोरन घुग्घरमाल, चमंकिय सेल्लन सोचि[3] सचाल[4] ॥
छमंकिय अच्छरि नेउर गैन[5], झमंकिय भूखन लक्खन लैन[6]॥७॥
टमंकिय त्रंबिय बंबियँ बज्जिज, ठमंकिय घंट मतंगन गज्जिज ॥
डमंकिय डाहल[9] डिंडिम लोल[10], ढमंकिय सद्दल[11] मद्दल[12] ढोल ॥८॥
द्रमंकिय दुंदुभि[13] दिग्घ द्रमाम[14], धमंकिय धुज्जिज रसातल धाम ॥
उलट्टिय सेन कि सागर अंभ[15], पलट्टिय जानि पुरंदर[16] जंभ ॥ ९ ॥
चल्यो इम रान महीपति चंक्क[17], लग्यो उडि पावक तोप ललक्क ॥
लयो गढ देवलिका गरदाय[18], धम्यौं रन तोपन भुम्मि धुजाय॥१०॥
कही तँह भारत[19] सालम काज, मिलौं गढ छोरि लहो अब[20] आज॥
यहै सुनि बीर न किन्न अबेर[21], कहाइय सालम जुज्झन केर।११।
उदैपुरको दल[22] दुर्लभ लाय, इहाँ तुमसे भट पाहुन आय॥
[23]नकैं हम जो तुमरी मनुहारि, लजैं पितु मात लगैं कुल गारि१२
खरे तुमहू नय[24] जानत ख्यात[25], करैं सब स्वागत[26] पाहुन आत ॥
अबै इहिकारन धर्महिं धारि, पधारहु स्वीकारि[27] मो मनुहारि ॥१३॥
हुते हम सावरके पति हंत[28], कहाँ तिनकौं सुख स्वर्ग मिलंत॥

और दाड़िम की भांति १ भूमि फटी २ भय से चौदह ही लोक चौंके ॥ ६ ॥ ४ चपलता सहित ३ भालों की कान्ति चमकी ५ आकाश में अप्सराओं के नूपुर बजे और उन अप्सराओं की लारों ६ पंक्तियों में भूषण चमके ॥ ७ ॥ तासे और ७ नगारे बजने का शब्द हुआ ८ हाथियों पर शोभायमान घंट बजे ९ डाहल और डिंडिम आदि देवी और भैरव के वाद्य १० चपलता से बजे ११ उस सेना के साथ अथवा शब्दायमान होकर १२ मर्दल (मांदळ जो मृदंग के आकार होता है) और ढोल बजे ॥ ८ ॥ १३ बड़े नगारे १४ नौबतें बजीं १५ मानों समुद्र के जल के समान सेना उलटी; सो मानों जंभासुर पर १६ इन्द्र पलटा ॥ ९ ॥ १७ सेना चली १८ देवली के गढ को घेर लिया ॥ १० ॥ १९ भारतसिंह ने कुमर सालमसिंह को कहलाया २० प्राण २१ विलंब नहीं किया और सालमसिंह ने युद्ध करने को कहलाया ॥ ११ ॥ २२ सेना लाकर २३ तुम्हारी मनुहार नहीं करें तो ॥१२॥ २५ प्रसिद्ध २४ नीति जानते हो २६ आये का सत्कार सभी करते हैं २७ स्वीकार करके पधारो ॥ १३ ॥ २८ खेद

परंतु कृपाकरिकैं तुम आय, ततो मम बिन्नति मन्नि हितायˡ ॥१४॥
गुरू[2] तुम आसिख अक्खहु एहु, सुपुत्र[3]क स्वर्ग सभा सुख लेहु ॥
कथा यह सालमसिंह कहाय, रुप्यो[4] जिम अंगदकौं रनराय[5] ॥१५॥
रची सुनि भारत[6] तोपन रारि, हनी इन सेन घनी हलकारि ॥
चलैं पबिपात[7] कि गोलक चंड, छिपैं जिम मोर उडैं धुजदंड ॥ १६ ॥
गिरैं गृह मंडप फुट्टि लदाव, नस्यो पुर तोपनके तरकाव ॥
नठे चहुँ[8]कोद निवानन नीर, परी जलजंतुन दुस्सह पीर ॥ १७ ॥
घिरयो पुर देवलिका दल घोर, जम्यौं दुहुँओर प्रबीरन जोर ॥
जँबूरजजावलि तोप तुपक्क, चलैं द्रुत[10] ज्वंडे[11] मचैं धमचक्क ॥ १८ ॥
चुहट्टन हट्टन[12] बट्ट बजार, उडै दमकैं[13] बहु वृंद अँगार[14] ॥
जरंत किरंत[15] बिजाजन पट्ट[16], गुडी[17] जनु लग्गिय राल गरट्ट ॥१९॥
बनिक्कन आपन[19] लग्गि अलाव[20], दहै घन कानन[21] ज्यौं तृन दाव ॥
जरैं घृत आं[22]दिन तेल रु तूल[23], दिवागिय दीपक होत दुकूल ॥२०॥

के साथ १ हित के अर्थ ॥ १४ ॥ २ तुम बड़े हो सो यह आशीर्वाद दो कि ३ हे पुत्र स्वर्ग की सभा का सुख लो, जिसप्रकार यह कथा कहाई तिसीप्रकार वह ५ युद्ध का राजा; अथवा युद्ध ही है धन जिसके ऐसा सालमसिंह ४ शरीर देने को खड़ा हुआ ॥ १५ ॥ ६ भारतसिंह ने ७ वज्र पड़ने के समान भयंकर गोले चलते हैं और मयूरों के समान उडते हुए ध्वजादंड शोभा पाते हैं ॥ १६ ॥ ८ चारों दिशा के जलाशयों का जल नष्ट होगया ॥ १७ ॥ देवली नगर भयंकर ९ सेना से घिर गया और विशेष वीरों का बल दोनों ओर जमा १० शीघ्र ११ भयंकर चलकर युद्ध हुआ ॥ १८ ॥ उन तोपों के चलने से चौहटा, दुकानें १२ मार्ग और बजार में अग्नि के १४ अंगारों के बहुत समूह उडकर १३ चमकते हैं जिनसे बजाजों के १६ वस्त्र जलकर १५ गिरते हैं सो मानों १७ पतंग (कनकौवा) अथवा गांठ के १८ समूह में अग्नि लगी (यहां अग्नि का अध्याहार ऊपर के प्रकरण से होता है) ॥ १९ ॥ इसप्रकार बनियों की १९ व्यापार की गलियों में २० अग्नि लगकर बहुत तृणोंवाले २१ वन को अग्नि (लाय) जलावे तैसे जलाता है जिसमें घी २२ अन्न २३ रुई जलती है सो मानों दीपक ही हैं वस्त्र जिसके ऐसी दीवाली होती है और उस ज्वाला में काष्ठ के छप्पर और फूस की टपरियें अथवा टापरे (फूस के छाये घर जलते) हैं

जरैं कटछप्पर टप्पर ज्वाल, झगैं जिम फग्गुन होरिय झाल ॥
छिकैं बहु अट्टनं कंगुर छुट्टि, तरक्कत पत्थर छात्रिन तुट्टि ॥ २१ ॥
परैं प्रजरैं बहु मंच[2] कपाट, घिरयो पुर पावक[3] दुस्सह घाट ॥
जरैं सँसिसालन[4] ज्वालन[5] जूह[6] दगैं[7] गृह अंगन अग्गि दुरूह[8] ॥ २२ ॥
द्रवैं जरि नागं रु बंग अदब्बरैं[12], उडैं लगि पावक पारद अंभ[13] ॥
मनौं गढको अघ मेटन मान, करायउ सालम अग्गि सनान ।२३।
घने दिन भो रन तोपन घोर, छिक्यो गढ गोलन मार दुओर ॥
कढ्योतब सालम खुल्लि कपाट, झुक्यो रन बीर बजावत झाट २४
बजी सगताउतकी हतबाँह[14], चले कर ओदन[15] ज्यौं सिसु चाह ॥
उडैं हय खंधगिरैं असवार, कटैं भट छत्तिन छेदि कटार ॥ २५ ॥
तरक्कत टोपनपैं तरवारि, दिपैं मनु देवल झल्लरि झारि ॥
कटैं फटि कंकट[16] बीरन अंग, तजैं निरमोक[17] कि भीम[18] भुजंग ॥२६॥
चटक्कत टोप समस्तक[19] चीर, किधौं जगदीस प्रसाद[20] करीर ॥
उलट्टत अब्बनं[21] तुट्टन तंग, पलट्टत के जिम एनं[22] पलंग[23] ॥ २७ ॥
झरैं गज सुंडिन झंडन झुंड, रचैं घन घुम्मत तंडव[24] रुंड ॥

सो जैसे फाल्गुन मास में होली की झाल जलै तैसे जलते हैं १ बहुत बुरजों के कांगरे छूटकर वे छिकती हैं और छात्रियों से तड़ककर पत्थर टूटते हैं ॥ २१ ॥ बहुत से २ मांचे और कँवाड़ जलकर गिरते हैं इसप्रकार नहीं सहन की जावे तिस रीति के ३ अग्नि से वह पुर घिरगया ४ चंद्रशालाओं (सब के ऊपर के मकानों) में ५ अग्नि का ६ समूह जलता है और घर के चौक में ८ कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसा अग्नि ७ जलता है ॥ २२ ॥ वहां १० सीसा ११ रांगा जलकर १२ बहुत ९ बहता है और उसके अग्नि से पारा उड़कर १३ आकाश में लगता है ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ १४ प्रहार १५ चावल खाने पर बालक के हाथ चलै तैसे ॥ २५ ॥ १६ कवच फटकर वीरों के अंग निकसते हैं सो मानों १८ काला सर्प १७ कांचली छोड़ता है ॥२६॥ १९ टोप फटकर मस्तक सहित चीरें होती हैं सो मानों जगदीश के प्रसाद का २० घड़ा फटता है (जगदीश के प्रसाद से भरेहुए घड़े का चौफाड़ होकर फटजाना प्रसिद्ध है) २१ तंग टूटकर घोड़े उलटते हैं और कितने ही घोड़े जैसे २२ हरिण पर २३ चीता पलटे तैसे पलटते हैं ॥ २७ ॥ २४ विना मस्तक

परैं दग *रत्त फदक्कन पुंज, गिरैं जिम सीतसमै पकि †गुंज॥२८॥
थरक्कहिं अंबर अच्छरि थट्ट, भरक्कहिं भीरुक ‡उब्बट बट्ट ॥
परैं कति पक्खर §बग्ग पलान, मरैं भट छाकि रजोगुन मान॥२९॥
उरज्झत ¶अंत्रन गिद्ध अनेक, तरफ्फन घायल मूढ किते क ॥
किलक्कहिं कालिय कूदि कराल, खलक्कहिं सोहित लोहित खाल॥३०॥
छुलक्कहिं घाय छछक्कन रैत्त, भलक्कहिं सूरन ओज उमत्त ॥
न तक्कहिं कातर दूरहु नंठि, ललक्कहिं बावन५२ ओ चउसट्ठि६४॥३१॥
उलट्टत हाथिनतैं भट आंहिं, मनों निहरी नट भग्गल माँहिं ॥
उछट्टहिं आयुध तुट्टहिं तोनैं, सुलट्टहिं केतै उचट्टहिं सोनैं ॥ ३२ ॥
दपट्टहिं बाजिनैं जुट्टहिं दाव, झपट्टहिं ज्यौं तरितौ झमकाव ॥
झटक्कहिं इक्कहिं इक झंझारि, पटक्कहिं भूतनकौं रन रारि ॥ ३३ ॥
अटक्कहिं पाय रकाबन केक, गटक्कहिं गोदैन गिद्ध अनेक ॥
खटक्कहिं हड्डनपैं लगि खग्ग, छटक्कहिं के उडि अंबरमग्ग॥३४॥
लटक्कहिं थक्कहिं रान अनीकैं, सटक्कहिं के मठ घोर समीकैं
बढ्यौ इम सालम बाजि उडाय, लयो द्रुत भारतसिंहहिं जाय॥३५॥
कह्यो तुम मन्निय मो मनुहारि, अरे दल सज्जि बनैं उपकारि ॥

शरीर नृत्य करते हैं जिसप्रकार शरद ऋतु में पकीहुई † चिरमी गिरे तिस प्रकार * लाल नेत्रों के समूह उछलकर गिरते हैं ॥ २८ ॥ ‡ विना मार्ग § बाग (कुसा) ॥ २९ ॥ ¶ आंतों में १ कालिका २ रुधिर के नाले वहते हुए शोभित हैं ॥ ३० ॥ ३ रुधिर ४ उन्मत्त वीरों का पराक्रम ५ कायर नहीं देखते हैं ६ दूर से भागते हैं ७ जहां केवल चौसठ की संख्या आवै वहां चौसठ जोगनियें जानो, और बावन की संख्या से बावन भैरव जानो ॥ ३१ ॥ ८ उलटते हैं ९ भागल में (हाथी को फांदने के लिये नट लोग लकड़ी (काष्ट) बांधते हैं उस का नाम भागल है) १० भाथे ११ ध्वजा गिरती है १२ रुधिर उडता है ॥ ३२ ॥ १३ घोड़ों को दौड़ाते हैं १४ बिजुली चमके जैसे १५ प्राणियों को भयंकर युद्ध में गिराते हैं ॥ ३३ ॥ १६ मस्तिष्क (भेजा) १७ आकाश के मार्ग ॥ ३४ ॥ १८ राणा की सेना १९ भयंकर युद्ध से भागते हैं २० शीघ्र ॥ ३५ ॥ २१ हठ पूर्वक ठहरे ॥ ३६ ॥

पितामह मोहि गिन्यौं सिसु बर्ग, दयो करुणाकरि दुर्लभ स्वर्ग३६
बच्यो *खिल्ल जो मम आयु बहोरि, मिलौं तुमकौं सु घटी पल जोरि
तज्यो तिहिं याबिधि आखिव कुमार, पर्यो भट औरनपैं रन प्यार
दुर हत्थन स्फारत खग्गन दाय, गयो बहु बैरिनके †असु खाय ॥
घनी अरि नारिन कंकन स्फारि, घनैं मदमत्त ‡मतंगन मारि।३८।
तज्यो पहिलो वह कंकन चाहि, नयो बेलि बंधिय अच्छरि ब्याहि
तज्यो इम सालम मानुजं देह, लयो सुर बिग्रह नूतन नेह ॥३९॥
उदैपुरके बड बीर पचास५०, हनैं अरु अल्प गिनैं उपहास ॥
परे निज बीरहु सत्रह१७ संग, मर्यो इम सालम स्वर्ग उमंग॥४०॥

॥ दोहा ॥

रानाउत भारतँ वहैं, इम रन सालम मारि ॥
रान अमल किय देवली, अप्पन बिजय उचारि ॥ ४१ ॥
सगताउत सावर अधिप, मंद सु सुतहिं मराय ॥
जामोली जगतेसकैं, पांमर लग्गो पाय ॥ ४२ ॥
तदनंतर कछवाह नृप, आयउ कटक अमान ॥
ग्राम नाम पंडेर ढिग, दिन्न मुदित मिलान ॥ ४३ ॥
बुंदियतैं यह सुनि बिदित, करिय दल्लेलहु कुच्च ॥
कूरम ईस्वरिसिंहसौं, उतहि मिल्यो छक उच्च ॥ ४४ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे २ सप्तम ७ राशौ

*थोड़ी की जो मेरी ऊमर बची है वह तुमको मिलो अर्थात तुम जीते रहो मैं मरता हूं यह कहकर सालमसिंह ने उस भारतसिंह को छोड दिया और वह बीर युद्ध में प्यार करके दूसरों पर गिरा ॥ ३७ ॥ † प्राण ‡ मस्त हाथियों को मारकर ॥ ३८ ॥ १ पहिले का डोरडा २ फिर ३ मनुष्य शरीर छोडा ४ देव शरीर लिया नवीन स्नेह से ॥ ३९ ॥ ६ छोटों को गिनने मे हमी है ॥ ४० ॥ ७ भारतसिंह ८ मूर्ख ९ नीच जामोली नामक ग्राम में जाकर राणा जगतसिंह के चरण लगा १०जिसपंक्ति ११प्रमाण रहित १२सुकाम ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में राणा जगतसिंह

राणाजगत्सिंहसेनानीभारतसिंहदेवलीयुद्धकरणाशावरपतीन्द्रसिंह-कुमारमाल्लमसिंहमरणतज्जनकराणाचरणपतनदेवल्युदयपुरकृत्वा रोपराणाकूर्मराजेश्वरीसिंहपराडेरग्रामाशाविरस्थापनतद्दलेलसिंहमिलनं सप्तमो ७ मयूखः ॥ ७ ॥ ॥२२८॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ गगनांगनम् ॥

राजामल्ल कूरमनृप सचिव *नत्थ गो रानपैं ॥
अक्खिय कर जोरि चढन कौंनकाज घमसानपैं ॥
यह सुनि जयसिंह लिखिन लै रु रान वंच्यो तहाँ ॥
आक्खय इहिं पत्रमाँहिं जो लिखो सु अब है कहाँ ॥ १ ॥
बुल्लिय सुनि कुम्भ सचिव जवनईस यह जानिकैं ॥
अक्खिय लिखि पत्र भूप करहु जेष्ठसुत मानिकैं ॥
यौं यहै नृपता भई सु जवनइंद्र फरमानसौं ॥
लोपन तिहिं को समत्थ विरचि बैर बलवानसौं ॥ २ ॥
अप्पहु नृप नीति चतुर समय देस हिय लाइये ॥
किहिं विधि जवनेस हितु समर साज्जि जय पाइये ॥
नाथे जु निज अनुज ताहि तुम दयो सु पुनि पेखिये ॥
गृह गृह नवके यहैहि राजरीति हह देखिये ॥ ३ ॥
अनुचर हहनो तथापि नृपसमेतं मम रावर ॥

अप्पहिँ बहिकाय लरन लैचले सु सठ बावरे ॥
अब मम बिनती बिचारि हुकम धर्मगाहि दीजिये ॥
माधवं हित रीति रक्खि कछु सिवाय भुव लीजिये ॥ ४ ॥
रानहु सुनतहि इतीक गिनि बलिष्ठ कछवाहकोँ ॥
राजामल इंद्रजाल बनि विमूढ तजि राहकोँ ॥
अक्खिय सर लक्ख५०००००दम्म पहुमि माधवहिँ दीजिये॥
सुनतहि द्रुत कुम्मँ सचिव लिखि पटा रु कहि लीजिये ॥
टौंक नगरको समग्न परगनाँ सु लिखि यौँ दयो ॥
रानहु बनि मंद भागिनेय हेत वहही लयो ॥
तदनंतरँ यह उदंत सुनि अनिष्ट कोटेसहू ॥
रानहिँ बहक्यो विचारि तजिय तत्थ मुंद लेसहू ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

राजामल कूरम सचिव, माया बचनन मंडि ॥
दिय माधव हित टौंक पुर, लरन रान मत खंडि ॥ ७ ॥
तदनु रान जगतेस अरु, कोटापति चहुवान ॥
दुव२भूपन कूरम सिविरँ, किन्नो मिलन पयान ॥ ८ ॥
हो पहिलैँ आवन उचित, कुंम्महिँ रान महीप ॥
पै तस पितु सुच मेटनौँ, मन्न्यौँ प्रथम महीप ॥ ९ ॥
यातैँ रान प्रगाहे अब, कानकेँ तखतरवान ॥
रतन छत्र छायिन चल्यो, जँहँ दल कुम्म मिलान ॥ १० ॥
संग गमन कोटेसहू. कूरम डेरन कान ॥

सहित १ माधवसिंह के अर्थ ॥ ४ ॥ २ बलवान् ३ मूर्ख बनकर ४ रुपयों की भूमि ५ ईश्वरीसिंह के सचिव ने ॥ ५ ॥ ६ भानजे के लिये ७ जिस पीछे ८ वृत्तान्त ९ प्रतिकूल१०हर्ष ॥ ६ ॥ ११ माधवसिंह के अर्थ ॥ ७ ॥ १२ जिस पीछे१३कछवाहे के डेरों पर ॥ ८ ॥१४ईश्वरीसिंह को१५जयसिंह का शोक ॥ ९ ॥ १६ सवार होकर १७ सुवर्ण के खासे में १८ छादित (छाया हुआ) १९ जहां कछवाहे की सेना के मुकाम थे ॥ १० ॥

निज निज भट अंदर लये, कलह[1] जई रु कुलीन ॥११॥
तहँ कोटापतिके भटन, किय भटभीरे[2] बिसेस ॥
कीलनसंहित[3] सिरायचे[4], गिरे ठल्लाठल[5] ठेस ॥ १२ ॥
पिक्खत यह कोटेस प्रति, कुम्म[6] भयउ प्रतिकूल ॥
तिम रानहु अहितहि तक्किय, मन फट्टिय सह मूल ॥१३॥
इम रान रु कोटेस दुव२, कूरम डेरन पत्त ॥
रान चित्त पलट्यो समुझि, हुव कोटेस बिरत्त[7] ॥ १४ ॥
तीन३ सहँस कछवाह[8] तहँ, सज्जित[9] पिक्खि सिपाह ॥
कोटापति सब सहि[10] रह्यो, किन्नी इंन जु कुराह ॥१५॥
कछुक काल रहि सिक्ख करि, इम दुव २ डेरन आय ॥
रान पटालय[11] कूरमहु, पुनि आयउ हित पाय ॥ १६ ॥
अह[12] दूजे नृप रान अरु, मिलि कूरम अतिमोद ॥
पिक्ख्यो[13] सरित[14] बनास बिच, बारन[15] जुद्ध बिनोद ॥१७॥
बुल्ल्यो[16] नहिँ कोटेस तहँ, याते अनखि[17] बिसेस ॥
बिनुहि सिक्ख कोटा गयउ, लुट्टत बुंदिय देस ॥१८ ॥
इत रानहि कूरम अधिप, अहरि साम उपाय ॥
टोंक नगर लघुभ्रात हित, अप्पि रु जैपुर आय ॥ १९ ॥
रानहु पत्तन बनहड़ा, महिमानी इक मानि ॥
कितव[18] कूरमनको ठग्यो, आयो गृह भय आनि ॥ २० ॥
षट्पात्—मरुपतिसौं[19] जयसिंह दम्म[20] गुनईस१९ लक्ख लिय ॥
ते अब ईस्वरिसिंह पिक्खि समय रु पच्छे दिय ॥

१युद्ध जीतनेवाले॥११॥२वीरों की भीड़का धक्काधक्की३मेखों सहित४डेरे५उस भीड़ की टक्कर से॥ १२ ॥६ईश्वरीसिंह॥१३॥७ विरक्त (प्रीति रहित) ॥ १४ ॥८ ईश्वरीसिंह ने ९ सजे हुए सिपाही देखकर १० कोटा के पति ने जो कुरीति की वह सब सहन करके चुपरहा ॥ १५ ॥ ११ राना के डेरे ॥ १६ ॥ १२ दूजे दिन १४बनास नदी में१५हाथियों के युद्ध का कुतूहल१३देखा ॥१७॥१६कोटा के ईश को नहीं बुलाया१७क्रोध करके ॥ १८ ॥ १९ ॥ १८ छली कछवाहों का ठगा हुआ ॥ २० ॥ १९ मारवाड़ के पति (अभयसिंह) से २० रुपये

इत कोटापति अनखि सेन बुंदिय सिर सज्जिय ॥
करि हड्डन एकत्त गुम्मर धरि उच्च गरज्जिय ॥
वज्जिय निसान डाहल विसम यह उदंत जग उज्झलिय ॥
संभर उमेद कोटेस सह क्रमत लैन बुंदिय वलिय ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

नागर द्विज गोविंद निज, सेनापति कोटेस ॥
तवहि जोधपुर मुकल्यो, लैन मदति वल वेस ॥ २२ ॥

॥ षट्पात् ॥

द्विज नागर गोविंदराम, कोटेस सेनपति ॥
पठयो तव जोधपुर मंडि कग्गर सहाय मति ॥
यहै समय मरुईस लैन बुंदिय दल पिल्लहु ॥
सिर हड्डन आसान करहु कूरम अहि किल्लहु ॥
गोविंद विप्र यह पत्र गहि अभयसिंह अंतिक गयउ ॥
वहुदिन विताय अवसर उचित भूपति प्रति हाजरि भयउ२३

॥ दोहा ॥

कछुक उपाज मरु भूप कहि, सेन दयो नहिं संग ॥
तरकि विप्र अजमेर तव, आयो मुरारि अभंग ॥ २४ ॥
फक्करुद्दोला नाम इक, सवल नवाव सिपाह ॥
पठयो जो गुजरात प्रति, सूवापति करि साह ॥ २५ ॥
जवन पीर जारति करन, आयो वह अजमेर ॥
तासौं मिलि गोविंद तव, किय रहस्य हित केर ॥ २६ ॥
कहिय विप्र इक लक्ख१०००००तुम, हमसन रुप्पय लेहु ॥
संगचलहु चतुरंग सजि, लारि बुंदिय लै देहु ॥ २७ ॥

---

१ घमंड २ चतुराग्य उम्मेदसिंह, कोटा के पति सहित ३ बुन्दी लेने को जाता है ॥२१॥ ४ सेना की अधिक सहायता लेने को ॥ २२ ॥ ५ पत्र ६ सेना भेजो ७ उपकार ८ कछवाह रूपी सर्प को कीलो ९ समीप गया ॥ २३ ॥ १० मिस ११ क्रोध करके ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ १२ एकान्त वार्ता ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥

यह अंगीकरि[1] मिच्छ वह, भयउ सहाय अभंग ॥
साहिपुरप[2] सीसोद पुनि, सजि उमेद हुव संग ॥ २८ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

द्विज तब लिखि कोटा पठयो[3] दल, इततैं हम आवत रन उज्झल
गुज्जर धर सूबापति संगति[4], पुनि उमेद नृप साहिपुरापति॥२९॥
उततैं तुम दोऊ२ नृप आवहु, चंड लरन चतुरंग चलावहु ॥
दुज्जनसल्ल उमेद भूप दुव२, हड्डनपति सुनि लरन सज्ज हुव ३०

॥ दोहा ॥

खुरली[5] पटु[6] नय धिंज्ज[7] खम[8], बरस चउद्दह १४ बेस ॥
निडर सज्यो उम्मेद नृप, दुपहर जेठ दिनेस[9] ॥ ३१ ॥
रसा[10] रसातल बोरि दिय, कनककनैन[11] बुध कूर ॥
अब उमेद किरिराज[12] इहिं, सज्यो उधारन[13] सूर ॥ ३२ ॥
स्वसा[14] दीपकुम्मरी सहित, कोटा मातहिं रक्खि ॥
सानुज[15] भूपति सज्ज हुव, अवनि लैन[16] निज अक्खि ॥ ३३ ॥
सक[17] इक नभ बसु ससि१८०१समा, मिलि द्वादसि१२सुचि[18] मास
कोटापुर सज्जिय कटक[19], निडर करन अरि नास ॥ ३४ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ राणाशिविरकूर्मसचिवागमनमाधवसिंहार्थपंचलक्षरौप्यकाऽऽर्घटोङ्कन

१ अंगीकार (मंजूर) २ शाहपुरा का पति ॥ २८ ॥ ३ पत्र भेजा ४ साथ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ५ शस्त्रविद्या में चतुर ६ नीति चतुर ७ धीरजवाला ८ क्षमा रखनेवाला ९ ज्येष्ठ मास के दुपहर का सूर्य ॥ ३१ ॥ ११ कुम्भसिंह रूपी हिरण्याक्ष (हिरणाकुस) ने १० भूमि को पाताल में डुबो दी थी जिसको फिर १२ वाराह अवतार की भाँति उम्मेदसिंह १३ उद्धार करने (निकालने) को सजा ॥ ३२ ॥ १४ बहिन १५ छोटे भाई सहित १६ अपनी भूमि लेना कह कर ॥ ३३ ॥ १७ सम्वत् १८ आषाढ १९ सेना सजी ॥ ३४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में राणा के डेरे पर कछवाहे के सचिव का आना और माधवसिंह के अर्थ पांच लाख रुपयों के मूल्य

गरदेशलिखनराणानिवेदनतन्मायाजगत्सिंहमोहनतत्पूर्वजयपुरशि-
बिरागमनकोटेश्वरदुर्मनीभवनबुन्दीदेशधाटिपातनाऽनुकोटाऽऽग-
मनकूर्मराजजनकनीतमरुदण्डद्रव्यप्रत्यर्पणमहारावसहायार्थगोविं-
दरामयोधपुरप्रेषणसाहिपुरेश्वरादिसहिततत्प्रत्यागमनबुन्दीविजया-
र्थहड्डेन्द्रसेनसंचयनमष्टमो ८ मयूखः ॥ ८ ॥ ॥ २८९ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

सटा[1] धूनिकैं सिंह उम्मेद सज्ज्यो, गदा लै कि दुज्जोधपैं[2] भीम गज्ज्यो
विडोजा[3] मनौं जंभपैं छोह छायो, लग्यो लंक कै अंजनीको[4] लडायो
किधौं कुंडली[5]पैं बली पन्नगासी[6], रिसानौं[7] कि अंधार[8]पैं तेजरासी[9] ॥१॥
किधौं सिंधुके सूनु[10]पैं संभु तंड्यो[11], मनौं चंडपैं कालिका कोप मंड्यो ॥२॥
जटाजूट[12]तैं वीरभद्र[13]सैं जग्यो, महासेन[14] कै क्रौंच[15]कों लैन लग्यो ॥
फटाटोप[16] कै रागपैं नाग किन्नौं, कुबेलाश्व[17] कै धुंधु[18]पैं दाव दिन्नौं ॥३॥

(हाँसिल) का टांक नगर का देश लिखकर राणा की नजर करना १ उसकी इन्द्रजाल में राना का ठगा जाना २ राणा जगत्सिंह का पहिले ईश्वरीसिंह के डेरे आना ३ और कोटा के पति का उदास होकर बुन्दी का देश लूट पीछे कोटे जाना ४ ईश्वरीसिंह का, पिता (जयसिंह) के लियेहुए मारवाड़ के दंड के द्रव्य पीछे देना ५ महाराव का सहाय के अर्थ गोबिन्दराम को जोधपुर भेजना ६ शाहपुरा के पति सहित उसका पीछा आना ७ बुन्दी को विजय करने के अर्थ हाडों के इन्द्र का सेना संचय करने का आठवां ८ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ निवासी २८९ मयूख समाप्त हुए ॥

१ उम्मेदसिंह रूपी सिंह गरदन के केस धुजाकर सज्जित हुआ, किंवा गदा लेकर २ दुर्योधन के ऊपर भीमसेन ने गर्जना की ३ मानों जंभासुर पर इंद्र क्रोधित हुआ किंवा लंका के ऊपर ४ अंजनी का पुत्र (हनुमान) लगा ॥ १ ॥ किंवा ५ सर्प के ऊपर बलवान् ६ गरुड़ किंवा ८ अंधेरे पर ९ सूर्य ने ७ क्रोध किया किंवा समुद्र के १० पुत्र (कामदेव) पर शिव ने ११ गर्जना की, मानों चंड नामक दैत्य पर कालिकाने कोप रचा ॥ २ ॥ १२ मानों शिव की जटा के जूट से १३ वीरभद्र उठा किंवा १४ स्वामिकार्तिक १५ क्रौंच नामक पर्वत को लेने लगा अथवा बड़ा सिचाणा पक्षी क्रौंच पक्षी को लेने लगा किंवा गिरनारी राग पर सर्प ने १६ फण का आटोप (छत्र) किया किंवा १७ कुवलयाश्व नामक राजा ने १८ धुंधु राक्षस

किधौं हैहयाधीसपैं रामकुप्यो, किधौं राम लंकेसके आजि उप्यो ॥
रच्यो चाप गांडीव टंकार रंज्यो, गज्यो कै गुडाकेस राधेय गंज्यो॥४॥
सज्यो कन्ह कै साहगोरीस सत्थैं, मुग्यो लंगरी जानि जैचंद मत्थैं ॥
धक्यो सोखिबे सिंधु वातापि ध्वंसी,अरयो द्वंद्वपैं बालि ज्यौं इंद्रअंसी॥५॥
बलाधीस भू लैन यौं भूप बढ्ढयो, चमू संकुली भाद्र ज्यौं मेघ चढ्ढयो ॥
लगे सान झंझ्झान धागाल धारी, भ्रमासक्त दज्झैं झरैं फूल भारी ॥६॥
लरौ गाय नोबत्तिपैं घाय लग्गैं, भराक्रांतऽहै सप्पके दप्प भग्गैं ॥
पताका खुली मत्त हत्थीन मत्थैं, सजे डाकिनी प्रेत बेताल सत्थैं ॥७॥
धुरी टोप सन्नाह बिक्रांत धारैं, इचैं चाप घौंघाँ निसानाँ उतारैं ॥
दगैं बीन आरूढ के तोप दग्गैं,जैटा ज्वालकी माल ज्यौं ऊँज जग्गैं॥८॥
समै कल्पको भो डिग्यो रत्नसानू, भयो दीहके भेसके बेस भानू ॥

पर दाव दिया ॥ ३ ॥ किधौं कार्तवीर्य (सहस्रार्जुन) पर १ परशुराम ने क्रोध किया किंवा रावण के २ युद्ध में रामचन्द्र शोभायमान हुए किंवा गांडीव धनुष की टंकार करके शोभायमान ३ अर्जुन ने ४ कर्ण को मारा अथवा दबाया ॥ ४ ॥ ५ किंवा गोरीशाह के साथ पृथ्वीराज का काका कन्ह सज्जित हुआ।६ किंवा पृथ्वीराज का सामंत लंगरीराय कन्नोज के राजा जयचंद्र पर मुड़ा किंवा समुद्र को सुखाने के अर्थ ७ वातापि राक्षस को मारने वाला (अगस्त्य ऋषि) क्रोधित हुआ अथवा ८ इन्द्र के अंशवाला वालि नामक बंदरों का राजा द्वंद्व राक्षस से अड़ा ॥ ५ ॥ इसप्रकार ९ आडावला नामक पर्वत का पति भूमि लेने को बढा और जैसे ११ भादवा का मेघ चढै तैसे सेना १० भरगई १२ सकलीगर साण को झनकाने लगे जिस से अग्निकण झड़कर १३ साण को फेरनेवाला सकलीगर जलने लगा ॥ ६ ॥ १४ लड़ो लगकर (निरंतर प्रहारों से) नोबत पर घाई लगी १५ अथवा लड़ो ऐसा कहकर नोबतों पर घाई लगी १६ भार से पीड़ित होकर १७ शेषनाग का घमंड भगा (यहां भार से पीड़ित होने के संबंध से शेषनाग का ग्रहण है) ॥७॥१८ युद्ध का धुर खींचनेवाले वीर टोप, कवच धारण करने लगे १९ दिशा दिशाओं में धनुषों को खैंचकर निशाना उतारने लगे २० चरखों पर चढीहुई कितनी ही तोपें दगती हैं सो मानों ज्वालमाला की २१ शिखा २२ कार्तिक मास में जगती है ॥ ८ ॥ २३ प्रलय का समय होकर २४ सुमेरु पर्वत डिगा और दिन के २५ नक्षत्रेश (चंद्रमा) के रूप से २६ सूर्य होगया, कितने ही शस्त्रधारी

धरैं कुंकुमी[1] चैल[2] के सस्त्रधारी, नचैं मोद[3] कैं व्याहिबे स्वर्गनारी[4]।९।
वनैं पिट्ठि बेनड हौदे बिसाली, रचैं जीन बाजीन के पक्खराली[6] ॥
धुजादंड हत्थीनपैं बेनु[7] बड्ढे, मनों सैलके शृंग[8]पैं ताल[9] ठड्ढे ॥ १० ॥
लगी मेदनी[10] राग सिंधून लग्गे, भ्रमैं भुम्मियाँ भुम्मिकौं छोरि भग्गे
परी त्रास मेवास[11] आवास[12] पत्ती, बढी यौं बलाधीस[13]की जोर बत्ती[14]११
घुरैं गज्ज दंती[15] खुलैं सज्ज घोरे, डकेती रचैं चाकरके[16] हत्थ डोरे[17] ॥
जरी ओपकैं[18] तोप जंजीर जाली, करैं पिक्खि उच्छाह काली कपाली[19]

॥ दोहा ॥

जंगर[20] टोप बाहुल[21] जटित, हुलसि सूर असि[22] हत्थ ॥
सजिय सेन बुंदिय सुपहु, सह कोटेस समत्थ ॥ १३ ॥

॥ षट्पात् ॥

गज मत्तन गैरदाय[23] मिलिग बिरुदाय महाउत ॥
पालकाप्य[24] आगम प्रभाव जैव[25] पाव दाव जुत ॥
नट कछनी कछि निडर मल्ल रन निपुन महाबल ॥

१केसर के रंग के२वस्त्र करते हैं और हर्ष३करके४अप्सराओं को व्याहने के लिये नाचते हैं अथवा वीरों को विवाहने को हर्ष करके अप्सराएं नाचती हैं ॥ ९ ॥ ५ हाथियों की पीठ पर बडे होदे कसते हैं और घोड़ों पर जीन और ६ पाखरों की पंक्ति लगाते हैं, हाथियों पर ध्वजा दंड के ७ बांस बढे सो मानों पर्वत के ८ शिखर पर ताड़ के वृक्ष ९ खड़े हैं ॥ १० ॥ वीर रस का सूचक सिंधवी राग लगकर१०भूमि चलायमान हुई भोमिये भ्रमकर भूमि को छोडकर भागे११लुटेरे और चोरों के स्थानों में त्रास पड़कर वह त्रास उनके घरों में १२ प्राप्त हुई, इसप्रकार१३आडावला के पति के जोर की१४वार्ता बढी ॥११॥ १५ हाथी गरजना करके घूमे और घोड़े सज्जित होकर खुले जो१६चाकरों के हाथ में१७डोरों से बंधे हुए कूदने लगे१८शोभा युक्त करके तोपों को जंजीरों की जाली में जड़ी जिनको देखकर कालिका और१९शिव उत्साह करते हैं ॥ १२ ॥ २० कवच (जगड़) टोप और २१ बाहुत्राण (दस्तानों) से जड़े हुए वीर २२ तरवारें हाथ में लेकर हर्ष युक्त होते हैं ॥ १३ ॥ मस्त हाथियों को२३ घेरकर उनको विरुदाकर महावत मिले २४ पालकाप्य मुनि के किए हुये शास्त्र (हस्त्यायुर्वेद)के प्रभाव से उन महावतों के पग दाव और२५शीघ्रता से युक्त

आडपेच रचि अतुल्ल अंग भसमी धरि उज्जल्ल ॥
अयरेख[1] अलिक[2] नागज तिलक कारे मनहुँ पिसाच कुल्ल ॥
इभपाल[3] गयउ बिकराल इम बाँरिन[4] ढिग डंकत[5] बहुल[6]१६
लगि दुकच्छ लंगोट कठिन बजरंग तंग कसि ॥
दंड ऐंचि दस बीस फेंकि मुग्दर बिद्या बसि ॥
झपन बिबिध बनाय अंग उछटाय ऐंड भरि ॥
प्रान त्रान कारन पुकारि केसव प्रनाम करि ॥
गंजबाग[9] हत्थ निब्भर[10] गुमर आयउ सिर गौरव[11] अलप ॥
मारुत[12] प्रजात[13] बंदर मनहुँ मंदर[14] पर लिन्निय मलप ॥ १५ ॥
इम कलाप[15] द्रुत[16] आय अक्खि बिरुदन आधोरन[17] ॥
फोजाँ नायक[18] फील[19] फते अप्पहु जस जोरन ॥
जय त्पंजक[20] भंजक[21] कपाट बंके गढ गंजक ॥
अब तेरे सिर यार भार रक्खिय रन रंजक[22] ॥
आरुहि[23] मलंगि बिरुदाय इम झट मिलाय लिय मदझरन[24] ॥
कहि जनक[25] नाम बुल्लिय कुसल कुंभत्थल थप्पलि करन[26]१६
फुरते[27] अंग फटकारि रंग रज झारि रुमालन ॥
अति मेचक[28] आमलन[29] जाल[30] मंडिग जंगालन[31] ॥

हैं १ ललाट में तीन रेखावाला २ सिंदूर का तिलक किये हुए ३ महावत ४ हाथियों के ठाणों में " वारी तु गजबंधने त्यमरः " ५ कूदते हुए ६ बहुत गये ॥ १५ ॥ ७ घमंड भरकर ८ प्राणों की रक्षा के लिये परमेश्वर को प्रणाम करके ९ बड़ा अंकुश हाथ में लेकर १० घमंड से भरे हुए ११ थोड़े भार से हाथी के मस्तक पर आये सो मानों १२ पवन के १३ पुत्र (हनुमान्) ने १४ मंदराचल पर मलंग ली ॥ १५ ॥ १५ हाथी के कलावे पर १६ शीघ्र आकर १७ महावतों ने उन हाथियों की स्तुति की १८ सेनाओं के पति १९ हे हाथी! यश को जोड़ने के लिये विजय देना २० जयके प्रकाश करने वाले २१ कँवाड़ों को तोड़ने वाले २२ युद्ध में प्रीति करने वाले २३ चढकर २४ हाथियों को २५ पिता का २६ हाथों से ॥ १६ ॥ २७ शोभायमान शरीर को. २८ अत्यंत काले २९ आमलों से और ३१ जंगाल से ३० जाली (चित्रविशेष) रची

कंट[1] विचित्र कुरुबिंद[2] बहुरि हरिताल बिथारिय ॥
जंगी[3] अंदुक जोरि[4] दोर डुंगर[5] पग डारिय ॥
त्रिपदीन[6] गँत्त[7] नद्धिय[8] अतुल लगि कलाप[9] जेवर लसिय ॥
कुंथ[10] डारि गुंडन[11] सँनद्ध[12] करि क्रम बरत्त[13] हादन कसिय॥१७॥
सकल हेतिं[14] सिर सज्जि छिप्र[15] आलानि[16] छुरायउ ॥
देदै बिरुद दुरूह[17] घोर घँन[18] गज्ज घुरायउ ॥
बारी[19] बाहिर बाक[20] डाँक बल अचल डगाये ॥
बढि चरखिन बारूद ज्वाल बिकराल जगाये ॥
हिंजीर[21] लंब अँचत हुलसि बल अमान[22] हरवल बढिय ॥
मानहुँ अपुब्ब मेचक[23] मुंदिर[24] कज्जलगिरि जंगम[25] कढिय॥१८॥
भद्र[26]१मंद२मृग३ भव्य मिश्र४चउ जाति महाबल ॥
बसाँ[27] लोभ अति बेग सँरत[28] उछटावत शृंखल[29] ॥
बाल[30] पोत[31] अरु बिक्क[32] कलभ[33] मक्कुन[34] अतिकायक[35] ॥
जूहनाह[36] जव जोर सज्ज हुव समर सहायक ॥
गज्जित अनेक उद्धत गुमर बहु सज्जित मँदकल[37] बलिय ॥

१कपालों पर विचित्र२हींगलू और हरताल फैलाया।३बड़े जंजीर४जोड़ कर५पर्वत के समान फैलाव वाले पगों में डाले ६ रस्सों से तुलना रहित ७ शरीर को ८ बांधा और ९ कलावा लगाकर जेवर से भूषित किया १० झूल (गदरा) डालकर ११ पाखरों से १२ सज्जित करके क्रम पूर्वक १३ रस्सों से होदे कसे ॥ १७ ॥ उन होदों में सब १४ शस्त्र सजकर १५ शीघ्र १६ खंभों से खोले और १७ कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसी स्तुति करके १८ मेघ के समान भयंकर गर्जना करते हुए हाथियों को १९ ठाणों से बाहर २० छोटे बांवों से क्रोध दिलाने के बल से निकाले २१ लंबी जंजीरों का २२ अप्रमाण बलवाले २३ अपूर्व काले २४ मेघ अथवा २५ चलते हुए कज्जल के पर्वत निकले ॥ १८ ॥ २६ भद्र आदि चारों जाति के बलवान् शुभ हाथी २७हथनियों के लोभ से २८सांकल को उछाते हुए वेग से २८ चलते हैं उन हाथियों में कितने ही ३० छोटे ३१बड़े ३२ तुरत के पैदाहुए ३३ पाठा ३४मुकने (विना दांतवाले) ३५बड़े शरीरवाले ३६जूथनाथ (यूथ के पति) वेगवाले और बलवान्, युद्ध में सहायता करनेवाले सज्जित हुए, निरंकुश घमंड से गर्जना करनेवाले अनेक बलवान् ३७मस्त

गंभीरवेदि परिघात गजब चतुरंगन रच्छक चलिय ॥ १९ ॥
कतिक[2] व्याल अतिकोप कतिक उपबाह्य[3] कुलाचल ॥
ईसादंत[4] अनेक बढिग घुम्मत समीर[5] बल ॥
झरत मदस्रुति[6] पटान भौंर करटन[7] भननंकत ॥
अरु कंदुक[8] जिम उडत झाट अंदुक[9] झननंकत ॥
फटाकरि सुंडि बमथुन[10] फुहरि पच्छिन नभ छिरकत प्रकट॥
बुंदीस सेन अग्ग[11] ति बढिग कमठानन तजि पीनकट[12]।२०।
अहि[13] फन जिम आटोप रचत पुक्खर[14] सिर रक्खत ॥
हग लघु दीरघ दिट्ठि[15] चलत मोचाफल[16] चक्खत ॥
वंगर[17] कनक बिखान[18] जटित अति जेब जवाहर ॥
आधोरन[19] आसनन बीत[20] मारत हंकत बर ॥
चूलिका[21] हरित चित्रित रुचिर अच्छिकूट[22] पीत रु अरुन ॥
बुंदीस हुकम हंकिय बिबिध तोर जोर बौरन[23] तरुन ॥ २१ ॥
नील हरित निज्जान[24] कतिक करटन[25] कलमासन ॥
कतिक अवग्रह[26] कपिस अधिक रोहित कति आसन ॥
अति कडार आरच्छ[27] बिसद बाहित्थ[28] बिराजत ॥

हाथी सज्जित हुए १ अंकुश नहीं माननेवाले और गजब करनेवाली तिरछी घात करनेवाले सेना के रक्षक हाथी चले ॥ १९ ॥ २ कितने ही दुष्ट हाथी ३ सवारी के पर्वत ४ लंबे दांतों वाले ५ पवन के समान बलवाले ६ पटों से दाण का प्रवाह झरता हुआ ७ गंडस्थलों (कपोलों) पर भ्रमर बडते हुए ८ गेंद के समान उडती है ९ जंजीर १० सुंड के जलकणों की फुँहार से आकाश में पक्षियों को छिड़कते हैं १२ पुष्ट (मोटी) कमरवाले खंभाओं (खंभों) को छोडकर ११ आगे बढे ॥ २० ॥ १३ सर्प के फण के समान १४ सुंड के अग्रभाग का मस्तक पर छत्र किये हुए छोटे नेत्र और लंबी १५ दृष्टिवाले १६ कलवृक्ष के फल को चखतेहुए १७ सुवर्ण के वंगड़ १८ दांतों में जड़ेहुए १९ महावतों के २० अंकुश लगाने और पैरों से हूलने से अंष्ट चलते हैं २१ कानों के मूलभाग हरे रंग से रंगेहुए २२ नेत्रों के भाग पीले और लाल रंग से रंगे हुए २३ बडे प्रताप और बलवाले तरुण हाथी ॥ २१ ॥ २४ नेत्रों के पास नीला और हरारंग २५ कपोलों पर काला रंग २६ ललाट पर काला और पीला मिलाहुआ रंग २७ पीतवान पर पीला २८ कुंभस्थल के

पीत अरुन प्रतिमान लखत *सुरगुरु †कुज लाजत ॥
‡विदुदेस हरिन पालास बनि §ब्रातकुंभ नील रु बिसद ॥
बुंदीस संग हरवल्ल बढिग ¶मातंगप इम झरत मद ॥२२॥
+तलपन पीन रु तुंग छजत ÷पीढक पर छादित ॥
कच्छा रेसम कठिन नद्ध होदन घन नादित ॥
झुकि कतिकन झंडाल कतिन मेघाडंबर कसि ॥
सिंहासन कति सज्ज लंब हिंजीर अवर लसि ॥
डाकन अमान निछिन डगत झगत जंग अमरख झलक ॥
उम्मेद हुकम घुम्मत अतुल इंकिय इम हत्थिन हलक॥२३॥
मिलि अनेक मंदुरन प्रीति मंडिय हय पालन ॥
झलक खेह झटकारि देह फटकारि दुसालन ॥
दे खलीन बिरुदाय अंस थप्पलि कर ओपित ॥
जंगी पक्खर जीन खेंचि तंगन आरोपित ॥
गजगाह मंडि चित्रित गहर लहरदार लूमन ललित ॥
आनिय तुरंग कंपन अरिन कृत कजाक झंपन कलित॥२४॥
गरुत रूप गजगाह उडत मानहुँ उरगासन ॥
पय नेउर रव प्रचुर ललित मंडत वहु लासन ॥
खुरसान ताजिक तुखार भाडेज भुम्मि भव ॥

नीचे का भाग स्वेत * पीले रंग से बृहस्पति और † लाल से मंगल लज्जित होता है ‡ कुंभस्थल के बीच का भाग काला और हरा § कुंभ का अधोभाग, नीला और स्वेत ¶ हाथियों के पति ॥ २२ ॥ + बिछौने मोटे और ऊँचे ÷ पीठ पर छाये हुए शोभा पाते हैं, रेसम के गुच्छे १ दृढ़ बंधेहुए २ झंडे ३ छायावाले होदे ४ लंबी जंजीर ५ दूसरे हाथियों के शोभायमान हैं ६ सांटमारों के क्रोध दिलानेवाले प्रहारों से कठिनाई से डिगने हैं ७ क्रोध का॥ २३ ॥ ८ हयशालाओं में ९ लगाम देकर १० कंधे थापल कर ११ शोभायमान करके १२ आरोपण किये १३ युद्ध करनेवाले झंप में १४ प्रसिद्ध ॥ २४ ॥ १५ पांखों के रूप से गजगाव उडते हैं १६ सो मानों गरुड़ उडता है १७ बडा शब्द १८ नृत्य १९ उत्पन्न

वनायुज रु बाल्हीक जात[1] कांबोज महाजव[2] ॥
केकान[3] गोजिकानहु कतिक प्रोढहार[4] धावन प्रबल ॥
हाजरि हइंद नृप अग्ग हुव पलटत पल[5] न लगात पल[6]॥२५॥
आजानेय अनेक पारसीकहु बिनीत[7] पथ ॥
पंचभद्र[8] जय पूर अष्टमंगल[9] सुलाभ अंथ[10] ॥
चक्रवाक[11] जवचपल[12] मल्लिलोचन[13] अछेह मन ॥
कति किंयाह[14] कोकाह[15] पीत खुंगाह[16] सुद्ध मन ॥
आलाल[17] कपिल[18] बोल्लाह[19] अरु हालक[20] सोन[21] हलाह[22] हय ॥
पंगुल[23] कुलाह[24] उकनाह[25] पुनि बाल्खान[26] अति रयँ[27] सु बय॥२६॥
सुलभ लाट अरु सीस कंध मणिबंध[28] कथित[29] क्रम ॥
देस नाभि[30] हिय[31] देस भाँति[32] मुख त्रिक उत्तम भ्रम[33] ॥

---

१ उत्पन्न २ बडे वेगवाले ३ कितने ही गोजिकान के घोड़े ४ बल पूर्वक दौड़ने में निपुण ५ पलटने में नेत्रों के पलकों की भांति ६ क्षण भी नहीं लगाते ॥ २५ ॥ ७ मार्ग में शिक्षा पाये हुए कितने ही सुंदर घोडे ८ चारों पैर और ललाट जिसका श्वेत होवे उस घोड़े को पंचमंगल कहते हैं ९ चारों पैर, ललाट केसवाली मदू और बालछा जिस घोड़े का श्वेत होवै उसको अष्टमंगल कहते हैं और मतान्तर से मदू के स्थान में श्वेत छाती को अष्टमंगल मानते हैं १० लाभ के अर्थ ११ पीले रंग के घोडे के, नेत्र और पैर श्वेत होवै उसका नाम चक्रवाक है १२ वेग में चपल १३ महुवा रंग के घोड़े के चरण और मुख श्वेत होवै उसको मल्लिलोचन अथवा मल्लिकाक्ष कहते हैं १४ कुमेत १५ श्वेत (नुकरं) और पीले १६ श्याम-वर्ण के (लक्खा) १७ नीले १८ नीले पीले मिले हुए रंग के अबलख १९ पीला और श्वेत अबलख २० पीले और हरे रंग के अबलख २१ सुवर्ण के अथवा कमल के रंग के २२ चित्र विचित्र रंगवाले अर्थात् अनेक मिले हुए रंगवाले २३ काच के समान कान्तिवाले २४ काले घुटनोंवाले २५ पीले और लाल रंग के अबलख २६ समदे २७ अत्यन्त वेगवान् और श्रेष्ठ अवस्थावाले ॥ २६ ॥ २८ गले का मणि या २९ कहे हुए क्रम से ३० नाभी के स्थान पर और ३१ हृदय के स्थान पर ३२ शोभायमान है मुख पर तीन ३३ भँवरी जिनके

रंध्र[1] जंठर[2] गल[3] रुचिर[4] बिहित[5] आवर्त्त बिराजत ॥
चन्द्रकोस[6] जुत चपल लखत नच्चत मन लाजत ॥
कति इन्द्र पदम लच्छन कतिक चक्रवर्ति चिंतामनिक[9] ॥
हुव सज्ज दबत छोनिय[10] हयति[11] फबत माल यालन फैनिक[12] २७
इक्क बिजय[13] आवर्त्त बँहत[14] इक सुंकल[15] महाबल ॥
इक्क कुसुम[16] आमोद इक्क चंदन[17] भँव उज्जल ॥
इक लोहित[18] इक असित[19] इक्क सारंग[20] सेत[21] इक्क ॥
पिंग[22] इक्क इक्क पीत[23] इक्क पीलास[24] एत[25] इक्क ॥
खुरअग्ग[26] भुम्मि सज्जित खनत[27] बलि गज्जत ऊरध बदन[28] ॥
चहुवान राज आयस[29] चलिय सहँसन हय जव जय संदन[30] २८
दिपत पैरुख[31] चउ४ दड्ढ रंग कालिक[32] रद[33] बारह १२ ॥

१घोड़े के कुक्षि (कूंख) और नाभी के मध्य प्रदेश का नाम रंध्र है २पेट पर ३गले पर सुन्दर और ४ उचित ५ बालों की भवँरियें शोभा देती हैं ६ जिस घोड़े के ललाट में दो भवँरियें होती हैं उसको चंद्रकोस कहते हैं ७ जिस घोड़े के कंठ में दक्षिण तरफ दो भ्रमारयां होवें उसको इन्द्र कहते हैं और जिसके कंधे के एक ओर एक भ्रमरी होवे उसको पद्म कहते हैं ८ जिस घोड़े की नासिका पर एक अथवा दो भ्रमरी होवे उसका नाम चक्रवर्ति है ९ कंठ के मणि-यें पर भ्रमरी होवे उसको चिन्तामणि अथवा देवमणि कहते हैं १० भूमि को दबाते हुए ११ ते (वे) घोड़े १२ सर्पों की माला के समान जिनकी केसवाली शोभा देती है ॥ २७ ॥ ॥ १३ विजयमणि नामक भ्रमरी (भँवरी) वाला जो थापे पर होती है १४ धारण करता है १५ भ्रमरी विशेष १६ मुख में पुष्प की गन्धवाला, जिसका ब्राह्मण वर्ण मानते हैं १७ मुख में चंदन की गंधवाला जिसका क्षत्रिय वर्ण मानते हैं १८ लाल रंग वाला १९ काले रंगवाला (लक्खी) २० अनेक (चित्र विचित्र) रंगवाला २१ श्वेत (नुकरा) रंग वाला २२ पीतल के समान पीले वर्णवाला जिसका नाम विशेषकर सोवन कलश रक्खा जाता है २३ सामान्य पीले रंगवाला २४ हरा रंगवाला २५ कर्बुर (अबलख) रंगवाला २६ सज्जित हुए पीछे अगले खुर से भूमि २७ खोदनेवाला २८ ऊंचा मुख करके गाजनेवाला २९ आज्ञा से ३० वेग के और जय के घर ॥ २८ ॥ (ऊपर के दोनों छन्दों में शुभदायक घोड़ों के लक्षण कहे हैं

१एक पुरुष (ऊबदा, परस) ऊँचे शोभायमान हैं २काले रंग की चार दाढें ३दांत

अंगुल सत१०० [1]वपु उच्च [2]कुच्च संगर जयकारह ॥
बीससत्त२७ मुख [4]विहित [5]कंग्न अंगुल खट६ [6]केतक ॥
चाप उपम चालीस अठ्ठ४८ [8]मित कंध उपेतक ॥
चउवीस२४पिठ्ठि [9]आयत रुचिर [10]कलित तीस३०अंगुल कमर
[11]वालधि प्रलंब चालीस बसु४८[12]चल धुनाय ढारत चमर।२९।
चउ४[13]दीरघ चउ४[14]रत्त च्यारि४ [15]सुच्छम चउ४[16]उन्नत ॥
च्यारि४ [17]ह्रस्व [18]नत च्यारि४च्यारि४[19]आयत [20]मुनीन मत ॥
मुख१ भुज२केस३[21]निगाल४ [22]मेफ१ जीह२रु ओठ३ [23]काकुद ॥
[24]कंरन२पुच्छ३पय[25]कोष्ठ४[26]प्रोथ१ [27]सफ२[28]गोधि३तथा [29]गुद४ ॥
दुव[30]कंन [31]बंस३[32]अंतर दुहुन४ [33]कंत्त१उदर२ [34]जानुक३ [35]ककुद ॥
मुख१खंध२जानु३पंसुलि४[36]महित लच्छन हयन [37]मचात मुद ४॥३०॥

कति किसोर अति जोर कतिक जुब्बन छक डंकत ॥

१सौ अंगुल का ऊँचा शरीर२युद्ध में ३जय करनेवाला ४ सत्ताईस अंगुल लंबा उचित मुख५छः अंगुल के कान६केतकी की कली के समान७ धनुष की उपमा वाले अड़तालीस अंगुल के प्रमाणवाले लंबे कंध८ सहित९चौबीस अंगुल लंबी पीठ १० विदित११वालछा लंबा१२चपलता से अथवा चलता हुवा, वालछे को हिलाकर चमर करनेवाला ॥ २९ ॥शुभदायक घोड़े के १३ चार अंग लंबे१४ चार अंग लाल १५ चार अंग पतले १६चार अंग उठेहुए १७ चार अंग छोटे १८चार अंग झुकेहुए१९चार अंग मोटे चाहये सो २० शालिहोत्र बनानेवाले मुनियों के मत से कहे हैं "इन अंगों को आगे यथाक्रम से स्पष्ट बताते हैं" मुख, भुज, केस२१गला ये चार तो लंबे होने चाहिये और२२लिंग, जीभ, ओठ२३तालुवा ये चार अंग लाल होना शुभ है२४दोनों कान, वालछा,२५पैरों के गाले (मोदे) ये चारों अंग पतले चाहियें२६फुरणा (नासिका) २७ खुर (सुम) २८ ललाट २९ गुदा ये चार अंग उठेहुए होवें ३० दोनों कान ३१ वांसे का हाड (पीठ की लंबी हड्डी) ३२ दोनों कानों के बीच का अंतर (छेटी) ये चार अंग छोटे होवें सो उत्तम है ३३ कूंख (वाखी, तार) पेट ३४ घुटने ३५मदूद, ये चार अंग झुके हुए और मुख, कंधा, घुटना, पांसली ये चार अंग बड़े (लंबे) होना ३६ पूज्य है और ये उपरोक्त घोड़ों के लक्षण ३७ हर्ष कराते हैं ॥ ३० ॥ घोड़ों के कितने ही पक्के यौवन अवस्था के छक में पड़े बल से कूदते हैं

प्रोथे[1] बजन पवमान[2] हुलसि अंबर[3] बढि हंकत ॥
धोरित१ वल्गित२ धाव इमहि प्लुति३ अरु उत्तेरित४ ॥
उत्तेजित५ पुनि अटत पंचधारन मग प्रेरित ॥
झारत फुलिंग[6] नालन झपटि अतुल प्रसारत उड्डयन[7]॥
चातुरि मलंग धारत चपल पातुरि गति डारन पयन ॥ ३१ ॥
रजत[8] पत्त खुर रंजत[9] ललित अय[10] पक्क नाल लगि ॥
थित जिम देवल[11] थंभ चरन अति दृढ लगैं न चगि[12] ॥
पुट्ठे गरद[13] प्रपीनै रुचिर छतिय परिणाहित[14] ॥
कंध कुटिल[15] कोदंड[16] सँजव[17] धंज[18] कसत समाहित[19] ॥
मारत मलंग सेनंन[20] मुकुट एनन[21] जव पारत अलप॥
उम्मेद नृपति अग्गल[22] अटत मानहु नट भग्गल मलप[23]॥३२॥

१फुरणे २ पवन के जोर से बजते हैं और प्रसन्न होकर ३ आकाश में चढ कर चलते हैं ५ ऊपर कही हुई घोड़े की पांचों गतियों का नाम धारा है उन पांचों धाराओं में प्रेरणा किये हुए ४ फिरते हैं "उपरोक्त पांचों गतियों की संक्षेप व्याख्या यह है कि चतुराई युक्त सीधी गति (आदम और दुड़की) को धोरित कहते हैं और खोटे स्थलों में अगले शरीर को समेट कर मुख टेढा करके चलता है उसको वल्गित कहते हैं शरीर के अगले और पिछले दोनों अंगों को उछाल कर (चौकड़ी भर कर) दौड़ना है उसको प्लुत कहते हैं उत्तेरित जिसका दूसरा नाम आस्कंदित है, इसमें घोड़ा अगाध होकर न तो कुछ सुनता है और न कुछ देखता है जिसको लौकिक में पट्टी या सरपट कहते हैं, उत्तेजित जिसका दूसरा नाम रेचित है जो मध्यवेग से गोलाकार फिरने को गोलकुंडा कहते हैं" वे घोड़े दौड कर नालों से ६ अग्निकण उडाते हैं और तुलना रहित ७ उडान फैलाते हैं ॥ ३१ ॥ ८ चांदी के पत्रों से ९ शोभायमान खुरों में सुंदर पक्के १० लोहे की नाल लगी हुई और ११ मंदिर के थंभ के समान जिनके चरण जो दृढता के कारण कभी १२ खुल कर (फिसल कर अथवा ठोकर खाकर) नहीं लगते जिनके १३ पुष्ट और गोल पुट्ठे १४ सुंदर चौड़ी छाती ११ धनुष के समान १५ टेढा (झुका हुआ कंधा १० समाधित (एकाग्रचित्त) होकर १७ वेग के साथ १८ शोभा बनाते हैं २० सेनाओं के मुकुट वे घोड़े मलंग लगाकर २१ हरिणों के वेग को न्यून करते हैं २२ आगे चलते हैं २३ जैसे भागळ में नट मलंग लगावे तैसे लगाते हैं ॥ ३२ ॥

नव *चेरिन नखराल घलत घुम्मर नचि घेरिन ॥
फट लगत जिन †फाल फिरत हत्थिय चक्रफेरिन ॥
‡तीय कनीनिय तरल सरल सच्चे §मुख सोहत ॥
मंजु पसम ¶मखतूल मुकुर ×बिग्रह छबि मोहत[1] ॥
रथ[2] जोर लैन संगर[3] रचक्क[4] भचक्क पारि अहि भुम्मि भर ॥
चरनन नमाय मारत मचक्क लचक्क जानि हिंडोल[5] लर ३३
चरखन तोप चढाय चित्र मंडिग तिन चारन[6] ॥
सँनि[7] आनन सिंदूर पूर सज्जिय गढ पारन ॥
दिपत लंब भुजदंड जीह[8] अंतक जिम हल्लत ॥
इक्क निमेन अनेह[9] अष्ट८नव९फैर उगल्लत ॥
बिथुरात[10] ज्वाल लालिय बिखम अरि छत्तिन सालिय उपित[11] ॥
आलिय[12] अनेक नालिय[13] अतुल कालिय जिम चालिय कुपित३४
कुंभीनस[14] आनत कितीक मकर रु मइंद[15] मुख ॥
करभ[16] सँरभ[17] कति कोल[18] बदन धारंत रीस रुख ॥
हंकत खिन हरवल्ल होत दुद्धर नर हल्ले ॥
खैंचत वृख[19] गन अग्ग पिट्ठि मारत गज टल्ले ॥
अयपिंड[20] गिलत घटिका[21] उभयरवलि दगँ न पब्बय बचत॥

---

*नवीन लौंडियों के समान नखरे करनेवाले † मलग में ‡ स्त्रियों के नेत्रों की पुतली के समान चपल § मुख सच्चे और सीधे शोभायमान ¶ रेसम के समान सुंदर जिनके शरीर के केस और काच की छबिवाले × शरीर से १ मोहित करते हैं २ अंग के बल से ३ युद्ध में ४ टक्कर लेते हैं और भूमि और शेष पर मचक (टक्कर) पाड़ते हैं ५ हौंदे की लड़ ॥ ३३ ॥ ६ तोपों के चाकरों ने ७ तोपों के मुख को सिंदूर में भिजाकर ८ यमराज की जिह्वा जैसी ९ नेत्रों के पल लगने जितने समय में अग्नि की नहीं सहन योग्य ज्वाला है १० फैलाती है ११ शोभन १३ तुलना रहित तोपों की १२ अनेक पंक्तियां ॥ ३४ ॥ १४ फण किये हुए सर्प के मुखवाली १५ सिंहमुखी १६ ऊंट के मुखवाली १७ केसरीसिंह के मुखवाली १८ सूवर के मुख को धारनेवाली १९ आगे से बैलों का समूह खैंचता है २० लोहे का गोला २१ दस सेर के (शास्त्र में पांच सेर

हंकिय दलेल उप्पर हलक रेव चटठ चक्रन रचत ॥३५॥
सब अनीक इम सजिज अप्प हयगज आरोहिय ॥
लिय कोटेसहिँ लार सार अक्खिय रन सोहिय ॥
धुरि नोबति घनघाय कलह त्रंबक जय कारन ॥
बजि कम्माँक वड बाक द्वार प्रतिहार हजारन ॥
संक्रामि अनेक उद्धत सुभट तरिन बैठि चम्मलि तरन ॥
बुधसिंह सुवन आदेस बस लागिय मग्ग बुंदिय लरन॥३६॥
चम्मलि तट मिलि चक्र पंति छादित जल पोतन ॥
क्रीड़ा बहुविध करत सूर छकत जव स्रोतन ॥
उडुपन कति आरूढ तिरत कति भेलै तरंडन ॥
कतिक झारि बंदूक रचत कुंभीरन खंडन ॥
दल भीर नीर बढि बाढ दुरु दिस मरजादन लोपत महत॥
साजि सेतु मनहुँ दसकंध सिर बंदर जल अंदर बहत ॥३७॥
अवधिराज उम्मेद दीप सोदर लछमन दुति ॥
कोटापति कपिराज निडर सुग्रीव रचत नुति ॥
सजि अंगद सिवसिंह बैरिसल्लोत देव सुव ॥
पवन पुत्त सुखसिंह महासिंहोत धीर धुव ॥
तोक रु प्रयाग नल नील तिम मिलि हंकिय जय जंग मन ॥
बुंदिय विदेहतनया अरथ हठि दलेल रावन हनन ॥ ३८ ॥

का नाम धरी है) १ पहियों के शब्द रचती हुई ॥ ३५ ॥ २ आप (उम्मेदसिंह) घोड़े पर चढा ३ युद्ध के बडे वचन ४ द्वारपालों को ५ नावों में ६ चामल नदी को ७ उम्मेदसिंह के हुकम के आधीन ॥ ३६ ॥ ८ नावों से ९ पानी के प्रवाह को १० कितने ही छोटी नावों पर चढ ११ भैले नाव विशेष) १२ नाव विशेष १३ मगरों का १४ सीमा [हाथों] को ॥ ३७ ॥ १५ उम्मेदसिंह है सोतो रामचन्द्र है १६ छोटा भाई दीपसिंह लक्ष्मण है १७ कोटा का महाराव सुग्रीव निडर होकर १८ स्तुति करता है १९ बैरीसालोत देवसिंह का पुत्र अंगद के समान सजा २० हनुमान २१ बुन्दी रूपी सीता के अर्थ २२ हठवाले दलेलसिंह रूपी रावण को मारने के लिये ॥ ३८ ॥

तरि इम चम्मलि[1] तोय कटक[2] आरुहि केकानन[3] ॥
हंकिय रन हुसियार बीर बेधत खंग[4] बानन ॥
चौलुक कति[5] चहुवान जोध कूरम कति जद्दव[6] ॥
कति सीसोद कवंध भटन मंडिय घन भद्दव ॥
कौतुक अनेक खुरलिय[8] करत रन दुरूह[9] पंडित रजियं[10] ॥
बुधसिंह सुवन अतिजोर[11] बल सठ दलेल उप्पर सजिय ।३९।
चलत रेनु रवि ढंकि चक्क चक्किन बियोग बनि ॥
कुंभीनस[12] कसमसत भोग फट्टंत हंतै[13] भनि ॥
दिग्गज गन डगमगत जगत संकर समाधि जिम ॥
उदधि नीर उच्छलत तुंग[14] गिरि हलत शृंग[15] तिम ॥
जिम फल अनार कन[16] रद जंगध[17] इम भीरुन[18] जल उत्तरिग ॥
दिस दिस जिहान मंढिग ढुमन प्रलयकाल संभ्रम परिग ४०
प्रत्यागम[19] रचि पवन फिरत लगि लगि दल[20] फेटन ॥
झुंड गजन झुंडाल[21] झुकत फहरात झपेटन ॥
वन जंतुंव[22] हतवेग रहत थकि थकि जिहिं अंतर ॥
चलिग[23] चक्क इम चंड दक्खि निज ओघ[24] दिगंतर ॥
भय सुनि अपार गन भुम्मियन जित तित बढि भज्जन जिक्कर ॥
पक्खर न मात गैलन[25] पहुमि नभ न मात सेलन निकर[26]४१

---

१ चामल नदी का जल उतर कर २सेना ३घोड़ों पर चढ कर ४बाणों से पक्षियों को वेधन करते हुए ५ कितने ही सोलंखी ६ यादव ७राठोड़ ८शस्त्राभ्यास के खेल ९ कठिनाई से तर्कना में आवै ऐसे युद्ध के पंडित १० शोभायमान हुए ११ बलवान् सेना ॥ ३९ ॥ १२ सर्प (शेष) १३ फणा फटने से खेद के वचन [हाय] कह कर १४ ऊँचे पर्वतों के१५शिखर१६दाने का१७दांतों से कुचलने से पानी उतरना है ऐसे१८कायरों का जल (पराक्रम) उतरा ॥ ४० ॥१९उलटा गमन २०सेना की फेट से२१झंडे२२वन के जीवों का वेग हत होकर २३ इसप्रकार भयंकर सेना चली २४ अपने समूह से २५ भूमि के मार्गों में पाखरें नहीं समाती हैं और २६ आकाश में भालों के समूह नहीं माते हैं ॥ ४१ ॥

निज हठ कच्छप[1] निठुर हत्थ[2] वासुकि छवि छावत ॥
तिम मंदर[3] तंक्राट[4] भिंदुर[5] करवाल[6] भ्रमावत ॥
दल कोटापति दितिज[7] अदिति संभव[8] दल अप्पन ॥
उद्यम गति अनुसार थोक सम्मलि फल थप्पन ॥
जागर[9] बिथारि गंद[10] अरि जनन कहि कहि गुन[11] आगर कथन
चहुवान इंद्र नागर[12] चढिय मनु बुंदिय सागर[13] मथन ॥ ४२ ॥
प्रलय पौंन परमान दिपत हंकिय दल[14] दुद्धर ॥
मिलिय आनि मग मध्य कतिक पर[15] भट निवेदि कर ॥
सक इक नभ बसु सोम१८०१मास आसाढ पक्ख सित[16] ॥
तिथि द्वादसि१२दल तुंग हलिय रन मत्त लरन हित ॥
छिति[17] अप्प लैन रस बीर छकि द्रुत मुकाम इक१बीच दिय
बड अंतरीप[18] जलजाल बिधि नृपबर बुंदिय बिंटि लिय॥४३॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशौ कोटेश सहितहड्डेन्द्रावराडुम्मेदसिंहसज्जीभवनसेनासौभाग्यविजयाभिनि-

---

१ अपना हठ है सोही कठोर कच्छप है २ हाथ है सोही वासुकि सर्प की शोभा पाते हैं ५ वज्र रूपी ६ तरवार को भ्रमाता है सोही ३ मंदराचल रूपी ४ मंथनदंड (रई) है कोटा का पति है सोही ७ दैत्य है "कोटा का पति शत्रुशाल उम्मेदसिंह से छीनकर बुंदी को अपने वश में करलेवैगा इसकारण उसको दैत्य लिखा है" ८ उम्मेदसिंह की सेना है सोही अदिती के पुत्र (देवता) हैं चलने के अनुसार (बुंदी पर चलता है सोही) समुद्र के मथने का उद्यम है और सेना का शामिल होना ही मथन के स्थल का स्थापन करना है, शत्रुओं में ९ आगरण रूपी १० रोग फैलाकर ११ गुणों के समूह का (अपनी सेना के गुणों का) कथन कहकर चहुवाणों के इंद्र (उम्मेदसिंह) रूपी १२ परमेश्वर बुंदी रूपी १३ समुद्र के मथने को चढा ॥ २४ ॥ १४ कठिनाई से धर्षणा की जावे ऐसी सेना चली १५ शत्रु (दलेलसिंह) के उमराव खिराज देकर १६ शुक्ल पक्ष १७ अपनी भूमि लेने के अर्थ, जल के समूह में १८ बडे टापू के समान बुंदी को घेर ली ॥ ४३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में कोटा के पति सहित हाडों के इन्द्र रावराजा उम्मेदसिंह का सज्जित होना १ विजय करने वाली

र्याणगजहयनालीयन्त्रसुभटादिवर्णनचर्मण्वतीलंघनमार्गैक१प्रपातकरणदिगन्तरातङ्कप्रसरणबुन्दीवेष्टननालीयन्त्ररणप्रारम्भणं नवमो ९ मयूखः ॥ ९ ॥ ॥ २९० ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ षट्पात् ॥

धक्कि पावक्क धमचक्क जाल तोपन जंजीरित ॥
जपि जपि क्रंदन जाप पुर सु तपि तपि हुव पीरित ॥
परत बप्र प्राकार गिरत कपिसिर उडि गोलन ॥
बरत द्वार बाजार भार मारुत झक झोलन ॥
बिखरत गवाक्ष जालिय बहुल भरत सौध मंडप झपट ॥
मानहुँ बिनास भावक मचिग लंकापुर पावक लपट ॥ १ ॥
डिगि पब्बय कटि कूट तपिग उन्नत तारागढ ॥
बढिग झाल बिकराल रचिग संगर रावन रढ ॥
नैर परिग हटनारि सकल पुरजन अति त्रासित ॥
जरत गेह बढि ज्वाल प्रबल बारूद प्रकासित ॥
छिज्जत निवान पानिय छिनकि हुव धूमित दस१०मित हरित॥

सौभाग्यवती सेना का निकलना २ हाथी, घोड़े, तोपें, सुभट आदि का वर्णन ३ चामल नदी लांघकर बीच में एक मुकाम करना ४ दिगन्तों तक भय फैला कर बुन्दी को घेरना ५ तोपों के युद्ध का प्रारंभ होने का नवमा ९ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दो सौ निव्वे २९० मयूख हुए ॥

जंजीरों से जड़ी हुई तोपों की जाल (समूह) से २ युद्ध में १ अग्नि जला ३ रोने के वचन कह कहकर ४ पीड़ा युक्त हुआ और गोलों से ५ धूलकोट ६ चूना से बना हुआ पक्का कोट ७ कांगरे उड़ उड़ कर गिरने लगे ८ पवन के झकोलों से ९ झरोखे १० बहुत जालियें ११ महल और घुमटे अग्नि की झपेट से गिरते हैं सो मानों १२ प्रलय का भाव मचकर लंका में १३ अग्नि की ज्वाला लगी ॥ १ ॥ १४ पर्वत के शिखर कटकर डिगे और १५ ऊंचा १६ तारागढ (बुंदी के गढ का नाम तारा गढ है) तप गया १७ रावण के समान हठ से १८ नगर में १९ दशो ही दिशाएं धूम युक्त होगई.

रुकि जीह दंत*संकट रहत इम बुंदिय दल आवरित ॥२॥
कटि गोलन परि †कूट गिरत जित तित पुनि §गोपुर ॥
गृह ¶चत्वर शृंगाट[1] प्रचुर[2] प्रासाद[3] तप्यो पुर ॥
सिंहद्वार[4] संजवन[5] जरत कुट्टिम[6] घन[7] ज्वालन ॥
वीथी[8] बिपणि[9] बजार दहत अंगार दवालन[10] ॥
अपवरक[11] कोस[12] अवसाधि[13] अटजे[14] जगत चंद्रसालन[15] ज्वलन[16] ॥
होत्रीय[17] काय मानन[18] दहत छवि[19] अलात रचि उच्छलन ॥३॥
आथरवन आताप मचत फुंलिंग[20] महानस[21] ॥
तपि कटाह जिम तेल मनुज कुकत दुख मानस[22] ॥
आवेसन[23] वपनी[24] अनेक सिलगंत प्रतिश्रय[25] ॥
पाकपुटिन[26] झलपट्ट लगत जिम अग्गि महालय[27] ॥
गार्त्तिका[28] बहुल गोसालगृह[29] गंज[30] पक्कणा[31] घोखगन[32] ॥
मंदुरा[33] चतुर[34] सिलगत अमित जगत द्वार वेदिन[35] ज्वलन ॥४॥

---

*ऐसे दांतों के घेरे से जीभ रुकजाती है तैसे सेनासे बुंदी । घिरगई॥२॥ †बुरजाओं के ऊपर के शिखर गिरकर §शहर के द्वार गिरते हैं ¶घर का चौक १ चतुष्पथ (चोहटा) २बहुत ३महल और नगर तपगया ४प्रथम प्रवेश करनेका द्वार (सिंहपोळ) ५सम्मुख चार द्वारवाली चोपाड़ ६छोटे घर ७बहुत अग्नि से जलते हैं ८गलियें ९ व्यापार की गलियें, बाजार १० दीवारें बहुत अंगारों से जलती हैं ११ बीच का घर १२ भंडार १३ औषधिशाला में १४ आश्चर्य उत्पन्न करानेवाला अग्नि जलता है इसीप्रकार १५ सब से ऊपर के मकानों में भी १६ अग्नि जलता है १७ होमालय (अग्निशाला) के शरीर के १८ प्रमाण (सदृश) १९ शोभा के साथ अग्नि उछलता है ॥ ३ ॥ अथर्ववेद सम्बंधी (अथर्ववेद में मारण मोहन आदि संताप होता है तैसे) अथवा शान्तिगृह में २१ रसोई में २० अग्नि कण मचे अथवा रसोई में अग्नि कण उड़ते हैं जैसे शान्तिगृह में उड़ने लगे २२ दुःख के मन से कूकते हैं २३ शिल्पशाला (कारीगरों के घर) २४ नाइयों के घर २५ सभा का स्थान २६ कुंभशाला अर्थात् कुम्हार के आव(भट्टी)में झाळें उठैं ऐसी २७ बड़े स्थानों में झाळें उठती हैं २८ तंतुशाळा (जुलाहों के घर) २९ गउवां रहने के घर ३० मदिरागृह (कलालों के घर) ३१ भीलों के घर ३२ अहीरों के घर ३३ हयशाला ३४ गजशाला (फीलखाना) ३५ द्वार

गृह अरिष्ट[2] यंत्र गृह बेस मंडप अंगन बट[3] ॥
लगि बासोकं[4] अलाव[5] चवत एँडूक[6] चटचट ॥
उत्तरंगँ पुनि अरर थंभ छत्रिन थहरावत ॥
परिघ बिटंकं प्रघाणों लगत पाँवक[12] लहरावत ॥
नाँसा[13] रु पटलं[14] वलभिन[15] निकर[16] इन्द्रकोसँ दंतक अतुल ॥
प्रग्रीवँ बहुरि जालकं प्रथितं[21] प्रजरत इम गेहन बिपुल ॥५॥
कृति सह अन्न[22] कुसूल निकर[23] सोपाँन[24] निसैनिनँ[25] ॥
जरत सालभंजीनँ[26] उडत बनि छार सु नैनिनँ[27] ॥
पेटाँ[28] पुनि संपुटक[29] कतिक बर सिल्प करंडक[30] ॥
कंडन[31] मुसल कलिंज[32] भंति बाहुल[33] चय[34] भंडक ॥
इत्यादि[35] सकल गृह उपकरन[36] दगि अलाव पावक दहत ॥
द्रंगँ[37] जन त्रसित पह लखि दुर्गँ[38] तहखानन काननँ[39] चहत ॥

के बाहर के चबूतरे अग्नि में जलते हैं ॥ ५ ॥ १ सूतिकागृह (जापा का घर) २ तेल का घर, उत्तम मंडप और आंगने का ३ मार्ग ४ शयन के घर में ५ अग्नि लगकर ६ भींतें (दीवारें) चटचट करती हैं ७ द्वार के बाहर लगी हुई काष्ट की घोड़ियें ८ कपाट जलते हैं और छतरियों के थंभे धुजते हैं ९ कवाड़ों के रोकने का काष्ट अर्गला (आगळ अथवा भागळ) १० घरों में पक्षियों के पालने के अर्थ काष्ट के बनाये हुए घरों में ११ बाहर के द्वार में १२ अग्नि लगकर लहराती है "अग्नि शब्द पुल्लिंग होने पर भी लोकरूढी से स्त्रीलिंग लिखा जावे तो अशुद्ध नहीं है" १३ बारसोत (चौकट) अथवा छावणा १४ छज्जे (छाजे) १५ खपरेलों के आधार वक्र काष्टों (मियाकों) १६ के समूह अथवा कूटागार (सब के ऊपर के मकानों के समूह) १७ मांचा १८ खूंटियें १९ झरोखे वा खिड़कियें २० जालियें, घरों में इसप्रकार बहुत २१ प्रसिद्ध जलती हैं ॥ ५ ॥ २२ अन्न के भरे हुए कोठे २४ सीढियें (जीने) २५ नीसरनियों के २३ समूह २६ काष्ट की बनी हुई पुतलियें जलकर २७ श्रेष्ट नेत्रवाली स्त्रियों के नेत्रों में उड़ती हैं अथवा उन श्रेष्ट नेत्रवाली पुतलियों की भस्म होकर उड़ती है २८ पेटियें (संदूकें) २९ डिब्बे ३० कितने ही श्रेष्ठ कारीगरी के टोकरे (छबले) ३१ ऊँखली मूसल ३२ कड़ाहियें ३३ बहुत प्रकार के ३४ भांडों [मिट्टी के पात्रों] के समूह ३५ इनको आदि लेकर घर की सब ३६ सामग्री को अग्नि का समूह जलकर वह अग्नि जलाती है ३७ नगर के लोक डरकर ३८ घुसने के लिये तहखाने और ३९ वन

तरु देवल[1] पुर[2] ताल[3] काल कच[4]माल कदंबित[5]॥
जरत बिपंचिन[6] जाल[7] नागदंतन[8] अवलंबित[9] ॥
मंच[10] बहुरि प्रतिमंच[11] सुघट बिष्टर[12] सिंहासन ॥
बिखरत बीथिन[13] बीच परत आलय[14] चहुँ पासन ॥
त्रपु[15] नाग[16] द्रवत अतिसय तपित[17] पारद[18] उडत अकास पथ
जुत तूल[19] राल गंधक जरत करत तोप कल कल अकथ[20]॥

॥ दोहा ॥

इम तोपन आताप अति, बुंदिय नगर बिहाल ॥
सठ दलेल अति भय सहित, कलि[21] वह मन्न्यौं काल ॥ ८
तारागढ चढिगय त्वरित, अंतहपुर[22] जुत एह ॥
इम उमेद भूपति अतुल, मंड्यो गोलन मेह ॥ ९ ॥
साहिपुरप जुत सेनपति[23], इततैं वह द्विज आय ॥
जंग कठिन लखि तिहिं[24] जवन, लिय गुजरात पलाय[25] ॥१०॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

यारीति रावराज उम्मेदसिंह वैरिनके बिडारिवेकौं बुन्दी बि-ति

को चाहते हैं ॥ ६ ॥ वृक्ष १ देवालय [मंदिर] २ नगर और तलाव ३ कासमर्द [वृक्षविशेष] अथवा राज ४ केसों के समूह "यहां यदि कालकचमाल, एक पद किया जावै तो इसका अर्थ अश्लील होजाता है क्योंकि केसों साथ काला शब्द लगाने से गुह्य स्थान के केसों का बोधक होजाता है जैसे राजा रात्रि, निद्रा, पण्डित आदि शब्दों के साथ महा शब्द के लगाने से विरुद्ध अर्थ होजाता है सो ऐसा प्रयोग उत्तम कवि नहीं करते हैं" ५ उपरोक्त वस्तुओं का समूह और ८ खूँटियों पर ९ लटके हुए ६ वीणाओं के ७ समूह १० मांचे ११ बडे मांचे (डैला) १२ श्रेष्ट घड़े हुए बाजोट जलकर १३ गलियों में बिखरते हैं १४ घरों के चारों ओर १७ बहुत तपने से १५ कथीर १६ सीसा बहता है और १८ पारा आकाश के मार्ग उडता है १९ रूई सहित राल, क जलता है और २० कहा नहीं जासके जैसा तोपें कोलाहल करती हैं ॥ ७ ॥ २१ उस युद्ध को ॥ ८ ॥ २२ जनाना सहित ॥ ९ ॥ २३ सेनापति गोविंदराम ब्राह्मण २४ उस गुजरात के सूबेदार यवन ने २५ भागकर गुजरात

नीनी ॥
अरु ताकदार तोपनकों लगाय महाप्रलयके माफिक मार दीनी ॥
अच्छे बारूदके उडान बज्रपातसे गोले गिरन लगे ॥
अरु तारागढके*प्राकार कंगुरेनको†कलाप‡किरन लगे ॥११॥
जिन तोपनके§कलाप कुलटानायिकाके समान सोभित भये ॥
अरु गोलंदाजनकों जार जानि पूर्वानुरागके प्रभाव समीप लगे ॥
जिनकै अद्भुत अनंगकी आगि ऐसी कि उदरमैं नमावैं यातैं
ननकी ओर उफनाय कढैं ॥
सो समीपके सबनकों बचाय दूरके दुर्ग दाहिबेकों बढैं ॥१२॥
जिनकों आहार पचे तैं अपनैं स्वामीकों आनंद नाँहि आवैं ॥
अरु वमन कियें तैं बिट बिदूसकन सहित नायक मोद पावैं ॥
जे खिन खिनमैं गर्भाधान धारिकैं प्रसूतिकालको बिलंब
हिं करैं ॥
परन्तु जिनके बालक कुपुत्र यातैं होतही जनक जननीकों छोरि
नके वृंदमैं बसिबेकों कूदिपरैं ॥ १३ ॥
जिनकों बत्तीस बत्तीस ३२ जार भोगैं तथापि अल्प साधन जानि
जंगके बिजयकी पताका उडावैं ॥
अरु तृप्तिके अभाव बडे बैलनके जोट जीति बैंडे हत्थीनके
के खावैं ॥
आंगि देबेवारोही जनाइबेवारी दाई ताकों जलदीसूँ जनाइबेमैं
धरैंताकी बखसीस करैं ॥
ऐसी उनमत्त जानि कितनेक दरितें दाईनके संदोहैं जनायबे-

॥ १० ॥ * कोट † कांगरों के समूह ‡ गिरने लगे ॥ ११ ॥ § समूह
लगे १ पहिले की प्रीति २ कामदेव की अग्नि ३ मुख की तरफ ॥ १२ ॥
कोट (के) ५ कामी पुरुष के सखा ६ बालक जनने के समय में ७ पिता ८
ता को ९ समूह में ॥ १३ ॥ १० अग्नि देने (बत्ती बताने) वाला ११ बह
र की १२ डरनेवाले १३ समूह ॥ १४ ॥

की हाँस न धरैं ॥ १४ ॥

जिनके*आनन†आरक्तमानौं ‡वन्हिके वमनहीसौं यह रंग धरैं

अरु आलस ऐसे कि अपनी सज्जापर सूतांही आहार बिहारादिक कर्म करैं ॥

जे बलिष्ठ ऐसी कि जंगी कारतूस बिना§सगर्भा होय जावैं ॥

अरु जंगी कारतूसकरि जरायु[1]थेलीसौं जुदेही पुत्र उपावैं ॥१५॥

जिनकी तीखी नजरिके कटाक्ष लागैं गढ पर्वत आदि जंगम हू लोटी परैं ॥

अरु चंडवेग[2] चिरवेग[3] ऐसी कि संप्रयोग[4] सूरि[5]नतैं कामकलहकौं जीति जीति गर्ज्जना करैं ॥

ऐसी तोपनके फैर परं फैर जारी भये ॥

अरु पत्तनके[7] प्राकारकौं दुरबाजू छेकि छेकि गोले आडअद्रि[8]के अंतर बिहार करन गये ॥ १६ ॥

तारागढके प्राकार कपिसिर[9] वंप्रन[10] समेत थहराय तूटन लगे ॥

कैधौं आखंडल[11]के असिनि[12]सौं उत्तुंग अद्रिनि[13]के कूट फूटनलगे ॥

या रीति तोपन बुन्दीके बैरखा[14]कौं बेधि घनैं घंटापथ[15]नके समान पंथ कीनैं ॥

अरु रावराजा उम्मेदसिंह महाराव दुर्जनसाल हल्लेको हुक्म दै वारिवाह[16] बीजुरीसे खेटक[17] खग्ग[18] लीनैं ॥ १७ ॥

---

* मुख † लाल ‡ अग्नि के उगलने से § गर्भ पटकनेवाली १ उल्व (आवळ) रूपी थेली से ॥ १५ ॥ २ जड़ सी ३ भयंकर वेग ४ बहुत ठहरने वाली ५ रत करनेवाले ६ चतुरों से ७ नगर के कोट को ८ आडाबला नामक पर्वत में ॥ १६ ॥ तोपों के इस रूपक में कुलटा नायिका के साथवाले शब्दों में श्लेष है परन्तु अश्लील होने के कारण हमने उनका अधिक विवरण छोड दिया है और यथार्थ में इनका अर्थ भी सीधा है ९ कंगुरे १० कोट सहित ११ इन्द्र के १२ वज्र से १३ ऊँचे पर्वतों के शिखर १४ कोटको १५ चौड़े मार्ग (राजमार्ग) १६ मेघ और बिजुली के समान १७ ढाल १८ तरवार ॥ १७ ॥

दक्खिनकी तरफसोँ सज्जीभूत सेना समेत दोऊ२ नरेस पत्तन मैं पैठि चन्द्रहास चलाये ॥

अरु पच्छिमकी तरफसौँ साहिपुराके*अधिराज उम्मेदसिंह कोटाको†कटकेस गोविंदराम‡तोरनकौँ तोरि इभगीरहरोलनके झुंड हलाये

दोऊ२ तरफसौँ§वरूथिनी बढि भीतरके भटनपैं महाकाल रूप ¶मंडलाग्रनकी मार दीनी ॥

तिनकौँ दबते देखि दलेलसिंह तारागढ सौँ एक हजार १००० सच्चे सूरवीर भेजि संहरके स्वकीय[1] सिपाहनकी भीर[2] कीनी ।१८।

तिनमाँहिंसौँ कितेक बंदूकनके चलाक गृहस्थनके गेहनके ऊँचे अट्टनकौँ[3] अरोहि[4] पैलेनको पहिचानि गोलीनतैं गजब करन लगे ॥

अरु सेस जे असेस धारांधरहीसौँ धापिवेको संकल्प सच्चे करि पैलेनकी पृतनामैं[5] पैठि अश्वमेध अध्वरके[6] फलके उपमान आपुनैं अडोल अंघ्रिनँकौँ[7] अंगदकी रीति धरन लगे ॥

चिरकालसौँ[8] बिछुरे मित्रनके माफिक कितनेक अछूती अनीके लाडा छातीसौँ छाती भिराय मिलन लगे ॥

अरु परस्परके प्रहरनं[9] प्रपात असित अंबुंदसे[10] अज्झेलनपैं[11] झिलन लगे ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

ससि अंबर बसु इक१८०१ समा[12], बिक्रम सक गत बेर ॥
बुंदिय पुर बाजार बिच, झरिग बाढ आसि झेर ॥ २० ॥

॥ मुक्तादाम ॥

अमावसि सावन मास अनेह[13], मच्यो इम बुंदिय खग्गन मेह ॥

---

* पति † सेनापति ‡ नगर के द्वार को § सेना ¶ तरवारों की १ अपने २ सहायता ॥ १८ ॥ ३ छतों पर ४ चढकर ५ सेना में ६ यज्ञ के ७ पैरों को ८ बहुत समय से ९ शस्त्रों के प्रहार १० काले मेघ जैसे ११ हाथों पर झेलने लगे ॥ १९ ॥ १२ सम्वत् ॥ २० ॥ १३ समय

छई नभ गिद्धनि चिल्हनि छत्ति, घुमंडत गृद्धन चंचुव घत्ति ॥२१॥
लगी लुभि घुम्मन अच्छरि लैन, गुथ्यो रस भाव बिभावन गैन ॥
रच्यो इत तंडव नारद रारि, झुक्यो ऋषि ह्वाँ महती झनकारि २२
उडे सिर झेलत उद्धहि ईस, वहैं इत चंडियके भुज बीस ॥
चटक्कहि रत्त खिलैं चउसट्ठि६४, बवक्कहि बावन५२ गावन गंठि॥२३॥
चुरैलिनि मंडत फालन चाल, लगावत डाइनि घुम्मरताल ॥
बजैं लगि खग्गन खग्गन बाढ, गिरैं भट भीरु भजैं तजि गाढ।२४।
उमेद दिनेस रच्यो खग खेल, दुरयो सठ घुग्घुव दुग्ग दलेल ॥
फवैं असि खुप्परि टोपन फारि, बहैं जनु सब्बुव तंति बिदारि ॥२५॥
किरैं कटि हड्डन खंड करक्कि, झरैं उडि धारन बूर झरक्कि ॥
कटैं सह सत्थिन जानुव जंघ, सु ज्यों गज सुंडिन खंडन संघ।२६।
फरक्कहि कढ्ढहि कालिक फिप्फ, भचक्कहि टोप कपालन भिप्फ ॥
उडे सिर फुट्टत भेजन ओघ, मनौं नवनीत मटक्किय मोघ ॥ २७ ॥
मचक्कहि रीढक बंक अमाप, चटक्कहि ज्यों मिथिलापुर चाप ॥
धसैं कढि लोचन सोनित धार, चढैं सिसु मच्छ बिलोम कि वार२८
कटैं गल स्वास बजैं बिकरार, धमैं धमनी जनु लग्गि लुहार ॥

१छत्री २चांच घाल कर॥२१॥३शृंगार रस के भाव अनुभाव गुथे (रस के अनुकूल मन का विकार होवै उसको भाव और भाव के जनानेवाले को अनुभाव कहते हैं, यहां अमरकोशकारने (विकारो मानसो भावो) लिखा है जिसका रसतरंगिणी कार खंडन करता है) विभाव उद्दीपन को कहते हैं ४ आकाश में ५ नृत्य ६ नारद की वीणा का नाम है ॥ २२ ॥ उडे हुए मस्तकों को शिव ७ ऊपर ही झेलते हैं ८ रक्त पीकर ९ चौसठि योगनियें प्रफुल्लित होती हैं १० एकत्र होकर (गांठ बंधकर ॥ २३ ॥ ११मलंगों से (फांदने, कूदने से) १२तरवारों का तरवारों पर लगकर घाव बजता है॥२४॥१३गढ में छिपगया॥२५॥१४जाडी जंघा को सक्थि (साथल) और पतली को जंघा कहते हैं सो साथल, घुटना और जंघा कटती हैं१५समूह ॥ २६ ॥१६कलेजे और फेंफरे१७कपालों को भेदन करके १८मक्खन की मटकी फूटी ॥ २७ ॥ १९ पीठ का हाड २० जनक राजा की पुरी (तिरहुत देश) के धनुष २१ छोटी मच्छी पानी में उलटी चढै जैसे ॥ २८ ॥ २२ धमनी (धमण)

कढैं हिय छत्तिय फट्टि किवार, सु ज्यौं [1]ह्रद लोहित कंज[2] सुढार[3] २९
परैं कढि अंत अपुब्ब[4] प्रकारि, फनी[5] गन जानि टिपारन फारि ॥
परैं छुटि संधित[6] प्रान अपान, मनौं पँय पानिय लोन मिलान ॥३०॥
बनैं फटि डाच कढे रद बड्ड, किधौं घृत डब्बिय रंक कवड्ड ॥
गिटैं रसना कढि झग्गन ग्राम, चढैं नचि नागिनि ज्यौं पय आम[11]३१
लगैं दृग मुच्छ फरक्कत लीन, मनौं उरझी[12] बँनसी मुख मीन ॥
छलैं छत[13] रत्त छछक्कन छुट्टि, फबैं जनु गॅग्गरि जावक[14] फुट्टि ॥ ३२ ॥
झुकैं असि मत्त दुहत्थन झारि, मनौं रँजकालि[15] सिला पट मारि ॥
छुटैं फटि पेटिय लोटिय[16] लंब, तनैं पट जानि कुँबिंद[17] कदंब ॥ ३३ ॥
मचैं रव टोप उडैं फटि मत्थ, अलाबुन[18] जानि अतीतन हत्थ ॥
कढैं दृग लग्गि कनीनिय[19] काल, मनौं कुँब लोहित भौंरन माल ३४
चलैं फटि ढाल बकत्तर चीर, सु ज्यौं तरु ताडन पत्त समीर[21] ॥
धसैं हिय गोलिय गावत गित्त, मनौं पटवा बटवा बिच बित्त ।३५।
रटैं फटि कोंचँ[22] कशी रननंकि, झरैं घँन[23] बादन ज्यौं झननंकि ॥
घटैं दम मत्त वकैं छकि घाय, मनौं मद पामर जीह जडाय ॥ ३६ ॥
कढैं वँपु[24] छक्कि वंरच्छिन[25] आंत, तृंणाध्वज[26] अग्ग कि गॅज्ज[27] प्रपात ॥
लगैं निकसैं छकि पॅट्टिस[28] लाल, मनौं परतीयनके[29] कर जाल ।३७।

[1]जलाशय (द्रह) में [2]लाल कमल [3]श्रेष्ठ रीति से ॥२९॥ [4]अपूर्व रीति से [5]सर्पों का समूह [6]मिले हुए श्वास और उच्छ्वास की संधि छूटती है [7]लवण (नमक) मिलाने से दूध और पानी फटजावैं जैसे ॥३०॥ [8]मुख फटकर बडे दन्त दीखते हैं सो मानों दरिद्री ने डिब्बे में [9]कोडियें रक्खी हैं [10]झागों के समूह को जीभ निगलती है सो मानों सर्पिणी [11]कच्चा दूध पीती है ॥३१॥ [12]मच्छी पकड़ने का कांटा मच्छी के मुख में उलझा [13]घावों से रुधिर [14]जावक का घड़ा ॥ ३२ ॥ [15]धोबियों की पंक्ति [16]लंबी पड़ी हुई [17]जुलाहों के समूह वस्त्र फैलाते हैं ॥ ३३ ॥ मानों जोगियों के हाथ से [18]तूंबे गिरते हैं [19]नेत्रों की काली पुतली [20]लाल कमल में ॥ ३४ ॥ [21]पवन से ताड़ वृक्ष के पत्र फटैं जैसे ॥ ३५ ॥ [22]कवच की कड़ी [23]कांसी आदि धातु का वाद्य ॥ ३६ ॥ [24]शरीर को [25]समूह [26]बाँस वृक्ष का अग्र मेघ की [27]गर्जना से भूमि से निकलै जैसे [28]कटारी [29]परकीया नायिकाओं के हाथ जालियों से कढैं जैसे (परकीया नायिका अपना

सुहैं फटि हड्ड चटच्चट संधि, चटक्कत प्रात गुलाब कि गंधि ॥
उठैं बिनु मत्थ किते तनु *तुंग, थेइ त्थेइ नच्चत थुंगत थुंग ॥ ३८ ॥
बबक्कत †डाच कितेकन बैन, मनौं बड बक्कर टक्कर ‡मैन ॥
गिरैं बररक्कत पंसुलि गात, मनौं कठछप्पर पत्थर पात ॥ ३९ ॥
छुटैं §पल जानु कढैं ¶नल हड्ड, मनौं रद ÷बारन बंगर बड्ड ॥
लटक्कत पाय रकाबन रुक्कि, मनौं तप सिद्ध अधोमुख झुक्कि॥४०॥
मलंगत छत्तिनके क्रम मप्पि, मनौं नट पट्टरि पाय मलप्पि ॥
छुटैं घन घायक[1] सायक सोक, उडैं सरघा[2] गन ज्यौं तजि ओक[3]।४१।
छके कति वृत्त[4] फिरे सुधि छोरि, बनैं जनु बालक भंभह[5] भोरि ॥
गिरैं सर बिद्ध घनैं सिर तत्त, मनौं सरघान[6] तजे मधुछत्त[7] ॥ ४२ ॥
सरैं घन संगिन भिन्न सरीर, कुमारिनके जनु उंज्ज[9] करीर[10] ॥
वकैं वहु प्रेत मिल्ल गल बत्थ, किधौं रन मल्ल अपूरब कत्थ ॥ ४३ ॥
जगावत हाक रचावत जंग, लगावत भैरव नट्ट मलंग ॥
घसैं चढि डाकिनि के मृत[11] छत्ति, मनौं कि बिटूंसक[12] कौं तिय मत्ति४४
अटैं पय इक्क१ किते छक्क ओप, किते इक१ नैंन लखैं भरि कोप
करैं कटि जीह किते अंअ[13] कूक, मनौं कि परंगिर[14] प्रेरित मूक।४५।

महँदी का हाथ दिखा कर लाल रंग के संकेत से जार को अपना रजस्वला होगा जनाकर उसके आने का निषेध करती है) ॥ ३७ ॥ * ऊँचे ॥ ३८ ॥ † कितनों के मुख से अवाच्य शब्द निकलते हैं सो ‡ बडे कामी बकरे की टक्कर सें, अथवा बडे बकरे की टक्कर सें भी नहीं होवैं ऐसे बकाई खाने के बचन कहते हैं ॥ ३९ ॥ § मांस छूटकर घुटने सहित ¶ नली की हड्डियें निकली हैं सो मानों ÷ हाथी के बडे दन्त बंगडों सहित हैं ॥ ४० ॥ १ घाव करने वाले घाव २ मधुमक्खी ३ घर छोडकर ॥ ४१ ॥ ४ चक्राकार (गोल) ५ भांभाभोली, भमल (चक्कर) खाने का बालकों का खेल विशेष ६ मधुमक्खियों के छोडे हुये ७ मुवाल के छाते हैं ॥ ४२ ॥ ८ बरछियोंसे बहुत छिदे हुए शरीर चलते हैं सो मानों ९ कार्तिक मास में लडकियां के बहुत छिद्र वाले १० घडे हैं॥४३॥ ११ मरेहुयों की छातियों को डाकिनियें घिसती हैं १२ कामी पुरुष को मस्त स्त्री॥४४॥ १३ बकाई खाकर स्पष्ट नहीं बोले जानेवाले अवाच्य शब्द का अनुकरण है १४ दूसरे का वाणी से प्रेरणा किया हुआ गूँगा मनुष्य॥४५॥

कैमैं इक१ ओठ किते इक१ कान, घनैं मुख अद्ध रचैं [२]घमसान ॥
किते इक१ हत्थ किते गत केस, बनैं [३]बहुरूप मनौं [४]नव बेस ॥ ४६॥
मिलैं [५]रसना कढि [६]नक्कुट मूल, फबैं भुजगी कि लगी तिलफूल॥
किते कर टेकि उठैं रन [८]रत्त, मनौं मदछाकन पामर मत्त ॥ ४७
रहैं कति गिद्धनकौं गल लाय, कहैं कति हू [१०]रंव [११]अँचत हाय ॥
बकैं कति मात पिता तिय बैन, गिरैं कति मोहित उच्छलि [१२]गैन ४८
[१३]अँव घन सावनको इत [१४]तुट्ठि, [१५]बरूथ घटा इत आयुध बुट्ठि ॥
बहैं पुर बुंदिय [१६]सोन बजार, [१७]धँपा जनु जोहि सरस्वति धार॥४९॥
गिरैं जल बद्दल गंग सु गाथ, पुर स्त्रिय अंसुव [१८]जामुन [१९]पाथ ॥
बही इम [२०]वेनिय पत्तन बीच, मिलैं बहु मुक्कित जहाँ लहि [२१]मीच॥५०।
बन्यों रन बुंदिय सावन अद्ध, [२२]दुरघाँ असि ज्वाल भयो पुर [२३]दद्ध ॥
लुहट्टन लग्गिय लुत्थन लुत्थि, बिथारिग हट्टन वट्टन बुत्थि ॥५१॥
[२४]रसाकुल रुंड परे खिलि खंड, ढरे बनिजारनके जनु [२५]टंड ॥
डडक्कत [२६]डौंरुल के डमरूक, घुरावत घाय घने जनु [२७]घूँक ॥ ५२ ॥
रटैं सिर मार अटैं कति रुंड, मिटे कति जोर फटैं कति मुंड॥

१फिरते हैं२कई आधे मुखवाले युद्ध करते हैं३भाँड४नवीन स्वांग करे जैसे ॥४६॥ ५जीभ कटकर६नासिका के मूल से मिलती है सो मानों७तिल के फूल से लगी हुई सर्पिणी शोभा देती है८युद्ध में प्रीति करनेवाले॥४७॥९गले से लगा कर १० शब्द ११ मूर्छित होकर १२ आकाश में उछल कर गिरते हैं ॥ ४८ ॥ १३ इधर श्रावण मास का मेघ १४ प्रसन्न होकर वर्षा करता है १५ सेना रूपी घटा इध-र शस्त्र बरसाती है१६रुधिर बहता है सो १७ वही मानों सरस्वती की लाल धारा बही ॥ ४९ ॥ बादलों से जल गिरता है सोही श्रेष्ठ यशवाली गंगा है पुर की स्त्रियों के कज्जल युक्त नेत्रों से आंसू बहते हैं सोही श्याम वर्णवाली १८यमुना नदी का१९जल है२०इसप्रकार नगर में त्रिवेणी बही २१ मृत्यु लेकर जिस त्रिवेणी में मुक्ति मिलती है ॥ ५० ॥ २२दोनों ओर की तरवार की ज्वाला से पुर२३दग्ध होगया ॥ ५१ ॥ मस्तक रहित शरीरों के टुकड़े होकर २४अवकाश रहित (भर) पड़े सो मानों २५ टांडा (बालध) पड़ी है २६ भैरव और देवी आदि के बाद्य बजते हैं२७ घुघुओं (उलूकों) के समान कितने ही

बरैं सिर मंगि भरैं हर बैल, छकैं कति छोह हकैं रन छैल ॥५३॥
लगैं कति कंठ लरत्थर पाय, जगैं कति प्रेत ठगैं भट जाय ॥
लखैं कति हूर चखैं मिलि लाह, नखैं नभ फूल रखैं गिनि नाह॥५४॥
किरैं कहुँ कोच खिरैं लगि खग्ग, फिरैं कति मत्त भिरैं जनु फग्ग
चिरैं सिर बाढ गिरैं अति चोट, घिरैं नद सोंन तिरैं कहुँ घोट॥५५॥
जरैं उडि अग्गि भरैं असि जोर, ढरैं भट केक टरैं जिम ढोर ॥
दरैं कति कुप्पि धरैं धक दाव, भरैं कति भूरि करैं मृत भाव ५६
मरैं थकि स्वास परैं कहुँ मूढ, अरैं कहुँ हूर बरैं नवऊढ ॥
ररैं हरि केक लरैं धकि रोस, हरैं जिय केक सरैं तजि होस५७
फटैं धर प्रेत बटैं सिर फाँक, लटैं मन केक कटैं उर लाँक ॥
खुलैं कहुँ नैंन डुलैं कहुँ खग्ग, झुलैं कहुँ उंढ फुलैं मुख झग्ग ५८
छुलक्कत घायन रत्त छछक्क, उरज्झत केस बनैं अकबक्क ॥
त्रहक्कत तंतिन सिंधुव तार, दहक्कत भूतल देत दरार ॥ ५९ ॥
झनंकत पक्खर वेधित बंट, घमंकत घुग्घर घंटन घंट ॥
बढी कुणपावलि उग्र बखान, मनौं बड पत्तन दिग्घ मसान॥६०॥

घाव बोलते हैं ॥ ५२ ॥ कितनेही मस्तकों को शिव १ अपनाकर (वरणीकर-के) मांगकर बैल भरते हैं २ रणरसिक क्रोध में छककर आगे बढते हैं ॥ ५३ ॥ उनमें कितने ही ३ लुढ़कते हुए चरणों से शत्रुओं के कंठ से लगते हैं, कितने ही प्रेत उठते हैं और वीरों को ठगते हैं ४ आकाश से पुष्प डालकर ५ उनको अपना पति मानकर रखती हैं ॥ ५४ ॥ तरवारें लगकर कहीं पर कवच ६ गिरते हैं ७ रुधिर की नदी में घिरे हुए कहीं पर ८ घोड़े तिरते हैं ॥ ५५ ॥ बल पूर्वक तरवारों के पड़ने से अग्नि उडकर जलती है जिससे कितने ही वीर गिरते हैं और कितने ही ९ पशु (गऊ) के समान टलते हैं, कितने ही क्रोध करके धक के साथ दाव देकर १० विदारण करते (काटते) हैं "दृविदारणे" इस धातु से यह शब्द बना है. ११ बहुत ॥ ५६ ॥ १२ मूर्छित होकर कितनी ही अप्सराएं हठ करके १३ नवीन वर करती हैं१४कितने ही वीर विष्णु भगवान् को रटते हैं १५ चेत को छोडकर चलते हैं॥५७॥१६धड़१७घांटते हैं १८मन मुड़कर१९लंक (कमर) २० ऊपर झूलते हैं ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ २१ मुरदों की पंक्ति २२ बड़े नगर के २३ बड़े स्मशान ॥ ६० ॥

गवाक्षन जालिनके पट डारि, रही रन बुंदिय नारि निहारि ॥
बढी घन मार मची हथबाह, रुक्यो रवि जंपत[2] वाह सिराह ॥६१॥
अरयो नृप छोनिय[3] लैन उमेद, खिंज्यो[4] इम देत दलेलहिं खेद ॥
बढे गढ सम्मुह छेकि बजार, मिली तह सत्रु हजारन मार ॥६२॥
चले सर चंड[5] चटक्कत चाप[6], मचावत पंखन सोक अमाप ॥
बहैं बरछी असि तोमर तोम[7], बनैं नर कातर लोमबिलोम ॥ ६३ ॥
उरज्झत अंत्र[8] कटारन[9] तोरि, गही जनु नागिनि अंकुस[10] डारि ॥
लगैं खैर खंजर पंजर लीन, मनौं प्रतिलोम[12] धसैं जल मीन ॥६४॥
चलैं फटि पात गदा सिर चीर, मनौं तरबूज हनैं कर कीर ॥
चलैं तजि म्यान छुरी पल[13] चाह, मनौं पिचकारिन बारि प्रवाह ६५
झरप्फर चिल्हनि गिद्धनि झुंड, मगरत चंचुन ऐंचत सुंड ॥
किलोलत स्यार सिवा[14] गन कंक[15], नचैं बहु डाकिनि प्रेत निसंक।६६।
घनैं हननंकत घोटक[16] घुम्मि, भिरैं कति भिन्न गिरैं छकि भुम्मि
कुसाँ[17] गल छुट्टत तुट्टत तंग, भभक्कत मारुत प्रोथन[18] भंग ॥ ६७ ॥
परैं भजैं जर जीन पलान, किते कविका[19] बिनु लेत उडान ॥
बहे पुर तद्दिन[20] रत्त[21] रु वार, धपी बढि बीथिनैं[22] बीथिन धार॥ ६८ ॥
मनौं यह दुग्ग छुधातुर[23] पाय, दये बलि मानव[24] संभर राय ॥
समाकुल[25] लुत्थिन बुत्थिन बैट्ट[26], चढैं पल[27] चिक्कन हट्ट चुहट्ट ॥६९॥
सह्यो घन चोरनको दुख जीय, लगैं अब बुंदिय भूपति हाय ॥

---

१ झरोखों की जालियों पर वस्त्र डालकर २ प्रशंसा का वचन कहता हुआ ॥६१॥ ३ भूमि लेने को ४ क्रोध करके ॥६२॥ ५ भयंकर बाण ६ धनुष खैंच कर ७ आंतों का समूह ॥ ६३ ॥ ८ आँतों में ९ कटारी की ताड़ियें १० मानों सर्पिणी को अङ्कुश डालकर पकड़ी है ११ तीक्ष्ण खंजर शरीर में लीन होता है सो मानों १२ उलटा ॥ ६४ ॥ १३ मांस की चाह से ॥ ६५ ॥ १४ गीदड़ियां १५ ढींच (पक्षी विशेष) ॥ ६६ ॥ १६ घोड़े १७ घाग १८ फुरनों को चीरता हुआ ॥ ६७ ॥ १९ लगाम विना २० उस दिन २१ रुधिर और जल २२ गली गली में ॥ ६८ ॥ २३ गढ को भूख से पीड़ित २४ मनुष्यों का बलिदान २५ भर गये २६ मार्ग २७ मांस और चरबी ॥ ६९ ॥

घनैं दिन भुग्गि बियोगेज भार, कियो जनु सोनितै रंग सिंगार ७०
दलेल लखी तपकी तरवारि, घुज्यो छत दुग्ग पलापन धारि ॥
सुन्यौं यह जैपुर जामिँप भार, कियो निज मंत्रिँय भ्रात तयार ७१

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तम ७ राशौ पूर्वनालीयन्त्रयुद्धकरणानन्तरगोपुराऽररविदारणबुन्दीप्रवेशनतुमुलरणरचनदलेलसिंहताराद्गुर्गाऽऽरोहणानन्तरजैपुरश्रवणं दशमो १० मयूखः ॥ १० ॥ ॥ २९१ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

जैपुर नृप ईस्वरँ जबहि, सुनि यह बुंदिय सोर ॥
सजि दल दुव्वर मुक्कल्यो, दैन सहाय सजोर ॥ १ ॥
राजामलको इक अनुज, भ्रात नाम सिवदास ॥
सेनापति खत्री सु करि, पठयो समर प्रयासँ ॥ २ ॥
राजामल निज अनुज सन, किय तब मंत्र इकत्त ॥
कहिय अग्ग जयसिंह नृप, मोसन भयउ बिरत्त ॥ ३ ॥
यह लखि मंद दलेल इहिँ, मन्नैं हमहिँ निकम्म ॥
अंव्द लार देतो अयुत१००००, दिन्नैं ते नहिँ दम्म ॥ ४ ॥
तीन३ बरस पाई तबहि, अप्पन बिपति अछेह ॥

१ वियोग से उत्पन्न हुआ भार २ लाल रंग का ॥ ७० ॥ ३ गढ के होते हुए भागना विचार कर धूजा ४ बहिनोई पर ५ अपने मंत्रि राजामल के भाई को ॥ ७१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, प्रथम तोपों से युद्ध करने पीछे शहर के द्वार के कवाड़ तोड़ना १ बुंदी में घुसकर भयंकर युद्ध करना २ दलेलसिंह का तारागढ पर चढना ३ जयपुर में इस वृत्तान्त के सुनने का दशवां १० मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ इकानवे २९१ मयूख हुए ॥

६ ईश्वरीसिंह ने ॥ १ ॥ ७ युद्ध के परिश्रम ॥ २ ॥ ८ मुझ से ९ प्रतिकूल (नाराज) ॥ ३ ॥ १० प्रतिवर्ष (सालियाना) ११ रुपये ॥ ४ ॥

मंगेहू दम्म न मिले, अपटु नट्यो सठ एह ॥ ५ ॥
यातैं अबहि दलेल कौं, दैन सहाय न अच्छ ॥
पहिलैं तुम बरवाड़ पुर, प्रबिसहु मारि बिपच्छ ॥ ६ ॥

॥ सोरठा ॥

सुनि खत्रिय सिवदास, अग्रज-हिंतु निदेस यह ॥
आनि प्रथम जय आस, लरन लैन बरवाड़ लगि ॥ ७ ॥

॥ षट्पात् ॥

अग्गैं पुर बरवाड़ वीर इक भयउ महाबल ॥
रामसिंह रट्ठोर जाहि अक्खत जग रुट्टल ॥
ताकें कुल सिवसिंह भयो रन दान धुरंधर ॥
हड्डुन मुहुकमहरन सजिय तासनें बहु संगर ॥
इन हनि अनेक रट्ठोर भट ग्राम च्यारि४ तस दब्बि लिय॥
यह लखि कबंध सिंवसिंह इहिं कलहं घोर प्रारंभ किय॥८

॥ दोहा ॥

जो मुहुकमसिंहोतको, ग्राम परैं डग तास ॥
ताहि प्रँजारत लुट्टितो, बहुनन विरचि बिनास ॥ ९ ॥

---

१ मूर्ख ॥ ५ ॥ २ शत्रुओं को ॥ ६ ॥ ३ रोटला कहते हैं (इस रामसिंह के नियम था कि भोजन के समय नगारा बजवाना उसका शब्द सुनकर जितने दीन इकट्ठे होते तिनको भोजन कराये * पीछे आप भोजन करता इसी कारण से उसका नाम रामसिंह रोटला प्रसिद्ध होगया था और यह उदयपुर के महाराणा बड़े जगत्सिंह के समय मेवाड़ का सेनापति था)॥७॥मोखमसिंह के ४ वंशवालों ने ५ उस शिवसिंह से ६ युद्ध ॥ ८ ॥ ७ जलाकर ॥ ९ ॥

---

*रामसिंह के इस कार्य की प्रशंसा का एक दोहा राजपूताना में प्रसिद्ध है वह नीचे लिखा जाता है

रामें मूंजाई रची, मारूधर मेवाड़ ॥
रोट भाटकें तेणरज, पही धुंधला पहाड़ ॥ १ ॥

इसमें कवि उत्प्रेक्षा करता है कि राठोड़ रामसिंह ने मेवाड़ की भूमि में रसोई (रसोवड़ा) की रचना की जिसमें रोटियों के भाटकने से जो रजा उड़ी उससे मानों प्रभात के समय पर्वत धुंधले दीखते हैं ॥

हट्ठन तब मुहुकमहरन, अति साहस इहिं जानि ॥
बेटी अप्पहिं बैरमैं, मंत्र सबन यह मानि ॥ १० ॥
जाई जुग्गियरामकी, जड़ सालमकी जामि ॥
सिवसिंहहिं व्याही सबन, दोऊ दिस हित धामि ॥ ११ ॥
नृप कूरम जयसिंह पुनि, अतुल कपट रचि आइ ॥
दियउ कहि सिवसिंह यह, लियउ छिन्नि बरवाड़ ॥ १२ ॥
जयसिंहहिं अब जानि मृत, इहिं सिवसिंह कबंध ॥
लिन्नौं पुर बरवाड़ लरि, बसि करि कुम्भ प्रबंध ॥ १३ ॥
राजामल यातैं अनुज, रोक्यो बुंदिय जात ॥
पठयो इत सिवसिंह पर, बुल्ल्यो तँहँ यह बात ॥ १४ ॥
तुम सिवदास तयार हुव, बुंदिय दैन सहाय ॥
मगहि मध्य बरवाड़ पुर, जावहु ताहि छुराय ॥ १५ ॥
इहिं कारन सिवदास अब, सजि दल प्रबल सिपाह ॥
गो पहिलैं बरवाड़ गढ, दिन्नौं तोपन दाह ॥ १६ ॥
इत बुंदिय संगर अतुल, सज्ज्यो संभरवार ॥
नगर जित्ति लिन्ने निकट, प्रासादन प्राकार ॥ १७ ॥
दक्खिन दिस महलन निकट, भैरव नामक द्वार ॥
तासौं कछु पच्छिम तरफ, कोटा दल रखवार ॥ १८ ॥
द्विज नागर गोबिंद वह, लरत हुतो हठ लग्गि ॥
कनपट्टिय गोलिय लगिय, परयो स्वामि हित पग्गि ॥ १९ ॥
मरत विप्र खिजि नृप उभय, लंब निसैनिन लाय ॥
घटिय इक्क जावत रजनि, लिन्नैं महल छुराय ॥ २० ॥
अब इक तारागढ बच्यो, जँहँ दलेल भय जानि ॥

---

१ हठी २ देवैं ॥ १० ॥ ३ बहिन ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ४ छोटे भाई का ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ५ युद्ध ६ चहुवाण उम्मेदसिंह ७ महलों का कोट ॥ १७ ॥ १८ ॥ ८ सेनापति ॥ १९ ॥ २० ॥

तिहिँ सिर पुनि हल्ला त्वरित, पृथुल[१] रच्यो असि पानि ॥२१॥

॥ षट्पात् ॥

लैलै खेटक[२] खग्ग कटक पच्चप पर हंकिय ॥
नृप उमेद रहि मध्य समुख हनुमत जिम डंकिय[३] ॥
अधिरोहिनि[४] दिय जाय भये कंगुर कंगुर भट ॥
सु लखि दलेल शृगाल[५] भज्यो नारिन जुत लंपट ॥
नैनवा मग्ग आतुर लगिय खुल्लि द्वार पच्छिम अरर[६] ॥
अंधार मास सावन अमा[७] झुकि पुनि लग्गिय मेघझर २२
जिन नारिन सतखंनन[८] अक्क[९] पिक्खन[१०] अकुलावत ॥
जिन नारिन जव[११] जोर पवन परसन नहिँ पावत ॥
इक्क महल सन अन्य जात जिनकोँ श्रम लग्गहिँ ॥
कुचन आट लचकात भार मानहुँ कटि[१२] भग्गहिँ ॥
जिन पय प्रसून[१३] पंखुरि गडत रस बिलास मृदुपन[१४] रजिग ॥
ते तिय दलेल नायक[१५] सहित झारन[१६] बिच फट्टत भजिग ॥२३॥

॥ दोहा ॥

मेझ सरित[१७] दुबलानपुर, जिम तिम लंघि दलेल ॥
प्रात होत लहि नैनवा, मन्न्योँ बपु जिय मेल ॥ २४ ॥
पत्नी[१८] इक्क दलेलकी, दासी जन दस १० मान[१९] ॥
बन बिच भज्जत थकि रहिय, गय दूजेर्दिन थान ॥ २५ ॥
दुज्जनसल्ल उमेद इत, बुंदिय अमल बिथारि ॥
झंडे अप्पन गड्डि दिय, बिजय पताका[२०] धारि ॥ २६ ॥
कोटापति अब लोभ करि, अनुचित जो किय अत्थ[२१] ॥

१बडा ॥ २१ ॥ २ढालें तरवारें ३कूदा ४नीसनियें ५गीदड़ ६ कपाट ७ अमावास्या का अंधेरा ॥ २२ ॥ ८ सात खंड के महलों में ९ सूर्य भी १० देखने को ११ पवन भी वेग से बल से स्पर्श नहीं करने पाता १२ कमर १३ फूलकी पांखड़ी १४ १४ कोमल पन १५ दलेलसिंह पति सहित १६ झाड़ों के कांटों में ॥ २३ ॥ १७ नदी ॥ २४ ॥ १८ स्त्री १९ प्रमाण ॥ २५ ॥ २० ध्वजा ॥ २६ ॥ २१ यहां

सो पिक्खहु नृप*राम सब, अधरम अनेय अनत्थ ॥ २७ ॥
पहिलैं इहिं कोटापुरहिं, भूपतिसौं छल भिन्न ॥
मुल्ल दम्म दुवलक्ख२०००००के, कटैक किलंगि लिन्न॥२८॥
तैसीही अब तक्किकैं, अंगमि बुंदिय औन ॥
नृप उमेद प्रति यह कहिय, तुमतैं राज दवैं न ॥ २९ ॥
पुर लोहितको परगनौं, इमकहि भूपहिं अप्पि ॥
अवर देस लिन्नौं अखिल, थानौं अप्पन थप्पि ॥ ३० ॥
केसव पुर पट्टनि पम्म, बहुरि बरुंधनि नाम ॥
ए दुव२ पुर व्रजनाथ हित, करिय भेट छल काम ॥ ३१ ॥
बुद्ध नृपति किय पुराय ते, ग्रामादिक दिय नाँहिं ॥
इम बिसासघातक भयउ, कोटापति छल माँहिं ॥ ३२ ॥
वरन अंत लुट्टिय सहर, इक्क१ पहर धनवंत ॥
साहिपुरप उम्मेद लिय, दुव२ गज द्रव्य अनंत ॥ ३३ ॥
देवें सुवन सिवसिंह वह, बैरिसल्ल कुल जात ॥
लरि जिहिं पंच५ दलेलके, गज लुट्टे वडगात ॥ ३४ ॥
कोटापति सिवसिंहसौं, छिन्ने ते गज पंच५ ॥
आदर बिनु सठ सिक्ख दिय, रक्खी कानि न रंच ॥ ३५ ॥
साहिपुरप कोटेससौं, इक दिन अक्खिय एह ॥
तुम निलज्ज अनुचित तकत, नीति धरम तजि नेह ॥ ३६ ॥
हम जानी बुंदीस सिर, करहिं छत्र कोटेस ॥
इम बिचारि आये इहाँ यह जस सुनन अंसेस ॥ ३७ ॥

शुद्धव्रजदेशीयाभाषा ॥

*ह राजा रामसिंह सब १ अनीति और अनर्थ देखो ॥ २७ ॥ २हाथों में पहनने के कड़े और ३ मस्तक पर लगाने की किलंगी ॥ २८ ॥ ४बुंदी के स्थान को दबाकर ॥ २९ ॥ ५ उम्मेदसिंह को देकर ६ सब ॥ ३० ॥ ७ उत्कृष्ट (उत्तम) ८ छल करके ॥ ३१ ॥ ९ राजा बुधसिंह ने ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ १० देवसिंह के पुत्र ११ दलेलसिंह १२ बड़े शरीरवाले ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ १३ संपूर्ण ॥ ३७ ॥

मनोहरम्—दोस निज तातको उतारिबेकी बेर तुम,
लीनैं मंगि कटक[2] किलंगी यातैं बालहो ॥
तिनहिं बिकाय फोज राखी सो तुमारी नाँहिं,
जातैं जंग जीति मन मानत निहाल हो ॥
प्रति [3]उपकारक उमेद नृप जानौं नैर,
कोटा निज खोवहु कहावत नृपालहो ॥
जो तुम कहूँ[5] स्वामि धर्म न धरोगे तो बैं,
दुर्ज्जनके साल नाँहिं सज्जनके सालहो ॥ ३८ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतामिश्रितभाषा ॥

दोहा—सुनि यह कोटापति सचिव, चारन भूपतिराम ॥
बुल्ल्यो साहिपुंगस[7] सौं, कैसैं करहु कुनाम ॥ ३९ ॥
सेनानी[8] गोविंदसे, लग्गे बुंदिय अत्थ ॥
खग्ग दम्भ लक्खन पर्‌यो, क्यौं तुम बदंत अकत्थ ॥ ४० ॥
यह सुनि साहिपुरेस तब, गो निज नगर रिसाय ॥
कोटापति बुंदिय बिभव, लुट्ट्यो अखिल अघाय ॥ ४१ ॥
भट मोहनसिंहोत निज, नगर पल्हायत नाह ॥
तारागढ रक्ख्यो तबहि, रूपसिंह हित राह ॥ ४२ ॥
पुनि किसोरसिंहोत भट, अनतापुर पें अजीत ॥
ए दुव२ किल्लादार किय, [12]पटु रन धरम प्रतीत ॥ ४३ ॥
अवरहु निज रक्खे सचिव, निबहन राज्य असेस ॥
[13]अप्पुंन लै बुंदिय बिभव, कोटा गय कोटेस ॥ ४४ ॥

१दुर्जनसाल के पिता भीमसिंह ने बुंदी छीन लीथी उस दोष को उतारने के समय २ कड़े और किलगी मांग ली ३उम्मेदसिंह को पीछा उपकार करने वाला जानो ४जिस कोटा के कारण राजा कहलाते हो उस कोटे को मत खोओ ५ इस कहने पर भी ६ अय ॥ ३८ ॥ ७ शाहपुरा के पति से बोला ॥ ३९ ॥ ८ सेनापति ९ अर्थ १० झूठ बोलते हो अथवा नहीं कहने योग्य बार्ता कहते हो ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ११ पति १२ गुण चतुर ॥ ४३ ॥ १३ अपना बुंदी

इत खत्रिय सिवदास लिय, पुर बरवाड़ छुराय ॥
दियउ कढ़ि रठ्ठोर वह, जैपुर अमल बिधाय ॥ ४५ ॥

पज्झटिका ॥

बरवाड़ समर सिवदास ठानि, जैपुर नरेस यह उचित जानि ॥
धूलापुर पति कूरम दलेल, बुल्ल्यो राजाउत मंत्र मेल ॥ ४६ ॥
कहि उचित ताहि बुंदिय सहाय, पठयो दलेल[2] ढिग समय पाय ॥
वह तबहि नैनवा नगर पत्त, भिंट्यो[3] दलेल हित बिबिध बत्त ॥४७॥
अक्खी पुनि ईस्वरिसिंह राज, दिल्लीपुर जावत कछुक काज ॥
जवनेस हिंतु काम सु सुधारि, बुंदीपर ऐहैं दल बिथारि ॥ ४८ ॥
ठहैं हैं तब अप्पन अमल तत्थ, हड्डु सु उमेद गहि करहिं हत्थ ॥
पै[5] जौलौं आवैं न कछवाह, तौलौं न उचित अब समर चाह ॥ ४९ ॥
पूगैंन अबहि हम बीर होय, दुस्सह उमेद कोटेस दोय ॥
दोऊ दलेल[6] यह मंत्र चाहि, बहु मास रहे पुर नैनवाहि ॥५०॥
इत जैपुर पति दिल्लिय प्रपत्त, सेयो सुरतान जु बिबिध बत्त ॥
बुंदिय पुर बिग्रह बहुरि अक्खि, लियसाह हुकम करि सबन सक्खि ॥
इम रहत कुम्म दिल्लिय अभंग, सेवंत साह अवनिप[10] उमंग ॥
इत अभयसिंह मरु देस राय, किय चिर[12] निवास अजमेर आय ॥५२॥
मम जनकै[11] पुब्ब यह नगर लिन्न, यह चिंति मरुप तहँ बास किन्न ॥
कूरम इत दिल्लिय कपट धारि, इक मंत्र साह छन्नैं बिचारि ॥५३॥
राजामल मंत्रिय निज सिखाय, दक्खिन दल[14] लावन दिय पठाय ॥
यह तवहि पत्त दक्खिन अनीकैं[15], किय साम बिरचि हितकथ कितीक

का वैभव लेकर १ जयपुर का अमल करके ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ २ दलेलसिंह हाडा के पास ३ मिला ॥ ४७ ॥ ४ बादशाह से ॥ ४८ ॥ ५ परन्तु ॥४९॥ ६ कछवाहा और हाडा दोनों दलेलसिंह ॥ ५० ॥ ७ जाकर ८ साक्षी ॥ ५१ ॥ ९ कछवाहा ईश्वरीसिंह १० भूमि के उत्साह से ११ मारवाड़ देश का राजा १२ बहुत दिन तक ॥ ५२ ॥ १३ पहिले मेरे पिता ने ॥ ५३ ॥ १४ दक्षिण (मरहठों) की सेना लाने को १५ सेना से ॥ ५४ ॥

लिय रामचंद पंडित मिलाय, संध्या रायांजिय पुनि सुभाय ॥
माहद्ध उभयर इम लियउ फोरि, करि नेह दैन किय दंम्म कोरि
१००००००० ॥ ५५ ॥
इत नृप उमेद बुंदिय बिचारि, कोटेस लुब्ध अनुचित अकारि ॥
हमरेहि द्रव्य सन रचिय जुद्ध, लिय बहुरि भुम्मि रचि कपट लुद्ध ५६
तस्मात उचित नहिं पर सहाय, लैहैं बँ हमहिं भुजबल दिखाय ॥
उम्मेदनृपति यह मंत्र लाय, अजमेर गयउ बुंदिय बिहाय ॥ ५७ ॥
मरुधर नरेस सन किय मिलाप, महिपाल उभय रहि हित अमाप ॥
इत उदयनेर जगतेस रान, बुंदी छुटी सु निरख्यो निदान ॥ ५८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशौ दलेलसिंहसहायार्थजैपुरपतिसचिवखत्र्युपटङ्कराजामल्लाऽनुजशिवदाससज्जीकरणतदग्रजसम्मतिबरवाड़पुरयोधनतान्नदानकथनहड्डेन्द्रबुन्दीविजयकरणकोटेशसेनापतिमरणताराद्दुर्गाऽधिरोहणयारोपणपलायमानदलेलसिंहनयनपुरगमनकोटेशबुन्दीवैभवलुण्टनसर्वाधिकारस्वीकरणनृपार्थलोहितप्रान्तसमर्पणतत्प्रतिसाहपुरेश्वररुषात्युपालम्भदानमहारावकोटागमनशिवदासबरवाड़विजयनकूर्मराजधूलाधि

१ अष्टरीति से ॥५५॥ २ रुपये ३ लोभी ४ नेकिया ५ लाभ ॥५६॥ ६ इसकारण ७ अब ८ बुन्दी छोड़कर ॥ ५७ ॥ ९ से १० कारण देखा ॥५८॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, दलेलसिंह की सहाय के अर्थ जयपुर के पति (ईश्वरीसिंह) का अपने सचिव, खत्री उपटंकवाले राजामल के छोटे भाई शिवदास को तयार करना १ उसके बड़े भाई की सलाह से बरवाड़ युद्ध करने का कारण कहना२हाडों के राजा का बुन्दी विजय करना और कोटा के पति के सेनापति का काम आना ३ तारागढ आदि पर नीसरनियें लगाना और दलेलसिंह का भागकर नैणवे जाना ४ कोटे के पति का बुन्दी का वैभव लूटकर सब पर अपना अधिकार करना ५ उम्मेदसिंह के अर्थ लोहितपुर का परगना देना६जिस के प्रति शाहपुरा के पति (उमेदसिंह) का खिजकर उपालंभ (ओलंभा) देना ७ महाराव का कोटे जाना शिवदास का बरवाड़ को जीतना ८ कछवाहों के राजा (ईश्वरीसिंह) का भूला

पतिदलेलसिंहनयनपुरप्रेषणसालम्याश्वासनजायसिंहिदिल्लीगमनम रुपत्यजमेराऽऽगमनेश्वरीसिंहराजामलदत्तिणप्रेषणरजतमुद्राकोटि निवेदनप्रतिज्ञानश्रीमन्तसचिवराणाजि १ रामचन्द्र २ मेलनहड्डेन्द्र-कोटासहायलज्जाप्राप्यतद्बुन्दीत्यजनाजमेरगमनधन्वेशसमागम-नमेकादशो ११ मयूखः ॥ ११ ॥ ॥२९२॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

उदयनैर जगतेस इत, जान्यौं समय नवीन ॥
बुंदिय हड्डन छिन्नि लिय, है जैपुर बल हीन ॥ १ ॥
यातैं भुव उद्यम करन, उचित काल अब आय ॥
भागिनेयं हित दीजिये, ढुंढाहर बटवाय ॥ २ ॥
यह बिचारि कोटेस प्रति, पुनि पठये लिखि पत्त ॥
जीतैं जैपुर जंग जुरि, अब हम तुम अनुरत्त ॥ ३ ॥
सोधी दुर्जनसल्ल तब, उनकै गाढ न रंच ॥
पहिलैंहीं फीके परे, परि परि रान प्रपंच ॥ ४ ॥
यह बिचारि पच्छी लिखिय, रचहु कुंच तुम रान ॥
पीछैंही हम आतहैं, जुरि जित्तहिं घमसान ॥ ५ ॥
यह दल बंचि बिचारि तब, निज भट रान बुलाय ॥

के पति दलेलसिंह को नैणवे भेजना सालमसिंह के पुत्र (दलेलसिंह) को आश्वासन देना (विमासना) ९ जयसिंह के पुत्र (ईश्वरीसिंह) का दिल्ली जाना १० मारवाड़ के पति का अजमेर आना और ईश्वरीसिंह का राजामल को दक्षिण में भेजना ११ क्रोड़ रुपये देने की प्रतिज्ञा का बोधकराना १२ श्रीमन्त के सचिव राणाजी और रामचन्द्र को मिलाना २१ हाडों के इन्द्र (उम्मेदसिंह) का कोटा की सहायता से लज्जा पाकर उसका बुंदी छोड़कर अजमेर जाकर मारवाड़ के पति से मिलने का ग्यारहवां ११ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ बानवै २९२ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ समय २ भानजे (माधवसिंह) के अर्थ ॥ २ ॥ ३ पत्र ४ प्रीतियुक्त होकर ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ५ युद्ध ॥ ५ ॥ ६ पत्र बांचकर

मरहट्ठन ढिग मुक्कलन, दुव२ तयार किय *दाय ॥ ६ ॥
इक्क सलूमरि पुर अधिप, केसरि सुवन कुबेर ॥
बखतसिंह काका बहुरि, किय तयार हित[1]केर ॥ ७ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

हुलकर हित कग्गर[2] लिखवाये, कोटि १०००००००० दम्म[3] तिहिं दैन कहाये ॥
लिखिय मलार[4] भरोस तिहारैं, अब हम जैपुर बिजय निहारैं ॥ ८ ॥
रामचन्द पंडित इम फोरहु, राणांजी सन पुनि हित जोरहु ॥
कूरम तुमहिं दैन जो करिहैं, तासौं द्विगुन द्रव्य हम भरिहैं ॥ ९ ॥
कग्गर इम लिखवाय दये कर, बखत१कुबेर१दोहु२पठये बर[5] ॥
दोऊ२तब दक्खिन दल[6] पत्ते, अवसर पाय मिले अनुरत्ते[7] ॥ १० ॥
राणांजी संध्या सुत तत्थह, जया नाम सब रीति समत्थह[8] ॥
बदलि पग्घ तासौं बखतेसह, मित्र भयो जिम धनद[9] महेसह[10] ॥ ११ ॥
यह सुनि रान सेन सजि दुद्धर, माधव[11] जुत हंकिय जैपुर पर ॥
नागोर पै[12] बखतेस कबंधह, अप्पनं[13] पुत्रिय स्वसुर हुतो वह ॥ १२ ॥
विजयसिंह बांको[14] सुत व्याह्यो, स्वीय सुता[15] तातैं हित चाह्यो ॥
इहिं कारन जगतेस रान अब, सत्थ लैन नागोर कटक[16] सब ॥ १३ ॥
कनक[17] मुल्ल रुप्पय दुव२ लक्खन २०००००, पठयो बखतसिंह पँहँ हितपन ॥
अक्खिय खरच एह अवधारहु[18], एतनों निज[19] मम भीर प्रचारहु[20] ॥ १४ ॥
दुर्मति[21] लुब्ध[22] बखतेस बंचि दल, पुरट[23] लयो रु नाँहिं पठयो बल[24] ॥

*रीति पूर्वक॥६॥१हित के लिये॥७॥२पत्र३रुपये४हे मलार॥८॥९॥५श्रेष्ठ६सेना में गये७अनुकूल ॥ १० ॥ ८ समर्थ [यहां स्वार्थ में 'ह' प्रत्यय किया है सो अन्य स्थानों में भी ऐसा ही जानना] ९ कुबेर १० शिव से ॥११॥११माधवसिंह सहित १२ नागोर का पति बखतसिंह राठोड़ १३ महाराणा जगत्सिंह की पुत्री का श्वशुर था॥१२॥१४बखतसिंह का पुत्र१५राणा जगत्सिंह की पुत्री १६ सेनासहित॥१३॥१७सुवर्ण१८धारण करो१९अपनी सेना मेरी सहाय पर२०भेजो ॥१४॥२१खोटी बुद्धिवाला२२लोभी२३सुवर्ण तो लेलिया और२४सेना नहीं भेजी

गज हय सिपाह उड्डिय गरद प्रब्बल अचानक भय परिग ॥
झंपत सिचान[1] खरकोन गति मेवारन[2] मद उत्तरिग ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

आय अचानक अरध निस, मरहट्ठन दिय मार ॥
भीत रान व्याकुल भयउ, बलि[3] किय साम बिचार ॥ २८ ॥
यह उदंत मरहट्ठ सुनि, रुचि बस छंडिग रीस ॥
साम बिरचि किय रान सिर, दम्म[4] लक्ख बाईस२२०००००
नृप कूरम अरु रान पुनि, मरहट्ठन[5] मिलवाय ॥
कियउ साम दोऊ२नकै, रस हित कछुक रचाय ॥ ३० ॥
माधवहूके मिलनकी रामचंद किय बत्त ॥
सो हुलकर मन्नी नहीं, रक्ख्यो पृथक[6] बिरत्त ॥ ३१ ॥
[7]माधवहू यह सुनि कहिय, मैं[8] ढुंढाहर राज ॥
कैसैं ईश्वरिसिंहसौं, सद्दै[9] मिलन समाज ॥ ३२ ॥
माधव रान बिगारि मुँह[10], तदनु[11] उदैपुर पत्त ॥
मरहट्ठन जुत कुम्म[12] नृप, घल्ली बुंदिय घत्त ॥ ३३ ॥
सहर देस लै किय सकल, अमल दलेल अधीन ॥
तारागढ भो नहिं तबहि, बिंट्यो जाय बलीन ॥ ३४ ॥

॥ षट्पात् ॥

धमि तोपन धमचक्क कोट तारागढ कंपिग ॥
दुव२कोटा भट देखि जानि परबल यह जंपिग[13] ॥
हम हड्ड बड बीर कढहिँ फहरात फतूहन[14] ॥
भग्गे जिम निकसैं न प्रबल लग्गत कलंक पन ॥
जो जानदेहु संजुत रखैंत[15] तो कवि कीरति पढ्हि हैं ॥

---

१ तीतर पक्षियों की भांति २ मेवाड़वालों का ॥ २७ ॥ ३ पुनि ॥ २८ ॥ ४ रुपये ॥ २९ ॥ ५ मरहठों ने दोनों राजाओं को मिलाकर ॥ ३० ॥ ६ जुदा रक्खा ॥ ३१ ॥ ७ माधवसिंह ने भी ८ राजा ९ सभा में ॥ ३२ ॥ १० मुख ११ जिस पीछे १२ ईश्वरीसिंह ने ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ १३ कहा १४ ध्वजा उडाते हुए १५ सामग्री सहित

नाँतरि कढैँ न हड्ड[1] मरद अड्डे पंजरें कड्डिहैँ ॥ ३५ ॥
सुनि हुक्कर दिय बचन रेंखत[2] संजुत तुम जावहु ॥
कछुदिन कूरम जोर नाँहिं बुंदिय तुम पावहु ॥
अजितसिंह अरु रूप[3] तबहि कोटेस सुभट दुव२ ॥
सजि बल खुल्लि निसान निकसि कोटा अध्वग[4] हुव ॥
लुट्टिय दलेल बुंदिय सकल बुद्धसुतहिं[5] चाहत निरखि ॥
कूरम समेत दक्खिन कटक दिन दुव२रक्खिय लुद्ध[6] लखि ३६
जुत दलेल कछवाह तँदनु[7] लै दल मरहट्टन ॥
कोटा बिंटिय जाय रुट्ठि लुट्टत मग[8] रट्टन ॥
ग्राम सगत पुर जाय अप्प उत्तरि चम्मलि तट ॥
लिय पत्तन गरदाय[9] सेन संकुलि[10] बट उब्बट ॥
बज्जिय निसान त्रंबक्क बिखम दुसह फैर तोपन दगिय ॥
अंदर अलाव[11] मच्चिय मनहुँ लंकापुर बंदर[12] लगिय ॥ ३७ ॥

॥ हीरकम् ॥

दक्खिन दल लै दुरूह[13] कूरम हठ हेरयो ॥
कोटापुर जाय घोर घँत्तन[14] घन घेरयो ॥
द्वै२बट दल बंटि अप्प चम्मलि दिस तंडयो[15] ॥
अद्ध सु दल पुब्बओर जाय जोर मंडयो ॥ ३८ ॥
तोपन धमचक्क[16] कोट लोपन पुर लग्गयो ॥
गोलन गजबीनँ[17] सोर[18] संकुलि दँव[19] दग्गयो ॥

---

१ शरीर पड़े पीछे ॥ ३५ ॥ २ सामग्री ३ रूपसिंह ४ मार्ग ५ उम्मे-दसिंह को देखना चाहते थे ६ लोभ देखकर ॥ ३६ ॥ ७ जिस पीछे ८ मार्ग के बुंदी और कोटा के दोनों राष्ट्रों (राज्यों) को ९ पुर को घेर लिया १० मार्ग और विना मार्ग में सेना भरकर ११ अग्नि १२ हनुमान् की लगाई हुई ॥ ३७॥ १३ कठिनाई से तर्कना में आवै ऐसी सेना लेकर १४ घातों से १५गर्जना की ॥३८॥ तोपों के १६ युद्ध में कोट और पुर का लोप होने लगा १७गजब करनेवाले गोलों ने १८ बारूद भरी हुई १९ अग्नि लगाई

कच्छप फटि पिट्ठी[1] नाग रीढक बररक्कयो ॥
दंतुलि तुटि कोला[2] झोल[3] झंझ्झट झुक्कि[4] झक्कयो ॥ ३९ ॥
अतल रु बितलादि लोक ओदंकि भय भग्गये ॥
दिग्गज डगमग्गि सोच[6] मोचन मद लग्गये ॥
फोजन घन फेर भुम्मि जोजन ढुवर ढंक्कई ॥
ओजन भट भीर जंग मोजन हठि हंकई ॥ ४० ॥
टोलन पबि[7] पात डोल गोलन[8] गढ बिग्गरैं ॥
गज्जन[9] पुर सोधं[10] गोख छज्जन छटके परैं ॥
मंडप फटि के लदाथ खंभन गन उच्छटैं ॥
थंभन थहराय ओक ओकन[11] अति उप्पटैं ॥ ४१ ॥
उड्डत गढ खंड फेर गोलन लगि बिक्खरैं ॥
बज्जन कटि पंच्छ[12] जानि पब्बय फटि के परैं ॥
कोट रु कपिसीस[13] ओट उड्डत छबि गैन[14] मैं ॥
चोटन पर चोट लोट लग्गत पुर लैनमैं ॥ ४२ ॥
गोपुर[15] परिकूट[16] अट्ट पट्टन परि बट्ट[17] के ॥
[18]कापथ अतिपंथ[19] होत चम्मलि तट घट्टके[20] ॥

१शेषनाग की पीठ (सांकल की हड्डी) तूटी २वराह की दंतुली तूटकर ३वह उस झग ड़े (युद्ध) के झालों से ४झुककर ४गिरा (बैठगया) ॥३९॥ ५भय से डरकर भागे ६शौच (विष्ठा, लाद) और मद छोडने लगे, फौजों के अधिक फैलाव से आठ कोस भूमि ढक गई और वीरों की भीड़ पराक्रम के साथ युद्ध की लहरों में हठ करके चली ॥ ४० ॥ पर्वतों पर ७ वज्र पड़ने की ८ तरह गोलों से गढ बिगड़ने लगा उन तोपों की ९ गर्जना से नगर के १० महल, झरोखे और छाजे तूटकर पड़ते हैं कितने ही लदाव के गुंमज फटकर खंभों का समूह उछटता है और ११ घर घर में थंभे धुज धूज कर उपटते हैं ॥ ४१ ॥ फिर गोलों से गढ के टुकड़े हो कर उडते और बिखरते हैं सो मानों वज्र से १२ पांखें कटकर पर्वत फटकर गिर ते हैं कोट और १३ कांगरों की आड उडकर १४ आकाश में शोभायमान हो कर उडते हैं ॥ ४२ ॥ १५ नगर के द्वार के आगे का कोट (पड़कोटा अथवा (घू- घस) और १६ बुरजें गिरकर कितने ही १७ मार्ग होते हैं २० चामल नदी के किनारों के घाटों में १८ पगडंडियें (छोटे मार्ग) और १९ बड़े मार्ग होते हैं

द्विपंथ रु त्रिक ओ चतुष्क रीति सु सब लुप्पई ॥
कुट्टिमैं ढिग छत्ति आनि छत्तिं[3]न मिलि उं[4]प्पई ॥ ४३ ॥
अंगन घर ॲग्गि सोर संगर अति उच्छरैं ॥
जंगन अतिजोर दोर दं[6]गन गढ बिग्गरैं ॥
अंदर अक्कबक्कि लोक बंदर भय ज्यौं दुरे ॥
मांदिरँ पुर तूटि आनि चम्मलि जल के घुरे ॥ ४४ ॥
डंबर उडि खेह ढंक अंबर सब लुक्कये ॥
ध्यान सु सिव छुट्टि तान अच्छरि गन चुक्कये ॥
चम्मलि जल छिज्जि मीन सम्मलि घन ओं[11]वटे ॥
डुंगर डगमग्गि पक्क उं[12]बर गति के फटे ॥ ४५ ॥
सागर जल से[13]तु छोरि लोपन भुव लग्गये ॥
कोपन इम कुं[14]म्म सेन तोपन दव दग्गये ॥
संगर दुव२ मास मंडि कूरम इम अं[15]कुर्यो ॥
सत्थहि मरहट्ठ पिक्खि दुज्जनसल सं[16]कुर्यो ॥ ४६ ॥

॥ दोहा ॥

राणांजी संध्या सुं[17]वन, जया नाम अति जोर ॥

नगर में १ दो मार्ग, तिरपटा और चौहटे (चोपड़ के बजार) की सब रीतियें मिटगईं ३ ऊपर की छत नीचे की छत से मिलकर २ नींव (बुनियाद) में मिलकर ४ शोभित हुईं ॥ ४३ ॥ ५ बारूद की वह अग्नि उस युद्ध में घरों के चौकों में अत्यन्त उछली और उस बलवान् युद्ध के फैलाव में ६ आश्चर्य युक्त गढ बिगड़ने लगा, भीतर के लोक घबराकर जिसप्रकार लंका में हनुमान् के भय से छिपे थे तिसप्रकार छिपने लगे ७ कितने ही मकान टूटकर चामल के जल में ८ घुळ (मिल) गये ॥ ४४ ॥ खेह के उड़कर ९ छाजाने से आकाश में १० सूर्य छिपगया अथवा सूर्य और आकाश सब छिपगये, शिव की समाधि छूटकर अप्सराओं का समूह तान चूकगया, चामल का जल छीज कर मच्छियों के साथ बहुत जीव ११ उपले १२ पर्यंत हिलकर पके हुए ऊमर वृक्ष के फल के समान फटे ॥ ४५ ॥ १३ मर्यादा छोडकर १४ कोप के साथ कछवाहे की सेना ने इसप्रकार अग्नि जलाई १५ खड़ा हुआ १६ दुर्जनसाल सकुचा ॥ ४६ ॥ राणांजी नामक सिंधिये का १७ पुत्र

ताकै इक१ गुटिका[1] लगिय, घन रन मंडत घोर ॥ ४७ ॥
यह लखि कुम्भ दलेल सौं, चवि दक्खिन हितचाहि ॥
पंच५ ग्राम जुत कापरनि, द्रंग दिवायउ ताहि[2] ॥ ४८ ॥
दक्खिन जोर दलेल लखि, दियउ कापरनिद्रंग[3] ॥
पुर पट्टनि पुनि सौंकमैं, अप्पिय राज्य उमंग ॥ ४९ ॥
तब पट्टनि लिय दक्खिननि, किय त्रि३भाँग बनि कंत ॥
इक१इक१ हुलकर संधिया, इक१विभाग श्रियमंत ॥५०॥
संवत दुव नभ धृति समय १८०२, मेचक माधव मास[6] ॥
पट्टनि यम कोटा प्रधन[7], गिल्यो गिनीमन ग्रास ॥ ५१ ॥
ग्वाल[8] सुरभि गजपाल[9] गज, चक्कि रंजक पर चेल[11] ॥
जमी देत कर्षुक[12] जिमहि, दिय यह द्रंग[13] दलेल ॥ ५२ ॥
मरिगँ[14] याहि रनके समय, चुंडाउति नृप[15] मात ॥
कोटा मध्यहिं दाह किय, पर[16] भय जानि प्रपात ॥ ५३ ॥
मृतक कर्म निज मातको, किन्नौं लघु सुत दीप[17] ॥
हो पुष्कर मरुभूप[18] सह, मिलि उम्मेद महीप ॥ ५४ ॥
दीपकुमरि अरु दीप दुव२, सोदर भगिनी भ्रात ॥
सह झालिय रानी सह्यो, पुर कोटा दुख पात ॥ ५५ ॥
कोटा इम कूरम दई, मरहट्ठन जुत मार ॥
महाराव सठ भीत मन, सम्मुह भो नहिं स्यार[19] ॥ ५६ ॥
रुप्पय सोलह लक्ख१६०००००लिय, मरहट्ठ रु कछवाह ॥

---

१ गोळी ॥ ४७ ॥ २ उस जया को ॥ ४८ ॥ ३ नगर ॥ ४९ ॥ ४ पति बनकर उस के ५ तीन बंट किये ॥ ५० ॥ ६ वैशाख वदि ७ कोटा के युद्ध में ॥ ५१ ॥ जिसप्रकार ८ गऊ का ग्वाल ९ हाथी को महावत ११ पराये वस्त्र को १० धोबी १२ भूमि का कर्सा, भूलकर और को और की देदेवै तिसप्रकार यह १३ नगर दलेलसिंह ने दिया ॥ ५२ ॥ १४ मरी १५ उम्मेदसिंह की माता १६ शत्रुओं के भय का पड़ना जनाकर ॥ ५३ ॥ १७ दीपसिंह ने १८ मारवाड़ के राजा के साथ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ १९ गीदड़ ॥ ५६ ॥

च्यारि४००००००लक्ख पुनि बरस प्रति, लै नैं[1] किय दंम राह॥
इम्म कोटा करि[2]शिंजक्को, मद दिय कुंम्भ उतारि ॥
कियउ कुच्च निज निज घरन, दुव[3]दल्ल बिजय बिचारि ।५८।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशौ समाधवसिंहराणाजगत्सिंहजयपुरविजयार्थनिस्सरणदिल्लीतईश्वरीसिंहाऽऽगमनसराजामल्लदक्षिणसैन्यराणावेष्टनदण्डद्रव्यनयनकूर्मराजबुन्दीविजयकरणकोटेश्वरसुभटनिष्कासनाऽनन्तरकोटायुद्धकरणराणांजिपुत्रजयाऽभिधानगुटिकाक्षतप्रापणतच्छुल्कीभूतपट्टनिपुरप्रभृतिनिवसथनिवेदनहृद्देन्द्रमातृमरणकोटातोदमद्रव्यग्रहणतच्चतुर्थांशहायनिकरस्थापनं द्वादशो १२ मयूखः ॥ २९३ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इत पुक्खर[4] उम्मेद[7] नृप, माता मरन उदंत ॥
सुनि सब सद्धिय वेदविधि, मन्नि धरम दृढ मंत ॥ १ ॥
खरच भीर[5] नृपकैं बहुत, बिपति सकैं न निबाहि ॥
प्रभु संभर तउ धरम पट्टु, करैं सु अनुचित काहि ॥ २ ॥
मिलैं जबहि सब सत्थकौं[8], अप्प असन[9] तब लेत ॥

---

१ दंड के मार्ग से ॥ ४७ ॥ २ बडे हाथी का ३ ईश्वरीसिंह ॥ ४८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में माधवसिंह सहित राणा जगत्सिंह का जयपुर को विजय करने के अर्थ निकलना १ दिल्ली से ईश्वरीसिंह का आना २ राजामल सहित दक्षिण की सेना का राणा को घेरकर दंड के रुपये लेना ३ ईश्वरीसिंह का बुन्दी विजय करके कोटा के पति के उमरावों को निकालने पीछे कोटा में युद्ध करना ४ जया नामक रांणजी के पुत्र के गोली लगना और उसके सूंक (रिसवत) में पाटणपुर आदि ग्राम देना ५ उम्मेदसिंह की माता का मरना ६ कोटा से दंड के रुपये लिये जिसके चतुर्थांश का वार्षिक कर (खिराज) स्थापन करने का बारहवां १२ मयूख सम्पूर्ण हुआ और आदि से दोसौ तिरानवें २९३ मयूख हुए ॥

४ पुष्कर में १ वृत्तान्त॥१॥५ तंगी (सकड़ाई) ७ उम्मेदसिंह॥२॥८ सब साथ को ९ भोजन

दुवर दुवरदिन लंघन बनैं, डुल्लैं[1] तदपि न चेत ॥ ३ ॥

॥ षट्पात् ॥

असन बेर[2] सह सत्थ पंति चोसर परिजावत ॥
जो व्यंजन सब[3] अत्थ सोहि निज अत्थ लगावत ॥
मोहत सुभटन चित्त बित्त[4] अप्पत हित जोरत ॥
स्मेरैं सुमहिं जिम भृंग सुभट इम नृपहिं न छोरत ॥
सब रतन फुट्टि घन घात जिम सूचीमुख[6] कछु उब्बरिय ॥
ते भट उमेद भूपहिं अतुल रहत बिंटि सट्ठि६०हि घरिय ॥४॥
भट प्रयाग अरु तोक बहुरि कल्यान भ्रात त्रय३ ॥
बीर भवानीसिंह तिमहिं मजबूत धरम मय ॥
सूर धीर सिवसिंह बैरिसल्लोत महाबल ॥
इत्यादिक बड बीर नृपहिं सेवत मन उज्जल ॥
सब धन निवेदिं सह्त हुकम बातजात जिम राम तट ॥
पिक्खै न हानि अप्पन प्रथिंत रक्खैं हिय पतिकाम रट ॥५॥

॥ दोहा ॥

ऐसे भट नृप ढिग रहिय, अवर न बिपति प्रपात ॥
तदपि भूप धीरज अतुल, सूर धरम सरसात ॥ ६ ॥
पर सहाय अनुचित परखि, तजि बुंदिय चहुवान ॥
सूर निकसि ऐसे समय, बंधत लैन बिधान ॥ ७ ॥

॥ षट्पात् ॥

मरुपतिहू अजमेर भिंटि[2] भूपहिं करि अद्दर ॥

---

१ तोभी मन नहीं डुलता ॥ ३ ॥ २ भोजन के समय ३ सब के अर्थ ४ धन देता है ५ सुगंधि के कारण पुष्प को भ्रमर नहीं छोडै जैसे उमराव राजा को नहीं छोडते हैं ६ हीरा घण की चोट से बच जाता है जैसे कुछ सुभट राजा के पास बचरहे ॥ ४ ॥ ७ भेट करके ८ जैसे हनुमान रामचन्द्र के पास ९ प्रसिद्ध १० स्वामी के काम का ही स्मरण है ॥ ५ ॥ ११ आपदा पडने से अन्य नहीं रहे, तोभी ॥ ६ ॥ ७ ॥ १२ मिलकर

समुख जाय सनमान बिरचि आन्यो डेरन वर[1] ॥
सहँ[2] भोजन सह वास बिहित[3] रचि हेत वढायउ ॥
उभय२ मिलन आनंद पुण्य[4] जस जगत पढायउ ॥
वय अप्प जदपि सोलह१६बरस आक्खि तदपि छोरन अलस॥
सिखयो चुहान खुरली[5] सु घर रठोरहिं मृगया[6]दिरस ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

मरुपतिकैं उमराव इक, ऊदाउत रठोर ॥
बखतसिंह रन पट्टु बिदित, रासि नगर सिर मोर ॥ ९ ॥
अक्खी तिहिं मरुईस सौं, कन्या सुभ मम गेह ॥
बुंदीसहिं व्याहन उचित, अप्प करहु हित एह ॥ १० ॥
अभयसिंह अक्खिय सुनत, तनयाँ[7] बुल्लहु अत्थ ॥
बुंदीसहिँ हम व्याहि हैं, सुभ मुहूर्त्त हित सत्थ॥ ११ ॥
बखतसिंह सुनि बुल्लई, तनया अप्पन तत्थ ॥
परिनाई कहि धन्वपति[8], संभर नृपहिँ समत्थ ॥ १२ ॥
संबत दृग नभ धृति१८०२[9]समा, राध[10] तीज३ अवदात ॥
इम रानिय कुंदनकुमरि, व्याह्यो नृप बिख्यात ॥ १३ ॥
इत दलेल कूरम उभय२, दै मरहट्ठन सिक्ख ॥
गुमर जोर जैपुर गये, तोर बिजय रन तिक्ख ॥ १४ ॥
सुत खत्रिय सिवदासको, नंदराम अभिधान[11] ॥
वीरन जुत मेटन बिघन, रक्ख्यो बुंदिय थान ॥ १५ ॥
इत संभर[12] यह व्याह करि, आयो नगर भनाय ॥
माता सन हित जुत मिल्यो, करन जोरि नत काय ॥१६॥

१श्रेष्ठ२साथ३उचित४पवित्र यश५उसने घर में वा उस सुघड़ (चतुर) ने शस्त्र विद्या सीखी थी सो६ शिकार में राठोड़ को दिखलाई॥८॥९॥१०॥७पुत्री को यहां बुलाओ ॥ ११ ॥ ८ मारवाड़ के पति ने ॥ १२ ॥ ९ विक्रम के शक में १० वैशाख सुदि तीज के दिन ॥ १३ ॥ १४ ॥११नाम॥१५॥ १२ उम्मेदसिंह॥१६॥

सस्सू यह जयसिंहकी, नृप बुधसिंह कलत्र[1] ॥
पलटी जो नय[2] तजि प्रथम, तिहिँ मंड्यो[3] हित तत्र ॥ १७ ॥
दुलहनि दुल्लह अँग्घ[4] अति, लिन्नैं निलय[5] वधाय ॥
कछुदिन रक्खे मोद करि, मेटन वह[6] अघ माय ॥ १८ ॥
तदनुँ[7] मात[8] सन सिक्ख किय, बुंदिय सिर नृप सज्जि ॥
दुलहनि रक्खिय तत्थही, रस उज्जल[9] हित रज्जि ॥१९॥
कोटाधीस सहाय सन, पहिलैं बुंदिय पाँय[10] ॥
यातैं नृप बिक्रम अतुल, सज्ज्यो पृथक[11] रिसाय ॥२०॥
हिंडोली दरकुंच करि, दिन्नैं आनि मिलान[12] ॥
मैंना बारह१२खेटके[13], आनि मिले छक आन ॥२१॥
दुव२जीवा[14] धनुही करन, दुव२दुव२पिट्ठि निखंग॥
[15]कटि कटार [16]बलि वंसुरिय, सिर धवपत्त[18] किलंग ॥ २२ ॥
[19]बायुहिँ बा अरु किमहिँ का, अँकहिँ[20] बुल्लत आँक ॥
भजत लरत लरि पुनि भजत, लाँफि[21] उडि चित्रक लाँक[22] २३
संगाके अरु सल्लहके, गुंगाके बल गात ।
दामाँके अरु देवके, जग्गूके कुल जात[23] ॥ २४ ॥
मैंनाँ कुल इत्यादि मिलि, इम हुव हाजरि आनि ॥
पहुमी सिर सज्ज्यो नृपति, मन रन उच्छव मानि ॥२५॥

---

१ स्त्री २ नीति छोडकर ३ किया ॥ १७ ॥ ४ आव (आदर) ५ घर में ६ बुधसिंह से बदल गई थी वह पाप मेटने के लिये ॥ १८ ॥ ७ जिस पीछे ८ माता से ९ शृंगार रस से शोभायमान दुलहन को वहीं छोडी. अथवा दुलहन को वहां छोडकर शृंगार रस की सर्जना की ॥ १९ ॥ १० बुन्दी पाई थी ११ जुदा ॥ २० ॥ १२ मुकाम १३ बारह खेड़ों के मैने ॥ २१ ॥ १४ हाथों में दो प्रत्यंचा के धनुष (धुर्णी) १५ भाथे (तरकस) १६ कमर में कटारी १७ और बंसी १८ एवं मस्तक पर धोकड़ा (वृक्ष विशेष) के पत्तों की किलंगी ॥ २२ ॥ १९ पवन को २० आक के वृक्ष को २१ नीचे झुक कर उडते हैं २२ चीते के समान कमरवाले ॥ २३ ॥ २३ ऊपर कहे हुए पुरुषों के कुल में उत्पन्न ॥ २४ ॥ २५ ॥

हिंडोली पुरकी प्रजा, जुगल स्वामि सिर जोय ॥
सैनय दम्म सोलह सहँस१६०००, नजरि किन्न नत होय२६
नयपटु सबन बिसासि नृप, किय बुंदिय सिर कुच्च ॥
बजि सिंधुव डाहल बिसम, इम हंकिय मन उच्च ॥२७॥
नंदराम इततैं निकसि, सहँस पंच ५००० सिख संग ॥
पहुमी दब्बत पक्खरन, अब्भैं घसत उतंमंग ॥२८॥
बिपरदल आवत बीचड़ी, मिलिग आनि ताजि मोह ॥
गज्जरके घरियार गति, लग्ग्यो बज्जन लोह ॥२९॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशौ भूभृदुम्मेदसिंहश्रीपुष्करद्वितीयो २ द्वाहकरणदलेलसिंहसहितकूर्मराजजयपुरगमनखत्रिशिवदाससुतनन्दरामबुंदीस्थापनहड्डेन्द्रभणायनगराऽऽगमनसपत्नजनन्यभिवादनतत्रैवराज्ञीनिवासनस्वयंबुन्दीविजयार्थसज्जीभवनहिंडोलीनगरसेनाप्रपतनद्वादश १२ खेटमैणासार्थस्वामिचरणपतनविजयार्थप्रस्थानबीचड़ीग्रामसीमाशत्रुसैन्यमिलनं त्रयोदशो १३ मयूखः ॥ १३ ॥　　॥२९४॥

प्रायोब्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

१माथे पर दलेलसिंह और उम्मेदसिंह दो स्वामी देखकर २ नीति सहित रुपये ३ फूककर ॥ २६ ॥ २७ ॥ ४ आकाश को ५ मस्तक से घिसता हुआ अर्थात् जिसका मस्तक ब्रह्मांड से लगा हुआ ॥ २८ ॥ ६ ग्राम का नाम है ॥ २९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, भूपति उम्मेदसिंह का पुष्कर में दूसरा विवाह करना १ दलेलसिंह सहित ईश्वरीसिंह का जयपुर जाना २ शिवदास खत्री के पुत्र नन्दराम को बुन्दी में रखना ३ उम्मेदसिंह का भणाय नगर में आकर अपनी सोतेली माता को नमस्कार करना ४ वहां राणी को रख कर अपनी बुन्दी को विजय करने को सज्ज होना ५ हिंडोली में सेना का पड़ाव होकर बारह खेड़ों के मीणों का स्वामी के चरणों में गिरना ६ विजय के अर्थ गमन करके बीचड़ी नामक ग्राम में शत्रु सेना से मिलने का तेरहवां १३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ चौरानवें २९४ मयूख हुए ॥

॥ चटकप्लुत ॥

दुवर सेन बग्ग लीनी, *कलि कोप अंख कीनी ॥
फन सेसनाग फुट्टे, †दिग्गदंति दंत तुट्टे ॥ १ ॥
बरकी बराह दड्ढा, गिलि अंग कुम्म ठड्ढा ॥
दिगपाल कंप लग्गे, [1]पुट इन्द्र१४ भीति भग्गे ॥ २ ॥
सब सिंधु[2] सेतु लुप्पे, कलि[3] जानि बीर कुप्पे ॥
सिवकी समाधि जग्गी, नवमौल आस लग्गी ॥ ३ ॥
कइलास छोरि काली, चढि सिंह संग चाली ॥
चउसट्ठि६४ चौंकि आई, घन मंडि नच्च धाई ॥ ४ ॥
दुवपंच५२ बीर दोरे, जव डाकिनीन जोरे ॥
कलि[6]कार मोद पग्गे, महती बजान लग्गे ॥ ५ ॥
गुन अच्छरीन गाये, अति मोद झुंड आये ॥
[8]नभ गिद्धनीन छायो, रवि रेनुमैं लुकायो ॥ ६ ॥
चहुवान बाजि[9] नक्खे, लखि आखु[10] जानि तक्खे[11] ॥
किलकार बीर बज्जी, समसेर मार सज्जी ॥ ७ ॥
कटि टोप जात झोके[12], जिम पत्र जोगनीके ॥
तरवारि धार धप्पैं, अरि केनैं[13] स्वर्ग अप्पैं ॥ ८ ॥
कर धूंप[14] भूप धायो, इत नंदराम आयो ॥
बिथुरी कैं[15]जाक बानी, मिलि बीर धीर मानी ॥ ९ ॥
बिबि[16] २ ओर तीर बज्जे, लखि भीरु नीर लज्जे ॥

---

* युद्ध में † दिशाओं के हाथियों के ॥ १ ॥ १ भूमि के चौदह पुट (लोक) डर कर भागे ॥ २ ॥ २ समुद्रों ने मर्यादा छोडी ३ युद्ध जानकर वीर कोपे ४ नवीन मुंडमाला की आशा लगी ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ वेग ६ युद्ध करानेवाला (नारद) हर्षित हुआ और ७ वीणा वजाने लगा ॥ ५ ॥ ८ आकाश ॥ ६ ॥ ९ घोड़े डाले (उठाये) १० चूहे को देख कर ११ ताखा नाग ॥ ७ ॥ १२ टोंके जाते हैं (निरन्तर प्रहार को डिंगल भाषा में झोकना कहते हैं) १३ कितने ही शत्रुओं को ॥ ८ ॥ १४ खड्ग विशेष हाथ में लेकर १५ युद्ध की वाणी (डिंगल भाषा में युद्ध का नाम रजिपा है जिस संबंधी) ॥ ९ ॥ १६ दोनों ओर

बरछीन बेध लग्गैं, परि सूर *मुत्ति पग्गैं ॥ १० ॥
घट के कटार कढ्ढैं, मुख सूर नूर बढ्ढैं ॥
फबि सेल पार फुट्टैं, छक लोह प्रान छुट्टैं ॥ ११ ॥
फटि घाय छिंछि हल्लैं, †जलजंत्र जानि चल्लैं ॥
सिख नंदरामके जे, लखि ‡ओदकैं कलेजे ॥ १२ ॥
फटि §कोच गात फट्टैं, जिम केलि ¶गब्भ कट्टैं ॥
गहि ÷कुंत नाभि गेरैं, धमनीन[1] मूल हेरैं ॥ १३ ॥
उलटंत सादि[2] आली, हय होत केक खाली ॥
मग ओर खेह डुल्ले, जम[3] स्वर्ग बट्ट खुल्ले ॥ १४ ॥
गजमत्थ फेट फुट्टैं, जिम गोत्र[4] कूट तुट्टैं ॥
परि भीरु सोक कूईं[5], परभोग ज्यों[6] असूई ॥ १५ ॥
गति हीन केक फीके, मन जानि संजमी[7]के ॥
तजि प्रान जात सच्छी, तरु ठुंड[8] जानि पच्छी ॥ १६ ॥
सुधि भुल्लि केक बक्कैं, जड़ जानि सीधु[9] छक्कैं ॥
कटि जात अंत हीसौं[10], जिम पाप जान्हवीसौं[11] ॥ १७ ॥
तरवारि भा[12] चलक्कैं, जिम संपिका[13] सलक्कैं ॥
हुव रत्त रत्त अंगे, रंजतत्व[14] जानि रंगे ॥ १८ ॥
दबिजात केक श्रेनी, नर[15] अस्व ती कि एनी[16] ॥

*मुक्ति पाते हैं॥१०॥११॥ †फुँहारा ‡डरे॥१२॥ §कवच फटकर शरीर फटते हैं मानों ¶ केल वृक्ष का गर्भ कटता है ÷ भाला लेकर नाभि में घुसेड़ते हैं सो १ मानों नाड़ियों (नसों) का मूल हेरते हैं कि कहां से निकली हैं ॥ १३ ॥ २ सवारों की पंक्ति ३ यमराज ने स्वर्ग का मार्ग खोल दिया ॥ १४ ॥ ४ पर्वतों के शिखर ५ कूप (कुए) में ६ जैसे दूसरे के ऐश्वर्य भोगने से असूया करनेवाला पड़ै तैसे ॥ १५ ॥ ७ इन्द्रियों को रोकनेवाले का सच्छी (घृणा के साथ) अर्थात् शरीर की घृणा करके प्राण जाते हैं ८ ठूंठ (बिना पत्तों के वृक्षमूल) को पक्षी छोडै जैसे ॥ १६ ॥ जड़ मनुष्य ९ मद्य में छकै जैसे १० हृदय से ११ गंगा से ॥ १७ ॥ १२ कान्ति १३ विद्युत (बिजुली) १४ रंगरेज ने अथवा रजोगुण में रंगे हैं ॥ १८ ॥ १५ अश्व जाति के पुरुष से १६ मृगी जाति की स्त्री

मिलि प्रेत डाकिनीसौं, हिय मीँडि गाढ हीसौं ॥ १९ ॥
कुच तिक्ख तास गड्डैं, जिम विद्धकैं सु वड्डैं ॥
कति जोगिनीन छीकैं, बढि जीत लोभ हीकैं ॥२० ॥
सुहि पुब्ब भिंटनेमैं, जनु देत पुष्टि प्रेमैं ॥
कति लै रु संड लेटैं, प्रतिसेम्फ जानि भेटैं ॥ २१ ॥
उदघृष्ट केक सज्जैं, कति पीड़िते न रज्जैं ॥
इम मत्त प्रेत सोहैं, मिलि च्यारि४भाँति मोहैं ॥ २२ ॥
भुव गाम बीचड़ीकी, हुव रत्त रत्त हीकी ॥
भिरि नंदराम भज्ज्यो, लखि खत्रि नीर लज्ज्यो ॥ २३ ॥
सिख तास संम्मुहाये, सलभा कि दीप धाये ॥
तिन्ह तक्कि भूप नीरे, परि बीच खग्ग पीरे ॥ २४ ॥
हठ लग्गि हद्द मारैं, दुव हत्थ खग्ग भ्कारैं ॥
कटि वग्ग बाजि फेरैं, हठि नंदराम हेरैं ॥ २५ ॥
भजिकैं छिप्यो सु खत्री, जिम सेन लाव पत्री ॥
सिख हद्द दोहु२सज्जे, बिकराल बाढ बज्जे ॥ २६ ॥
अति जंग संकुलयो ह्हाँ, अवमर्द दोन२क्यो ह्हाँ ॥
तरवारि केक तुट्टैं, घरियारि जानि फुट्टैं ॥ २७ ॥

दब जावे (जैसे काम शास्त्र में शश, मृग, अश्व इन तीन प्रकार के पुरुष और मृगी, वड़वा, हस्तिनी ये तीन प्राकर की स्त्रियें लिखी हैं जिन की व्याख्या दूजी और तीजी राशि में विस्तार पूर्वक करदी गई है) १ मसल (कुचल) कर ॥ १९ ॥ २ उस डाकिनी के ३ घड़ा बेधन करते हैं ४ केवल लोभ करके अथवा हृदय में जीतका लोभ करके ॥ २० ॥ ५ प्रथम मिलाप में ६ नपुंसक ७ शय्या पर ॥ २१ ॥ ८ घर्षण (रगड़ना) ९ पीड़ा देतेहुए तृप्त नहीं होते इन उदघृष्ट और पीड़ित आदि का विषय तीजी राशि में लिख आये हैं अश्लीलता के कारण अधिक लिखना नहीं चाहते ॥ २२ ॥ २३ ॥ १० सन्मुख हुए ११ मानों दीपकपर पतंग दौड़े १२ समीप १३ तरवार से पीड़ित किये ॥२४॥ ॥ २५ ॥१४शिकरे से लवा पक्षी ॥२६॥ दोनों ने१५अवहाथ रहित, पीड़ाकारि

निकसंत नैंन गोटे, फद्दकैं कि भेक[1] छोटे ॥
कति चाप[2] ऐंचि[3] ज्यारैं, जिम काल[4] डाच[5] फारैं ॥ २८ ॥
बिच[6] तास भाल ठड्ढा, सुहि जानि तिक्ख दड्ढा ॥
फटि पेट अंत दीसी, पलटी कि पन्नगीसी ॥ २९ ॥
चउ ४ फार होय मन्ने, जिम कंज[7] च्यारि ४ पन्ने ॥
फटि कालखंज[8] खुल्ले, फबि ज्यों पलास फुल्ले ॥ ३० ॥
सर लीन तुंद[9] कूपी, बिल जानि नाग रूपी ॥
इम भूप जंग मंड्यो, सिख ब्रात[10] खग्ग खंड्यो ॥ ३१ ॥
[11]अवसिष्ट केक लज्जे, मुख अग्ग भीत भज्जे ॥
तिन पिट्ठि हड्ड धाये, त्रय ३कोसलौं भजाये ॥ ३२ ॥

॥ दोहा ॥

राजामल सोदर[12] सुवन, नंदराम गए भज्जि ॥
सिख कितेक सम्मुह मरे, नट्ठे[13] कति जैंल[14] लज्जि ॥ ३३ ॥
सानुकूल नृपकी नियति[15], लग्गे लोह न अंग ॥
अरि आहव[16] भज्जे भरकि[17], जिम लखि बाज कुलंग[18] ॥३४॥
नागर द्विज नृप भृत्य इक, नंदराय अभिधान ॥
सोहु सूर सम्मुह भयो, किन्नौं हद घमसान[19] ॥ ३५ ॥
मारे सिख बिक्रम अमित, जुरयो बिबिध जैंयकार[20] ॥
लग्गे बंभन बीरकौं, सत्त७कृपान[21] समार[22] ॥ ३६ ॥

युद्ध किया ॥ २७ ॥ १ मैंडक २ धनुष को ३ खैंचकर जैसे ४ यमराज ५ मुख फाड़ता है ॥ २८ ॥ ६ उस धनुष के बीच में तीर लगा है सोही मानों यम-राज की तीखी दाढ है ॥ २९ ॥ ७ कमल है ८ कलेजा ॥ ३० ॥ ९ पेट की नाभी में बाण घुसते हैं सो मानों बिल में सर्प घुसता है १० सिक्खों के समूह को काटा ॥ ३१ ॥ ११ अवशिष्ट (बाकी के) ॥ ३२ ॥ १२ राजामल के भाई का पुत्र १३ नाठे (भागे) १४ पराक्रम को लजाकर ॥ ३३ ॥ १५ भाग्य १६ युद्ध से १७ चमक कर १८ सिचाण को देखकर कुलंग पक्षी भगे जैसे ॥ ३४ ॥ १९ युद्ध ॥ ३५ ॥ २० जय करनेवाला २१ तरवार २२ मार (प्रहार) सहित ॥ ३६ ॥

सोधि खेत नृप घायलन, लये नृजानन[1] डारि ॥
बुंदिय आप रु भटन जुत, प्रबिस्यो अररन[2] फारि ॥ ३७ ॥
उदयराम पकरयो बनिक, लये अयुत दंम[3] दम्म ॥
बैठो नृप बुंदिय तखत, करि निज हत्थन कम्म[4]॥३८॥
संबत दुव नभ धृति१८०२समय, सावन तीज३ बलच्छ[5] ॥
असिबर[6] बल किन्नौं अमल, अधिपति बुंदिय अच्छ ॥ ३९ ॥
सुनि कछवाह दलेलसौं, अक्खी मम दल[7] संग ॥
मारहु जाय उमेदकौं, जुरहु बडे बल जंग ॥ ४० ॥
सटि दलेल सुनतहि नटयो, किन्न अरज करजोरि ॥
मंडहु तुम अप्पन[8] अमल, मैं बुंदिय दिय छोरि ॥ ४१ ॥
ताके[9] कर लिखवाय तब, कंग्गर[10] कूरम[11] लीन ॥
नैनवा रु करउरनगर, रक्खे तास[12] अधीन॥ ४२ ॥
अवर देस अप्पन करन, गिलन[13] अजीरन ग्रास ॥
बुंदिपपर पिल्लियँ[14] बिकट, पृतना[15] सहँस पचास५००००॥४३॥
नाम नरायनदास इक, खत्री रन हमगीर ॥
राजामल सिवदासको, भ्रात सज्यो बरबीर ॥ ४४ ॥
तिहिं करि कूरम सेनपति, पठयो बुंदिय लैन ॥
संग दये उमराव सब, उद्धत जे रन ऐन[16] ॥ ४५ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशौ हड्डेन्द्र

---

१ डोलियों में २ कवाड़ तोडकर ॥ ३७ ॥ ३ दंड के दश हजार रुपये ४ अपने हाथों से कार्य करके ॥ ३८ ॥ ५ शुक्ल पक्ष की ६ श्रेष्ठ तरवार के बल से॥३९॥ ७ मेरी सेना साथ लेकर ॥ ४० ॥ ८ अपना अधिकार ॥ ४१ ॥ ९ दलेलसिंह के हाथ से १० पत्र लिखाकर ११ कछवाहे ईश्वरीसिंह ने लिया १२ दलेलसिंह के आधीन रक्खे ॥ ४२ ॥ १३ अजीर्ण के ऊपर ग्रास (निवाला) गिटने के लिये भयंकर १५ सेना १४ भेजी ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ १६ युद्ध के स्थान में अनम्र ॥ ४५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, हाडा क्षत्रियों

सपत्नसैन्यबीचड़ीयुद्धकरणखत्रिनन्दरामपलायनविजयिरावराट्स्वपुरप्रवेशनदलेलसिंहबुन्दीत्यजनपुनःकूर्मराजपृतनाप्रेषणं चतुर्दशो १४ मयूखः ॥ १४ ॥　　॥२९५॥

प्रायोब्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ मुक्तादाम ॥

सज्यो अब कूरम भूपति सैन, लगे भट घुम्मन बुंदिय लैन ॥
बन्यो समयो यह दुस्सह आय, जहाँ फटि बाल तजैं निज माय ।१।
पिता सुतकों पतिकों निज नारि, तजैं वह वत्त बनी भयकारि॥
जनैं जननी जु गिनैं सब ठीक, वहै नर आँहि न मध्य १०००००००८०००००००० अनीक ॥ २ ॥
वहै नर आतम संविद धन्न्य, वहै नर जो न ततो मृग वन्न्य ॥
वहै नरही गुन तीनन३ ईस, वहै अवनीसनको अवनीस ॥ ३ ॥
वहै जिम कूट तथा इक सार, वहै सब ओर न शुद्ध अपार ॥
वहै नर तीन३ अवस्थन एक, वहै सबघाँ सित धारन तेक ॥४॥

के इन्द्र का शत्रु सेना से बीचड़ी नामक ग्राम में युद्ध करना १ नन्दराम का भागना २ जयपाये हुए रावराजा का अपने नगर में प्रवेश करना ३ दलेलसिंह का बुन्दी छोड़ना ४ फिर कछवाहों के राजा का सेना भेजने का चौदहवां मयूख १४ समाप्त हुआ आदि से दोसौ पिचानवें २९५ मयूख हुए ॥
१ सेना २ अपनी माता को ॥ १ ॥ ३ वार्ता४भयंकर, माता के जन्म दिये हुए सभी मनुष्यों की गणना कीजाये तो वह ठीक मूल में लिखी हुई संख्या होती है (पुराणों के मत से इस संसार के सम्पूर्ण मनुष्यों की यह संख्या है) सो तो सभी इस सेना में नहीं ५ है (यदि उक्त संख्या के सभी मनुष्य एकत्र होते तो वह ब्रह्मज्ञानी पुरुष भी मिल जाता) ॥ २ ॥ ६ वह आत्मज्ञानी पुरुष धन्य है और जो वह आत्मज्ञानी पुरुष नहीं है तो उसके बिना अन्य पुरुष तो ७ वन के पशु हैं ८ वही आत्मज्ञानी पुरुष सत, रज, तम तीनों गुणों का पति है ९ वह राजाओं का राजा है ॥ ३ ॥ १० इस माया की रचना में ११ सार (तत्व, स्थिर अंश) रूप वही है १२ वह सब ओर व्याप्त है १३ भूत, वर्तमान, भविष्यत्, तीनों अवस्थाओं में वह एक रूप है १४ वह सब ओर श्वेत धारा का १५ खड्ग है ॥ ४ ॥

वहै नरही सब कृत्रिम सक्खि, वहै यह मोघ रह्यो बिच रक्खि ॥
वहैहि वहै गुनको नहिँ जोग, वहै बिखई यह अन्न्य सु भोग॥५॥
वहै अँज इष्ट अनादि अनंत, गुनत्रय३ नारियको वह कंत ॥
वहै नहितो भव नाहक पाय, बिगारत बालिस जुव्वन माय ॥ ६ ॥
वहै इक१ रुंधंत नाहक नारि, वहै सठ अन्नहिको खयकारि ॥
वहै पंच मात बिगारनहार, वहै रहि व्यर्थ करैं भुव भार ॥ ७ ॥
भयो नर नारि न लंच्छन एह, नहीँ कुच मुच्छनँ सुंदर देह ॥
हुते नहिँ यांबिधि के भट हाय, बडे मरनीक तथाँपि बैलाय ॥८॥
कह्यो हम ह्याँ कछु बोध विचार, सुयाँ वह बीर गिनैं सब सँार ॥
कहा मरनौ अरु जीवन तांस, कहा सुख दुक्ख सबै इक१ मास९
वहै हि गिनैं निजही सब वत्त, यहै रन तो भल होवहु अँत्त ॥
परंतु न हे इम कूरम बीर, गिने सुख अच्छरि स्वर्ग सरीर ॥ १०॥

यही मनुष्य१इस जगत् का साक्षि रूप है यही इस२नाशवान् (झूठे) संसार को रख रहा है३वह ब्रह्म ज्ञानी ब्रह्मस्वरूप आप ही आप (स्वयंज्योति) है, उसमें किसी गुण का योग नहीं है४वह भोग करनेवाला है और यह अन्य जगत् उसका भोग है॥५॥५ अजन्मा [जिसका कभी जन्म नहीं होता है] ६ तीन गुण रूपी स्त्रियों का वह ७ पति है ८ वैसा ब्रह्मज्ञानी नहीं है तो यह संसार वृथा पाकर ९वह मूर्ख माता का यौवन वृथा बिगाड़ता है ॥ ६ ॥ वह मूर्ख वृथा एक स्त्री को १० रोकता है ११ वह मूर्ख अन्न का नाश करनेवाला है१२वह मूर्ख माता के दूध को बिगाड़नेवाला है१३भूमि पर व्यर्थ भार करता है ॥ ७ ॥ यह नर होगया है१४स्त्री का चिन्ह नहीं है, नहीं तो स्त्री ही है, इसके कुच नहीं हैं१५ मूंछों से देह सुन्दर है परन्तु पुरुष नहीं है खेद की बात है कि१६इस सेना में इसप्रकार के आत्मज्ञानी वीर नहीं थे१७तोभी बडे मरनेवाले१८बलाय थे (वन पशु विशेष जिसका अत्यन्त क्रोधी होना प्रसिद्ध है और राजपूताने में उसको चूट और बागड़ भी कहते हैं और फारसी में आफत (आपदा)का नाम बलाय है)॥ ८ ॥१९ज्ञान२०सब में सार रूप २१ उस आत्मज्ञानी के मरना जीना क्या है २२ एक सरीखे हैं ॥ ९ ॥ २३ वह सब बात को अपनी ही जानता है तो यह युद्ध भी २४ यहां भले ही होवै २५ कछवाहा ईश्वरीसिंह के वीर इसप्रकार के नहीं थे २६ अप्सराओं के साथ स्वर्ग में शरीर का सुख

रु एहहि केवल सूरन[1] धर्म, सुही तिन्ह रक्खि कसे दृढ बर्म[2] ॥
सजे भट कूरम[3] मानज[4] सूर, खंगारज[5] नाथज[6] पानिप[7] पूर ॥ ११ ॥
कल्यानज[8] पूरनमल्ल[9] कुलीन, द्वितीयरहु कुंभज[10] आजि[11] अदीन ॥
जथा बनबीर चतुर्भुज[12] जात, घनें सिव ब्रह्मज[13] इष्टप्रघात ॥ १२ ॥
सजे बलिभद्रज[14] सेखज[15] सत्थ, घनें सुरतानज[16] संघ[17] समत्थ ॥
नरूजे[18] रु कुंभज[19] अच्छरि नाह[20], कढे इन्ह आदि बडे कछवाह ॥१३॥
सज्यो दलईस[21] नरायनदास, लये सब संग जग्यो बल जास ॥
चल्यो दल जैपुरकों तजि तंत्त[22], बढी रन जित्तहिं जित्तहिं बत्त ॥१४॥
खुली गजपिट्ठि धुजा पचरंग[23], चले हय मप्पत छोनि[24] मलंग ॥
भई सह आलिय[25] कालिय गैल, बडे हित उग्र[26] चढे चलि बैल ॥१५॥
चल्यो महती[27] गहि नारद लार, चले गन बावन५२त्यों पल[28] प्यार ॥
चली चउसट्ठि६४मलंगत चाल, चल्यो गहि खप्पर खित्तरपाल १६
चले गन डाकिनि जेच्छ[29] चुरेल, पिसाच रु रक्खस गुह्यक गैल ॥
चले कति इक्कत[30] इक्कहिं पाय, चले कति दोउन[31]२भू धमकाय ॥१७॥
चले कति मंडत नट्ट कुलट्ट[32], चले कति चौंकि हसे अटअट्ट ॥
चले गन गिद्धनि चिल्हनि घोर, शृगाल रु कंक महा रन सोर ॥१८॥
गहक्किय[33] सेन सिवा[34] किय गोन, चल्यो दल कुम्म प्ररुद्धत[35] पोन ॥

माननेवाले थे ॥ १० ॥ अरु १ वीरों का केवल यही धर्म है, सो ही उनने रख कर दृढ २ कवच कसे ३ कछवाहे वीर ४ मानसिंहोत (राजावत) ७ पूर्ण पराक्रमवाले ५ खंगारोत ६ नाथावत ॥ ११ ॥ ८ कल्याणोत ९ पूर्णमल्लोत १० दूसरे कुंभावत ११ युद्ध में दीनता रहित १२ चतुर्भुजोत १३ कितने ही शिव ब्रह्म पोते जिनको युद्ध ही इष्ट है वे उस युद्ध में सजे ॥ १२ ॥ १४ बलिभद्र के वंश के बलिभद्रोत १५ सेखावत १६ सुरताणोत १७ समर्थ समूह १८ नरूके १९ कुंभावत २० अप्सराओं के पति ॥ १३ ॥ २१ सेनापति २२ तहां ॥ १४ ॥ २३ जयपुर की ध्वजा पांच रंग की है २४ भूमि को २५ सखियों सहित कालिका साथ हुई २६ शिव ॥१५॥ २७ महती नामक वीणा को २८ मांस के प्यार से ॥१६॥ २९ यक्ष ३० एक पैर से कूदतेहुए ३१ दोनों पैरों से ॥१७॥ ३२ कुलांट ॥ १८ ॥ ३३ प्रसन्नता की बोली बोल कर ३४ स्यालनियें ३५ पवन को रोकती

अटैँ कति मंडि बरच्छिन वार, करैँ कति लच्छ[1]यन बेध कटार १९
किते खुरलीपट्ट[2] सद्धत खग्ग, मिलैँ रचि केक तुपक्कन मग्ग ॥
बनैँ कमनैतन पच्छिन बेध, सजैँ कति कुंतन[3] केलि सुमेध[4] ॥२०॥
दिपैँ रसबीर गिनैँ तृन देह, छुहे[5] निज साहस देत न छेह ॥
छलैँ छक हूर चहै कति छैल[6], चलैँ द्रुत मंडित कुंकुम चैल[7] ॥२१॥
मलप्पत बाजिन के मचकाय, धरातल दब्बत बेग धुजाय ॥
चल्यो दल दुद्धर यौँ दरकुच्च, उठावत दुग्गनको छक उच्च ॥ २२ ॥
लग्यो भर भोग पॅलट्टन[10] सेस, भयो गिलिअंगदरी कमठेस[11] ॥
तुटी लखि दड्ढ दयो किरि[12] तुंड, झरैँ रद[13] कंपिग दिग्गजझुंड ॥२३॥
उडे खुलि केतन[14] कुंभिन[15] कंध, डिगे डर डक्कन भीरुन[16] बंध ॥
छिप्यो निस चंद रु बासर अक्क, चहैँ निस घूक तथा दिन चक्क[19] २४
सुपै सुधि नाँ निस बासर संधि, बन्यौँ तम तोम[20] प्रभा[21] घन बंधि ॥
चले इत सद्दल[22] मद्दल[23] चौंस[24], मिले इत बद्दल भद्दल[25] मास ॥ २५ ॥
छल्यो इत पानिप[26] ओ उत नीर, सहायक त्यौँ रसबीर समीर[27] ॥
घुरैँ इत नोबति ओ उत गज्ज[28], इतैँ भुव पाय उतैँ नभ सज्ज ॥२६॥

हुई कछवाहों की सेना चली १ निशानों (चिन्हों) को ॥ १९ ॥ २ शस्त्राभ्यास में चतुर ३ भालों से क्रीड़ा करते हैं ४ श्रेष्ठ बुद्धिवाले ॥ २० ॥ ५ क्रोध में आये हुए ६ रसिक ७ केसरिया वस्त्र ॥ २१ ॥ ८ कितनेही घोड़ों को उडाते हैं ॥ २२ ॥ ९ भार से शेषनाग फणों को १० पलटने लगा ११ कमठ अपने अंगों को गिट (समेट) कर कंदरा रूप होगया १२ वराहने १३ दन्त टूट कर दिग्गज धूजे ॥ २३ ॥ १५ हाथियों के ऊपर १४ ध्वजा खुल कर उडी १६ भय से १७ कायरों के बंध डिग कर डरे, रात्रि में चंद्रमा और १८ दिन में सूर्य छिपा, घूघू (उलूक) रात्रि को और १९ चकवा दिन को चाहने लगे ॥ २४ ॥ परंतु दिन और रात्रि की संधि (संध्या) की सुधि नहीं रही इसप्रकार २० अंधेरे का समूह २१ मेघ की क्रांति बांध कर रही २२ इधर तो शब्दायमान होकर २३ मर्दल (वाद्य विशेष) २४ युद्ध की खबर देकर चले और इधर २५ भाद्रपद मास के बद्दल मिले ॥ २५ ॥ २६ सेना रूपी घटा में पराक्रम और मेघ की घटा में पानी बढा और इनके सहायक सेना में बीर रस और मेघ में २७ पवन हुआ इधर नोबत का शब्द और उधर २८ गर्जना हुई और सज्जित होने को इधर

इन्हैं[1] न चहैं रु उन्हैं जग आस, बनैं इत शस्त्र उतैं जलबाँस[2] ॥
इतैं बहुरंग उतैं सित[3] स्याम, लसैं इत औ उत बेग ललामं[4] । २७ ।
लसैं इत अग्र[5] उतैं लहरून, दिपैं मुद सूर मयूरन दून[6] ॥
इतैं गजदंत उतैं बक बाँत[7], इतैं उत दौरत अग्र दिखात ॥ २८ ॥
इतैं उत पक्खर दद्दुर[8] बुल्लि, इतैं उत गिद्ध रु चातक फुल्लि ॥
इतैं उत खग्ग रु बिज्जुन[9] ओघ, इतैं उत होत धरा नभ मोघ।२९।
इतैं उत ओजं[10] ईरम्मद[11] भास, रजोगुंन[12] बूढनि[13] व्रात बिलास ॥
झरैं सर यौं उत ऊँसर[14] जुत्त, इतैं उत भूपन[15] भंभन[16] पुत्त ॥ ३० ॥
कहैं इत लैन मही कछवाह, कहैं उत पिक्खि[17] हमैं वह चाह ॥
कहैं यह नीति बिथारन[18] कत्थ, कहैं वह अन्न प्रचारन अंत्थ[19] ।३१।

भूमि प्राप्त हुई और उधर आकाश प्राप्त हुआ ॥ २६ ॥ १ इस सेना को कोई नहीं चाहता था और मेघ की आशा संसार करता था, इधर शस्त्रों का और उधर जल का २ निवास है अथवा जल ही वस्त्र है सेना में अनेक रंग हैं और उधर ३ स्वेत और काला रंग है और इधर उधर दोनों ओर ४ सुन्दर वेग शोभायमान है ॥ २७ ॥ इधर सेना का ५ अग्र भाग और उधर लहरें शोभित हैं, सेना में वीरों को और मेघ में मयूरों को ६ इन दोनों को हर्ष शोभा देता है अथवा इन को दुगुना हर्ष शोभा देता है, सेना में हाथियों के दंत और मेघ में बक (बुगला) पक्षियों का ७ समूह है जो दोनों ओर आगे दौड़ते दीखते हैं ॥ २८ ॥८इधर पाखरें और उधर दादर (मैंडक) बोलते हैं और इधर ग्रीध और उधर चातक फूलते हैं९इधर तरवारों का और उधर बिजुलियों का समूह है, इधर सेना से ढक कर पृथ्वी नहीं दीखती और उधर मेघ से ढक कर आकाश नहीं दीखता ॥२९॥ इधर१०पराक्रम और उधर ११ मेघज्योति का प्रकाश होता है और इधर १२ रजोगुण (रजोगुण का रंग लाल है) और उधर १३ वीरबहूटी (सावण की डोकरी) का विलास है इधर बाणों की वर्षा होती है और उधर१४ऊसर भूमि में बरसता है१५इधर राजाओं के पुत्र हैं और उधर १६ ब्रह्मा का पुत्र (इन्द्र) है ॥ ३० ॥ इधर कछवाहा भूमि लेने को कहता है और उधर इन्द्र पृथ्वी १७ देखने की चाह कहता है अथवा हम को देखते ही वह भूमि चाहना करती है, यह (कछवाहा) तो नीति १८ फैलाने की वार्ता कहता है और वह (मेघ) अन्न का प्रचार करने के १९ अर्थ कहता है ॥ ३१ ॥ इधर तो भूमि को ये अपनी कहते हैं और उधर बहुत घुमंड कर

कहैं इत है सब अप्पन भुम्मि, कहैं उत अप्पन है घन घुम्मि॥
कहैं इतहैं रवि ढंकन हार, कहैं उत बद्दल ज्यों न बिथार॥३२॥
कहैं इत चाप चढावन बत्त, कहैं उत सज्जित आयत[३] अत्त॥
इतैं रज अद्रि उडावन बाद, कहैं उत रक्खहिं संबर[५] सांद॥३३॥
कहैं इत मंडहिं गोलिन गान, कहैं उत मूक करैं करकान॥
कहैं इत बानन छावन देस, कहैं उत बुंदनतैं न बिसेस॥ ३४॥
कहैं इत आयुध बुट्ठि अनल्प, कहैं उत बुट्ठि करैं हम कल्प॥
इतैं प्रभु[९] कुम्म उतैं[१०] सुरईस, इतैं उत सज्जित छोनियँ[११] सीस।३५।
बढे दल[१२] बद्दल यों रचि बाद, सु सोनित संबर मंडन सांद[१३]॥
दिपे[१४] प्रविसे इत बुंदियदेस, अरे बिथुरे[१५] उत भुम्मि असेस॥३६॥
बन्यों इम कूरम सेन पयान, सुन्यों नृप बुंदिय धर्म समान॥
उयो[१६] रनपैं जिम व्याह उछाह, सजे मनवंछित जानि सनाह[१७]।३७।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ बु-

मेघ अपनी कहता है सेना कहती है कि मैं खेह से सूर्य को ढकनेवाली और मेघ कहता है कि तुमारा १ विस्तार बादलों के समान नहीं है॥ ३२॥ इधर २ धनुष चढाने की बात कहते हैं और उधर मेघ कहता है कि यहां हमारा धनुष ३ लंबा है, इधर तो ४ पर्वतों की रजी करके उडाने का वाद (हठ) करते हैं और उधर ५ जल का कीचड़ करके उनकी (पर्वतों की) रक्षा करना कहते हैं॥ ३३॥ सेनावाले कहते हैं कि गोलियों का गान करेंगे और मेघ कहता है कि ६ गड़ों (ओलों) से बधिर कर देवेंगे, इधर देश को बाणों से छादित करना कहते हैं और उधर मेघ कहता है कि वे बाण बुंदों से विशेष नहीं हैं॥ ३४॥ इधर ७ बहुत शस्त्रों की वर्षा करना कहते हैं और उधर वृष्टि करके ८ प्रलय करदेना कहता है, इधर तो ९ कछवाहा (ईश्वरीसिंह) स्वामी है और इधर १० इन्द्र स्वामी है, इधर उधर दोनों ११ पृथ्वी पर सज्जित होते हैं॥ ३५॥ इसप्रकार १२ सेना और बादल दोनों वाद करके रुधिर और पानी का १३ कीचड़ करने को चढे १४ सेना तो बुंदी के देश में प्रवेश करके शोभित हुई और मेघ हठ करके संपूर्ण भूमि पर १५ फैल गया॥ ३६॥ १६ युद्ध पर उदय हुआ (उठा) १७ कवच॥ ३७॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के सप्तम राशि में, बुन्दी विजय करने

न्द्रीविजयार्थकूर्मराजकटकानिस्सरणास्तनयित्नुसहाऽऽधिकयाभोऽ-मननतद्बुंदीशश्रवणोत्साहवर्द्धनं पञ्चदशो १५ मयूखः॥१५॥२९६॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

लै[1] बुंदिय नृप प्रसभ लगि, खमग[2] पताकन खुल्लि ॥
अबला[3] जुत अनुजा[4] अनुज, कोटा सन लिय बुल्लि ॥ १ ॥
दीपकुमरि अरु दीपहरि[5], तव बुल्ले छक तोर ॥
रानी फालिय सह रुचिर, जय रन जुव्वन जोर ॥ २ ॥
कोटापति नृप चित्त लौ, दूनौं गरब दिखाय ॥
मन अरि उप्पर मित्र बनि, लिय बुंदिय छक लाय ॥ ३ ॥
सो लखि नृप कृतघन समुझि, उदासीन रहि अत्थ[6] ॥
भुजदंडन लिय अप्प भुव, सजि असु[7] त्याग समत्थ ॥ ४ ॥
गजब[8] कार कोटेस गानि, भयकारक अब भूप ॥
सिर उठाय मूढ न सकत, रद[9] तोरे अहि रूप ॥ ५ ॥
अंतहपुर[10] संजुत अनुज, बुल्ले[11] नृप इहिं बेर ॥
कोटापति कछुहु न कह्यो, संकित मन गिनि सेर[12] ॥ ६ ॥
तिनहु आय भिट्यो[13] त्वरित, निज प्रभु भ्रात निसंक ॥
रुचि[14] उपेत भूपति रह्यो, आतपत्र[15] धरि अंक[16] ॥ ७ ॥
[17]अह सोलह १६ भुग्गो अधिप, रहि सूरन गति राज ॥

के अर्थ कछवाहों के राजा की सेना का निकलना १ उसका मेघ के साथ अधिकता का अभिमान २ उस को बुन्दी में सुनने से उत्साह बढने का पन्द्रहवां १५ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ छिनवे २९६ मयूख हुए ॥ १हठ लग कर२आकाश मार्ग में३स्त्री सहित४छोटी बहिन और छोटे भाई ॥ १ ॥ ५ दीपसिंह के ॥ २ ॥ ३ ॥ ६ यहां ७ प्राण छोडने को ॥ ४ ॥ ८ गजब करनेवाला ९ दन्त तूटेहुए सर्प के सदृश ॥ ५ ॥ १० जनाना सहित ११ बुलाये १२ सिंह रूप जानकर ॥ ६ ॥ १३ मिला १४ रुचि सहित १५ छत्र सहित १६ भाई को गोद में लिया ॥ ७ ॥ उस राजा ने वीरों की गति से रह कर १७ सौलह

सबल[1] सज्यो दिन सत्रहम१७, सत्रुन बिसम समाज ॥ ८ ॥
असित भद्द पंचमि५ दिवस, चल्ल्यो अरि चतुरंग ॥
सत्तमि७ दिन भूपति सुन्यौं, [2]जामिनि सुत्तैं जंग ॥ ९ ॥
[3]रहसि निवेदिय[4] नाजरन, दासिन जुत द्रुत दाय ॥
जगि पहिलैं रानिय[5] जंप्यो, जग्गे अदिन लाय ॥ १० ॥
[6]सिंहनि अक्खिय सिंहसौं, कित सोवहु[7] अब कंत[8] ॥
जिन हत्थिन कुंभन जलज, ते आवत घुमडंत ॥ ११ ॥
जिनहित लंघन लंघिकैं, खद्धो और न मंस[9] ॥
सहजैं ते आवत सुनैं, [10]वाँरन भद्दन वंस ॥ १२ ॥
लंबी हत्थल लंक[11] तनु, [12]उँछट परक्खहु आज ॥
भूख न कछ्छु [13]भावते, रोसिल्ले मृगराज ॥ १३ ॥
जिन कुंभन नख नाहके, बनैं घटा जिम बीज ॥
हम कौतुक वह पिक्खिहैं[14], खुल्लहु रंचक[15] खीज ॥ १४ ॥
[16]इतर मृगन अपराधपैं, नयन उघारत नाँहिं ॥
त्यौंही जो यह तक्किहो[17], यौंही तौ नह[18] आँहिं ॥ १५ ॥
भूख निकासहु भोनतैं[19], गंजि [20]गंजन बल गड्ड ॥

दिन तक राज्य भोगा और सत्रहवें दिन शत्रुओं के विषम समूह पर सजा ॥ ८ ॥ १ सेना २ रात्रि में सोते हुए ने ॥ ९ ॥ ३ एकान्त में ४ शीघ्र रीति पूर्वक ५ रानी ने कहा ॥ १० ॥ ६ रानी रूपी सिंहनी ने राजा रूपी सिंह से कहा ७ हे पति ८ जिन हाथियों के कुंभस्थलों में मोती हैं वे उड कर आते हैं ॥ ११ ॥ जिन भद्र जाति के हाथियों के कारण उपवास करके अन्य ९ मांस नहीं खाया है वे भद्र जाति के १० हाथी सहज में आते हैं ॥ १२ ॥ लंबी हाथल और पतली ११ कमर की १२ फुरती और दान आज परीक्षा करनी है सो १३ हे प्यारे क्रोधवाले सिंह अब भूखे मत ॥ १३ जिन हस्तियों के कुंभस्थलों में पति के नख घटा में विद्युत् के समान बनते हैं वह खेल हम १४ देखेंगी सो १५ कुछ क्रोध करो ॥ १४ ॥ जिसप्रकार तुम १६ अन्य मृगों के अपराध पर नेत्र नहीं खोलते हो उसीप्रकार जो १७देखोगे तो ये वैसे ही तो नहीं १८ हैं ॥ १५ ॥ बडे बलवान् २० हाथियों को मार कर १९ घर से भूखे को निकालो.

कुंभ[1] सांन तिक्खी करहु, दंढ्ढारे घसि दढ्ढ ॥ १६ ॥
वृक[3] तरच्छु[4] चित्रक[5] बहुल, इत सिव[6] स्वान अधप्प ॥
सरभं[7] भरोसैं जियत सब, अब दृग खुल्लहु[8] अप्प ॥ १७ ॥
रमनीके[9] सुनि बैंच रुचिर, ऐंड[11] गुंमर अलसात ॥
सिंह कह्यो जगि सिंहनी, होवन देहु प्रभात ॥ १८ ॥
होत होत पह बत्त हुव, कुकवाकुन[12] ध्वनि[13] कान ॥
उठ्यो तजि गलबाँह अब, चंड सरभ[14] चहुवान ॥ १६ ॥
इत रानिय बज्जत सुनैं, गैरुत[16] गिद्धनिन गैन[15] ॥
खुल्ली अब देर न वहिनि, चित तुम रक्खहु चैन ॥ २० ॥
दैनहार गज कालिकन, गूंद[18] पलन अब गाह ॥
तिहिं मम कंतहिं नैंक तुम, सज्जन देहु सनाह ॥ २१ ॥
वीरनके बहुविधि बपा[19], लाभ जथारुचि लेहु ॥
असिमुट्ठि रु हयपिठ्ठि अब, पतिकौं पावन देहु ॥ २२ ॥

और २हे सिंह १कुंभस्थल रूपी सांण पर डाढों को घिस कर तीखी करो॥१६॥वृक ३ भेड़िये (ल्याळी) ४अदयेसरे (बघेरे) अर्थात् छोटे सिंह ५चीते ६गीदड़, कुत्ते भूखे हैं और ये सब ७केसरीसिंह (बबरी नाहर) के भरोसे पर जीवित रहते हैं इसकारण अब ८ आप नेत्र खोलो ॥ १७ ॥ ९ प्यारी (स्त्री) के ऐसे रुचिकारक १० वचन सुनकर ११ ऐंड और घमंड में आलस्य करते हुए (यहां ऐंड और गुमर ये दोनों घमंड वाची पर्याय शब्द हैं जो अत्यन्त घमंड दिखाने को एकार्थ वाची दो शब्दों का प्रयोग किया है जो काव्यों की शैली है कि जिसकी अधिकता दिखानी होवे वहां एकार्थवाची दो शब्द देते हैं और व्याकरण का भी यही मत है कि 'वीप्सायां द्वे' वीप्सा में एकार्थवाची दो शब्द होते हैं यथा

॥ श्लोकः ॥

शैले शैले न माणिक्यं, मौक्तिकं न गजे गजे॥
देशे देशे न विद्वांसश्चन्दनं न वने वने ॥ १ ॥)

सिंह ने कहा कि हे सिंहनी प्रभात होने दे ॥ १८ ॥ १२ मुर्गों के बोलने का १३ शब्द हुआ १४ चहुवाण (उम्मेदसिंह) रूपी भयंकर सिंह उठा ॥ १६ ॥ रानी ने १६ आकाश में गीधनियों के १५ पंख बजते हुए सुने १७ चरबी (मींजी) और मांस को १८ मधकर भोजन के अर्थ कालिकाओं को हाथी देनेवाले मेरे पति को कवच पहनने दे ॥ २१ ॥ १९ चरबी का ॥ २२ ॥

इम रानिय इत गिद्धनिन, अक्खयो विहित बिसास ॥
इत कर ऐंची मुच्छ नृप, पंगि[२] रसबीर प्रकास ॥ २३ ॥

॥ षट्पात् ॥

गह्त मुच्छ चहुवान फाँक दारिम भुव[३] फट्टहिं ॥
भुव फट्टत अति भार अतल वितलादि उलट्टहिं ॥
अतल आदि उलटंत पानं कच्छप अहि छोरहिं ॥
पान तजत पाताल वारि उच्छलि जग बोरहिं[६] ॥
जल तलं उफान बुड्डत जगत भग्गहिं लोक प्रपंच भुव ॥
प्रकटहिं कटाह भग्गत प्रलय मगहि मुच्छ बुधसिंह सुव२४

॥ निशाणी ॥

कान भनक तबतें परी चढि[१०] कुंम्भ चलाया ॥
तबतें[११] संभर तंडि[१२] कैं सिर [१३]अंभ लगाया ॥
[१४]लाह जरूरी लग्गिकैं संध्या क्रम लाया ॥
[१५]सावित्री जप इक्क सहँस१००० रस भक्ति रचाया ॥ २५ ॥
नित्य निवेरयो प्रातको धन बिप्र[१६] धपाया ॥
सेनासौं रन सज्जकौं आदेस[१७] लगाया ॥
सोर नकीबाँ संकुल[१८] चहुँओर चलाया ॥
फट्टे[१९] कग्गर देसमैं फिरि दूत फिरांया[२०] ॥ २६ ॥

१ उचित विश्वास २ वीर रस में प्राप्त हो (भीज) कर॥२३॥अब यहां कवि उत्प्रेक्षा करते हैं कि उम्मेदसिंह के मूँछ ग्रहण करते ही दाड़िम की फाँक के समान ३ भूमि फटेगी और भूमि के फटने से ४ अतल वितल आदि नीचे के लोक उलटेंगे उनके उलट- ने से शेषनाग और कमठ पराक्रम छोड़ेंगे जिससे पाताल से ५ जल उछल कर ६ संसार को डुबोवेगा ७ नीचे का जल बढने से संसार डूबकर ८ भूमि की लोक रचना मिटजावेगी ९ ब्रह्मांड के नाश होते ही प्रलय होवेगा इस कारण हे बुधसिंह के पुत्र मूँछ को मत पकड़ो ॥ २४ ॥ १० कछवाहा ११ उम्मेदसिंह ने १२ गर्जना करके १३ आकाश में मस्तक लगाया १४ लाभ १५ गायत्री के ॥ २५ ॥ १६ ब्राह्मणों को १७ हुकम दिया १८ शब्द भरा १९ पत्र बंटे २० दूतों ने फिरकर उन पत्रों को फिराये ॥ २६ ॥

झंडे बाहिर गड्डिकैं भुजदंड *झुकाया ॥
†फूल झराया सानपैं असि बाढ चिराया ॥
सिल्लहखानाँ खुल्लिकैं बर हेति बढाया
टोप बकत्तर ओप के दस्तान दिपाया ॥ २७ ॥
‡केतौं §छादन कुंकुमी रन मोद रँगाया ॥
केतौं अच्छरि चाहिकैं सिर मोर बनाया ॥
त्रंब त्रहक्के ‖कल्लरे बर बंब बजाया ॥
सहनाइन लग्गी ललक सिंधू[1] सुनवाया ॥ २८ ॥
हड्डोती[2] हाजरि भई कटिबंध[3] कसाया ॥
हूरों[4] सूरों सत्थही[5] वर साज बनाया ॥
यौं[6] जावक लग्गे चरन यौं लंगर लाया ॥
यौं नेउर पग झंकुरे[7] यौं भक्कुर्न[8] आया ॥ २९ ॥
यौं अहों[9]क उल्लसे यौं दंसं[10] दिपाया ॥
यौं आरूढ़[11] बिमान के यौं बाजि[12] मँगाया ॥
यौं रागन[13] पाया प्रमुद[14] यौं सिंधुन[15] छाया ॥
यौं कोनन[16] लाया करन यौं मुँठि[17] मिलाया ॥ ३० ॥

---

*खड़े किये (डिंगल भाषा में अधिक ऊँचे करने को झुकाना कहते हैं) †तरवार के धार चीरते समय अग्निकण उड़ै उसको फूल कहते हैं सिलहखानह खोलकर श्रेष्ठ शस्त्र बांटे॥२७॥ ‡कितनों के §केसर के रंग के वस्त्र ‖युद्ध के तासे बजे १वीर रस को बढानेवाला सिंधवी राग सुनाया ॥ २८॥ २यहां अजहत् स्वार्था लक्षणा से हाडोती के वीर जानना चाहिये ३ कमरबंधा बांधा ४ अप्सराओं और वीरों ने साथ ही ५ श्रेष्ठ साज बनाये (यहाँ 'यों' शब्द से इधर अर्थ जानो) ६ इधर हूरों के चरणों में जावक लगाया और इधर वीरों ने पैरों में युद्ध से नहीं भागने की प्रतिज्ञा के लंगर पहिने इधर अप्सराओं के पैरों में नेवर७लगे (बजे) और इधर वीरों के ८ जंघात्राण लगा (यहां प्रथम अप्सरा और पीछे वीरों का संजना यथाक्रम से जानना चाहिये) ॥ २९ ॥ इधर ६ लहँगा (घागरा) और इधर १० कवच शोभित हुए ११ इधर विमान मंगवाये और इधर १२ घोड़े मंगवाये १३ रागों से १४ हर्ष पाया १५ सिंधवी राग (बड़ा राग) १६ हाथों में सितार बजाने की नक्खियें (मजराफ) लगाई १७ खड्ग की मूंठ ॥ ३० ॥

यौं बीणा गन अग्गहे[1] यौं तेग तुलाया ॥
यौं रसना[2] आरोप यौं कटिबंध कसाया ॥
यौं कुंकुम[3] कुच लग्गि यौं दृढ[4] छत्तिन छाया ॥
यौं कंचुक मंडे कुचन यौं बच्छ[5] बनाया ॥ ३१ ॥
यौं बलयावलि[6] हत्थ यौं दसतान दिपाया ॥
यौं मद्दल[7] भुजबंधसौं[8] सप सज्ज सुहाया ॥
हार दवाली[9] दोउँ२घाँ[10] उर अंतर आया ॥
यौं मुख बीरी आप यौं गंगोदं[11] अचाया ॥ ३२ ॥
यौं मंडे नथ नक्क[12] यौं धक्कि कोप धमाया ॥
यौं दृग रेखा अंजनी[13] रंजगुन[14] यौं छाया ॥
पिंजूसन[15] ताटंक[16] यौं यौं कुंडल पाया ॥
सोभा सिर सीमंत[17] यौं यौं टोप लगाया ॥ ३३ ॥
यौं कबरीन[18] प्रसून यौं तुररेन झुकाया ॥
यौं लग्गे मन मोहं[19] यौं मन मोहं[20] बिहाया ॥
नेउर पक्खर नाद त्यौं बिबिं[21] २ ओर बढाया ॥
तिक्ख॰ कंडच्छा[22] सज्ज यौं सित[23] भल्ल सजाया ॥ ३४ ॥

---

१ आग्रहे (ग्रहण किये) २ कटिमेखला (कर्धनी) लगाई ३ कुचों पर केसर लगाई ४ छातियों पर कवच छाये ५ अप्सराओं ने कुचों पर कंचुकी (कांचली) रची और इधर वीरों ने वक्ष (छाती) का बनाव किया ॥३१॥ ६ चूड़ियों (कंकणों) की पंक्ति ७ मादलिया (स्त्रियों के भुजों का भूषण विशेष) ८ हाथों में भुजबंध सुहाये (यहां सामान्य हाथ शब्द के कहने में भुजबंध के योग से भुज जानो) ९ पदलड़ा १० दोनों ओर छाती पर आये अर्थात् अप्सराओं की छाती पर पदले लगे ११ गंगाजल पिया ॥ ३२ ॥ १२ नासिका में, इधर वीरों ने क्रोध युक्त होकर श्वास प्रश्वास सेना के फुलाये १३ काजल की १४ रजोगुन १५ टो-टांचांदी १६ कर्णफूल ये दोनों स्त्रियों के कानों में भूषण हैं इधर वीरों ने कुंडल पहने १७ माथा गुथवाकर (केशपाश कराकर) शिर शोभा लगाई और वीरों ने टोप लगाये ॥ ३३ ॥ १८ केसपास में फूल लगाके १९ इधर अप्सराओं ने वीरों को वरने का मन में मोह (स्नेह) लगाया २० और इधर वीरों ने घर से स्नेह छोड़ा २१ दोनों ओर २२ तीखे कटाक्ष २३ तीखे भाले ॥ ३४ ॥

यों खोड़स१६ शृंगार यों *उपचार विधाया ॥
यों मन छाया मैंन यों रनपैं †उफनाया ॥
यों छक्क पाया उरवसी यों नृप[1] उमगाया ॥
यों रंभा हुलसी इतैं बल पिथ्थल[2] पाया ॥ ३५ ॥
यों मन फुल्ली मैंनका यों अमरैं[3] उम्हाया ॥
यों सु घृताची यों मयाग[4] सुराग[5] रचाया ॥
एत्थ सुकेसी सज्ज यों मेरजाद मुदायाँ[6] ॥
यों बरघोसा नच्चि यों खग तोकँ[7] तुकाया ॥ ३६ ॥
यौं हरखादत[8] अच्छरिन बल[9] भूप बनाया[10] ॥
गज बँडे इंभपाल[11] गन बिरुदार मिलाया ॥
अंग गरट्ठी मंजिकैं रन रंग लगाया ॥
थप्पे कुंभ सुबोल दै कुरुबिंद[12] चढाया ॥ ३७ ॥
मंडि कलम जंगालकी हरिताल मिलाया ॥
जंग हवद्दे डारिकैं गुड[13] साज सजाया ॥
बंधि बैरत्तों[14] सिर सिरी[15] धरि धूप धुंमाया[16] ॥
मोदक[17] गंज मिलायकैं जल देगन पाया ॥ ३८ ॥
इभ चाकर मांकर[18] उछ्छट उडि आसन आया ॥
वौरी[19] बाहिर लैनकों आलान[20] छुराया ॥
करि अग्गैं करिनीनकों[21] रचि डौंक[22] डगाया ॥

---

*सोलह प्रकार से देवपूजन किया †इधर अप्सराओं के मन में कामदेव छाया और ‡ इधर वीर युद्ध पर चढे १उम्मेदसिंह २ पृथ्वीसिंह ॥ ३५ ॥ ३ अमरसिंह ४श्रेष्ठ प्रीति ५ मुरजादसिंह ६ दर्पित हुआ ७ तोकसिंह ने ॥ ३६ ॥ ८ हर्षित (प्रसन्न) ९ सेना १०महावतों के समूह ने ११स्तुति करके १२ श्रेष्ठ वचन कहकर हिंगुलू लगाया ॥ ३७ ॥ १३ हाथी की पाखर १४ रस्सों से १५मस्तक का भूपण बांधकर १६ धूप देकर धूम युक्त किया १७ लड्डुओं के ॥ ३८ ॥ १८ हाथियों के चाकर बंदरों की भांति कूदकर १९ ठाण के बाहर लेने को २० खंभों से खोले २१ हथनियों को आगे करके २२ छोटे धावों से क्रोध दिखा कर डिगाये

यों[1] बुंदीस अनीकमें[2] गजराज चलाया ॥ ३९ ॥
मिलि हयपालक[3] मंदुरन[4] तिम हयन तुकाया ॥
खेह गरद्दी काढिकैं दुति देह दिपाया ॥
कविका[5] देत कुरंग[6] गति छविकी[7] छक छाया ॥
रविको[8] मन रिझवायकैं पविको[9] जव पाया ॥ ४० ॥
मीनन पलट मिटायकैं जर जीनन भाया ॥
खीनं[10] न गति पीन न[11] पैसम जँव[12] हीन न जाया ॥
पक्खर अंग पसारिकैं कस तंग कसाया ॥
राह परोंके[13] लाहकों गजगाँह[14] झुकाया ॥ ४१ ॥
वाह चहूँ घाँ[15] उच्चरी गति थाह न गाया ॥
दीप कनोती चाँप[16] दुति खंधों बलखाया ॥
काल ठपालैं[17] गति जालके ललटिपाल लगाया ॥
कट्टोरे खुर तारके[18] खुरतार[19] सुहाया ॥ ४२ ॥
दसमी१० के द्विजराजतैं[20] जिम राहु जुराया ॥
हाटकके गल हल्लरे झल्लरि झहनाया ॥
छोरि दुबग्गों मोरिकैं करडोरि झिलाया ॥
नक्खी पायन नेउरी मग सोर मचाया ॥ ४३ ॥
वाजी ए नृप बंटिकैं सब वीर सजाया ॥
अप्प चढे हय हंजपैं[21] करकंज[22] तुकाया ॥

१इसप्रकार२सेना में ॥३९॥३घोड़ों के चाकरों ने ४हयशालाओं में५लगाम देते ही ६ हरिण की भांति७शोभा के८सूर्य का मन प्रसन्न करके९वज्र का वेग ॥ ४० ॥ १०जिन की गति क्षीण नहीं है११शरीर के पाल मोटे नहीं हैं १२जिनका वेग हीन नहीं है ऐसे (पवन) के पुत्र१३पंखों का लाभ लेने के राह से १४ गजगाव लगाये ॥ ४१ ॥१५चौतरफ दीपक के समान कनोती और १६ धनुष की टेढ के समान झुका हुआ कंधा१७काले सर्पों के समान अयाल १८ कटोरे के समान खुरों पर चांदी के१९खुरताल शोभित हुए ॥ ४२ ॥२०चन्द्रमा से ॥ ४३ ॥ २१ हंज नामक घोड़े पर उम्मेदसिंह चढे २२ कमल रूपी हाथों में ॥ ४४ ॥

नाथाउत पित्थल अरथ मृगडान मिलाया ॥
अमरसिंह रट्ठोरकों नटराज चढाया ॥ ४४ ॥
सूर भवानीसिंहकों दिलपार दिवाया ॥
[1]प्रहरनकाज प्रयागकों खगराज खुलाया ॥
तोक महासिंहोलकों झपटैत झिलाया ॥
मुहकमहर मरजादकों जयनाद दिखाया ॥ ४५ ॥
इत्यादिक हय बंटिकैं नृप बीर बढाया ॥
सोदरजुत सुंद्रांत[2]कों कोटा पहुँचाया ॥
तुंडारे दल ढाहिवे बल अप्प बनाया ॥
बेरबेर तुग्गस[3] बंधिकैं कमनैत कसाया ॥ ४६ ॥
बेरबेर खग्ग बँलग्ग[4] कसि कर[5] धूँप धुनाया ॥
बेरबेर चाप बजायकैं सिर अंभ[6] लगाया ॥
केक तुपकों धारिकैं अरातु मारि उडाया ॥
सेल बरच्छी साजिकैं अच्छी गति आया ॥ ४७ ॥
अच्छे बाँजि[7] उडायकैं मन आजि[8] मिलाया ॥
बैंडाराग[9] अलापिया औंडा छक छाया ॥
बंदीजन[10] रसबीरमैं भट छाक छकाया ॥
ज्यों गिरिनारी गानपैं सिर नाग उठाया ॥ ४८ ॥
कै जुब्बन वय व्याहपैं नायक हरखाया ॥
जानि मितंपच[11] रंककों नव९ही निधि पाया ॥
[12]अंक उदैगिरि आत कै बारिज[13] विकसाया ॥
पिक्खि मतंगज थूलैं[14] कै सद्दूल चलाया ॥ ४९ ॥

१ प्रहार करने (शत्रुओं को मारने) के अर्थ ॥ ४५ ॥ २जनाने को ३तरकस (भाथे) ॥४६॥ ४सुन्दर अथवा टेढे खड्ग कसकर ५हाथ में खड्ग लिया ६आकाश में मस्तक लगाया॥४७॥ ७घोड़े ८युद्ध में ९कालरा राग (सिंधवी राग) १०भाट लोगों ने ॥४८॥ ११कृपण दरिद्री को १२सूर्य के उदय होने पर मानों १३कमल फूले १४मानों हाथियों

उत्तरके पवमानतैं घन जानि घुराया ॥
जानि दिवाकरैं जेठमैं बहु ओज बढाया ॥
इक्खत जिम हिमकर उदै अंबुधि उफनाया ॥
सोलह१६ बेर कि सुक्रमैं तपनीयँ तपाया ॥ ५० ॥
पावक मारुत पायकैं हेतिनँ हुलसाया ॥
कामंदक मग लग्गिकैं बल भूप बढाया ॥
ज्यों करिणीके जालपैं सुंडाल सुहाया ॥
अंधक अग्गैं आनिकैं सिव जानि सजाया ॥ ५१ ॥
गोवर्द्धन कर लैनकों जिम कँह्न कसाया ॥
जानि जटासुर जंगपैं भुज भीमँ बजाया ॥
कै गजकेतनँ कदनकों कपिकेतु कुपाया ॥
ज्यों लंघन जलरासिकों हँनुमा हुलसाया ॥ ५२ ॥
कै रावन बध काजपैं रघुराज रिसाया ॥
कै बाहरैं प्रह्लादकी नरनाहर आया ॥
जिमँ एका१इक१ बिंदुतैं दस १० गुन दरसाया ॥
बढि ऐसैं रसवीरमैं चढि भूप चलाया ॥ ५३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशौ संभर

का समूह देखकर सिंह चला॥४९॥ १ उत्तर दिशा के पवन से २ सूर्य ने ३ प्रताप ४ चन्द्रमा को उदय हुआ देखकर ५ समुद्र बढा ६ अग्नि में ७ सुवर्ण को (सुवर्ण को सोलह बार तपाने से कुंदन होता है) ॥ ५० ॥ ८ अग्नि ९ पवन को पाकर १० ज्वालाओं से प्रसन्न हुआ ११ कामंदक मुनि की कीहुई नीति के मार्ग लगकर राजा ने सेना बढाई १२ हथनियों के समूह पर हाथी शोभित हुआ १३ अंधक नाम असुर को आगे लेकर ॥ ५१ ॥ १४ गोवर्धन पर्वत को हाथ में लेने के लिये १५ कृष्ण सज्जित हुए १६ भीमसेन ने १७ कर्ण का नाश करने को १८ अर्जुन क्रोधित हुआ १९ समुद्र का उल्लंघन करने को २० हनुमान उत्साहित हुआ॥५२॥ २१ सहाय २२ नृसिंह २३ जिस प्रकार एक के अंक पर एक बिंदी लगने से दश गुना होजाता है ऐसे ॥ ५३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, चहुवाणों के राजा

नैरेशसज्जीभवनवाहिनीवीरवाजिवारणवर्णनं षोडशो १६ मयूखः ॥ १६ ॥ ॥ २९७ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

कुंम्भ[1] कटक जबही सुन्यौं, हठि हंकत हम्मगीर ॥
आं[2] तबही पित्थल्ल अमर, भट आये नृप[3] भीर ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

जब कूरम जयसिंह दई बुंदिय दलेल कँहँ ॥
तबहि नगर निम्मान छोरि पित्थल रानाँ[4] पँहँ ॥
उदयनैर अति[5] धर्म गयो निज बल नाथाउत ॥
सुपहु रान संग्राम जाहि रक्ख्यो सनेह जुत ॥
उमराव स्वीय पंद्रह १५ अधर[6] पालसोलि उप्पर प्रथित[7] ॥
बैठारि उक्त आदर बिरचि हरख्यो नृप चालुक्य[8] हित ॥ २ ॥
इक्क समय चालुक्य निडर पित्थल्ल नाथाउत ॥
रहत सभाबिच रान जप्यो बुंदहिं[9] अधर्म जुत ॥
स्व[10] प्रभु निंदा सुनत भीम उठ्ठ्यो पित्थल भट ॥
पटा सहँस पंचास५००००छोरि हंक्यो[11] बंछित बट ॥
द्रुत[12] रान पहुँचे नैंति[13] जुत कहिय माफ करहु अपराध मम ।
मन्नी न तदपि पित्थल सुमति अक्खी तुम अकुसल अधम ३

का सज्जित होना। सेना के वीर और घोड़े और हाथियों के वर्णन का सोलह-वां १६ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ सित्यानवै २९७ मयूख हुए ॥

१ कछवाह की सेना २ शीघ्र ३ उम्मेदसिंह की सहाय ॥ १ ॥ ४ राणा के पास (उदयपुर) ५ अत्यंत धर्मवाला ६ अपने पन्द्रह उमरावों के नीचे और पारसोलि के ऊपर (इस समय सब से नीचे की बैठक आसींद के रावत की है परन्तु उस समय आसींद का ठिकाना नहीं बन्धा था तब से नीचे की बैठक पारसोली के रावकी थी) ७ प्रसिद्ध ८ सोलंखी को हित सहित रक्खा ॥ २ ॥ ९ बूंदीपति उम्मेदसिंह को १० अपने स्वामी की ११ चाहे हुए मार्ग से चला १२ शीघ्र १३ नम्रता

*दुजनसल्ल कोटेस सुनत यह सचिव पठायो ॥
लिखि कग्गर अति ललित बहुत सतकार बढायो ॥
लिखी नगर निम्मान नाह इतहीं तुमगे घर ॥
आवहु मिलहिं सु अन्न बंटि खेहैं बीरनबर ॥
पित्थल सु बंचि उत्तर लिख्यो क्यों तुम हठ मंडत घनैं ॥
मम जनक हन्यों आटोनि रन बलि बुंदिप बैरिय बनैं ॥
अग्ग नगर आटोनि भीम सालम जब जुट्टिय ॥
चालुक देवीसिंह तबहि असि धारन तुट्टिय ॥
कोटापति पुनि कितव बैर बुंदिय पर लायउ ॥
दुवर कारन दल बीच मंडि पित्थल पहुँचायउ ॥
सुनि दुजनसल्ल उत्तर लिखिय जानहु नहिं मम दोख ॥
मम जनक हन्यों तुमरो जनक बुंदियसन पुनि बैर किय ॥

॥ दोहा ॥

नहिं रुचि तो आवहु नहिन, परिखद बिच मम पास ॥
रहिये घर लहिये रुचिर, पटा सहँस पंचास ५०००० ॥ ६ ॥
इत्यादिक उत्तर लिखि रु, दुजनसल्लहित दिट्ठि ॥
सचिव भेजि निज सास करि, बुल्ल्यो पित्थल निट्ठि ॥ ७ ॥
अमरसिंह रट्ठोर इत, रुट्टल राम कुलीन ॥
कछवाहन बरवाड़ लिय, निकस्यो तब छिति छीन ॥ ८ ॥
निज सुत पंचक ५ जुत निडर, खोजन अनुग समेत ॥

सहित ॥ ३ ॥ * कोटा के पति दुर्जनशाल ने † मनोहर ‡ है रमाशा के पति १ मेरे पिता को आटोण ग्राम के युद्ध में मारा था और ४ वैर किया था ॥ ४ ॥ २ कोटा का महाराव भीमसिंह और सालमसिंह छली ४ पत्र में ५ मेरे पिता ने तुम्हारे पिता को मारा था और बुंदी से भी उन्होंने किया था ॥ ५ ॥ ६ सभा में ॥ ६ ॥ ७ स्नेह दिखाकर अथवा की दृष्टि से ८ पृथ्वीसिंह को बुलाया ॥ ७ ॥ ९ नाथसिंह राठौर के वाला १० भूमि छिनजाने से ॥ ८ ॥ ११ सेवकों सहित ॥ ९ ॥

सहि बिपत्ति कोटा सहर, आयो नीति *उपेत ॥ ९ ॥
पटा सहँस पैंतीस३५००० मित, करि हित दिय कोटेस ॥
इम रक्खे पित्थल अमर, दुव२ छल्ल †तिमिर दिनेस ॥१०॥
ते भट दुव२ बुंदीसपर, कूरम ‡दल सुनि आत ॥
तजि कोटापतिके पटा, आये रन उमडात ॥ ११ ॥
जोधपुर पै[1] गजसिंह सुव[2], कुमर [3]अमर रट्ठोर ॥
मरन आगरा मंड्यो, तोरि साहको तोर[4] ॥ १२ ॥
अमर भीर[5] आये तबहि, बल्लू१ रु भाऊ२ बीर ॥
पातसाहके तजि पटा, हठि जुज्झन हमगीर ॥ १३ ॥
तिमहि रान अमरेस सुत, [6]करन अनुज भट भीम[7] ॥
रक्खि खुरम सरनैं रच्यो, संगर[8] कासी सीम ॥ १४ ॥
सगताउत [9]खान सु सुनत, छिपै[10] उदैपुर छोरि ॥
पहुँच्यो कासी भीम[11] पहँ, मरयो साह दल मोरि ॥ १५ ॥
इमहिं बीर पित्थल अमर, कोटा सैन[12] करि कुच्च ॥
[13]समर बेर बुंदीससों, आनि मिले छक उच्च ॥ १६ ॥
अमरसिंह रट्ठोरकी, पतनीकै गँद[14] पूर ॥
दुक्ख हुतो बहु दिननतैं, संक्यो[15] तँदपि न सूर ॥ १७ ॥
उतरत चम्मलि [16]आपगा, प्रिया भई गतप्रान ॥
सोहु अमर रट्ठोर सुनि, न मुरयो जंग निदान[17] ॥ १८ ॥
अभयसिंह जेठो तनय, पच्छो गेह पठाय ॥
अप्प च्यारि सुत जुत अडर, अमर स बुंदिय आय ॥ १९ ॥
सुहुकमहर त्योंहीं मरन, मेटन [18]अघ मरजाद ॥

---

*नीति सहित॥९॥ †छल रूपी अन्धेरे के सूर्य॥१०॥ ‡सेना॥११॥ १ पति २ गजसिंह का पुत्र ३ अमरसिंह ४ बादशाह के प्रताप को तोड़कर ॥ १२ ॥ ५ सहाय॥ १३ ॥ ६ करणसिंह का छोटा भाई ७ भीमसिंह ८ युद्ध ॥ १४ ॥ ९ मानसिंह १० शीघ्र ११ भीमसिंह के पास ॥ १५ ॥ १२ से १३ युद्ध के समय ॥ १६ ॥ १४ रोग १५ तोभी ॥ १७ ॥ १६ नदी १७ युद्ध के कारण ॥ १८ ॥ १९ ॥ १८ पाप

सूर तुपक्क सजि पंचसत५००, आयो *नद्दन नाद ॥ २० ॥
सब भट हिय लाये सुपहु, बहु अहारि बुंदीस ॥
सहित प्रीत बंटी सिलह, सज्ज्यो जैपुर सीस ॥ २१ ॥
नाथाउत पित्थल निडर, सज्यो न वपु †सन्नाह ॥
अक्खी इच्छहु जो ‡जिपन, लेहु वहै यह लाह ॥ २२ ॥
सत बारह१२००इम सेन सजि, सादी पैदग समेत ॥
उडह³निके तट अमरपुर, खज्जि चिंत्यो रन खेत ॥ २३ ॥
सजि बुंदिप उत्तर तरफ, हंक्यो नृप हुसियार ॥
पहुमी छाई पक्खरन, सेलन गगन प्रसार ॥ २४ ॥
कोस तीन३ उप्पर कटक्क, मिले उभय२ रन मोद ॥
उत्तर दक्खिनके अरे, पाउस जानि पयोद ॥ २५ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशौ बुन्दीन्द्रसहायार्थचालुक्यपृथ्वीसिंहकबंधाऽमरसिंहहड्डमर्य्यादसिंहाऽऽगमनसेनाऽभिनिर्याणं सप्तदशो १७ मयूखः ॥ १७ ॥ ॥२९८॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ मुक्तादाम ॥

उयो रसवीर छयो नृप अंग, चल्यो अब सम्मुह लै चतुरंग ॥
चल्यो भट पिथ्थल संकित सेस, चल्यो सुत चप्परि४नतैं अमरेस ॥१॥
चल्यो मेरजाद नमावत नाग, चले भट सोदर तोग१ प्रयाग२ ॥

---

* गर्जना करता हुआ ॥ २० ॥ २१ ॥ † शरीर में कवच नहीं पहना ‡ जो जीतना चाहो सो कवच पहनने का लाभ लो ॥ २२ ॥ १ सवार २ पैदलों सहित ३ नदी का नाम है ४ क्रोध करके ॥ २३ ॥ ५ भालों के फैलाव से आकाश छाया ॥ २४ ॥ ६ सेना ७ वर्षा समय में ८ मेघ ॥ २५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, बुन्दी के इन्द्र की सहाय के अर्थ सोलंखी पृथ्वीसिंह, राठोड़ अमरसिंह और हाडा मरजादसिंह का आना और सेना के सम्मुख जाने का सत्रहवां १७ मयूख समाप्त हुआ और आदि से दोसौ अठानवे २९८ मयूख हुए ॥

९ वीर रस उदय होकर १० पृथ्वीसिंह ११ अमरसिंह ॥ १ ॥ १२ मरजादसिंह

भवानियसिंह चल्यो भट भूप[1], खुमान[2] चल्यो रन रावन रूप ॥२॥
चल्यो हरदाउत देविसुगेस[3], चल्यो सगताउत त्यों अचलेस ॥
चले भट भारत अर्जुन चंड, उदैहरि[4] चालुक ओज अखंड ॥ ३ ॥
चल्यो नर नाहर[5] नाहर बीर, चल्यो नवलेस हठी हमगीर ॥
चल्यो भट कर्ण महारन चाहि, अजीत चल्यो कछवाह उमाहि ४
चले इन्ह आदि बडे बर बीर, धपावन सत्रुन खग्गन धीर ॥
चल्यो इम बुंदिय भूपति चक्क[6], बितंडन[7] पिट्ठि खुली बहरक्क[8] ॥ ५ ॥
अडंबर[9] भो रज अंबर ओघ[10], मच्यो बढि ध्वांत[11] बन्यों रवि मोघ[12] ॥
भयो निसिचारन[13] आनँद भुल्लि, डरे डिगि चक्कि[14] चक्कहु डुल्लि ॥६॥
चले इत बारहसैं १२०० रन रीस, पिले उत गज्जि हजार पचीस २५००० ॥
तज्यो[15] भव[16] मोह भंज्यो[17] कर तेग, उठे भट राजि[18] बाजिय बेग ।७॥
धमंधमि भुम्मि धुजी हय धार, घमंघमि घुग्घर पक्खर भार ॥
डमंडमि डाहल डिंडिम डक्क, ठमंठमि सिंधुर[20] घंट ठमक्क ॥ ८ ॥
नरायन[21] पिक्खिय बुंदिय नाह[22], कह्यो जुरि पाहि गह्यो कछवाह ॥
इतो कहतैं दुहुँघाँ उमराव, मिले ति[23] मिले पय[24] सक्कर भाव॥ ९ ॥

१राजा का उमराव २खुमाणसिंह॥२॥ ३ देवीसिंह ४ उदयसिंह ॥ ३ ॥ ५ मनुष्यों मे सिंह रूप, नाहरसिंह ६ चक्र (सेना) ७ हाथियों की पीठ पर ८ ध्वजा खुली ॥ ५ ॥ ९ आकाश में १०रज का समूह छागया जिससे ११ अंधेरा होकर सूर्य १२ ढकगया और उस अंधेरे से भूलकर १३निशाचरों को आनंद हुआ १४ चकवा चकवी भूलकर डर और पास पासके हटगये ॥ ६ ॥ १५ ईश्वरीसिंह ने भजे १६ संसार से मोह छोडा और हाथों में१७खड्ग लिये १८ वीरों की और घोडों की पक्तियें वेग के साथ चलीं ॥ ७ ॥ १९ घोडों की गति से भूमि धूजी, डाहल आदि वैताल और योगिनियें आदि के वाद्य बजे२०हस्तियों पर घंट बजे (यहां ठमंठमि घमंघमि आदि अनुकरण के शब्द हैं जिनकी व्याख्या करना अनावश्यक है किन्तु ये शब्द ही व्याख्या है) ॥ ८ ॥ २१ नारायणदास खत्री ने २२ बुंदी के पति (उम्मेदसिंह) को देखते ही कहा कि २३ वे दोनों ओर के उमराव जैसे २४ दूध और सक्कर मिलै तिस रीति से मिलगये ॥ ९ ॥

वज्यो असि हड्डन अड्डन बाढ, गंज्यो भय भीरुन बीरन गाढ ॥
दपट्टत लक्खन भक्खन दाय, झपट्टत लक्खनकों झमकाय ।१०।
लकक्कि छुट्टिय वान बिथार, धकद्धकि घायन सोनित धार ॥
झगज्झगि आयुध औं झगमग्गि, धगद्धगि उट्ठिय खग्गन अग्गि ११
कटक्कटि कंकट बंकट बाढ, खटक्खटि खावन डाकिनि डाढ ॥
चटच्चटि उच्छटि हड्डन संधि, गटग्गटि गिद्ध बपा चय बंधि ।१२।
खनक्खनि टोपनपैं खुरतार, भनब्भनि गोलिन ठेशान भयार ॥
झपज्झपि सेनन पच्छैति झुंड, लपल्लपि लुट्टत सिंधुर सुंड ॥१३॥
झमंझमि मार दुधारन झाट, घमंघमि सेलन ठेलन घाट ॥
लसैं असि कुंभन फाँक चलाव, बढे रदैं सब्बुवैं तति बनाव ।१४।
भुजांतर होत कटारन भिन्न, खिचैं परि पंजर खंजर खिन्न ॥
कढैं खर तोमर दंसन दारि, फबै पृथुरोम कि जालिय फारि ।१५।
चलैं चमकैं असि ओज अपार, छपाकर बाल कला छबिदार ॥
लटक्कहिं लुत्थिनपैं लगि लुत्थि, उछट्टहिं कट्टहिं छुत्थिन छुत्थि १६

हड्डियों के ऊपर तरवारों का आडा बाढ बजा और कायरों पर भय और वीरों पर गाढ ने १गर्जना की, खाने के लिये लाखों दौड़ते हैं और २घोड़ों को झमका कर दौड़ाते हैं ॥ १० ॥ ३ कांपते हुए बाणों का फैलाव छूटा और घावों से धक धक रुधिर बहने लगा. ४ शस्त्रों की कान्ति चमकने लगी और तरवारों की ५ अग्नि प्रज्वलित होकर उठी ७ तरवारों के बाढ से ६ कवच कटकट करने लगे, खाने के लिये डाकनियों की डाढें खटकने लगीं और हड्डियों की जोड़ें खुलने लगीं ८ चरबी का समूह जोड़कर गीधनियें खाने लगीं ॥ ११ ॥ १२ ॥ ९ गोलियों का भयंकर शब्द होने लगा १० सेन (शिकारी) पक्षियों के ११ पंखों के समूह झप झप करने लगे और हाथियों की सूँडें लप लप करने लगीं ॥१३॥ दुधारे खड्गों की मार मची और भालों के धकेलने से घाव हुए १२ हाथियों के कुंभस्थलों की चीरें करती तरवारों का चलना शोभा देता है और दांत से १४साबुन कटे जैसे १३दांत कटते हैं ॥१४॥ कटारों से १५छातियें फटती हैं और खंजरों से चीरा हुए अस्थिपंजर खिचते हैं १६तीखे भाले १७कवचों को फोड़कर निकलते हैं सो मानों जाल को चीरकर १८मच्छी शोभा देती है ॥१५॥ १९द्वितीया के चंद्रमा की कला को विदारण करनेवाले खड्गों का ओज चमकता है ॥१६॥

उत्तहिँ घोरनतैं भट आय, खमैं अंह जानि कबूतर खाय ॥
छुल्लक्कहिँ छिछि हव्वक्कहिँ घाय, छुटैं जलजंत्र कि जावक छाय ।१७।
चलैं टिकि जानुलैं के पयभिन्न, स्तनंधय केलि कि अंगन किन्न ॥
किते भुव लुट्टत जात अचेत, खिचैं जनु कोटिँस डैलन खेत ।१८।
परे कति ऊरध हत्थ पसारि, किधौं हरि मंदिर बंदन कारि ॥
बबक्कत के गिरि बक्कर वेस, मनौं नमि गौंत रिझात महेस ॥१९॥
अटक्कत पाय रकाबन इद्द, लटक्कत जानि अधोमुख सिद्द ॥
कटैं सिर अंभ फिरैं भ्रमकारि, कुलाल कि चक्कहिँ भंड उतारि २०
थरत्थर कातर कंप कुढार, बिना तिय ज्यो नर पास तुसार ॥
उडैं फटि पेट फदक्कत अंत, करंडनतैं कि भुजंग कढंत ॥ २१ ॥
बनैं बटके भट के रन बाद, सु ज्यौं अँटके जगदीस प्रसाद ॥
रचैं दुव २ हत्थनके असि वार, किधौं कर खत्तियँ कँठ कुठार २२

१आकाश में कबूतर२कुलांट खाये तैसे३जावक का फुँहारा चलै जैसे॥१७॥कितने ही कटे हुए५चरणोंवाले४ घुटनों के बल चलते हैं सो मानों घर के चौक में६दूध पीनेवाला बालक क्रीड़ा करता है, कितने ही अचेत होकर भूमि पर लोटते जाते हैं सो मानों खेत के८ढकलों (ढेलों) पर७चावर (लोष्टभेदन) खिचती है॥१८॥कितने ही ९ ऊंचे हाथ करके पड़े हैं सो मानों विष्णु भगवान् के मंदिर में १० नमस्कार करते हैं ११ बकरे की भांति कितने ही गिरकर अवाच्य शब्द बोलते हैं सो मानों १२ नमस्कार करके शिव को प्रसन्न करते हैं (यज्ञ विध्वंस करके दक्ष के धड़ पर बकर का मस्तक रखकर फिर जीवित किया तब दक्ष प्रजापति ने बकरे के मुख से शिव की स्तुति करके शिव को प्रसन्न किया था इस कारण अब भी लौकिक में बकरे की बोली से शिव की स्तुति करते हैं) ॥ १९ ॥ १३ नीचे लटकते हैं सो मानों १४ नीचा मुख करके सिद्ध लटकते हैं कटे हुए मस्तक १५ आकाश में १६ चक्र के आकार फिरते हैं सो मानों १८ चाक के ऊपर से १७ कुम्हार भांडा (मिट्टी का पात्र) उतारता है ॥ २० ॥ बुरी भांति कायर ऐसे कांपते हैं जैसे विना स्त्रीवाला पुरुष पौष मास की १९ ठंड में कांपता है, पेट फटकर आंतें उछलती हैं सो मानों२०पिटारों से सर्प निकलते हैं ॥ २१ ॥ युद्ध में हट करके टुकड़े टुकड़े होते हैं सो मानों जगदीश के प्रसाद का२१कलश फटता है, कितने ही दोनों हाथों से तरवार का वार करते हैं सो मानों दोनों हाथों से२२खाती२३काष्ठ पर कुठार चलाता है ॥ २२ ॥

सरैं [2]स्रुतजात छिदे उर सैंकि, [3]नैमात रजोगुनकी लहरैं कि ॥
गुटी दृग ओर कढैं दृग लै रु, किधौं [5]अलि [6]कामल [7]कोरक लै रु॥२३॥
धसैं कढि के दृग सोनित धार, बनैं पृथुरोमन बारि बिहार ॥
सिंचानक अंतहि लै नभ जात, अचानक गोत गुढी सम खात॥२४॥
दिसा बिदिसान निसानन [10] नद्द, भनैं जनु घोर बलाहक [11] भद्द ॥
तुटी लगि टोप बजैं तरवारि, मनौं हरि मंदिर झल्लरि झारि ॥२५॥
भई हलमल्ल [12] चलच्चल [13] भुम्मि, घट्यो बल नाग निसासन घुम्मि ॥
रचैं धनु सिंजिनि [15] बेग बिसाल, किधौं रन थंभत जंभत काल॥२६॥
मचैं घन लोहित फुट्टत मत्थ, हसैं लखि जुग्गिनि खप्पर हत्थ ॥
समप्पत [17] हेरि सबै गन सीस, अपूरब हार बनावत ईस ॥ २७॥
थेइत्थेइ घुम्मत डाकिनि मत्त, तम्मासन प्रेत मलंगत तत्त ॥
किते [18] रस पान पिसाच करंत, रमैं कति लोहित तुंद [19] भरंत॥२८॥
करैं कति आमिख [20] नैं अनुराग [21], बनावत के मुख मेद [22] बिभाग ॥

बरछी से छाती छिद कर २ रुधिर १ चलता है सो मानों शरीर में रजोगुण लहरें नहीं ३ समाने के कारण बाहर निकलती हैं ४ गोली नेत्रों में नेत्र निकालती है सो मानों ५ भ्रमर ६ कमल की ७ कली को लेकर लता है ॥ २३ ॥ नेत्र फटकर रुधिर की धार में ऐसे घुसते हैं जैसे ८ मच्छी बिहार जल में होवे ६ बाज पक्षी आंत लेकर आकाश में जाता है और ग (कनकौवा) के समान अचानक गोत खाता है ॥ २४ ॥ दिशा दिशा १० नगारों का शब्द होता है सो मानों भादवा के महीने में ११ मेघ का भयंकर शब्द होता है, टोप के ऊपर लगकर तूटी हुई तरवार बजती है सो नों विष्णु भगवान् के मंदिर में झालर बजती है ॥ २५ ॥ १२ अत्यन्त से अथवा बहुत लोगों के मिलकर चलने से भूमि १३ चलायमान होगई र निश्वासों से घूमकर १४ शेष नाग का बल घट गया, धनुष से खिंचकर १ प्रत्यंचा बड़ा बेग रचती है सो मानों यमराज युद्ध में खड़ा होकर १६ (जंभुहाई) लेता है ॥ २७ ॥ मस्तक फूटकर अत्यंत लोहू मचता है जिस को खकर डाकिनियें हसती हैं और शिव के सब गण मस्तक हेरकर शिव को देते हैं ॥ २७ ॥ कितने ही प्रेत १८ स्वाद लेकर रुधिर पीते हैं और कितने रुधिर से १९ पेट भरकर खेलते हैं ॥ २८ ॥ कितने ही २० मांस से २१ प्यार करते और कितने ही २२ चरबी आदिका बंट करते हैं,

करैं मृदु*कीकस जिम्मन केक, अहारत †कोशिक ग्रास अनेक २९

खरैं कति ‡घस्मर शुक्रहिं खातु, भए रन दुर्लभ सत्त[1]हि धातु ॥

रचैं सिव हास नचैं[2] भयकार, जचैं[3] जिय बुंदियको जयकार ॥३०॥

अहंग्रह तंतिन सिंधुव सद्द, मच्यो[4] रन अंगन यौं अवमद्द ॥

गहक्कहिं चक्खहिं गिद्धनि गोद, बपा लहि मंडत कंक बिनोद ।३१।

निकासत चिल्हनि चंचुन नैन, गहैं हिय सेन गहक्कत गैन ॥

किलोलहिं[5] स्यार सिवा किलकारि, चखैं पल मंडल[6] मंडलँ[7] चारि ३२

उठी रन अंगन खग्गन अग्गि, लसी अटवी नव ज्यौं दव लग्गि॥

जरैं गज[8]ढालन तालन जूह, जरैं गजसुंडि तमा[9]लन जूह ॥ ३३ ॥

कटे पय कुंभि[10] न तिंदुव[11] तत्त, जरैं गज उ[12]न्नत पब्बय जत्त ॥

बरैं हय बाल[13]धि ते[14]र्जन तंब[15], लगैं लटियाल कि दर्भ[16] कदंब ।३४।

सिखा[17] बलि सूरनकी तृ[18]न गुच्छ, मलमिंस[19] कास[20] सुडाढ्ढिय मुच्छ ॥

---

*कितने ही कोमल हड्डियों का भोजन करते हैं †अनेक घूघू निवाले खाते हैं ॥२९॥ कितने ही ‡ भक्षण शील (बहुत खाने वाले) खड़े खडे ही १ वीर्य ही खाते हैं उस युद्ध में उन घस्मरों को सातों ही धातु दुर्लभ होगई, वैद्यक के मत से वे धातुयें हैं "स्तन्यं रजश्च नारीणां काले भवति गच्छति॥ शुद्धमांसभवःस्नेहो यः सा संकीर्त्यते वसा ॥ स्वेदो दन्तास्तथा केशास्तथैवोजश्च सप्तमम् ॥" २ भयंकर रीति से नाचते हैं और जीव से बुंदी का जय होना ३ मांगते हैं ॥ ३० ॥ ४ इसप्रकार का पीड़ाकारी युद्ध मचा॥३१॥५गीदड़ और गीदड़णियें किल्लोलें करती हैं ६ कुत्ते ७ चारों ओर फिरकर मांस खाते हैं ॥ ३२ ॥ युद्ध के चौकमें तरवारों से अग्नि लगी सो बन में लाय लगने के समान शोभायमान हुई जहां ८ हाथियों के झुंडे जलते हैं सोही ताड़ वृक्षों का समूह जलता है और हाथियों की सुंड जलती है सोही ९ तमाल वृक्षों का समूह जलता है ॥ ३३ ॥ १० हाथियों के कटे हुए पग जलते हैं सोही ११ तींदू वृक्ष हैं १२ ऊंचे हाथी जलते हैं सोही जलनेवाले पर्वत हैं १३ घोड़ों का बालछा जलता है सोही १४ बांसों का १५ बड़ा (समूह) है और घोड़ों की यालें (केसवालियें) जलती हैं सोही १६ डाभका समूह जलता है ॥३४॥ १७ वीरों की चोटियें जलती हैं सो १८ घास के पूले हैं, डाढी मूँछें जलती हैं सोही २० कांस (तृणविशेष) का १९ कचरा जलता है

जरैं छंगणावलि खेटक जाल, बरैं असिकोस पृथग्विध व्याल ॥ ३५ ॥
दहैं दु मृदुच्छद छल्लि दुकूल, किरैं चिनगी सुहि पौन कुकूल ॥
जरैं तहँ तोमर ते त्वचिसार, तचैं गवलावलि रूप तुखार ॥ ३६ ॥
प्रजारिय भूपति यागति आग्गि, फिली रनरंग मिली झगमग्गि ॥
अपूरब फैलिय ज्वाल अलात, बचैं तृनके जलके जरिजात ॥ ३७ ॥
अनूरुहिं आतुर अक्खिय अंक, चढे रन बुंदिय जैपुर चंक ॥
तुरंगम रुक्कहु खंचि खलीन, कुतूहल पिक्खहु बीर बलीन ॥ ३८ ॥
दिसा बिदिसान कृसानु दिखाँहिं, मच्यो दव ग्रीखम भद्दव माँहिं ॥
निहारहु होत अनीकन नास, तपैं भुव तक्कहु चक्क तमास ॥ ३९ ॥

॥ प्रतिलोमाऽनुलोमार्द्धम् ॥

तुंदे नर रोस रवीसम लाल, तुले हय जेम हले सु कराल ॥
लराक सु लेह सजे पह लेतु, ललाम स बीर सरीरन देतु ॥ ४० ॥

---

२ ढालें जलती हैं सोही जलने वाले १ छाणों (कंडों) की पंक्ति है ३ तरवारों के म्यान जलते हैं सोही ४ नाना प्रकार के सर्प जलते हैं ॥ ३५ ॥ ७ वस्त्र जलते हैं सोही मानों ६ भोजपत्र के ५ वृक्ष का जलना है और पवन से अग्निकण ८ गिरते हैं सोही ९ तुष की अग्नि उड़ती है १० यहां भाले जलते हैं सोही मानों ११ बांस जलते हैं और वन की अग्नि में जलनेवाली १३ रोजों की पंक्ति के समान १४ घोड़े १२ जलते हैं ॥ ३६ ॥ राजा उम्मेदसिंह ने इस प्रकार की अग्नि लगाई सो १५ उस रणरंग में चमकती हुई आनंद पूर्वक ठहरी अपूर्व रीति से उस ज्वाला के १६ अंगार फैले जिनसे १७ तृण (मुख में तृण लेने) वाले बचते हैं और १८ जल (पराक्रम) वाले जलते हैं ॥ ३७ ॥ १९ सूर्य के सारथि अनूरु से २० सूर्य ने कहा कि २१ सेना २२ लगाम खैंच कर घोड़ों को रोक, बलवान् वीरों का तमासा २३ देखेंगे ॥ ३८ ॥ दिशा दिशाओं में २४ अग्नि दीखती है सो २५ ग्रीष्मऋतु के समान भाद्रवा के महीने में अग्नि लगी २६ सेनाओं का नाश होता है सो देखो और भूमि तपती है जिसका और सेना का तमासा देखो ॥ ३९ ॥ (आधे छंद को सीधा पढकर उसीको उलटा पढने से पूर्ण छन्द होजाता है और उसका अर्थ बदल जाता है सो आगे बताते हैं) मनुष्य २७ पीड़ा युक्त होकर क्रोध में २८ सूर्य के समान लाल हुए और जैसे २९ घोड़े उठाये तैसे ही भयंकर चले ३१ सो (वे) ३० लड़नेवाले ३२ स्वाद लेकर यह आनंद लेते हैं और वे ३३ सुन्दर ३४ शरीरों को देते हैं इस छन्द में "तुद व्यथने" इस धातु से

अस्मत्सजातीयेष्वेव प्रसिद्धं गीतनामकं मरुदेशीयं छंदोनाम्ना
त्रिकूटबद्धम् ॥

उम्मेद भूपति अंगमैं[1] रसवीर संकुलि[2] रंगमैं[3] बरवीर बारहसै१२०० प्रवीरन चंक्क लै चहुवान ॥

जयनैर[5] सम्मुह जोरसौं भिलि खग्ग झारिय भोरसौं[7] बर गुमर असिवर[9] समर लागि झौर[10] कुनर छरंतर[11] हुनैर[12] हत कर जबर खैर[13] सर गजैर[14] जय धर अडर भैर[15] मिलि कचग्घन[16] कर अमरपुर मचि दैवर[17] दरवैर[18] उदर पर मिलि मुखर[19] पलचर खैचर[20] चय औैर[21] खपर खरभर पहर इक बजि टक्कर धरपर घोर इम घमसान[22] ॥

कैर[23] बाम तोक प्रयागठ्है अमरेस दक्खिन[24] भाग ठ्है मरजाद पिथल अग्ग[25] मंडिय बीच अप्पन[26] बाजि ॥

बिरुदालि बंदिनँ[27] बित्थरे अतिवेग सम्मुह उप्परे बजि कैटक्क[28]

तुद शब्द बना है जिसका अर्थ पीड़ित होना है और "लिह आस्वादने" इस धातु से लेह शब्द बना जिसका अर्थ स्वाद लेना है ॥ ४० ॥ "ग्रंथकर्ता (सूर्यमल्ल) कहते हैं कि यह हमारी (चारण) जाति ही में प्रसिद्ध ऐसा मरुभाषा का गीत नामक त्रिकूटबन्ध छंद है" राजा उम्मेदसिंह अपने शरीर में १ वीररस २ भरकर ३ युद्ध में बारह सौ वीरों की ४ सेना लेकर उस चहुवाण ने ५ जयपुरवालों के सम्मुख ६ भिड़कर ७ प्रभात से तरवार चलाई जहां ८ श्रेष्ठ घमंड के साथ ९ युद्ध में १० झड़ लगकर खोटे मनुष्यों के ११ अत्यन्त छल को १२ हुनर (इल्म) से मिटाकर १३ बड़े तीक्ष्ण बाणों के १४ निरंतर प्रहार से जय को धारण करके निर्भय १५ वीरों से मिलकर १६ शस्त्रों का कवच धारण किया १७ अमरपुरा के युद्ध में १८ दड़बड़ (शीघ्रदौड़) मचकर और उदर के ऊपर १९ शब्द करते हुए मांस खानेवाले मिलकर २० आकाश में विचरने वालों का समूह २१ अद्दा और देवी के खप्परों की खड़भड़ होकर भूमि पर एक पहर टक्कर बजकर इस प्रकार का २२ युद्ध हुआ राजा के २३ बाम हाथ की ताकसिंह और प्रयागसिंह हुए और अमरसिंह २४ दाहिनी ओर रहा, इसीप्रकार मरजादसिंह और पृथ्वीसिंह २५ आगे रहकर बीच में २६ अपना (उम्मेदसिंह का) घोड़ा रहा २७ भाटों की बिरुदावली फैली और गर्व से सम्मुख उठे २८ सेना को दगड़ देनेवाली रचक (टक्कर) हुई

दमनक रचक धमचक्क अटक[1] ढंक तक मुलक अकबक अछक छक भट ललक[2] अति धक[3] तुपक चलि हक्क सलक्क[4] इक टक गरक्क[5] रँग फक्क फरक[6] अहरक चमक[8] खुर सुचि[7] भमक चकमक्क किलक्क ढक लगि अजक चउ[10] चक्क[9] पुलक सक कर धमक प-खरक अरक रज ढक[11] आजि ॥

अतिमोद जुग्गिनि उल्लसैं[12] हर देखि नारद त्यों हसैं डरदेत लेत डकार डाकिनि प्रेत हेत[13] प्रसार ॥

कमनैत[14] तीरन तानिकैं[15] पखरैत[16] बेधत पानिकैं बुधतनय[17] हित जय प्रलाप नय बय छपै[18] रनसुमैं[19] अभय अतिसैय[20] विषय चैय भुव वलयै[22] विसमय प्रलय मय भय समय निरदय उदय रवि नयनि-लयैं[23] अतिरैय[24] अजय खैपकर[25] अखय जय[26] आँय उभय सैय पय हृद-य[27] अंपचय कटय भट रैमय[30] निचय हय गय मार हीन सुमार ॥

---

१ युद्ध में २ अटक नदी के जल पर्यन्त का देश घबराकर अर्थात् बादशाही देश तक घबराहट पहुँचकर, और आर्य्यावर्त की सीमा भी अटक ही है अछक छकेहुए वीरों ने ललकार करके ३ अत्यन्त क्रोध से बढ़कर ४ बंदूकों की निरन्तर सलक की (बहुत बंदूकों के एक साथ चलाने को सलक कहते हैं) ५ गहरे रंग में डूबी हुई ६ ध्वजायें उड़ीं और ८ चमक के समान घोड़ों के खुरों से ७ अग्नि चमकी और कालिकाओं की किलकारी होकर उनके वाद्य बजे, प्रसन्नता में संदेह करके अथवा प्रलय का संदेह करके रोमांच होकर १० चारों दिशाओं में ९ अमैन फैला और घोड़ों की पाखरें बजकर ११ युद्ध की रज से सूर्य ढक गया, योगिनियें अत्यन्त हर्ष से १२ फूलती हैं इसीप्रकार महादेव, पार्वती और नारद मुनि हँसते हैं, डाकिनियें भय देनेवाली डकारें लेती हैं और प्रेतों ने स्नेह १३ फैलाती हैं १४ बाण चलानेवाले तीरों को खैंचकर १६ पराक्रम करके १५ पाखरोंवालों को बेधन करते हैं १७ बुधसिंह के पुत्र (उम्मेदसिंह) का विजय प्राप्ति कराने के अर्थ नीति के वचन कहते हैं और १८ युद्ध रूपी पुष्प के १९ भ्रमर २० अत्यन्त निर्भय होकर २१ देशों के समूहवाले २२ भूमि मंडल पर प्रलयमई निर्दय समय का संदेह कराकर सूर्य के समान उदय हुए २३ वीरों के नीति के घर २४ बड़े वेगवान २५ पराजय का नाश करनेवाले और २६ आगे आनेवाले शुभ भाग्य से २७ अक्षय विजय करनेवालों ने २८ दोनों हाथ, पग और हृदय का २९ हानि (नाश) करके वीरों के ३० समूहों को

तुंगी रचैं काति तेहरी किंसु अद्रि लंघित केहरी फटि मत्थ भेजन जुत्थ फैलत नूतन कि नवनीतं ॥

छिंकि टोप बाहुल उच्छटैं कटिकालि कंकटकी कटैं भट गरट मिलि थट पुरट छट पट कुघट घट परि अंवट कट कंट कपट तट अति म्फपट रन अट उवट वट रट बिकट रेहचट पलट नट गति उलट म्फटपट उछट खगम्फट निपट अघ दट दपट दिय मिलि निकट प्रतिभट रपट मचि रन प्रकट रजवट जुरत चाहत जीत ॥ ४१ ॥

॥ अन्त्यानुप्रासिनी रोला ॥

बुंदी जैपुर उलटि बीर आये तिं अखारें ॥
गायक सिंधू तार ग्राम आलाप उचारैं ॥
भुम्मि मचक्कैं कटक भार फन नाग पसारैं ॥

कटे और हाथी घोड़ों के समूह तो विना गिनती (वेसुमार) मारे १ कितने ही घोड़े तीन तीन मलंग लेते हैं सो २ मानों ३ पर्वत को उल्लंघन करता हुआ सिंह मलंग (छलांगें) भरता है और मस्तक फटकर भेजों (मस्तिष्क) का समूह फैलता है सो मानों नवीन ४ मक्खन फैलता है, टोप कटकर ५ दस्ताने (बाहुत्राण) उडते हैं ७ कवच की ६ कड़ियों की पंक्ति कटती है ८ वीरों के अत्यन्त समूह मिलकर (यहां अधिकता दिखाने के कारण गरट और थट दोनों एकार्थ वाची शब्दों का प्रयोग किया है) अथवा समूह की भीड़ मिलकर ९ सुवर्ण की कांतिवाले (केसरिया) वस्त्र शरीर पर बुरे घाट से पड़े हैं ११ हाथियों के कुंभस्थल कटकर १० खड्डों में गिरते हैं और कपट के किनारे से अत्यन्त झटककर अर्थात् कपट से दूर भागकर युद्ध में मार्ग और विना मार्ग निरंतर १२ फिरते हैं १३ भयंकर दौड़ से नट की भांति पलटकर और उड़कर १४ शीघ्र दौड़ से १५ तरवार की झाट से १६ बहुत पाप को दबानेवाली दपट देकर वे वीर समीप लेकर शीघ्रदौड मचाकर युद्ध में १७ रजोगुण के मार्ग को प्रकट करके विजय को चाहते हुए जुड़ते हैं ॥ ४१ ॥ १८ ते (वे) युद्ध के अखाड़े पर आये १९ गानेवाले सिंधवी रागनी के ग्राम में उच्च स्वर से आलाप करते हैं "संगीत में स्वरों के समूह को ग्राम कहते हैं वे तीन हैं। यथा ॥ षड्जग्रामो भवेदादौ, मध्यमग्राम एव च ॥ गान्धारग्राम इत्येतत्, ग्रामत्रयमुदाहृतम् ॥१॥

ऐरावततैं[1] सुप्रतीकि[2] लग चीह चिकारैं ॥ ४२ ॥
दहकि दहकि दौलैं[3] राज किरिराज[4] पुकारैं ॥
लवणोदकसौं सुद्धनीरं लग बढन बिथारैं ॥
बल सूदनसौं[6] बामदेव[7] लग अजक उसारैं ॥
बड़वामुखसौं ब्रह्मलोक लग सोक सम्हारैं ॥ ४३ ॥
इम हल्लु कूरम अभंग बल जंग बिथारैं ॥
बज्जैं आयुध निसित बाढ अरि गाढ उतारैं ॥
फूटैं सिर तरबूज फाँक कटि लाँक[10] कुढारैं ॥
हत्थिन मत्थैं चन्द्रहास[11] दुवर हत्थन झारैं ॥ ४४ ॥
सुंडादंडन खंड खेरि अहि रूप उतारैं ॥
के उद्धत संग्रहि कलापैं[12] हठि दंत निकारैं ॥
सेकिंम[13] मालाकार[14] सोभ अति जोर उपारैं ॥
आधोरेन[15] घुम्मैं अचेत कपि ज्यौं द्रुम[16] कारैं ॥ ४५ ॥
कुंभनतैं गजभद्र केक मुत्ताहल[17] ढारैं ॥
मानौं मेचक[18] बारिबाह[19] डिगि सीकर[20] डारैं ॥
चउसट्ठी ६४ मारैं मतंग बावन ५२ बबकारैं ॥
हाक हकारैं केक जानि गज मार गलारैं[21] ॥ ४६ ॥

१ पूर्व दिशा के दिग्गज (दिशा को धारण करनेवाले हाथी) से लेकर २ ईशान दिशा के दिग्गज तक (क्रम से, ऐरावत १ पुंडरीक २ वामन ३ कुमुद ४ अञ्जन ५ पुष्पदंत ६ सार्वभौम ७ सुप्रतीक ८ दिग्गजों के नाम हैं) ॥ ४२ ॥ ३ जल जल कर कमठ ४ वराह ५ लवणोद से लेकर, शुद्धजल के समुद्र पर्यन्त समुद्र के सात भेद (लवणोद, क्षीरोद, दधिमंडोद, घृतोद, शुद्धोद, इक्षुरसोद, स्वादु उद अर्थात् शुद्धोद) हैं ६ पूर्व दिशा के स्वामी इन्द्र से लेकर ७ ईशान दिशा के स्वामी शिवतक [पूर्व दिशा से क्रम पूर्वक ईशान दिशा तक के स्वामियों के नाम [इन्द्र, अग्नि, यम, नैर्ऋत, वरुण, वायु, कुवेर और शिव हैं)८ पाताल से ॥ ४३ ॥ ९ तीक्ष्ण १० लंक [कमर] ११ खड्ग ॥ ४४ ॥ १२ हाथी का कलावा पकड़कर १३ मूळे को १४ माली की भाँति १५ महावत १६ काले वृक्ष से बंदर गिरैं तैसे॥४५॥१७मोती१८श्याम१९मेघ२०जलकण (बुंद २१गर्जना॥४६॥

फुट्टैं बक्तर *सिंगिफेट बपु[1] बेधि बिहारैं ॥
टक्करनतैं नागोदै टोप बल[2] खगन बिदारैं ॥
रुक्के पाय रकाब जोर सादी[3] सिसकारैं ॥
सच्चे कच्चे लखन सूर अति परख उघारैं ॥४७॥
कर तुट्टैं जैसैं पृदाकु[4] फन पंच उफारैं ॥
अंत्रावलि उरझैं कटार जनु बडिस[5] बिसारैं ॥
छुरिका छत्तिन छेदि छेदि मस्कर[6] छबिमारैं ॥
॥ ४८ ॥
बुंदी जैपुर लाज बाद परि उभयर प्रहारैं ॥
अमरपुरेकी सीम अंत नर कुणप[7] निहारैं ॥
लोहित[8] लंबी छछक छूटि प्रेतन जंक[9] पारैं ॥
सांपक भय दायक[10] दुसार[11] घायकैं[12] घट सारैं ॥ ४९ ॥
सरिता भो वह[13] संपराय जल सौनित[14] धारैं ॥
बुंदी जैपुर तट[15] बिलंद घट[16] बिकट किनारैं ॥
फुल्लि कुसेसय[17] हृदय फाँक छबि अतुल[18] अपारैं ॥
उतपल[19] गन लोचन अनूप[20] हुव बिकच[21] हजारैं ॥ ५० ॥
इंदिंदिर[22] उप्पर अनेक गुटिका[23] गुंजारैं ॥

---

* सींगवाले पशुओं की फेट से (यहां सिंगि की जगह सांग-पाठ होतो बरछी से बख्तर के फूटने का संबंध अच्छा होता है) १ पेट का कवच (पेटी) २ तरवारों के बल से ३ घोड़ों के सवार ॥ ४७ ॥ ४ सर्प ५ मच्छी पकड़ने का कांटा ६ बांस की शोभा को ॥ ४८ ॥ ७ मुरदे ८ रुधिर की ९ चैन (आराम) भय देनेवाले १० बाण ११ दोनों ओर फूटकर १२ घाव करनेवाले होकर शरीर को बेधन करते हैं ॥ ४९ ॥ १३ वह युद्ध नदी रूप हुआ जिस में १४ रुधिर है सोही जल हुआ जहां बुंदी और जयपुर ही लंबे १५ किनारे (ढावे) हैं और वे किनारे ही भयंकर १६ घाट हैं अथवा कटे हुए शरीर हैं सोही भयंकर घाट हैं और हृदय की चीरें हैं सोही १८ तुलना रहित अपार फूले हुए १७ शतपत्र कमल हैं, कटे हुए नेत्र हैं सोही २० उपमा रहित २१ फूले हुए हजारों १९ नील कमल हैं (कितनों ही के मत से सामान्य कमल का नाम भी उत्पल है) ॥ ५० ॥ उन कमलों के ऊपर २२ भ्रमरों रूपी अनेक २३ गोलियें शब्द

गजन दंत कटि कटि गिरैं सु करहाट कितारें ॥
तंवेरम कुंभीर[3] तुल्ल्य वलवान विहारें ॥
वाजी गन अवहार वेस मिलि तास मझारें ॥ ५१ ॥
सुंडि पतितं अंकुस समेत वनि वडिस विसारें ॥
जिंरह गिरी आनाय जानि पल्ल कर्दम पारें ॥
कटि कटि उड्डत कालखंज सुढि कमठ सिधारें ॥
बुक्का चेंप दद्दुर विंढंवि वहु फद्दक विथारें ॥ ५२ ॥
अंत्रावलि अलगर्द रूप संचर्य संचारें ॥
जलनीली निभ सिंचय जाल इत तिरत अपारें ॥
जत्थ जलोका जूहकी सु धमनी छवि धारें ॥
गंडेरू संचय अंगुलीन वनि चपल विहारें ॥ ५३ ॥
हत्थ निहाका निकर होय करि चलत कितारें ॥
कट तिलक विचरैं कुलीरं[22] श्रुति[23] सीप सुढारें ॥
संख नख रु संबूक[24] संख कौकस[25] अनुकारें ॥

करती हैं और हाथियों के दंत कट कट कर गिरते हैं सोही १ कमल क
पंक्तियां हैं २ हाथी हैं सोही बलवान् ३ मकरों के रूप से विहार
और घोड़े हैं सोही ४ घड़ियाल (मगर विशेष) के रूप से हैं ॥ ५१ ॥
सहित ५ पड़ी हुई हाथियों की सुंडें हैं सोही ६ मच्छी पकड़ने
भुलाती हैं ७ कवच हैं सो ही ८ मच्छी पकड़ने की जाल और
९ कीचड़ है १० कलेजे कट कट कर उड़ते हैं सो ही कच्छप चलते
बूकों (गुड़दों) का समूह ही मैंडक का १२ श्रम कर (छलांग ॥
आंतों की पंक्ति है सोही १३ जल सर्पों का १४ समूह चलता है;
के अपार समूह तिरते हैं सोही १५ शैवाल (कांजी) के सदृश हैं १८
धों की नाड़ियें (नसें) तिरती हैं सोही १७ जलौकाओं (जोकों)
धारण करती हैं, कटी हुई अंगुलियों के समूह ही १९ छोटी मच्छियें चपल
कर चलती हैं ॥ ५३ ॥ कटे हुए हाथों के समूह ही २१ पंक्तियें करके २
(गोहीली) के समान चलते हैं और कटीहुई तिल्लियें (उदरस्थ
मानों २२ केकड़े फिरते हैं २३ कटे हुए कान तिरते हैं सोही सीपें हैं,
नख हैं सो ही २४ सांखूलया और २५ हड्डियें हैं सोही शंख के २१

अंस्थि चूर सिकता अनूप नर सूर निहारैं ॥ ५४ ॥
आवरणांक आंवर्त्त रूप अटि चक्र उघारैं ॥
धूंम लहरि उठैं अनेक अति बांत इसारैं ॥
कुंभ कँरीके चक्रवाक ध्रुव पीतन धारैं ॥
छंदी गिरत हयचञ्छटा सु सारस संचारैं ॥ ५५ ॥
चामर बनि चक्रांग रूप बँक टोप बिहारैं ॥
घन कारंडव गँजन घंट गिरि गिरि गुंजारैं ॥
उच्चूल सु आंटी कपाल मँग्गू किलकारैं ॥
गज अंगुलि कटि कटि गिरी सु सिखरी ब सुढारैं ॥ ५६ ॥
कातर बीरंण तंब केक कढि लग्गि किनारैं ॥
शृंगाटकं कारसूक संघ बिच देत बिहारैं ॥
ऊरु पतित सिंसुमार आभ गैल उंद्र अपारैं ॥
घुंटक घन सालूक सोभ धर पातितं धारैं ॥ ५७ ॥

अथवा छोटे शंख, सांखूल्या और शंखों का अनुकरण हड्डियें करती हैं "क्षुद्रशङ्खाः शङ्खनखाः" इत्यमरः ॥ वीर पुरुष हैं वे १ हड्डियों के चूरे को ही उपमा रहित २ रेत निहारते हैं ॥ ५४ ॥ ३ रुधिर में तिरती हुई ढालें ४ चक्राकार (गोल) फिरकर भ्रमि पटकती हैं, ५ यहां धूम (धुवां) है सो ही ६ पवन के इसारे से लहरें उठती हैं ७ हरताल से रंगेहुए हाथियों के कुंभस्थल हैं सो ही निश्चय ही पीलेपनको धारण करनेवाले ८ चकवे हैं, उस युद्ध में कटीहुई ९ घोड़ों की गरदनें गिरती हैं सो ही सारस १० चलते हैं ॥ ५५ ॥ चमर हैं सोही ११ हंस बनते हैं और १२ बुगलों के रूप से टोप बिहार करते हैं १३ हाथियों की घंटा गिर गिर कर बजती है सोही मानों १४ बतक (जलजन्तु विशेष) बोलते हैं १५ ध्वजाओं के वस्त्र हैं सोही १६ आटी नामक पक्षि विशेष हैं और कटे हुए कपाल हैं सोही १७ जलमुर्ग बोलते हैं कटीहुई हाथियों की अंगुलियें गिरी हैं सोही श्रेष्ठ रीति के १८ कांकड़े के डंक हैं ॥ ५६ ॥ कितने ही कायर १९ कांस (तृण विशेष) के समूह के समान इस युद्ध रूपी नदी से निकल कर किनारे लगते हैं २० सिंघाड़ों के समान २१ नखों का समूह २२ शोभा देता है २३ पड़ीहुई जंघा है सोही २४ सूंस (मगर विशेष) की शोभा देती है २५ और कटेहुए गले (कंठ) ही अपार २६ जलमानस (जल माणसिया) है पृथ्वी पर २९ पड़ेहुए २७ घुटने २८ कमल के मूल (कंद) की शोभा धरते हैं ॥ ५७ ॥

निडर पराक्रम[1] पृथुल नाव नय मंग[2] निहारैं ॥
लंबे केतन[3] बरदवान पवमान[4] प्रसारैं ॥
प्यारे दुल्लभ प्रान रूप आतर[5] कर डारैं ॥
बीर निर्यामक[6] रस बिसेस सुहि पार उतारैं ॥ ५८ ॥
उट्ठँ[7] घायल लँपन झग्ग बुदबुद अनुकारैं[8] ॥
मज्जा[9] मेदं[10] अनेक ओघ डिंडीर[11] दिकारैं ॥
ऐसी दुस्तर आपगा[12] सु हुव स्रोत[13] हजारैं ॥
बुंदी जैपुर उभयर बीर तिहिं तिरन बिचारैं ॥ ५९ ॥

॥ दोहा ॥

ऐसी दुस्तर आपगा, बढे तिरन बर बीर ॥
इत उतके आहव अडर, धाराधर[14] कर धीर ॥ ६० ॥

॥ षट्पात् ॥

इत पित्थल चालुक्य असह कूरम प्रताप उत ॥
इत कबंध अमरेस उत सु जद्दव दलेल द्रुत ॥
इत प्रयाग चहुवान सुरत[15] उत कुम्म सुमंतह[16] ॥
इत मरजाद असंक उत सु कूरम जसवंतह ॥
इत तोक बिजय कछवाह उत इत उत कुम्म अजीत दुवर

इस युद्ध रूपी नदी के तिरनेको निर्भय पराक्रम है वही १ बडी नाव है और नीति है सोही उस नाव का २ मस्तक है ३ सेना में लंबी ध्वजा है सोही उस नावका बरदवान (मस्तूल) है जिसको ४ पवन फैलाता है अत्यन्त प्यारे प्राण हैं सोही उस नदी की उतराई के ५ कर में डालते हैं "आतरस्तरपण्यंस्या" दित्यमरः॥ वीर रस ही उस ६नाव का खेवटिया है सोही उस नदी के पार लगाता है॥५८॥घायलों के७*मुख से झाग उठते हैं सोही उस नदी में बुदबुदों के ८ अनुकरण करनेवाले हैं९अस्थिगत धातु और (मींजी, सार)१०चरबी का समूह ही११फेन (झाग) दीखते हैं ऐसी दुस्तर१२नदी की हजारों १३ धाराएं हुई ॥ ५९ ॥१४खड्ग हाथों में लिये ॥ ६० ॥१५सुरतसिंह१६श्रेष्ठ बुद्धिमान्॥६१॥

* क्रिया आकर फिर विशेषण दिया जावे उसको समाप्तपुनरात्त दोष कहते हैं परन्तु क्रिया के पीछे फिर अनेक विशेषण व अनेक उपमा दी जावे वहां यह दोष मिटजाता है सोही यहां जानना चाहिये.

इत देव हड्ड हम्मीर उत हरखि कुम्म हमगीर हुव ॥ ६१ ॥

॥ दोहा ॥

हड्ड भवानीसिंह इत, उत माधव कछवाह ॥
इत सगताउत अचल उत, संकर कुम्म सिपाह ॥ ६२ ॥
च्यारि *अमर रट्ठोर सुत, अब तिनके †अभिधान ॥
इत भैरव अंगद अचल, उत कछवाह अमान ॥ ६३ ॥
इत कबंध नवलेस उत, भट कूरम भूपाल ॥
इत ‡सन मान कबंध उत, अर्ज्जुन कुम्म अचाल ॥६४॥
अडर सिवाईसिंह इत, रनपंडित रट्ठोर ॥
अभयसिंह कछवाह उत, मिले उभय२ भट §मोर ॥ ६५ ॥
इत सु भट्ट बुंदीसको, जुद्ध निपुन जगराम ॥
उदयसिंह परमार उत, कुपित भिरयो जय काम ॥ ६६ ॥
उभय उभय इत्यादि जुरि, अनी भ्रमर उमराव ॥
किन्नौं रन रविमल्ल कवि, बरनैं बिरुद बढाव ॥ ६७ ॥

॥ पज्झटिका ॥

चालुक बर पित्थल जंग चाह, नाथाउत पुर निम्मान नाह ।
पैंसठि६५पैदाति[2] सादी[3] पचीस२५,साजि चलिय कुम्म परताप सीस६८
उततैं प्रताप हय सत१००उपेतैं[4], खिजि आयो सम्मुह बीर खेत ॥
पित्थल उर मारिय बान पंच५, रन बीर यहहु संक्यो न रंच।६९।
मारकं[5] सिर झारिय मंडलग्ग[6], कटि टोप कछुक सिर खगिँय[7] खग्ग
तस सुभट इहाँ इक वार किन्न, कर सव्य सांगद[8] सु करिय भिन्न७०
दै जात चलिय पित्थल कृपान, सिर भिन्न होय अरि भुव सयान[9]

॥ ६२ ॥ * अमरसिंह राठोड़ के चार पुत्र † नाम ॥ ६३ ॥ ‡ इधर से ॥ ६४ ॥ §मोड़ (मुकुट)॥६५॥६६॥ १ सूर्यमल्लकवि स्तुति को बढाकर वर्णन करते हैं ॥ ६७ ॥ २ पैदल ३ सवार ॥ ६८ ॥ सौ घोड़ों ४ सहित यहां (अजहत्स्वार्था लक्षणा से घोड़ों के सौ सवार जानना चाहिये) ॥ ६९ ॥ ५ मारनेवाले पर ६ खड्ग चलाया ७ घुसा ८ भुजबंध सहित बाम हाथ काट डाला ॥ ७० ॥९सोया

पुनि हनि प्रतापके सुभट सत्त७, आयो उडाय हय इत उमत्त॥७१॥
हयखंध[1] लेग झारिय प्रताप, हय गिरत भयो पयचार[2] आप ॥
हय हीन तिमहि कर सव्य[3] हीन, पुनि हनिय कुम्म भट नव ९ प्रबीन ॥ ७२ ॥
इहिं बिच प्रताप झारिय कृपान, पित्थल[4] कटयो सु तिल तिल प्रमान
सन्नाह लयो नहि प्रथम सूर, पानिप[5] दिखाय तैसोहि पूर ॥ ७३ ॥
सत्रह१७अरी तेरह१३स्वभट[6] सत्थ, सजि इंष्ट[7]लोक पहुँच्यो समत्थ[8]
रट्ठोर अमर जद्दव दलेल्ल, खिजि खिजि इत मंडयो बीर खेल्ल।७४।
तेतिस३३ पैदग[9] इत कृति२०[10] तुरंग, उत सत १०० रु सट्ठि६०अनुक्रमें[11] अभंग ॥
लखि कहिय परस्पर वाह वाह, बाहहु तुम बाहहु नव[12] सिपाह७५
भिरि प्रथम रचिय सेलन भचक्क, रमि[13] दाव धाव[14] कावन रचक्क ॥
इम फिरत बाजि दोउन२ उडानि, दुव२ भंड दंडभृत[15] चक्र जानि७६
ननु[16] कै दिनेस[17] अरु जामिनीस[18], गरदाय फिरत हाटक गिरीस[19] ॥
आवर्त उदधि[20] जिम दुव२ जिहाज, बलि किंसु[21] कपोत पर उभय २ बाज ॥७७॥
दुव२ पत्र वातचक्र[22] कि घिरंत, कन्न्या कि उभय फुंदिय[23] फिरंत ॥
दुव२लेंटुव[24] जानि नट सिर दिखाय, इम फिरिय बीर बाजिन उडाय ७८
अमरेस झुकि तोमर[25] अभंग, जद्दव हय वेध्यो निडर जंग ॥

॥ ७१ ॥ १ घोड़े के कंधे पर २ पैदल ३ वाम हाथ से ॥ ७२ ॥ ४ कवच ५ पराक्रम ॥ ७३ ॥ ६ अपने वीरों के साथ ७ चाहता था उस लोक में ८ समर्थ ॥ ७४ ॥ ९ पैदल १० यहां लक्षणा से सवार जानो ११ सौ पैदल और साठ सवार इस अनुक्रम से १२ नवीन ॥ ७५ ॥ १३ दाव खेल कर १४ दौड़ १५ कुम्हार के चाक पर दो मटके होवैं इस तरह ॥ ७६ ॥१६ अथवा निश्चय ही मानों १७ सूर्य और १८ चन्द्रमा १९ सुमेरु पर्वत को घेरकर फिरते हैं २० समुद्र के भमि [चक्कर] में दो जहाज२१मानों एक कबूतर पर दो बाज हैं ॥ ७७ ॥ २२पवन के गोट में दो पत्ते घिरे २३ नृत्य विशेष२४गेंद॥७८॥२५भाला

हय गिरत अँपर[1] आरुहि दलेल, मारयो कबंध उर सुभर[2] सेल ७९
सहि सेल अमर हनि सत्रु सत्त७, मारयो दलेल अँसिबर[3] उमत्त ॥
जद्दवाहिं मारि अग्गैं जगामँ[4], भिंटयो भटेस[5] सीसोद स्याम ॥ ८० ॥
दोउनर२ कृपान झारिय दुरहत्थ, मुंडमाल[6] मध्य गय उभय२माथ॥
अरि नवँ९पचीस२५निज भट उपेत, रठ्ठोर गयो निर्ज्जर[7] निकेत८१
इत भट प्रयाग इक्क१ हि अभंग, सुरतेस उत सु हय सट्ठि६० संग॥
मिलि उभय२जंग मंडिय अमान, वदि वाह वाह सिव किय बखान॥८२॥
पट्टु[8] प्रथम तुपक झारिय प्रयाग, अरि दोय२हनिय तिम आखु[9] नाग।
इकरांय[10] बाजि पुनि तुपक डारि, कढि हिंतु काल्हनी[11] गिनि निकारि ८३
सुरतेस निकट पहुँच्यो प्रयाग, फिरि मंडल खेल्यो हेति[12] फाग ॥
जजे भट पिल्ले[13] सुरत जत्थ, तेते प्रयाग सब हनिय तत्थ ॥ ८४ ॥
इम फिरत हड्ड हैवर उताल, जिम अनिलँ[14] अग्गि तृन बिपिन जाल
तिय मृगिय[15] सुरत जिम नर तुरंग, इम सुरतँ[16] हड्ड दब्यो अभंग८५
आघात खग्ग दँदँ अनूप, किय बहुत कुम्भ आँलक्त[17] कूप ॥
खट६ सुभट सुरत पिल्ले खिसाय[18], पॅत्ते[19] प्रयाग पर रन रिसाय ॥८६॥
अभिमन्यु लरयो खट रथिन आँजि[20], बिफुरयो प्रयाग इम दपटि बाजि।
दुव २ मारि च्यारि ४ घायल गिराय, खट६ असि प्रहार तिनकेहु
खाय ॥ ८७ ॥
सुरतेस सीस हंकिय सजोर, मानहु लखि जिह्मग[21] मत्त मोर ॥

---

१ दूसरे घोड़े पर चढ़कर २ सुभट ने ॥ ७९ ॥ ३ श्रेष्ठ तरवार से उन्मत्त होकर ४ चला ५ वीरों का पति शीशोदिया श्यामसिंह से मिला ॥ ८० ॥ ६ शिव की मुंडमाला में ७ स्वर्ग में गया ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८ चतुर ९ चूहे को सर्प मारै तैसे १० घोड़े को ललकार कर ११ तरवार ॥ ८३ ॥ १२ शस्त्रों का फाग सुरतसिंह ने १३ भेजे ॥ ८४ ॥ १४ पवन से तृणों के वन में अग्नि फिरै तैसे १५ मृगी जाति की स्त्री अश्व जाति के पुरुष से जैसे दबजाती है तैसे १६ सुरतसिंह को हाडा ने दबाया ॥ ८५ ॥ १७ अलते के कूप कर दिये अलते का रंग लाल होता है १८ सिटाकर १९ पहुंचे ॥ ८६ ॥ २० युद्ध में ॥ ८७ ॥ २१ सर्प

इक१जवन आनि इहिँ बिच उमाहि, बेध्यो प्रयाग सित साँ[1]गि बाहि॥८८
इहिँ संगि सहित घोट[2]क उडाय, कढ्यो सु मिच्छ पुनि पिहुल[3] काय
यँहँ सुरतासिंह किय खग्ग वार, मारयो प्रयाग मृड[4] जानि मार॥८९
ढुंढत जिहिँ हारे कं[5]क ढैंक, नहिँ मिलिय लुत्थि प[6]लचरन नैंक॥
अवसिँष्ठ रहिय नहिँ लौन अग्गि, लुत्थि सु प्रयाग गय असिन लग्गि९०
हनि पंच५ च्यारि४ घायल विधाय, पत्तो प्रयाग निर्ज्जर निकाय॥
मरजाद सु मुहुकम अन्ववाँय, सतपंच५००पँदग सादी सजाय।९१।
इत चलिय पिक्खि जसवंत वीर, धुर धर भलायपति कुमर धीर ॥
वह्ह सजि खट सय ६०० अश्ववार, इमगीर पँदिक त्योँही हजार
१००० ॥ ९२ ॥
मरजाद सीस धारत मरोर, आयो राजाउत रचत रोर[16] ॥
मरजाद मत्थ तकि तीर तीन३, दपटाय[17] बाँजि कछवाह दीन ॥९३॥
मरजाद सुभट इक नाम मान[18], कूरम हय मारयो दै कृपान ॥
जसवंत अँपर[19] हय चढि जरूर, समसेर हन्योँ वह मान सूर ॥ ९४ ॥
कूरम निज जद्दव सुभट दोय२, हड्डा सिर हूँले कूपित होय ॥
दै चक्र दुहुँन२ मरजाद बिंटि, भालन प्रहार किय भिंटि भिंटि।९५।
इत हड्ड दुहुँन२ तोमर बिदारि, जद्दवन गयो मरजाद जारि[21] ॥
रट्ठोर बहुरि पिल्ल्यो रिसाय, खग भारि हड्ड लिय सोहु खाय।९६।
पठये इम कूरम दस१० सिपाह, लिन्ने ति मारि लागि बिजय लाह।
हड्डा सुमेरु पठयो बहोरि, दिन्नोँ कृपान तिहिँ खंध दोरि ॥ ९७ ॥

को देखकर १ तीक्ष्ण बरछी चलाकर ॥ ८८ ॥ २ घोड़ा ३ बड़े शरीर वाले को ४ शिव ने कामदेव को मारा जैसे ॥ ८९ ॥ ५ दोनों मांसाहारी पक्षि विशेष हैं ६ मांस खानेवालों को ७ जलाने को अवशिष्ट [बाकी] नहीं रहा ८ तरवारों के लग गया ॥ ९० ॥९करके१० देवताओं के ११स्थान [स्वर्ग] में गया।१२मुहकमसिंह के वंश में१३पैदल १४ सवार ॥ ९१ ॥ १५ पैदल ॥ ९२ ॥ १६ १७ घोड़ा दौड़ाकर ॥ ९३ ॥ १८ मानसिंह ने १९ दूसरे घोड़े पर ॥ ९४ ॥ २० चढाये वा भेजे ॥ ९६ ॥ २१ हजम करगया ॥ ९६ ॥ ९७ ॥

उपबीत उतरि मरजाद *अंस, बैठो†तनुत्र भिंदि‡पृष्ठिबंस॥
इहिं घाय भयो §संभर अचेत, खिन धरिय मोह[1] ढरि परिय खेत ९८
तजि मोह बहुरि बिनुही[2] तुरंग, जसवंत हिंतु किय उट्ठि जंग ॥
पुनि मारि अट्ठ८ कूरम प्रबीर, सुत्तो[3] सतल्प संगर सधीर ॥[4] ९८ ॥
इम खाय सत्रु एकोनबीस१९, बलि करिय चेत घायल बतीस ३२
बिंटिय तब अच्छरि डारि बाँहि, मरजाद[6] पत्त इम नाकमाँहि[7] १००
चोरासी८४निजभट रहिय खेत, सतदोय२००भये घायल सु चेत॥
इत तोकसिंह मिलि छोह[8] अंग, उत बिजयसिंह कूरम अभंग१०१
दुव२दपटि बीति[9] रीतिन दिखाय, दुव२करत वार असि घाय दाय
रन चत्वर[10] दुव२ जयखंभ रूप, दुव२ स्वामि धर्मधर भटन भूप[11]१०२
दुव२ द्विरद[12] इक धेनुक[13] दिखात, दुव२ सिंह जानि इक बस्त[14] आत
यहँ तोक चंड असिबर चलाय, गति वज्ज्र बिजय[15] दिन्नौं गिराय१०३
इत अजित अजित कछवाह दोय[16]२, हथियार मार मिलि मत्त होय
गोलिन लगि दोउन२ हय गिरंत, ह्है पदिक[17] जुरे बलवंत हंत[18] १०४
आतोपि उभय२ जिम जुरत जुद्ध, कैधौं[19] चरनायुध[20] उरभि क्रुद्ध ॥
जिम त्रोटि[21] नखर खरकोन[22] जंग, दंसाय्प[23] कंक जनु[24] अतुल दंग१०५
भिरि इम प्रबीर बनि छिन्न भिन्न, करि कित्ति दुहुँन२दिव[25] बास किन्न
इत देवसिंह हड्डा उदार, हरदाउत सत्रुन गिलनहार ॥ १०६ ॥
हम्मीर कुम्म सिर बिरचि हाक, जग कतल करत आयो कजाक[26]

---

* कंधे में †कवच कट कट कर ‡पीठ की हड्डी में §चहुवाण १मूर्छा॥ ९८ ॥ २ बिना घोड़े ३ से ४ रणशय्या ॥ ९९ ॥ ५ पुनि [फिर] ६ गया ७ स्वर्ग में गया ॥१००॥ ८ क्रोध ॥ १०१ ॥ ९ घोड़ों को १० युद्ध के चौक में ११ उमरावों वा वीरों के राजा ॥ १०२ ॥ १२ दो हाथी एक १३हथनी पर १४ एक बकरे पर१५विजयसिंह को ॥ १०३ ॥ १६ दोनों अजितसिंह १७ पैदल १८ खेद है (घोड़े मरजाने से खेद के वचन कहे हैं) ॥ १०४ ॥ १९ चीलह पक्षी २०कुक्कुट (मुरगे)२१चंचू और नखों से २२ तीतर पक्षी लड़े जैसे २३ ग्रीध २४ मानों ॥ १०५ ॥ २५ स्वर्ग में ॥१०६॥ २६ युद्ध में

मिलि उभय२भाद्रपद मुदिर[1] मान, आसार हेतिं[2] बरखत अमान१०७.
हम्मीर इहाँ करि आसि प्रहार, वह देव न राख्यो अश्ववार[3] ॥
तब पदिक होय रचि नट मलंग,सारसन झटकि ऐंच्यो सुसंग१०८
पयचार[5]उभय२ इम बनि प्रबीर, हठ पुब्ब जुरिग देव रु हमीर ॥
हलकारि खग्ग झारत दु२हत्थ, ललकारि होत पुनि लुत्थि बत्थ१०९
तुट्टिय लगि दोउन२ आसि तनंकि, कट्टार तबहि झारिय झनंकि ॥
छम[6] मल्ल जुद्ध पुनि रचि अछेह, दुव२ बीर गिरे इम छोरि देह ।११०।

॥ षट्पात् ॥

सुभर भवानीसिंह महासिंहोत उमँडि इत ॥
उत माधव कछवाह हलिय, निज स्वामि बिजय हित ॥
खुरन अग्ग भुव खुंदि मुंदि पँन्नग सहस्र मुख ॥
तुमुल झारि तरवारि रारि मंडिय रावन रुख ॥
मिटि गुमर पिट्ठि कच्छप मुरकि ठुरकि निट्ठि सूँकर ढबिग
भीरुन भटेस धिक्करि भिरत दिक्करि गन चिक्करि दबिग १११
जिम आखंडल[14] जंभ[15] सव्यसाची[16] राधासुत ॥
स्वामी[17] तारक[18] सूर भीम कीचक बल अद्भुत ॥
पुनि हलहेति[19] प्रलंब सूनसागर[20] अरु संबर[21] ॥
अंजनिनंदन[22] अच्छ[23] बज्जतुंड[24] रु काकोदर[25] ॥
मैनाकस्वसा[26] जित सुरमहिष[27] आजगवी[28] अंधक अरन ॥

[1]भादों के मेघ के समान[2]शस्त्रों रूपी पानी॥१०७॥[3]घोड़े को मार डाला[4]कटिमेख-ला[4](कर्धनी अथवा कमरबधा)॥१०८॥[5]पैदल ॥१०९॥[6]समर्थ॥११०॥[7]शेषनाग के रावण की भांति[8]घमंड मिटकर [9] [10] वराह ठहरा [11] कायरों को धिक्कार देकर [12] दिशाओं के हाथियों के समूह [13] चीत्कार शब्द करके दबगये ॥ १११ ॥ [14] इंद्र और जंभासुर [15] अर्जुन और [16] कर्ण [17] स्वामिकार्तिक और [18] तारकासुर भीम और कीचक [19] बलदेव और प्रलंबासुर [20] समुद्र का पुत्र कामदेव और[21]शंबरासुर[22]हनुमान और[23]अक्षयकुमार [24]गरुड़ और[25]सर्प [26]पार्वती (देवी) और[27]महिषासुर, जैसे [28] शिव और अंधक असुर अड़े

इहिँ रीति झपटि आहव अजिर बीति दपटि लग्गे लरन॥११२॥
कूरमको करवाल हद्द झिल्ल्यो तोमर पर॥
कटत कुंत असि कड्ढि अनखि झारिय इहिँ अवसर॥
कूरमको सिर कट्टि निडर किय रुद्र निवेदन॥
इम अँत्नत रहि अप्प अरिन मंडिय उच्छेदन॥
वर वाजि नाव खेपक बलिय कुच्छेपंक दिय बलि करट॥
जय धारि फिरिग जानिय जगत भिरिग भवानियसिंह भट॥११३॥
इत सगताउत अचलसिंह कूरम उत संकर॥
इत प्रबीर लवअंस उत सु कुंस बंस भयंकर॥
इत बुंदिय धर अरर उत सु ढुंढाहर तालक॥
उदयनेर इत ओप उत सु जैपुर उज्जालक॥
त इक्क१ उत सु दस१० हय अधिप इत सिव रक्खक बिष्णु उत॥
कलिकार फुरे हिय सुम बिकसि निकसि जुरे कलिकार जुत॥११४॥

॥ दोहा ॥

दस१० दस१० झेलि प्रहार दुव२, रहे ति घायल रंग॥
आयु भयो बलवान यहँ, मेटी त्रिदिव उमंग॥ ११५॥
इत भैरव अमरेस सुत, रनकोविद रट्ठोर॥
अर अमान कछवाह उत, जंवी जुरिग अतिजोर॥ ११६॥
कूरम खग्ग कबंधकैं, दिन्नों तमकि सबंध॥
काटि बाहुलौं कर अद्ध काटि, बैठो लागि मणिबंध॥ ११७॥

तैसे १ युद्ध के आंगन (चौक) में २ घोड़े दौड़ाकर लड़ने लगे॥ ११२॥ ३ खड्ग ४ भाले पर ५ भाले कटते ही ६ शिव के भेट किया ७ आप (खुद) घाव रहित शत्रुओं को ८ काटना शुरू किया ९ कौक्षेयक (खड्ग) से १० बलिदान (भोजन) दिया ११ काक पक्षियों को॥ ११३॥ १२ लव के वंश में(शीशोदिया क्षत्रिय) १३ कुश के वंशवाला (कछवाहा क्षत्रिय) १४ कपाट १५ ताला १६ कलियों के आकार से हृदय फूलकर १७ पुष्प होगये १८ युद्ध करनेवाले बानादद से १९ स्तुतियोग्य॥ ११४॥ २० स्वर्गकी॥ ११५॥ २१ युद्ध चतुर २२ शीघ्र अथवा चाड (लड़) करके २३ वेगवान् जुड़े २४ अतिबल से॥ ११६॥ २५ दस्ताना २६ पोंचे तक॥ ११७॥

ऐसैंही इक अंसे पर, खाय उभयर तस खग्ग ॥
मास्यो कुम्भ अमानकौं, इम रठोर उदग्ग ॥ ११८ ॥
पुनि कूरम भगवंत प्रति, जुरयो मलंगत मत्त ॥
दोउनर असिबर छाक छकि, तजे कलेवर तत्त ॥ ११९ ॥
इत कबंध नवलेस उत, भट कूरम भूपाल ॥
अरै इच्छनै जोरे उभयर, कर तिच्छन करवाल ॥ १२० ॥
मानौं भद्दव मेघमैं, चपला जुगर चमकाय ॥
झटके इम झमकाय दुवर, हुव चटके घन घाय ॥ १२१ ॥
इमहि बीर सनमान इत, उत अर्ज्जुन कछवाह ॥
तिल तिल कटि पहुंचे तंबिष, लै दुवर अच्छरि लाह ।१२२।
अडर सिवाईसिंह इत, सूर अभय उत सज्जि ॥
परे खेत घायल उभयर, रुहिरँ छछ्कत रज्जि ॥ १२३ ॥
इत भट्ट सु बुन्दीसको, जयगाहक जगराम ॥
उदयसिंह परमार सिर, धय्यो प्रसारत धाम ॥ १२४ ॥
कुंत इक्क परमारको, खाय प्रहारिय खग्ग ॥
किन्नौं प्रबल करोढियौं, अरि सिर खंध अलग्ग ॥ १२५ ॥
उदयसिंहकौं मारि इम, बिंटयो जद्दव बग्घ ॥
देह छोरि दिय पत्त दुव, अच्छरिं मंडिय अग्घ ॥ १२६ ॥
ज्यौं संगर कनउज्जके, चंद लरयो असि चंड ॥
इम जुट्टयो जगराम यँहँ, खंडन करि बपु खंड ॥ १२७ ॥
इत्यादिक इत उत लरत, बुंदी सुभट बिसेस ॥

---

१ कंधे पर ॥ ११८ ॥ २ शरीर ॥ ११९ ॥ ३ शीघ्र ४ नेत्र मिलाये ॥ १२० ॥ ५ तरवारें (यहां लक्षणा से तरवार का ग्रहण है, नहीं तो एक बार में दो टुकड़े होजाने को डिंगळभाषा में झटका कहते हैं) ॥ १२१ ॥ ६ स्वर्ग में ॥ १२२ ॥ ७ रुधिर की छछकों से शोभित होकर ॥ १२३ ॥ ८ तेज तथा अपना स्वरूप ॥ १२४ ॥ ९ भाला १० भाटों की एक जाति ॥ १२५ ॥ ॥ १२६ ॥ ॥ १२७ ॥

बिय अति झारत बुद्ध सुव[1], दुपहर चंड दिनेस ॥ १२८ ॥

॥ मुक्तादाम ॥

चल्यो इत भूपति झारत खग्ग, झरैं अरि घायल डारत झग्ग ॥
इतैंउत घोर मचैं अत्रमद्द[2], इतैंउत आवहिं आवहिं नद्द ॥ १२९ ॥
इतैंउत मुंडन छादित भुम्मि, इतैंउत डोलत घायल घुम्मि ॥
इतैंउत संकुलि[3] लुत्थिन लुत्थि, इतैंउत बाढ बिखेरत बुत्थि ।१३०।
इतैंउत खंजर होत दुसार, इतैंउत फुट्टत पट्टिस[4] पार ॥
इतैंउत होत तुपक्कन मग्ग, इतैंउत बेधत सेलन अग्ग[5] ॥ १३१ ॥
इतैंउत तीरन ढंकत गैन[6], इतैंउत उड्डत संगितसैन[7] ॥
इतैंउत उग्र रचैं[8] रन रोर, इतैंउत पात[9] गदा अति जोर ॥ १३२ ॥
इतैंउत चाप चरट्टत चक्क, इतैंउत धूपन[11]की धमचक्क ॥

॥ तचक्क१मचक्क२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

इतैंउत या गति आयुध बुट्टि, इतैंउत मुट्ठिन[12] मारत मुट्ठि ॥ १३३ ॥
इतैंउत भौंहन चुंबत मुच्छ, इतैंउत उड्डत गोदन[13] गुच्छ ॥
इतैंउत अंब्बन[14] लग्गत लोह, इतैंउत कातर कच्छरि जोह ॥१३४॥
इतैंउत तुट्टत संकुलि[15] सीस, इतैंउत सूर रिझावत ईस ॥
इतैंउत डाकिनि खाजत खेत, इतैंउत पानि[16] पसारत प्रेत ॥ १३५ ॥
इतैंउत डोलत अंत्रन व्याल[17], इतैंउत फुट्टत कंठ कपाल ॥
इतैंउत धावत सोनित धार, इतैंउत कीकस[18] वृंद अपार ॥ १३६ ॥
इतैंउत नैन उछट्टत कट्टि, इतैंउत बाहु फरक्कत बट्टि ॥
इतैंउत टोप बकत्तर टूक, इतैंउत हूरव[19] हूरव हूक ॥ १३७ ॥

१बुधसिंह का पुत्र॥१२८॥२पीड़ाकारी युद्ध॥१२९॥३भरगई॥१३०॥४कटारी५भालों के अग्र भाग से॥ १३१ ॥ ६ आकाश को ७ बरछियों से सेना ८ भय ९ प्रहार ॥ १३२ ॥ १० चक्र (सेना) ११ तरवारों की १२ मुक्कों से अथवा खड्ग की मूठों पर मूठी मारते हैं॥ १३३ ॥ १३ मस्तिष्क (भेजों) के समूह १४ घोड़ों की पट्टी ॥ १३४ ॥ १५ अवकाश रहित १६ हाथ फैलाते हैं ॥१३५॥ १७आंतों के सर्प १८हड्डियों के समूह ॥ १३६ ॥१९हू हू, शब्द अथवा हूरों (अप्सराओं) का शब्द

इतैंउत बावन गावनहार[1], इतैंउत जच्छ जपैं जयकार ॥
इतैंउत नारद अक्खत वाह, इतैंउत साकिनि देत सिराह ॥ १३८ ॥
इतैंउत चौंकि फिरैं चउसट्ठि६४, इतैंउत सूरन सज्ज समट्ठि[2] ॥
इतैंउत तंडव[3] मंडत रुंड, इतैंउत झुकत झुंडन झुंड ॥ १३९ ॥
इतैंउत बाहहु बाहहु बुल्लि, इतैंउत तेगन झारत तुल्लि ॥
इतैंउत बाजिन बग्ग तमाम, इतैंउत कुद्दत गैवर[4] ग्राम ॥ १४० ॥
इतैंउत पक्खर घंटन घोर, इतैंउत अग्गि[5] सिलग्गत सोर ॥
इतैंउत बद्दलके अनुकार[6], इतैंउत लोहित[7] बुट्ठत बार ॥ १४१ ॥
इतैंउत चाप सु बासव[8] चाप, इतैंउत गज्ज सु गज्ज अमाप ॥
इतैंउत सीकर गोलिन गोट, इतैंउत दंतिन दंत बकोट[10] ॥ १४२ ॥
इतैंउत ओज[11] इरम्मद धारि, इतैंउत त्यौं तड़ितैं[12] तरवारि ॥
इतैंउत व्है[13] लहरू हरवल्ल, इतैंउत घुग्घर[14] दद्दुर गल्ल ॥ १४३ ॥
इतैंउत बीर सु उत्तर बात, इतैंउत सूर मयूर सुहात ॥
इतैंउत चातक[15] घंटन आलि, इतैंउत अत्थि[17] किरैं करकालि[18] ॥ १४४ ॥
इतैंउत कातर[19] भोलि उदास, इतैंउत हूर कृषीबल[20] आस ॥
इतैंउत जीगनैं[21] व्है चिनगीन, इतैंउत स्याम घटा करटीन[22] ॥ १४५ ॥
रच्यो नृप यौं रन पाउसरूप[23], धपावत सत्रुनतैं निज धूंप[24] ॥
लयो ढिग जाय नरायनदास, प्रहारन मार रची चहुँपास ॥ १४६ ॥

॥ १३० ॥ १ गान करनेवाले बावन भैरव ॥ १३८ ॥ २ समष्टि (समूह) ३ नृत्य ॥ १३९ ॥ ४ हाथियों के समूह ॥ १४० ॥ ५ अग्नि ६ सदृश ७ रुधिर बरसता है सोही पानी है ॥ १४१ ॥ ८ इन्द्र धनुष, गोळे और गोळियां चलती हैं सोही ९ जलकण हैं १० हाथियों के दन्त हैं सोही बगुले हैं ॥ १४२ ॥ ११ पराक्रम है सोही मेघज्योति है १२ तरवारें ही बिजुली है १३ सेना का अग्रभाग है सोही लहरें हैं १४ घूघरे हैं सोही मैंडकों का शब्द है ॥ १४३ ॥ १५ धीर हैं सोही उत्तर का पवन है १६ घटाओं की पंक्ति ही चातक है १७ अस्थि (हाड) बिखरते हैं सोही १८ ओलों की पंक्ति है ॥ १४४ ॥ १९ ऊंठों रूपी कायर उदास हैं २० अप्सराओं रूपी खेती की आशा है २१ अग्नि कण ही जुगनूँ है २२ हाथी हैं सो ही काली घटा है ॥ १४५ ॥ २३ वर्षा रूपी युद्ध रचा २४ तरवार को ॥ १४६ ॥

मरे भट भूपतिके सत तीन ३००, भये सत पंचक५०० घायन खीन॥
भज्यो गज खत्रियको लखि भार, भयो तब कुद्दि रु हैं[1] असवार॥
इते बिच कूरम बिक्रम[2] आय, दई तरवारि घनैं करि दाँय[3] ॥१४७॥
भयो तिहिँ हंजक[4] है पय भिन्न, तऊ झपटाय हनैं अरि तिन्न ३ ॥
भिरयो वह बिक्रम आनि बहोरि, लयो नृप[5] कूरमको सिर तोरि १४८
यहै लखि कूरम भैरव आनि, जुरयो नृपतैं दल मारत जानि ॥
महीपति उप्पर खग्ग[6] सुमोच, खँग्यो[7] कछु पंसुलिपैं कटि कोर्च[8]१४९
करी पुनि हंज[9] हयच्छट चोट, कढ्यो कछु पै न रुक्यो नृप घोटं[10] ॥
चली नृपकी तपकी तरवारि, लयो वह भैरव मारत[11] मारि॥१५०॥
इतोबिच कुम्म मिल्यो महताप, दये सर च्यारि४ चटहत चाप ॥
लगे नृपकै दुव२ दारित[12] दंसै, लगे हयकै दुव२ दाहिन अंस[13] ॥१५१॥
रुक्यो नहिँ रंच तऊ नृप ओज, चल्यो अरि मारत फारत फौज ॥
तहाँ पुरपील[14]पती चहुवान, भिरे दुव२ थान[15]१ तथा सुरतान२ ॥१५२॥
नरूहर[16] त्यौं हरनाथ३ तृतीय, इन्हैं नृप रुक्किय गाढ गरीयँ[17] ॥
उभै२ चहुवानन झारिय खग्ग, करे तिनके सिर भूप अलग्ग१५३
तथा सहि नौरवकी[18] तरवारि, लयो हरनाथहुको हय मारि ॥
घनी इम जैपुर बीरन नारि, करी नृप जोगि[19]नि कंकन झारि १५४
जहाँ हरदाउत हू नगराज, लरयो नृपको भट[20] बुंदिय लाज॥
कहार हठी१ हु रह्यो नृप पास, लरयो सँग[21] दौलतराम खवास१५५

१घोड़ेपर चढ़ा २विक्रमसिंह ने ३दाव (पेच)॥१४७॥ ४हंज नामक घोड़े का पैर कटगया ५उम्मेदसिंह ने (इस चरित्र में जहां जहां केवल नृप, भूप, पहु, संभर, चहुवाण शब्द आवै तहां तहां बुंदी के राजा उम्मेदसिंह को जानना चाहिये) ॥१४८॥ ६छोड़ा (खड्ग का प्रहार किया) ७घुसा (बैठा) ८कवच कट कर ॥ १४९ ॥ ९ हंज नामक घोड़े के कंधे पर १० राजा का घोड़ा ११ मारते हुए को मार किया ॥ १५० ॥ १२ कवच फाड़कर १३ दाहिने कंधे पर ॥ १५१ ॥ १४पुर का नाम है १५थानसिंह ॥ १५२॥ १६ नरू के वंशवाला १७भारी दृढता से ॥ १५३ ॥ १८ नरूके की १९खिचरी ॥ १५४॥ २० राजा का उमराव २१ साथ ॥ १५५ ॥

तथा सठ भीरु भजे सतच्यारि४००, रची इम जैपुरत नृप रारि।१५६।
तथा सतच्यारि४००मरे अरि तत्त, परे पुनि घायल ह्वै सतसत्त७००
नरायन खेत खरो अघ धोय, घनौं दल क्यों न तहाँ जय होय १५७
कढ्यो नृप बुंदियपैं धक्क धारि, मरैं तब कोन करैं पुनि रारि ॥
इतैं कछवाहन खोजिय खेत, लख्यो रन अंगन चित्र*उपेत।१५८।
कहाँ तरफैं भट तुट्टत स्वास, लरैं कहुँ लुत्थि करैं कहुँ हास ॥
बकैं कहुँ घायल ह्वै सुधि हीन, †जकैं कहुँ जानुन झुक्कत झीन १५९
डरे कहुँ अंत्रन डारत ग्रीव, फिरैं कहुँ नैंन चलैं कढि जीव ॥
करैं कहुँ सुंडिनके [1]उपधान, रैटैं हरिकौं रन तल्प [2]सयान ॥१६०॥
लरैं कहुँ मत्त [3]परासुन ओट, ढुरैं कहुँ लेत कबूतर लोट ॥
भरैं कहुँ बायु करैं उनमत्त, धरैं कहुँ सीस कलेजन छत्त ॥१६१॥
गिरैं कहुँ पाय पटक्कन भुम्मि, रहे कहुँ रुट्ठि रकाबन झुम्मि ॥
लरैं कहुँ भूतनतैं भरि बत्थ, झरैं कहुँ जावक [4]जैंत्रव मत्थ ॥१६२॥
परे कहुँ बीर अधोमुख भूरि, ढुरे कहुँ गाफिल चट्टत धूरि ॥
दबे कहुँ कुक्कत हत्थिन हेठ, जरे कहुँ [5]पब्बय ज्यों दव जेठ ॥१६३॥
रहे कहुँ [6]कुंजर कुंभन लग्गि, मनों [7]जुवतीन अनन्यर्ज [8]जग्गि ॥
तिरैं कहुँ सोनित व्याकुल [9]व्रात, भिरैं कहुँ भेदत गिद्धन गात १६४
करैं कहुँ दंतननैं कटकट्ट, जरैं कहुँ जुग्गिनिपैं [10]रहपट्ट ॥
पढैं कहुँ [11]कृष्ण कह्यो वह ज्ञान, भनैं कहुँ [12]सांख्य बनैं भगवान१६५
चखैं कहुँ लोहित [13]ओठन चब्बि, दुरैं कहुँ कंकन पंखन दब्बि ॥
अटैं कहुँ आतुर इक्कहि पाय, हटैं कहुँ पीडित जंपत हाय ॥ १६६॥

॥ १५६ ॥ १५७ ॥ * आश्चर्य सहित ॥ १५८ ॥ † गिरैं ॥ १५९ ॥ १ तकिया २ रणशय्या पर सोते हुए ॥ १६० ॥ ३ मृतक शरीरों की ओट में ॥१६१॥ ४ जावक के फुँहारे के समान॥१६२॥५ ज्येष्ठ मासमें पर्वतों में अग्नि जलै जैसे ॥१६३॥ ६ हाथियों के कुंभस्थलों से लगकर ७ स्त्रियों से ८ कामदेव के जगने से ९ समूह ॥ १६४॥ १० धप्पड़ ११ गीता का ज्ञान १२ सांख्यशास्त्र के मत को कह कर स्वयं ब्रह्म बनते हैं ॥ १६५ ॥ १३ होठों को चबाकर लोहू चखते हैं ॥ १६६ ॥

कहैं कहुँ बैद्य बुलावन बत्त, चहैं कहुँ अच्छरिकौं रसरत्त ॥
झुलैं कहुँ घोरनपैं मृत झुंड, रुलैं कहुँ*तंडव मंडत रुंड ॥ १६७ ॥
खिजैं कहुँ चिल्हनिपैं†पलखात, लसैं कहुँ‡फेरुन मारत लात ॥
गहैं कहुँ§स्वानन तोरत गूद, बनैं कहुँ साकिनिके हित¶सूद ॥१६८॥
नटैं कहुँ अंतक दूतन भीत, गिनैं कहुँ रीझत डाकिनि गीत ॥
मिलैं कहुँ प्रान अपानन मेल, सिटैं कहुँ प्रोत[1] निहारत सेल १६९
लखैं कहुँ नाक जुरावन विक्ख, कढैं कहुँ[2] कायन तोमर तिक्ख ॥
नये कहुँ दुल्लह चिंतत नारि, कहैं कहुँ पुत्रहि पुत्र पुकारि ॥१७०॥
डिगैं कहुँ निट्ठि गहैं हय पुच्छ, मिलैं कहुँ उट्ठि मरोरत मुच्छ ॥
जकैं कहुँ बाजि रलक्कत जीन, हलैं कहुँ हत्थिय सुंडि बिहीन१७१
दुरैं कहुँ आनक दुंदुभि फुट्टि, डरैं कहुँ केतन[3] तेगन तुट्टि ॥
गिरे कहुँ पट्टिस खग्ग कमान, गिरे कहुँ खेटक[4] तोमर बान ॥१७२॥
गिरे कहुँ[6]बाहुल कंकट[7] टोप, गिरे कहुँ[8]कोस उरंगम[9] ओप ॥
गिरे कहुँ गंज क्रमेलक[10] खंड, ढरे बनिजारनके जनु टंड ॥१७३॥
गिरे कहुँ पक्खर बग्ग[11] खलीन, गिरे कहुँ तुंग खरे खग खीन ॥
गिरे कहुँ गुच्छ बनैं गजगाह, गिरे कहुँ प्रोथ[12] बजावत बाह[13]॥१७४॥
गिरे कहुँ गैंवर मोहि अमाप, गिरे कहुँ अंकुस घंट कलाप ॥
गिरे कहुँ पुं[14]ष्कर आसन कान, गिरे कहुँ पेचक[15] ओ प्रतिमान[16] ॥ १७५ ॥
गिरे कहुँ कुंतल[17] मुच्छ कुघाट, गिरे कहुँ मुंड रु तुंड[18] ललाट ॥
गिरे कहुँ नेत्र रदच्छद[19] लल्ल, गिरे कहुँ नक्र ध्वनिग्रह[20] गल्ल ॥१७६॥

*नृत्य रचते हुए ॥ १६७ ॥ †मांस खाने से ‡ गीदड़ों का लात मारते शोभा देते हैं§ कुत्तों को ¶ साकिनियों के लिये रसोईदार (बबर्ची) बनते हैं ॥ ११८ ॥ यमराज के दूतों को डरकर नटते हैं कि हम को मत लेजाओ १ भालों को शरीरों में घुसते हुए देखकर ॥ १६९ ॥ २ शरीरों से तीखे भाले ॥ १७० ॥ ॥१७१॥ ३ ध्वजा, तरवारों से कट कर पड़ी है ४ कटार ५ ढाल ॥ १७२ ॥ ६ दस्ताने ७ कवच ८ तरवारों के म्यान ९ सर्पों की शोभा से १० ऊँटों के टुकड़े ॥१७३॥ ११ लगामें १२ फुरणे बजाते हुए १३ घोड़े ॥ १७४ ॥ १४ पोंगर (सुंड का अग्रभाग) १५ हाथियों के पूँछ का मूलभाग १६ हाथियों के दंतों के बीच का भाग ॥ १७५ ॥ १७ मूँछों के केस १८ मुख १९ लाल होठ २० नाक, कान और

गिरे कहुँ *काकुद जिब्भन जूह, गिरे कहुँ †मल्लक दड्ढ समूह ॥
गिरे कहुँ ‡घीतन त्यौं §कृक फाटि, गिरे कहुँ [1]काकल कंठ[2]कृकाटि ।१७७।
गिरे कहुँ [3]कूर्प्पर खंडिक कंध, गिरे कहुँ [4]जत्रु भुजा [5]मणिबंध ॥
गिरे कहुँ [6]अंगुल अंगुलि टूक, गिरे कहुँ [7]ज्यौं कर त्यौं करसूक ।१७८।
गिरे कहुँ पंसुलि रीढक तोम[8], गिरे कहुँ [9]पुप्फस कालिक[10] क्लोम[11]
गिरे कहुँ नाभि पुरीतति[12] गंज, गिरे कहुँ कुक्षि फबे हिय कंज ॥१७९॥
गिरे कहुँ त्यौं त्रिक[13] सक्थिन संघ[14], गिरे कहुँ जानु जुदे जुग२ जंघ
गिरे कहुँ पिंडिय गोहिरि[15] फुट्टि, गिरे कहुँ एडिय घुंटक[16] तुट्टि ।१८०।
लख्यो कछवाहन यौं रन थान, धरे सब घायल खोजि नृजान ॥
निकारिय सल्ल जथा सुखकार, चिकित्सक[17] बुल्लि रच्यो उपचार[18] ।१८१।
मरे तिनके बिधिसौं किय दाह, बनैं तिम प्रेतक्रिया निरबाह ॥
दिवावत यौं जय दुंदुभि डक्क, चल्यो अब बुंदिय जैपुर चक्क ॥ १८२॥
बिथारत बट्टन[19] अप्पन आन, उठावत सत्रुन सीम अमान ॥
[20]जैयो नृप कूरम अक्खत जोध, कथंचित[21] भो जु समावत क्रोध ॥ १८३॥
महाबल जो जयके छक मत्त, पसारत आतंक[22] बुंदिय पत्त ॥
पुरी पुनि झंड रूपे पचरंग, दिसा बिदिसान सुन्यौं यह दंग[23] ।१८४।
भयो मन मोदित कूरम नाह[24], स्वसेनहिं[25] अप्पिय वाह सिराह ॥

गला ॥ १७६ ॥ * तालुआ और जीभों का समूह † दन्त और दाढों का समूह ‡ गले के दोनों पसवाड़े § गला १ कंठमणि २ गरदन का ऊँचा भाग ॥ १७७ ॥ ३ हाथ की कुहनी ४ गले की संधि (हसली की हड्डी) ५ पूंचा ६ अंगूठा ७ नख ॥ १७८ ॥ ८ समूह ९ फेफरा १० कलेजा ११ तिल्ली १२ आंतों के समूह ॥१७९ ॥ १३ माकड़ी का हाड और साथलों का १४ समूह (घुटनों के ऊपर के भाग को साथल और साथल के ऊपर के भाग को जांघ कहते हैं) १५ पिंडुलियों और पादग्रन्थि (गिरिये) १६ घुटने ॥ १८० ॥ १७ वैद्यों को बुलाकर १८ इलाज ॥ १८१ ॥ १८२ ॥ १९ मार्गों में २० ईश्वरीसिंह की जय हुई (जय शब्द पुल्लिंग है जिसको यहां लोक रूढी से स्त्री लिंग लिखा है) २१ अत्यन्त प्रयत्न से हुआ उस क्रोध को मिटाते हैं ॥ १८३ ॥ २२ भय फैलाते हुए बुन्दी में गये २३ युद्ध ॥ १८४ ॥ २४ कछवाहों का पति (ईश्वरीसिंह २५ अपनी सेना

करे गज बाजि पटा वखसीस, गिन्यों*जयसिंहज अप्पहिं ईस१८५
दये सब भूपनकौं जयपत्र, लिखी वह हड्ड भज्यो तजि छत्र ॥
सु आवहिं जो तुमरी भुव माँहिं, ततो द्रुत कह्हहु रक्खहु नाँहिं१८६
लई इम बुंदिय कुम्म बहोरि, जिला गढ कोट सजे बलजोरि ॥
फिर्यो सब देस नरायनदास, लग्यो कर लैन ससैन हुलास१८७
इतैं अब जो हुव भूप चरित्र, सुनौं नृप राम रचौं वह चित्र ॥
पचास सहस्र ५०००० नमैं असि भारि, कढ्यो नृप पूरब फोजनि फारि ॥ १८८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ बुन्दीन्द्रकूर्मकटककलहकरणकूर्मप्रतापसिंहीयसप्तदश १७ स्वकीयत्रयोदश १३ सुभटसहितचालुक्यपृथ्वीसिंह १ शूरसप्तक ७ सहितयादवदलेलसिंह १ मारकस्वसुतत्रय ३ सुभटपञ्चविंश २५ त्युपेतकबन्धाऽमरसिंह २ सयवनशत्रुपञ्चक ५ सहितहड्डप्रयागसिंह ३ स्वचतुरशीति ८४ झलायपुरीयैकोनविंशति १९ सुभटयुतहड्डमर्यादसिंह ४ तोकसिंहमहतकूर्मविजयसिंह ३ स्वनामसजातीय ४ संयुतकूर्माऽजितसिंह ५ सकूर्महम्मीर ४ हड्डदेवसिंह ६ सम्भरभवानीसिंहाऽऽक्रान्तकूर्ममाधवसिंह ५ कावन्धत्रिकाक्रान्तकूर्म्माऽमान

को * जयसिंह के पुत्र ने अपने को बुन्दी का पति जाना ॥ १८५ ॥ १ शीघ्र ॥ १८६ ॥ २ हासिल ३ सेना सहित ४ प्रसन्न होकर ॥ १८७ ॥ ५ उम्मेदसिंह का ६ राजा रामसिंह ७ उसका चित्राम रचता हूँ सो सुनो ॥ १८८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में बुन्दी के इन्द्र का कछवाहे की सेना से युद्ध करना, कछवाहे प्रतापसिंह के सत्रह और अपने तेरह सहित सोलंखी पृथ्वीसिंह का, और सात वीरों सहित यादव दलेलसिंह को मारने वाले अपने तीन पुत्र और पच्चीस वीरों सहित राठोड़ अमरसिंह का, यवन सहित पांच शत्रुओं के साथ हाडा प्रयागसिंह का, अपने चौरासी और झलाय नगर के उन्नीस वीरों सहित हाडा मर्यादसिंह का, कछवाहे विजयसिंह को मारकर तोकसिंह का अपने ही नामवाले और अपनी जातिवाले अजितसिंह का, कछवाहा हम्मीरसिंह सहित हाडा देवसिंह का, कछवाहा माधवसिंह को मारने वाले चहु-

सिंह ६ भगवतसिंह ७ भूपालसिंहा ८ ऽर्जुनसिंह ९ प्रमारोदर्य
१० यादवव्याघ्रसिंह ११ सहितभट्टजगराम ७ बुन्दीद्राक्रान्त
विक्रम १२ भैरव १३ चाहुवाणस्थान १४ सुरतानाऽऽदिसप्तशत ७००
सुभटमरणद्वादशशत १२०० सुभटक्षतप्रापणाद्रुजहयचरणाकर्त
ऽनन्तरराव‍राणिनस्सरणकूर्मकटकविजयीभवनबुन्दीप्रविशन
दशो १८ मयूखः ॥ १८ ॥ २९९ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

नर समुद्र तरि नृप कढिय, अलप सत्थ रहि संग ॥
कोस तीन३ पहुँचत क्रमिय, तजि असु हंज तुरंग ॥ १ ॥
अरि तुपकन वपु भिन्न अति, वलि इक१चरन विहीन ॥
नृप त्रप३ कोस निवाहयो, कठिन हंज हय कीन ॥ २ ॥
भूरहु अंग विसल्य करि, सहिय अग्गि उपचार ॥
सस पल भोजी रत्ति रहि, विरचिय प्रात बिहार ॥ ३ ॥
गिरिन संधि अंतर क्रियउ, पूरब ओर प्रयान ॥
ढँविय इंद्रगढ नगर ढिग, चित्त निडर चहुवान ॥ ४ ॥
इंद्रगढाधिप देव प्रति, कहि पठई नरनाह ॥

चाण भवानीसिंह का, कछवाहा अमानसिंह, भगवंतसिंह, अर्जुनसिंह
मारनेवाले राठोड़ अमरसिंह के तीन पुत्रों का, पँवार उदयसिंह और य
घ व्याघसिंह को मारने वाले भाट जगराम का, तथा बुन्दी के मारे हुए क
वाह विक्रमसिंह, भैरवसिंह, चहुवाण थानसिंह और सुरतानसिंह आदि
त सौ वीरों का मरना, और बारह सौ सुभटों का घायल होना, हंज ना
घोड़े का पैर कटे पीछे रावराजा (उम्मेदसिंह) का निकलना, कछवाहों की
का विजयी होकर बुंदी में प्रवेश करने का अठारहवां मयूख समाप्त हुआ
आदि से दोसौ निन्नाणवें २९९ मयूख हुए ॥

१ वंशभास्कर वाहे में प्राप्त दोहा ॥ १ ॥ २ पुनि ॥ २ ॥ ३ गोली निकाल कर
अग्नि से सेककर (मरहम) का इलाज किया ४ रात्रि में खरगोश का मांस
खा कर रहा ॥ ३ ॥ ५ पर्वतों की संधि में ७ ठहरा ॥ ४ ॥ ८ उम्मेदसिंह ने ॥

हय हमरो गतप्रान हुव, हो जिहिं लरन उछाह ॥ ५ ॥
तातैं पठवहु देव तुम, खासा हय इक खुल्लि ॥
अवर न चाहैं हमहु *इन, भुजन कुमाई भुल्लि ॥६॥
सुनि यह देव सिटाय सठ, †त्रसित चुरायउ चेत ॥
यहै न जानी हम ‡अनुग, तउ इक१ अश्वहि लेत ॥ ७ ॥
इम अधर्म अहारि अधम, जैपुर गिनि बरजोर ॥
पच्छी यों कहि पुक्कलिय, मूढ तजहु भुव मोर ॥ ८ ॥
जिमं तुम खोई निज पहुमि, बिनु मति दर्प बढाय ॥
तिम हमरी खोवन तकत, अश्व लेन यँहँ आय ॥ ९ ॥
निठुर बैन सुनि साहि नृपति, लिखी अब न कछु लैंहि ॥
जो तुम यह खायो जहर, दैहैं लहर कबैंहिं ॥ १० ॥
इम कहाय नृप बर करिय, कोटा सीम प्रयान ॥
चम्मलि लंघि मुकाम किय, ग्राम रानपुर थान ॥ ११ ॥

॥ पज्झटिका ॥

रन सिंधु तरिग चहुवानराय, कछवाह भटन असिबर चखाय ॥
गिरि पारि२यात्र द्रोनि३न विहारि, उपनहि४ घाय वपु सल्लय टारि ॥१२॥
इम होय इंद्रगढ पुर समीप, देवहिं नटाय नृप बंसदीप ॥
उल्लंघि सरित चम्मलि असान, कोटाग५ रानपुर किय मिलान ॥१३॥
अरु सुभट अल्प नृप संग आय, रन दुसह कोन असु६ तजि रहाय ॥
अब मिलिय आनि सब७अनुग अत्थ, अवरहु अनेक सुनि रन ८समत्थ॥१४॥
उत कुम्भ भटन लहि विजय जंग, ढुंढिय प्रवेस किय अति उमंग ॥

*राजा तथा तुम्हारे पति हैं तोभी ॥ ६ ॥ †डर कर ‡सेवक हैं तोभी ॥७॥८॥ १घमंड बढा कर ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ २ जिस पर्वत के चारों ओर यात्रा (परिक्रमा) की जावे उसको पारियात्र कहते हैं [इसी कारण चित्रकूट को पारियात्र कहते हैं] ३ पर्वतों की संधि जिनको राजपूताने में खाद्रेय खोहलें कहते हैं ४ पाटा बांधने आदि घावों का इलाज ॥ १२ ॥ ५ कोटा के पर्गने में ॥ १३ ॥ ६ प्राण छोड़ने को कौन रहे ७ सेवक ८ युद्ध में समर्थ सुनकर ॥१४॥

जिन रचिय*अग्घ थिर नृपहिँ थप्पि, †आयत्त बिरचि तिन ‡दमन अप्पि
कोटेस §हिंतु पुनि यह कहाय, तुम चतुर नीति अदरि ¶हिताय ॥
बुधसिंह सूनु हित करन लेहिँ, सत दोय २०० दम्म हम नित्य देहिँ ॥ १६ ॥
मध्यस्थ होय तुम साम लाय, तिहिँ देहु कुम्भ नृप पय लगाय ॥
कोटेस लुब्ध सुनि पाय प्रीत, मंजार पाय पय होत सीत ॥ १७ ॥
स्वीकारि पहेहु जड़ छन्न साम, दिनप्रति लिय मासन द्विसत २००दाम
नृप अंतिक पठये तेहु नाँहिँ, उलटी खिल बंचन बुद्धि आँहिँ ॥१८॥
कोटेस बहुरि किय यह कुकर्म, इम कोन कोन अक्खहिँ अधर्म ॥
इत सुनिय रान जगतेस वत्त, बुंदीस सूर रन रचिय रत्त ॥ १९ ॥
दुवर बेर कूरमन फौज फारि, बरछी गति प्रविस्यो बहु बिदारि ॥
करवाल झारि हद रारि कीन, बलि कढिय जानि हय पय बिहीन२०
अब ग्राम रानपुर धाम आँहिँ, छत छाम तदपि नति नाम नाँहिँ ॥
हय हंज जो किँ पय भिन्न ठहै न, छोरैं न हनत तो सत्रु सैन॥२१॥
मन मित्र बाँजि बिनु अब नरेस, बांछत कछु दुम्मन हय बिसेस ॥
यह सुनत रान हिय मोद आय, भूपहिँ सिराहिँ बीरत्व भाय ॥ २२ ॥
हय खास नाम जिहिँ होनहार, साखति चामीकर साजि सुढार ॥
सिरुपाव उच्च इक१ रुचिर रंग, तरवारि खास इक१ तास संग।२३।
उम्मेद नृपति हित दिय पठाय, स्वीकरिय नृपहु गिनि हित सुनाय
इम होत सरदरितु मज्झ आय, दक गगन उभय२ निर्मल दिखाय२४

* आघ, उन उम्मेदसिंह के आघ करनेवालों को † अपने आधीन किये ‡ दंड देकर ॥ १५ ॥ § से ¶ हितार्थ १ बुधसिंह के पुत्र के अर्थ २ कह करके ३ रुपये ॥ १६ ॥ ४ ईश्वरीसिंह के पैरों लगादो ५ लोभी ६ बिल्ली को ७ दूध ठंडा होता मिला ॥ १७ ॥ ८ मंजूर करके उम्मेदसिंह के ९ पास १० ठगने की बुद्धि है ॥ १८ ॥ १९ ॥ ११ तरवार चलाकर १२ घोड़े को बिना पैर जानकर ॥ २० ॥ १३ है १४ घावों से दुर्बल है तोभी १५ नाम मात्र भी नम्रता नहीं है १६ पाद ॥ २१ ॥ १७ घोड़े बिना ॥ २२ ॥ १८ जिसका नाम आगे होने वाला है १९ सुवर्ण की ॥ २३ ॥ २० स्वीकार किये २१ जल और आकाश ॥ २

॥ षट्पात् ॥

गराजि मेघ उग्घरिय भरिय नेव नीरं१ निवानन ॥
पितरन कैव्य३ पंजोय४ बिरचि नृप निगम५ बिधानन ॥
पुनि कुलदेविय पूजि सद्धि कात्तिय६ व्रत संजम ॥
अब आगम हेमंत किन्न अगहन मृगया७ क्रम ॥
आखेट थान८ कोटेसके करि मृगरांज विहीन९ किय ॥
सद्धिय परक्खि आयुध सकल रानपुर सु इम नृप रहिय ।२५।

॥ दोहा ॥

ईडरिया उपटंक इत, रामसिंह रठोर ॥
हो जो तब पुर बनहड़ा, सुनि नृप विक्रम सोर ॥ २६ ॥
ताकैं ही इक१ पुत्रिका, बखतकुमरि अभिधान१० ॥
ताको रचि सगपन त्वरित, संभर११ हिंतु१२ सैंयान ॥ २७ ॥
पठयो डोला रानपुर, सचिव सुभट दै संग ॥
उपयम१३ करन उमेदसौं, जानि बीर बर जंग ॥ २८ ॥
सचिव भटन तब प्रीति सह, ऐरहि१४ रानपुर आय ॥
कन्या वह बुंदीस कँहँ, प्रार्थित१५ दई परिनाय ॥ २९ ॥
कन्याके काकाहुकी, बिर सुता रूप बिसाल ॥
रान१ रु माधव२ एहु दुवर, व्याहे पूरव काल ॥ ३० ॥
सगे उचित यातैं समुझि, परनि नृपहु सुद पात ॥
सक गुन नभ धृति१८०३ लगन सुभ, दोजि१६ सेंहा१७ अवदात ।३१
रंग्यो नहिं शृंगार रस, अवहि बीर अनुसारि ॥
बहुरि बढ्यो मन बप्पको, धरनी पर धक धारि ॥ ३२ ॥

१ नवीन २ पानी ३ श्राद्ध का अन्न ४ पहुँचा कर ५ वेद विधि ६ कार्तिक मास में, इन्द्रियों के रोकने का व्रत ७ शिकार ८ शिकार के स्थान ९ सिंहों के बिना ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ १० नाम ११ चहुवाण से १२ बुद्धिमान् ॥ २७ ॥ १३ विवाह ॥ २८ ॥ १४ आतेहीं १५ प्रार्थित ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ १६ कुआसिर १७ शुद्ध ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥

दुलहनि कोटा मुल्लिय, जत्थ अनुज[1] तिय[2] जामि[3] ॥
अप्पन मन रन उम्महयो, इच्छत जय आगामि ॥ ३३ ॥

॥ षट्पात् ॥

बुंदियपुर बुधसिंह सुतहिं सुनि बहुरि चलायत ॥
कोटापति लगि लोभ कहिय इम भुम्मि न आवत ॥
हम उद्यम यह करत हेत मरहट्ठन सम्मलि ॥
बिनु बल जैहो[3] लाल निठि लैहो यह चम्मलि[4] ॥
दै इष्ट सौंह इम अक्खि द्रुत बुंदीसहिं रक्ख्यो बरजि ॥
सतदोप[5] २०० दम्म[6] कछवाह सैन भेट होत यह लोभ भजि ।३४।

॥ दोहा ॥

बंधु वर्ग उमराव निज, अजबसिंह अभिधान ॥
कोइलपुर पति भेजि करि, अटक्यो नृप प्रस्थान ॥ ३५ ॥

॥ षट्पात् ॥

माधानी अजबेस आय भूपहिं इम अक्खिय ॥
गिनत अप्प रन सुगम चंड असि बर नहिं चक्खिय ॥
अप्पन परिकर अलप दुसह जैपुर वह दाहत ॥
सिहन आगसें[10] सैसहिं[11] चिन्ह अनुचित[12] असु चाहत ॥
यातैं न तुमहिं जावन उचित कोटापति यह हित धरत ॥
हठ मंत्र बुल्लि दक्खिन दलन[13] जतन लैन बुंदिय करत ।३६।
सुनत एह गिनि सत्य भूप कोटेस भरोसैं ॥
जान्यौं काका करत महत उद्यम यह मोसैं ॥
तो इनकी अब देखि बहुरि बनिहै सु बिचारहिं ॥

---

१ जहां बहिन थी २ आगे आनेवाली जय की इच्छा करता हुआ ॥ ३३ ॥ ३ ... जावो ४ भगकर यह चामल नदी कठिनाई से लोगे ५ रुपये ६ से ॥ ३४ ॥ ७ उम्मेदसिंह के गमन को रोका ॥ ३५ ॥ ८ भयंकर खड्ग ९ परगह १० सिंहों का अपराध करके ११ खरगोस १२ जीना चाहे सो अनुचित है १३ सेनाओं को ॥ ३६ ॥ १४ मुझ में बड़ा उद्यम

सुमिरी यह न सयान कुहक[1] निज काम निकारहिं ॥
नृप रहिय होत उद्योग लखि मास सत्त७बिनु भुव जतन ॥
मृगया[2]सक्त कोटा मुलक गंजत सिंह बराह गन ॥३७॥

॥ दोहा ॥

मधुकरदुर्ग[3] सुकाम किय, ग्रीखम अंत नरेस ॥
महडू[4] चारन[5] दान तँहँ, बरनी कित्ति बिसेस ॥ ३८ ॥
अमरपुराके जंगको, काव्य जथामति ठानि ॥
गीत छंद मरु बानि गत, नृपहिं सुनायो आनि ॥ ३९ ॥
सुनत भूप बखसीस किय, रीझि तरल[6] हयराय ॥
खास जरिय पोसाक पुनि, कुंडल कटक[7] सुभाय ॥ ४० ॥
सनमान्यों कबिराव कहिं, डेरा तास पधारि ॥
भयो बहुरि हत्थिय हुकम, नूतन काव्य निहारि ॥ ४१ ॥
सो गज बुंदिय तखत जब, अप्प बिराजे आनि ॥
तब दिन्नों यह अत्थ हम, भावी लिखिय बखानि ॥ ४२ ॥

॥ षट्पात् ॥

सक वेद ख वसु सोम१८०४ मास सावन तदनंतर ॥
भैंसरोरगढ सीम रमिग आखेट भूप बर ॥
पुनि भद्दव सित पच्छ आय बेघम एकादसि११ ॥
भयो जानि दुरभिच्छ बिपति चिंतत दिन दुव२बसि ॥
दरियाव नाम गजराज निज उदयनैर बिक्रय करन ॥
मुक्कल्यो पुरोहित स्वीय तब दयाराम द्विज धर्मधन[13] ॥ ४३॥

॥ दोहा ॥

जाय पुरोहित उदयपुर, गज बिक्रय तँहँ ठानि ॥

१ छली (ठग) २ शिकार में आसक्त ॥३७॥ ३ मधुकर गढ ४ चारणों की एक शाखा का नाम है ५ उस चारण का नाम है ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ६ चपल घोड़ा ७ मोती ८ कड़े अच्छी रीति से दिये ॥ ४० ॥ ९ नवीन ॥ ४१ ॥ १० यहाँ ॥ ४२ ॥ ११ जिस पीछे १२ बेचने को १३ धर्म ही है धन जिसके ॥४३॥

द्रम्म सहँस दुव२०००मुल्लके, पठये समय प्रमानि ॥ ४४ ॥
सिलु भुव सोलह१६ वरसतैं, भुकतैं आपति भार ॥
अब अवृष्टि कति दिन टिकहिं, द्रम्म ति दोय हजार २००० ॥

॥ षट्पात् ॥

सावन सूको गयउ बेर दुव२अलप वुट्ठि घन ॥
ज्यौंही भद्दव जात घोर हाकार उट्ठि घन ॥
हड्डोतिय सवार तंग ओदनैं हुव देसन ॥
चनिय आनि इहिं बेर निट्ठि निरवाह नरेसन ॥
नृप तबहि चिंति आपति धरम रवीय भटन संजुत साजय ॥
मन ओर पैठि बुंदिय मुलक गैनोलीपुर लुट्टि लिय ॥४६॥

॥ दोहा ॥

गैनोली बसु लुट्टि इम, अति बिपत्ति चहुवान ॥
तदनु दुग्ग रनथंभकी, सीमा करिय प्रयान ॥ ४७ ॥
नगर नाम खंडारि ढिग, कछुदिन बिरचि मुकाम ॥
कोटापतिको लोभ सुनि, ठग मन्न्यौं अघ ठाँम ॥ ४८ ॥
उत सु पुरोहित उदयपुर, दयाराम अभिधान ॥
पुँव्वहि रान अधीनहो, लेनिदेंस चहुवान ॥ ४९ ॥
आत जात नृप ढिग रह्यो, स्वामि धरम मनि भाव॥
तातैं बेचन संग तस, दयो हुतो दरियाव ॥ ५० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७ राशौ बुन्दीन्द्रहयमरणात्मृदुचरणाविचरणाकृदिन्द्रगढाऽऽगमना ऽश्वयाचनदेव-

---

॥ ४४ ॥ १ अनावृष्टि (दुर्भिक्ष) में २ ते (से) ॥ ४५ ॥ ३ अन्न बिना ॥ ४६ ॥ ४ धन ५ जिस पीछे ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ६ पहिले से श्री ७ उम्मेदसिंह की आज्ञा लेकर ॥ ४९ ॥ ८ दरियाव नामक हाथी ॥ ५० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में बुन्दी के पति का घोड़ा मरने से कोमल चरणों से चलकर इन्द्र गढ आना१घोड़ा मांगना और देवसिंह

सिंहनेतिकथनहड्डेन्द्रराणापुरनिवसनतदनुकूलबुन्दीजनकूर्म्मकर्तृक नियमनबुन्दीन्द्रनिमित्तमुद्राशतद्वय२००महारावप्रापणरावराजाऽर्थ- राणाहय १ पट २ खड्ग ३ प्रेषणघनाऽत्यय १ हेमंतर्त्वागमनभूभृ- त्तृतीयो ३ द्वहनकोटेशनृपोद्यमवारसम्भरमधुकरदुर्गकालक्षेपणास्म- प्रदानकविदानचारणदानप्रभुभैंसरोड़दुर्गप्रान्ताऽऽखेटक्रीडन तथेद्ब- मपुराऽऽगमनदुर्भिक्षपतनविक्रयाऽर्थदरियावगजोदयपुरप्रेषणापद्ध- र्मधरधरेशगैणोलीपुरलुण्टनरणस्तम्भदुर्गप्रान्तखराडारिपुरकिञ्चि न्निवसनकोटेशकौहकपविबोधनमेकोनविंशोमयूखः ॥ १९ ॥३००॥

॥ प्रायोव्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ षट्पात् ॥

दयाराम द्विज सहित राने इकदिन रहस्य किय ॥
साहिपुर पैं सीसोद बीर उम्मेदहु बुल्लिय ॥
स्वीय सुभट पुनि च्यारि४ प्रथम भारत१ सेनापति ॥
दुरग अग्ग देवलिय हठन जिहिं किय सालम हति ॥
देवगढ्ढ अधिप जसवंत२ पुनि संगाउत चौंडा जनँन ॥

का नहना २ हाड़ों के राजा का राणपुर में निवास करना ३ उम्मेदसिंह के अनुकूल बुंदी के लोगों का कछवाहों का कैद करना ४ उम्मेदसिंह के कारण दोसौ रुपये रोज कोटा के महाराव का पाना ५ रावराजा के अर्थ महाराणा का घोड़ा, वस्त्र और खड्ग भेजना ६ मेघों के मिटे पीछे हेमन्तऋतु के आगम में भूपति का तीसरा विवाह करना ७ कोटेश के उद्यम के समय में चहुवाण (उम्मेदसिंह का मधुगढ में समय बिताना ८ दान नामक चारण को दान देकर राजा का भैंसरोड़ गढ के प्रान्त में शि- कार खेलकर वहां से वेद्मपुर आना ९ दुर्भिक्ष पड़ने से दरियाव नामा हाथी को बेचने के अर्थ उदयपुर भेजना १० आपद्धर्म को धारण करके भूपति का गै- णोलीपुर को लूटना ११ रणस्थंभ गढ के प्रान्त में खंडारपुर में कुछ ठहरना १२ कोटा के पति का ठगपन जनाने का उन्नीसवां १९ मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीनसौ मयूख ३०० हुए ॥

१महाराणा जगतसिंह ने २ एकान्त सलाह की ३ पति ४ उम्मेदसिंह को भी बुलाया ५ अपने उमराव ६ नाम ७ वंश में

पातिदेलवाड़ झल्ला ※प्रथित राघवदेव३ निसंक रन ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

रायसिंह४ झल्ला वहुरि, नगर सादड़ी नाह ॥
इन जुत रान रहस्य किय, चित जैपुर जय चाह ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

कहिन रान कोटेस कितव दुवरवेर बदलि गय ॥
अब पुनि इक्कत होन चवेहि पठवाय दूत चय ॥
वंचककों विसवास करन काको चित चाहत ॥
दयाराम सुनि करिय अरज करजोरि उमाहत ॥
प्रतिअब्द आत श्रिपद्वार वह अन्नकूट सद्दन समय ॥
तब चलन तत्थ अप्पन उचित माधव सहित निहारि नय ३
हरि प्रतिमाके अग्ग तवहिं कोटेसहिं अक्खहिं ॥
तुम वंचक चलबुद्धि मित्र भावहि हम रक्खहिं ॥
जो अब इक्कत होत ततो हरि इष्ट सपथ करि ॥
सदा साम लिखि देहु अब न डरपहु कूरम अरि ॥
छंदं इम लिखाय कोटेसको पुनि प्रसन्न मरहट्ठ करि ॥
खंडुव मल्लार हुलकर तनय बुल्लहु समर सहाय धरि ॥४॥

॥ दोहा ॥

दयाराम इम अरज करि, थप्पो यह दृढ मंत्र ॥
सुपहु रान सुनि स्वीकरिय, सुभटन सहित स्वतंत्र ॥ ५ ॥

॥ सोरठा ॥

तदनंतर नृप रान, देवकरन कहँ दूर करि ॥
पंचोली सु प्रधान, नाम भवानीदास किय ॥ ६ ॥

※प्रसिद्ध ॥ १ ॥ २ ॥ १ छल २ बदलना है ३ दूतों का समूह भेजकर ४ किसकी का ५ प्रतिवर्ष ६ मानसिंह क्रोधन ॥ ३ ॥ ७ मूर्ति के आगे ८ सौगन (शपथ) ९ पत्र १० बराबर करके ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

॥ षट्पात् ॥

इत जैपुर पहिलैंहि मरिग खत्रिय राजामल ॥
*कोबिद केसवदास हुतो सुत तास मंत्र बल ॥
तब नृप ईश्वरिसिंह किन्न वह सचिव सिरोमनि ॥
पिसुन नरन तिहिं पिठ्ठि भूप प्रति इम चुगली भनि ॥
हे नृप अमात्य केसव कितव मंन्नैं तुमहिं न मंत्र मद ॥
याके उमेद माधव अरथ छन्नैं आवत जात छद ॥ ७ ॥
सुनि यह ईस्वरिसिंह मूढ तत्व न पहिचानिय ॥
काकन कथित विधाय हंस मारन मत मानिय ॥
खत झूटे लिखि खलन नृपहिं दिन इक्क बताये ॥
मूरख सच्चे मन्नि गडे औगुन बहु गाये ॥
केसव सु मंत्रि बुलवायकैं कुनृप तास अपहास करि ॥
अक्खी कुमंत्रि ए दल लखहु सुनि केसव लिय नैंन भरि ।८।

॥ दोहा ॥

अक्खी केसव अबहि नृप, निश्चय करहु निदान ॥
जो ए दल मेरे लिखे, लेहु ततो मम प्रान ॥ ९ ॥
कूरम तब निश्चय करिय, निकसे पत्र असत्य ॥
बिनु आगस जो मारतो, होतो ससचिव हत्य ॥ १० ॥
तदपि कुम्भ लिय सचिवपन, केसव करिय वकील ॥
पठयो दक्खिन नन्द पहँ, सिखंई मन्नि कुसील ॥ ११ ॥
मैंहानी उपटंक इक, हरगोविंद स नाम ॥
किमयउ मुसाहब बनिक वह, कूरम नृप हित काम ॥ १२ ॥

---

* चतुर १ उम्मेदसिंह और माधवसिंह के लिये २ पत्र ॥ ७ ॥ ३ फहगा करके ४ दुष्टों ने ५ वे पत्र ॥ ८ ॥ ६ इनका कारण ॥ ९ ॥ ७ बिना अपराध ८ सचिव सहित मारा जाता ॥ १० ॥ ९ तोभी ईश्वरीसिंह ने १० सिखाई हुई बात मानकर ११ खोटे स्वभाववालों ने ॥ ११ ॥ १२ नाटाणी उपटंक (पदवी) धारा वैश्य ॥ १२ ॥

॥ षट्पात् ॥

पुत्ती[1] इक्क१ तिहिं गेह रूप जुब्बन गुन मत्ती[2] ॥
बत्ती[3] बय छबि तास पास कूरम नृप पत्ती[4] ॥
कत्ती[5] सम सुनि काढिग छेकि पंच५ हि [6]सर छत्ती ॥
दुत्ती[7] दासिय भेजि प्रेमपासिय गर घत्ती[8] ॥
लंपटहिं [9]काम जुत्ती लगत रत उत्ती[10] चिर चंड रेय[11] ॥
सुत्ती समीप चाही सुनक[12] कुत्ती जिम कत्ती[13] समय ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

मगन पुब्ब अनुराग[14]मैं, लगन मिलन द्रुत लग्गि ॥
कुम्म पुरंदर[15]कै किरी[16], अंदर बम्मह[17] अग्गि[18] ॥ १४ ॥
दूतीजन पठवाय द्रुत, साम[19] उपाय प्रसारि ॥
आनी नृप ढिग अंगना[20], बानी बिनय[21] बिथारि ॥ १५ ॥
राजकाज भुल्ल्यो रसिक, छई मदन सिर छाँह ॥

---

१ उस हरगोविंद के घर में उसकी पुत्री रूप, यौवन और गुणों में २ मस्त थी उस की अवस्था और शोभा की ३ वार्ता कछवाहों के राजा (ईश्वरीसिंह) के पास ४ प्राप्त हुई (पुगी) ५ वह वार्ता सुनते ही तरवार के समान कामदेव के पांचों ६ बाण [यथा "द्रवणं शोषणं बाणं तापनं मोहनाभिधम्॥ उन्मादनं च कामस्य बाणाः पंच प्रकीर्तिताः"] छाती को छेदकर निकल गये ७ दूती दासी का भेजकर प्रेम की पासी गले में ८घाली इस लंपट के ९कामदेव की जुती लगते ही १०रत क्रीड़ा में उस चिर वेग (बहुत समय तक स्खलित नहीं होनेवाला) और ११ भयंकर वेगवाले ने जैसे १२कुत्ता, कुत्ती को १३कार्तिक मास के समय में चाहै तैसे उस हरगोविंद की पुत्री को समीप बुलानी चाही ॥ १३ ॥ १४ पूर्वानुराग (मिलने से पहिले की प्रीति) में मग्न होकर १५ कछवाहों के इन्द्र के १६गिरी १७जैसे अहल्या के कारण इन्द्र और ब्राह्मण (गौतम ऋषि) में गिरी थी तैसे अथवा अहल्या के कारण इन्द्र के और सरस्वती के कारण ब्रह्मा के श्राप की अग्नि पड़ी थी सोही अग्नि ईश्वरीसिंह के पड़ी अर्थात् उक्त दोनों स्त्रियों से व्यभिचार करने के कारण दोनों देवों को श्राप से खिन्न होना पड़ा था तैसे ही ईश्वरीसिंह को भी इसी कारण प्राण देना पड़ा १८अग्नि ॥ १४ ॥ १९ मिलने का २० उस स्त्री को २१ विशेष नम्रता की बाणी फैलाकर ॥ १५ ॥

कूरम डारी कंठ अब, बनिक सुताके बाँह ॥ १६ ॥
रत्ति[1] जु तिय नृपढिग रहत, प्रात जात निज गेह ॥
दिन बिच तिहिं देखैं बिनाँ, दुमनें[2] रहैं थकि देह ॥ १७ ॥
प्यारीकौं दिन बिच प्रकट, जो बुल्लैं निज पास ॥
जनक[3] तास तो जानिकैं, बिरचै राज्य बिनास ॥ १८ ॥
बिनु देखैं निमिख न बनैं, देखन दुल्लभ दीह[4] ॥
यातैं बिरचि उपाय इक१, लोपी लज्जा लीह[5] ॥ १९ ॥
जैपुर पिक्खन ब्याज[6] करि, प्यारी पिक्खन काज ॥
बनवाई महलान बुरज. तुंगनकी सिरताज ॥ २० ॥
जातैं सब जैपुर नगर, दिट्ठि परत अध[8] आय ॥
तक्कैं प्यारिय जाय तँहँ, छन्न मदन इम छाय ॥ २१ ॥

॥ षट्पात ॥

सक कृत नभ बसु सोम१८०४ बिसद बाहुल पड़िवा१पर ॥
दरसन हित कोटेस गयउ श्रियद्वार उमँगि अँर[11] ॥
करन रान अनुकूल पत्त[12] लिखि भेजि उदैपुर ॥
बुल्लिय माधव सहित धरा संगर[13] थंभन धुर ॥
सुनि पत्त[14] रान माधव सहित मुदित होय आयहु मिलन ॥
गुन३ कोस एह सम्मुह गयउ मिलिय प्रीति अनुकूल मन२२

॥ दोहा ॥

तीन३हि नृप नयरीति[15] तकि, रचि मिलाप पटु प्यार ॥
हरिमंदिर एकत्त[16] हुव, करन मंत्र श्रीद्वार ॥ २३ ॥
कहिय रान कोटेस प्रति, बचन तुमारो मोघ[17] ॥

॥ १६ ॥ १ रात्रि में यह स्त्री २ उदास ॥१७॥ ३ उस स्त्री का पिता॥१८॥ ४ दिन में ५ सीमा ॥ १९ ॥ ६ मिस ७ ऊँचापन की ॥ २० ॥ ८ नीचे ॥ २१ ॥ ९कार्तिक सुदि एकम १० नाथद्वारे ११ शीघ्र १२ पत्र१३युद्ध करके१४पत्र॥२२॥ १५नीति की रीति को देखकर १६ इकट्ठे ॥ २३ ॥ १७ झूठा

बदलें पुव्वहि इक्क बनि, अद्दरिकैं अघ ओघ ॥ २४ ॥
यातैं अबलग रावरो, बनैं न मन बिस्वास ॥
कोटापति यह सुनि कहिय, हुव पलटैं अपहास ॥ २५ ॥
अब गोवर्द्धननाथ यह, इष्ट साखि धर आँहि ॥
कबहु न बदलैं सपथ करि, ऐसैं कहिय उमाहि ॥ २६ ॥
सपथ अक्खि इम रान कर, बचन दैन लगि हड्ड ॥
अटॅकि रान तब हड्ड कँहँ, अक्खिय दै असि अड्ड ॥ २७ ॥
तुमरी बुंदिय आत कैं, कै इनकों जयनैर ॥
तातैं लेहु रु देहु तुम, बचन दोहु२ तजि बैर ॥ २८ ॥
मैं परमारथ तक्कि मन, करत दुहुँन२ उपकार ॥
यातैं लैन न उचित अरु, दैनहिं बचन उदार ॥ २९ ॥
यह कहि दोउन२ हत्थ गहि, दयो बचन निज रान ॥
सुनि माधव१ कोटेस२ मिथ, दिय लिय बचन निदान ॥३०॥
रान बचन तिनको नलिय, तिनकों दिय गहि तेग ॥
तिम भट सचिवनकोहु तँहँ, बचन दिवायउ बेग ॥ ३१ ॥
किय रहस्य भियहार इम, अधिपन मन धन अप्पि ॥
मरहट्ठन चिंतिय मिलन, जैपुर संभ रन थप्पि ॥ ३२ ॥
रान वकील खुंमान१ तब, रानाउत किय त्यार ॥
मरहट्ठन ढिग मुक्कलन, उभय२ भुम्मि उपकार ॥ ३३ ॥
माधवहू तस संग दिय, निज वकील नरनाह[12] ॥
गोगाउत हम्मीर कुल, प्रेमसिंह कछवाह ॥ ३४ ॥
माधव दम्म हिलक्ख२००००० दिय, हुलकर हित तस संग ॥

१पहिले और२पाप का समूह॥२४॥२५॥३साक्षी धर है४सौगन्द शपथ करके॥ २६ ॥ ५कोटा के महाराव को रोककर ६ तरवार बीच में दी॥२७॥ ७माधवसिंह को ॥ २८ ॥ २९ ॥ ८ परस्पर (दोनों ने) ९ कारण सहित ॥ ३० ॥ ३१ ॥ १० सं ॥३२॥ ११खुमाणसिंह॥३३॥१२हे राजा रामसिंह वा नरनाथ (माधवसिंह)ने॥३४॥

उभयर वकीलन भेजि इम, आये निज निज द्रंग[1] ॥ ३५ ॥

॥ षट्पात् ॥

रान वकील खुमान१ प्रेम१ माधव वकील दुव२ ॥
नगर कालपी जाय सेन दक्खिन सम्मलि हुव ॥
दुवहि लक्ख २००००० दै दम्म[2] तुष्ट[3] हुलकर मलार किय ॥
जैपुर समर सहाय तनय खंडुव तस मंगिय ॥
सुनि यह मलार सुत सज्ज करि रन सहाय लगि मुक्कलन
राणांजि रामचंद्र२ सु तबहि अक्खिय उचित सहाय नन[4]३६
रामचन्द्र इम कहिय धरहु श्रुति[5] कथ मलार ध्रुव ॥
अप्पन[6] पति श्रीमंत अग्ग जयसिंह मित्र हुव ॥
जैपुर सन हित करन बचन तिन दिय कूरम कर ॥
वह तुम मेटत अज्ज धनिय कृत[7] भुल्लि लोभ धर ॥
ईस्वरीसिंह सम्मलि सबहि हैं पति किंकर तुम रु हम ॥
समुझाय रान माधव सबन दब्बहु अरिन प्रचंड दम[8]॥ ३७ ॥
धकि[9] हुलकर यह सुनत सुट्ठि असिबर कर मंडिग ॥
अधर कंप अंकुरिग[10] तानि मुच्छन घन तंडिग[11] ॥
कहिय अग्ग जयसिंह लिखित हत्थन[12] करि अप्पिय ॥
रानाउति भव[13] पुत्त थिर सु जैपुर पति थप्पिय ॥
जयसिंह वचन यह रक्खि हम माधव सिर छत्रहिं धरत ॥
लग्गत यहै न अच्छी तुमहिं कुटिल लुब्धि[14] अनुचित करत३८
राजामल कर कवल[15] बहुत चक्खिय तुम स्वानन[16] ॥
जातैं अटकत जंग बिरचि नय हीन बिधानन[17] ॥

---

१ अपने अपने नगरों में ॥ ३५ ॥ २ रुपये देकर ३ प्रसन्न ४ सहाय देना उचित नहीं है ॥ ३६ ॥ ५ कहना सुनो ६ अपना ७ स्वामी के कार्य को भूल कर ८ भयंकर दंड से ॥३७॥ ९ क्रोधित होकर१०होठ में कंप होनेलगा ११गर्जना की१२अपने हाथों का किया लेख१३राणावति से उपजा हुआ पुत्र १४ लोभी ॥ ३८ ॥१५ग्रास (निवाला)१६कुत्तों ने १७ नहीं करने योग्य कार्य करके

तुम जावहु तिन संग हम सु माधव सहाय हुव ॥
कहि इम अक्खिय कुच्च धमकि आनक[1] निसान धुव ॥
दल सुभट पंच५ मरहट्ठ मिलि दुहुँ२ दिस रिस मोचन[2] करिय
परगनाँ पंच५ माधव अरथ दैन अक्खि हित अनुसरिय ।३९।
रामचंद्र प्रति कहिय बहुरि हुलकर मल्लारहु ॥
बंटि दिवावत अवनि[3] कछुक माधव हितकारहु ॥
तिम बुंदिय रहि है न लग्गि संभर[4] हित लैहैं ॥
अब बरजहु जो एस देस तिलमत्त[5] न दैहैं ॥
यह मन्नि सबन पठये तबहि निज वकील जैपुर संजव[6] ॥
साँहस[7] मिटाय सामहिं करन समुझावन कूरम कितव[8]४०॥

॥ दोहा ॥

रामराय१ मुनसी निज सु, रामचंद्र पठवाय ॥
निम्मराज२कटक्या यह सु, पठयो हुलकर राय ॥ ४१ ॥
तिन जाय रु कूरम नृपहिँ, बुंदिय छोरन अक्खि ॥
पंच५ परगनाँ अनुज हित, बंटिदैन रस रक्खि ॥ ४२ ॥
इत हुलकर अप्पन तनय[9], खंडू नामक बीर ॥
पठयो माधव राँन प्रति[10], हित सहाय हमगीर ॥ ४३ ॥

॥ षट्पात् ॥

सजि अनीकैं[11] दरकुंच चलिय खंडुव मलार सुव[12] ॥
वजि आनक बंबीलैं[13] भचक्कि बिखरिय दरार भुव ॥
काकोदैर[14] फन फटिय कोल दंतुलि बररक्किय ॥
सुररक्किय वपु कमठ चोट रीढैंक[15] चररक्किय ॥

१ नगारे बजाकर २ दोनों ओर का क्रोध छुडाया ॥ ३९ ॥ ३ भूमि ४ चहुवाण (उम्मेदसिंह) के ५ तिल मात्र ६ शीघ ७ हठ छुडाकर मेल करने के लिये ८ ईश्वरीसिंह ठग को समझाने को ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ९अपने पुत्र को १०माधवसिंह और राणा जगत्सिंह के पास ॥४३॥ ११सेना १२मलार का पुत्र १३बंबी (नगारे) १४ शेषनाग के १५ पीठ

गढगढन बत्त फुट्टिय सहज बढि विचार भूपन बिदित ॥
मल्लार सुवन जावत लरन माधव रान सहाय हित ॥ ४४ ॥
इम खंडुव दरकुच्च आय कोटा मिलान दिय ॥
महाराव लखि समय जाय सम्मुह बधाय लिय ॥
चारन भूपतिराम मुख्य निज सचिव संग करि ॥
दिय अनीक तिन सत्थ धीर सुभटन हरोल धरि ॥
पुनि मिलिय आय नृप रान पँहँ बुंदीसहु तँहँ बुल्लि लिय ॥
साजि सेन लरन माधव सहित तजि मेवार प्रयान किय ४५

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ बुन्दीशपुरोहितदयारामसहितराणाचतुर्मं ४ न्त्रिमन्त्रणसचिवदेवकर्ण १ भवानीदास १ परिवर्त्तनजयपुरसचिवमरणपैशून्यप्रेरितप्रभुप्रज्ञाकेशवदासगौणाऽधिकारप्रापणनट्टाणयुपटङ्किवणिग्घरगोविन्दमुख्यसचिवीभवनतत्पुत्रीश्वरीसिंहमतङ्गमिथुनपरस्त्रीपुरुषसङ्गदोषगर्त्तपतनधर्मनिगडत्रोटनराणा१माधवसिंह२कोटेश३श्रीद्वारसमागमननारायणनिलयशपथशंसनमहाराष्ट्रसाधनसाधकजगत्सिंह १ माधवसिंहा २ऽधिकारिगमनतन्महाराष्ट्रसम्मिलनराणाज्ञि १ रामचन्द्र २ मल्लार

॥४४॥१ मुकाम २ सेना ३ बुला लिया ॥ ४५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में, बुंदी के राजा के पुरोहित दयाराम सहित महाराणा का चार मंत्रियों से सलाह करना और देवकरण को दूर करके भवानीदास को प्रधान बनाया १ जयपुर के सचिव (राजामल) का मरना और चुगली करने वालों की प्रेरणा की बुद्धि से स्वामी का केशवदास को छोटा अधिकार देना और नाटानी पदवी वाले बनिये हरगोविन्द का सचिव होना २ उस हरगोविन्द की पुत्री और हाथी रूपी ईश्वरीसिंह इन दोनों का, परस्त्री से पुरुष के और पर पुरुष से स्त्री के संग के दोष से, धर्म रूपी जंजीर को तोड़ कर खड्डे में गिरना ३ राणा जगत्सिंह, कछवाहा माधवसिंह और कोटा के पति का नाथद्वार में मिलना और ईश्वर के मंदिर में सौगन करना ४ मरहठों के साधन के अर्थ राणा जगत्सिंह और माधवसिंह के अधिकारियों का जाना और उन का मरहटों से मिलना ५

३ वाक्यविसरीकरणपुनरसम्मिलनपत्त्रद्वय २ दूतजयपुरप्रेषणाहुल करपुत्रखड्गराणासहायगमनकोटासैन्यसहितबुंन्दीन्द्रतरसम्मिलनं विंशो २० मयूखः ॥ २० ॥३०१॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ षट्पात् ॥

सक कृत नभ वसु सोम१८०४ मास फग्गुन पख उज्जल॥
नृप माधव उम्मेद सहित खंडुव चढि सब्बल ॥
रान कटक सब संग लहि रु दरकुच्च चलायउ ॥
अति गरूर जनु गरुर अहिन उप्पर उफनायउ ॥
उततैंहु सुनत कछवाहको चंड कटक सम्मुह चलिय ॥
दिस दिसन वत्त फुट्टिय दुसह खंड चउद्दह१४खलभलिय॥१॥

॥ दोहा ॥

नट्टानी उपपद वनिक, हरगोविंद चमूप ॥
चउ४ अवयव दल लै चल्यो, भिरन उदैपुर भूप ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

दगि तोपन लगि लाय मचिग दुवर दल मिलि संगर ॥
इत मेवारन मुकुट इत सु ढंकन ढुंढाहर ॥
राजमहल पुर सीम भीम प्रतिभट भट भिंटन ॥
हय उठाय हरवल्ल वढ्ढिग दुवर दिस अरि बिंटन ॥

राणाजी, रामचन्द्र और मल्लार के वाक्यों का परस्पर भेद करना और फिर सामिल होकर मरहठों के दोनों पत्रों का अपने वकीलों को जयपुर भेजना १ कुवाकर के पुत्र खड्ग का राणा की सहाय पर जाना और कोटा की सेना सहित बुन्दी के पति के सामिल होने का बीसवां २० मयूख समाप्त हुआ और आदिसे तीनसौ एक ३०१ मयूख हुए ॥

१ सेना सहित २ मानों गरुड़ ३ भयंकर सेना ॥ १ ॥ ४ सेनापति ५ हाथी, घोड़े, रथ, पैदलोंके इस चार अंगोंवाली सेना को लेकर चला ॥ २ ॥ ६ युद्ध ७ भयंकर शत्रुओं के ८ वीर मिलने को

जिम बिप्र निमंत्रन सुनि चलत इमहि अग्गि जाठर[1] जगिय॥
साकिनी प्रेत खेचर सकति लाभ असन आवन लगिय ॥३॥
खेत्रपाल खिलखिलिय मिलिय नारद महती[2] रैव ॥
काली गन किलकिलिय भिलिय बनि सदृस[3] आनि भव[4]॥
पिलिय अश्व दुवर दलन झिलिय असि[5] बाढ बाढ झरि ॥
गिलिय गोद गिद्धनिन खिँलिय[6] खूबिय हिय अच्छरि ॥
बढि अंधकार छादित बिँयत[7] व्यवहित[8] बिरचि पतंग[9] पहु ॥
लुट्टिय हरोल हुलकर भटन कूरम कटक्क बहीर बहु ॥ ४ ॥
हय उठाय हुलकर समेत हक्कनपति हंक्किय ॥
अतिबल तेग उताल झरत टोपन झननंकिय ॥
कतिक मारि भुव छाय ढारि ढँढ्ढर[10] ढुंढारन ॥
पोखे नृप पलचरन[11] बहुल[12] पल मेद[13] बिथारन ॥
असि बाढ चक्खि इक बेर अरि लग्गे प्रतिमग[14] नीर लजि॥
मिलि मिलि सिचान आवत मनहु पारावत[15] गन धरक्कि भजि ५
जिम पारद[16] मिलि अग्गि पिक्खि निज कटक होत इम ॥
सेनापति गज सहित बनिक मंड्यो अंगद तिम ॥
कुल्ल्यो रे निरलज्ज भजत मुच्छन मुँह[17] धारत ॥
बनिक बैन यह सुनत फिरे कूरम अति आरत[18] ॥
लिय सबन बिंटि पुनि बनिक गज पै[19] न लगत अग्गैं चरन
जोगिंद चित्त सविकल्प[20] जिम रहिय रुक्कि पिक्खत मरन ।६।

१जठराग्नि॥३॥२महती नामक वीणा का शब्द करके ३ इन कहे हुओं के तुल्य (बराबर)४शिव५नरवारों के घाव पर तरवारें६प्रफुल्लित हुए७आकाश में९सूर्य प्रभु को८छुपादिया॥४॥१०अस्थिपंजर (हाडों के पिंजरे)११मांस खानेवालों को १२बहुत १३मांस और चरबी फैलाकर १४उलटे मार्ग१५कपोतों का समूह ॥ ५ ॥ १६अग्नि से पारा उडै जैसे१७मुख पर१८पीड़ित१९परन्तु२०योग शास्त्र में दो प्रकार की समाधि लिखी है जिन में एक तो सविकल्प समाधि है जिस में अद्वैत का भान होने पर भी द्वैत भासता है, जैसे किसी विष्णु, शिव आदि देव का अधिष्ठान करके समाधि लगाई जाती है उस योगी का चित्त उत

तिमिर घोर तर्ते मध्य पार अप्पन भट भान न ॥
माधव[2] के दलमाँहिँ पिक्खि पचरंग निसानन ॥
जैपुरके तिन्ह जानि रान दल[3] भजिग भीत अति ॥
कोटा दल पुनि भजिग सहित चारन सेनापति ॥
तँहँ भयउ सोर कोटा भजिग सुनि पित्थल बुल्ल्यो सु चहि
हम भुजन आहि[6] कोटा अखिल तिन ठहैं भग्गो न कहि ७
कोकिलपुर[7] पति कुमर भटन पित्थल चूड़ामनि ॥
महाराव उमराव विदित बुल्ल्यो अंगद बनि ॥
चारन मग्गनहार भज्यो कारज अचिज्ज नहिँ ॥
पै हम हड्डन पयन आर्डडुंगर अवलंबहिँ ॥
यह अक्खि सेन भज्जत मुरयो जिम अनिमिष उलटे उंदक
झपटाय बाजि पैंवि जिम परयो ढुंढाहर सिर धारि धक्क ।८।
भजत सेन लखि सजव पिट्ठि लग्गिय जैपुर दल ॥
मुरि पित्थल तिम मध्य खग्ग झारिय रचि मंडल[12] ॥
जिम बिरेकैं[13] औषधिय उदर इम मथिय सत्रु सब ॥
कतिक कंपि लकतकैंत[14] कतिक छक्कत बक्कत बब[15] ॥
[16]सँव्यापसव्य करि श्राद्ध बिच जजमानहिँ जिम करत द्विज ॥
तिम किय अनेक परबस कुमर समर बिथारिय नाम निज९
जिम नर तिम सैंलोट गिरत हैवर तिम गैवर ॥

देष को छोड़ कर आगे नहीं पढता, और दूसरी निर्विकल्प समाधि है जो चैतन्य स्वरूप पर अन्त में लगाई जाती है सोही मोक्ष का साधन है ॥ ६ ॥ १ बिस्तार के २ माधवसिंह कछवाहे की सेना में ३ राणा की सेना ४ कोटा की सेना भगी ५ पृथ्वीसिंह ६ सब कोटा हमारे भुजों पर है ॥ ७ ॥ ७ कोगला पुर के पति का ८ आडावळा नामक पर्वत लटकता है ९ मच्छी १० उलटे पानी में ११ वज्र के समान ॥ ८ ॥ १२ चक्र (गोलकुंडा) १३ दस्त लाने वाली दवाई पेट को मथें जैसे १४ धूजकर देखते हैं १५ अयाच्य शब्द (कलराने का शब्द) १६ सव्य और अपसव्य ॥ ९ ॥

जिम तोमर तिम खग्ग बिहासि झारत कुमार बर ॥
लटकत उरझि रकाब कतिक भटकत प्रमत्त[1] गति ॥
खटकत हड्डन बाढ मनहुँ चटकत गुलाब तति[2] ॥
घुम्मत अचेत घायन कतिक कतिक आय पायन परिय ॥
कछवाह कटक सब अजब सुव[3] गजबसिंह[4] गड्डरि करिय॥१०॥
तुट्टि तुट्टि सिर उडत कढत सर[5] फुट्टि बकत्तर ॥
रुहिर[6] छिंछि नभ चढत बढत कलकल[7] धर अंबर ॥
काली खप्पर भरत फिरत सिव नच्च बिसारद[8] ॥
महती[9] तुंबा सिर लगाय घुम्मत इत नारद ॥
पित्थल अनीक फारत बढिग मरद उतारत गजन मद ॥
डाकिनि डरात फारत बदन[10] किलकारत भैरव भयद[11] ॥११॥
घनैं रिपुन रमनीन[12] झारि कंकन कुबेस[13] किय ॥
घनैं रिपुन[14] रमनीन बिंब बंटन पखान[15] दिय ॥
घनैं हयन घन घाय कियउ मँहगे सौदागर ॥
घनैं गजन सिर फारि रंग मुत्तिन[16] किय आगर[17] ॥
भुजदंड भीरि बासुकि उरग मंदर[18] असि गहि उच्च मन ॥
पित्थल कुमार नागर[19] कियउ ढुंढाहर सागर मथन ॥१२॥
पहर इक१इम कुमर लरिग धारन धपाय धक ॥
फट्टिग सिर चोफार बदन चोफार लोह छक ॥
मनहुँ बीर बिधि[20] परखि हरखि अद्वैत[21]२ छाप दिय ॥

---

१ बावले होकर फिरते हैं २ पंक्ति ३ अजबसिंह के पुत्र ४ गजब करने वाले सिंह ने ॥ १० ॥ ५ बाण ६ रुधिर की ७ कोलाहल ८ नृत्य में निपुण ९ महती नामक नारद की वीणा का १० मुख ११ भयंकर ॥ ११ ॥ १२ स्त्रियों के १३ खोटा (विधवापन का) वेस १४ बहुत शत्रुओं की स्त्रियों को घावों पर बांधने के अर्थ नींब बांटने को हाथों में १५ पत्थर दिये. युद्ध में १६ मोतियों के १७ ढेर (समूह) १८ मंदराचल रूपी तरवार को लेकर १९ विष्णु ने ॥ १२ ॥ २० ब्रह्मा ने परीक्षा करके २१ ऐसा दूसरा वीर नहीं है ऐसी छाप दी

रायसिंह ३ झल्ला बहुरि, नगर सादड़ी नाह ॥
पुनि बुंदीस पुरोहित सु, दयाराम४ चित चाह ॥ ३ ॥

॥ षट्पात् ॥

इम च्यारि४न करि मुख्य रान*पृतना पुनि पिल्लिय ॥
सजव साहिपुर आय मुदित निज दल सह मिल्लिय॥
उततैं ईस्वरिसिंह पिट्ठि दब्बत द्रुत आयउ ॥
भिल्लहड़ा पुर लुट्टि कहर मेवार मचायउ ॥
धनवंत वनिक कारा पटकि कुप्पि नगर श्रीहत करिय
वाटिका मनहुँ अहिवल्लरिन चपल आनि वस्तनँ चरिय ।
मेवारन किय मंत्र सुनत यह वत्त नीति सह ॥
कटक प्रचुर कछवाह अलप अप्पन अनीक यह ॥
हुलकर१ कोटा २ एहु उभय२ बिस्तर बिनु आये ॥
बित्त रहित बुंदीस अवनि हित प्रसभ असाये॥
यातैं न संपरायहि उचित रहिहै अवनि तिर न ।
सकुटुंब सकल नृप जुत करहिं कुंभिलमेरु निवास कि
तखतसिंह यह सोधि जान लग्गो कूरम प्रति ॥
सुनि यह खंडुव साम अक्खि कुप्प्यो हुलकर
बुल्ल्यो पुनि भुज ठोकि सजव आपे संगर भ्रम ॥
अब जो साम उपाय तलो तुम माँहिं नाँहिं हम ॥
सुनि तखतसिंह हुलकर कथित दयाराम तँहँ मुक्कलिय॥
आक्खिय वहै न नँय समयपँटु समुझावहु कहि प्रचुर प्रिय ।

॥ ३ ॥ * फिर सेना भेजी ॥ शीघ्र १ कैद में २ लक्ष्मी हीन ३ (वर्गीची) में ४ नागरबेल को ५ बकरों ने चरी ॥ ४ ॥ ६ अपनी सेना ७ विस्तार के ८ धन रहित ९ भूमि के अर्थ १० नहीं समावे ऐसा हठ युद्ध १२ लड़ने से भूमि तिलमात्र नहीं रहैगी १३ महाराणा सहित १४ यहां गहन प्रदेश कुंभलगढ में जाकर बसेंगे ॥ ५ ॥ १५ ईश्वरीसिंह के १६ क्रोध करके १७ युद्ध के श्रम से १९ हे समयचतुर यह (युद्ध १८ नीति नहीं है २० बहुत प्यारी बातें कह कर ॥ ६ ॥

तबहि जाय *भूदेव कहिय बुंदीस पुरोहित ॥
तुम दिल्लिय †तिय जार कुमर खंडुव चिंतहु चित ॥
अवसर कोप इहाँ न ‡स्वामि साहुव कुल रानाँ ॥
तुरकनतैं तिन बेर खुट्टि सब गयउ खजानाँ ॥
सज्जहिं जु अज्ज रन§कुम्मसह तो तुम ढिगहु अनीक¶मित॥
कछुदिन बिहाय दल इक्क करि बहुरि सत्रु जित्तहि बिदित७

॥ दोहा ॥

बिरुदावत इम फुल्लि सठ, सुनि दिल्लिय तिय नाम ॥
झुल्ल्यो हमहिं तटस्थ[२] करि, करहु बिप्र सब काम ॥ ८ ॥

॥ षट्पात् ॥

सुनि सत्वर[३] यह बिप्र आनि अक्खिय तखतेसहिं ॥
हुलकर सम्मत आँहि मिलहु तुम कुम्म[५] नरेसहिं ॥
तबहि जाय तखतेस अरज कूरम प्रति अक्खिय ॥
मरहट्ठन आदेस[६] कहहुँ इहिं दिन किहिं नक्खिय ॥
तसमात धारि खंडुव कथित तुम भुव हम पत्ते लरन ॥
तिहिं हेतु आहि यह दोस तैंस नृप लुट्टहु मेवार नन ॥ ९ ॥
[१२]नति पूरब यह सुनत कुम्म अनुकंप[१३] बिहसि किय ॥
भिल्लहड़ापुर बनिक[१४] धनिक पकरे ति छोरि दिय ॥
उपालंभ[१५] लिखवाय पत्र पठयो रानाँ प्रति ॥
किय पच्छो दरकुंच गरद रवि ढंकि मुदिर[१६] गति ॥
सुचि[१७] पक्ख चैत विक्रम सक[१८] ग पंच गगन बसु चंद्र१८०५मित

---

*ब्राह्मण ने †दिल्ली रूपी स्त्री के उपपति ‡तुम्हारे पति के कुल वाले राणा थे §कछवाहे के साथ ¶सेना थोड़ी है १सेना एकत्र करके॥७॥२किनारे (अलग) रखकर ॥८॥ ३शीघ्र ४है ५ ईश्वरीसिंह से ६ हुकम ७ किसने डाला है ८इस कारण ९ खंडू का कहना करके १० तुम्हारी भूमि में हम लड़ने को प्राप्त हुए ११ यह दोष खंडू का है ॥ ९ ॥ १२ नम्रता पूर्वक १३ दया १४ धनवान् बनियों को पकड़े थे छोड़दिये १५ ओळंभा १६ मेघ के समान १७ शुक्ल पक्ष १८विक्रम के शक

नृप किय प्रवेस जैपुरनगर मेवारन आक्रमि मुदित ॥

॥ रोला ॥

जगतसिंह इत रान खास इक रूपमल्ल१ हय ॥
साखति पुरट समेत रुचिर कुल जात मनोरथ ॥
इक खासा तरवारि१ भूप संभर हित भेजिय ॥
रान सचिव भट लै रु पहुँचि बुंदिय अनीक प्रिय ॥ ११ ॥
भिंडरपुर पै खुसाल१ तँखत-जयसिंहरान सुत२ ॥
नगर सादड़ीनाह गयसिंह३हु बिचार जुत ॥
दयाराम४ पुनि द्विजनि हड्डबुन्दीस पुरोहित ॥
आये ए नृपअग्ग सचिव च्यारि४हु नय सोहित ॥ १२ ॥
इन हय१ असि १करि नजरि बीरपन बिरुद बिथारिय ॥
प्रीति सहित सुनि बचन लैन भूपति अवधारिय ॥
स्वीकरि पुनि निज सुभट बीर बुंदिय दिस पिल्लिय ॥
तिन आय रु निज बिखय ठोकि कूरम चर ठिल्लिय ॥१३॥
हो हाकिम यहँ बनिक सचिव जैपुर कुल बंधव ॥
थानसिंह थू उचित लैन पटु दैनपटु न लव ॥
सो निकस्यो करि लैन नियति बल नृपदल पिक्ख्यो ॥
लिन्नों पकरि निलज्ज सपथ वंदन तब सिक्ख्यो ॥ १४ ॥
कारा सहि कति काल दम्म पुनि तीस सहँस३०००० ॥
तब छोरयो वह त्रसित जानि दुल्लभ मन्नत जिय ॥

में प्राप्त अर्थात् वैक्रमीय १ घेरने से प्रसन्न होकर ॥ १० ॥ २
३ सुंदर कुल में उत्पन्न, मन के वेगवाला ४ उम्मेदसिंह के अर्थ ५ बुन्दी की सेना में ॥ ११ ॥ ६ भींडर का पति खुशालसिंह ७ तख़्तसिंह ८ ब्रह्मा (ब्राह्मण) ९ उम्मेदसिंह के आगे १० शोभित ११ ॥ १२ ॥ विचार किया १३ नज़र अपने देश में १४ नौकरों को ॥ १३ ॥ १५ जयपुर के सचिव के कुल का भाई १६ थूकने के (धिक्कार के) उचित १७ लेने में चतुर १८ देने में लेश मात्र भी नहीं था १९ हासिल लेने को २० भाग्य के बल से २१ उम्मेदसिंह ने देखा २२ सौगन करना और नमस्कार करना ॥ १४ ॥

छिन लुंटिय सब बिखय अमल बसु८ मास अरोक्यो ॥
नृप भट बहुरि निकासि पुजक कूरम दल मोड्यो ॥१५॥

॥ सोरठा ॥

इत पुनि रान बिचारि, गोवरधन गोस्वामि प्रति ॥
मुदित मंडि मनुहारि, पठये दल² श्रियद्वार पहुँ³ ॥ १६ ॥
तुम वल्लभ कुल दीप, बुल्लहु यहँ कोटेस अब॥
मिलि हम उभय२ महीप, ⁴स्वमत धर्म मग संचरहिँ ॥१७॥
गोस्वामिय लिखि ⁶पत्त, बुल्ल्यो तब कोटेस द्रुत ॥
आयो निछिन अत्त, जानि रान सम्मत बिफल ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

रान कहाई मिलनकी, नट्यो तबहि कोटेस ॥
कहिय बदलि तुम सार्म किय, सद्धिय कुम्म नरेस॥ १९ ॥
मिलनमैंहु रस नहिँ तुमहु, करत अल्प सतकार ॥
अरथी बिनु आदर रहित, मिलत कोन मतिदार ॥ २० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशौ शीषोंद तखतसिंह१कुसालसिंह२झल्लारायसिंह३द्विजदयाराम ४सचिवचतुष्टय४सहितराणासैन्यसहाया ऽर्थसाहिपुराऽऽगमनकूर्मराजमेदपाटप्रविशनभिल्लहड़ापुरलुण्टनतद्बलविद्रुतोदयपुरसचिवसामविचारणाकुपितहुलकरखण्डूनुनयनजायसिंहिक्रुच्छमनतत्स्वपुरप्रतिप्रविशनहट्ठे

¹देश में॥ १५॥ २पत्र३राजा ने ॥ १६ ॥ ४आप के धर्म के मार्ग में ५चलेंगे ॥१७॥ ६ पत्र ७ यहां ॥ १८ ॥ ८ मेल करके ॥ १९ ॥ ९ धन की याचना करने वाले के विना न्यून आदर से कौन १० बुद्धिमान् मिलता है ॥ २० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, शीषोदिया तखतसिंह, कुशालसिंह, झाला रायसिंह, ब्राह्मण दयाराम, इन चारों सचिवों के सहित, राणा की सेना की सहायता के अर्थ शाहपुरा में आना १ कछवाहों के राजा का मेवाड़ में प्रवेश करके भीलहड़ा पुर को लूटना २ उस के सेना से डर कर उदयपुर के सचिव का साम उपाय करने से कोपे हुए खंडू की प्रार्थना करना और जयसिंह के पुत्र के क्रोध को मिटाना और उस का कूच

न्दोपायनीभूताश्वरूपमल्ल१कान्तकृपाण२पुरस्सरराणाचतु४स्सचि
वबुन्दीशशिबिराऽऽगमनगृहीतनिवेदितोपायनसम्भरस्वभटबुन्दीविष
यक्षेपणनट्टाणिस्थानसिंहनिग्रहणतद्दण्डद्रव्यग्रहणबुन्दीमात्ररहित
देशस्वीकरणराणाऽनुनीतश्रीद्वारगोस्वामिगोवर्द्धनमहारावाऽऽह्वयन
कोटेशतन्मिलनाऽल्पसत्कारसूचनं द्वाविंशो२२मयूखः॥२२॥३०३॥

॥ प्रायोव्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ हरिगीतम् ॥

*तसमात अब तुम †रान ‡बुंदिय तुल्य अद्दर जो करो ॥
तबही मिलै रु बहोरि जो नहि साम कूरमसौं धरो ॥
पहिलोंहि दै हरि अग्ग बचन रु फुट्टि जैपुरमैं मिले ॥
तसमात नाँहिं बिसासहै तुम इष्टसौँह सबै गिले ॥ १ ॥
सुनि रान तब कछु घट्टि बुंदिय तुल्लय अद्दर स्वीकरयो ॥
अब अप्पं सम्मुह इक्क१ गद्दिय बैठिहो१ यह उच्चरयो ॥
हम मत्थ हत्थ लगायहैं२ लघु खास कग्गर मंडिहैं३ ॥
अबतैं सनेह बढै जु अप्पन सो कदापि न खंडिहैं ॥ २ ॥
कोटेस तब सुनि एह रानहिं मेल स्वीकरि बुल्लये ॥

करके अपने पुर में प्रवेश करना ३ हाडा की भेट करने को रूपमल्ल नामक घोड़ा, सुन्दर तरवार, आदि सहित राणा के चार सचिवों का बुन्दीश के डेरे पर आना और नजर किये हुए नजराने को लेकर उम्मेदसिंह का अपने वीरों को बुन्दी के देश में भेजना ४ नाटाणी थानसिंह को पकड़ कर उस से दंड के रुपये लेना और एक बुन्दी को छोड़ कर देश को अपना करना ५ राणा की प्रार्थना से नाथद्वारे में गुसांई गोवर्धनलाल का कोटा के महाराव को बुलाना और राणा से मिलने में अल्प सत्कार होने की कोटा के पति की सूचना करने का बाईसवां २२ मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीनसौ तीन ३०३ मयूख हुए ॥

* इस कारण से † हे राणा ‡ बुन्दी की बराबर आदर करो तो १ इस कारण से २ इष्टदेव के सौगन ॥ १ ॥ ३ बुन्दी से कुछ घटकर ४ आदर स्वीकार किया ५ आप ६ मस्तक के हाथ लगाकर मुजरा करेंगे ७ खास रुक्के में अपने को छोटा लिखेंगे ८ कभी नहीं तूटेगा ॥ २ ॥ ९ मिलना स्वीकारकरके बुलाये

तब रान पुनि श्रिपद्दार आय मिले रु मंत्रहु खुल्लये ॥
रु सदैव सम्मति होनके पुनि पत्र दोउन२ मंडये ॥
चढि गाम ढिंकोला दुहून२ रेकाब जाय रु छंडये ॥ ३ ॥
तब ही जु साहिपुरा चमू सु समस्त जाय मिली तहाँ ॥
बुंदीस डेरन रान१ खंडुव२ भीमनंद३ गये जहाँ ॥
तब इंदगढ१ खतोलि२ बलवानि३ आदि तीन३ मिलायकैं ॥
पुनि रानसौं मिलि भूप बैठिय इक्क१ गद्दिय आयकैं ॥ ४ ॥
घटिका उभै२ हि सभा रही मनुहारि मोदमई भई ॥
पुनि पान गंध निवेदि सर्वन सिक्ख डेरनकों दई ॥
खंडू१ रु माधव२ तत्थही पलटाय पग्घ सखाभये ॥
पुनि तत्थतैं चढि सर्वही गुलगाम पाँरहलों गये ॥ ५ ॥
खारी नदी तट दैं मिलान सबैं घने दिन ह्वाँ रहे ॥
तब कुम्म बीरहु सज्जह्वै दरकुंच सम्मुह उम्महे ॥
अप३ कोस अंतर दै मिलान पहै कहाइय रानपैं ॥
क्यों बैन चुक्की करारके पुनि सज्जहुव घमसानपैं ॥ ६ ॥
तुम भ्रात नाथ पटा जु पावत सोहि माधवकों मिलैं ॥
घर रीति चूकि रु अप्प क्यों अब कोल बैन कहे गिलैं ॥
तब रान अक्खिय अप्प जानत रीति घरघर भिन्नहै ॥
तुमरे पिता जयसिंह राज्य सबैहि याकँहँ दिन्नहै ॥७॥
हम किन्ह नाथ प्रसन्न ज्यौं तुम त्यौंहिं माधवकों करो ॥
निज तात मंडित पत्र अक्खर लुप्पि लोभ न अहरो ॥
इहिं रीति होत जबाब जानि रु कुप्पि खंडुव उच्चरो ॥
रन काज मोहि बुलायकैं अब सामकी तुम जो धरी ॥ ८ ॥

---

१ घोड़ों से उतरे अर्थात् मुकाम किया ॥ ३ ॥ २ सेना ३ भीमसिंह का पुत्र महाराव दुर्जनशाल ॥ ४ ॥ ४ दो घड़ी ५ इत्र ६ पगड़ी बदल कर ७ ग्रामका नाम है ॥ ५ ॥ ८ मुकाम ॥ ६ ॥ ७ ॥ ९ नाथसिंह को हमने प्रसन्न किया वैसे तुम माधवसिंह को प्रसन्न करो १० तुमारे पिता जयसिंह के लिखे हुए

तुमतैँहिँ संगर सज्जि तो हम प्रीति रीति बिगारिहैँ ॥
कछवाह *हिंतु नतो लरो हरवल्ल हम असि झारिहैँ ॥
तँहँ रान बत्त †कुवेर१ ओ तखतेस२ तैँ यह अक्खई ॥
अब अप्प साम करो न हयाँ रन बुद्धि खंडुवकी भई ॥ ९ ॥
तब रान आदि समस्त फौजन सज्ज जुज्झनकी करी ॥
रननंकि तंतिन सिंधवी झननंकि पक्खर घुग्घुरी ॥
सुनि कुम्म सत्रुन सज्ज होत बिचारि खंडुव भीरकौं ॥
जय जानि संसय मुक्कल्यो हरनाथ ‡नारव बीरकौं ॥ १० ॥
कहि मास कत्तिय१ §मग्ग२ वा हमहू उदैपुर आयहैं ॥
अरु अप्प माधव१ ओ उमेद२दुहून२लाय मिलायहैं ॥
तँहँ नम्रताजुत पिक्खि बुंदिय हड्ड भूपहिं अप्पिहैं ॥
दसलक्ख १०००००० रुप्पय देस माधव अत्थ दै थिर थप्पिहैं ॥११॥
यह बत्त नारव आपकैं नृप रान आदिनतैं कही ॥
कोटेस ताहि सिराहि बुंदिय स्वीयँ हाकिमकी चही ॥
सुनि एह दुज्जनसल्लकौं तब बीर खंडुव निंदयो ॥
इहिँ रीति दोउनकैं२ विरोध बिसेस बैंनन ठहै भयो ॥१२॥
दुरभिच्छ कारन सेनमैं मन१ घास रुप्पय१को बिकैं ॥
अरु अन्नकीहु महर्घताकरि लोक निद्दिनकैं टिकैं ॥
वलि नित्य दम्म हजार बारह१२००० रानकै ठव्ययमैं लगैं॥
पुनि होत साम जबाब जो निमटैंहि जावनकी थगैं ॥ १३ ॥
कोटेसके दलकैंन तत्थ अनीति मंडि मरोरतैं ॥
तृन सकैंट जाय रु रानके दल माँहिँ लुट्टिय जोरतैं ॥
तब कुम्म वैन कहे जु मन्त्रि रु रान अक्खिय है भलैं ॥

॥ ८ ॥* सो कुबेरसिंह ॥ ९ ॥ † नरूका ॥ १० ॥ § मार्गशिर में १ माधवसिंह के अर्थ ॥ ११ ॥२ नरूके ने ३ अपना हाकिम रहने की ४ बचनों का ॥ १२ ॥ ५ महँगाई से ६ खरच में ७ ठहरे ॥१३॥ ८ सेना वालों ने ९ घमंड से १० घास के गाडे

तव देहु पैं अवतैंहि हाकिम तत्थ*मामक मुक्लैं ॥ १४ ॥
यह वत्त कूरम स्वीकरी तव रान †आयस त्यौं दयो ॥
नगरी वसी पति चौंडवंसिय ‡मेघ१ बुंदिय भेजयो ॥
टोडा महाजन टेकचंद१ पठाय रान खुसीभयो ॥
यह जानि माधव२ मित्र खंडुव१ कुंच दोउन२को ठयो ॥१५॥
करि कुम्म §दुम्मन रानतैं निज धाम रामपुरा लयो ॥
कति दीह खंडुव तत्थ रहि पुनि बप्प१के ढिग पुग्गयो ॥
इत कुंच ईस्वरिसिंह हू निज धाम जैपुर त्यौं किये ॥
कोटेस भेजि वकील आक्खिय मोहि बुंदिय दीजिये ॥ १६ ॥
तव लै वकीलहिं संग कूरम स्वीयं पत्तन संचरयो ॥
रु कही तजो अव रान संगत तो करैं तुम उच्चरयो ॥
नहितो वँ कत्तिय मासमैं तुमतैंहु संगर जोरिहैं ॥
पहिलैं करी जिम धूमि तोपन नैर चम्मलि बोरिहैं ॥ १७ ॥
कोटेस१ रान१ रु भूप१ ए३ इत उप्परे गुलगामतैं ॥
पुर धुंधरी तट दै मिलान रहे निसा सुख सामतैं ॥
तँहँ जा पुरोहित रानके ढिग हो सु संभर मंगयो ॥
तव दयाराम जु विप्र रानहु भूपकौं हिततैं दयो ॥ १८ ॥
निज विप्र लै दुव२ हड्ड भूपति नंदगाँम गये तवैं ॥
बुंदीस चम्मलि वारही रहि सगतपुर गढमैं जवैं ॥
तँहँ सचिव हरजन हड्डकौं सिविका समप्पिय संभरी ॥
अरु देसमैं तहसील कारन सिक्ख ताहि दई खरी ॥ १९ ॥
अचलेस१ माधानी सहित तव देस हरजन१ संचरयो ॥
सीलोरपुर ढिग कुम्म सुभटन जाय रन तिनसौं करयो ॥

---

* हमारे ॥ १४ ॥ † हुक्म ‡ मेघसिंह को ॥ १५ ॥ कछवाहे जयसिंह ने राणा संग्रामसिंह को § उदास करके १ बाप (पिता) के पास ॥ १६ ॥ २ अपने पुर में गया ३ राणा का साथ छोड दो तो ४ अब ॥ १७ ॥ ५ उम्मेदसिंह ६ उम्मेदसिंह ने पुरोहित दयाराम को मांगा॥ १८ ॥ ७ कोटे का उपनाम है ८ उमेदसिंह ने पालखी दी ॥ १९ ॥ ९ माधवसिंहोत हाडा

अचलेसके *गुटिका लगी पर दोहु२ सत्रुन †नाँजये ॥
पुनि फोज जैपुरतैं चली तब छोरि भूपतिपैं गये ॥ २० ॥
सक बेद नभ बसु सोम१८०४ भद्दव कृष्णअष्टमि८ जंगभो॥
पुनि भूप आन उठाय जैपुर सैन बुंदिय संगभो ॥
रन काज भूप बहोरि बीर दलेल१ नाहर मुक्कले ॥
रन आय बुंदिय किन्न पै बपु घाय दोउन२ कैं छले ।२१।
तबही सगतपुर बुल्लिकैं उपनाह दोउन२ कै कियो ॥
आसोजमैं सुत ईडरेचिय कै भयो सु नहीं जियो ॥
इत ज्येष्ठ सालमनंद दिल्लिय छोरि जैपुर पुग्गयो ॥
भट ताहि कूरम रक्खि बुंदिय सीम माँहिं पटा दयो ॥२२॥
पुनि मग्गमैं नृप कुम्भ बुंदिय आय दीह घने रह्यो ॥
कोटेसकेर वकीलतैं यह बैन परिखदमैं कह्यो ॥
हम संग दुरजनसल्ल होय रु भ्रात माधवपैं चलो ॥
यह नाँहिं तो रन सज्ज होय रु लैन हम कँहँ मुक्कलो ।२३।
कोटेस यह सुनि इक्कठो निज सेन पत्तनमैं कर्यो ॥
लगवाय बाहिर मोरचे गढ जाल तोपनको जर्यो ॥
उत एह माधवहू सुनी तब छोरि रामपुरा सँर्यो ॥
दल संग लै निज भीत व्है कढि नेर करर्‌वान पर्‌यो ।२४।
इत कुम्भ बुंदिय दोहु२ भ्रातन माँहिं हित बिसतार्‌यो ॥
परताप१ कौं रु दलेल१ कौं इक१ थाल भोजन कार्‌यो ॥
सु दलेल ठीक गिनी न छोरिय अन्न आमय व्याजतैं ॥
पुनि कुंच दुंदुभि बज्जयो नृप कुम्भको रन साजतैं॥ २५॥

*गोली लगी परंतु †नहीं जीते ॥ २० ॥ २१ ॥ १ इलाज ॥ २२ ॥ २ मृगशिर मास में ३ ईश्वरीसिंह ४ सभा में ५ हमारे भाई माधवसिंह पर ६ हम को युद्ध के अर्थ कोटे बुलाने को किसी को भेजो (इसकी नांहीं करने पर युद्ध करने को हम कोटे आवेंगे) ॥ २३ ॥ ७ चला ८ पुर का नाम है ॥ २४ ॥ ९ कराया १० रोग के मिस से ॥ २५ ॥

सुनि ताहि फौज बहीरसो सब *नंदगाम दिसा चली ॥
अरु कुम्महू किय विष्णु पूजन अर्पि †पुष्फन अंजली ॥
तिहिंबेर दिल्लिप साहके फरमान लग्गिय बेगही ॥
तुम कुम्म आवहु छिप्र इयाँ लरनो इराननतैं सही ॥ २६ ॥
इक साह अहमद है पठान जु साहनादर[2] मारिकैं ॥
ईरानपति बनि लंघि अटक रु आत इत धक धारिकैं ॥
तसमात आवहु आतही रनथंभ दुग्गहि पायहो ॥
अरु जित्ति अहमदसाहकौं दिल्लीस तोर बढायहो ॥ २७ ॥
तजि नंदगामहिं बंचि जो हुत कुम्म दिल्लिय त्यौं चढ्यो ॥
परताप१ ओर दलेल१ सोदर दोहु२ संगहि लै बढ्यो ॥
मथुरा गये तब रोगको मिस कैं दलेल तहाँ रह्यो ॥
पहिलैंहि अन्न तज्यो हुतो अब प्रान छोरनही चह्यो । २८ ।
गंगोदं मिट्टिय पान कैं रु बिंभूति विप्रन दैदई ॥
भल रीति देह दलेलनैं तजि तत्थही गति सो लई ॥
परताप अग्रज तास जुत कछवाह दिल्लिय पुग्गयो ॥
अरजी निवेदि रु तत्थ हठ रनथंभ आवनको लयो ॥ २९ ॥
तब साह दैंहिं नदैंहिं यौं कछुहू न कुंम्महिं उच्चरयो ॥
तँहँ कुम्म अक्खि वजीरसौं हठ सोहि पावनको धरयो ॥
सुनि कुम्महिंतु वजीर अक्खिय नाँहिं अप्प भरोसहैं ॥
चलिहो न जो तुम तो कहा यह साहके सिर दोसहैं ।३०।
यह अक्खि अहमदसाह साहतनूज संग वजीरव्है ॥
किय कुच कुम्महि छोरि जोरि अनीकैं जुज्झन वीरव्है ॥

---

*कोरे का तर्फ †पुष्पांजलि देकर अर्थात् पुष्प चढाकर १शीघ्र॥२६॥२नादरशाह को मारकर ३ इस कारण ४ प्रताप ॥ २७ ॥ ५ शीघ्र ६ करके ॥ २८ ॥ ७ गंगाजल८ ऐश्वर्य ९ दलेलसिंह के बडे भाई सहित ॥ २९ ॥ १० ईश्वरीसिंह से कुछ नहीं कहा ११ ईश्वरीसिंह ने कहा कि युद्ध आप के ही भरोसे पर नहीं है ॥ ३० ॥ १२ दिल्ली के बादशाह के पुत्र अहमदशाह के साथ १३ सेना

तब कुम्म *स्वीय अमात्य सौं कथ गेह चालनकों कह्यो ॥
सुनि मंत्रि अक्खिय संग चल्लहु गेहकों न अबै रह्यो ॥३१॥
तब कुम्म संगहि कुच्चकैं दल पिट्ठि जावन अद्दरयो ॥
दरकुंच हंकि मुकाम यों सतलंजके तटपैं परयो ॥
तँहँ कुम्म हिंतु वजीर चिंतिय आदितैं मम वैरहै ॥
गहि याहि दंडहिं वेगही अब नांहिं यँहँ जयनैरहै ॥ ३२ ॥
सुहि कुम्म भीरु निसीथमैं सुनि छोरि डेरनकों भज्यो ॥
दरकुंच रत्ति रु दीह कैं जयनैर लौं रु दुरयो लज्यो ॥
परताप सालमनंद संगहि आय जैपुरमैं मरयो ॥
अरु जो नरायनदास खत्रिय लै हलाहल सो मरयो ॥३३॥
यह वीर खत्रिय अग्गही दुवबीस२२ संगर जित्तयो ॥
संधा न भाजनकी हुती पर स्वामि संग भज्यो गयो ॥
तस लाज लै विख आतही तिहिं बीर विग्रह छोरयो ॥
सुनि कुम्म सोच घनों लयो पर काकतैं बल नां ठयो॥३४॥
सुतसाह अहमदसाह साहइरानतैं इत संजुरयो ॥
यह जानि दिल्लिप ईसनैं निज हत्थ कग्गर अंकुरयो ॥
सुनि पत्र दक्खिन देसमैं श्रियमंत अंतिकैं मुक्कल्यो ॥
तुम भीरं आवहु ह्यां इरानिन देस दिल्लिपको दल्यो ॥३५॥
श्रियमंत नन्द जु वंचिकैं इक लक्ख१००००० वाहिनि लै चढ्यो॥
वजि वंब आनक त्यों अचानक घोरैं कोसनलों बढ्यो ॥
हयके चलाचल लै तरारन व्योमैं धारनकों धरैं ॥
घुमडी घटा अनुकौंर वारैंन गज्ज डारन विरथरैं ॥ ३६ ॥

*अपने १मंत्रित्व से ॥ ३१ ॥ २ सेना के पीछे ३ से ॥ ३२ ॥ ४ आधी रात्रि में ५ भय खाकर ॥ ३३ ॥ ६ इस के युद्ध में नहीं भागने की प्रतिज्ञा थी परंतु यहां स्वामि के साथ भगा ७ शरीर को छोडा ॥ ३४ ॥ ८ बादशाह का पुत्र ९ जुड़ा (युद्ध किया) १० पत्र लिखा ११ श्रीमंत के पास भेजा १२ सहाय ॥ ३५ ॥ १३ सेना १४ शब्द १५ आकाश १६ घोड़ों की गति को १७ सदा १८ हाथी ॥ ३६ ॥

उडि धूलि धोरनि अर्क धुंधरि चक्कचक्किय बिच्छुरे ॥
लगि अद्रि घुम्मन झुम्मिके गज जानि मैगल अंकुरे ॥
चढि संग गायकवाल[1] रु परमार[2] सज्जित संधिया[3] ॥
हठवार हुल्लकर[4] घुंसलपा[5] मतिवार कन्नैल[6]की क्रिया ॥ ३७ ॥
तजि नैर पुण्णिम सज्जि यौं श्रियमंत उत्तर हंकयो ॥
खुर भीर पक्खर छाय सेलन ओघ अंबर ढंकयो ॥
दरकुंच उत्तरि नर्म्मदा तिमही अवंतिय[7] लंघये ॥
अरु है जु रामपुराहि माधव बुल्लि संगहि ते लये ॥ ३८ ॥
असवार पंचहजार५०००सौं तब कुम्म सम्मलि यौं भयो ॥
तँहँ कुम्म डेरनपैं मलार प्रधान नन्हहिं लै गयो ॥
जयसिंह मंडित पत्रकी समुझाय बत्त निवेदई ॥
पुनि नैर बुंदिय लैनकी तिहिं बुद्धि दुद्दरके दई ॥ ३९ ॥
गज१ बाजि२ माधव भेट किन्न सु लै रु संगरपैं छल्यो ॥
इत कुम्म केसवदास खत्रिय नन्ह सम्मुह सुक्कल्यो ॥
तिहिं साम ईस्वरिसिंहसौं श्रियमंत स्वीकृत कारयो ॥
दरकुंच कै पुनि लांघि चम्मलि सेन अग्ग प्रचारयो ॥ ४० ॥
इम जाय जैपुर सीममैं नगरी निवाइय उत्तरे ॥
रु वकील बुंदियभूपके ढिग है तिन्हैं चलतेकरे ॥
लिखि पत्र संग दये रु भू[11]वहिं वेग आनहु यौं कह्यो ॥
तब छिप्र[12] चारन दान[13] आय मयान भूपतिको चह्यो ॥ ४१ ॥
दल[14] नन्हके रु मलारके सब पुब्ब[15]प्रीति निवेदये ॥
तब चाहि भूप सिराहि चारनकों रु चालनकौं भये ॥

---

१ सूर्य२दिग्गज३गायकवाड़ (मरहठों की जाति विशेष)४युद्ध की क्रिया में चतुर ॥३७॥५भालों के समूह से आकाश ढकगया६उज्जैन॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ७ बढ़ा ८ मेल स्वीकार ९ कराया ॥ ४० ॥ १० बिदा किये ११ उम्मेदसिंह को १२ शीघ्र १३ दान नामक चारण ने ॥ ४१ ॥ १४ पत्र १५ प्रीति पूर्वक

सक पंच अंबर अष्ठ इक्क१८०५ रु चैत उज्जल द्वादसी१२ ॥
रविवार नाड़िय पिंगला[१] जलतत्वपैं जब उल्लसी ॥ ४२ ॥
क्रम पंच दक्खिन अंघ्रिकैं तब दै रु भूपति है[२] चढ्यो ॥
तजि नैर मधुकरदुग्गकौं धक धारि बुंदिपपैं बढ्यो ॥
तहँ पोदकी[३] तजि बाम दक्खिन ओर सुक्कहि उत्तरी ॥
करि उद्ध सुंडि[४] रु कन्नपैं धरि गज्जि सम्मुह भो करी[५]४३
दिस सांत[६] बुल्लिय फिक्करी[७] अनुकूल पिंगलिका[८] भई ॥
इम सौंन[९] बुंदिय लैनके बनि प्रीति भूपतिकौं[१०] दई ॥
तब लंघि चम्मलि संभरी दरकुंच उत्तर हंकये ॥
सुनि आत तात[११] मलार१ खंडुव पुल१ सम्मुह ह्वै२गये।४४।
त्रय३कोस पैं मिलि जाय प्रीति बढाय सम्मलि लै मुरे ॥
श्रिपसंतहू मिलिकैं प्रबोधिये[१२] बंब जित्तनके धुरे ॥
सुत[१३] साह अहमदसाहनैं इत जंग सत्रुनतैं रच्यो ॥
हरिमंथ[१४] भ्राष्ट्रकें[१५] रौव[१६] त्यौं तरकाव तोपनको मच्यो ॥ ४५ ॥
अतलादि भू पुट धुज्जिकैं फनमाल पन्नग चंपयो ॥
अति चंड गोलन तापतैं ब्रह्मंड झोलन कंपयो ॥
रु वजीर संगर[१७] होत माँहिं निमाज कारन उत्तर्यो ॥
मनसूर[१८] तोपन स्वामिनैं इँहँ स्वामिद्रोहिं[१९] रजू करयो ॥ ४६ ॥

॥४२॥ १ दाहिने चरण के २ घोड़े पर ३ शकुनचिड़ी (रूपारेल) ४ सुंड को ऊंची करके कान पर धरकर ५ हाथी गर्जना करके सांमने हुआ ॥४३॥ ६ शान्त दिशा में ७ फेकरी (स्यालनी) बोली (इसके बोलने के शकुनों का यह क्रम है कि जिस वार में बोले उस वार को पूर्व दिशा में रखकर दिशा दिशा प्रति उलटे क्रम वार से रखते जावें अर्थात् पूर्व से आग्नि, दक्षिण आदि सो जिस वार में जिस दिशा में बोले वहां क्रूर वार का क्रूर फल और शान्त वार का शान्त फल मानते हैं ८ कोचर पक्षी ९ शकुन १० उम्मेदसिंह ११ पिता मल्लार और पुत्र खंडू ॥ ४४ ॥ १२ समझाया १३ बादशाह का पुत्र १४ चनों का १५ भाड़ में तड़कने का १६ शब्द होवे तैसे तोपों का शब्द हुआ ॥ ४५ ॥ १७ युद्ध होते समय १८ मनसूरअली १९ तोपों के पति (दरोगे) ने ॥४६॥

वैल्ल तोप स्वीय वजीरकौं हनि अप्प तैत्थ वजीरभो ॥
सुतसाह अहमदसाह यह लखि काल चिंत रु धीरभो ॥
कहि माफ आगँसहै परंतु अबैं इरानिनकौं हनौं ॥
सुनि यौँ सहादत पुत्तहू मनसूर जंग रच्यो घनौं ॥ ४७ ॥
बहु बार तोपन मार दै रु इरानको दल जित्तयो ॥
इतहीं महानद लंघि अहमदसाह भीरु भज्यो गयो ॥
सुतसाह अहमदसाह तव जयपाय दिल्लिय संचर्यो ॥
मनसूरकौंहि वजीर दिल्लिय ईसहू तवही करयो ॥ ४८ ॥
पुनि साह्व चिंतिय जै भयो मरहट्ठ क्यौं अव वुल्लनैं ॥
पठवाय कग्गर मंडि अक्खिय नाँ वे आवहु ह्याँ घनैं ॥
मिलनौंहि होय हजूर तो दल तुच्छ लै यँहँ आवनौं ॥
नहितो लगे तुमरे ति दम्मनहि लै रु दक्खिन जावनौं ॥ ४९ ॥
थिपमंत कग्गर वंचि जो दल तुच्छको नहिँ स्वीकरी ॥
उपय सेन दम्म लगे ति लै करि देस जावन अद्दरी ॥
तव साहनैं दुवबीस लक्ख२२०००००लगे ति रुप्पय मुक्कले॥
दलमाँहिं नन्ह निदेसैंहू तव देस चालनके चले ॥ ५० ॥
तँहँ नन्ह हिंतुँ मलार अक्खिय वत्त बुंदिय भुल्लई ॥
अरु भुल्लि माधवकौं कहा तुम सौंक जैंपुरतैं लई ॥
सुनतैंहि ईस्वरिसिंहपैं तव नन्ह कैंग्गर मुक्कल्यो ॥
तुमनैं कहा सिंधु जानि पुव्व कुमार खंडुवकौं छल्यो ॥५१ ॥
सुनि पैंत्त ईश्वरिसिंह बुज्झि रु पुव्व वत्त सु स्वीकरी ॥
रु लिख्यो भई पहिलै सुधी तबतैंहि है मम अद्दरी ॥

---

१ तोपों के बल से अपने वजीर को मारकर २ वहां आप वजीर होगया. समय ३ विचार कर ४ अपराध ५ सहादतखां का पुत्र ॥ ४७ ॥ ६ वहां नदी को ७ भगा ॥ ४८ ॥ ८ पत्र ९ भय १० जितने रुपये लगे हों वे लेकर ॥ ४९ ॥ ११ ले (के) १२ आज्ञा ॥ ५० ॥ १३ से १४ पत्र १५ वाकफ जान कर पहिले ॥ ५१ ॥ १६ पत्र

जु उमेद[1] माधव[1]सौं कही सु मही भलैं तुम लीजिये ॥
हरि सौंहँ है मुहि अप्प मन्नि रु कुंच दक्खिन कीजिये॥५२॥
सुनतैंहि यह तब नन्ह आयस कुंच दुंदुभिको दयो ॥
रु कही नरेसहिं[2] हंकि मंडहु आन देस मिल्यो गयो ॥
सु कही मलारहु भूप संभर भुम्मि चालतही लहो ॥
यह ह्वै न तो हमसंगहैं जयनैर जित्तन उम्महो ॥ ५३ ॥
सुहि मन्नि मंत्र उमेद १ माधव १नन्ह सम्मलिही चढे ॥
दल भार झोकन ओकै[3] ओकन लोक सोकनमैं बढे ॥
कुसलेसनाम झलायके पति खास है[4] पठयो तबै ॥
पति जानि माधवकौं रु अक्खिय अप्पकै बसहैं सबै ॥ ५४॥
सु लयो रु सत्थहि सर्व हंकिय लंघि जैपुर गामके ॥
लखि लक्ख १००००० दक्खिन सेनकौं अरि ओदके ढिग धामके।
दलके पयान अमान हत्थिन दान पद्धति[5] सिंचई ॥
बढि फैन गैलन[6] भीति सैलन रीति कँदुक[7]की लई ॥ ५५ ॥
दल भेट[8] मारुत[9] फेटलै प्रतिमग्ग हारुत[10] भग्गयो ॥
बन जंतु घोरन ओर ओरन प्रान छोरन लग्गयो ॥
करि यौं पयान मिलान[11] आनि बनासके तटपैं करयो ॥
तह भूप डेरन आय हुलकर नेह नूतन[12] विस्तरयो ॥ ५६ ॥
सिरुपाव दोय महर्घ[13] औ हय खास दोयर निवेदये ॥
पुनि भूप परिकर[14] सर्बकौं सिरुपाव उच्च दये नये ॥
रु कही चलो हम सत्य संध[15] स्वदेस आनि विथारिहैं ॥
न बनैं जु तोहु समर्थहैं ततकाल जैपुर मारिहैं ॥ ५७ ॥
पुनि कुंचकैं कढि नैर वा विषै[16] सीम बुंदिय संचरे ॥

१ईश्वर के सौगन॥५२॥२उम्मेदसिंह से कहा॥५३॥३घर घर में४घोड़ा॥५४॥५मस्त हाथियों के डाण से मार्ग सींचे गये६पर्वतों ने ७गेंद की॥५५॥सेना की फेट से ८ पवन ९ हाहाकार शब्द करके भगा १० मुकाम ११ नवीन ॥ ५६ ॥ १२ महँगे (बहुमूल्य) १३ सब परगह को१४सत्य प्रतिज्ञा वाले हैं सो ॥ ५७ ॥ १५ नगर का

मरहट्ठ लुट्टन इंद्रगढ लखि श्रील[1] पूरब त्यौं टरे ॥
दरसाल[2] दम्म हजार सोलह१६००० बज्रधरगढ[3]पैं करे ॥
ति चढे हि हायनें[4] पंच५तैं नहिं देवं[5] दक्खिनके भरे ॥ ५८ ॥
तस्समात[6] बाँसवदुग्गकौं[7] मरहट्ठ लुट्टन उम्महे ॥
सु उमेद१ माधव१ जानि द्वै२ तिन्ह अट्ठ आनि खरेरहे ॥
श्रियमंत आन दई रु अक्खिय कोल दम्म[8] दिवायहैं ॥
अरु नाँहिं स्वीकृत एह तो हनिकैं हमैं दल[9] जायहैं ॥ ५९ ॥
इम रोकि सर्बन दोहु२ सत्थहि आनि डेरन पुग्गये ॥
तँहँ दम्म बाँसवदुग्गके दसही हजार१०००० चढे दये ॥
रु कराय माफ हजार सत्तरि७०००० भूप ताहि बचायकैं ॥
लक्खैरिका पुर सीम किन्न मुकाम सर्बन आयकैं ॥६० ॥
तबही तहाँ सन बाघ संतुव स्वीय बीर मलारनैं ॥
पठयो वहै पुर लैन भूपति आन फेरन कारनैं ॥
तँहँ कुम्म हाकिम है तिन्हैं जुरि जंग संतुवतैं करयो ॥
मुरि बाघ संतुव जो उदंत[10] मलारतैं सब उच्चरयो ॥ ६१ ॥
सुनतैंहि हुलकर खिज्जि बुंदिय भूपतैं कहि मुक्कली ॥
नहिं सिक्ख सुभटन देहु तुम हम सैन जैपुरपैं हली ॥
पह अक्खिकैं श्रियमंतसौं द्रुत सिक्ख संगरकौं लई ॥
सुनि निंदि[11] कुम्महिं नन्हहू खिजि सिक्ख जैपुरपैं दई।६२।
अरु दैन सत्य बिसास नन्ह उमेद डेरनपैं गयो ॥
बिसवास भूपहि प्रीति पूरब बैन मंजुल[12] बुल्लयो ॥
बैल[13] बीर बीस हजार२००००तैं तुम संग एह मलारहै ॥

नाम है १ धनवान् लोग पूर्व दिशा को चलेगये २प्रतिवर्ष ३ इन्द्रगढ पर ४पां-
च वर्ष से ५ देवसिंह ने ॥ ५८ ॥ ६ इस कारण ७ इन्द्रगढ को ८ रुपये ९ सेना
हमको मारकर जावेगी ॥ ५९ ॥ १० वृत्तान्त (हाल) ॥ ६० ॥ ६१ ॥
११ ईश्वरीसिंह की निन्दा करके ॥ ६२ ॥ १२ मनोहर १३ सेना

सुहि लै रु अप्पहिँ भुम्मि अप्पहिँ कुम्म कट्ठ कुठारहै ॥६३॥
यह अक्खि दै गज बाजि भूपहिँ नन्ह हंकनकों भयो ॥
रु मल्लारहू तिय गोतमा जुत पुत्र दक्खिन भेजयो ॥
यह गोतमा मरहट्ठ पुंगव भोजराज सुता हुती ॥
जामातकों सुत हीन जिहिँ सब द्रव्य दै रु रची नुती ॥६४॥
तब गोतमा सु मलार व्याहिय जो पतिव्रतमैं रही ॥
तिहिँ तास चूरिय चूनरी बल तैं इती प्रभुता लही ॥
सु पतिव्रता१ अरु पुत्र खंडुव१ नन्ह संगहि मुक्कले ॥
पुनि लै हजार असी८००००चमू चढि नन्ह दक्खिनकों चले॥६५॥
तब तीन३ हड्ड१ मलार१ माधव१ नन्हके पहुँचानकों ॥
हुव संग पट्टनि चम्मली तट दिन्न आनि मिलानकों ॥
तँहँ नन्ह केसवदास खत्रिय बुल्लि कुंम्म अमात्यकों ॥
तस हत्थ हुलकर हत्थ दै कहि याहि ठिल्लि न व्रात्यकों॥६६॥
यह सूद्र पै इहिं बुद्धि बिप्रन बुद्धि दैन समत्थहै ॥
अरु तूहु पंज्ज तैंतोपि यासन प्रीतिलायक अत्थहै ॥
सुनि यों मलारहु अक्खई हम स्वामि उक्त सचेतहैं ॥
इहिं भूप पै तिहिँ कुम्मँ दैन कही सु मूढ न देतहैं ॥६७॥
तसमात तास अमात्य जो यह कुम्म सम्मति भिन्नहै ॥
अबही ततो पतिके कहैं हम लाय छत्तिय छिन्नहै ॥
परं पत्र यासनं लेखि देहु समस्त बुंदिय छोरिवे ॥

१आपको भूमि देवेगा२यह मलार कछवाहे रूपी काष्ठ पर कुठार है॥६३॥३मलार की स्त्री का नाम है ४उत्तम मरहठे ५जमाई को, जिस भोज पुत्रहीन ने ६स्तुति ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ७ कछवाहे ईश्वरीसिंह के सचिव को बुलाकर ८इस संस्कार हीन (शूद्र) को ठेलना (हठाना) मत अर्थात् दूर मत करना ॥ ६६ ॥९यह (केशवदास खत्री) शूद्र है परन्तु यह१०ब्राह्मणों को बुद्धि देने में११समर्थ है१२तू भी शूद्र है१३इस कारण भी१४इससे १५स्वामी के कहने में १६ परंतु इसका राजा १७ईश्वरीसिंह ने॥६७॥ १८इस कारण १९परंतु २०इससे

सुनि एह केसवदास लिखि दिय नेह नूतन जोरिबे ॥ ६८ ॥
सु मलार भूपहिं दिन्न ओ सब नन्हकों पहुँचायकैं ॥
लक्खैरि पत्तनही बहोरि मुकाम मंडिय आयकैं ॥
लिखि दल[1] उदैपुर१ जोधपुर२ कोटा३हु हुलकर प्रेषये[2] ॥
सब सेन भेजहु अत्थ छिन्नहिं श्रील[3] जैपुर देसये ॥ ६९ ॥
लक्खैरिका बिच रक्खि निज भट आन भूपति मंडई ॥
करि यों चढे सब कुंच कैं खुरघात छोनिय[4] खंडई ॥
मग माँहिं बुंदिय ग्राम आयउ तेहु भूपतिके करे ॥
दरकुंच सज्जित सेन कैं जयनैर सम्मुह उप्परे ॥ ७० ॥
कइलासलों यह बत्त ह्वै सिवहू जरद्व[5] आरुहे ॥
डमरू[6]कें डाकिनि लै भजी सुनि प्रेत हंकिय सासुहे ॥
कलिकार[7] मोदित ह्वै हसे किलकारि[8] जुग्गिनि उच्छली ॥
गहकाय गिद्धनि गोदकौं चहकाय चिल्हनिहू चली ॥ ७१ ॥
डगमग्गि सैलन सानुतैं[9] बनजंतु गैलन[10] बिक्खरैं ॥
फनमाल पन्नग[11] पट्टरी सन नच्चि भू नट उच्छरैं ॥
लहरैं हिंडोरन झोकं निंदत नीर सिंधुन सेतु[12] पै ॥
बिथुरैं मवासन आसपासन बास नासन हेतु भै ॥ ७२ ॥
रु कबंध रक्खस[13] नारि सन्निभ[14] नारि कच्छपकी धसी ॥
कलिका अगात्थिय[15]की फटैं तिम दंतुली किरि[16]की नसी ॥

॥ ६८ ॥ १ पत्र २ भेजे ३ धनवान् ॥ ६९ ॥ ४ भूमि खुदी ॥ ७० ॥ ५ बैल पर चढे ६ वाद्य विशेष ७ युद्ध करानेवाला (नारद) ८ प्रसन्नता की बोली बोलकर ॥ ७१ ॥ ९ हिलतेहुए पर्वतों के शिखरों से बनजंतु १० मार्गों में बिखरते हैं ११ शेषनाग की फणमाला रूपी नट नाचकर उछलता है, हिंडोरे के झोकों की निन्दा करती हुई समुद्र की लहरें किनारों को १२ भय करती है, आसपास के मेवासों (चोर और लुटेरों के घरों) में वास के नाश करने का भय होता है ॥ ७२ ॥ और जैसे रामचंद्र के युद्ध में कबंध नामक १३ राक्षस की गरदन शरीर में घुस गई थी तिसके १४ सदृश कमठ की गरदन शरीर में घुसगई १५ अगस्त्य पुष्प की कली फटै तैसे १६ वराह की

भय बग्ग[1] कंपित छाग[2] ज्यौं दिगनाग त्यौं मद मोचये ॥
भटभर्ग भासत आत्मभू[3] झट सर्गनासत[4] सोचये ॥ ७३ ॥
खुर धूलि धुंधरि नाँहिं प्राचिय[5] त्यौं अवाचिय[6] सुज्झई ॥
तिमही प्रतीचिय[7] औ उदीचिय[8] भान बीचिय[9] उज्झई ॥
पँवमान[10] थक्किय अंक[11] ढक्किय चंक[12] चक्किय[13] बिच्छुरे ॥
पहुमी सुरक्किय सत्त७ खंड फिराव चक्किय त्यौं फुरे ॥ ७४ ॥
सुरलोक कुक्किय रास[14] रुक्किय तान चुक्किय अच्छरी ॥
जिय भीरु[15] मुक्किय क्यौं बचैं सब नीर सुक्किय मच्छरी[16] ॥
इम सेन हंकत सत्रु संकत केस कंकत[17]के भये ॥
प्रतिभा[18] झमंकत बाजि डंकत भुम्मि ढंकत हल्लये ॥ ७५ ॥
भट कुंकुमी[19] करि चैल[20]के प्रभु गैल जित्तन उम्महैं ॥
कति बाजि[21]राजन झारि तौं[22]जन भाजि आजिन[23]कौं चहैं ॥
कति उच्चरैं सिर कुम्म[24]को धनु[25] खेत्र लोष्ट[26] बिधायहैं[27] ॥

दंतुली फटी, जैसे १ सिंह के भय से २ बकरी कंपै तैसे दिशाओं के हस्ती धुजकर मद छोडने लगे और वीरों का तेज देखकर ३ ब्रह्मा ४ संसार के नाश का शीघ्र सोच (चिन्ता) करने लगे ॥ ७३ ॥ घोड़ों के खुरों की धूल से धुंध होकर ५ पूर्व ६ दक्षिण ७ पश्चिम और ८ उत्तर दिशा नहीं दीखी और इन दिशाओं ने सूर्य की ९ किरणों को छोड दी तथा सूर्य की किरणों ने इन दिशाओं को छोड दी १० पवन थककर ११ सूर्य छिप गया और १२ चकवा चकवी बिछुड़ गये, भूमि के सातों खंड मुडकर १३ घरटी के समान फिरने लगे ॥ ७४ ॥ स्वर्ग लोक में कूक होकर १४ नृत्य रुक गया और अप्सराएं गाना भूल गईं, जिसप्रकार सम्पूर्ण जल सूख जाने पर १६ मच्छी नहीं बच सकती इसप्रकार १५ कायरों ने जीव छोडे, इसप्रकार सेना के चलने से शत्रु डरकर जैसे १७ कांगसी (कंघी) में केस होवैं तैसे होगये, उस सेना के वीर १८ बुद्धि को चमकाते हुए, घोड़ों को कुदाते हुए और भूमि को ढकते हुए चले ॥ ७५ ॥ कितने ही वीर १९ केसरिया २० वस्त्र करके स्वामी के साथ शत्रुओं को जीतने का उत्साह युक्त हुए, कितने ही २१ घोड़ों को २२ चाबक मारकर दौड़कर २३ युद्ध चाहते हैं, कितने ही कहते हैं कि युद्ध क्षेत्र में २४ कछवाहे (ईश्वरीसिंह) के मस्तक को २५ धनुष से २६ ढकल (मिट्टी के ढेले) के समान २७ करेंगे और कितने ही कहते हैं कि युद्ध रूपी भ्रमर (अग्नि) में जय-

कति यौं कहैं रन मोंरमैं जयनैर नाव भ्रमायहैं ॥ ७६ ॥
कहुँ उच्चरैं मम बैल ईश्वरिसिंह पिट्ठि[1] अरोहिहैं ॥
कहुँ सिंहको न कहंत ओगुन चित्रकारनकोहि[2] है ॥
कहुँ सिंहनी जयसिंहकीहु भज्यो तरच्छुहि[3] यौं वदैं ॥
कहुँ यौं पलायन[4] मांसदे बल[5] जंत्र रुक्कहिं दुर्मदैं ॥ ७७ ॥
इम बीर बुल्लत बीर[6] खुल्लंत[7] सेन पिल्लत संचरे ॥
उनियार नागरचारमैं[8] गलवै नदीतट उत्तरे ॥
दखिनीन तँहँ[9] सेन जे नरूकन गाम ते सब लुट्टये ॥
तिनमाँहिं फूलहता बच्यो नृपके प्रताप न ह्हाँ गये ॥ ७८ ॥
परिन्यों नरेस अमात्य हरजन हड्ड पुत्त दलेलव्हाँ ॥
तसमात फूलहता बच्यो नृप कानि[10] रक्खिय मेलव्हाँ ॥
पनहटा जाय मुकाम किय पुनि कुंच करि उनियारतैं ॥
राजाउतनके ग्राम लुट्टत बीर हंकि पिथारितैं ॥ ७९ ॥
कानि दंडि छंडत गान खंडत आन मंडत अप्पनी ॥
टोडा१ रु मालपुरा२रु टोंक३ छुराय माधव कंयो[11] धनी ॥
यह जानि ईश्वरिसिंह अक्खिय जे दये ति[12] दये सबैं ॥
सुनि यौं मलार कहाय पच्छिय नाँ विसास रह्यो अबैं ८०

पुर रूपी नाव को भ्रमावेंगे ॥ ७६ ॥ कोई कहता है कि ईश्वरीसिंह को मेरे बैल की पीठ पर १ चढाऊंगा, कहीं पर कहते हैं चित्राम का सिंह कुछ पराक्रम नहीं करता यह सिंह का दोष नहीं किन्तु यह दोष २ चितेरे का ही है अर्थात् ईश्वरीसिंह केवल चित्राम का सिंह है, कहीं पर कहते हैं कि जयसिंह की सिंहनी ने ३ तरछे (दोगले) सिंह का ही सेवन किया है, कहीं पर कहते हैं कि ४ मांसभोजियों को मांस देकर ५ सेना रूपी यंत्र से उस (ईश्वरीसिंह) के दुर्मद को रोकेंगे ॥ ७७ ॥ इसप्रकार बोलते हुए और ६ वीर रस को खोलते हुए सेना को चलाकर वीर ७चले ८ नागरचाल देश में उणियारा नामक नगर में ९ वहां से दक्षिणियों ने॥७८॥१० उम्मेदसिंह की अदब से ॥७९॥ ११ माधवसिंह को वहां का स्वामी (मालिक) किया १२ चार परगने माधवसिंह को और बूंदी का राज उम्मेदसिंह को पहिले दिये थे वे अब भी दिये

तब कुम्म *कग्गर मुक्कलो चहुवान भूपहिँ फोरिबे ॥
ति उमेद बंचि रु नाँ मुरयो पट्ट जंग दुद्धर जोरिबे ॥
पुनि कुंच मंडि रु पिप्पलूपुर जाय वाहिनि उत्तरी ॥
उमराव तीन३न आयकैं तँहँ भीर माधव की करी ॥८१॥
जगतेस१ लंबपुरेस ज्ञान२ तथा सिवापुरको धनी ॥
पुनि त्योँहि जालम२ डोढरीपति उल्लस्यो बढती अनी ॥
खंगार बंसिय कुँम्मके उमराव बंधव तीन३ये ॥
असवार पंद्रहसै१५०० लियैं मिलि तत्थ माधवके भये ।८२।
पुनि पिप्पलू सन कुच्चकैं बढि सैन जैपुर त्यौं सरी ॥
तँहँ बोधिपादपके तरैं इक घात संभरतैं टरी ॥
तस छिन्न कल्प हुती जु साख सु तुट्टि भूपतिपैं चली ॥
लखि ताहि हड्डनको सिरोमनि बाँजि फैंकि कढयोबली ८३
द्विज दान भोजन ता निमित्त अनेक आदरतैं करे ॥
सब सेन सम्मलि हंकिकैं पुनि जाय फागिय उत्तरे ॥
चढिकैं तहाँ सन दूसरेदिन दक्खि जैपुरकी मही ॥
पुर नाम लावलदान जाय मुकाम मंडिय वेगही ॥ ८४ ॥
रहतैं घनैं दिन बित्तये तँहँ मंत्र जित्तनको भयो ॥
दल भीर च्यारि हजार४००० तत्थहि रानको द्रुत पुग्गयो ॥
तिहिँ माँहिं सालम रानबांसिय संभु१ भारत भ्रातहो ॥
रु भवानिदास प्रधान पुत्र गुलाब२ कायथ जातहो ॥ ८५ ॥
पुनि मेघ३ बघ्घम नाह भूप उमेद४ साहिपुरा पती ॥
जसवंत५ देवगढेस त्यौं बिथुरात आहव उन्नती ॥
इम आदि लैं दल रानके भट भीर हुलकरकी भये ॥
पुनि द्वैहजार२००० कबंधके भट आनि तत्थहि पुग्गये ॥८६॥

* पत्र ॥ ८१ ॥ १ लांबा नामक पुर का पति २ ज्ञानसिंह ३ खंगारोत ४ ईश्वरीसिंह के ॥ ८२ ॥ ५ पीपल के वृक्ष नीचे ६ टूटी हुई ७ घोड़ा दौड़ाकर ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८ मेघासिंह ९ युद्ध में १० जोधपुर के राजा

तिनमाँहिं मालिक दूदहर भेर सेर१ मेरतिया जथा ॥
मनरूप२सचिव रु ऊदहर कल्ल्यान१ सेर४ उभै२ तथा ।
तँहँ अप्प अप्प बिथारि आयस ढारि डेरन उत्तरे ॥
इम पिक्खि सूरन आनि हूरन पुव्वही मनतैं बरे ॥ ८७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तम ७ राशौ राणाबुन्दीसत्कारदेश्यकोटासत्कारोररीकरणपुनःश्रीद्वारमहारावसहितमिलनाऽनन्तरजगत्सिंह १ दुर्जनशल्य २ ढिङ्कोलानिवसथशिविरन्यसनखण्डू १ पेतभूपद्वय २।३ रावराट्शिविराऽऽगमनतदनुखण्डू १ माधव १ मैत्रीविधानाऽखिलसैन्यनिर्याणखारीनदीतटप्रपतनतदभिमुखकूर्म्मराजागमनश्रुतसामखण्डूकोपकांक्षणतत्सम्मतिसर्वसन्नद्धीभवनकूर्म्मराजाऽऽगामिकार्तिकसानुजविभाग १ बुन्दीत्यजनलिखितहुल्लकरकरदापननिन्दितमहारावश्रीपोंद्दसेनाऽन्तरात्तृणशकटलुण्टनराणाचुण्डाउत्तमेघसिंह १ वणिक्टेकचन्द्र २ बुन्दी १ टोडा २ प्रेषणरुष्टखण्डू १ माधवसिंह २ रामपुरप्रतिगमनज्येष्ठजायसिंहि

॥ ८६ ॥ १ भट (उमराव) २खेरसिंह ३ अपना ४हुक्म देकर ५इसप्रकार वीरों को देखकर युद्ध होने से पहिले ही अप्सराओं ने आकर मन से वन को घरे ॥ ८७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, राणा का बुन्दी के सत्कार के बराबर कोटा का सत्कार स्वीकार करना, जिस पीछे नाथद्वारे में महाराव से मिलने के अनंतर राणा जगत्सिंह और महाराव दुर्जनशाल का ढींकोला नामक ग्राम में डेरा करना १ खंडू सहित दोनों राजाओं का रावराजा के डेरे पर आना और जिस पीछे खंडू और माधवसिंह का मित्र होना २ सब सेना का वहां से निकलकर खारी नदी के किनारे मुकाम करना और उसके सम्मुख कछवाहों के राजा का आना ३मिलाप होना सुनकर कोप की इच्छावाले खंडू की सलाह से सब का सज्जित होना४राजा ईश्वरीसिंह का आगे आनेवाले कार्तिक मास में अपने छोटे भाई का बंट और बुन्दी छोड़ने का लिखित (तहरीर) हुलकर के हाथ में देना ५ निन्दा युक्त महाराव का उम्मेदपुर की सेना के भीतर घास के गाड़े लूटना ६ राणा का चूँडावत मेघसिंह और वैश्य टेकचंद को बुन्दी और टोडे भेजना ७ क्रोधित खंडू और

जयपुरप्रविशनतन्महारावबुन्दीमार्ग्गणराणाभूपत्रय३धुंधरीग्रामाऽऽगमनहङ्केन्द्रपुरोधीदयारामाऽऽनयनग्रामसगतपुरसम्भरेशसचिवहरजनोपयोगिनीशिविकासमर्पणतत्स्वामिदेशरक्षाकरणरावराड्‌द्वितीय २ राज्ञ्याऽऽत्मजोद्गमनसुभटीकृतसालमिप्रतापसिंहकूर्म्मराजबुन्द्यागमनकोटा १ रामपुर २ जयविचारणप्रताप १ दलेल २ सौहार्दकरणतदनुजान्नत्यजनप्राप्तयवनेंद्रपत्रेश्वरीसिंहदिल्लीगमनदलेलसिंहमथुरादेहत्यजनकूर्म्मेशरणस्तंभदुर्ग्गप्रार्थनतदनङ्गीभवनेरानोपमानपत्यन्तेन्द्राऽहमदशाहयुयुत्सुसपरिकरदिल्लीशकुमाराऽहमदशाहकरतोयाऽभिमुखनिर्याणसरिच्छतद्रुशिविरसंस्थापनयवनसचिवकूर्मसवन्धनविचारणतद्भयत्यक्तवाहिनीवैभवसहङ्कप्रताप १ खत्रिनारायणदास २प्रद्रुतेश्वरीसिंहस्वपुरसमाविशनप्राप्तदिल्लीशदोर्लिखिपत्रसितारेश्वरसचिवराजनन्होत्तरदिगाऽऽगमनमाधवसिंहतत्सङ्गसाधनजय

माधवसिंह का रामपुर पीछा जाना और जयसिंह के बड़े पुत्र (ईश्वरीसिंह) का जयपुर में प्रवेश करना ८ उससे महाराव का बुंदी मांगना और राणा सहित तीनों राजाओं का धुंधरी नामक ग्राम में आना ९ उम्मेदसिंह के पुरोहित दयाराम को लाना और सगतपुर नामक ग्राम में उम्मेदसिंह का सचिव हरजन के उपयोगी पालखी देना और उसका स्वामी के देश में युद्ध करना १० रावराजा की दूसरी राणी के पुत्र होना ११ सालमसिंह के पुत्र प्रतापसिंह को उमराव बनाकर राजा ईश्वरीसिंह का बुन्दी आना और कोटा व रामपुर को जीतने का विचार करना १२ प्रतापसिंह और दलेलसिंह दोनों भाइयों में मित्रता करना और दलेलसिंह का अन्न छोडना १३ जिसपीछे दिल्ली के बादशाह का पत्र आने से ईश्वरीसिंह का दिल्ली जाना दलेलसिंह का मथुरा में शरीर छोडना और ईश्वरीसिंह का रणथंभ नामक गढ मांगना और उसका अस्वीकार होना १४ ईरान [म्लेच्छ देश] के पति अहमदशाह से युद्ध करने की इच्छावाले उसके उपमान परगह सहित दिल्ली के पति के पुत्र अहमदशाह का निकलकर शतद्रू नदी के पास डेरे करना और दिल्ली के वजीर का कछवाहे ईश्वरीसिंह को कैद करने का विचार करना १५ उसके भय से सेना को और वैभव को छोड़कर हाडा प्रतापसिंह और खत्री नारायणदास सहित भागेहुए ईश्वरीसिंह का जयपुर में घुसना १६ दिल्ली के बादशाह के हाथ का लिखा हुआ पत्र पाकर सितारे के पति के सचिव नन्द का उत्तर दिशा में

पुरजनपदनिवाईनगरदक्षिणपृतनाप्रपतननन्ह १ मल्लार २ वर्णदूत हूतबुंदीन्द्राऽऽगमनयवनद्वय२ शतद्रुयुद्धभवननालीयंत्राध्यक्षमनसूर स्वसचिवमारणपरसैन्यपलायनयवनेशमहाराष्ट्रागमवारणाध्ययद्रव्य द्रम्मद्वाविंशति २२ लक्षप्रेषणातिरस्कृतकूर्म्मराजनन्हप्रस्थानतत्परि-करेन्द्रगढलुण्टनविचरणकुपितोम्मेदसिंह १ माधव १ दाक्षिणात्य वारणानृपदेशाध्यक्षशत्रुरणाकरणातन्नन्हबुन्दीन्द्रशिविराऽऽगमनतत्स हायमल्लारप्रतिप्रेषणस्वयंदक्षिणागमनोम्मेदसिंह १ माधवसिंह २ सहायीभूतहुलकरोदयपुर १ योधपुर २ कोटा ३ सैन्यसमाऽऽह्वयन कूर्मजपनदलुण्टनटोडा १ मालपुर २ टोङ्क ३ नयनसमाहूतसैन्यत्रय ३ संमिलनं त्रयोविंशो २३ मयूखः ॥ २३ ॥ ३०४ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

नगर लहानाँही सुन्यौं, साह[1] मुहम्मद नास ॥
सक सर नभ बसु ससि१८०५समा, मेचक[2] सावन मास ।१।

आना १७ उसके साथ माधवसिंह का आना और जयपुर के देश निवाई नाम नगर में दक्षिण की सेना का मुकाम करना और नन्ह और मल्लार के पत्र से बुलाये हुए बुन्दी के पति का आना १८ दोनों यवनों का शतद्रू नदी पर युद्ध होना और तोपों के अफसर मनसूरअली का अपने वजीर को मारना और शत्रु सेना का भागना १९ बादशाह का मरहठों की सेना का आना रोककर लगेहुए खरच के बाईस लाख रुपये भेजना २० ईश्वरीसिंह का तिरस्कार करके नन्ह का गमन करना और उसकी परगह का इन्द्रगढ को लूटने को जाना और क्रोध युक्त उम्मेदसिंह और माधवसिंह का दक्षिणियों को रोकना २१ उम्मेदसिंह के देश के अधिकारियों से शत्रु के युद्ध करने के कारण नन्ह का बुन्दी के पति के डेरे पर आना और उसकी सहाय पर मल्लार को भेजना २२ नन्ह का दक्षिण में जाना और उम्मेदसिंह माधवसिंह की सहाय पर हुलकर का उदयपुर, जोधपुर, कोटा की सेना को बुलाना २३ कछवाहे के देश को लूटना और टोडा, मालपुरा और टोंक को प्राप्त करके बुलाई हुई तीनों सेनाओं के शामिल होने का तेईसवां २३ मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीनसौ चार ३०४ मयूख हुए ॥

१ दिल्ली के बादशाह मुहम्मद का मरना २ कृष्ण पक्ष ॥ १ ॥

ताको सुत बैठो तखत, अहमदसाह अनूप ॥
वह मनसूरअली सचिव, रक्ख्यो पुनि अघरूप[1] ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

तिनहि मुकामनतैं मलार निज भट गंगाधर ॥
सहँस अठ८०००दल संग दै रु पठयो जैपुर पर ॥
तिहिँ जाय रु जयनैर द्वार अररन तोमर हनि[2] ॥
बुलवाये प्रतिबीरैं[3] भीरुँ[4] अब समुख होहु भनि ॥
कोटके निकट मालिन कुटिय बाँटिन[5] सहित प्रजारि दिय ॥
कूरमहु तुंग प्रासाद[6] चढि यह चरित्र आतुर[7] लखिय ॥ ३ ॥
तब नृप ईश्वरिसिंह कटक पिल्ल्यो तिन उप्पर ॥
सेखाउत सिवसिंह विदित निकस्यो बीरनबर ॥
यह कूरम निज असन बेर[8] दुंदुभि[9] बजवावैं ॥
लक्खन रंक जिमाय प्रीत ओदन[10] तब पावैं ॥
तिहिँ खुल्लि अरर[11] जयनैरके सजव[12] बाजि सम्मुह कियउ ॥
मरहठ्ठ भटन जयकार[13] मिलि हुलह मार खग्गनदियउ ॥ ४ ॥
सीकरपतिको लोह कटक दक्खिन सिर बज्ज्यो ॥
घरिय दोयर घमसान[14] मुक्ति गंगाधर भज्ज्यो ॥
पंच५ कोस पहुँचाय मुर्यो प्रतिमग[15] सेखाउत ॥
जाय निवेदिय बिजय नृपहिँ बंदीन[16] बिरुद सुत ॥
अरु कहिय जो न आपुन चढहु तो सत्रुन सैन हारिहैं[17] ॥
नृप कहिय जट्ट[18] अप्पन मिल रु संगर बहुरि सुधारिहैं ॥५॥

१पापी को ॥ २ ॥ २दरवाजे के किवाड़ों पर भाले मारकर ३शत्रुओं को ४हे कायरो ५बगीचियों सहित मालियों की झूंपड़ियें जला दीं ६ऊँचे महल पर ७पीड़ित होकर ॥ ३ ॥ ८ अपने भोजन करते समय ९ नगारा १० अन्न ११ कपाट खोलकर १२ शीघ्र १३जय करनेवाला ॥ ४ ॥ १४ युद्ध १५ उलटे मार्ग (पीछा) आकर ईश्वरीसिंह को विजय निवेदन किया १६ भाट लोगों से स्तुति को सुनता हुआ १७ से १८ भरतपुर के जाट ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

पठपे यह कहि भरतपुर, कग्गर जट्ट समीप ॥
आयहु सूरजमल्ल इत, मंडत जुद्ध महीप ॥ ६ ॥
गहिय ढिग लै बैठिहैं, तुमहिं बीर अति आघ ॥
हिम दक्खिन सिर होहु अब, दुपहर जेठ निदाघ ॥
इम कग्गर हुत बंचिकैं, चढिग जट्ट रविमल्ल ॥
जयपत्तन दरकुंच जँव, आयो कटक उम्हल्ल ॥ ८ ॥
नगर लदानातैं किपउ, इत सब दलन प्रयान ॥
सावन उज्ज्वल भूत१४ सक्क, मिलि सर नभ धृति१८०५ मान॥ ९ ॥
हठ पूरब हुलकर रचे, बगरू नगर मुकाम ॥
तँहँ सन लियउ मलार तब, दसहजार१०००० दंमदाम ॥ १० ॥
रानकँटक अंतर गयउ, पुनि दक्खिन दलराय ॥
भिन्न भिन्न सब भट किये, मोदित डेरन जाय ॥
साहिपुरेसहिं आदिदै, सबहि रान उमराव ॥
इक१ इक१ हय नजरि करि, छुल्ले लरन चढाव ॥१२॥
तदनंतर मरुधर कटक, पहुँच्यो हुलकर नाथ ॥
अभयसिंह भट वर अखिल, संबोधे हित साथ ॥ १३ ॥
खासा दुव२ हथ दुव२ हर्यो, सालति पुष्ट समान ॥
चारु करभ सु बिनीत चउ४, पीन रु रंजत पलान ॥ १४ ॥
रयोंहि क्रमेलक दिग्घ तनु, भीरबाह पंचास५० ॥

॥ ६ ॥ दक्षिणियों रूपी १ बरफ के ऊपर २ ताप (घाम) अथवा ग्रीष्म ऋतुका ॥ ७ ॥ ३ सूर्यमल्ल ४ शीघ्र ॥ ८ ॥ ५ शुक्ल पक्ष ॥ ९ ॥ ६ दंम के रुपये ॥ १० ॥ ७ राणा की सेना के भीतर गया देशी प्राकृत के मतानुसार 'ए' और 'ई' को 'इय' और 'ओ' और 'व' को 'उव' होता है सो छंद रचना में उपयोगी होने के कारण ग्रहण किया है ८ सेनापति मल्हार ॥ ११ ॥ १२ ॥ ९ जिसपीछे १० सबको ११ निमंत्रित किये ॥ १३ ॥ १२ घोडियाँ १३ सुवर्ण की १४ सुन्दर ऊंट १५ अंत शिक्षा पायेहुए १६ पुष्ट १७ चांदी के ॥ १४ ॥ १८ बडे शरीरवाले ऊंट १९ भारबरदारी के

मरुपति एते५८ मुक्कले, प्रिय सखं हुलकर पास ॥१५॥
ते सब अत्थ निवेदये, सेरसिंह१ मनरूप२ ॥
इक१ इक हय पुनि अप्पनैं, अप्पे भेट अनूप ॥ १६ ॥
तिनहि सुकामन पंचसत५००, कोटाके असवार ॥
आये सम्मलि आहुरन, चिंतत विजय विचार ॥ १७ ॥
अखयराम१ कायत्थ अरु, नगर नागदह नाथ ॥
मांधानी मोहन कुलज, जोध२ मुक्ख दल साथ ॥ १८ ॥
तिनहूको सनमान किय, हुलकर डेरन जाय ॥
इक१ इक घोटक अप्पये, प्रचुर प्रीति उन पाय ॥ १९ ॥

॥ रुचिरा ॥

तँहँ माधव इक कपट बिथारिय अग्रज परिकर फोरनकों ॥
कन्ह१ वकील बहुरि गोगाउत२ मिलि कूरम मन मोरनकों ॥
प्रतिउत्तर समुझै तिम कंग्गर जैपुर सचिवन नाम रचे ॥
दे चरं हत्थ कहिय अग्रज चर इनहिं लखैं तब मोदमचे ॥ २० ॥
यहसुनि चर दल लहि जैपुर गैंत जानि परायनैं हत्थ परचो ॥
ईश्वरिसिंह हु लखि तिन पत्रन व्है अति आकुल सोक करचो ॥
जिन अभिधान लिखे उन पत्रन तिन प्रति अक्खिय तुमहु पढो॥
हरगोबिंद प्रमुख सुनि बुल्लिय उन छल किय तुम लरन चढो॥२१॥
ईश्वरिसिंह सु सुनि गहि मोन रु जट्ट सहित दलँ लरन सजे ॥

१सखा (मित्र)॥१५॥२यहां निजर किये॥१६॥३युद्ध करने को॥१७॥४माधोसिंघोत हाडा॥ १८ ॥ ५ घोड़ा ६ बहुत प्रीति पाकर ॥ १९॥७बड़े भाई (ईश्वरीसिंह की परगह को फोड़ने के लिये माधवसिंह ने एक कपट रचा ८ कछवाहों का मन मोड़ने के लिये ९ उनके पहिले के भेजे हुए पत्रों के उत्तर समझे जावैं ऐसे जयपुर के सचिवों के नाम१०पत्र रचे ११ हलकारे के हाथ १२ ईश्वरीसिंह का नौकर देख लेवै तब हर्ष होवै ॥ २० ॥ १३ गया १४ पैलों के हाथ में १५ जिन के नाम १६ आदि ॥ २१ ॥ भरतपुर के जाट सहित लड़ने को १७ सेना सजी

हेस[1] हयन बारन गन बृंहित[2] बंबक[3] त्रंबक[4] बहुल बजें ॥
इत बगरुव बुधसिंह सुवन नृप सँमुद[5] कबंधन[6] सिविर गयो ॥
मारव मुदित मिले नति पूरब घोटक इक१इक१ भेट भयो ॥ २२ ॥
इत पंडित पहुँच्यो गंगाधर पुनि पुर अँररन[7] सेल्ल हनैं ॥
पुरजन पकरि सहर बहिरागत[8] बिदित बिडारिय मुंडि घनैं ॥
ईश्वरिसिंह सु सुनि सज्जित करि तीस सहँस ३०००० निज कटक चल्यो ॥
संगहि जट्ट अधिप रविमल्लहु[9] बाहिनि[10] गाहिनि हंकि बल्यो ॥२३॥
सक सर नभ बसु ससि १८०५ सम्मित सँम[11] भद्द असित गत दोजि२ दिनाँ ॥
किरि रदँ[12] तुट्टि छुट्टि सत्व रु नृप बँसुमति[13] कुट्टिय समय बिनाँ ॥
हाक प्रचुर डिस दिस प्रतिहारन[14] हयन हजारन जूह[15] जुरे ॥
असह अचानक अनउपँमानक[16] घन रँव[17] आनक निकँर[18] घुरे ॥२४॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशौ लदानापुरसम्निवहितशिबिरसमस्तसैन्यदिल्लीशशाहमुहुम्मदमरणाशमनशूरसचिवतत्कुमाराऽहमदशाहयवनेन्द्रीभवनमल्लाराष्टसहस्र८०००सैन्यसहितसेनापतिगङ्गाधरजयपुरप्रेषणतत्तोरणाऽऽरतोमरमहारणाबाह्याऽऽर,

१घोड़ों का हींसना २हाथियों के समूह की गर्जना ३ नगारे और ४ ताले बहुत बजे ५ हर्ष सहित ६ राठोड़ों के डेरे गया ॥ २२ ॥ ७ किवाड़ों पर भाले मारे ८ शहर से बाहिर आयेहुए पुर के मनुष्यों को पकड़ कर प्रसिद्ध मुंडन कराके निकाल दिये ९ सूर्यमल्ल १० शत्रुओं को मर्दन करनेवाली सेना को लेकर ॥२३॥ ११समा (वर्ष) पराक्रम छूटकर १२वराह के दंत टूटे १३भूमि द्वारपालों की १४ बहुत हाक १५ हजारों घोड़ों के समूह जुड़े नहीं सहाजावै ऐसा १६उपमान रहित अचानक १७मेघ की गर्जना के समान नगारों का १८समूह बजा ॥ २४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, लदाना नगर में सब सेना का डेरा करके दिल्ली के बादशाह मुहम्मद का मरना सुनना और शूर व सचिवों का उस के कुमर अहमदशाह को बादशाह करना ? मल्लार का आठ हजार सेना सहित सेनापति गंगाधर को जयपुर भेजना और उस का

मादिप्रज्वालनजायसिंहितत्सहायाऽर्थस्ववंशीयसेखाउतशिवसिंहानि
स्सारणातत्तुमुलरणागङ्गाधरपलायनसेखाउत्तप्रतिगमनस्वर्पानिष्कस-
नौचितनिगदनकूर्म्मराजभरतपुरपत्रप्रेषणातदधीशजट्टेन्द्रसूर्यमल्ला-
ऽऽनयनगद्दिकास्पृक्कृतदुपवेशनस्वीकरणविदितवर्णादूलसूर्यमल्लजय
पुरागमनसचमूमल्लार १ बुन्दीन्द्र २ माधवो ३ दयपुर १ योधपुर २
कोटा ३ सैन्यबगरूपुरप्रपतनातद्दण्डद्रव्योद्धरणाहुलकरसर्व्वसार्थसै-
न्यमुख्यसम्माननमित्रमरुराजप्रेषितहयकरभादिद्रव्यमल्लाराङ्गीकर-
णाभूतसिद्धभविष्यस्वागतोचितकोटाकटकाऽऽगमनमाधवसिंहप्रति-
बचनव्यंजककौहक्यपत्रजयपुटप्रेदनप्रेषणातत्सद्भूतपरप्रत्यक्षीभव-
ज्जायसिंहिवञ्चकविवेचनमोहनहरगोविन्दादिपारवाञ्चक्यप्रकटीकरण
समानकालाऽधिकरणाहड्डेन्द्र १ गङ्गाधरसंगतमरुसैन्यशिबिर २ जय
पुरा२ऽयाऽगमहयोपायनपुरकवाटध्वंसननागरमुण्डनाक्रन्दन३प्रहणा

नगर के द्वार के कपाटों पर भाला मारना २ बाहर के बाग आदि को जलाना और जयसिंह के पुत्र का उनकी सहाय के अर्थ अपने वंशवाले शेखावत शिवसिंह को भेजना ३ उसके भयंकर युद्ध से गंगाधर का भागना और शेखावत का पीछे आकर ईश्वरीसिंह के बाहर निकलने की उचित वार्ता कहना ४ ईश्वरीसिंह का भरतपुर पत्र भेजना और वहां के पति जाटों के राजा सूर्य मल्ल को बुलाना ५ गादी को छूतेहुए बैठने के स्वीकार के पत्र को जानकर सूर्यमल्ल का जयपुर आना ६ सेना सहित मल्लार, उम्मेदसिंह, माधवसिंह और उदयपुर, जोधपुर, कोटा की सेना का बगरू पुर में मुकाम करना और वहां से दंड के रुपये लेना ७ हुलकर का सब के साथ सेना के मुख्य सरदारों का सन्मान करना और मल्लार का अपने मित्र मारवाड़ के पति के भेजेहुए घोड़े, ऊँट आदि द्रव्य को स्वीकार करना और आगे आये हुओं का आदर सिद्ध करके आगे के उचित सत्कार के लिये कोटा की सेना में आना ८ माधवसिंह का, प्रति उत्तर जाना जावै ऐसा छल का पत्र जयपुर भेजना और जो उसके दूत से प्रत्यक्ष होकर जयसिंह के पुत्र (ईश्वरीसिंह) का उस ठग के विचार से मोहित होना और हरगोविंद आदि का शत्रु का छल प्रकट करना ९ एक ही समय में हाडाओं के राजा (उम्मेदसिंह) और गंगाधर के साथ मारवाड़ की सेना के डेरों में और जयपुर के आगे आना, हाडा के तो घोड़ा नजर होना और गंगाधर का पुर का कँवाड़ों को तोड़ना १० नगर के लोगों

श्रवणा ४ जट्टसूर्यमल्लाऽनूनेश्वरीसिंहाऽरात्यनीकाऽभिमुखनिस्सरणंचतुर्विंशो २४ मयूखः ॥ २४ ॥ आदितः ॥३०५॥

॥शुद्धव्रजदेशीयाप्राकृतभाषा ॥

॥ मनोहरम् ॥

बावन५२ बरनतैं सरस्वतीको सरबस्व,
बेदिजाको बस्त्रज्यौं दुसासनके करतैं ॥
छंद छप्पईतैं ज्यौं प्रपंचित प्रसर पुंज,
बीज बसुधातैं बेर बुंदैं बारिधरतैं ॥
बारिधितैं बीचिं मारतंडतैं मरीचि मित ॥
तरल तरंगा स्रोत गंगा गिरिबरतैं,
गोतमतैं न्याय राजराजतैं ज्यौं रांय औसैं,
कूरम कटक कढ्यो जैपुर नगरतैं ॥ १ ॥
आवतही पंडित प्रधान तंते गंगाधर,
फोरिसे चखाप लोह मुरयो तजि खेतुहैं ॥
लागो पीठि कूरम बिनाश्रम बिजय जानि,

का मुंडन करना, उनका रोना और पकड़ना सुनकर जाट सूर्यमल्ल के साथ ईश्वरीसिंह का शत्रु सेना के सम्मुख निकलने का चौबीसवां २४ मयूख हुआ और आदि से तीनसौ पांच ३०५ मयूख हुए ॥

अब आगे छोटी वस्तु से बड़ी वस्तु के निकलने की उपमा देते हैं कि बावन वर्णों (अक्षरों) से सरस्वती का सर्वस्व (संसार भर की सम्पूर्ण विद्या निकला जैसे और दुश्शासन के हाथ से १ द्रौपदी का वस्त्र निकला जैसे और छप्पय छंद से २ रचाहुआ ३प्रस्तार का समूह निकला जैसे "छप्पय छन्द का प्रस्तार बहुत बड़ा होता है" ४ पृथ्वी से सम्पूर्ण वस्तु का बीज निकला जैसे मेघ से ५ शरीर और जलकण निकले "जैसे मेघ से मच्छी मैंडक आदि असंख्य जीवों की सृष्टि होती है" समुद्र से ६ लहरें निकलें जैसे और सूर्य से ७ किरणें निकलें जैसे, हिमालय पर्वत से ८ चपल तरंगवाली गंगा की धारा निकली जैसे, गौतम मुनि से न्याय (न्यायशास्त्र) और जैसे, ९कुबेर से१०धन निकला तैसे जयपुर नगर से कछवाहे ईश्वरीसिंह की सेना निकली ॥ १ ॥

विना ही श्रम विजय मिलना जानकर ११ कछवाहा ईश्वरीसिंह पीठ लगा

*जट्टन समेतु सज्ज संगर सचेतुहैं ॥
†बड़िस बपाके लोभ लीन ‡महामीन जैसें,
डोरि ऐंचिबेतें नीर तीर आनि लेतुहैं ॥
जैपुरनेरस आनि डाऱ्यो यों मलारपैं ज्यों,
डाकिनिके डेरा डावरेकों डारि देतुहैं ॥ २ ॥
आवत सुनत ढुंढाहरको कटक इत,
१पर अनीक हिय पंकज खिलतुहैं ॥
बुंदीपति १ माधव २ मलार३ असवार होत,
सिसकतु सेस अंग कच्छप गिलतुहैं ॥
सिंधू राग लागैं खैंचि खागैं अनुरागैं आनि,
हाडे तानि बागैं बढि आगैंकों मिलतुहैं ॥
नयन गुलाबी आबी छत्रनैं छाबी भूमि,
एडिनकी दाबी नाँ अँगूठन मिलतुहैं ॥ ३ ॥
बान नभ अष्ट भू १८०५ समान सकविक्रमके,
पहव चउत्थी४ स्याम भालन भिलनकों ॥
नैर बगरूके खेत पंचों५ सेन सज्ज करि,
मंड्यो मँगरूर इंकि सम्मुह मिलनकों ॥
आसिक अर्नीके बीँद अच्छरि बनीके फन,
फोरत फनीके धार धारन झिलनकों ॥
हाडा छत्रधार १ और माधव२ मलार३ लागे ॥

---

*जाटों सहित युद्ध पर सचेत होकर सजा सो † कांटे (कटिये) में लगाई हुई चरबी के लोभ से लगनेवाला ‡ बडा मच्छ खैंचने से जैसे जल के किनारे आजाता है तैसे गंगाधर रूपी कटिये ने जयपुर के राजा को मल्लार के पास ऐसे ला डाला जैसे डाकिनी के डेरे पर बचे को ला डाल देते हैं ॥ २ ॥ १शत्रु की सेना के २ प्रीति करके गुलाब से (लाल) नेत्रों की ३शोभा ४ छाईहुई ५ जिस भूमि को एडी से दबाई वह अंगूठे को नहीं मिलती अर्थात् पीछे पग नहीं लगते ॥ ३ ॥ ६ कृष्णपक्ष ७ घमंड ८ शेषनाग के ६ छत्र धारण करनेवाला

राहु[1]ह्वैकैं कूरम कलानिधि गिलनकों ॥ ४ ॥
चलत चलूकैं चौंकि चंडी चहकाय गन,
गिद्धि गहकाय खरे खेत्रपाल खिल्लीपैं ॥
तरल[3] तुखार[4] सार पक्खर अपार नाद,
प्रचुर प्रसार जो न झंतकार झिल्लीपैं ॥
घुमंडि घटाले हल्ल हुलकरवाले बीर,
झाले भुज भाले चाले दीठि मन मिल्लीपैं ॥
कूदत कैलावा[5] नागपेच लपटावा देत,
कूरमपैं कावा[6] देत दावा देत दिल्लीपैं ॥ ५ ॥
प्रथम मिलाप रचि तोपनको ताप,
कपिलेसँ[7] कैसो साप बाप[8] कालको बिथारचो त्यौं ॥
करकि कराल[9] सोरझाल बिकराल फेलि,
फालन[10] बिसाल ज्वालमाल जग जारचो त्यौं ॥
गोलनके गोन पीलु[11] मत्ते पोन[12] पैंत्ते कारि,
तोनों[13] भौंन तत्ते कारि प्रलय प्रसारचो त्यौं ॥
नालिनको[13] नाद यों निहारचो बगरूके जंग,
मंदर[14]को मारचो ज्यों पयोनिधि[15] पुकारचो त्यौं ॥ ६ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

परत पलीते घोर जाम[16] जुगर बीते छूटि,
फैरनपैं फेर नर हैवर[17] मरत जात ॥
सिलगत सोर ओर ओर जातवेद[18] जोरि,

(राजा) १ कछवाहे रूपी चन्द्रमा को ॥ ४ ॥ २ फूलकर (प्रसन्न होकर) ३ चपल घोड़े ४ तरवार ५ हाथियों के कंधों पर हो हो कर कूदने हैं ६ शोक कुआ ॥ ५ ॥ ७ कपिलदेव के शाप के समान ८ काल का भी पिता "अधिकता बताने में बाप को बताने की लोकोक्ति है" ९ भयंकर १० कंधी छलांगों से ११ मस्त हाथियों को पवन के १२ स्पर्श के समान करके १३ तोपों का शब्द १४ मंदराचलों का मारा हुआ १५ समुद्र ॥ ६ ॥ १६ दो पहर १७ घोड़े १८ अग्नि के

जिल्लह जेल्लूसी जंबूदीपकी जरत जात ॥
जंग बगरूके घोसें कोसन पहुमि रुंधि,
धूम धीरनीकी धुंधि धूसर परत जात ॥
सेंख्खी करि सूर जेंसमकखी तोप लंख्खी गज,
मख्खीपर लैलै काल चख्खीसी करतजात ॥७॥
गान नँव गोले घमसानिन उडानन लै,
धानन किंसानन त्यौं प्रानन लुनतें जात ॥
दाहन दुसह अवगाहन बिजय बेद,
चंड कछ्छवाहन सिपाहन चुनत जात ॥
दगि दगि दाँव ताव अतुल अँलाव लगि,
झगि इकतौंर झार भारसी भुनत जात ॥
ताँकैं तिन तोपन अवाजन सुनत त्यौंही,
तोपनके ताकेहूं अवाजन सुनत जात ॥ ८ ॥
पाथोजजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥
॥ मुक्तादाम ॥
रची बगरू इम तोपन रारि, झगे अँय गोलक पावक झारि ॥
भये कँचमाल मई सब भोन, गिरैं बहु बाँरन गोलन गोन ॥ ९ ॥
उडैं बर हैवँर त्यौं असवार, लहैं जम मग्ग कि नैर बजार ॥

यश से १ शोभा २ शोभा की सामग्री (सजावट) ३ शब्द ४ सूरज को साक्षी करके ५ समत्र (संमुख) ६ लाखों रुपयों के हाथियों को अथवा काले हाथियों को "तोप, बंदूक का निशाना काले रंग का ही करते हैं" ॥ ७ ॥ ७नवीन८युद्ध में९करसे लोक धान को काटें जैसे१० प्राणों को काटती है ११ शीघ्रता से विजय का धाड़ लेती हुई१२अग्नि१३तुलना रहित अग्नि का समूह १४ निरन्तर१५उन तोपों को देखते हैं सो१६उन तोपों की ताक (सिस्त) में आये हुओं की अवाज (शब्द) मात्र ही सुनते हैं कि यह भी थे॥८॥ १७लोहे के गोले १८सब भर कचनार मय (लाल) होगये (कचनार का रंग लाल होता है अथवा मरनेवाले मनुष्यों की अधिकता से सब भूमि केशों की मालामई होगई) गोलों के चलने से बहुत१९हाथी गिरते हैं ॥ ९ ॥ इसी प्रकार श्रेष्ठ२०घोड़े और घोड़ों

उड़ैं दगि तोर झलाझल अभ्भ, गिरैं सुनि गज्जत गेभिनि गभ्भ॥१०
हलैं भुव पन्नग सीस हजार, मचैं किरिं तुंड सपक्कन मार॥
नचैं जिम मारुत वारिधि नाव, भयो इम छोनिय तंडव भाव॥११॥
भये जड़ जोगिय छुट्टि समाधि, बढ्यो सब ओर प्रजागर व्याधि॥
भन्यों विधि लोक बनावन भार, करी हरिसों द्रुत जाय पुकार १२
लगैं अय गोलक मंडत लोप, उड़ैं ध्वजदंड मयूरन ओप॥
थरत्थर भू जिम पोमिनि नीर, सरैं जिम ग्रीखम तप्त समीर॥१३॥
उड़ैं हय अंभ भ्रमैं गति चक्र, मनों इन्द्र पच्छन कट्टिय सक्र॥
रचैं बहु खेल सलंगत रुंड, बनैं चँतुरी परि मुंडन मुंड॥१४॥
छिकैं गज मत्त चिक्कारिन मारि, दरी गिरि सन्निभ होत दरारि॥
उड़ैं बहु सूर गरूर अघाय, बिनां श्रम हूरन लुंबत जाय॥१५॥
कढैं जित गोलक बेग बिथार, बनैं तित आयत पंथ बजार॥

के सधार उड़ते हैं, जस का मार्ग पड़ता है सो मानों नगर का बजार पड़ता है, बारूद झलाझल करके १ आकाश में उड़ता है सो गर्जना सुनकर २ गर्भिणियों के ३ गर्भ गिरते हैं॥१०॥ शेष के मस्तक के हजारे पर भूमि हिलती है और ४ वाराह की तुंडा पर सचकों की मार लगती है, जिस प्रकार ५ पवन से ६ समुद्र में नाव नचै तिस प्रकार ७ भूमि के नचने का भाव हुआ॥११॥ समाधि छूटकर योगी मूर्ख होगये (ज्ञान शक्ति नहीं रही) चारों ओर ८ जागरण का रोग बधा "चिंता के कारण निद्रा नहीं आवै उसका नाम प्रजागर है" ब्रह्मा ने ९ लोक बनाने का भार कहा और १० शीघ्र जाकर विष्णु से पुकार करी॥१२॥ ११ लोहे के गोले लगकर नाश करते हैं और मयूरों की शोभा से ध्वजा दंड उड़ते हैं, जैसे पानी में १२ पद्मिनी (कुमुदिनी) धूजै तैसे भूमि धूजती है और ग्रीष्म में १३ चलै ऐसा १४ गरम पवन चलता है॥१३॥ घोड़े उड़कर १५ आकाश में गोलाकार फिरते हैं सो मानों १६ इन्द्र ने इनकी पांखें काटडाली हैं "इन्द्र ने घोड़ों की पांखें काटीं सो कथा पुराणों में सविस्तर है" रुंड कूद कर कई खेल करते हैं और मस्तक पर मस्तक पड़कर १७ चबूतरियें (चूँतरियें) बनती हैं॥१४॥ मस्त हाथी १८ चीस मार मार कर छिदते हैं और १९ पर्वत की गुफा के २० सदृश दरारें होती हैं, अपार घमंड वाले बहुत वीर उड़ते हैं और विना ही परिश्रम अप्सराओं के जा लूमते हैं॥१५॥ २१ गोले जिधर वेग फैलाकर निकलते हैं उधर ही २२ चौड़े लंबे बजार बन-

गडैं भुव तोप चरक्खन *चक्क, लगैं कढि गोलक देत ललक्क ॥१६॥
जगैं कति पुंज पताकन ज्वाल, भ्रगैं जिम †मारुत होरिय भ्राल ॥
मच्यो बगरूपुर ‡उलमुक्क मेह, गिरैं बहु §सोध ¶अटालक गेह॥१७॥
हसैं नचि थेइन ×पन्नगहार, डरावत डाकिनि लेत डकार ॥
अनंतहिं नागिनियों उचरंत, कहो किम सेक्क घमंकत कंत॥ १८ ॥
नहीं परिरंभन स्पृष्टक आदि८, नहीं उपगूहन और अनादि ॥
ललाटक आदिक चुंबन८ नाँहिं, नवीन बनैं रसना रन नाँहिं॥१९॥
॥ बननाँहि१रननाँहि२अन्त्यानुप्रासः२॥
नकक्खहिं लै८नख अप्पत नाह,उठैं नहिं क्यों रति केलि उछाह
न गूढक आदि८ बनैं रदनोद, लहैं किम नाथ घनी तिय मोद॥२०॥
नहै परिरंभन आदिहि च्यारि४, नक्यों तब दुक्ख लहैं हम नारि
कही यह नागिनि सेसहि कत्थ,नस्यो तब नागं भिया भरि बत्थ२१
इतैं भुव बुंदियको अधिराज१, उतैं हढ जैपुर भूपति१ आज ॥
लरैं दुव२ सज्ज चमू रचि लाम, धुमैं इहिं कारन अप्पन धाम२२
सुन्यों इमनागिनि संगर सोर, रही चुप रुक्किय मोहन गोर ॥
कढैं रसना जिम दोय हजार२०००, परैं तिम नागिनिकों दुख प्यार

जाते हैं, तोपों के चरखों के*पहिये भूमि में गडते हैं और ललकार करते हुए गोले निकलते हैं ॥ १६ ॥ कितने ही ध्वजाओं के समूह जलते हैं सो मानों †पवन से होली की झाल जगती है, बगरू पुर में ‡ अंगारों (निर्धूम अग्नि) की वर्षा हुई जिससे§बहुत महल ¶ छतें और घर गिरे ॥ १७ ॥ × शिव नाचते हैं १ शेषनाग से सर्पिणियां कहती हैं ॥ १८ ॥ २ आलिङ्गन ३ वात्स्यायन कृत काम सूत्र में स्पृष्टक आदि आठ प्रकार के आलिंगन लिखे हैं जिस का वर्णन अश्लील होने के कारण हमने छोडदिया है ४ चुंबन भी वहीं पर आठ प्रकार के लिखे हैं५कटिमेखला का बजना अथवा लहँग का नाड़ा खोलने का युद्ध ॥ १९ ॥६नखक्षत भी काम शास्त्र में आठ प्रकार का लिखा है सो हे पति काख में लेकर नखक्षत क्यों नहीं देते७ यहीं पर गूढक आदि आठ प्रकार के दन्त क्षत हैं८ हे पति आपकी बहुत स्त्रियें मोद कैसे मानें ॥ २० ॥ ९ भुजों में भींचना ये परिरंभ भी काम सूत्र में चार प्रकार के लिखे हैं १०शेषनाग ने कहा ॥ २१ ॥ ११ पंक्ति रच कर ॥ २२ ॥ १२ मैथुन का भय (अन्यसंभोगिता का दुःख) मिटा अथवा मूर्छा का भय मिटा १३ प्यार के कारण ॥ २३ ॥

बराहहिं *सूकरिका इत बुल्लि डिगे किम दंतुलि टारत डुल्लि ॥
कह्यो तब तुंड टिकैं नहिं कोल, बयो सुहि †कुम्म ‡दुली प्रति बोल्ल॥
भये अधलोकहु यों §भर भीत, बनैं ब्रहमंड मनौं बिपरीत ॥
धरे इम द्वेर दल खग्गन खेरि, लयो मरहट्ठन कूरम घेरि ॥ २५ ॥

॥ षट्पात् ॥

दगत छई दुहुँ[1]ओर तोप पट ¶मदन बितानन ॥
आतप[2] हुव तपि अंक[3] चर्क[4] हुव स्वेदित आनन[5] ॥
इहिं अंतर आसार[6] मुदिर उज्झलि अति मंडिय ॥
बहि सुख सीतल बात खेद आतप[7] भव खंडिय ॥
दुव२ घटिय होय दाता जलद[8] गाढ कृपनपन पुनि गाहिय ॥
पहु[9] राम तदिन बगरू पहुमि बाहि रुहिर[10] सम्मलि बहिय॥२६

॥ दोहा ॥

मरहट्ठे रुक्कत मुदिर[11], जुरे बहुरि जुज्झार ॥
इक ऊँचे थल पर चढे, माधव३ हुल्लर२ मलार३ ॥ २७ ॥
तोप तहाँ सन त्रिगुन[12] खट ६।१८, माधवकी चलवाय ॥
कूरमपतिके गज निकट, गोले लग्गिय जाय ॥ २८ ॥
गो इतनै रवि चरमगिरि[13], साँय[14] समय बिधाय[15] ॥
भीमनिसा[16] आगम भयो, दिस दिस तिमिर दिखाय ॥ २९ ॥

---

*वराह की स्त्री †कमठने भी ‡उसकी स्त्री (कमठी) से यही वचन कहा ॥ २४ ॥ §भार से ॥ २५॥ ¶मोम के १वस्त्रों के तने हुए डेरों में २सूर्य तपकर ३घाम (गरमी) हुई जिससे ४सेना के ५मुख पर पसीना होगया इसी बीच में मेघ ने उछल कर ६ बहुत मेघ धारा बरसाई जिस से शीतल पवन चलकर ७ताप से उत्पन्न हुए दुःख को मिटाया ८ उस मेघ ने दो घड़ी तक दानीपन करके फिर कृपणता करी (बंध होगया) ९ हे प्रभु रामसिंह उस दिन बगरू की भूमि में पानी और १० रुधिर सामिल ही बहा ॥ २६ ॥ ११ मेघ के रुकते ही ॥ २७ ॥ १२ अठारह (छः को तीन से गुणा करने से १८ होते हैं) ॥ २७॥ २८ ॥ १३ सूर्य अस्ता-चल पर गया १४ संध्या समय १५ करके १६ भयंकर रात्रि का ॥ २९ ॥

फिर नकीब तब दुव्र२ दलन, अक्खिय रोकहु जंग ॥
मन सूरन सो सुनि मुरे, आयासित लखि अंग ॥ ३० ॥
बुद्धि तिमिर२ करि सबन नहिं, लद्धो डेरन राह ॥
लरत हुते तत्थहि३ रहे, तजि तजि तुरंग४ सिपाह ॥ ३१ ॥
तीन३ तीन३ दिनको असन, रक्ख्यो कतिन६ लगाय ॥
तिहिं करि भूखे तृप्त हुव, सूर१ सप्ति७२ समुदाय ॥ ३२ ॥
चग्गडोरि बाजीनकी, गहि गहि करन८ कराल ॥
सज्जहि रहि बैठे सबन, कट्ट्यो जामिनि काल ॥ ३३ ॥
माधवहू इक ग्राममैं, रहि कर्षुक गृह१० रत्ति ॥
बदलि नाम तापँहँ बचे, बितई निंद बिपत्ति ॥ ३४ ॥
कवच१सेभ्क१उपधान२कर२, पहुमि३पृथुल१२ पल्ल्यंक३ ॥
सुत्तो तँहँ जयसिंह सुवँ, असि४ कामिनि४धारि अंक ॥ ३५ ॥
सोवन१ न्हावन१ असन१की, कहाँ केणिका१५ तीन३ ॥
बुंदीसहु इक खेत बिच, खिनँदा१६ कीनी खीन ॥ ३६ ॥
हुलकरके पहुँची हठन, इक१रावटी आनि ॥
बित्ती कठिन बिभावरी, चटकन हुव चहकानि ॥ ३७ ॥
नित्य नियम मंड्यो नृपति, उट्ठि सबन सन अग्ग ॥
एते बिच पिक्ख्यो अडर, माधव आवत मग्ग ॥ ३८ ॥

॥ षट्पात् ॥

सक गुन नभ धृति१८०३समय मित्र माधव खंडुव हुव ॥
बदली दोउन पग्ग धरि सु रक्खी डब्बन धुर्व१८ ॥

१परिश्रम सहित ॥ ३० ॥ २वर्षा के अंधेरे से ३तहां ही ४घोड़ों से उतर कर ॥ ३१ ॥ ५ भोजन ६ कितने ही लोगों ने ७ घोड़ों के समूह ॥ ३२ ॥ ८ हाथों में ९ रात्रि का समय ॥ ३३ ॥ १० करसे के घर में रात बिताई ॥ ३४ ॥ ११ हाथ है सो ही तकिया हुआ १२भूमि ही बड़ा पलंग (सेझ) १३सुत १४खड्ग रूपी स्त्री को अंक में लेकर ॥ ३५ ॥ १५डेरा (तंबू) १६ रात्रि बिताई ॥ ३६ ॥ १७ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ १८ निश्चय

इहिंदिन वह उन्नीस[1] कुंम्म[2] आयउ धारन करि ॥
जपि नृप हिंतु[3] जुहार इक्क तरु तर गय उत्तरि ॥
द्विज दयाराम पठयो नृपति पुच्छन कछु कछवाह पँहँ ॥
तिंहिं जाय लखिय जयसिंह सुव चव्वत दंहँ मउठ तँहँ॥ ३९॥

॥ दोहा ॥

ऐसोहू आवत समय, घोर मचत घमसान ॥
भूपति हू निज भूखकौं, देत मोठ बलिदान ॥ ४० ॥
इतहु हड्ड नृप नित्य करि, वैश्वदेव करवाय ॥
जथालाभ[5] लै अन्न अरु, सज्ज्यो कवच सुभाय ॥ ४१ ॥
इहिं अंतर जैपुर अधिप, चढ्यो चमूजुत चंड ॥
अभ्रमुपति[6] पर इंद सम, बैठो साजि बेतंड[7] ॥ ४२ ॥
इत उमेद१ माधव२ अरहि, हय चढि सम्मलि होय ॥
हुलकर ढिग आये हुलसि, दलहिं[9] पचारत दोय२ ॥ ४३ ॥
नृप मलार हरवल्ल व्है, जयपुर सम्मुह जंग ॥
कुंत[10] भ्रमात असव्य[11] कर, फेरत तरल तुरंग ॥ ४४ ॥
परे पलीते तोप परि, अतुल दगी अरराय ॥
वासव[12] कैधों[13] वज्र लै, घल्लै अद्रिन घाय[14] ॥ ४५ ॥

॥षट्पात् ॥

तोपन लग्गत अग्गि व्याल[15] पीठक्क बररक्किय ॥
दररक्किय किरि[16] दड्ढ कमठ खुप्परि कररक्किय ॥
पृतनाँ[17] बिचकरि पंथ कढत गोले सक्क सक्क करि ॥
मनहुँ संघ मायूर[18] धसत काननं[19] केकाधरि[20] ॥

---

१ पगड़ी २ माधवसिंह ३ उम्मेदसिंह ४ से जुहार करके ४ सुने हुए मोठ चाबता था ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ५ जैसा मिला तैसा ॥ ४१ ॥ ६ ऐरावत पर इंद्र बैठे तैसे ७ हाथी पर बैठा ॥ ४२ ॥ ८शीघ्र ही ९ सेना को ॥४३॥ १०भाला ११दाहिने हाथ में ॥ ४४ ॥ १२मानों १३इंद्र ने वज्र लेकर पर्वतों पर १४ चोट लगाई ॥ ४५ ॥ १५शेषनाग की पीठ १६वराह की दाढ १७सेना में १८मयूरों का समूह १९ वन में २० केका नामक वाणी को धारण करके

मल्लार पिट्ठि कोटा चमुप हो मोहनसिंहोत भट ॥
वह जोध नागदहपुर अधिप गोला लगि गय विहित[1] वट ।४६।
ऐसे कठिन अनेह[2] कहिय माधव मलार कँहँ ॥
हम किहिंठोर रहैं सु त्वरित सुनि दिय उत्तर तँहँ ॥
देखहु वह बुंदीस वीर किहिँ ठोर बिहारत ॥
ललितँ[3] सेझ नहिँ लाल इहाँ निकसत असु[4] आरत ॥
मेरेहि कहँ रहनौं जु मत आनि रहहु तो मम उँदर[5] ॥
सुनि यह सिटाय माधव सलज हुव प्रदोष[6] पंकज[7] कँहर ॥४७

॥ दोहा ॥

इत तंते गंगाधर सु, दूजीर आनिय बनाय ॥
पैलीघाँ[8] सन उडि परिय, जैपुर दल बिच जाय ॥ ४८ ॥

॥ षट्पात् ॥

गंगाधर हय गरक करे कूरम दल अंतर ॥
रिट्ठिनँ[9] वज्जिग रिट्ठ भीमँ[10] गज्जिग रज्जिंग[11] भर ॥
फटत टोप चोधफार कटत करिकी तरबूजन ॥
खरँ[12] खुरतारन खुदत धरनि धारनँ[13] लगि धूजन ॥
भपकार मुंड मुंडन भिरत रुंड फिरत बन बन्हि रुख[14] ॥
भ्रामँरी[15] दसा भीरुन भई सिद्धा[16] सूरन समर सुख ॥ ४९ ॥
तंतेकी तरवारि बिखम जैपुर दल बग्गी ॥

---

१ उचित मार्ग (स्वर्ग) को गया ॥ ४६ ॥ २ समय में ३ सुंदर ४ पीड़ित होकर प्राण निकलते हैं ५ मेरे पेट में ७ सन्ध्या समय के जुलम से ६ कमल होवैं तैसे ॥ ४७ ॥ ८ परली तरफ से ॥ ४८ ॥ ९ निरन्तर प्रहारों पर प्रहार १० भयंकर गर्जना करके वीर ११ शोभायमान था रजो गुण युक्त हुए १२ तीखी से खुद कर १३ घोड़ों की दौड़ से भूमि धूजनेलगी १४ बन में अग्नि फिरे तिस प्रकार रुंड फिरते हैं १५ ज्योतिष में भ्रामरी दशा दुखदाई मनीजाती है सो कायरों की हुई और १६ सिद्धा दशा सुखदाई मानते हैं सो युद्ध में वीरों को

तड़ित जानि अति तेज मुदिर भद्दव झगमग्गी ॥
घेरयो रचि घमसान तुमुल हुव २ पहर कहर तप ॥
नैंक डिगन नन दियउ ईश्वरीसिंह अनेकप ॥
कूरमन तबहि यह छल्ल करिय दल नकीब मुक्कलि द्रुतहि
झंडे रुपाय दीरघ दपें करहु मुकाम मुकाम कहि ॥ ५०

तहि१ कहि२ अन्त्यानुप्रासः १॥

॥ दोहा ॥

यह लखि हुलक्कर कटक अब, जानी कुम्भ न जाय ॥
सउचादिक्क बपु कर्म सब, भट सु निबेरहु भाय ॥ ५१ ॥
तब तनाय इक१ रावटी, तजि कटिबंध मलार ॥
नित्य नियम बपु कर्म निज, बिरचन लगि तिहिं वार ।५२।
पौरानिक्क द्विज बुल्लि पुनि, इंद्रदत्त अभिधान ॥
व्यासासन बैठारि तिहिं, सुनत भागवत गान ॥ ५३ ॥
अँपर भटन उतरन समय, आक्खिय दूतन आय ॥
उतर्‌यो नहिं कूरम अधिप, जानैं हम भजिजाय ॥ ५४ ॥
हुलक्कर तब सुभटन कहिय, उतरहु कोउ न अज्ज ॥
कूरम हम जान्यौं कितव, लेस न बुल्लत लज्ज ॥ ५५ ॥
ततेकों मुक्कलि तबहि, रोक्यो जैपुर राह ॥
इतनैं दुंदुभि बज्जि अँर, कढि चल्लिय कछवाह ॥ ५६ ॥
सुनत एह हुलकर सु पहु, द्रुतहि उघारे देह ॥
तुरग चढ्यो पँटगेह तजि, मंडत आयुध मेह ॥ ५७ ॥

सुखदाता हुई ॥ ४६ ॥ १ बिजुली २ भाद्रवा के मेघ में ३ जुल्म वा क्रोध से तप कर के ४ ईश्वरीसिंह की सवारी के हाथी को ५ शीघ्र ॥ ५० ॥ ६ शरीर के कार्य ७ रीति पूर्वक ॥ ५१ ॥ ८ कमरबंधा खोलकर ॥ ५२ ॥ ९ पुराण बांचने वाले इंद्रदत्त १० नाम के ब्राह्मण को बुलाकर ॥ ५३ ॥ ११ अन्य वीरों के ॥ ५४ ॥ १२ छली ॥ ५५ ॥ १३ शीघ्र ॥ ५६ ॥ १४ डेरा छोड़कर ॥ ५७ ॥

॥ नराचः ॥

चढ्यो मलार लै तुखार नोहजार९००० नच्चते ॥
धंपे प्रवीर तानि तीर जंग धीर जच्चते ॥
बजे निसान [2]स्वान जे दिसा दिसान बित्थरे ॥
चमंकि पारि चिक्करी डिगे रु दि[3]क्करी डरे ॥ ५८ ॥
हजार पंच५००० सेन देस क्लेस काज मुक्कली ॥
रुमापुरी[4] समीपलौं गये लि लूटते बली ॥
हजार अंक ९००० [5]है लिये मलार उप्परयो इतैं ॥
जितैं जितैं चलात खात खग्गतैं तितैंतितैं ॥ ५६ ॥
बुलैं नकीब इक्कसै१०० हुलैं[6] हरोल हक्कदै ॥
तुलैं तुरंग तँक्खरे धरा धुजात धक्कदै ॥
उमेद१ माधवेस२हू सजे दुरूह सत्थव्है ॥
करिं[10]ध्वजाभ कुंम्भपैं पिले प्रचारि पैंत्थव्है[11] ॥ ६० ॥
करीनके [12]कलाप के [13]कलाप केतुके खुले ॥
चले [14]समग्ग खूब खग्ग सेन अग्ग संकुले ॥
खिचैं कमान बीच बान दंडितुंडै[15] दंतव्है ॥

नौ हजार नाचते हुए घोड़े लेकर मल्लार चढा और धैर्य के साथ युद्ध में जचे (ठहरे) हुए वीर१दौड़े वहां नगारों के२शब्द बजकर दिशा दिशाओं में फैलगये जिससे ३ दिग्गज डरकर चीख मार अपने स्थान से हट गये ॥ ५८ ॥ पांच हजार सेना ढुंढाहड़ देश में क्लेश फैलाने को भेजी गई जिसके वीर लूटते हुए ४ सांभर पुर तक पहुंच गये और इधर मल्लार भी नौ हजार ५घोड़े लेकर चढा सो जिधर जिधर वह गया उधर उधर तरवार से शत्रुओं को भक्षण ही करता गया ॥ ५६ ॥ ललकार के साथ६अगली सेना को बढाते हुए सौ नकीब बोले७और ७ ताते (चपल) घोड़ों को उठाकर भूमि को धक्के देकर धुजाने लगे जहां उम्मेदसिंह और माधवसिंह भी ८ कठिनाई से तर्कना में आवै इस प्रकार सज कर मल्लार की साथ हुए सो मानों १० ईश्वरीसिंह रूपी ९ कर्ण पर ११ अर्जुन के समान ललकारते हुए बढे ॥ ६० ॥ १२ कितने ही हाथियों के समूह पर १३ ध्वजाओं के समूह खुले १४ सभी खड्ग खूब चले और सेना के अग्रभाग में भरगये जहां १५ यमराज के मुख के दंत होकर कमानों के

करैं कटार केक पार *देवदार कंतह्वै ॥ ६१ ॥
झरैं तुरंग फेट भंग पंच५ रंग झंडके ॥
खिरैं †खलीन खग्ग खीन दुंदुभीन खंडके ॥
कटैं कपाल भिन्न भाल अंखि लाल उच्छटैं ॥
बटैं बिसाल ग्रीव गाल जत्रु१ जाल त्यौं फटैं ॥ ६२ ॥
कुकैं हुकैं फुकैं कलेज कुम्म२ के रुकैं लुकैं ॥
सुकैं करीन३ दान तान गान अच्छरी चुकैं ॥
छिकैं चिकैं किरीट केक ओट घोटकी४ टिकैं ॥
थकैं जकैं हकैं कितेक बाढ बन्हिकैं५ सिकैं ॥ ६३ ॥
जगैं प्रकोप अक्क६ ओप केक तोप त्यौं दगैं ॥
झगैं बिसाल सोर झाल दीपमालसी लगैं ॥
जचैं सु मल्ल जंग के तुरंग तापमैं तचैं७ ॥
रचैं बकारि रारि के डकारि डाकिनी नचैं ॥ ६४ ॥
गजैं गरूर पूर सूर कूर नूर के तजैं ॥

बीच में बाण खिचते हैं और कितने ही बीर * अप्सराओं के पति होकर कटार पार करते हैं ॥ ६१ ॥ जयपुर के कई पचरंगे झंडे घोड़ों की फेट से टूट कर गिरते हैं और खड्गों से कटकर कई † लगामों और कई नगारों के टुकड़े गिरते हैं, कपाल कटते और ललाट से भिन्न होकर लाल नेत्र उछलते हैं और लंबी गर्दनों के टुकड़े होते हैं और इसी प्रकार गाल और १ हंसुली की हड्डियें कटती हैं ॥ ६२ ॥ २ कई कछवाहे कूकते कई हूकते कई कलेजों को फूंकते और कई छुपते हैं इस जगह ३ हाथियों के दान सूख कर अप्सरायें गाने में तान चूकती हैं कई मुकुट छिद कर मस्तक से डिगते हैं और ४ घोड़ों की आड में टिकते हैं कितने ही थककर गिरते हैं और कई आगे बढकर ५ तरवार की धार रूपी अग्नि में सिकते हैं ॥ ६३ ॥ ६ सूर्य की उपमा के समान बीर लोग कोप में जलते हैं त्यौंही तोपें चलती हैं तहां बारूद की बडी ज्वाला प्रज्वलित होती है सो दीपमाला के समान दीखती है कई मल्ल युद्ध की याचना करते हैं सो घोड़ों की ताप में ७ जलते हैं अर्थात् पैदल होकर मल्ल युद्ध करते समय घोड़ों की टाप से मारे जाते हैं अथवा ताप में घोड़े जलते हैं कई बीर ललकार कर युद्ध करते हैं और डाकिनियां डकार लेकर नाचती

सजैं रंजैं भजैं न नीरके अनीरके भजैं ॥
तनैं प्रहार लुत्थि लार मार मार के भनैं ॥
घनैं घुमाय घोर घाय बायमत्तसे बनैं ॥ ६५ ॥
थपैं प्रपान प्रान केक ज्ञान कानपैं जपैं ॥
बिसार ज्यौं अपार बेग धार सम्मुहैं धपैं ॥
छवैं छलंगि छोनि हैं दुसार संगि गैं दबैं ॥
फवैं अगोट चंड चोट ढाल ओट के ढबैं ॥ ६६ ॥
सनंकि चौंकि चिल्हनी भनंकि गिद्धनी भ्रमैं ॥
खमैं घटाग खाग शेषभाग नागके नमैं ॥
करैं अनेक दाव केक पाव अग्गही परैं ॥
झरैं प्रसून भूरि भीर वीर अच्छरी वरैं ॥ ६७ ॥
मिलैं अभीत जंपि जीत पीलु बीतें दे पिलैं ॥
खिलैं सपान खेचरी भयान भूचरी मिलैं ॥

हैं ॥ ६४ ॥ कई वीर पूर्ण घमंड से गर्जना करते हैं तहां कायर लोग नूर छोडते हैं कई वीर सजेहुए १ शोभित होते हैं और २ पराक्रम वाले नहीं भगते किंतु पराक्रम हीन भगते हैं प्रहारों को ३ फैलाकर लोथों के साथ कई मुंड मार मार करते हैं [यहां लोथ के साथ मुंड का ऊपर से अध्याहार होना है] बहुतेरे घोर घावों से घूमकर ४ वायड़े (वादी में आनेवाले, पवन लगकर शीत में आनेवाले) के समान बकते हैं ॥ ६५ ॥ कितने ही प्राणों का प्रयाण होते समय उनके ५ कानों में गीता शास्त्रोक्त ज्ञान सुनाते हैं इसी प्रकार तरवारों के अपार वेग को भूलकर उन (तरवारों की ६ धाराओं के सन्मुख ७ दौड़ते हैं. ८ घोड़े मलंग लगाकर भूमि को छाते हैं और बछियों से दोनों बाजू फूट कर ९ हाथी दबते हैं. आगे की भयंकर चोट से शोभित होकर कई ढालों की आड से ठहरते हैं ॥ ६६ ॥ चीलहें चौंक कर उडती हैं और गिद्धनियें पंखों को बजा कर भ्रमती हैं. घटा की अग्नि (बिजुली) रूपी तरवारें १० चमकती हैं और शेषनाग के ११ फणों का भाग झुकता है. कई वीर अनेक दाव करते हैं और उनके पैर आगे ही पड़ते हैं १२ फूलों की बहुत भीड़ (बहुत फूल) बरसती है और अप्सराएं वीरों को बरती हैं॥६७॥कई वीर विजय होना कहकर निर्भय होकर मिलते हैं तहां १३हाथियों को १४हूलकर

स्वसैं नसैं अनेक सूर केक हुल्लसैं हसैं ॥
घिसैं कितेक नाक केक [1]नाक जायकैं बसैं ॥ ६८ ॥
थरत्थरी [2]थिराहु पिक्खि तेगकी तरत्तरी ॥
वरब्बरी लगै न जास फग्गकी [3]चरच्चरी ॥
छगच्छगी छछक्क डह्ह [4]कोलकी डगड्डगी ॥
झगज्झगी [5]दवग्गि दग्गि [6]नाकलौं [7]टगट्टगी ॥ ६९ ॥
खरीखरी अघाय खाय के परे [8]करी करी ॥
घरीघरी घुमाय जाय डाकिनी डरीडरी ॥
लजेलजे लुकैं लुभाय भीरु के भजे भजे ॥
सजेसजे सिपाह लेत मारदै मजे मजे ॥ ७० ॥
बटेवटे पिसाच [10]बुंक फिप्फरे फटे फटे ॥
कटेकटे गहैं कलेज नाँ गहैं नटेनटे ॥
[11]सचीसची भिरैं सम्हारि [12]बाहिनी बचीबची ॥
नचीनची फिरैं निहारि जुग्गिनी जचीजची ॥ ७१ ॥

चढाते हैं सोते हुओं पर खेचरियां (देवी की मांस खानेवाली दासियां) प्रसन्न होती हैं और भूचरियां (देवी की दासियां विशेष) भयानक होकर मिलती हैं अनेक क्रूर सिसकते और मरते हैं और कई प्रसन्न होकर हंसते हैं कितने ही भूमि पर नासिका को घिसते और कितने ही १ स्वर्ग में जाकर बसते हैं ॥ ६८ ॥ तरवारों की तड़ातड़ को देखकर २भूमि धूजने लगी जिस तड़ातड़ की बराबर फाग की ३ डंडेहर (गेहर) भी नहीं लगती रुधिर की पिचकारियां छिड़कने लगीं और४वराह की दाढ हिलने लगी ५दावाग्नि लग कर झगझगाहट करने लगी जिसको देखने को ६स्वर्ग पर्यंत ७टगटगी लगगई अर्थात् अनिमेष होकर देखने लगे ॥ ६९ ॥ योगिनियें खड़ी खड़ी गिरे हुए ९ बहुत हाथियों को खाकर ८ तृप्त होने लगीं घड़ी घड़ी में घूमकर मारे जाने के भय से डाकिनियें डरी डरी जाने लगीं कितने ही कायर जीने के लोभी होकर भगने लगे और कई लज्जित होकर छुपने लगे सजेहुए सिपाही मार देकर मजा लेने लगे ॥ ७० ॥ फटेहुए फेफरों और१०बूकों (गुरदों) को पिशाच बांटने लगे और कटेहुए (वीरों के) कलेजों को लेने लगे किंतु देने में इनकार करनेवालों (कायरों) के कलेजे नहीं लेते १२ बची हुई सेना ११ इकट्ठी होकर

धकेधके तरात लोह छोहमैं छकेछके ॥
थकेथके गिरैं[2] कुथाल ढालतैं ढकेढके ॥
कढे कढे किरंत क्लोमं[3] बक्त्र[4] के बढेबढे ॥
गढेगढे गडंत गिद्ध लुत्थिपैं चढेचढे ॥ ७२ ॥
मिचीमिची अनेक अंखि सोनमैं[5] सिचीसिची ॥
भिचीभिची भुजा भ्रमंत अंतरी[6] इचीइचीं[7] ॥
कुपेकुपे जुरैं कितेक रंगमैं रुपेरुपे ॥
लुपेलुपे लखात पाप धारतैं धुपेधुपे ॥ ७३ ॥
अनीअनी अरैं घटा कि घुम्मरी[8] घनीघनी ॥
जनीजनी लुभात आत अच्छरी[9] बनीबनी ॥
भईभई भनैं बिभिन्न के करैं दईदई ॥
नईनई रचंत रारि जोध जे जईजई ॥ ७४ ॥
मुरेमुरे मरैं कुभांति देखिबे दुरेदुरे[11] ॥
धुरेधुरे बजंत बंब ढोलके दुरेदुरे[12] ॥
हिलेमिले बढैं कितेक खीजमैं खिलेखिले[13] ॥
भिलेभिले भुकैं अनेक सांगि[14] तैं सिलेसिले ॥ ७५ ॥

सम्हल कर भिड़ने लगी तहां याचना करती हुई योगिनियां नाचती हुई फिर-ने लगीं ॥७१॥ १क्रोध में उफनेहुए वीर चढ चढ कर शस्त्र लड़ाने लगे और थके हुए वीर ढालों से ढकेहुए २ बुरी तरह से गिरने लगे निकली हुई ३तिल्लियां और कटेहुए४मुख बिखरने लगे और लोथों पर चढेहुए गिद्ध गाढे गडने लगे॥७२॥ मिचेहुए अनेक नेत्र५रुधिर में सिंचने लगे भिची हुई भुजाओं में भ्रमती हुई६आंतें ७खिचने लगीं कई वीर युद्ध में रुपकर कोप करके जुड़नेलगे तहां तरवारों की धाराओं से धुप कर पाप लुपेहुए दीखनेलगे ॥ ७३ ॥ सेना की अणी से अणी (अग्रभाग) अड़ती है सो मानों ८ घुमडी हुई घटाएं जोर से भिड़ती हैं प्रत्ये-क अप्सरा९दुलहिन बन बन कर आती है सो विवाह की वार्ता होचुकी ऐसा कहती है और १० कई कटे हुए दैव दैव पुकारते हैं विजय पानेवाले वीर नया नया युद्ध रचते हैं ॥ ७४ ॥ पीछे मुड़नेवाले कई ११ छुप छुप कर देखने के लिये बुरी तरह से मरते हैं १२ लुढकतेहुए ढोल और नगारे बुरे बुरे बजते हैं. कितने ही क्रोध में१३फूले हुए वीर हिले मिले बढते हैं और १४ बर्छियों से विधे हुए कई वीर ठहरते ठहरते झुकते हैं ॥ ७५ ॥ मझार रूपी

त्रसेत्रसे फिरैं मलार राहुके ग्रसेग्रसे ॥
लसेलसे लखैं तमास धुज्जटी हसेहसे ॥
कढेकढे जुरैं कितेक चंडिका चहेचहे ॥
वहेवहे फिरैं वपा सु गिद्धनी गहेगहे ॥ ७६ ॥
झटक्कि इक इक्कको पटक्कि वज्र्लौं परैं ॥
खटक्कि खग्ग खुप्परी अटक्कि पग्ग उत्तरैं ॥
दरक्कि छत्ति देखि यौं भरक्कि जैपुरे भजैं ॥
करक्कि संधि कंकटी बरक्कि बाढ के बजैं ॥ ७७ ॥
लचक्कि सेस संकुली भचक्कि भुम्मि बिक्खरैं ॥
मचक्कि पिट्ठि कामठी गचक्कि पंकमैं गिरैं ॥
सिलग्गि सोरकी सिखा फुलिंग फैलते बमैं ॥
मनोज्ञ मुंड मालिका रचैं रु कालिका रमैं ॥ ७८ ॥
खिरंत दंत कर्त के करंत हंत दिग्गजी ॥
गिरंत शृंग मेरु की भरंत स्वास भाभजी ॥
कृपीटि खीन के धुनीन कोपके कृसानुव्है ॥

राहु के ग्रसेहुए कई पुरुष १डरेहुए फिरते हैं. २ उल्लास युक्त होकर ३ शिव हंसते हुए तमाशा देखते हैं चंडी के चाहे हुए ऊपर कढ़ेहुए कई वीर जुड़ते हैं गिद्धनियों से गहीहुई ४ मज्जा पट्टी बही फिरती है ॥ ७६ ॥ एक दूसरे को झटका देकर वज्र के समान पड़ते हैं खोपरी पर ५तरवार खटक कर उसके अटकने से ६ पगड़ी उतरती है. इस प्रकार देखने से छाती फट कर जैपुरवाले चमक कर भगते हैं ७ कवच की संधि फड़क कर तरवार की धारा के बजने से तूटती है ॥ ७७ ॥ शेषनाग के पीठ की ८ हड्डी लचक कर भचक लगने से भूमि बिखरती है ९ कमठ की पीठ चमक कर १० कीचड़ में गिरती है. बारूद की ज्वाला सिलग कर फैलते हुए ११ अग्नि कणों को १२ उगलती है १३ शिव के अर्थ सुंदर मुंडमाला रचकर काली क्रीड़ा करती है ॥ ७८ ॥ १४ पतियों के दंत खिरने से १५ दिशाओं की हथनियां १६ खेद करती हैं श्वास भर कर गिरते हुए वीरों ने मेरु पर्वत के शिखरों के गिरने की १७भ्रांति धारण की अथवा सुमेरु के शिखर गिरने से उस सुमेरु की सभा (देवसभा) भगी उस युद्ध में लगी हुई २० अग्नि के कोप से कई १९ नदियां १८पानी से क्षीण

दुरयो बितान[1] धुंधि भानु दीह सीतभानु[2]ऽहै ॥ ७९ ॥
रजोमई तमोमई भटालि[3] भीर भू भई ॥
बिमान जाल[4] देवतान ताल रीझिकैं दई ॥
धसैं छुरी दुसार बीर पार नीर धारसी ॥
स्वसैं उतंग के परे मतंग[5] भुल्लि सारसी[6] ॥ ८० ॥
समुद्र सत्त७ लै हिलोर ओरओर उप्फनैं ॥
भनैं सिराह[7] चंद्रभाल काल कल्पको[8] बनैं ॥
अनंत[9] माँहिं अंत लै उडंत चिल्ह चंग[10]ऽहै ॥
हनंत हत्थ अंग के भनंत मत्थ भंगऽहै ॥ ८१ ॥
बितंड[11] बाटिकान[12] दंत[13] हस्तिदंत उप्परैं ॥
किरे सु कुंभ[14] कोहले पैलांडु[15] घंट निक्करैं ॥
कटंत सुंडि ककरी[16] प्रवृत्ति पाँथ पीन[17]के ॥
किलासनास[18] ईषिका रु आलु अंखि कीनके ॥

होगई. धुंधि के १ फैलने से सूर्य छुपकर दिन के २ चंद्रमा के समान होगया ॥ ७९ ॥ ३ वीरों की पंक्ति की भीड़ से भूमि पर धूल और अंधेरा छागया. विमानों के ४ समूहों में से देवताओं ने प्रसन्न होकर ताली बजाई वीरों की छुरियां जल की धारा के समान दोनों तरफ पार होती हैं कितने ही पड़े हुए ऊँचे ५(*) हाथी ६ प्रसन्नता की(†)बोली भूलकर सिसकते हैं ॥ ८० ॥ सातों समुद्र हिलोरे लेकर चारों दिशाओं में उफनते हैं ७ शिव प्रशंसा करते हैं और ८ प्रलय का समय बनता है ९ आकाश में आंतें लेकर चीलें १० पतंग (गुडी) होकर उड़ती हैं. हाथ अंगों को काटते हैं अथवा कितने ही कायर छाती कूटते हैं और कई मस्तक कटेहुए भी बोलते हैं॥ ८१ ॥ ११ हाथियां रूपी १२ बगीचों में हाथियों के दन्त उखड़ते हैं सोही १३ मूले होकर उछलते हैं १४ कुंभस्थल गिरते हैं सोही कूष्मांड (कोळे) हैं १५ घंटा है सो ही कांदे हैं, सुंडें कटती हैं सोही १७ पानी की पिलाई हुई पुष्ट १६ काकड़ियां हैं १८ ककोड़ा

(*) लीलावती में गणेश को मतंगानन लिखा है और शारदी नाममाला में हाथी का नाम मतंग लिखा है. यथा—'मतङ्गः कुंजरः करी'॥

(†) डिंगळ भाषा में हाथी की प्रसन्नता की बोली का नाम सारसी है और मतांतर से सुंड के इधर उधर पलेटा लगाने को भी सारसी कहते हैं.

कटिल्ल[1] कर्णिकावली भटा हृदावली[2] भये ॥
अरिष्टके[3] अपष्ठ[4] वृंद क्लोम[5] कंद उन्नये ॥
वनैं अरी[6] पलास कान अंदु[7] नागवल्लरी ॥
कलेज पीलुपर्णिका[8] कसेर तोरई करी ॥ ८३ ॥
बनात यौं अनेक प्रेत साक व्यंजनावली[9] ॥
कूंपान[10] या प्रकार मारकी मल्लारकी चली ॥
कहैं कितेक हाय माय गाय काय के गहैं ॥
लहैं कैंपाय[11] लाय के घुमाय घाय के सहैं ॥ ८४ ॥
चहैं वै[12] आय जैपुरेस गैपुरेसैं[13] साँकरैं ॥
मल्लार भीमसेनकी गल्लार गंजि को लरैं ॥
इतैं प्रबुद्ध[14] रामभूप क्रुद्ध जुद्ध यौं मच्यो ॥
सुनौं समस्त प्रीति कैं उतैं जु रीतिकैं रच्यो ॥ ८५ ॥

(फणविशेष) के समान हाथियों के नेत्रों के गोलों का नाश होता है और आंख की पुतलियां ही आलू हैं ॥ ८२ ॥ १ सूंड के अग्र भागों की पंक्ति ही करेलों की पंक्ति है २ हृदयों की पंक्ति ही सोही बैंगन हैं ३ लहसुन के समान ४ अंकुश का अग्रभाग है ५ लिंडी ही जमीकन्द है ६ हाथियों के कान ही अरुई (अरवी) के पत्ते हैं ७ जंजीरें ही नागरबेलें हैं ८ कलेजे ही पीलुपर्णी (दाख की बेलें) हैं और हाथी की पीठ की लंबी हड्डी (रीढ़ या बांस का हाड़) ही तोरई (तुरई, तोरनी या तोरों) है ॥ ८३ ॥ इस प्रकार कई प्रेत ९ भोजन के पदार्थों की पंक्तियां बनाते हैं. मल्लार का १० नृत्य इस प्रकार की मार के साथ चला तहां कितने ही 'हाय माता' और कितने ही 'मैं तेरी गऊ हूं' ऐसा कहते हैं और कई वीर शरीरों को पकड़ते हैं और कई वीर अग्नि के ११ कठोरपन को सहते हैं और कितने ही घाव सहते हैं ॥ ८४ ॥ १३ हस्तिनापुर के पति (दुर्योधन) रूपी जयपुर के पति को १२ आय सकड़ाई में गिरा तब वहां भीमसेन रूपी मल्लार की गर्जना को दबाकर कौन लड़े अर्थात् कोई नहीं लड़ सका १४ हे बुद्धिमान् राजा रामसिंह इधर तो क्रुद्ध होकर इस प्रकार का युद्ध मचा और उधर (दूसरी ओर) जिस प्रकार युद्ध मचा सो प्रीति पूर्वक सुनो (इन छंदों में प्रायः 'कर्णाकरी गर्मागर्मी, धके धके, धके धके' आदि एक-से शब्द दो दो शब्द आये हैं सो अपने अपने विषय की अधिकता बताने के लिये वीप्सा के अर्थ में हैं) ॥ ८५ ॥

॥ षट्पात् ॥

उत जैंपुर मग रुक्कि त्वरित तंते गंगाधर ॥
उद्धत वग्गन खैंचि हंकि सम्मुह दिय *हैवर ॥
†मंडलग्ग झारि मार लुत्थि पर लुत्थि बिलग्गिय ॥
मित्र मित्र मनु मिलिय बहुत सहि सहि ‡बिरहग्गिय ॥
तरवारि तरक्कि बज्जत §तुमुल भरक्कि मुंड भेजा कढत ॥
औरुन अनार कन जिम ¶उदक उतरि उतरि बीरन चढत ॥८६॥
पुनि पुनि कंपत[1] पहुमि बाढ पुनि पुनि रन बज्जत ॥
पुनि पुनि छुट्टत प्रान गिरत पुनि पुनि भट गज्जत ॥
पुनि पुनि गिरत पटैत किरत पुनि पुनि झारि कंकट ॥
निज जय पुनि पुनि भनत बनत पुनि पुनि बट उब्बट[2] ॥
पुनि पुनि कपाल फुट्टत पिहुल[3] भर[4] आलुक[5] पुनि पुनि भपउ ॥
आमेरनृपति अंधक[6] उपम गंगाधर[7] गंजन गयउ ॥ ८७ ॥
सीकरपति सिवसिंह तमकि[8] आयउ हरोल तब ॥
मध्य जट्ट रविमल्ल[9] ओट चंदोल कुंम्म[10] अब ॥
सेखाउत सिर प्रथम धार झारिय गंगाधर ॥
अतुल तुमुल उल्लसिय हसिय नारद हर हरहर[11] ॥
फुल्लिंग[12] कुपित अंखिन फुरत जुरत मत्त दुवर सिंह जिम ॥
असि झारि रचिय सेखाउतहु पुरुखारथ पारथ प्रतिम[13] ॥८८॥

॥ दोहा ॥

---

* घोड़े † मण्डलाग्र (खड्ग) ‡ विरहाग्नि § भयंकर ¶ दाड़िम के कणों के समान कायरों का पानी उतर कर वीरों को चढता है ॥ ८६ ॥ 1 कवच गिरते हैं 2 मार्ग और बिना मार्ग 3 बहुत कपाल 4 भार 5 सर्प (शेष) को 6 अंधक राक्षस रूपी आमेर के राजा ईश्वरीसिंह को मारने के लिये 7 शिव रूपी तांत्या गंगाधर गया ॥ ८७ ॥ 8 क्रोध करके 9 सूर्यमल्ल जाट बीच में होकर 10 ईश्वरीसिंह इन की आड में चंदोल में (पीछे) हुआ 11 महाट्टहास्य करके 12 अग्निकण 13 अर्जुन के सदृश ॥ ८८ ॥

लग्गी सीकर नाहकौं, तीन३ कठिन तरवारि ॥
सुभर गिरे घायल त्रिसय३००, मरे सट्ठि६० बहु मारि ॥८९॥
न लखिसक्यो घन अंतरित, अक्कहु पहुँच्यो अस्त ॥
तब मुरि मुरि भट उत्तरे, सिबिरैन निजन समस्त ॥ ९० ॥
कमलपत्र लगि संकुचन, घूकन मंडिय घोर ॥
सायंकृत्य बिधान सब, रचन लगे दुहुँ ओर ॥ ९१ ॥
हुलकर१ माधव२ हड्ड३हू, करि कालोचित कर्म ॥
उट्ठि बहुरि लैलै अंसन, मिले कहन रन मर्म ॥ ९२ ॥
कति मरहट्ठ प्रसारकौं, बिचरे पुब्बहि बीर ॥
मग जैपुर तिन कौं मिली, आवत रसति अधीर ॥ ९३ ॥
ताकी संग जु हे तिनहिं, आनैं गहि बल अंत ॥
हुलकर सन अक्ख्यो हुलसि, आपन रसति उदंत ॥ ९४ ॥
जब हुलकर जे रसति जन, आनैं अंननि उतारि ॥
श्रवन१ नक्क२ तिनके सरिसैं, बहि रु दिन्न बिडारि ॥ ९५ ॥
करन बंध मग रसति क्रम, इत भखार किय एह ॥
पंच सहँस५००० दल उत पिल्ल्यो, खुरन बिथारत खेह ॥९६॥
संभरपुर लग तिहिँ समय, ढुंढाहर लिय लुट्टि ॥
इम जैपुर जनपद असह, फोजन हौरव कुट्टि ॥ ९७ ॥
इत बगरू निसैं आगमन, हुलकर पैर छल हेरि ॥
कूरम नहिँ कढिजानकौं, दियउ छबीनौं फेरि ॥ ९८ ॥

॥ ८९ ॥ १ संघ से छायाहुआ २ सूर्य भी बस पुल कों नहीं देख सका और अस्ताचल को पहुंचा ३ डेरों में ४ अपने सब लोगों सहित ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ५ समय के उचित कार्य ६ भोजन ॥ ९२ ॥ ७ तृण काष्ठ (घास लकड़ी) आदि लाने को ८ पहिले ही बढ़े थे ॥ ९३ ॥ ९ वृत्तान्त ॥९४॥ १० रसद लानेवाले लोगों को गाड़ियों से उतार कर लाये ११ क्रोध सहित कान और नाक काट कर निकाल दिये ॥९५॥ सेना १२ भेजी ॥९६॥ १३ देश में १४ हाहाकार शब्द ॥ ९७ ॥ १५ रात्रि के आने पर १६ शत्रु का छल देख कर १७ ईश्वरीसिंह नहीं भागजावै इस कारण ॥ ९८ ॥

जामिक अन जागत रहे, सेन इतर[2] रहि सोय ।
इहिं अंतर अंभून[3] उफनि, तूटन लग्गे तोय[4] ॥ ९९ ॥
पानी छुट्टत उदयपुर[5], आनि चमक्किय अक्क[6] ॥
कालोदित[7] उठि कृत्य करि, चढे बहुरि हुव चक्क[8] ॥१००॥

॥ षट्पात् ॥

हुलकर इत हय चढिय व्यूह[9] कंकट[10] करि निज बल ॥
उत जैपुर अधिराज चढिग गजराज चलाचल[11] ॥
ए उत्तर मुख अडर वे सु दक्खिन मुख ओपत ॥
खुंदि धरनि खर खुरन उरन आयुध आरोपत ॥
झरि बाढ बाढ दव गाढ झगि छिति उल्मुक[12] लागि उच्छलन
गांडिव बजाय डारिय गजब जनु[13] पांडव खांडव ज्वलन[14]।१०१।

॥ दोहा ॥

ततेकों करि मुख्य तँहँ, समर भार धरि सीस॥
इक्क अनी चंदोल[15] पर, पठई हुलकर ईस ॥ १०२ ॥
जैपुरपति चंदोल जँहँ, हे नौरव[16] कछवाह ॥
गंगाधर तिन बिच गरजि, पक्खिस्यो प्रचुर[17] सिपाह ॥१०३॥

॥ षट्पात् ॥

गंगाधर धसि गयउ काटि चंदोल नरूकन ॥
किन्नँ टूकन टूक कुंत असि सर बंदूकन ।
कतिक बचे भाजि कढिय उदधि[18] कूरम दल अंतर ॥
मकर अग्ग जिम मीन[19] त्रसित तिम लखत दिगंतर ॥

---

१ पहरायत २ अन्य ३ मेघ बड़ कर ४ जल गिरने लगा ॥ ९९ ॥ ५ उदयाचल पर ६ अर्क (सूर्य) ७ उदय समय के कार्य ८ चक्र (सेना ॥ १०० ॥ ९ व्यूह रचना करके १० कवच युक्त की ११ चलते हुए पर्वत के समान हाथी पर १२ अंगीरे (निर्धूम अग्नि) १३ मानों अर्जुन ने खांडव वन में १४ अग्नि डाली ॥ १०१ ॥ १५ पीछे की सेना पर ॥ १०२ ॥ १६ नरूका १७ बहुत सिपाहों से ॥ १०३ ॥ १८ कछवाहे के समुद्र रूपी सेना में मगर (घड़ियाल) से १९ मच्छी डर कर जावै तैसे.

कूरम हरोल केतनं[1] द्विरद जिहिं अग्गैं कटिगय सजव[2] ॥
[3]तंते तुरंग तत्ते तमकि भयो अरिन बिच प्रलय भव[4]॥१०४॥

॥ दोहा ॥

सेना अंतर व्यूह बिच, लुट्टे सकट सलील[5] ॥
मारे तोपन कानमैं, कठिन अयोमय[6] कील ॥ १०५ ॥
मथ्यो कटक तंते मरद, मनु गोपी दधि मट्ट ॥
कूरम लखि बुंल्ल्यो चकित, जब हरोल सन जट्ट ॥१०६॥

॥ षट्पात् ॥

तबहि जट्ट रविमल्ल पलटि आयो सहाय पर ॥
जिम गज संकट जानि चपल पन आनि चक्रधर ॥
अडर भरतपुर ईस तिमहि हंक्यो रन तंडंत ॥
मंडत आयुध मेह खूब खंडन अरि खंडत ॥
अति जोर हरत मरहट्ट असु[10] रोरं[11] करत खगराज रय[12] ॥
बिहंनन[13] प्रहार लघु तूल बिधि गंगाधर सु पलाय[15] गय ॥१०७॥

॥ दोहा ॥

सह्यो भलैंही जट्टनी, जाय अरिष्ट[16] अरिष्ट ॥
जिहिं जाठर[18] रविमल्ल[19] हुव, आमेरंन[20]को इष्ट ॥ १०८ ॥

॥ षट्पात् ॥

सूरजमल्ल सजोर मुररि मारे मरहट्ठे ॥
मिलत बैंभु[21] फन मेटि नाग[22] आतुर गति नट्ठे ॥

१ आगे की सेना में निशान के हाथी थे जिन से भी आगे बढ गये २ शीघ्र ३ गंगाधर तंते के ताते घोड़ों को खींचकर ४ शिव ॥ १०४ ॥ ५ लीला (खेल) सहित ६ लो-हे की कीलें ॥ १०५ ॥ ईश्वरीसिंह ने चकित होकर सूर्यमल्ल जाट को हरावल से ७ बुलाया ॥ १०६ ॥ ८ विष्णु भगवान् ९ गर्जना करता हुआ १० प्राण ११ भय १२ गरुड़ के वेग से १३ पिनाक के प्रहार से तुच्छ १४ रुई की भांति १५ भागगया॥१०७॥ हे जाटनी तू ने १६ सूतिकागृह (जापे के घर) में जाकर भले ही १७ दुःख सहा कि जिस के १८ उदर में १९ सूर्यमल्ल २० आमेरवालों का इष्ट हुआ ॥१०८॥ २१ जैसे फणों के साथ विष्णु भगवान् की भेट होते ही २२ काली नाग

परे कुगापै पंचास५० अठ्ठ उत्तर सत१०८ घायल ॥
दीनौं दक्खिन ठेलि तुमुल[2] कीनौं रिस तायल[3] ॥
भय टारि नरूकन थप्पि थिर पुनि कूरम चंदोल पर ॥
हरवल्ल अप्प आयउ हुलसि मिहिर[4]मल्ल गहि जय गुमर[5]॥१०६॥

॥ दोहा ॥

बहुरि जट्ट मल्लार सन, लरन लग्यो हरवल्ल ॥
अंगद ह्वै हुलकर अर्यो, मिहिर[6]मल्ल प्रतिमल्ल ॥ ११० ॥
रदन[7] मध्य रसना रहत, इम संकट कछवाह ॥
अंतर[8] चाहत साम[9] अब, लेत न रन जय लाह ॥ १११ ॥

॥ षट्पात् ॥

धरनि फट्ट धसमसत कंपि कसमसत कुलाचल[10] ॥
दिस दिस लोहितैं[11] लिपत छिपत जुज्झत दोऊ२दल ॥
इहिं अंतर आसार[12] प्रचुर पुनि रचिय पयोदन[13] ॥
चहलपैंहल[14] चतुरंग दहल[15] पानिय चहुँ४कोदन[16] ॥
बुल्ल्यो मलार तँहँ दुवर२ नृपन पर अप्पन नहिं सुधि परत॥
तुम अलप सत्थ मम ढिग रहहु भटन भिन्न रक्खहु लरत ।११२।

॥ दोहा ॥

बुंदियपति१ यह सुनि बचन, सत१०० सादिय[17] लिय संग ॥
हरजन२ ईतर अनीकलै[18], रह्यो भिन्न रुपि रंग ॥ ११३ ॥
हयसत१०० रक्खे माधवरहु, लौ इतरन जय लीन ॥

आतुर होकर भागा तैसे भगे १ मुरदे २ भयंकर युद्ध ३ क्रोध में तपाहुआ सूर्यमल्ल विजय का ५ घमंड करके ॥ १०९ ॥ ६ सूर्यमल्ल से प्रतिमल्ल के समान लड़ने लगा ॥११०॥ ७ दांतों के घेरे में जीभ रहै तैसे ईश्वरीसिंह सेना घेरे में रहा ८ मन में ९ साम उपाय (मिलाप) ॥ १११ ॥ १० पुराणों के से जिस पर्वत का पृथ्वी के चारों ओर घेरा है उस का नाम कुलाचल है ११ रुधिर से पोती हुई दीखती है १२ बहुत मेघ धारा १३ मेघों ने १४ सेना से भीग कर तर होगई १५पानी का भय १६ चारों दिशाओं में हुआ॥११२॥१७ सवार १८ अन्य सेना को लेकर ॥ ११३ ॥

सिवाई२हु सिवब्रह्महर, कुम्म पृथक रन कीन ॥ ११४ ॥
लंब१ सिवा१ अरु टोडरी१, अधिप मिले त्रय३ आनि ॥
तिन्ह गोगाउत प्रेम३ लै, पृथक जुर‍्यो असि पानि॥११५॥
एक१ हड्ड कूरम उभय२, अनुक्रम बंटि अनीक ॥
स्वामिन हुलकर संग करि, मंड्यो पृथक समीक ॥ ११६ ॥
ज्यौंहिं उदैपुर२ जोधपुर१, कोटा३ के दल३ क्रुद्ध ॥
भिन्न भिन्न रहिकैं भिरे, जैपुरपति सन जुद्ध ॥ ११७ ॥
हुलकरढिग दुव२ भूप रहि, तुमुल रच्यो गहि तेग ॥
पानी आयुध पैज करि, जुट्टन लग्गे बेग ॥ ११८ ॥
भीजी पग्ग सु दूर करि, दै आविक पट टोप ॥
हुक्का पीवत हुलकरहु, कलह ख्रो अति कोप ॥ ११९ ॥

॥ मत्तमृगेन्द्र ॥

खेल सतरंजकी सारि अनुकारँ मल्लार१ निज बीर अग्गैं बढावैं ॥
हड्ड१ प्रतिमल्ल हरवल्ल रचि हल्ल हमगीर बरनीर बुंदी चढावैं ॥
हड्ड सामंतहर नाम हरजन२ सु नृप सचिव लै सेन इक ओर जुज्झैं॥
मेघ आसार भंगकार अंधार मिलि अप्पन रु पार नहि नैंक सुज्झैं१२०
सिवाईसिंह१ कछवाह सिवब्रह्महर मांधवामात्य इक ओर जुट्टे ॥

१शिवब्रह्म के वंश वाला ॥११४॥२लांवा और सेवा ये दोनों नगरों के नाम हैं ३प्रेमसिंह ॥ ११५ ॥ जुदा ४ युद्ध रचा ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ५होड (प्रतिज्ञा) करके ॥ ११८ ॥ ६ ऊन वस्त्र का ॥ ११९ ॥ जैसे सतरंज के खेल में एक प्यादी के दूसरी का जोर बना रहता है तब वह आगे बढती है (जोर बना रहने से अगली प्यादी मारी नहीं जाती) इसीके ७ सदृश मल्लार ने अपने वीरों को आगे बढाये हाडा उमेदसिंह ८ उद्धत मल्ल होकर हरोल में (आगे) हिम्मत के साथ हल्ला करके बुंदी को श्रेष्ठ नीर चढाता है और सामंतसिंह के वंश वाला हरजन नामक हाडा उमेदसिंह का सचिव सेना लेकर एक ओर लड़ने लगा ९ मेघ धारा से १० भयंकर अंधेरा होकर अपना और पराया कुछ नहीं दीखा ॥ १२० ॥ ११ माधवसिंह का मंत्री शिवब्रह्मपोता सवाईसिंह कछवाहा भी

तीन ३ कछवाह खंगारह लैरु इत गोगेहर प्रेमर करवालैं कुट्टैं ॥
रान जगतेस कॅटकेस इत संभु१ अरु साहिपुर भूप उम्मेद२ रुप्पे
साँचिवि गुलाब३ अरु देवगढ कंत जसवंत४ पुनि बेघम पँ मेघ५
कुप्पे ॥ १२१ ॥

जोधपुर सेनपति सेर१ अरु सेर२ मनरूप३ कल्यान४समसेर झारा।
यौं अखैराम१ कोटेस कटकेस रन मेरुं मन सेस फन पेसिं ढारैं ॥
कुंतं असि हत्थ मिलि बत्थ कॅति सत्थ गाति पॅत्थ तॅति मत्थ सि-
व अॅत्थ अप्पैं ॥
भीम अनुकौरि गज पारि धक धारि कति मारि तरवारि थिर
रारि थप्पैं ॥ १२२ ॥

नीर अरु छीर निभं धीर कति बीर हमगीर मिलि तीरकारि भीरटारैं
काल बिकराल कति ज्वाल दग लाल अरि साल भरि फाल ग-
जद्दालैं ढारैं ॥
भीरु भय देत गिलि गोदं पल लेत श्राति हेत करि खेत बिच प्रेतनच्छैं

एक ओर लड़नेलगा तीन १ खंगारोत कछवाहों को लेकर २ इधर गोगावत प्रेमसिंह ३ तरवार मारनेलगा राणा जगत्सिंह के ४ सेनापति शंभुसिंह और शाहपुरा का राजा ५ उमेदसिंह ये दोनों इधर खड़े हुए ६ राणा के सचिव का पुत्र गुलाबसिंह और देवगढ का पति जसवंतसिंह ७ बेघम का पति मेघसिंह ये सब क्रोधित हुए ॥ १२१ ॥ जोधपुर की सेना का पति शेरसिंह दूसरा मनरूप और कल्याणसिंह ये सब तरवार मारने लगे इसी प्रकार कोटा के पति का सेनापति अखैराम युद्ध में ८ मेरु के समान होकर अपने मन से शेषनाग के फणों को ९ पीसने लगा १० भाले और तरवारें हाथों में लेकर ११ कितने ही बाथों के साथ मिलकर १२ अर्जुन की भांति १३ माथों की पंक्ति १४ शिव के अर्घ देते हैं और कितने ही भीमसेन १५ सदृश हाथियों को गिराकर क्रोध करके तरवार मार कर स्थिर युद्ध को स्थापन करते हैं ॥ १२२ ॥ कितने ही वीर हमगीर होकर पानी और दूध के १६ सदृश मिलते हैं और १७ बाणों से भीड़ को हटाते हैं कितने ही भयंकर काल के और अग्नि के समान लाल नेत्र करके शत्रुओं के साथ होकर १८ मलंग लगाकर १९ हाथियों की ध्वजाओं को गिराते हैं अत्यंत स्नेह करके २० मज्जा और मांस लेकर प्रेत युद्धक्षेत्र

त्रास तजि आस जिय स्वास हिय लास करि खास रन रास न-
र नास मच्चैं ॥ १२३ ॥
रोर चहुँ४ओर अति घोर बरजोर रचि सोर तँचि दोर भटमोर सज्जैं
रोहँ घलि द्रोह झलि कोह कलि छोह छलि जोहँ संदोहँ बहु
लोह बज्जैं ॥
इर्द कहुँ गिद्ध बलि सिद्ध लगि लिद्ध बिनु संक पंल पंक बिच
कंक कुद्दैं ॥
सैन दुव२ लैनं जय लैन मुररै न रन औनं कति बैन थकि नैन मुद्दैं १२४
एह बिच लोहँ करि सेहँ भुव नेह पुनि मेहँ बिच मेह बिनु छेह बुठ्यो
बंधि घन पाज गुरु गाज खय काज ब्रजराजपर जानि सुरराजँ रुठ्यो
लेहु श्रुति धारि नृपरामँ दुरितारि अति बारि करि रारि तरवारिरुक्की
प्रोष्ठपद मास इम वारिद बिलास पलासस नव ग्रास मय आस
मुक्की ॥ १२५॥

॥ दोहा ॥

झरमैं यौं तहँ प्रचुर झर, परयो अचानक आय ॥

में नाचते हैं त्रास को छोड कर जीव की आशा से हृदय के भीतर श्वास १ नृत्य करता है और युद्ध के खास नृत्य में मनुष्यों का नाश होता है ॥ १२३ ॥ भयंकर बल पूर्वक २ चारों दिशाओं में भय रच कर ३ बारूद में जलकर वीरों के मुकुट दौड़ सजते हैं ४ घेरा घाल कर द्रोह को झेल कर ५ युद्ध में कोलाहल करके, क्रोध में उझल कर ६ जोधों (वीरों) के ७ समूह बहुत शस्त्र बजाते हैं ८ बहुत गिद्ध तैयार हुए ९ बलिदान को हैं और १० मांस के कीचड़ में निडर कंक पक्षी कूदते हैं दोनों सेना की ११ पंक्ति जय लेने के अर्थ युद्ध से नहीं मुड़ती और कितने ही वीर १२ मार्ग में वचन थक कर नेत्रों को बंद करते हैं ॥ १२४ ॥ इतने में१३स्वाद लेकर१४भूमि की सेक पर१५शस्त्रों की वर्षा में अछेह मेह बरसा सो मानों मेघ की पाज बांध कर१६बडी गर्जना से नाश करने को ब्रजराज पर१७इंद्र ने क्रोध किया सो हे १८ पाप के शत्रु राजा१९रामसिंह सुनो कि अत्यंत२०पानी से तरवारों की लड़ाई रुकगई इस प्रकार २१ भादवे में मेघ के विलास से २२ मांस की आशावालों ने नवीन ग्रास के समय आशा २३ छोडी ॥ १२५ ॥

सूरन संय अरु हयन पय, भये चलत जड़ भाय ॥ १२६ ॥
रोकि रैटक तब दुवर२ कटक्क, पत्ते सिविरैन[3] निट्ठि ॥
अमित भटन छोरी सजवँ, असि मुट्ठि रु हय पिट्ठि ॥१२७॥
छट्ठी६ दिवस बिताइ इम, बहुरि बिताई रत्ति ॥
दक्खिन दल सप्तमि७ दिवस, सजन लगे पुनि सत्ति॥१२८॥
एह सुनत आमेरपति, व्याकुल किन्न विचार ॥
मरहट्ठन रोकी रसति, मंड्यो प्रसभ मलार ॥ १२९ ॥
जनक लई सँधा करि जु, देय सु बुंदी नाँहिं ॥
गंगाधरकौं सुल्क दे, मोरहु अप्पन माँहिं ॥ १३० ॥
कूरमपति यह मंत्र करि, खत्री केसवदास ॥
दम्म बहुत तस संग दे, पठयो तंते पास ॥ १३१ ॥
राजामलसुत जाय तँहँ, गंगाधर लिय फोरि ॥
दई सौंक छन्नैं दुलभ, माया करि मन मोरि ॥ १३२ ॥
अरु अक्खी तुमरे लगे, फोज खरच जे दम्म ॥
देहैं नृपतिनतैं द्विगुन, करहु साम हित कँम्म ॥ १३३ ॥
बुंदीकी वत्त न वदहु, भरि धन सकटै[11] सुभाय ॥
कुंच करावहु कटकके, हुलकर पति समुझाय ॥ १३४ ॥
गंगाधर यह सुनि गयो, खर जैर[12] जूती खाय ॥
कह्यो मलारहिं कुम्म पति, बहु धन देत सिटाय ॥ १३५ ॥
अब न सुनहु उम्मेदकी, लेहु अतुल वसु[13] लाह ॥
जग कहिहैं हुलकर जबर, दंड्यो जैपुर नाह ॥ १३६ ॥
हुलकरकी यह सुनत हुव, बिगरि बुद्धि बिपरीत ॥

१ हाथ ॥ १२६ ॥ २ युद्ध करना ३ डेरों में कठिनाई से प्राप्त हुए ४ शीघ्र॥१२७॥ ५ रासि (घोड़े) ॥ १२८ ॥ ६ छठ ॥ १२९ ॥ पिता (जयसिंह) ने ७ प्रतिज्ञा करके दी वह बुन्दी = देने योग्य नहीं है ९ रिसवत देकर ॥ १३० ॥ १३१ ॥१३२॥ १० हितकार्य ॥ १३३ ॥ ११ श्रेष्ठ रीति से छकड़े भर कर ॥ १३४ ॥ १२ धन की जूती खाकर वह गया गया ॥ १३५ ॥ १३धन का लाभ ॥ १३६ ॥ १३७ ॥

धरन लग्गो गनिका धरम, जानी अप्पन जीत ॥ १३७ ॥
सो सुनि हैसत२०० सुभट पति, बालकृष्ण द्विज बीर ॥
हुलकर सयन निकाय[1] को, जामिके[2] जंपै धीर ॥१३८॥
पुरपाके दलबिच प्रकट, करि करि घुमर[3] मलार ॥
किम कहि आये नन्हतें, लोभी कितव मलार ॥ १३९ ॥
कैसी सँधा करि चलिय, कैसो मंत्र विधाय ॥
संधाकों तुमकों सँतत, है धिक हुलकर राय ॥ १४० ॥
क्यों घन लक्खन करज किय, रचे दल बीस हजार२०००॥
क्यों माधव उम्मेदकों, छुल्ले बिलुहि बिचार ॥ १४१ ॥
चलि दक्खिन प्रभु नन्हसौं, नीचे करिहो नैन ॥
तंते बंभन सठ तुमहिं, लोभ देत कछु लैन ॥ १४२ ॥
कातरपन[8] ताको कह्यो, धारहु मन धरि धीर ॥
यह पुरबिया यह कहत, बलहि सिराहयो[9] बीर ॥ १४३ ॥
मन गो पलटि मलारको, लग्गत बचन प्रतोद[10] ॥
तंतेकों बुल्लि[11] रु त्वरित, बुल्ल्यो लरन बिनोद ॥ १४४ ॥
सुनि गंगाधर वह कितव[12], तजिहैं बुंदिय देस ॥
च्यारि४ अँनुज[13] हित परगनैं, देहैं कुम्म नरेस ॥ १४५ ॥
बुंदीसहिं बुलवाय पुनि, ताके डेरन जाय ॥
इक्क१ तखत दुव२ बैठिहैं२, सँम[14] सतकार बिधाय[15] ॥ १४६ ॥
टीका उचित निवेदिहैं४, कहि कहि नृप उपटंक ॥
तो अप्पन दल कुंचहैं, नहि तो जंग निसंक ॥ १४७ ॥
सच्ची अंखि निहारि तब, तंते ग्रसित बिसेस ॥

---

१ शयन के घर का २ पहरायत योधा ॥ १३८ ॥ ३ घमंड ॥ १३९ ॥ ४ प्रतिज्ञा ५ सलाह करते हो ६ प्रतिज्ञा को ७ निरंतर ॥ १४० ॥ १४१ ॥ १४२ ॥ ८ कायरपन ९ सेना ने उस की प्रशंसा की ॥ १४३ ॥ वचन रूपी १० चाबुक लगने से ११ बुलाकर ॥ १४४ ॥ १२ हे ठग १३ माधवसिंह के अर्थ ॥ १४५ ॥ १४ बराबर का १५ करके ॥ १४६ ॥ १४७ ॥

आक्खौ केसवदाससों, कन्हु मलार निदेस ॥ १४८ ॥
सुनि खबरी निज स्वामिकों, जबहि सुनाई जाय ॥
छिन माधव१ उम्मेद२कों, करनौंही अब न्याय ॥ १४९ ॥
कोपित हुलकर पितु करें, अंखिन चक्रत मलाव ॥
स्याति बंध पहिलैं करी, अब प्रानन पर दाव ॥ १५० ॥
ईश्वरिसिंह सिंताप सुनि, भयो अमावसि भाय ॥
गंधनकुल को यारि करि, उरग जानि अकुलाय ॥ १५१ ॥
तबहि बच स्वीकृत करिय, जैपुरपति भय जानि ॥
संधि सिंधाय मलार सन, मिलन विचार प्रमानि ॥ १५२ ॥
आक्खौ केसवदाससों, सब उनकौ स्वीकार ॥
अब कछु अक्खौं अप्पनी, मानहु बत्त मलार ॥ १५३ ॥
हुलकर१ अरु हमर२ दोउनको, बत्त समझ करेन१ ॥
जो कहनी सु वकील जन, वेंहैं परोक्षहि वैन ॥ १५४ ॥

॥ षट्पात् ॥

यामें हैग्न प्रथम हद्द१ हुलकर१ हुव२ पावै ॥
पलटि पच्छ मल्लार हमहि बड मित्र बनावै३ ॥
ईस्वर कंधनकों काल बंध पहिलों तिन्ह बज्जैं४ ॥
पिछैं हमहि न्याय चहहु इम बैठु न लज्जैं ॥
सुनि केसवदास मल्लार सब कठिन जानि कूरम कथित ॥
हुलकार समग्र स्वीकार करि चल्यो मिलन प्रसन्न चित ॥ १५५ ॥

सप्तमि७ अष्टमि८ नवमि९ दसमि१० एकादसि११ बित्ती ॥
द्वादसि१२के दिन मिलन थप्यो हुलकर करि कित्ती ॥
दल सन तंबू दूर तबहि इक१ कुम्भ तनायो ॥
मंत्र करिबेकों२ पृथक मंडि अप्पहु तँहँ आयो ॥
दे पिट्ठि इक१ तकिया दरिंत पृथुल दिलीचा रुचिर पर॥
परिखंद बनाय जयसिंह सुव बैठो लै ढिग सुभट बर ॥१५६॥

॥ दोहा ॥

इन इहु९ रु हुलकर२ उभय२, सुपहु भींरि सन्नाह ॥
भिंटन जैपुर भूपकौं, बिदित चले चढि बाँह ॥ १५७ ॥
लये उदैपुर१ जोधपुर३, कोटा३के भट संग ॥
उभय हत्थमैं हत्थदैं, जीति पधारे जंग ॥ १५८ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

तंते गंगाधर१ सेटू खइराड़१ संतू बाउला१ तीनौं३ही हुलकरके उमराव हरोल भये ॥
अरु बिजयके मदमत्त चोतरफ आतंक डारत तमासगीर लोकनकौं हटात गये ॥
प्रथमतो उदैपुर१ जोधपुर१ कोटा१की सेनाके सिरदार दोय २ दोय२ मल्लारनैं मिलिबेकौं अनुक्रमतैं पठाये ॥
तब साहिपुराधीस रानाउत उम्मेदसिंह१ देवगढनाथ चुंडाउत राउत जसवंतसिंह२ बेघमपति चुंडाउत राउत मेघसिंह३ सनवाड़ पति सेनानी भारतसिंहको कनिष्ठ सोदर रानाउत संभूसिंह ४ प्रधान भवानीदासको पुत्र गुलाबसिंह५ त्यौंही रुपां पति कूंपाउत्त मेरतिया रट्ठोर सेरसिंह१ उहाउत्त रट्ठोर सेरसिंह२ कल्याणसिंह ३

१ ईश्वरीसिंह ने २ सलाह करने का डेरा जुदा रचा ३ केवल ईश्वरीसिंह की पीठ से दबाहुआ एक तकिया लगा कर ४ बडे सुंदर दलीचे पर ५ सभा ॥ १५६ ॥ ६ कवच कस कर ७ घोड़ों पर चढकर ॥ १५७ ॥ ८ मल्लार और उम्मेदसिंह दोनों हाथ में हाथ देकर॥ १५८ ॥ ९ भय १० छोटा सगाभाई

भंडारी मनरूप४ तथा बखसी कायस्थ अखैराम१ इत्यादिक
ईश्वरीसिंहतैं सत्कारसहित मिलि आये ॥ १५९ ॥

दोहा—तदनंतर नृप हड्ड१ अरु, हुलकर२ करि हथजोरि ॥
प्रबिसे प्रतिसीरा१ बलज२, तरल तुरंगन३ छोरि ॥ १६० ॥
जुरत दिट्ठि जै नृपतिहू, हुलासि उठ्यो करि हेत ॥
सम्मुह पायंदाज तक, आयो बिनय४ उपेत ॥ १६१ ॥
मत्थैं हत्थ लगाय मिलि, मोद परस्पर मानि ॥
इक्क दिलीचा ऊपरहि, इम बैठे त्रय३ आनि ॥ १६२ ॥
ईश्वरिसिंह१ प्रतीचि मुख, प्राची मुख ए दोय२ ॥
कछुक काल संलाप६ करि उठे छोह सब धोय ॥ १६३ ॥
मंत्र केंशिका७ मांहि पुनि, प्रबिसे त्रय३ द्वय२ पास८ ॥
हुलकर१ कूरम२ हड्ड३ अरु, तंते१ केसवदास२ ॥ १६४ ॥
बुंदीपति प्रति उच्चरिय, जैपुर भूपति जत्थ९ ॥
दूर रहो कछु कालतो, मंत्र रचैं हम अत्थ ॥ १६५ ॥
तब नृप बुल्ल्यो करत तुम, मरहट्ठी संलाप१० ॥
मैं अबोध११ अनधीत१२ मैं, निर्धरक१३ मंत्रहु आप ॥ १६६ ॥
अक्खि यहैं रु तत्थहि रह्यो, संभरराज स्वतंत्र ॥
केसव१ कुम्म२ मलार१ किय, मरहट्ठी बिच मंत्र ॥ १६७ ॥
तदनु१४ पग्घ निज कुंकुमी१५, लैकैं हुलकर ईस ॥
हीरनके सिरपेच जुत, धरी कुम्म नृप सीस ॥ १६८ ॥

॥ १५९ ॥ १ कनात के २ कोट में घुसे ३ चपल घोड़ों को छोड़कर ॥ १६० ॥ ४ नम्रता सहित ॥ १६१ ॥ १६२ ॥ ५ पश्चिम दिशा में मुख करके रहा और ये दोनों पूर्व दिशा में मुख करके साम्हने बैठे ६वार्तालाप ॥ १६३ ॥ ७ मंत्र करने के डेरे में ८ तीन राजा और दो पासवान (पास रहने वाले) ॥ १६४ ॥ ९ यहां ॥ १६५ ॥ १० मरहठी भाषा में वार्ता करते हो जिस में ११ नहीं समझता १२ और इस भाषा को नहीं पढ़ा १३ निर्भय सलाह करो ॥ १६६ ॥ १६७ ॥ १४ जिस पीछे १५ केसर के रंग की ॥ १६८ ॥

हुल्लकर सिर अपनी धरी, त्यौंही कूरम राय ॥
धरिय रक्खि दोउन दई, डव्वन माँहिं धराय ॥ १६९ ॥

मराय१ धराय२ अन्त्यानुप्रासः ॥१॥

इतर कुसुंभी१ कुम्भ२ धरि, बिसद१ पग्घ मल्लार ॥
मंत्र निलय बिच मित्र हुव, इम दुव२ मुदित अपार ॥ १७० ॥
च्यारि४ परग्गन माधवहिं, बुंदी नृपहिं दिवाय ॥
हुल्लकर कूरम हत्थको, लिन्नौं पत्र लिखाय ॥ १७१ ॥
बहुरि चले उठि सिक्ख करि, हुल्लकर१ अरु चहुवान२ ॥
कूरम पायंदाज तक, चल्यो तबहु पहुँचान ॥ १७२ ॥
इम प्रविसे दोऊ२ अद्धर, निज निज डेरन आय ॥
कहि पठई दूजे२ दिवस, कुम्भहिं हुल्लकर राय ॥ १७३ ॥
अब बुंदीपतिके, अरथ, भेजहु टीका भूप ॥
सुनि यह लिय जयसिंह सुव, पुनि अभिमान अनूप ॥ १७४ ॥

पादाकुलकम् ॥

कूरम पच्छो एह कहाई, मिटन तुम आये यँहँ भाई ॥
तबतो वे आये तुम पिच्छैं अब उमेद आवन हम इच्छैं ॥१७५॥
सुनि हढ्ढ१रु हुल्लकर२हठ साह्यो, बेर इक्क१आवन निरबाह्यो
तुमहिं उचित आवन अब तातैं, दिवस भयो इक्क१राह दिखातैं ॥
यह साहस दुहुँओर बढ्यो अति, पृथक्क तनाय थूल बुन्दीपति ॥
रह्यो तहाँ कूरम मग हेरत, टरत जात दिन टेरत टेरत ॥१७७॥
बीच भयो तंते बिसटाली, घरबिधि बत्त कुम्भ श्रुति घाली ॥
कुम्भ कही सुनिये गंगाधर, अब जो तुम आनहु यँह संभर १७८
तब भवदीय हितूपन जानैं, मल्लारहु उचितहि जो मानैं ॥

॥१६९॥ईश्वरीसिंह ने तो१कसूमल (कसूंबे के रंग की दूसरी पगड़ी बांधी) २श्वेत ३ सलाह के स्थान में ॥ १७० ॥ १७१ ॥ १७२ ॥ १७३ ॥ १७४ ॥ ४हे भाई ॥१७५॥ ॥ १७६ ॥५हठ जुदा६डेरा तनवा कर७बुलाते बुलाते ॥ १७७ ॥८आपका

गंगाधर दुहुँ[1]ओर खिसानौं, इत उतके संकुच अकुलानौं ॥ १७९ ॥
अंबुज[3]मनहुँ तरनि[2] अर्द्धोदय, अरध कपाट खुल्यो जिम आलय[4] ॥
सोवत कछु कछु जगत स्वप्न सम, बानिक[5] वयससंधि[6] वनितोपम[7] ॥
तंते रह्यो पंच५ दिन ऐसैं, कहैं तोरि हित इत उत कैसैं ॥
गंगाधर कर जोरि छठे६ दिन, अक्खी नृपहिं सुनहु संभर इन[8] ।१८१।
सेवक अरज मन्नि हित सत्थैं, इक आसान करहु मम मत्थैं ॥
जैपुरपति केवल हठ जानैं, प्रीति रीति नहिं जड़ पहिचानैं ॥१८२॥
बहुरि तुम्हैं निज सिविरैं[9] बुलावत, उत्तर ताको मोहि न आवत ॥
अक्खी नृपति जाय हम आये, लुप्पि ताहि क्यों पुनि हठ लाये१८३
उचित नाँहि पुनि पुनि जीवन अब, बरजत हुल्लकर आदि सुमति[10] सब
यह सुनि विप्र नयन जल आयो, द्यूत ठग्यो सो दीन दिखायो१८४
निगैरनतैं[11] श्रुति[12] स्वपच[13] निकासी, पर्यो कि हरिन किरातन[14] पासी
तंतेकों इम देखि दुखित तब, अधिपति हृदय रादयतैं[15] भो अब१८५
दयाराम१ निज बुल्लि पुरोहित, चारन महदू दान१ ज्ञान चित ॥
भेजे दुव२हुल्लकर ढिग भूपति, अक्खी द्विज तंते सकुचत अति १८६
पुनि कूरम ढिग हमहि पठावत, यह द्विज नम्र दुखित अकुलावत ॥
कूरम हठ लखि हम हठ साहैं, दुक्खित द्विज लखि जावन चाहैं१८७
कहिय रुचत तुमहीं अब कैसी, तंते तकत दीनता ऐसी ॥
सुनि हुल्लकर उत्तर तब दिन्नौं, जावहु जो कितवन[16] हठ किन्नौं१८८

१ सकोच से ॥ १७९ ॥ ३ आधा सूर्य उदय होते समय २ कमल होवै तैसे ४ घर ५ बनाव ६ बालपन के जाने और यौवन के आने की संधि में अर्थात् वय संधि के बनने पर ७ स्त्री के समान ॥ १८० ॥ ८ हे चहुवाणों के पति ॥ १८१ ॥ १८२ ॥ ९ अपने डेरे पर ॥१८३॥१० श्रेष्ठ बुद्धिवाले ॥ १८४ ॥११गले से१२वेद को १३ चांडाल ने निकाला अर्थात् जैसे चांडाल अपने गले से वेद का उच्चारण करके (अधिकारी नहीं होने के कारण) अथवा छन्दरत्नावली में होम के धूम को निगरना लिखा है सो चांडाल होम करके संकट में पड़े तैसे१४भीलों की पास में १५अत्यन्त दयावान् ॥ १८५ ॥ १८६ ॥ ॥१८७॥१६ठगों ने ॥१८८॥

यह सुनि द्विज१चारन१जुग२आयो, नृपकौं हुलकर *कथित सुनायो।
सुनि चहुवान सेन निज साजी, कसि कटिबंध चल्यो चढि बाजी ॥ १८९ ॥

संग भये हुलकर भट सारे, †बाड़व पर दल सिंधु बिहारे ॥
ढुंढारे पिक्खन जन आये, धन्न्य धन्न्य कहि बिरुद बढाये ॥१९०॥

इम कूरम डेरन तोरन गय, प्रबिसन लग्गे तत्थ चढे हय॥
तबहि द्वारपालन कर जोरे, अक्खी अरज जात नहिं घोरे ॥१९१॥

यह तोरन डोढी करि मानहु, अग्ग बहुरि डोढी नहिं जानहु ॥
पाउर्स१रन२ कारन दुव२पाये, यातैं रखत पुखत नहिं लाये ।१९२।

अग्गैं ईश्वरिसिंह बिराजत, जवनी ओट बीच नहि राजत ॥
बिराजत१ हिराजत२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
जावंत तुरग चढैं दृग जुरिहैं, तो संकोच परस्पर घुरिहैं ॥१९३॥

अंतर द्वार गिनहु इहिं यातैं, त्यागहु महाराज हय तातैं ॥
सुनि नृप रीति निपुन तजि बाजी, प्रबिस्यो द्वार लिये भट राजी१९४

जैपुरपति भट अल्प सत्थ जहँ, तक्यो नृप सम्मुह परिखद तहँ ॥
इक्१जसवंत१भलायपति कुमर, अरु दलेल२धूलापुर ईश्वर १९५
मर१श्वर१अन्त्यानुप्रासः॥ १ ॥

तिम हरनाथ३ नरूका राउत, अजितसिंह४ कूरम सेखाउत ॥
सुभट निकट इत्यादि छसातहि, जैपुरपति उठ्यो नृप जातहि१९६

पायंदाज अवधि सम्मुह सरि, रीति उचित दुव२ हत्थ मत्थ धरि
सभा प्रबिसि अप्रतिहत सासन, बैठे उभय२ एकही आसन।१९७।

---

* कहना ॥ १८९ ॥ † शत्रु की सेना रूपी समुद्र पर बड़वाग्नि रूप से चला ॥१९० ॥ १ बाहर के द्वार पर २ घोड़े पर चढा हुआ जाने लगा ॥ १९१ ॥ ३ इस द्वार को ४ वर्षा के और युद्ध के कारण ५ पुष्ट सामग्री ॥ १९२ ॥ ६ कनात की आड बीच में नहीं दीखती है ॥ १९३ ॥ ७ भीतर की डोढी ८ वीरों की पंक्ति ॥ १९४ ॥ १९५ ॥ १९६ ॥ ९ चल कर १० नहीं रुकनेवाले हुकम से ॥ १९७ ॥

पान१ रु अतर२ निवेदि परस्पर, किय संलाप घटी इक१ हितकर
उठि करि सिक्ख भूप पुनि आयो, पछिलैं जिम कूरम पहुँचायो १९८
तंते तदनु पठायो हुल्लकर, कूरम प्रति अक्खी तिहिं दरबर ॥
अब टीँका नृप कुम्म पठावहु, पुनि बुंदीपति डेरन आवहु ॥१९९॥
सुनि टीँका पठयो तब कूरम, इक१मैंहाम्रग इक१ तुरंगम ॥
इक१ सिरुपाव इक१मनि भूखन, पठये दै इम संग सचिव जन २००
तिन टीँका नृप अत्थ निवेदिय, संभर नाथ बिहसि स्वीकृत किय॥
दैन लगे वसु कूरम दासन, सो न लयो रु गये जिम सासन ॥२०१॥
दूजे२ दिन कूरम भूम बाँधन, संभर सिबिर गयो हित साधन ॥
अग्गैं रीति मिलनकी अक्खी, पद्धति सोहि अत्थ मिलि रक्खी २०२
दुव२ सिरुपाव दोय२ हय दिन्नैं, इक१ इकही जैपुरपति लिन्नैं ॥
मानिकराम ठ्यारा नृपको तब, हुल्लयो हित अर्पित रक्खहु सब२०३
तोहु न हत्थ द्वितीयन२ घल्लयो, अतर१ पान२ लहि कूरम चल्लयो ॥
हुल्लकर डेरन जाय मिल्यो पुनि, सुनत मत्त बुंदीन बिरुद धुनि ॥२०४॥
हितपूरव बैठे इक१ आसन, सुख सह होन लग्यो संभासन ॥
कूरम तत्थ करार न राख्यो, लोभ उदंतें समदोंहि भाख्यो ॥२०५॥

॥ दोहा ॥

कूरम नाम मलूक१ इक, पंचायण कुल जात ॥
आमेर पैं अरदयो वहै, बखसि गाम बसु ब्रात ॥ २०६ ॥
बुंदीपुर आयत्त पुर, गैनोली अभिधान ॥
सहित परग्गन सो दयो, थिर कूरम तिहिं थान ॥ २०७ ॥

॥ १९८ ॥ १ जिस पीछे २ दड़बड़ (शीघ्र) ॥ १९९ ॥ ३ हाथी ॥ २०० ॥ ४ धन ५ कछवाहे के सेवकों को ६ ईश्वरीसिंह की आज्ञानुसार कुछ न लेकर पीछे गये ॥ २०१ ॥ ७ शिष्टाचार ॥ २०२ ॥ ८स्नेह के साथ नजर किये हुए ॥२०३॥ ॥ २०४ ॥ ९स्नेह पूर्वक १० लोभ की धारा सम्मुख नहीं करने का करार किया था सो नहीं रक्खा लोभ का ११ वृत्तान्त१२समद्रू ही कहा ॥ २०५॥ १३आमेर के पति ने १४ धन का समूह ॥ २०६ ॥ १५ बुन्दी नगर के अधीन पुर ॥२०७॥

ताकी बत्त मलार सन, कूरम कहिय बहोरि ॥
रक्खी सोहि मलूक हित, अवनि ओर दिय छोरि ॥२०८॥
सुनि मलार अक्खी कुपित, किन्नों तुमहिं करार ॥
बत्त समत्तोंहि लोभकी, क्यों ब करत छलकार ॥ २०९ ॥
बसुमति बुंदिय देसकी, लेसहु तुमहिं मिलैंन ॥
कोबिंद रहत करारमैं, ठेले दह्व ठिलैंन ॥ २१० ॥
अतर१ पान२ यह अक्खि दै, कूरमकों दिय सिक्ख ॥
सुनहु राम नृप यों रही, प्रपितामहकी तिक्ख ॥ २११ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७ राशौ उम्मेदसिंहचरित्रे सजट्टसूर्यमल्लकूर्मराजपरसैन्याऽभिमुखनिस्सरणकृतपलायनव्यासगंगाधरतद्धुलकरनिकटाऽऽनयनमहारणरचनमेघाऽऽसाराऽन्तराऽपिनालीयन्त्रचलनतद्दिन ४ निर्याणपथास्थितसर्वकालच्छेपणमाधवाऽऽदियथाप्राप्तमकुष्ठाद्यशनद्वितीय २ दिनयुद्धभवनकोटाभटपोधसिंह १ मरणगंगाधरयोधनप्रकटीकृतप्रपातमिषकूर्मराजनिस्सरणविदिततद्वृत्तमल्लारो १ म्मेद२ माधव ३ सज्जीभवनेश्वरीसिंहाऽवरोधनगंगाधरजैपुरमार्गाऽवरोधनतद्देशलुट्टनाऽऽर्थपंचसहस्र ५००० सैन्यप्रेषणभटप्रतिभटद्वन्द्वहतसमिद्विरचनतन्ते १ सेखाउत १

॥ २०८ ॥ १ लोभ की वार्ता अब सम्मुख क्यों करते हो ॥ २०९ ॥ १ भूमि २ चतुर ॥ २१० ॥ ११? ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में उम्मेदसिंह के चरित्र में, जाट सूर्यमल्ल और ईश्वरीसिंह का शत्रु की सेना के सम्मुख निकलना १ व्यास गंगाधर का भागकर उनको हुलकर के समीप लेजाना २ महा युद्ध का रचना और मेघ धारा में भी तोपों का चलाना ३ उस दिन घोड़ों की डोरें लिये यथास्थित समय बिताना ४ माधवसिंह आदि का मिल गया जैसा मोठ आदि को भोजन करना ५ दूसरे दिन युद्ध होकर कोटा के भट पोधसिंह का मरना और गंगाधर के युद्ध प्रकट करने से सुधाम करने के मिष से ईश्वरीसिंह का निकलना ६ इस के विदित होने पर मल्लार, उम्मेदसिंह, माधवसिंह का सज्ज होकर ईश्वरीसिंह को रोकना ७ गंगाधर का जयपुर के मार्ग को रोकना और ईश्वरीसिंह के देश लूटने के अर्थ पांच हजार सेना को भेजना ८ भट

मनिं जिम उरग सुमाथ नम्यो न करैं फन उन्नति ॥
खट बसु तुरंग ससि १७८६ सक्क गिल्यो जयसिंह सु बुंदिय जहर ॥
ईश्वरीसिंह तस सुत अलह लई, घुम्मि ताकी लहर ॥ १ ॥

दोहा—ढुंढारे इम ढुंढि रन, गंजे प्रसभ गवार॥
सत्य कियो संकल्प निज, माधव१ हड्ड२ मल्लार ३ ॥ २ ॥

॥ सचरथागद्यम् ॥

या रीति जनक जयसिंहनैं संधा[2] करि स्वीय करी अचला ईश्वरीसिंह आतंकतैं छोरि आयो ॥

अर[4] बुंदीके दुर्ग तारागढमैं नरूके कछवाह सिपाह रक्षक रक्खेहे तिनकौं कढायबेकौं तिनके स्वामि नारव लदानाँ नगर नाथ कुमार१ तथा हरनाथसिंह२ इनके उभय२कौं अग्गैं करि लेजायबेको उदंत हुलकरसौं कहायो ॥

तब जैपुरपतिके प्रस्थानके समय ए दोऊ२ नरूके कछवाह लार लेबेकौं मल्लारनैं बुलाये ॥

अरु वे आदेस अधीन होय न आये तब सत्तसय ७०० सादी स्वकीय सेनाके संगही पानिंप करि प्रेरिबेकौं पठाये ॥ ३ ॥

जहाँ मरहट्ठनकौं जोरदार जयी जानि जैपुरको जोध जुग२साहसी सूबेदारको संग भयो ॥

अब जयके मदमत्त महिमंडल मंडन उम्मेदसिंह१ माधव२मल्हार३ कूंच करि देवगाँव बघेरा आनि मुकाम दयो॥

तहाँतैं सेना रसद रसालेकौं तो टोडानगरकी राह चलायो ॥

अरु इन तीनऊनके अभयसिंह धन्वधराधीस तीर्थगुरु पुष्कर राज हो तासौं मिलिबेको उत्साह आयो ॥४॥

॥ १ ॥ २ ॥ १ पिता २ प्रतिज्ञा करके ३ भूमि ४ और ५ नरूका ६ वृत्तान्त ७ हुक्म के आधीन ८ सवार ९ बलात्कार से ॥ ३ ॥ १० देवगांव और बघेरा दोनों जुदे जुदे गांव हैं परन्तु दोनों एक ही स्वामी के अधिकार में होने के कारण दोनों का नाम शामिल होते हैं १ सामग्री (सामान) २ तीर्थों का पति

॥ दोहा ॥

हुलकर१ कूरम२ हड्ड नृप३, सेन अलप लै संग ॥
पत्ते[1] पुक्खर[2] तित्थगुरू[3], मरुपति मिलन उमंग ॥ ५ ॥
अभयसिंह चिरकालतैं[4], हो पतनी[5] जुत तत्थ ॥
मिलि तासौं बगरू बिजय, अकस्यो सबन समत्थ ॥ ६ ॥
सुता नृपति जयसिंहकी, नाम बिचित्रकुमारि ॥
लये परगनाँ अनुज[6] तस, किय मंगल हित कारि ॥ ७ ॥
महिमानी करि मुदित मन, रट्ठोरन अधिराज[7] ॥
हुलकर१ सालकं[8]१ हड्डनृप१, बुल्लेइ जिम्मन काज ॥ ८ ॥
राजगढेस किसोर१निज, भ्रात सहित मरुपाल१ ॥
माधव१ संभर१ च्यारि४ मिलि, किय भोजन इक१थाल[9] ॥
हुलकर१मरुपति१के हु हो, पंग्घ सखापन अग्ग ॥
सोहु जिमायो रक्खि ढिग, सम्मदं[10] पूरि समग्गं[11] ॥ १० ॥
बिनस्यो[12] बाजेराय तब, मद्य तजो मल्लार ॥
अभयसिंह पायो इहाँ, प्रसभ[13] मंडि अति प्यार ॥ ११ ॥
इक१इक१गज दुव२दुव२अरब[14], इक१इक१ बर[15] सिरुपाव ॥
इक१ इक१भूखन नगजटित, दिय तीन३न करि चाव ॥१२॥
लै तिन तीन३हि मरुप जुत, आये पुनि अजमेर ॥
अभयसिंह निंदा इहाँ, किन्नी सोदर[16] केर ॥ १३ ॥
बखतसिंह मामकं[17] अनुज, पहिलैं दिल्लिय पत्त ॥
जवननं[18] दल हमसन लरन, आनत सुनियत अत्त ॥ १४ ॥

---

२ पुष्कर १ गये ३ तीर्थगुरू ॥ ५ ॥ ४ बहुत समय से ५ स्त्री सहित ॥ ६ ॥ ६ उसके छोटे भाई माधवसिंह के परगने ॥ ७ ॥ ७ राठोड़ों का पति ८ अपने साले माधवसिंह ॥ ८ ॥ ९ ॥ ९ पाघ बदल भाई पन १० हर्ष से पूरित होकर ११ समग्र अथवा मार्ग सहित (रीति पूर्वक) ॥ १० ॥ १२ बाजेराव मरा तब १३ अत्यंत स्नेह से हठ करके ॥ ११ ॥ १४ घोड़े १५ श्रेष्ठ ॥ १२ ॥ १६ सहोदर (सगेभाई) की ॥ १३ ॥ १७ मेरा छोटा भाई १८ यवनों की सेना ॥ १४ ॥

बनैं जंग तो बेगही, हुल्लकर करहु सहाय ॥
सुनि मल्लार स्वीकार किय, बहु सतकार बढाय ॥ १५ ॥
तदनु तीन३ अजमेर तजि, लग्गे बुंदिय राह ॥
बिचतैं पलटि भनायपुर, गो संभर नरनाह ॥ १६ ॥
ही सपत्न जननी१ तहाँ, अरु ऊदाउति नारि२ ॥
मिलि तिनसौं पच्छो मुरयो, बुंदी बिलसन धारि३ ॥ १७ ॥
मिलि माधव१ मल्लार २ सन, पुनि किय सजव पयान ॥
तीन३न सरित बनास तट, दिन्नैं आनि मिलान ॥ १८ ॥
उज्ज्वल पक्ख इसभास तहँ, छुट्टे जलदहँ कराल ॥
चढी सरितकी ओट करि, पलटे पच्छे खाल५ ॥ १९ ॥
दल बिच जल गलदघ्न६ बहि, बिथरयो डेरन बोय ॥
पानी१पवन२ तुषार३ करि, मरे मनुज सत दोय२०० ॥२०॥
दूजे२दिन आवाँ नगर, पत्ते जल भय पाय ॥
टोडा त्यौं पठयो जु दल, मिल्यो सु तत्थहि आय ॥ २१ ॥
सुखतैं रहि नवरत्त९ सब, तीन३न बितये तत्थ ॥
अष्टमि८ दिन मल्लार इक१, मंगायो महमत्त८ ॥ २२ ॥

॥ षट्पात् ॥

दूतन दिस दिस दोरि हठन हेरयो इक१ कासर९ ॥
तीन३ तीन३ बल बक्र पंटल गति संग पिट्ठिपर१० ॥
अरुन अंखि अतिकोप दिपत उल्मुक दमकावत११ ॥
स्वास नास१२ सननंकि धरनितल पयन धुजावत ॥

॥ १५ ॥ १ जिस पीछे ॥ १६ ॥ १७ ॥ २ शीघ्र ॥ १८ ॥ ३ आश्विन मास. भयंकर ४ मेह बरखा ५ नदी के पानी की रोक से नाले पीछे मुड़े ॥ १९ ॥ ६गले पर्यंत ७ ठंढ से ॥ २० ॥ २१ ॥ ८ मदमस्त ॥ २२ ॥ ९ महिष (भैंसा) १० पीठ पर छाये हुए तीन तीन बलवाले टेढे सींग ११ अंगीरे के समान आंखें चमत्का हुआ १२ नाकों से श्वास बजकर

नहि सहन महन औरन नदन गवल जानि उद्धत आरिय ॥
मानहु बिहाय कालहिं कुपित संजमनी सन उत्तरिय ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

आन्यों अडर लुलाय वह, देवी हित बलिदैन ॥
झारी असि हुलकर झपटि, लागी जैनमत लैन ॥ २४ ॥

॥ षट्पात् ॥

सिंगन लागि समसेर तरकि तुट्टी हुलकर कर ॥
तब जरंत गुन तोरि चल्यो दारुन छुटि दुद्धर ॥
देखत यह हय दपटि झपटि संभर असि झारिय ॥
सिंगन जुगल समेत बंस सह पिट्ठि बिदारिय ॥
अरराय मेंह सु इम खाय असि पाय उलटि कटि खुलि पर्यो ॥
हुव लखि आचिर्ज मरहट्ठ दल इत देविय बलि अद्दर्यो २५

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे प्रस्थापितकूर्मराजमल्लारो १ म्मेद २ माधव ३ पुष्कराऽऽगमनमरुराजाऽभयसिंहमिलनाऽनन्तरत्रय३ प्रत्यागमनदृष्टसवाईपुरबुंदीन्द्र १ सहितहुलकर २ कूर्म ३ वाशिष्ठीतटप्रपतनाऽकालाऽऽसारवर्षणशिविरसंप्लवनमितमानवमरणसर्वसैन्याऽऽवांपुरनिवस-

१ अपने से बड़े किसी अन्य का नाद सहन नहीं करता ऐसा कारण मानों २ दोनों सींग ऊपर खड़े हैं ३ यमराज को छोड़कर क्रोधित हो ४ यमराज की पुरी से उतरा है ॥ २३ ॥ ५ भैंसा ६ जैनियों के मत (अहिंसा धर्म) को लेने लगी अर्थात् उस भैंसे का कंधा नहीं कटा ॥ २४ ॥ ७ वह भैंसा रस्सी तुड़ा कर ८ दोनों सींगों सहित ९ बांसे के हाड सहित १० ग्रहिय ॥ २५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह के चरित्र में ईश्वरीसिंह का प्रस्थान कराकर लक्षार, उम्मेदसिंह, माधवसिंह का पुष्कर आना १ अभयसिंह से मिले पीछे तीनों का पीछा आकर सवाईपुर को देख कर बुन्दी के पति सहित हुलकर और कछवाहे (माधवसिंह) का बनास नदी के किनारे मुकाम करना २ बिना समय मेघ धारा के बर्षने से डेरों में जल भर कर थोड़े मनुष्यों का मरना और सब सेना का आंवां नामक नगर में

नाऽऽश्विनोत्तरनव ९ रात्रपूज्यपूजनविधानबुन्दीन्द्रतिरस्कृतमल्लारमण्डलाग्रमहामहिषनिपातनविश्वेश्वरीबलिनिवेदनं षड्विंशो २६ मयूखः ॥ २ ॥ ॥३०७॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

किन्नों छुट्टिय तजनको, कात्तिय विसद करार ॥
यों बहु दिन आवाँ रहे, माधव१ हड्डु२नजार३ ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

कन्या६ को रवि भुग्गि अंस तुल७के लिय पंद्रह१५ ॥
प्रतिदिन सीत प्रगल्भ होत बालन बिनु दुस्सह ॥
आवाँपुर इहिं काल हड्डु१हुलकर२ अरु माधव३ ॥
दीपअमा१० करि दान अन्नकूटक किय उच्छव ॥
धव१ छव२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
मिलि तत्थ विप्र गंगाधर१ सु खत्री केसवदास२जुत ॥
करि मंत्र आनि भूपहिं कहिय सुनहु बत्तबुध सिंह सुत॥२॥

पादाकुलकम् ॥

कासी बिच सुरजन नृप संभर, रचिय राजमंदिर निकाय वर॥
सो पंडित सूरजनारायन, मंगत रहन काज द्विज थुति मन॥३॥
यन१ मन२ अन्त्यानुप्रासः१ ॥
वह आलयं निज काम न आवैं, पुराय बढैं जो वह द्विज पावैं॥

निवास करना १ आश्विन के शुक्ल पक्ष में नवरात्रि में पूजन योग्य (देवी) पूजन के उचित बुन्दी के पति का मल्लार के खड्ग का तिरस्कार करनेवाले महिष को मारना और देवी के बलि देने का छब्बीसवां २६ मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीन सौ सात ३०७ मयूख हुए ॥

१ कार्तिक सुदि पक्ष में २ इस प्रकार ॥ १ ॥ सूर्य ने ३ कन्या संक्रांति को भोगकर ४ प्रबल ५ स्त्रियों के बिना ६ दीपाली की अमावास्या का दीपदान करके ॥ २ ॥ ७ पत्रुवाय ८ श्रेष्ठ महल (मकान) ९ स्तुति के मन से ॥ ३ ॥ १० स्थान

सुनि नृप कहिय एराप तीरथ थल, है नहिं *देय बिचारि लखहु भल ॥ ४ ॥
सूरजनारायन द्विज †उद्भव, अद्वितीय तिन दिनन हुतो यह ॥
खट ६ नास्तिक ‡प्रतिभट बनि खंडैं, मत खट ६ आस्तिक दृढ करि मंडैं ॥ ५ ॥
सौत्रांतिकन१ समूल उखारैं, बैभाषिकन२ सजोर बिडारैं ॥
योगाचारन३ लखत उडावैं, माध्यमिकन४ मिलि गरब गुमावैं ६
जैनन५ जाल राहु गति ग्रासैं, लोकायतिकन६ मुंहि निकासैं ॥
व्यास१ अपर३ बेदांत बिचारन, गोनर्दीय२ योग अवधारन ॥७॥
दूजो कपिल३ सांख्य बिच सोहैं, मीमांसा जैमिनि४ मति मोहैं
द्विज पर अपर न्याय बिच गोतम ५, वैशेषिक वादी कणाद६ सम ॥ ८ ॥
कासी बिच पंडित यह ऐसो, करैं बाद जासौं बुध कैसो ॥
अग्गैं यह तंते गंगाधर, गो न्हावन कासी तीरथ बर ॥ ९ ॥
जवनन जानि गहन दल प्रेर्‌यो, पंच५कोसि अंतर तिन हेर्‌यो
तंते तब सूरजनारायन, रक्ख्यो सरन छिपाय प्रीति पन ॥१०॥
पुनि छन्नैं दक्खिन पहुँचायो, यह उपकृत तंते उर आयो ॥
पुनि राजामल मित्र सु पंडित, अग्र रह्यो हित दुहुँन२ अखंडित॥११॥
जब जयसिंह नगर बुंदिय लिय, सालमसनु अंत्थ पुनि अप्पिय
तबहिं राजमंदिर तीरथ थल, मित्र द्विजहिं दिन्नैं राजामल ॥१२॥

* देने योग्य नहीं है ॥ ४ ॥ † ब्राह्मण के कुल में जन्म लेनेवाला ‡ छहों नास्तिकों का शत्रु होकर खंडन करता था, इन छहों नास्तिकों के नाम छठे छन्द में बताते हैं ॥ ५ ॥ ६ ॥ १-दिगंबर, २चार्वाक ये छहों भेद नास्तिकों के हैं, अब आगे छः आस्तिक बताते हैं १ वेदान्त के विचारने में दूसरा वेदव्यास ४ पतंजलि के समान योग को धारण करता है ॥ ७ ॥ ८ ॥ ५ पंडित ॥ ९ ॥ ६पकड़ने को सेना भेजी ७काशी की पुण्य भूमि की सीमा पांच कोस की है ॥ १० ॥ ८ उपकार ९ वह पंडित राजामल का मित्र था ॥ ११ ॥ १० साल-

तबतैं रही विप्रकै वह भुव, अब उम्मेद लाई बुंदिप ध्रुव ॥
केसव१ अरु गंगाधर२ पातैं, कुल्ले नृपहिं दिवावन बातैं ॥१३॥
पच्छपात इनको नृप जान्यौं, पुनि वह तीरथ थान प्रमान्यौं ॥
द्विज वह पात्र कह्यो बुंदीपति, पै किम होय *अदेय देन मति१४
तब दोउन२हुलकर प्रति अक्खी, रहैं टेक यह प्रभु लव रक्खी
सुनि मल्हार बुल्ल्यो जिनकी भुव, तिनके दयें बिनाँ न मिलैं
ध्रुव ॥ १५ ॥
तब दोउन१ छन्नैं छल किन्नौं, हुलकर नाम पत्र लिखि लिन्नौं
ताहीकी मुद्रा मुद्रित करि, पठयो दलैं पंडित हित अनुसरि॥१६॥
तिहिं बुध लखि हुलकर दल आयो, बहुरि राजमंदिर अपनायो
नृप यह कथ चिरकाँल माँहिं सुनि, जब जानी तब छिन्निलयो
पुनि ॥ १७ ॥
भट सेटूखड्गाङ्ग सु हुलकर, बुंदिपपुर अग्गाहि पठयो बर ॥
तिहिं करार अवसेस न धार्यो, कूरम झंडा तारि बिडार्यो ।१८॥
संभर वहरक्के मंडि सुहाई, फेरी पुर उम्मेद दुहाई ॥
जैपुर सचिव तत्थहो जाकैं, धूजत सतत परी उर धाकैं ॥ १९ ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

झंडा तूटतही जैपुरके सूरवीर बुन्दी है तिननैं अपनी चढी तलब को लैबो बिचार्यो ॥

अरु बनिक जादूदास नाटानीको भानेज आमेर अधीस ईश्वरीसिंह उहाँ अमात्य रक्ख्योहो तापैं त्रास डार्यो ॥

तब वह बनिक घरके सूरनतैं घबराय वनिताके वस्त्र धारि छन्नैं

मसिंह के पुत्र दलेलसिंह के अर्थ ॥ १२ ॥ १३ ॥ * नहीं देने योग्य में देने की बुद्धि कैसे होती है ॥ १४ ॥ १५ ॥ १ हुलकर की छाप लगाकर २ पत्र ॥ १६ ॥ ३उम्मेदसिंह ने यह ४कथा ५बहुत समय पीछे सुनी ॥ १७ ॥ १करार के दिन बाकी हैं सो नहीं सोचा ॥ १८ ॥ १चहूवाण की २आज्ञा ३निरन्तर ४भय ॥ १९ ॥ ६ स्त्री के

कढि आवाँनगर गयो ॥
अरु खत्री केसवदाससौं अपनी आपत्तिको उदंत कहत भयो ॥२०॥
कही सेटूखइराइ करारके दिन अठ८ *अवसेसहे तथापि आमेर ईसको झंडा तोरिडारयो ॥
अरु यह जानि अपनैं सूरवीरन चल्यो हक्क लेवेकौं मार्मैं त्रास पारयो ॥
यह सुनतही खत्री केसवदास मलारतैं रूठि चल्यो ॥
तब नीठिनीठि पच्छो मनाय हुलकरनैं सुतर सवार तत्कालही बुन्दी मुकल्यो ॥ २१ ॥
तानैं जाय नगरमैं बहोरि कछवाहनको केतन रुपायो ॥
यह देखि चोतरफके लोकनके बुंदी आपबे मैं संदेह आयो ॥
तदनंतर करारके दिन पूरे होत आवाँ नगरतैं हुलकरको प्रयान भयो ॥
अरु ऊर्ज्ज अहर्गनके अवदात अर्द्धकी अष्टमी ८ के अह दंग दुबलान मिलानं दयो ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

दूजे दिन दुबलानतैं, किन्नौं सबन प्रयान ॥
संभरकौं हुव सकुन सुभ, थिर रक्खन निज थान ॥ २३ ॥
वाम-दिसा रहि राजसुक१, बुल्ल्यो मोदित बानि ॥
लावक१ क्ककर२ चकोर३ ए, अग्रेसर हुव आनि ॥ २४ ॥

॥ षट्पात् ॥

ताम्रचूड़१ हुव बाम बाम बुल्लिय प्रसन्न स्वर२ ॥
गंधेनकुल४ पुनि खेनक५ बाम हुव बोलि[12] ६ मधुर स्वर ॥
गहकि बाम गोमायु[13] ७ बाम सारस ८ यैलि[14] बुल्लिय ॥

॥ २० ॥ *बाकी हैं । तोभी ॥ २१ ॥ १ झंडा २ सेना का ३ कार्तिक मास की ४ आधे शुक्ल पक्ष की ५ दिन ६ मुकाम ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥
१ राजसुआ नामक पक्षि विशेष २ लावा और तीतर आगे को बोले ॥ २४ ॥
९ मुरगा १० छछुन्दरी ११ चूहा १२ ऊंट १३ शृगाल (गीदड़) १४ पुनि

सवली९ टिट्टिभ[1]१० सुखद बाम बुल्लि रु हित खुल्लिय ॥
गो[2]वंतस११[3]पुष्पसूची१२ बहुरि एहु पच्छि[4] दुवरु बाम हुव ॥
दिस सव्य भयो पा[5]रावत१३हु दैन भूपहित धाम धुव॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

बायस१४ बुल्लिय बाम पुनि, बुल्लिय बाम तुरंग१५ ॥
बाम ब[6]ग्घ१६ मृगराँज[7]१७बलि, हुव तरच्छु१८ हित संग॥२६॥

॥ षट्पात् ॥

फेट[8]१ बिहंग[9] अपसव्य भयउ अपसव्य कपिंजर[10]२॥
पिंगलिका[11]३ अपसव्य भैरद्वाज[12]४हु बिहंग बर ॥
दक्खिन हुव पुनि दहिकें[13]५ भाँस[14]६ दक्खिन रव[15] भासत ॥
सलिल पूर [16]अपसव्य कलस७ अतिलाभ प्रकासत ॥
दिस बाम हिंतु[17] दक्खिन सरल तारा[18] उत्तरि पोदकियें[19]१ ॥
सुभ सकुन होत इत्यादि सब चाहुवान भूपति चलिय॥२७॥

॥ दोहा ॥

हुलकर१ माधव२ इहु नृप३, हंके संतवर[20] तत्त ॥
पुर बुंदिय प्राकारके, बाहिर डेरन पैंत[21] ॥ २८ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

नृप तद्दिन भोजन नि[22]म्माये, बुंदिय विप्र सबहिं जिम्माये ॥

---

१ टीटोड़ी २ पक्षि विशेष ३ पक्षि विशेष ४ पक्षी ५ कपोत भी बाम दिशा में हुआ ॥ २५ ॥ ६ बाघ (सिंह विशेष बघेरा) ७ सिंह और चीता बांयां हुआ ॥ २६ ॥ ८ फेंट नामक पक्षी ९ दाहिना हुआ १० चातक (पपीहा) ११कोचर पक्षी दाहिना हुआ १२भरदूल (पक्षि विशेष १३अग्नि (लाय) १४ओध १५शब्द से शोभित हुए १६दाहिनी ओर जल पूरित घड़ा १७बाम दिशा से दक्षिण दिशा में १८काली चिड़ी सीधी उतरी और १९शकुनचिड़ी (रूपारेल) भी दाहिनी उतरी तारा और पोदकी आदि जितने शकुन यहां लिखे हैं इनका वर्णन 'वसंतराज' नामक शकुन शास्त्र में बडे विस्तार से लिखा है उतना यहां नहीं लिखा जासक्ता इस कारण पाठक लोग वहां देखें वह सटीक छपगया है ॥ २७ ॥ २० शीघ्र २१ डेरों में पहुंचे ॥ २८ ॥ २२निर्माये (बनवाये)

हुल्लकर पुनि नारव हरनाथहिं, कहि कहहु किल्ला सन साथहिं२९

॥ दोहा ॥

नारव हिय चाही नहीं, भट कहनकी बत्त ॥
बाहिर प्रीति दिखाय बलि, पठयो अनुचर तत्त ॥ ३० ॥
ताकी संगहि बाउला, संतू दिय मल्लार ॥
तारागढ पर जाय ते, खुल्ले कढन बिचार ॥ ३१ ॥
किल्लाके सुभटन कहिय, हम निकसन जब ह्वैहिं ॥
नारव हरनाथहिं लखहिं, बहुरि चढ्यो ठक्क लैहिं ॥ ३२ ॥
तब संतू पच्छो मुरयो, कहिय मलारहिं आय ॥
नारव यह बंचक निपट, भटनन कहत जाय ॥ ३३ ॥
दिन्नी संतुव संग तब, हुल्लकर तुपक हजार१००० ॥
इन जाय रु हरनाथ वह, लिन्नों पक्करि लबार ॥ ३४ ॥
तिनकी संगहि कैद तब, नारव किल्ला जाय ॥
भीतरके कहे सुभट, खल परतंत्र खिसाय ॥ ३५ ॥
माँहिं बीर उम्मेदके, रक्खे बिजय बिथारि ॥
आयो संतुव पुनि अधर, संभर आन प्रसारि ॥ ३६ ॥
सित कत्तिय द्वादसि१२ दिवस, कढ्यो कूरम सत्थ ॥
रक्खे हड्ड नरेसके, सबठाँ सुभर समत्थ ॥ ३७ ॥
झंडे संभरके गडे, पर केतन करि पात ॥
आन फिरी उम्मेदकी, दिस दिस बिजय दिखात ॥ ३८ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

तेरसि१३ दिन अभिषेक मुहूरत, मन्न्यों सवन श्रेय गणकन मत
वेणीराम भट्ट कोटा सन, आयो करन बेद बिधि सासन ॥३९॥

१-नक्के हरनाथसिंह को ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ २ चढी हुई तनखा ॥ ३२ ॥ ३, बहुत ठग है ॥ ३३ ॥ ४ लबाली (बहुत झूठ बकनेवाला) ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ नीचे ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ६शत्रु की ध्वजा को गिराकर ॥ ३८ ॥ ७ ज्योतिषियों के मत से

रहित अथर्व त्रयी३के पाठक, आनैं संग बिप्र बुध आठक८ ॥
सम्मुह जाय भूप वंदन किय, उन सिराहि मंगल आसिख दिय४०

॥ दोहा ॥

लै गुरु डेरन आय नृप, बासरसि रत्तिं बिताय ॥
प्रात चढत रवि इक१ पहर, प्रविस्यो नगर सुभाय ॥ ४१ ॥
हुलकर१ माधव२ संग हुव, जैपुर सचिव समेत ॥
चहुवानन पति इम चल्यो, निज अभिषेक निकेत२ ॥ ४२ ॥
मंड्यो बनिकन३ नगर मनि१, बैसन२ कनक३ बिसतार ॥
बिरह टारि धृति१८ बरसको, किय बुंदिय शृंगार ॥ ४३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे आवापुरसर्वनिवसनकालिकठयत्ययनगंगाधर १ केशवदास २ शास्त्रिशिरोमणिसूर्यनारायणराजमन्दिरदापनकथनतद्बुन्दीन्द्राऽनूरीकरणतन्ते १ खत्रि२कोहकयतदर्पणमल्लारसेटूबुंदीप्रेषणातदकालकूर्म्मकेतनत्रोटनबुन्दीन्द्रध्वजाऽऽरोपणापलाइतनट्टाणिभागिनेयोक्तकुपितकेशवदासनिस्सरणहुलकरतदनुनयनपुनःपुरजयपुरपताकीकरणसमयान्तसर्वप्रस्थानदृष्टशुभशकुनबुन्द्याऽऽगमन

॥ ३६ ॥ १ तीनों वेदों के ॥ ४० ॥ ४१ ॥ २ अपने अभिषेक के स्थान में ॥ ४२ ॥
३ बनियों ने ४ वस्त्रों और ५ सुवर्ण को फैला कर ॥ ४३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह चरित्र में सबका आवां नगर में ठहर कर कार्ती बिताना और गंगाधर व केशवदास का शास्त्रि शिरोमणि सूर्य नारायण के अर्थ राज मंदिर देने को कहना और बुन्दीपति के अस्वीकार करने पर तंते गंगाधर और खत्री केशवदास का उस को छल से देना १ मल्लार का अपने उमराव सेटू खैराड़ा को बुन्दी भेजना और उसका बिना समय कछवाहे की ध्वजा तोड़ कर बुन्दी के पति की ध्वजा रोपना २ भागे हुए नाटाणी के भानजे के कहने पर क्रोध करके निकले हुए केशवदास को हुलकर का पीछा लाना और बुन्दी नगर को फिर जयपुर की ध्वजा युक्त करना ३ करार के समय के अंत पर सब के गमन समय शुभ शकुनों को देखकर बुन्दी आना ४ मल्लार का बल पूर्वक नवके को गढ़ से

मल्लारबलात्कारदुर्गनारवनिस्सारणखूच्चूलसम्भरविजयकेतुस्थाप
नसंप्रदायगुर्वागमनकार्त्तिकशुक्लत्रयोदशी १३ दिनद्वितीय २ प्रहर
मुखसाहित्यसहितप्रभुपुरप्रविशनं सप्तविंशो मयूखः ॥ २७ ॥३०८॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इम उमेद अधिपति लखत, निज पुर रुचिर निकेत ॥
पहुँच्यो अग्ग प्रजानकौं, दिट्ठि[1] प्रसादहिं देत ॥ १ ॥
जहँ समरखंधी[2] हन्यौं, नृप नारायनदास ॥
वहै थान अभिसेकको, राजमहल्ल आवास ॥ २ ॥
तिहिं मंदिर नृप जायकैं, निज कटिबंध निवारि ॥
किय विधान बिप्रन कथित, बेद निकेत[3] बिचारि ॥ ३ ॥

अथसंक्षिप्तोऽभिषेचनविधिः ॥

तिल सरिसव[4] संभारतैं[5], पहिलैं नृपहिं न्हवाय ॥
अधिपति जय उच्चार किय, गणक१ पुरोहित राय२ ॥ ४ ॥
तदनंतर द्विजबर उभय२, जीवन१ रिष्किुवराम१ ॥
इतरासन[6] बैठे नृपहिं, स्वजन दिखाये ताम[7] ॥ ५ ॥
नृप तिन जनन बिसासि अरु, बंधन सुरभी[8] छोरि ॥
संभरपति[9] बुल्ल्यो अभय, बिप्रन उचित बहोरि ॥ ६ ॥

निकाल कर चहुवाणा की ऊँची ध्वजा को स्थापन करना २ संप्रदाय के गुरु के आगमन से कार्तिक सुदि तेरस के दिन दोपहर के आदि में सब सामग्री सहित राजा के पुर में प्रवेश करने का सत्ताईसवां २७ मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीन सौ आठ ३०८ मयूख हुए ॥

१ दृष्टि से प्रसन्नता देता हुआ ॥ १ ॥ जहां पर बुन्दी के राजा नारायणदास ने २ समरखंधी नामक यवन को पहिले समय में मारा था ॥ २ ॥ ३ वेद का स्थान ॥ ३ ॥ अब संक्षेप से अभिषेक की विधि कहते हैं ४ सरसों (धान्य विशेष) ५ समूह से ॥ ४ ॥ ६ दूसरे आसन पर ७ तहां अपने लोकों को दिखाये ॥ ५ ॥ ८ गौ का बंधन छोड कर ९ चहुवाणों का राजा उम्मेदसिंह ॥६॥

पुनि तहँ सा[1]क्री सांति किय, पुरोहित स उपवास ॥
बिसद माल उपवीत इहिँ, भूखन सोभित भास ॥ ७ ॥
उचित मंत्र करि[2] बेदि लिखि, बिधिवत होम बिधाय ॥
पढँ पंच५ गन नाम तिन्ह, सुनहु रा[3]म नरराय ॥ ८ ॥
शर्मवर्म१ अरु स्वस्त्ययन२, आयुष्य३ अभय४ नाम ॥
स्वापराजित५ जु पंचम सु, ए पंच५हि प्रभु राम ॥ ९ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

कलस बहुरि सं[4]पातवान किय, पु[5]रट मय रु सुंदर दरसन प्रिय ॥
नृप सि[6]तभूखन लेप माल्य लहि, त[7]दनु वन्हि सं[8]न दक्खिन दिस रहि ॥ १० ॥
देख्यो वन्हि निमित्त[9] विचारन, उठ्यो प्रसन्न सिखा[10] करि धारन ॥
स्नानसा[11]ल पुनि नृपहिँ आनि द्विज, सौरभ तैल[12] न्हवायो नृप निज ११

॥ दोहा ॥

सोध्यो पर्वत अग्रको, मि[13]ट्टीतैं नृप मत्थ ॥
[14]नाकु अग्रकी मृत्तिका, लाई श्र[15]वनन तत्थ ॥ १२ ॥
हरिमंदिरकी मृत्तिका३, नृप उमेद मुख लाय ॥
इं[16]द्रध्वज थल मृत्तिका४, ग्रीवा[17] दिन्न लगाय ॥ १३ ॥
राज[18]अजिरकी मृत्तिका५, हिय लाई करि खंड ॥
गजरं[19]द उद्धृति मृत्तिका६ सोधे दुवर भुज दंड ॥ १४ ॥

---

१ इन्द्र की शान्ति की ॥ ७ ॥ २ करके ३ हे राजा रामसिंह सुनो ॥ ८ ॥ ९ ॥ ४ घड़े को धारा युक्त किया (अर्थात् घड़े से राजा पर जल डाला) ५ सोने का ६ हीरों का आभूषण ७ जिस पीछे ८ अग्नि से ॥ १० ॥ ९ अग्नि का शकुन देखा १० ज्वाला धारण करके उठा ११ स्नान कराने के महल में १२ सुगंधिवाले तैल (इत्र) से ॥ ११ ॥ १३ राजा के मस्तक को १४ उदेई के वाम-ले की मिट्टी १५ कानों के लगाई ॥ १२ ॥ १६ वर्षा ऋतु में इन्द्रधनु खड़ा होवै उस स्थल की अथवा वर्षा के निमित्त यज्ञ किया होवै उस स्थल की मिट्टी १७ गरदन के लगाई ॥ १३ ॥ १८ राज्य के आंगन (चोक) की १९ हाथी के दांत से

मिट्टी७ थानि तड़ागकी, बांबी मिट्टि समस्त ॥
नदि संगमकी मृत्तिका८, लाई उदूर प्रसस्त ॥ १५ ॥
नदी कूल दुवर९ मृत्तिका१० पंकुलीन दुहुँ ओर ॥
मिट्टी११ गनिका द्वारकी, लाई कहि नृप मोर ॥ १६ ॥
गजसालाकी मृत्तिका१२, उर्क उभयर तुपराय ॥
गोसालाकी मृत्तिका १३, दुवर नक्षत्रलीन लाय ॥ १७ ॥
आनि मेंडुरी मृत्तिका१४, पंडौ जुगल२ पखारि ॥
वय अविदूत मृत्तिका १५, लै दुवर चरन सुधारि ॥ १८ ॥
सर्व ओष पुनि सर्व प१६, मिश्रित करि जिषराय ॥
पंचय. गेक्य घटनै बहुरि, दोनौं स्नान कराय ॥ १९ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

भद्रासन बैठो पुनि भूपति, लगे पढन द्विज वेद महामति ॥
ऋग्वेदि १ चरन मंत्र साचिव ऋगारि २ जैहैं, कारन लागे [illegible]
भुपकेई ॥ २० ॥
पूरब१दिस बढि स्यामाम द्विज, [illegible] कनक घट१लिव्यौ नृप सिर॥
[illegible] २ [illegible] ३ बढि, सिच्यौ रौजन [illegible] २
माहि ॥ २१ ॥
[illegible] पश्चिम३, सिच्यौ [illegible]
[illegible] ४ [illegible] ४ [illegible], सिच्यौ लो मिट्टी [illegible] ४
[illegible] ॥ २२ ॥

[illegible]

रक्खहु*अग्नि †सदस्यन उच्चारि, पुनि द्विज घट‡संपातवान करि॥
राजसूय अभिसेक मंत्र कहि, सिंच्यो नृपहिं पुरोहित हित चहि २३
पुनि व्है वेदीमूल पुरोहित, आय नृपति ढिग सुभ मति सोहित॥
सत१०० छिद्रक संपातवान घट, लै पुनि सिंचिय नृपहिं विहित१ वट ॥ २४ ॥
सर्वौषधि२जल पुनि सिर सिंचिय, गंध३ उदक अभिसेक बहुरि किय॥
तदनंतर बीजा४भिसेक हुव, पुष्पन४ सिंच फलन५सिंच्यो ध्रुव२५
रतनन६ पुनि कुसजलन७ सिंचि द्विज, बहुरि कुसन मार्जित किय नृप निज ॥
मृग१वेदी पुनि विप्र मुदित मन, नृप सिर कंठ लगायो रोचँन २६
च्यारि८ बरन जल बहुरि रीति करि, सरित१ तड़ाग२ कूप३ जल ४ घटभरि ॥
कल्पित ठानि च्यारि८सागर जल, सिंच्यो नृपहिं निगम मारग भल
गंगा१अरु जमुना२गिरि निर्झर१०३, इत्यादिक जल पूरि कलस वर
सिंच्यो नृपहिं समोद समस्तन, दारा भ्रात पुनि करन लगे जन२८
काहू सचिव छत्र१ गहि लिन्नौं, काहू चमर२ मोरछल३ किन्नौं ॥
वेत्र११कुट४ कतिकन कर धारे, बंदिन१२ नाना बिरुद बिथारे ।२९।
भई संख नउबत्ति गान ध्वनि, द्विजन सिराह्यो नृपहिं वेद भनि॥
कनक कलस पुनि गैणक१३ धारि कर, सिंच्यो नृपहिं अखिल मंत्र बर ॥ ३० ॥

॥ २२ ॥ †यज्ञ करने वाले ऋत्विजों ने कहा कि * अग्नि रक्षा करो यह कहकर फिर ब्राह्मण ने ‡ घड़े को धारा युक्त किया ॥ २३ ॥ १ उचित मार्ग से ॥ २४ ॥ २ सब औषधियों से युक्त ३ सुगंध के जल से ४ बीजों का अभिषेक ॥ २५ ॥ ५ आम्र के जल से ६ अभि[illegible] ७ गोरोचन ॥ २६ ॥ ८ चारों समुद्रों के जल की कल्पना करके ९ वेदमार्ग के ॥ २७ ॥ १० पानी के झरने का ॥ २८ ॥ ११ धन की छतरी (छड़ी) १२ भाटों ने ॥ २९ ॥ १३ ज्योतिषी ने ॥ ३० ॥

प्रायःसंस्कृतशब्दमात्रामिश्रितभाषा ॥

ते कछु छंदन विविध बनाये, सुनहु राम नृप नृपन सुहाये ॥
सिंचहु सब सुर तोहि नरेश्वर, ब्रह्मा विष्णु२ तथैव महेश्वर ॥ ३१॥
रेश्वर१हेश्वर२ अन्त्यानुप्रासः१ ॥
वासुदेव१ अरु संकर्षण२ पहु, प्रद्युम्न ३ रु अनिरुद्ध ४हु सिंचहु ॥
इंद्र१ अग्नि२ यम३ निर्ऋति४ पाशी५, पवन ६ धनद ७ कैलासनिवासी८ ॥ ३२ ॥
ब्रह्मा९सेस१०दस१०हि दिकपालक, रक्खहु तोहि भूप अरिसालक॥
रुद्र१ धर्म२ मनु३ दक्ष४ रु रुचि५ सुनि, श्रद्धा६ भृगु७ अत्रि ८ रु वशिष्ठ९ मुनि ॥ ३३ ॥
सनक१० सनंदन११ सनतकुमार १२हु, पुलह१३ पुलस्त्य१४ मरीचि१५ तथा पहु ॥
कश्यप१६अरु अंगिरा१७प्रजापति, ए सिंचहु नृप तोहि महामति ३४
अग्निष्वात्त१ प्रभाकर२ ज्योंही, पुनि क्रव्याद३ बर्हिपद४ त्योंही ॥
राज्यपा५रु उपहूत६सु काली७, अग्नि पितर सिंचहु मणिमाली३५
लक्ष्मी१ वेदी२ सची३ ख्याति४ पुनि, अनसूया५ स्मृति६ संभूति७हु सुनि ॥
क्षमा८ प्रीति९ सन्तति१० स्वाहा११ तिम, स्वधा१२ एहु मातर सिंचहु इम ॥ ३६ ॥
लक्ष्मी१ क्रिया२ कीर्ति३ धृति४ पुष्टि५हु, मेधा६ बुद्धि७ सांति८ वपु९ तुष्टि१०हु ॥
लज्जा११ सिद्धि१२ तथा वसु१३ यामी १४, अरुंधती१५ लंबा १६ नृप नामी ॥३७ ॥
भानु१७मुहूर्ता१८विश्वा१९साध्या२०,मरुत्वती२१हु बहुरि आराध्या

१ कुछ छन्दों में २ देवता ३ इसी प्रकार ॥ ३१ ॥ ४ वरुण ५ कुबेर ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ६ प्रसन्न ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ७ आराधन की हुई

संकलप१२इत्यादि*धर्मतिय, सिंचहु संभर तोहि सुजसप्रिय ।३८।
दिति१ दनु२ अदिति३ अरिष्टा४ अरु मुनि ५, कद्रू ६ क्रोधवशा ७ प्राधा८ सुनि ॥
विनता९ सुरभि१० रु कपिला११ काला१२, इतिमुख सिंचहु कश्यप बाला ॥ ३९ ॥
पुनि बहुपुत्र सुपुत्रा भामा१, करहु बिजय, तव बहुरि सयामा३ ॥
बिजय कृशाश्व बधू१ बिरचहु उत, सुप्रभा१जया२प्रदर्शना३जुत ।४०।
तिनको पुत्र१हु बिजय बढावहु, सिंचहु भूप तोहि हित लावहु ॥
भानुमती१रु बिशाला२त्यौं पुनि, मनोरमा३रु बाहुदा३रूपा४सुनि४१
सिंचहु इती अरिष्टनेमि तिय, पार्थिव तोहि बढावहु हित हिय ॥
बहुला१ त्यौंहि रोहिणी२ राधा३, अनुराधा४ऐंद्री५हतबाधा ॥ ४२॥
मूल६ रु दुव२आषाढा८ ज्यौंही, अभिजित९ श्रवण १० धनिष्ठा ११ त्यौंही ॥
बरुण तारका१२ भाद्रपद१४ दुव२, रेवती १५ रु दस्रभ १६ भरणी१७ ध्रुव ॥४३॥
विजय बिथारन काज तोहि पहु, सुधामयूख प्रिया ए सिंचहु ॥
मृगी१हरि२रु मृगचर्मा३सुरभा४, पूता५कपिला६दंष्ट्रा७सुलभा८ ।४४।
श्वेतभद्रचारिका९ पुलस्त्य तिय, इती सोहि सिंचहु पुहवीपिय ॥
श्येनी१अरु भासी२क्रौंची३तिम, धृतराष्ट्री४पंचमी सुकी५तिम।४५।
दिनकर सूत अरुनकी ए तिय, सिंचहु हठ तोहि करि हित हिय॥
आपति१निपति२रात्रि३निद्रापहु४, सव संस्थानँ हेतु ए सिंचहु ।४६।
सेना१उमा२सची३रु वनस्पति४, धूमोर्णा५ गौरी६ शिवा७निरृति८
ज्योत्स्ना९ बुद्धि १० नंदिनी११बलमा १२, अान्तरूपा१३हु तैरहौं १३

*धर्म की स्त्रियां ॥ ३८ ॥ १ इत्यादि २ कश्यप की स्त्रियां ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ३ हे राजा ४ पीड़ा मिटानेवाली ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ५ चंद्रमा की स्त्रियें ॥ ४४ ॥ ॥४५ ॥ ६ सूर्य के सारथि ७ स्थिति के कारण ॥ ४६ ॥

सदया ॥ ४७ ॥

इती कालके अवयव जानहु, ते तव सिर अभिसेचन तानहु ॥
रवि१ ससि२ कुज ३ बुध ४ गुरु५ कवि६ सनि ७ तम१८, सिंचहु ए
ग्रह नव६ आहिक९ सम ॥ ४८ ॥
स्वायंभुव१ स्वारोचिष२ औत्तम३, तामस४ रैवत ५ चाक्षुष ६ छम
वैवस्वत७ सावर्णि८ दक्षसुत९, ब्रह्मसुत१० रु मनु धर्म सुत११हु
नुतं ॥ ४९ ॥
रुद्रपुत्र१२ पुनि रौच१३भौत्य१४पहु, ए मनु तोहि चतुर्दश१४सिंचहु॥
विश्वभुक्१ रु विश्वप२ चित्र३हु सुनि, बहुरि सुशांत४ सुमुख विभु
५ त्यों पुनि ॥ ५० ॥
मनोजव ६ रु ओजस्वी७ बलि८ जुत, एकतम९ रु अंतिक१०पुनि
वृप११ नुत ॥
कृतिधामा१२ रु दिविस्टक्१३ सुचि१४ पहु, देवपाल ए चउदह १४
सिंचहु ॥ ५१ ॥
अरु रेवंत१ कुमार२ रु वर्चा३, बीरभद्र४ नंदी५ हु सुवर्चा ॥
रुवर्चा१सुवर्चा२अन्त्यानुप्रासः १ ॥
पुरोजवाख्य६ विश्वकर्मा७पहु, सुरन मुख्य तोकों ए सिंचहु॥५२॥
आत्मा१ रु असुमान२ दक्ष३हु जिम, हविष४ गविष्ठ५पाराद६पट्टु७
ऋत८ तिम ॥
सत्य९रु आद्य१०नरेसँ सुद्धजस, सिंचहु देव अंगिरस ए दस१०॥५३॥
क्रतु१ रु दक्ष२ वसु३ सत्य४ काल ५ मुनि ६, रोचमान७ धृतिमा-
न८ मनुज९ पुनि ॥
विश्वेदेव काम१०जुत दस१०मित, इद्ध नृपति सिंचहु ए करि हित५४
मृगव्याध१रु सर्प२रु निर्ऋति३ जिम, अजैकपात४ रु अहिर्बुध्न्य५

॥४७॥ १समय क २ राहु ३ केतु ॥४८॥ ४ समर्थ ५ स्तुति योग्य ॥४९॥ ५०॥
६ देवों की रक्षा करनेवाले ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ७ शुद्ध यशवाले राजा ॥ ५३ ॥ ५४ ॥

तिम ॥

पुष्पकेतु ६ बुध ७ भरत ८ मृत्यु ९ पहु, किंकिणि १० स्थाणु ११
रुद्र ए सिंचहु ॥ ५५ ॥

भावन १—२ सुजन्य ३ सुजन ४ जिम, पाज रु ५ प्रसुत ६ सुवर्णा बर्णा ७ तिम
प्रसव ८ द्दल ९ आत्रप १० ऋतु ११ ए पहु, भृगु अभिधान देवता सिंचहु ।५६।
मन १ मरु २ प्राण ३ अपान ४ हंस ५ हय ६, नारायण ७ रु जगद्धित
८ रन ९ नप १० ॥

दिवि श्रष्ट ११ बिभु चिति १२ तोकौं पैहु, इते साध्य संज्ञक सुर सिंचहु ५७
धाता १ मित्र २ अर्यमा ३ दृग जग, पूषा ४ शक्र ५ अंश ६ वरुण ७ रु भग ८ ॥
त्वष्टा ९ विवस्वान १०, सविता ११ पहु, बिष्णु १२ बहुरि बारह १२
रवि सिंचहु ॥ ५८ ॥

एकज्ज्योति १ द्विज्ज्योति २ जथा, त्रिज्ज्योति ३ चतुर्ज्ज्योति ४ पुनि तथा ॥
पंचज्ज्योति ५ एकशक्र ६ हु भल, इंद्र ७ द्विशक्र ८ त्रिशक्र ९ महाबल ।५९।
प्रतिसकृत १० रु मित ११ सम्मित १२ अमित १३ हु, ऋतजित १४ स-
त्यजित १५ रु सुषेण १६ पहु ॥

श्येनजित १७ रु अतिमित्र १८ मित्र १९ जिम, पुरुजित २० धाता २१
अपराजित २२ तिम ॥ ६० ॥

ऋत २३ ऋतवान २४ बिधून २५ ध्रुव २६ ज्यौंहीं, बरुण २७ विदारण
२८ ईदृश २९ त्यौंहीं ॥

अन्यादृश ३० एतादृश ३१ जानहु, क्रीडन ३२ मुनि ३३ अमिताशन ३४
मानहु ॥ ६१ ॥

शक्ति ३५ महातेजा ३६ हु सरभ ३७ जुत, महायशा ३८ द्विप ३९ धा-
तुरूप ४० नुर्त ॥

भीम ४१ सद्द्युति ४२ अतिउक्त ४३ सुनय, अनाधृष्य ४४ बपु ४५

॥ ५५ ॥ १ नाम ॥ ५६ ॥ २ हे प्रभु ३ साध्य नामवाले ॥ ५७ ॥ ५८ ॥
॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ४ स्तुतियोग्य ५ श्रेष्ठ नीतिवाले ॥ ६२ ॥

वास४६ काम४७ जय४८ ॥ ६२ ॥
पुनि विराट४९ए इंद्र मित्र पहु, नव जलधि४९मित मरुतगन सिंचहु ॥
चित्रांगद१ रु चित्ररथ२ जैसैं, चित्रसेन ३ वीर्यवान तैसैं ॥ ६३ ॥
ऊर्णायु४ अनघ५ उग्रसेन६ पुनि, सोम७ सूर्यवर्चा८ तृष्णाप९सुनि
दिविङ्चित्र१० धृतराष्ट्र११ कार्णि १२ जिम, कलि १३ अंगिरा १४
दुराध१५ हंस१६ तिम ॥ ६४ ॥
वृषपर्वा१७ नारद१८ पर्ज्जन्य१९ हु, हाहा२० हूहू२१ विश्वावसु२२
पहु ॥
ताम्रक२३ सुरुचि२४ हु गंधर्वन गन, ए नृप सिंचहु तोहि मोद
मन ॥ ६५ ॥
आहूती१ रु शोभयंती२ जिम, वेगवती३ अरु आप्नुवती४ तिम ॥
ऊर्क५ रु वैकरि६ वभ्रु७ अमृतरुचि८, भू९ रुट१० भीरु ११शोचयं-
ती१२ सुचि ॥ ६६ ॥
भिन्न जाति एते अच्छरि गन, सिंचहु तोहि नरेस कित्तिधन ॥
अनुत्तमा१ रंभा२ विश्वाची३, मनोवती४ मेनका५ घृताची६ ॥६७॥
सहजन्या७ रु स्वरूपा८ जैसैं, सुकेसी९ रु पर्णाशा१० तैसैं ॥
ऋतुस्थला११ पुंजिकस्थला१२पुनि, प्रम्लोचा १३ रु पूर्वचित्ती १४
सुनि ॥ ६८ ॥
सामवती१५ रु पंचचूड़ाख्या१६, अरु उर्वशी१७ अनुम्लोचाख्या १८
चित्रलेखिका१९ विद्युत्पर्णा२०, तिलोत्तमा२१ रु सुगंधि २२ सुव-
र्णा ॥ ६९ ॥
सुवपु२३ अदृश्यलक्ष्मणा२४ हेमा२५, मिश्रकेशि२६ अमिता २७
आहेमा२८ ॥
आहेमा१ आहेमा२ अन्त्यानुप्रासः २ ॥

---

१ उनचास की गिनती वाले ॥६२॥६५॥ २गन्धर्वों का समूह ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ३कीर्त्ति ही है धन जिस के ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ४ श्रेष्ठ वर्ण (रंग) वाली ॥ ६९ ॥ ७० ॥

रुचिका२९ सुव्रता३० सुबाहु३१ जैसैं, सरस्वती३२ रु सुबोधा३३ तैसैं ॥ ७० ॥
बहुरि पुंडरीका३४ रु सुदारा३५, सुगंधा३६ रु सुरसा३७हु सुता[१]।
कामला३८रु सूनृतालया३९ज्यौं, वासोली४० ऽ हंसपादी४१त्यौं॥७१॥
सुमुखा४२ रतीलालसा४३ इति यहु, अच्छी तोहि अच्छरी सिंचहु
दैत्यराज प्रल्हाद१ बिरोचन२, धन्वी बाणा३तथा कीरतिधन ॥७२॥
इत्यादिक लौ दैत्य दिठ्य जल, सिंचहु तोहि इहुभूपति भल ॥
बिप्रचित्ति१ आदिक सब दानव, सिंचहु तोहि मंत्रजित[२] मानव।७३।
हत्प१ प्रहेस२ ठपास३ पुरुषादन४, पौरुषेप५ शैलेंद्र६वध७ रसन८
विद्युत९ सूर्प१० सुकेशी११ मखहा१२, सिंचहु ए आद्यराक्षस तहा॥ ७४ ॥
बलि सुसिद्ध१ मणिभद्र२ सुमन३ जिम, नंदन४ अरु कंडूति५ शंख ६ तिम ॥
मणिमान७ रु बसुमान८ मंदास९, पिंगाक्ष १० रु प्रद्योत ११ महाजस ॥ ७५ ॥
चतुर१२ भीम१३सर्वानुभूति१४यम, पद्मचंद्र१५अरु सेघवर्ण१६सम॥
भूतिमान१७ केतुमान१८ त्यौं बर, श्वेत१९ बिपुल२० त्यौं भठ्य२१ प्रभाकर२२॥ ७६ ॥
मौलिमान२३ प्रद्युम्न२४ जयावह, कुमुद२५ बलाहक२६ यक्ष २७ पक्ष-सह ॥
विजयाकृति२८ बलाहक२९सु बीर३०हु, पद्मनाभ३१शतजिव्ह३२ सुगंध३३ हु ॥ ७७ ॥

रहु१ धहु२ अन्त्यानुमासः १ ॥

हिरण्याक्ष ३४ यहु पौर्णामास, सब सिंचहु राजहुव्द ए सत्तम ॥
शंख१ रु पद्म२ मकर३ कच्छप४जिम, कुंद५मुकुंद६ रु महापद्म७

१श्रेष्ट नखोंवाली ॥ ७१ ॥२ उत्तम ॥ ७२ ॥३मनुष्यों को सलाह में ज्ञातव्य का ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥

७ ति

नील८खर्व९ए आप महानिधि, सिंचहु नव१हि
एकवक्त्र१सूचीमुख२ज्योंही, छगल३बिपाद४ उलूखल५
दुष्पूरण६ ज्वलनांगारक७ पुनि, कुंभमात्र८ उपवीर ९
चक्रखंध११ रु अकर्ण१२ महामन, पाशपाणि१३

१कं

बहुरि वितुंड१६ प्रतुंड१७ इती पहु, तोहि
पुनि नाना मुख बाहु सिरोधर, दांत बिबुध अट्टाल
तेहु चतुष्पद पर शिवके गन१, सिंचहु तोहु इह ॥
महाकाल१ नरसिंह२ अग्ग करि, सब मातर३ ।

अहस्कंद१ नामक विशाख२ सह, नैगमेय३ ए सिंचहु
डाकिनि१योगिनि१खेचर१ भूचर१, सिंचहु तोहि
गंधकुमार१ विष्णु२ अरु अरुड़३ हु, अरुण४ महाखग

गरुड़६

संपाती७ जुत ए सुपर्ण सब, सिंचहु नृप उम्मेद तोहि
शेष१ अनंत२ बासुकि३ रु बामन४, कुंभ५
सुपर्णारि८ ऐरावत९अहिबर, महापद्म१०कंबल११
महानील१३ धृतराष्ट्र१४ बलाहक१५, एलापत्र१६

महाकर्ण१९ गंधर्व२० सनस्विक२१, पुष्पदंत२२
२४ कुलिक२५
खररोमा२६ रु कुमार२७ धनंजय२८, शंखपाल२९ अरु

॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ १ राजा ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ २ अष्ट
३ विष ॥ ८७ ॥

इत्यादिक सब आय नाग वर, सिंचहु तोहि महीप धर्मधर ॥८७॥
ऐरावत१ अरु कुमुद२ पद्म३ जिम, पुष्पदंत ४ वामन ५ अंजन ६
तिम ॥
सुप्रतीक७ अरु नील८ इते पहु, सुभठाँ तोहि महागज रक्खहु ८८
विधिहंस१ रु शिववृषभ२ प्रीति धरि, उच्चैश्रवा३ हय रु धन्वंतरि१
कौस्तुभ१ शंख१ चक्र१ त्रिशिखास्पद२ हु, वज्र३ रु नंदक४ अस्त्र२
समास्पहु ॥ ८९ ॥
अवनिप तोहि संचिकैं ए सब, विजय विधारहु तावकीन अब ॥
वृद्धशाखा १ तप १ यश १ दम १, सत्य १ दान १मख १ब्रह्मचर्य१
शम१॥ ९० ॥
आयु१ रु चित्रगुप्त१ ए जेते, सिंचहु तोहि कहे श्रुति तेते ॥
दंड१ रु पिंगल२ मृत्यु३ काल४ पहु, अंतक ५ बालखिल्य ६ जय
मंडहु ॥ ९१ ॥
दिग्गो च्यारि४ सुरभि१पुनि ज्योंही, सब गायन जुत सिंचहु त्योंही
व्यास१ नाकुभँव२ शमन३ पराशर४, देवल५ पर्वत६ भार्गव७ तप
पर ॥ ९२ ॥
जाबालि८ जमदग्नि९ योगेश्वर१०, क्रतव११ कुशाख्य१२ वेदवाह
१३ वर ॥
शुचिश्रवा१४ गाधेय१५ रु वर्द्धन १६, शूलकछप १७ अत्रि १८ रु
कात्यायन१९ ॥ ९३ ॥
विदूरथ२० रु एकत२१ वलाक२२ द्वित२३, गोतम२४ भरद्वाज२५
कुटिमृड२६ त्रित२७ ॥
शांडिल्य२८ रु मौद्गल्य२९ रु गालव३०, वृहदश्व३१ रु इभसुत ३२
सारंगव ३३ ॥९४ ॥

यवक्रीत३४ जयजालु३५ घटोदर३६ रैभ्य३७ आत्मधामा३८ जैमिनि३९ वर ॥
कुंभज४० दुंदु४१ रु मृदु४२ शुचि४३ तपमय, इध्मवाहु४४ भृगु४५ बहुरि महोदय४६ ॥ ९५ ॥
एते मुनि अभिसेक रक्खि रति, सिंचहु तोहि उमेद महीपति ॥
पृथु१ दिलीप२ दुष्यंत३ भरत४ अथ, धुन५ ककुत्स्थ६ युवनाश्व७ जयद्रथ८ ॥ ९६ ॥
अनेना९ रु मांधाता१० ज्यौंही, शत्रुजित११रु मुचकुंद१२ हु त्यौंही
पुरूरवा१३ इक्ष्वाकु १४ रु यदु १५ पुनि, अंबरीष १६ नाभाग तथा सुनि ॥ ९७ ॥
भूरिश्रवा१७ महाहनु१८ पुरु१९ जिम, वृहदश्व२० रु सुद्युम्न२१ भूप तिम ॥
भूरिद्युम्न२२ तथा प्रद्युम्न२३हु, संजय२४ पुनि इतिसुख नृप सिंचहु ॥ ९८ ॥
परजन्यादि मेघ१ नाना तरु२, औषधि३ रत्न४ अनेक बीज५ वरु॥
पुरुप आत्रमेयांग१ भूत सर५, भू१ जल२ तेज३ अनिल४ अरु अंबर५ ॥ ९९॥
मन१ बुद्धि२ रु अव्यक्तात्मा१ पहु, एहु तोहि हहन पति सिंचहु ॥
रूपभौम १ अरु शिलाभौम २ जिम, पातालाख्य ३ नीलवृत्तिका ४ तिम ॥ १०० ॥
पीत५ रक्त६ सित७ असित८ भौम सब, अभिसिंचहु इत्यादि तोहि अब ॥
जंबू१ शाक२ क्रौंच३ कुश ४ पुष्कर५, प्लक्ष ६ शाल्मली ७ देहु स्याम्य वर ॥१०१ ॥

---

१ अगस्त्य ॥९५॥ २ दुष्यन्त ॥९६॥ ॥९७॥ ३ इत्यादि ॥९८॥ ४ (श्रेष्ठ)॥ ॥९९॥ ॥ १०० ॥ १०१ ॥

उत्तर कुरु१ ऐरावत२ अघहंत, केतुमाल३ भद्राश्व४ इलावृत५ ॥
त्यों हरिवर्ष६किंपुरुष७भारत८, रम्य९खंड सिंचहु हित धारत१०२
इंद्रद्वीप१ कसेरु२ तथा पुनि, ताम्रवर्ण३ रु गभस्तिमान४ सुनि ॥
नागद्वीप५ सौम्य६ गंधर्व७हु, वरुण८ अभय९ ए द्वीपहु सिंचहु१०३
हेमकूट१ हिमवान२निषध३गिरि, नील४श्वेत५अरु शृंगवान६फिरि
मेरु७ गंधमादन८ महेंद्र ९ जिम, माल्यवान १० अरु मलय११ सह्य१२ तिम ॥ १०४ ॥
शुक्तिवान१३गिरि ऋक्षवान१४सुनि, विंध्याचल१५गिरि पारियात्र१६ पुनि ॥
इत्यादिक सब पुराय महीधरै, सिंचहु तोहि महीपति संभर॥१०५॥
ऋक१ यजु२ साम३ अथर्व४ च्यारि४ श्रुति, सिंचहु तोहि प्रसन्न पाय नुंति ॥
इतिहास१ धनुर्वेद२ आयु३ पहु, पुनि गंधर्व४शिल्प५ उपवेदहु १०६
शिक्षा१ कल्प२ व्याकरण३ ज्यौंही, ज्योतिष४ छंद५निरुक्त६हि त्यौंही ॥
सिंचहु अंग बेदके ए खट६, तोहि भूप उम्मेद बिहित बँट ॥ १०७॥
ए खट६ अंग रु बेद च्यारि४।१० पुनि, मीमांसा११ स्मृति१२ न्याय१३ तथा सुनि ॥
अरु पुराण१४बिद्याहु चतुर्दस१४,सिंचहु ए नृप तोहि महाजस१०८
पांचरात्र१ अरु वेद पाशुपत, कृतांत पंचक५ सांख्य४ योग५क्षत ॥
बिबिध शास्त्र इत्यादि नरेश्वर, सिंचहु तोहि दिव्य जल घट कर
गायत्री१ गंगा२ गांधारी३, जय लुल्लहु महाशिवा४ नारी५ ॥
सुर१ दानव२ गंधर्व३ यक्ष४ पुनि, राक्षस५ पन्नग६ मुनि७ मनुग८ गो९ सुनि ॥ ११० ॥

---

१ पाप को हरनेवाला ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ २ पर्वत ॥ १०५ ॥ ३ स्तुति पाकर ॥ १०६ ॥ ४ उचित मार्ग से ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥

देवनकी माता१० पुनि ज्यौंही, देवनकी पतनी१२१ सब त्यौंही ॥
द्रुम१२रु नाग१३ दैत्य१४ रु अच्छरि गन१५, अस्त्र१६ शस्त्र१७ राजा१८ अरु बाहन१९ ॥१११॥
ओषध२० रत्न२१ काल२२अवयव२३जिम, स्थानक२४पुराय आयतन२५ सब तिम ॥
जीमूत२६रु जीमूतबिकार२७हु, उक्त अनुक्त बिसय बिसतारहु११२
लवणोद१ रु दुग्धोद२ घृतोदक३, दधिमंडोद४ तथा मद्योदक५ ॥

त्योदक१ द्योदक२ अन्त्यानुप्रासः१॥

इक्षुरसोद६ रु सुद्धोदक७ बर, गर्भोदक८ सिंचहु ए सागर ॥११३॥
बहुरि च्यारि४सागर निज जल करि, सिंचहु तोहि कनक मय घट भरि ॥
प्रयाग१नैमिष२प्रभास३पुष्कर४, उत्तरमानस५तथा ब्रह्मसर६ ।११४।
नंदकुंड७ गयशीर्ष८ पंचनद९, कालोदक१० रु स्वर्गमार्गप्रद११ ॥
त्यौंहि अमरकंटक१२ भृगुतीरथ१३, कलिकालाश्रम१४ अग्नितीर्थ१५ अथ॥ ११५ ॥
गोतीर्थ१६रु तृणबिंदुकृताश्रम१७, जंबूमार्ग१८रु तंडुलिकाश्रम१९
स्वर्ग२० कपिल२१ तीरथ अरु वातिक२२, त्यौं आगस्त्य२३महासर२४ खंडिक२५ ॥ ११६॥
अंगद्वार२६ कुमारीतीरथ२७, कुशावर्त्त२८विल्वक२९ अघहरकथ
नील१ रैवत२ रु अर्बुद३ पर्वत३०, शाकंभरी३१ सुगंधी३२ मुनि मत ॥११७॥
कुब्जाम्रक३३ भृगुतुंग३४ रु कनखल३५, धारा३६ कुंभा३७ कपिलाश्रम३८ भल ॥
अज्ञतुंग३९ अरु चमसोद्भेदन४०, अश्वगंध४१ कालंजर४२ बिनशन४३॥११८॥

१देवताओं की २स्त्रियां२वृक्ष॥१११॥११२॥॥११३॥११४॥११५॥११६॥११७॥११८॥

रुद्रक४४ अग्नि४५ केदार४६ मोच४७ जिम,महालय४८रुबदरीआ-
श्रम४६ तिम ॥
नंदा५० ससितीरथ५१ रवितीरथ५२, वासवतीरथ५३ नासत्यक
५४ अथ ॥ ११९ ॥
वरुण५५ वायु५६ वैश्रवण५७ तीर्थ पुनि, द्रुहिण५८ईश५९ यम६०
अनल६१ तीर्थ सुनि ॥
विरूपाख्यतीरथ६२पवित्र जिम,धर्मतीर्थ६३अच्छरितीर्थ६४हुतिम १२०
॥ रुचिरा ॥
ऋषि६५ वसु६६ साध्य६७ मरुत६८ आदित्यक६९ रुद्र७० अंगिरस
७१ तीर्थ जिते ॥
विश्वेदेवतीर्थ७२ भृगुतीर्थ७३ रु प्लक्षप्रस्रवण७४ सकल तिते ॥
मानससर७५ वाराहसरोवर७६ सालिग्राम हरोवर७७हू ॥
कामाश्रम७८ रु सपूर्व७९सुपुत्रा८०र्यौंहित्रिकूट८१ महावरहू॥१२१॥
चित्रकूट८२ऋतुसार८३ विष्णुपद८४ कापिल८५ वासुकि८६ तीर्थ
महा ॥
सिंधूत्तम८७ सूर्यारक८८ कुंभक८९ पुंडरीक९० अविमुक्त९१ तहा
तपोद्वार९२ सिंधूदधिसंगम९३ गंगासागरसंगम९४हू ॥
अच्छोदक९५ रु बिंदुसर९६ मानस९७ फल्गुतीर्थ९८सु मनोरमहू॥
लौहित्यक९९ कुंभावसुंद१०० पुनि धर्मारण्यक१०१ पुनि नमने ॥
वस्त्रापथ१०२ रु छागलेयक१०३ तिम वदरीपावन१०४ भव्यमने
वन्हितीर्थ१०५ अरु मेषतीर्थ१०६ नृप ह्व सप्तऋषितीर्थ१०७जुपै॥
पुष्पन्यास१०८ कार्णश्व१०९ हंसपद११० अश्वतीर्थ १११मणिमंथ
११२सुपै ॥ १२२ ॥

॥ हीरकम् ॥

दिविका ११३ अरु इंद्रमार्ग११४ स्वर्णविंदु११५ सिष्टजो ॥

॥ ११९ ॥ १२० ॥ १२१ ॥ १२२ ॥ १२३ ॥

आह्लक११६ ऐरावत११७ करवीर११८हु इष्ट जो ॥
भोगपश११९ वणिक१२० नागम१२१ ऋणमोचनकाख्य१२२हू ॥
पापमोचनिक१२३ उद्देजन१२४ संपूज्याख्य१२५हू ॥ १२४ ॥
काख्यहू१ ज्याख्यहू२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
देवब्रह्मसर१२६ घृतसर१२७ दधिसरवर१२८ नाम जे ॥
सिंचहु इत्यादि सकल तीरथ सुख धाम जे ॥
मंडहु जय ए नरेस मेटहु अघसर्वकौं ॥
तावकं विथराय तेज खंडहु अरि बर्गकौं ॥ १२५ ॥

॥ हरिगीतम् ॥

गंगा१ रु ह्रदिनी२ ह्लादिनी३ सीता४ रु चक्षु५ नदी जथा ॥
तिम कांचनाक्षी६ सुप्रभा७ रेवा८ रु सिंधु९ ह्रदा१० तथा ॥
अघओघ अंकुस पावनी११ विमलोदका१२ पुनि जानिये ॥
क्षिप्रा१३ रु शोणा१४ रु तर्प१५ सरयू१६ चंद्रभागा१७ मानिये ।१२६।
धूता१८ सरस्वति१९ ओघनादा२० गंडकी२१ रु इरावती२२ ॥
पीता२३ विशाला२४ मानसी२५ रंभा२६हु सुद्ध सुहावती ॥
केशा२७ सुवेशा२८ देविका२९ रु सिवा३० विभागा३१ पावनी ॥
यमुना३२ देवह्रदा३३ बितस्ता३४ कौशिकी३५पुनि सुनि मनी१२७
चर्मण्वती३६ रु विदर्भिका३७ कुंती३८ रु अच्छोदा३९ धुनी ॥
तपती४० रु निर्विंध्या४१ तृतीया४२ वंदना४३ श्रुतिमैं सुनी ॥
सुरसा४४ रु इक्षुमती४५ अवंती४६ धूतपापा४७ गोमती४८ ॥
पुनि शोणा४९ इक्षुकि५० वेदमाता५१बाहुदा रु५२सरस्वती५३॥१२८॥
श्येनी५४ रु पर्णाशा५५ कुमुद्वति५६ वेदघुर्घुरदा५७ तथा ॥
पुनि सदानीरा५८ त्यौंहिं वेणुमती५९ रु देवस्मृति६० तथा ॥
मंदाकिनी६१ रु पलाशिनी६२ रु पिसाचिका६३ पुनि पिप्पली६४॥
तृपिका६५ दशार्णा६६ सिंधुरेखा६७त्यौंहिं करतोया६८भली ।१२९।

१ नामक ॥ १२४ ॥ २ तेरा ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ १२७ ॥ ३ नदी ॥ १२८ ॥ १२९ ॥

दूजी२ कुमुद्वतिका६९ शिनीवाली७० कुहू७१ पुनि मंजुला७२ ॥
चित्रोपला७३ अरु चित्रवर्णा७४ शुक्ति७५ मोला७६ वाकुला ७७॥
तापी७८ कपू ७९ अमला८० पयोष्णी८१ मंदग८२ निषधावती ८३
वेणा८४ सिता८५ दूजी२हु निर्विंध्या८६ रु भीमा८७दुर्गती ८८।१३०।
तोपा८९ रु वैतरणी९० महागोरी९१ रु गोदा९२ मंगला९३ ॥
नृसमा९४ रु भीमरथी९५ रु जंबू९६ कृष्णावर्णा९७ सज्जला ॥
पुनि तुंगभद्रा९८हू तरंगिनि मंदगा९९ रु भयंकरा १०० ॥
वात्या१०१रु कावेरी१०२ रु कृतमाला१०३हु मुक्तिद संबरा ।१३१।
पुनि ताम्रपर्णी१०४ पुष्पभद्रा१०५ उत्पलावति१०६ मद्रनी १०७
त्रिदिवालया १०८ अरु वंशधीरा १०९ लांगुली११० सुभगा घनी
सुकुलावती१११ ऋषिका११२ रु ऋषिकुल्या११३ रु बरबेगा ११४
छाया ११५ ॥
दूजी २ पयोष्णी ११६ मंदबाहिनि ११७ कालबाहिनि ११८ त्यों
दया ११९ ॥ १३२ ॥
व्योमा १२० रु देवी १२१ त्यों २ बिशाला १२२ कंपला १२३ रु
सुवाहिनी१२४ ॥
दूजी२हु करतोया१२५ रु बेत्रवती१२६ सुभद्रा१२७हू गिनी ॥
ताम्रा १२८ रु अरुणा १२९ सुप्रकारा १३० अद्रिका १३१ रु हिर-
गमई१३२ ॥
पुनि२सुप्रकारा१३३दूसरी इषमा१३४रु अश्ववती१३५नई ॥१३३॥
आलोपला१३६ अरु आयगा१३७भासी१३८रु संध्या१३९भूप जे ॥
शाला१४० रु बड़वा१४१मालिका१४२वलयावती १४३हु अनूपजे
रु महेंद्रवाणी१४४ बाहुदा१४५ दूजी२रु नीलोत्पलकरा१४६ ॥
बनवासिनी१४७ नंदा१४८ रु परनंदा१४९सुनंदा१५० अघहरा।१३४।
बसुवासिनी१५१ पुनि आपगा इत्यादि सब यँहँ आयकैं ॥

॥ १३० ॥ १ नदी ॥ १३१ ॥ १३२ ॥ १३३ ॥ १३४ ॥

जल पाप नासक बिबिध निज निज दिव्य घट भरि लायकैं ॥
उम्मेद नृप बर तोहि सिंचहु मंत्र इहिं गति बुल्लिकैं ॥
संपातवान[1] हिरण्य[2] घट गहि सिंचयो हित खुल्लिकैं ॥ १३५ ॥
वह कलस बर सब मिश्र जल जुत सर्व औषधि१ जल भर्यो
सबगंध२ बीज३ प्रसून४ फल५ मणि६ नीर पूरित जो कर्यो ॥
सित सूत्र वेष्टित कंठ जो सितवस्त्र कर्त्तन चिन्नयो ॥
पुनि छीर वृच्छलतातपत्रक[3] सुद्ध हाटक जो भयो ॥ १३६ ॥
वह कलस लै तब गणक पुंगव उक्त मंत्र सुनायकैं ॥
सिंचयो नरेसहिं स्वस्ति पढि इम वेद रीति बिधायकैं ॥
पुनि गंधतैलन अंग उब्बटि सुद्ध न्हानहु मंडयो ॥
सित बस्त्र धरि छबि मुकुर१घृत२बिच देखि जो द्विजकों दयो१३७
दधि१ दुब्ब२ चंदन३कुंकुमा४ दिक द्रव्य मंगल भूपलै ॥
हरि पूजि हाटक मूर्त्तिमैं उपचार ष्टि१६ अनूपलै ॥
मधुपर्क१ भूखन२बस्त्र३कैं गणक१सु पुरोहित२ पूजये ॥
पुनि बिप्र इतरहु पूजिकैं उनकेहु आशिष व्हाँ लये ॥ १३८ ॥

॥ दोहा ॥

बिहित पट्ट१ विप्रन तदनु, बंध्यो नृपति ललाट ॥
बंध्यो पुनि मनिगन जटित, नृप सिर मुकुट२सुघाट ॥१३९
वृष१ मार्जार२ तरच्छुकी, बहुरि सिंहकी खाल ॥
तर ऊपर क्रमतैं तबहि, डारी मंच बिसाल ॥ १४० ॥
तिन ऊपर उत्तम बसन[5], दीनौं बिसद बिछाय ॥
पुरोहित सु तिहिं मंच पर, दयो नृपहिं बैठाय ॥ १४१ ॥
द्वास्थ दिखाये पुनि नृपहिं, सचिव१ पौरजन२ व्रात ॥
वनिक३ प्रकृति इत्यादि सब, कहि कहि कित्ति सुहात१४२

१धारायुक्त२सुवर्ण का घड़ा॥१३५॥३वृच्छ की लताओं के छत्र सहित॥१३६॥४काच में॥१३७॥१३८॥१३९॥५चीते की॥१४०॥६श्वेत॥१४१॥७द्वारपाल ने८समूह ॥१४२॥

ग्राम१बसन२गज३हय४कनक५, गो६अज७अवि८गृह९आपि
गणक१ पुरोहित२उभय३पुनि, पूजे नृप हित थप्पि॥१४३॥
त्योंहिं तीन३ ऋक१ साम२,यजु३, पाठक पूजे बिप्र ॥
गोरस१ मोदक२ करि बहुरि, सबहि जिमाये छिप्र ॥१४४॥
रजत१ कनक२ गो३ बस्त्र४ तिल५, अन्न६पुष्प७फल८हेम ९
भूमि१० दान इत्यादि सब, दिय बिप्रन हित छेम ॥ १४५ ॥
पुनि करि अग्गि प्रदच्छिना, धनुख१ बान२ कर धारि ॥
परसि पिट्ठि नृप१ धेनु२ की, गुरु बंदन उच्चारि ॥ १४६ ॥
तदनु बिहित लच्छन ललित, जातिमान हय लाय ॥
सर्वौषधि जल कलस करि, दीनौं सुबिधि न्हवाय ॥१४७॥
बस्त्र१ कनक२ भूखन३ बितरि, पढे पुरोहित मंत्र ॥
करहु श्रवन तिन अर्थ कछु, संभर राम स्वतंत्र ॥ १४८ ॥
तू जय हय१ तू राजहय२, आद्य३ इंदिराजात४ ॥
जिम यह राजा१ नरनपति, तू२ जिम हयन सुहात ॥ १४९ ॥
आरोहैं गंधर्व जिम, नित्य तोहि नरनाह ॥
तिम रक्खहु नरनाहकौं, सदा पूज्य बरबाह ॥ १५० ॥
नृपहिं दिखावहु स्वप्नकरि, आवैं जबहि अरिष्ट ॥
पुनि रक्खहु सब हय धरयो, यह भर तोपर शिष्ट ॥ १५१ ॥
अबतैं यह नृप भक्ति करि, आवहिं तेरे अग्ग ॥
गंध१ माल२ अनुलेप३ करि, पूजहिं प्रीति समग्ग ॥ १५२ ॥
स्वस्तिवचन१ आशिष२ बिबिध, बिप्रनकेहु पढाय ॥
तोहि इहु नृप पूजिहै, पट्टोचित हयराय ॥ १५३ ॥
मेघवा१ रक्खहु पूर्व१ तैं, दक्खिन२ तैं यम२ तोहि ॥

---

१ भेड़ (मींढा) ॥ १४३ ॥ १४४ ॥ १४५ ॥ २ अग्नि की ॥ १४६ ॥ १४७ ॥
॥ १४८ ॥ ३ लक्ष्मी से उत्पन्न ॥ १४९ ॥ ४ हे श्रेष्ठ घोड़े ॥ १५० ॥ १५१ ॥
॥ १५२ ॥ १५३ ॥ १इन्द्र

पच्छिम३ उत्तर४तैं सदा, बरुन३ संभुसख४ सोहि ॥ १५४ ॥
सब दिसतैं रक्खहु सबहि, पूज्यो हय इहिं राह ॥
गणक१ पुरोहित२ भूपकों, बहुरि चढायो बाह ॥ १५५ ॥
तदनंतर बारन बिहित, आन्यों रचि, सनमान ॥
मंत्र सुनाये गणक वर, ताके दक्खिन कान ॥ १५६ ॥
नृपको गजपति होहु तू, श्रीगज कीनों भूप ॥
गंधादिक पूजा सदा, लहिहै तू जयरूप ॥ १५७ ॥
नृपकों रक्खहु नागपति, रन१ मग२ गृह३ सब ठाम ॥
तजि पसुभावहिं दिव्यता, ले हुव पीलुललाम ॥ १५८ ॥
ऐरावतगजको तनय, नाम अरिष्ट सिराहि ॥
देवासुर रनमें सुरन, कीनों श्रीगज चाहि ॥ १५९ ॥
तोबिच ताको तेज सब, आवहु नागन नाह ॥
नृपहिं चढायो पूजि इम, इभ पर बिहित उछाह ॥ १६० ॥
गणक१ पुरोहित२ सचिव३ भट४, भये गजन चढि संग ॥
होय महापथ निज नगर, फिरे अतीव उमंग ॥ १६१ ॥
देवालय जहँ जहँ मिले, तहँ तहँ पूजन कीन ॥
परिकर जुत प्रासाद पुनि प्रबिस्यो भूप प्रबीन ॥१६२ ॥
सचिव१ भटा२ऽऽदिन बिबिध वसु, दान१ मान२ सनमानि ॥
बिप्र जिमाये अयुत १०००० मित, आम्नाय बिधि आनि १६३
दीन१ अनाथ२ हिं दक्खिना, बिबिध उचित्त बहु दत्त ॥
सिक्ख सबन दिय स्वस्ति सुनि, भूप असन किय तत्त १६४
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशावुम्मेद॰

॥ १५४ ॥ १ घोड़े पर ॥ १५५ ॥ २ उचित हाथी ॥ १५६ ॥ १५७॥१५८॥ ॥ १५९ ॥ १६० ॥ ३ राज मार्ग (बाजार) में ॥ १६१ ॥१६२॥४ धन सें५ वेदविधि से ॥ १६३ ॥ १६४ ॥

सिंहचरित्रेबुन्दीप्रविष्टहड्डेन्द्राऽभिषेकविधिवर्णनमष्टाविंशोमयूखः ॥
॥ २८ ॥आदितः ॥ ३०९ ॥

प्रायोव्रजदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

पंच गगन धृति १८०५ सकसमय, बाहुल[1] पक्ख बलच्छ[2] ॥
रतिपति तिथि[3]१३ नृपकँ भयो, अभिसेचन इम अच्छ ॥१ ॥
पुनि किन्नौं जिन जिन तिलक, अभिसेचनके अंत ॥
क्रम सन तिन नामन कहौं, सुनहु राम छितिकंत ॥ २ ॥
प्रथम पुरोहित निज तिलक, किन्नौं रितुव१ नाम ॥
तदनंतर उँपदेस[4] गुरु, बिरच्यो बेणिपराम२॥ ३ ॥
तदनु तिलक मल्लार३ किय, पुनि माधव४ कछवाह॥
इहिं दिन इन गद्दिय[5] अधर, रहि किय रीति निबाह ॥ ४ ॥
साहिपुरप उम्मेद५ नृप, पुनि किय तिलक प्रवीन ॥
रानाउत संभू६ बहुरि, रान सेनपति कीन ॥ ५ ॥
तदनु कहँ[6] मल्लारकँ, किय नारँव हरनाथ७ ॥
खत्रिय केसवदास८ किय, सुमति बहुरि हित साथ ॥ ६ ॥
देवगढप जसवंत९ पुनि, मेघ१० बघप तत्थ ॥
कोटापति कटकेस पुनि, अखैराम११ कायत्थ ॥ ७ ॥
बहुरि करोलीपति सचिव१२, सोपुर भूप वकील१३ ॥
किन्न तिलक इन हे उभयर, हुलकर संग सु लीन॥ ८ ॥
साहिपुरेसहिं आदि लै, सोपुर सचिव समेत ॥

में, बुन्दी में प्रवेश होने और हाडों के इन्द्र के अभिषेक की विधि के वर्णन का अट्ठाईसवां २८ मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीन सौ नव ३०९ मयूख हुए ॥

१ कार्तिक २ शुक्लपक्ष ३ ज्योतिष में कामदेव को तेरस तिथि का पति मानते हैं ॥ १ ॥ २ ॥ ४ मंत्रोपदेश करनेवाले गुरु ने ॥ ३ ॥ ५ गद्दी से नीचे ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ६ जिस पीछे मल्लार के कहने से ७ नरूके हरनाथ ने तिलक किया ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥

नजरि निछावरि किन्न इन, अतिहित बिनय उपेत ॥ ९ ॥
तदनंतर नृप उट्ठिकैं, दम्म निवेदि हजार १००० ॥
कुलदेवी१ पूजन कियउ, रचि खोड़स१६ उपचार ॥ १० ॥
पीतांबर हरि२ पूजि पुनि, भेट निवेदन ठानि ॥
गिरि नितंब३ खासा महल, तँहँ संसद३ किय आनि ॥ ११ ॥
दुव२ हय दुव२ सिरुपाव इक१, गज मनिभूखन एक१ ॥
किन्नैं इम६ नृपकी नजरि, हुलकर१ बिनय बिबेक ॥ १२ ॥
याही मित६ जयसिंह सुव, माधव२ उच्छव मानि ॥
किन्न नजरि बुंदीसकी, प्रीति उचित पहिचानि ॥ १३ ॥
संतू १पुनि हुलकर सुभट, इक१ हय इक१ सिरुपाव ॥
कँटक४ इक१पुनि कनकको, किन्न नजरि करि चाव ॥१४॥
इक१ इक१ सिरुपाव हय, इक१ इक१ नजरि बिधाय ॥
रामराव२ हुलकर सचिव, अरु तंते२ द्विजराय ॥ १५ ॥
सेटू४ मुख हुलकर भटन, किन्न नजरि इहिँ रीति ॥
प्रेम१ सिवाईसिंह२ मुख, माधव भट सप्रीति ॥ ॥ १६ ॥
इमहि नजरि निज भटनकी, लै नृप संभरवार ॥
पठये डेरन सिक्खदै, माधव१ अरु मल्लार२ ॥ १७ ॥
उदयनेर१ कोटा२ कटकं, हुलकर आयस पाय ॥
पत्ते पुनि निज निज पुरन, तेरसि१३ रत्ति बिताय ॥ १८ ॥
दिवस चउद्दसि१४ गोठि करि, बिबिध भंति बुंदीस ॥
उभय२ जिमाये कँटक जुत, माधव१ हुलकर ईस ॥ १९
सह कुटुंब पहिरावनी, हुलकरकी नृप कीन ॥
दुव२ वाजी सिरुपाव दुव२, इक१ गज अप्पि नवीन ॥२०॥

॥ ९ ॥ १ जिस पीछे ॥ १० ॥ २ पर्वत के शिखर पर ३ सभा ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ ४ कड़ा (कंकण) ५ सुवर्ण का ॥ १४ ॥ ६ किया ॥ १५ ॥ ७ आदि ॥ १६ ॥ १७ ॥ ८ सेना ९ आज्ञा पाकर ॥ १८ ॥ १० सेना सहित ॥ १९ ॥ २० ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

नव९ हीरन सिरुपेच१ सुभायक, रंग गुलाब जटित मधनायक ॥
बुधसिंह जु आलम सन लिन्नौं, सो नृप यहँ मल्लारहिं दिन्नौं॥२१॥
इक१ वारन तंते२ द्विजकौं दिय, इक१ त्यौंहीं संतूर२ हित अप्पिय
रामराव ३ मल्लार सचिव हित, गज रुप्पय दिय पंच ५००० सहँस
मित ॥ २२ ॥
इतनैंहीं सेटू४ हित अप्पे, थिर ए च्यारि४ स्वीये करि थप्पे ॥
रामराय सुत आनँदराव५हिं, इक१अ३श्वहि दिय इक१सिरुपावहिं२३
पूरबिया द्विज बालकृष्ण६हित, हय१सिरुपाव१दम्म द्वैसत२००मित॥
हुलकर दूत स्वामि७ हित दीनैं१, इक१ इक१हय सिरुपाव नवीनैं २४

॥ दोहा ॥

अश्वनके अनुचर सहित, सबको इम सतकार ॥
बुंदीपति करि करि विविध, किय प्रसन्न मल्लार ॥ २५ ॥

॥ सचरगागद्यम् ॥

अग्गैं बल्लभ कुल दीक्षा ही सो तो गोस्वामि गोपीनाथनैं मंत्र देबेकौं न आय मिटाई ॥

तब रामानुज दीक्षा लै रु रनपंडित महारावराजा उम्मेदसिंह ऐसैं आमेरके उदरतैं बुंदी कढाई ॥

अब तखत बैठतही देस १ मैं जयश्रीरंगनाथ कहिबेकौं हुकम चलायो ॥

अरु पत्र २ महुरछापन ३ मैं प्रीतिपूर्वक श्रीरंगनाथ नामधेय४ लिखायो ॥ २६ ॥

अरु अग्गैं अपनैं पिता पितामहादिकनकी दान करी पृथ्वी

॥ २१ ॥ १ हाथी ॥ २२ ॥ २ अर्पन करके ३ घोड़ा ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ ४ नाम॥ २६ ॥

समस्त संप्रदानन१कौं खोजि खोजि बुलाय दीनौं ॥

अरु अपनी आपत्तिमैं सूरबीर सुभटादिक समस्त स्वामिधर्मी सेवामैं रजू रहे तिनकौं ग्राम १ गज २ वस्त्र ३ बाजि४नकी बखसीस कीनौं ॥

उनके अभिधान२ रावराजेंद्र रामसिंह सुनिबेकौं सावधानी करियै ॥

अरु प्रपितामहके वितरण३ वारिधि४कौं विद्वज्जन५ वार्नाके तरंडे करि तरियै ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

हड्डा हरजन१ सचिव हित, दै सिबिका गज दास ॥
हिंडोली पुरसौं दयो, पटा सहँस पंचास ५०००० ॥ २८ ॥
देव नत्ति सिवसिंह सुन, भारत२ हित बुंदीस ॥
पत्तन१खेड़ा२सौं पटा, दयो सहँस चालीस४०००० ॥ २९ ॥
अमरसिंह रट्ठोर सुत, अभय३सिंह हित तत्त ॥
पटा सहँस छत्तीसको ३०००, पुर अलोद३जुत दत्त ॥ ३० ॥
नाथाउत पित्थल तनय, जयसिंहहि४ चहुवान ॥
पटा हजार पचीस२५०००जुत, नगर दयो निम्मान ॥ ३१ ॥
बंधु भवानीसिंह५ भट, महासिंह हर हेत ॥
बीसहजार२०००० पटा दयो, धोवड़२५ ग्रंग समेत ॥ ३२ ॥
मेगसिंह६ सामंतहर, हड्डा ग्ररथ ग्रनूप ॥
पटा सहँस धृति१८००० जुत दयो, भजनेगे६पुर भूप॥३३॥
हरदाउत हिंदू सुतज, नाहर७कौं हित संग ॥
पटा सहँस पंद्रह१५०००सहित, दियउ पगार१७ ग्रंग॥३४॥
तोक८ महासिंहोत हित, प्रथित दिखावत प्यार ॥

१ दान लेनेवालों को २ नाम ३ दान करना ४ समुद्र को विद्वान् लोगों का मार्ग करना ५ नाव से ॥ २७ ॥ २८ ॥ १ देवसिंह का पोता ७ पुर ॥ २९ ॥
॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ८ पितृन

दंग जैतगढ८सौं दयो, पटासु पंति१०हजार १०००० ॥३५॥
दसरथसिंह९ प्रयाग सुत, महासिंह सु कुलीन ॥
अट्ठ सहँस८०००को तिहिं पटा, सुहगनि९पुर समदीन ॥३६॥
मुहुकमहर मरजाद सुत, भट नगराजन अत्थ१० ॥
पंच सहँस५०००को दिय पटा, नगर मोठसम१० सत्थ ॥३७॥
बुल्लि सिवाईसिंह११ भट, अमर कबंधज ताहि ॥
पंचसहँस ५००० को दिय पटा, चंद्रवाट११पुर चाहि ॥ ३८॥
पंचोली माथुर प्रथम, मयाराम१२ कायत्थ ॥
दिपउ गाम बहु द्रव्य जुत, सह सिरुपाव समत्थ ॥ ३९ ॥
पटा स्याम धात्रेय१३ हित, दै मिति तीन हजार३००० ॥
तारागढ निज दुग्गको, किन्न सु किल्लादार ॥ ४० ॥
भट्टू चारन दान१४ हित, संभर प्रीति प्रकासि ॥
सहँस पंच५०००के ग्राम दिय, ठीकरिया१बरवासि२ ॥४१॥
स्वीय भट्ट जगराम सुत, बुल्लि भवानी१५राम ॥
मुद्रा दोय हजार२००० मित, दयो सहँसपुर गाम ॥ ४२ ॥
इत्यादिक सब सेवकन, दै धन धाम उदार ॥
करन बिदा मल्लारकौं, बलि किय चित्त बिचार ॥ ४३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे पुरोधः १ सम्प्रदायगुरु २ मल्लार ३ माधव ४ आदि रावराणामाङ्गल्यतिलकाऽऽदिकरणंहड्डेन्द्रहरि १ कुलदेवी २ पूजन पूर्वकविहितप्रासादप्रवेशनहुलकर १ कूर्म्म २ प्रभृतिगज १ हय २ भूषण ३ बस्त्र ४ ऽऽदिनिवेदनतत्स्वस्वशिविरप्रेषणसर्वसम्भोजन

॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में, उम्मेदसिंह चरित्र में पुरोहित और संप्रदाय गुरु, मल्लार, माधवसिंह आदि का रावराजा के मांगलिक तिलक आदि करना १ हड्डेन्द्र का विष्णु और कुलदेवी का पूजन आदि करके उचित महल में जाकर हुलकर और माधवसिंह कछवाहा आदि

गज १ हय२ भूषण३ वस्त्रा ४ ऽऽदिससैन्यमल्लारसत्करणासमान्त-रामानुजसम्प्रदायव्यवहारमुद्राऽऽदिश्रीरंगाऽभिख्योल्लेखनपूर्वपुरुषदत्तसमर्पणास्वपाङ्किरसुभट१सुसचिव२सुभृत्या ३ ऽऽदिमेदिनीमुखवितरणतन्मननमेकोनत्रिंशो २९ मयूखः ॥ २९ ॥ ॥ ३१० ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इहिँ अंतर मरुपति अनुज, बखतसिंह छक छाय ॥
दिल्ली सन लहि जवन दल, अग्रज दब्बन आय ॥ १ ॥
अभयसिंह आतुर तबहिँ, पठये बुंदिय पत्र ॥
संभरँ सहित सहायकोँ, आवहु हुलकर अत्र ॥ २ ॥
हुलकर हड्ड नरेस प्रति, अक्खिय पत्र उदंत ॥
सुनि बुंदिय धव सज्ज हुव, सह मलार हुलसंत ॥ ३ ॥
जननिन१ रानिन२ हू तिहिँत, दिन्नैँ कटक पठाय ॥
गंगराह१ कोटानगर२, बंसवहाल३ भनाय४ ॥ ४ ॥
सज्जि अप्प हुलकर सहित, किय बुंदिय सन कुच्च ॥
मरुपतिसोँ सत्वर मिलो, उभय२ करन जय उच्च ॥ ५ ॥
रामपुर सु माधव गयो, बुंदियतैँ इहिँ बेर ॥
ए दुव२ मरुपति भीर इम, आये पुर अजमेर ॥ ६ ॥

का हाथी, घोड़े, आभूषण, वस्त्र आदि नजर करना २ उनको अपने अपने डेरों में भेजकर सबको भोजन कराना ३ हाथी, घोड़े, भूषण, वस्त्र आदि से सेना सहित मल्लार का सत्कार करना ४ रामानुज संप्रदाय को ग्रहण करके व्यवहार की छाप में श्रीरंग का नाम लिखाना ५ अपने पुरुषाओं के दान को देकर अपनी परगह के उमरावों, श्रेष्ठ कामदार, श्रेष्ठ सेवक आदि को भूमि आदि देने के स्मरण कराने का उनतीसवां २९ मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीनसौ दश ३१० मयूख हुए ॥

१ मारवाड़ के पति (अभयसिंह) का छोटा भाई २ दिल्ली से ३ बड़े भाई को दबाने आया ॥ १ ॥ ४ चहुवाण उम्मेदसिंह सहित ॥ २ ॥ ५ पत्र का वृत्तान्त कहा ६ पति ॥ ३ ॥ ७ उनको बुलाने को सेना भेजी ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

बखतसिंह सम्मुह बहुरि, तीन३न किन्न प्रयान ॥
रक्खि निकट१ पर दल दयो, संभर नगर मिलान२ ॥ ७ ॥
तँहँ हुलकर कछु रीति कहि, रट्ठोरन समुझाय ॥
अग्रज१कौं अरु अनुज२कौं दिन्नों साम३ कराय ॥ ८ ॥
दूजेर दिन इक बत्त हुव, बुंदिय कटकविहान४ ॥
सुपहु राम दिज्जे श्रवन, नय मति धर्म निधान ॥ ९ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

अग्गँ इक१ संकरगढ स्वामी, बुंदिय भट रानाउत नामी ॥
तिहि सिवसिंह मंडि रन राउत, बक्कर५ पुर पैं हन्यौं कन्हाउत६ ।१०।
सो सिवसिंह हुतो नृप सत्थहि, अरिसुत राजसिंह गय तत्थहि ॥
करत प्रात संध्या बुंदियपति, सिवसिंह सु निजनाथ रक्खि रति ॥ ११ ॥
डेरासन संभर ढिग आवत, राजसिंह वह मिल्यो रिसावत ॥
हनि सिवसिंहहिँ तुरक झारि खल, गो भजि राजसिंह मारवदल८ ।१२।
साहिपुराधिप अनुज सहोदर, हो सिरदारसिंह मरुपति भर ॥
कन्हाउत तस सरन गह्यो तब, यह उदंत बुंदीस सुन्यौं अब ।१३।

॥ दोहा ॥

उट्ठि उघारे देह नृप, संध्या तजि गहि संगि ॥
हय आरोहि हंक्यो अनहु, अंग पर११ इंद उमंगि ॥ १४ ॥
चलन लगे भट संग निज, तिनकौं सपथ दिवाय ॥
अप्प पटी दै अश्वकौं, लिय कन्हाउत जाय ॥ १५ ॥
सत्थ सहित पिक्खतरह्यो, रानाउत सिरदार ॥
राजसिंह कन्हाउत सु, मार्‌यो संभरवार ॥ १६ ॥

---

१ शत्रु की सेना को समीप रख कर २ सांभर में मुकाम किया ॥ ७ ॥ ३ मिलाप ॥ ८ ॥ ४ प्रभात समय ॥ ९ ॥ ५ वाकरां नामक पुर के पति ६ कान्हावत शाखा के शीषोदिया क्षत्रिय को ॥ १० ॥ ११ ॥ ७ उम्मेदसिंह के पास ८ मारवाड़ की सेना में ॥ १२ ॥ ९ शाहपुरा के पति उम्मेदसिंह का छोटा सगा भाई १० मारवाड़ के पति का उमराव ॥ १३ ॥ ११ पर्वत पर ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥

इम रिपु हनि बरछी चुवत, आयो पुनि निज ऐन ॥
रह्यो लखत रट्ठोरको, चित्र लिख्योसो सैन ॥ १७॥

॥ षट्पात् ॥

यह कराल उद्घोष[1] उठ्यो पृतना[2] त्रय३ अंतर ॥
दुव२ दिस दुंदुभि बज्जि भीरु गण भज्जि दिगंतर ॥
हह्व१ कबंधर२न हयन जंग पक्खर जब डारिय ॥
सुनि हुल्लकर यह सोर भयो उपदेसक भारिय ॥
नृप अभयसिंह१ उम्मेद १ नृप समुझाये दुव२नीति सन ॥
कहि देसकाल आगम कलित किपउ साम करि हित कथन१८

॥ दोहा ॥

तदनंतर दक्खिन गयउ, रचि दरकुंच मलार ॥
निज पत्तन बुंदिय तरफ, आयउ संभरवार ॥ १९ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

हरदाउत नाहर मग अनर, महिमानी मंडिय बिधिसौं वर ॥
नगर पग्गरा थंभि नृपति तब, जिम्मि गोठि आयउ बुंदिय अब २०
माघ वलच्छ पच्छ जय मत्तो, दक्खिन द्वार होय पुर पत्तो ॥
घर घर मंगल गान भयो घन, लग्गे लोग बधाई बंटन ॥ २१ ॥
पिच्छैं सन जननी दुव२ आई, पतनी तीन३ सुहाग सुहाई ॥
यह रानिन पतिकी हित आवैरि, किन्नी बिधिजुत नजरि निछावरि२२
अब उमेद नृप नीति जमाई, गई प्रजा सु बुलाय बसाई ॥
मैनन तेंप उपद्रव मेटिय, बारह१२ खेट दबाय स्ववस किय ॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥१७॥ १भयंकर हाक२तीनों सेनाओं में३विदित ॥१८॥ ४ चहुवाण (उम्मेदसिंह) "हम ऊपर लिख आये हैं कि प्राचीन समय में सांभर नगर में राज्य करने के कारण चहुवाणों को संभर, संभरी, संभरीक, संभरेश, संभरिया, संभरवार, संभरवाल आदि कहते हैं" ॥ १९ ॥ २० ॥ ५ शुक्लपक्ष ॥ २१ ॥ ६ स्नेह की पंक्ति से ॥ २२ ॥ ७ मैनों का चोरी करने का उपद्रव ८ खेड़े (ग्राम) ॥ २३ ॥

बुंदिय नागर बिप्र इक[1], सरबेश्वर अभिधान ॥
चोरे चोरन दम्म[2] तस, सहँस सत्त ७००० परिमान ॥ २४ ॥
कुतवाल सु बसु[3] चोर जुत, खोज्यो भूपति[4]राम ॥
छन्नैं[5] नृपहिं निवेदयो, छत्रमहल सुख धाम ॥ २५ ॥
सो धन संभर ख्यात करि, सरबेश्वर हित दीन ॥
श्रील[6] सेठ यह नीति लखि, लगे बसन हित लीन ॥ २६ ॥
चोरन१ जारन दुसह दुख, धर्म धरन१ सुख पूर ॥
राज्य बिगारे कितँव[7] जन१, कंपन लग्गे कूर ॥ २७ ॥
जब बुंदिय जयसिंह लिय, कति सठ सेवक[8] तत्थ ॥
रसना[9] रत ग्रासहिं रहिय, न हुव बुंद्ध[10] नृप सत्थ ॥ २८ ॥
ते अब दुद्धर नृपहिं तकि, लूम अराल[11] हलात ॥
भीतैं[12] आप हाजरि भये, बुंदी मंडल[13] ब्रात ॥ २९ ॥
मोरे[14] वृद्ध प्रपितामहहु, मिलि आये तिन माँहिं ॥
कहत सकुचि रविमल्ल[15] कवि, इम[16] सागस[17] हम आँहिं ॥ ३० ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

सुनहु[18] राम महिपाल धर्मधन, स्मृति[19] जाकों वरजत अग्गैं सन ॥
पुरुखनकों अनुचित पद मैं दिय, करहु माफ अपराध यहै किय ३१
हाजरि सब इम वसीभूत हुव, धामचंड[20] उम्मेद लपत[21] धुव ॥
फग्गुन असित माँहिं तदनंतर, कोटा गय उम्मेद धँगावर ॥ ३२ ॥

१नाम २चोरों ने इसके रुपये चोर लिये ॥ २४ ॥ ३ चोर सहित धन को ४ हे राजा रामसिंह ५ राजा की नजर किया ॥ २५ ॥ ६ धनवान् सेठ ॥ २६ ॥ ७ छली मनुष्य ॥ २७ ॥ ८ तहां कितने ही मूर्ख सेवक ९ जिव्हा में ग्रास की प्रीति करके १० राजा बुधसिंह की साथ नहीं हुए ॥ २८ ॥ ११ बांकी (टेढ़ी) पूँछ को हिलाते हुए १२ भय से १३ कुत्तों के समूह बुन्दी में आकर हाजर हुए ॥ २९ ॥ ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) कहते हैं कि १४ मेरे १५ सूर्यमल्ल कवि कहते शरमाता है १६ इस कारण हम अपराध युक्त१७ हैं ॥ ३० ॥ १८ हे राजा रामसिंह १९ धर्मशास्त्र ॥ ३१ ॥ २० सूर्य २१ भूपति ॥ ३२ ॥

महाराव सन मिलि हित किन्नों, बहुरि आप बुंदिय रस लिन्नों ॥
दुज्जनसल्ल सु कुहक असूई, बुंदिय लेत परयो दुख कूई ॥ ३३ ॥
जानी इन अक्खी सुहि किन्नी, जैपुर दक्खिन गहमि निज छिन्नी॥
अब उमेद बुंदिय भुग्गें नन, औसे मंत्र रचहि मिलि अप्पन ॥३४॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशावुम्मेदसिंहचरित्रेसहायीकृतदिल्लीसैन्यज्यायोजयनिनीषुकबन्धवखतसिंहाऽऽगमनतन्निरोधार्थधन्वेशाऽभयसिंहाऽऽहूतहड्ड १ हुल्लकराजमेरगमनमल्लारवखतसिंहनिवारणाशातितसम्भरेशसुभटशंकरगढस्वामिशीषोदिशिवसिंहवप्तृवैरोजिघांसुवर्करपतिकन्हाउत्तराजसिंहधन्वध्वजिनीशरणसम्पादश्रुतशात्रवसमात्तशक्त्येकाकिबुन्दीन्द्रतन्मारणाशमितैतद्वाहिनीद्वय २ विरोधहुल्लकरदाक्षिणागमनराराजनिजपुरप्रविशनचौराद्युपद्रवाऽपाकरणाप्रस्थितप्रजाप्रत्यागमनप्रित्तितमहारावपुनःप्रभुबुन्दीप्रविशनकोटेशकौहकप्रकलनं त्रिंशो ३० मयूखः ॥ ३० ॥ आदितः ॥ ३११ ॥

१ठग २ असूया करनेवाला "गुणेन दोषारोपोऽसूया" अथवा "परगुणेषु दोषाविष्कारः" दूसरे के किये गुण में दोष लगाने को असूया कहते हैं ३ दुःख के कुए में गिरा ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह चरित्र में दिल्ली की सेना को सहायक करके बड़े भाई को जीतने की इच्छावाले राठोड़ बखतसिंह का आना १ उस को रोकने के अर्थ मारवाड़ के पति अभयसिंह के बुलाने से हाडा (उम्मेदसिंह) और हुलकर का अजमेर जाना और मल्लार का बखतसिंह को मना करना २ चहुवाणों के पति के उमराव शंकरगढ के स्वामी सीसोदिया शिवसिंह को पिता के वैर की इच्छा से मारनेवाले थाकर के पति कान्हावत राजसिंह का मारवाड़ की सेना की शरण लेना सुनकर शत्रु को वश में करके शक्ति से अकेले बुन्दीश का उसको मारना ३ इन दोनों सेनाओं के विरोध को मिटा कर हुलकर का दक्षिण में जाना ४ रावराजा को अपने पुर में प्रवेश करके चोरों के उपद्रव को मिटाना और गई हुई प्रजा का पीछा आना ५ महाराव से मिलकर फिर प्रभु (उम्मेदसिंह) का बुन्दी में आना और कोटा के पति की इन्द्रजाल की गणना का तीसवां ३० मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीन सौ ग्यारह ३११ मयूख हुए ॥

॥ गीर्व्वाणभाषा ॥ इंद्रवंशा ॥

एवं समालोच्य सधीसखैस्समं कोटेश्वरः सज्जनशल्यभूपतिः ॥
दालेलिकृष्णं प्रति नैनवास्थितं प्रीतिच्छदम्प्रेषितवान्स्वदोर्लिखिम् ॥१॥
तस्मिन्सुदन्तन्नधमेन लेखितं कूर्म्मादयोऽनूनरहस्यकोविदाः ॥
भो रावराजेन्द्र तवाऽभिषेचनं कर्त्तुं समुद्युक्तधियो वयं स्थिताः ॥२॥
श्रीमन्तनन्हाऽह्वकुमारिकेश्वरं घोराभिसम्पातशताङ्गधूर्वहम् ॥
कार्य्ये पुरस्कृत्य कृपाणपाणयः श्रेयो गमिष्याम उपायपद्धताः ॥३॥
सन्नह्य सेनां मदवन्मतङ्गजामुत्फुल्लसत्प्रोथलसत्तुरङ्गमाम् ॥
राणाजिसंध्यासुतदण्डनायकां धूल्युत्करांतर्हितकञ्जबान्धवाम् ॥४॥
आकर्णमाकर्षितकाण्डकार्मुकांऽविस्फारसन्त्रस्तसपत्नसञ्चयाम् ॥५॥
आनद्धकान्तायसवर्मबाहुलां चाकचक्यचञ्चन्द्रकचन्द्रकाञ्चलाम् ॥
सन्देशहारोक्तिगृहीतनिश्चयां विख्यातयानाऽऽसनद्वैसन्धिश्रविग्र-
हाम् ॥६॥

इस प्रकार मंत्रियों के साथ विचार करके कोटा के पति सज्जनों के शाल रूप राजा ने "कोटा के महाराव का नाम दुर्जनशाल था परन्तु उम्मेदसिंह के विरुद्ध कार्य करने से कवि ने सज्जनशल्य लिखा है" नैणवा नगर में स्थित दलेलसिंह के पुत्र कृष्णसिंह को अपने हाथ का लिखा प्रीति पत्र भेजा ॥ १ ॥ उस अधम ने उस में वृत्तान्त लिखा कि हे रावराजेन्द्र तुम्हारे अभिषेक करने में कछवाहा आदि सब पूर्ण गुप्त भेद जाननेवाले हम, अच्छे प्रकार से दत्तचित्त होकर स्थित हैं॥२॥ कन्याकुमारिका क्षेत्र के पति नन्ह नामवाले श्रीमन्त को, कि जो भयंकर प्रहारोंवाले युद्ध रूप रथ की धुरा को धारण करनेवाला है कार्य में आगे करके, हाथ में तरवारें धारण करके उपाय से कल्याण को प्राप्त होवेंगे ॥ ३ ॥ मस्त हाथियोंवाली और फूलेहुए फुरनों (नासिका) वाले उत्तम घोड़ों वाली सेना को सजकर, कि जिसमें सिंधिया का पुत्र राणोजि सेनापति है और जिसने धूलि के समूह से सूर्य को ढकदिया है ॥ ४ ॥ धनुष को कान तक खींचकर टंकार करने से भयभीत किया है शत्रुओं के समूह को जिसने फौलाद के कवच और दस्ताना बांधे सुवर्ण के चकाचौंधी देनेवाले चंद्रमा युक्त ढालोंवाली ॥ ५ ॥ हलकारों के कथन से निश्चय करनेवाली प्रसिद्ध यान, आसन, संधि, विग्रह, द्वैध और आश्रय इन नीति के छहों गुणों के विशाल

द्वैधा५ऽऽश्वयो५ल्लवासविलासवैभवां सङ्ग्रामवित्सादि१ निषादि २ सौभगाम् ॥६॥
शौराडीर्यसन्दानितशूरशात्रवां प्राप्ताष्टक्षीणाविविक्तमन्त्रणाम् ॥
प्रेंखोलदुच्चूलितवैजयन्तिकां धाराश्यपोद्धूतसमस्तसागराम् ॥ ७ ॥
शाक्तीक१याष्टीक२विनोदबन्धुरां नैस्त्रिंशिक ३ प्रासिक४धान्वि५दु-ईराम् ॥
मोहराडदुस्फोट१कुठार२पट्टिशां३जेष्याम उम्मेद१मलार२यामलाम् ॥ ८ ॥ इतिकुलकम् ॥
तूर्णं व्यतीत्येषदहर्गणान्वयं निर्जित्य संख्ये बुधसिंहजाऽन्वयम् ॥
दास्याम उन्माजितसर्वकण्टकं बुन्द्याऽऽधिपत्यं भवते निरंकुशम् ॥९॥
ईर्ष्यापरः सालमनप्तरि च्छदं क्षिप्रं लिखित्वेति सभीमनन्दनः ॥
श्रीमन्तमन्त्रिण्यथ रामचन्द्रकेऽलेखीद्वितीयं दलमात्तकिल्विषः १०

॥ अनुष्टुब्युग्मविपुला ॥

पुण्येशाऽमात्ययोर्बाढं रामचन्द्र१मल्लार२योः ॥

वैभववाली और युद्ध को जाननेवाले घोड़ों के सवार और हाथियों के सवारों के ऐश्वर्यवाली ॥ ६ ॥ पराक्रम से वीर शत्रुओं के समूह का बांधनेवाली तीसरे के कान में सलाह को नहीं जाने देनेवाली कंपित वस्त्र की ध्वजावाली (विजय करनेवाली सेना का झंडा ही खुला रहता है) और अपने प्रवाह के वेग से समुद्रों को कंपायमान करनेवाली ॥ ७ ॥ बरछी और लाठी से लड़नेवालों से सुंदर, तरवार, भाला और धनुष धारण करनेवालों से दुस्तर और उग्र घाव करनेवाले कुठार और कटारियोंवाली, ऐसी सेना से उम्मेदसिंह और मल्लार दोनों को जीतेंगे ॥ ८ ॥ थोड़े मास बिनाकर शीघ्र युद्ध में बुधसिंह के वंश और इनकी उपासना करनेवालों (सम्बन्धियों) को जीतकर सब कांटे उखेड़ कर अंकुश रहित बुन्दी का स्वामीपन आपको देवेंगे ॥ ९ ॥ ईर्षा में तत्पर होकर सालमसिंह के पोते को ऐसा पत्र शीघ्र लिखकर उस पाप को ग्रहण करनेवाले भीमसिंह के पुत्र ने इसके आगे श्रीमन्त के मन्त्री रामचन्द्र को दूसरा पत्र लिखा ॥ १० ॥ पूना के स्वामी के मंत्रि रामचन्द्र और मल्लार में जैसे एक हथनी पर दो हाथियों के विरोध होवै तैसे पहिले इन दोनों

अजायत पुरा वैरं करेणवासिभयोर्यथा ॥ ११ ॥
तदालोच्य महारावः पूर्वस्मिन्नलिखद्दलम् ॥
निन्द्यं कृतं मल्लारेणार्पितोम्मेदाय बुन्दिका ॥ १२ ॥
भवेद्यदि मदायत्ता तदायत्ता वयं तव ॥
कूर्माद्यखिलराजानः स्यामाऽऽज्ञाकारिणो वयम् ॥१३॥
एतच्छ्रुत्वा दलोदन्तं कोटाऽधीश्वरलेखितम् ॥
लिलेख नन्हमन्त्रीत्थं रामचन्द्रस्तदुत्तरम् ॥ १४ ॥
आत्मनोऽयं स्वतन्त्रत्वं पज्जः ख्यापयितुं ननु ॥
अयुक्तमकरोन्नीचैर्मल्लारो मातृशासितः ॥ १५ ॥
न भोक्तुमुचितो बुन्द्याः स्कन्धवारम्मनोरमम् ॥
देवानांप्रिय उम्मेदस्सिंहानाम्भोग्यमस्थिभुक् ॥ १६ ॥
उदयद्रङ्गपृथ्वीभुग्जगात्सिंहमतं ठिवना ॥
कार्येऽस्मिन्नाऽस्मदादीनां श्रीमंतोऽनुसरेद्वचः ॥ १७ ॥
राणेश्वरविभित्सुस्त्वं नन्हे लेखय तद्दलम् ॥
बुन्द्यां कोटेडधीनायां प्रीताः स्म इति सत्वरम् ॥ १८ ॥

में हुआ ॥ ११ ॥ इस बात को विचार कर महाराव ने पहिले (रामचंद्र) को पत्र लिखा कि उम्मेदसिंह को बुन्दी देने का कार्य मल्लार ने निन्दा के योग्य किया है ॥ १२ ॥ वह बुन्दी जो मेरे आधीन होवे तो कछवाहे आदि हम सब राजा निश्चय ही तुम्हारे आज्ञाकारी होकर तुम्हारे आधीन होवें ॥ १३ ॥ कोटा के पति के लिखेहुए इस पत्र के वृत्तान्त को सुनकर नन्ह के मंत्रि रामचन्द्र ने उस का उत्तर इसप्रकार लिखा ॥ १४ ॥ उस नीच मूर्ख और शूद्र मल्लार ने अपनी स्वतंत्रता प्रसिद्ध करने को निश्चय ही यह कार्य अयोग्य किया है ॥ १५ ॥ जैसे सिंहों के भोगने योग्य को कुत्ता भोगने योग्य नहीं होता तैसे रमणीय राजधानी बुन्दी को भोगने योग्य मूर्ख उम्मेदसिंह नहीं है ॥ १६ ॥ उदयपुर की पृथ्वी को भोगनेवाले राणा जगतसिंह की सलाह के बिना इस कार्य में हम लोगों के वचन श्रीमन्त (नन्ह) नहीं मानेगा ॥ १७ ॥ महाराणा को भेदने (फोड़ने) की इच्छावाले तुम वह पत्र नन्ह के नाम लिखाओ कि यह बुन्दी कोटा के पति के शीघ्र आधीन होने में हम प्रसन्न हैं ॥ १८ ॥ श्रीपाद के पत्र के और

शीर्षोद्वर्णादूतेनाऽस्मत्साकं सम्मतेन च ॥
करिष्यत्येव पुरापेशो बुन्दीन्दौर्जनशल्पकीम् ॥ १९ ॥
वर्णादूतं विदित्वैवं रामचंद्रेण चालितम् ॥
राणादीन् सम्मते नेतुं तच्चक्रे भैमिरुद्यमम् ॥ २० ॥

॥ उपजातिः ॥

इतस्स बुन्दीपतिरात्तधर्मा चाणक्य१कामन्दक२वाक्यवर्मा ॥
शर्माऽऽश्रयोऽर्थिव्रजदत्तभर्मा स्वाध्यायसाध्याऽयसहायकर्मा ॥ २१
वृद्धश्रवा१ सन्बलगोत्रपालस्तथा तपस्तच्चतयाऽनुपेतः ॥
अशीर्णपादो ह्यपि धर्मराजो२ राजा३पि दोषाकरताविहीनः ॥ २२
श्रीदो४पखर्वः सबलो५ऽपि सौम्यः शिवो६ऽविरूपाक्षपुराऽत्वरत्रः ।

हमारी सलाह से पूना के स्वामी बुन्दी का निश्चय ही दुर्जनशाल की (तुम्हारी) करेंगे ॥ १९ ॥ ऐसे रामचन्द्र के भेजेहुए पत्र को जानकर भीमसिंह के पुत्र ने महाराणा आदि को अपने पक्ष में लाने का वह उद्यम किया ॥ २० ॥ इधर वह बुन्दी का पति (उम्मेदसिंह) धर्म को ग्रहण करनेवाला, चाणक्य और कामन्दक के वचन रूपी कवच वाला, ब्राह्मणों के आश्रयवाला और याचकों के समूह को सुवर्ण देनेवाला, वेद और पुराणों के पठन पाठन मे सिद्ध होनेवाली शुभदायी विधि की सहायता से कर्म करनेवाला ॥ २१ ॥ और वृद्धों की सुननेवाला (इन्द्र) होने पर भी बल और गोत्र का पालन करनेवाला था, यहां बल और गोत्र शब्दों में श्लेष है, अर्थात् इन्द्र पक्ष में बल (दैत्य) और गोत्र (पर्वत) इन का यह भेदन करनेवाला है और बुन्दीन्द्र के पक्ष में बल (सेना) और गोत्र (कुटुंब अथवा जाति समूह) जिनकी यह पालना करनेवाला है और इसीप्रकार तप को काटने से अनुपेत [युक्त नहीं] है, अर्थात् तप करनेवाला है और यह इन्द्र तपस्वियों के तप को काटनेवाला है. अशीर्णपाद होकर भी धर्मराज है अर्थात् धर्म के चरण तो युग युग प्रति क्षय होते जाते हैं और इनके चरण अक्षय हैं और राजा होने पर भी दोपाकर अर्थात् दोषों की खान नहीं है राजा नाम चन्द्रमा का है सो दोषाकर अर्थात् रात्रि को करनेवाला है ॥ २२ ॥ कुबेर होने पर भी निधि रहित है अर्थात् कुबेर तो लक्ष्मी का संचय करनेवाला है और यह उडानेवाला है कुबेर पक्ष में खर्व निधि और राजा पक्ष में खर्व छोटे मनवाला अर्थात् कृपण, बलवान् होने पर भी सौम्य है, शिव होकर भी

अभीष्टमेनो७ऽपि निरस्तजाड्यो दरन्न भेजे पुरुषोत्तमोपि॥ २३ ॥
अनूनबाणः कमनो९ऽपि साङ्गः सत्यप्रियो भास्वदलीकशाली १०॥
यद्यप्युदारो दृढमुष्टिदण्डो११ विरोचनो१२ऽप्यश्वदनन्तसप्तिः ॥ २४ ॥
अनेकदंशोपि सपर्शुपाणिः सत्स्वर्णकायो१४ऽपि न चक्रिशत्रुः ॥
अनाश्रयाशः शुचि१५रेव साक्षादजिह्मगो भूमिभुजङ्गभोगी१६॥२५॥
प्रचण्डसद्दण्डजितारिपक्षः षाड्गुण्य२शक्तित्रय३तत्वदक्षः ॥

विरूपाक्ष [क्रूर दृष्टिवाला] नहीं है तीन नेत्र होने से शिव का नाम विरूपाक्ष है और पुर तथा यज्ञ की रक्षा करनेवाला है [शिव त्रिपुर के और दक्ष के यज्ञ के नाश करनेवाले हैं] अभीष्टमेन होने पर भी मूर्खता नहीं है अर्थात् इच्छानुसार माननेवाला मूर्ख होता है और यह इष्ट को माननेवाला बुद्धिमान् है पुरुषोत्तम होने पर भी दर का सेवन नहीं करता है. "पुरुषोत्तम" श्रीकृष्ण के पक्ष में दर [शंख] और पुरुषों में उत्तम उम्मेदसिंह के पक्ष में दर [भय] वाची है ॥ २३ ॥ कामदेव होकर भी अनून [बहुत] बाणोंवाला और अङ्ग सहित है. [कामदेव पंच बाणवाला और अंग रहित है. सत्यप्रिय होकर भी भासनशील [श्रेष्ठ वक्ता] है और उधर युधिष्ठिर सत्यप्रिय होने पर भी अश्वत्थामा के वध के अर्थ झूठ बोलनेवाला था अथवा अप्रिय वक्ता था. उदार होने पर भी दंड देने में दृढमुष्टि (कृपण) है सूर्य होकर भी उत्तम अनेक घोड़ों वाला है (सूर्य केवल सात घोड़ोंवाला ही है) ॥ २४॥ पर्शुपाणि होकर भी अनेक कवचधारियों (क्षत्रियों) वाला है पर्शुपाणि अर्थात् परशुराम तो क्षत्रियों का नाश करनेवाला था और यह परसी (शस्त्र विशेष) हाथ में रखनेवाला होकर भी क्षत्रियों को रखनेवाला है स्वर्णकाय होकर भी चक्री का शत्रु नहीं है अर्थात् स्वर्णकाय गरुड़] तो चक्री [सर्प] का शत्रु है और उम्मेदसिंह स्वर्ण सदृश शरीरवाला होकर चक्री [विष्णु] का शत्रु नहीं है शुचि होकर भी आश्रय का नाश करनेवाला नहीं है अर्थात् शुचि [अग्नि] तो आश्रय का नाश करता हैं और यह शुचि [पवित्र] आश्रय की रक्षा करता है भोगी होने पर भी अजिह्म (सरल) है अर्थात सर्प भूमि का पति नहीं होने पर भी वक्रगति [टेढा चलनेवाला है और यह सीधा होने पर भी भूमि रूपी वेश्या को भोगनेवाला पति है [वेश्या के पति का नाम भुजंग है] ॥ २५ ॥ शास्त्र विहित उचित भयंकर दंड से शत्रु पक्ष को जीतने वाला सन्धि विग्रहादि छहों गुण और प्रभुशक्ति, मंत्र शक्ति, उत्साह शक्ति इन तीनों शक्तियों के मर्म में निपुण, अपराध करनेवाले दुष्टों

कृतापराधान्विनियम्य दुष्टान् राज्यं चकारापरकार्त्तवीर्यः ॥ २६ ॥
व्यतीत्य वीरः शिशिरं१ वसंतं२ तथैव चोष्णोपगमं३ गुणज्ञः ॥
प्राप्तासु वर्षासु४ परोपकारी व्यधत्त बुन्द्यां विविधान्विनोदान् ॥ २७ ॥
अनोकुहांकुरितैस्तृणौघैस्तत्राडशैलो रुचिरो बभूव ॥
जाताः समस्ता हरिता हरित्काः शृंगारशालिन्यवनी रराज ॥ २८ ॥
अलंकृतोदग्दिगुदारधारा कादम्बिनीकालहरित्कडारा ॥
ववर्ष वातोच्छलदम्बुवारानल्पकल्पप्रकटप्रसारा ॥ २९ ॥
चिरापभूविरहोपघाती पानीयपानीयपुरःप्रपाती ॥
तापं तडित्वांस्तपनस्य तर्ज्जन्नप्लावयद्भूमिमतीव गर्ज्जन् ॥ ३० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे सहायीभूतमहारावनयनपुरबुंद्युद्धरणपत्रप्रेषणादालालिकृष्णाऽनुनयनतदनुमल्लारस्पर्द्धिरामचंद्रोपयोगिकरणप्राप्ततत्पत्रराणाऽऽदिसम्मेलनोद्यमनबुंदींद्रवर्षर्तुविनोदाविहरणमेकत्रिंशो मयूखः

को विशेषता से दमन करके मानों दूसरे कार्तवीर्य ने राज्य किया ॥ २६ ॥ उस वीर ने शिशिर, वसन्त और उसीप्रकार निश्चय ही ग्रीष्म को बिताकर परोपकारी वर्षा के प्राप्त होने पर गुणों को जाननेवाले उस [उम्मेदसिंह] ने बुन्दी में नाना प्रकार के विलास किये ॥ २७ ॥ तहां वृक्षों के अंकुरों से और तृणों के समूहों से आडावला नामक पर्वत मनोहर हुआ सब दिशा हरी होकर शृंगार युक्त भूमि शोभायमान हुई ॥ २८ ॥ जिसने उत्तर दिशा को भूषित की है ऐसी काले, हरे और पीले रंग की और पवन से उछलते हुए जल के समूहवाली प्रलय के समान अधिक है प्रत्यक्ष विस्तार जिसका ऐसी उदार धारावाली मेघमाला वर्षी ॥ २९ ॥ बहुत समय से पृथ्वी पर उत्पन्न होनेवाले विरह का नाश करनेवाले आगे आगे अत्यन्त पानी गिरानेवाले, ग्रीष्म के संताप को डरानेवाले मेघ ने बहुत गर्जना करके भूमि को डुबाई ॥ ३० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में, उम्मेदसिंह चरित्र में महाराव का सहायक होकर नैणवापुर में बुन्दी दिलाने का पत्र भेजकर दलेलसिंह के पुत्र कृष्णसिंह से प्रार्थना करना १ जिस पीछे मल्हार की बराबरी करनेवाले रामचन्द्र को उपयोगी करना और उसका पत्र पाकर राणा आदि को मिलाने का उपाय करना २ बुन्दीन्द्र का वर्षा ऋतु में विनोद पूर्वक

॥ ३१ ॥   आदितः ॥ ३१२ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इम पाउस आगम उदित, अतुल अंब्भ[1] आसार ॥
अंकूरन भुव[2] अच्छदिय, किय पूरन कासार[3] ॥ १ ॥
यँहँ अग्गैं गुनगोरि दिन, होतो उच्छव पूर ॥
बुद्ध[4] सहोदर जोधके, बूडत वह हुव दूर ॥ २ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

अथ सावन अवदात[6] तीज[5] दिन, उच्छव किय विख्यात हड्डु इन ॥
रानीजनन सुघाट सुहाई, पारवती प्रतिमा बनवाई ॥ ३ ॥
बहुविधि भूखन बसन बनाये, प्रीति उपेत[9] ताहि पहिराये ॥
दै पट्टु संग अलंकृत[10] दासी, नाम तीज वह प्रकट निकासी ॥ ४ ॥
गई जैतसागर तड़ाग[11] तट, भूपहु पत्त[12] तत्त सब लै भट ॥
इक्क ओर देवी संसद[13] जँहँ, भूप सभा इक ओर बनी तँहँ ॥ ५ ॥
वारसुंदरिन[14] नटन बनायो, अतुल मेघ[15] आलाप उठायो ॥
बीति तँहँ घटिका दोपर बिताई, पुनि[16] महलन पधराई ॥ ६ ॥
तदनु नरेस सेवकन हित हिय, मादक[17] वस्तु मद्य[18] बिनु बंटिय ॥
त्योंहीं कुसुमन[19] हार किलंगी, सोभित अतर पान तिन संगी ॥ ७ ॥
दै इम सबन चढ्यो बुंदीपति, आयो महलन मन प्रसन्न अति ॥

विहार वर्णन का इकतीसवां ३१ मयूख समाप्त हुआ और आदिसे तीनसौ बारह ३१२ मयूख हुए ॥

१ मेघधारा से २ भूमि को छाई ३ तलाव ॥ १ ॥ ४ बुधसिंह के सगे छोटे भाई ५ जोधसिंह के डूबने से गुनगोरि का उत्सव मिटगया ॥ २ ॥ ६ शुक्लपक्ष की ७ हाडा क्षत्रियों के पति ने ८ श्रेष्ठ डौल (आकृति) की ॥ ३ ॥ ९ सहित १० भूषणों से युक्त ॥ ४ ॥ ११ तलाव के किनारे १२ तहां प्राप्त हुआ १३ देवी की सभा ॥ ५ ॥ १४ वेश्याओं ने नृत्य किया १५ तुलना रहित मेघराग का १६ पुनि ॥ ६ ॥ १७ नशे की वस्तु १८ बिना मद्य (दारू) के बुन्दी के राजाओं में वर्तमान महाराव रघुवरसिंह के सिवाय केवल बुधसिंह ने ही मद्य पिया था १९ फूलों के ॥ ७ ॥

दूजे दिनहु यहै बिधि ठानी, पच्छे चढत परयो घन[1] पानी ॥ ८ ॥
पहुँच्यो निठि निजालय[2] संभर, फुट्टि तड़ाग[3] चल्यो इहिं अंतर ॥
विक्रम सक खट नभ बसु बसुमति१८०६, अतुल बिरांव[4] अचानक भो अति ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

सावन बिसद चउत्थि४ तिथि, रत्ति घटिय दुव२ जात ॥
जल न जैतसागर झिल्यो, उडिय सेतु अररात[5] ॥ १० ॥

॥ षट्पात् ॥

अति जँव[6] फुट्टिय सेतु[7] मनहुँ तोपन गन छुट्टिय ॥
के लग्गत[8] सतकोटि कूट पब्बय जनु तुट्टिय ॥
बुरजन[9] ओज उडाय फोरि कोसन फटकारे ॥
मगबिच[10] बिटप मिले सु हीन[11] बल्कल करि डारे ॥
निम्न[12]हु निवान मुंदिय सकल बिकल नक्क[13] रुकि रुकि रहैं ॥
प्राकार[14] पृथुल अटकैं न जल तो पत्तन[15] बहु जन बहैं ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

इम फुट्टत सर सेतुको, सुन्यों अचानक स्वान[16] ॥
कछुक काल अचिरज रह्यो, पुनि किय सबन प्रमान ॥ १२ ॥
प्रात ताल ऐसो लख्यो, हुव सब बैभव हानि ॥
मानहुँ[17] बनिक धनाढ्य घर, लुट्ट्यो रंकन आनि ॥ १३ ॥
जोधसिंह जिहिं मध्य थित, बूड्यो अग्ग प्रमत्त ॥
जो सब अंग उपांग जुत, कढ्यो तरंडक[18] तत्त ॥ १४ ॥

१ मेघ का तथा अत्यन्त ॥ ८ ॥ २ अपने महल में ३ तालाव फूटा ४ शब्द ॥ ९ ॥ ५ अरड़ाट शब्द करके पाळ तूटी ॥ १० ॥ ६ अत्यन्त वेग से ७ पाळ ८ मानों वज्र लगने से पर्वतों के शिखर तूटे ९ समूह १० मार्ग में जो वृक्ष आये उन्हें त्वचा ११ (छाल) हीन करदिये सब १२ गहरे जलाशयों को १३ मगर १४ बडे कोट से १५ नगर के ॥ ११ ॥ १६ शब्द ॥ १२ ॥ १७ मानों धनवान वनिये के घर को ॥ १३ ॥ १८ नाव ॥ १४ ॥

लिन्नी छुंदिय जानि इत, उदयनैर जगतेस ॥
पठये पत्र उमेद प्रति, लिखि हित विहित[1] बिसेस ॥ १५ ॥
अक्खी हमहु प्रसन्न अति, अब हड्डुन अधिराज ॥
अबहि[2] इहाँ सुन आयहै, टींकाके सब साज ॥ १६ ॥
कोऊ कोबिद[3] सचिव निज, भेजहु सत्वर[4] अत्थ ॥
हिय उपज्यो कछु पुच्छि हम, संसय तजहिं समत्थ ॥ १७ ॥
नृपति पुरोहित मुक्कल्यो, दयाराम सुनि एह ॥
पहुँचि बिप्र तब दुवर नृपन, संध्यो सरस सनेह ॥१८॥
अभयसिंह मरुभूपको, इत आयउ अवसान[5] ॥
निज भट सब बुल्ले निकट, होत कलेवर[6] हान ॥ ॥ १९ ॥
अक्खी अब मम जात अंसु[7], इत सोदर[8] बखतेस ॥
मोछतही होवन लग्यो, अग्गैं[9] धन्व नरेस ॥ २० ॥
सो सठ अब मेरे मरत, नागोरहिं रक्खैं न ॥
मारि बिडारहिं मम सुतहिं, लहहिं जोधपुर ऐंन ॥ २१ ॥
रामसिंह मम पुत्र यह, है कुपुत्र मति हीन ॥
यासौं तुम सब पलटिहो, रहिहो नाँहिं अधीन ॥ २२ ॥
कुल कुठार कंटक यहै, पापी खल पहिचानि ॥
तुमहु कहाँतक रक्खिहो, क्रूर[10] नृपहिं मम कानि[11] ॥ २३ ॥
तातैं जो अबरहि तक्कहु, तो पहिलैं कहि देहु ॥
याहि दिवावहु ईतर[12] कछु, वाँहि[13] जोधपुर एहु ॥ २४ ॥
नहिं तो जो अब इहिं[14] मिलैं, पिच्छैं सोहु मिलैं न ॥
पुच्छन यह बुल्ले[15] तुमहिं, अब मुहि बढत अचैन ॥ २५ ॥

१उचित॥१५॥२शीघ्र ही॥१६॥३चतुर४शीघ्र॥१७॥१८॥५अन्त६शरीर का नाश होते समय॥ १९ ॥ ७ प्राण ८ सगाभाई ९ मेरे होते ही आगे मारवाड़ का पति होने लगा था ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥१०दुष्ट राजा को११मेरी अदब से ॥ २३ ॥१२ इस को कोई अन्य परगना दिला दो१३बखतसिंह को ॥ २४ ॥१४रामसिंह को इस समय मिलता है सो भी पीछे नहीं मिलेगा १५ बुलाये हैं ॥ २५ ॥

मेरतिया उपटंकि इक, दूदाउत रट्ठोर ॥
बुल्ल्यो सुनि रय्याँपुरप[1], सेरसिंह भट मोर[2] ॥ २६ ॥
हम हत्थिन ठिल्लैं सुजन, घल्लैं अद्रिन बत्थ ॥
खंडैं दक्खिन खग्ग बल, मंडैं रन बिनु मत्थ ॥ २७ ॥
तिन जीवत कातर[3] बचन, नन अक्खहु नरनाह ॥
कुलकुठार भवदीय[4] सुत, तदपि करहि निरबाह ॥ २८ ॥
अधम तऊ यह कुमर पै[5], जो यह कन्या होय ॥
सोपैं भुग्गहिं जोधपुर, हम छत त्रास न होय ॥ २९ ॥
यह सुनि नृप बुल्ल्यो बहुरि, इतर[6] भटन सन एस ॥
कैसी भासत सबनकों, अक्खहु मोहि असेस ॥ ३० ॥
चंपाउत रट्ठोर तहँ, नगर आउवा ईस ॥
कुसलसिंह बुल्ल्यो, सुनहु, इक मम धन्व अधीस ॥ ३१ ॥
ऐसी भासत कुमरकी, करिहै नीचन संग ॥
उचितनको आदर घटैं, रंगैं अनुचित रंग ॥ ३२ ॥
सोतो हम सहिहैं रुकैं, पै डेरन परवाय ॥
दुर्दुकारि रु कहैं हमहिं, ततो रह्यो नहिं जाय ॥ ३३ ॥
यह उदंत हुव जोधपुर, सुनहु भूप चहुवान ॥
अभयसिंह तजि तनु तंदनु, कियउ महाप्रस्थान ॥ ३४ ॥
रामसिंह बैठो तखत, कुलहिं कलंकित कार[12] ॥
जानतहे ताकों जगत, वहहि लयो आचार ॥ ३५ ॥
इक ढड्ढी[13] अंत्यज अधम, अमी नाम अघरूप ॥
वह वाँदक[14] कंडोलको, मित्र कियउ मरुभूप[15] ॥ ३६ ॥

---

१ रियांपुर का पति २ मौड़ (मुकुट) ॥ २६ ॥ २७ ॥ ३ कायर वचन ४ आप का पुत्र ॥ २८ ॥ ५ परन्तु ॥ २९ ॥ ६ दूसरे उमरावों से ७ कैसी दीखती है ॥ ३० ॥ ८ हे मारवाड़ के पति ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ९ धिक्कार देकर निकालदेवें तो ॥ ३३ ॥ १० जिस पीछे शरीर छोडकर ११ स्वर्ग गया ॥ ३४ ॥ १२ करनेवाला ॥ ३५ ॥ १३ ढाढी विशेष १४ ढोली १५ मारवाड़ के पति ने ॥ ३६ ॥

भगिनी ताकी भावँती, नाम सुरूपाँ नारि ॥
रानिन पर पटरांगिनी, करि रक्खी गृह डारि ॥ ३७ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

दिन विपरीत जोधपुर केरे, तातैं बिधि ऐसे नृप हेरे ।
सूरिनको सतकार न रक्खैं, सूरन सेन अनुचित जड़ अक्खैं ॥ ३८ ॥
नहिं सचिवन दासन सनमानैं, अरु बालिस नीचन हित आनैं ॥
मरुपति मित्र मृत्यु जब पायो, सुनि टीका मल्लार पठायो ॥ ३९ ॥
गो तिहिं संग मत्त इक वारन, परिघात प्रवल श्रवत मद धारन ॥
अभयसिंह सुत कौतुक आयो, सो गज निज गज संग लरायो ४० ॥
हुलकरके इभतैं निज हारयो, तब सठ मारन ताहि बिचारयो ॥
तोप दगाय हनहु इहिं अक्ख्यो, जग्गू बिप्र विनति कहि रक्ख्यो ॥ ४१ ॥
बखतसिंह नागोर धराधन, निज धात्रि पठई कछु कारन ॥
बुल्लि रु तास बसन उतरापे, बुल्लि धरि सेकिंम छँगल चराये ॥ ४२ ॥
चंपाउत वह कुसल इक दिन, आयउ सभा जानि रामहिं इन ॥
तास पिछि इक दास पठायो, अ[illegible] करि सैन कढायो ॥ ४३ ॥
तू बपु खर्व कह्यो पुनि तासौं, बढै न तव बिक्रम लघु स्वासौं ॥
सो पै दुस्सह कुसलैं रह्यो सहि, अभयसिंह आदेसैं चित्तचहि ॥ ४४ ॥
बहु अनुचित इम अधम बनावैं, कवि लोलाहु कहत अलसावैं ॥
सुनहु राम संभर असुस्वामी, विथरी इम मरुपति बदनामी ॥ ४५ ॥
बखतसिंह सुनि मोद बढावैं, लैन जोधपुर दाव लगावैं ॥

---

१ उसकी बहिन २ रुचिकारक (रूपवती) ३ पटरानी ॥ ३७ ॥ ४ पंडितों का वीरों ५ से ॥ ३८ ॥ ६ मूर्ख ॥ ३९ ॥ ७ हाथी ८ तिरछी घात करनेवाला अथवा पकीहुई उमर का ॥ ४० ॥ ९ अपना हाथी ॥ ४१ ॥ १० नागोर का राजा ११ अपनी धाय को १२ योनि में १३ सूला धरकर १४ उस सूले के पत्ते बकरे को चराये ॥ ४२ ॥ १५ रामसिंह को स्वामी जानकर कुशलसिंह सभा में आया १६ धोवती ॥ ४३ ॥ १७ तू छोटे लिंगवाला है १८ कुत्ते से भी छोटा १९ कुशलसिंह २० अभयसिंह का हुकम ॥ ४४ ॥ २१ कवि की जिव्हा भी २२ प्राणनाथ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

॥ ४६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मे-
दसिंहचरित्रे पितृव्यकल्पवनगतगुणगौरीमहोबुन्दीन्द्रश्रावणश्रा-
मशुक्लप्रथमशिवादिनोऽत्सवस्थापनतदपरदिवससङ्घपात्राऽनन्त-
रजैतसागरमहातड़ागजलसेतुत्रोटनराणाजगत्सिंहविहितवर्णादूतबुं-
द्याऽऽगमनाऽवगतदलोदन्तरावराट्पुरोहितदयाराामोदयपुरप्रेषणाध-
न्वधरेशाऽभयसिंहमहापरिणामव्याधिवर्द्धनस्वकुपुत्रसमयसामन्त-
स्वीकरणाऽकरणनिश्चयनसेरसिंहसर्वसहनाऽङ्गीकरणकुशलसिं-
होचिताऽनुचितनिवेदनकाबन्धराजकायत्यजनतत्तनुजरामसिंहपट्टप्रा-
पणतदुचिताऽनादरणांत्यजनसहचरीभवनपरिभावकपीलुमारणा-
विचारपितृव्यकधात्रेयीविवस्त्रीकरणकुशलसिंहाऽधोवस्त्रकर्त्तनप्राति
पुरुषतन्निन्दाप्रसरणं द्वात्रिंशो ३२ मयूखः ॥ ३२ ॥ ३१३ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृतीमिश्रितभाषा ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह चरित्र में, काका के मरने से गयेहुए गुणगौर के उत्सव को बुन्दी के पति का सावन मास की शुक्लपक्ष की तीज के दिन उत्सवस्थापन करना १ उसके दूसरे दिन समूह के गये पीछे बडेतलाव जैतसागर के जल का पाल को तोड़ना २ राणा जगत्सिंह के उचित पत्र का बुन्दी में आना जानकर पत्र के उत्तर में रावराजा का पुरोहित दयाराम को उदयपुर भेजना ३ मारवाड़ के पति अभयसिंह को कालरोग के बढने पर अपने कुपुत्र के समय (राजापन के समय) का स्वीकार, न करने के विचार से अपने उमरावों को बुलाकर निश्चय करना ४ शेरसिंह का सब सहन करने को स्वीकार करना और कुशलसिंह का उचित अनुचित निवेदन करना ५ राठोड़ों के राजा का शरीर छोडना और उस पुत्र रामसिंह का पाट पाना६ उसका उचित लोगों के अनादर का करना और अन्त्यज लोगों का साथ करना ७ अनादर करनेवाले हाथी को मारने का विचार और काका की धाय को नग्न करना८ कुशलसिंह की धोती (धोवती) काटने से मनुष्यप्रति उस की निन्दा फैलने का बत्तीसवां ३२मयूख समाप्त हुआ और आदि से तीनसौ तेरह ३१३ मयूख हुए ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

इत बुन्दीस मंत्र इक धार्‍यो, सहर सितारा गमन विचार्‍यो ॥
संग लयो निज दीप१सहोदर, अजनेरीपति सेर२सुभट बर ॥ १ ॥
हड्डा पुनि नाहर३ हरदाउत, अरु दलेल ४ हरजन अमात्य सुत ॥
इत्यादिकन सहित नृप हंकिय, सुनि प्रयान दिस दिस अरि संक्यिय२
नृपहिं चलत कोटेस नि[३]वार्‍यो, तउ न रुक्यो छल तास निहार्‍यो॥
सक खट नभ धृति १८०६ भद्द बिंसद तँहँ, बुंदिय रक्खि सचिव हरजन कँहँ ॥ ३ ॥
पति संभर चल्ल्यो दक्खिन प्रति, रहि बुधम इक१रत्ति महामति ॥
दरकुंचन इम पत्त अवंतिय, श्राद्ध अपरपत्त[६]ग तत्थहि किय ॥४॥
हंके पुनि लग्गत नवरत्ते९, अष्टमि ८ दिन रेवा तट पत्ते ॥
तँहँ दक्खिन पति चोकीदारन, मंग्यो कर वह सरित उतारन ॥५॥
सुनि नृप कहिय हम न कर देहैं, जब उन अक्खिय पार न जैहैं
तब तिन्ह भूप पिटाय बिडारे, पोतन करि निजतंत्र[११] पधारे ॥ ६ ॥
श्रीओंकार१ ईस दरसन करि, मांधाता२ जुत पूजि पयन परि ॥
रेवा नदि पुनि लंघि बडे रै[१२]य, पत्त नगर बुरहानपुराह्वय[१३] ॥ ७ ॥
जोतिलिंग सिव१अरचन मंडिय, विश्वकर्म प्रतिमा२दरसन किय ॥
पुर अवरंगाबाद३ गये पुनि, गोदावरी बहुरि न्हाये धुं[१४]नि ॥ ८ ॥
श्राद्ध१[१५]पन२उपवास३विहित सब, बिरचि अग्ग बुन्दीस चल्लिय तब
उर्ज्ज[१६] असित इम गय धरि नँ[१७]य धुर, बापगाँव नामक हुलकरपुर१
पुरपापु[१८] मल्लार हुतो तब, खंडू नृप सतकार कियो सब ॥

---

१ दीपसिंह ॥ १ ॥ २ कामदार का पुत्र ॥ २ ॥ ३ मना किया ४ सुदि ॥ ३ ॥ ५ बुद्धिमान् ६ दूसरे पक्ष में गयेहुए "ज्योतिष में शुक्लपक्ष को द्वितीय मानते हैं" ॥ ४ ॥ ७ नर्मदा के किनारे ८ नदी उतारने का ॥ ५ ॥ ९ निकाल दिये १० नावों का ११ अपने आधीन करके ॥ ६ ॥ १२ वेग से १३ बुरहानपुर नाम का ॥ ७ ॥ १४ नदी में ॥ ८ ॥ १५ मुंडन १६ कार्तिक वदि में १७ नीति के धुरको धारण करके ॥ ९ ॥ १८ पूना में

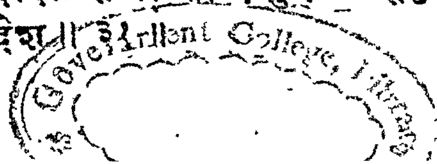
सम्मुह जाय वधाय रु लिन्नैं, हय सिरुपाव निवेदन किन्नैं ॥१०॥
मुदित रची दिन प्रति महिमानी, दुल्लभ सिक्कार अनेक दिखानी॥
ग्रह कति रहन मल्हारहु आयो, विविध हेत मिलि दुहुँन रवढायो ११
बुंदिय खबरि गई नृपपैं तब, सचिवन अग्गैं दुखित प्रजा सब ॥
हरजन धन छिन्नत नन हारैं, धनिकन दै अभिताप बिगारैं ॥१२॥
चोरनतैं मिलि द्रव्य चुरावैं, खोसि खोसि सबको वसु खावैं ॥
सुनि उद्घोस कियो नृप निश्चय, निकस्यो सत्य तबहि मंड्यो नय
भजनेरीपति सेरसिंह भट, हरजनकौं पकरन पठयो झट ॥
तिहिं आय रु गाटुंदा पत्तन, हहा घेरिलायो वह हरजन ॥ १४ ॥
कोटसहि तिहिं तबहि कहाई, भजनेरी पैं गहत मुहिं भाई ॥
अब्बहि दये संग इनके हम, करहु सहाय स्वदासन हे छम ॥१५॥
कोटापति सुनि करि त्वरिताई, एतनौं दैल सहाय पठाई ॥
जो पहुँचे न इते [illegible] जय, गहि हरजनहिं सेर बुंदिय गय १६
तारागढ कैंद्रा [illegible] डारयो, बंधन लहि तब दर्प बिसारयो ॥
बापनौंधँ मल्लार युद्धजित, निज कन्न्या उँपयम मंडिय इत ॥१७॥
बुन्दीसहु बहुधन खरच्यो जहँ आगनकाल इक बत्त सुनी तहँ ॥
अगहन मास [illegible] [illegible]हह, तज्यो छत्रपति साहू बिग्रेह १८
हुलकर घर [illegible] सोक तास हुव, सुता बिवाहि चलन चिंत्यो ध्रुव
[illegible] बापग[illegible] नृप रक्खिय, हरजन पुत्र अरज वह अक्खिय १९
[illegible] दिन [illegible] मोहि नृप दीजे, त्वरित आनि मिलिहौं दिन तीजे
[illegible] दिन [illegible] तब दिन्नौं, कछु न संक भजिजावन किन्नौं २०
इत [illegible] हुलकर [illegible] पहिलैं कुंवर पुरायापुर पत्ते ॥

होतहँ सचिव सदासिव हितमय, नन्ह पितृव्यक[1] सीमा जित नय[2]२१
संभरपति सम्मुह वह आयो, दिन दस१० रक्खि सनेह दिखायो ॥
इन हरजन सुत बापगाँव रहि, जनकहिँ सुनि पकर्‍यो बिरोध चहि२२
नृप[3] अनुजहिँ फोरन किय दुर्नय, फुट्टयो नहिँ तब भजि कोटा गय ॥
इत संभर१ हुलकर१ पुराया सन, पत्ते उभय२ सितारा पत्तन॥२३॥
हहहिँ भ्रात सुनत हरखायो, सम्मुह नन्ह कोस इक१ आयो ॥
डेरा काफरखोह दिवाये, पुनि महिमानी साज पठाये ॥ २४ ॥
साहू भूप मर्‍यो बिनु संतति, पृथुल[4] राज्य किम रहैं बिनाँ पति॥
साहू पितामही[5] तारा तँहँ, अरु प्रधान श्रीमंत नन्ह जँहँ ॥ २५ ॥
मंत्र बिचारि पनालागढ सन, राम बुलायउ संभा नंदन[6] ॥
अग्गैं नृप सिवराज कर्ण निभ[7], भूखन कविहिँ दये बावन५२इभ[8]२६
संभा हुव ताको लघु सोदर, दिन्नौं जाहि पनालागढ बर॥
ताकै सुत यह रामनाम हुव, सो अब कियउ सितारापति ध्रुव २७
राजाराम१ बहुरि संभरपति१, मिलिवाये दुव२ नन्ह महामति ॥
बैठे दुव२ इक१ तखत बरब्बर, चले दुर२ओर मोरछल१चामर२८
डोले त्रय३पुनि नन्ह मँगाये, राजाराम बिवाह रचाये ॥
साहू पट्ट राम इम बैठो, इत इक लरन घूँसल्या पैठो ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

कहि अग्गैं श्रीमंत द्विज, बाजेराय प्रधान ॥
रघू नाम भट घुंसल्या, पठयो हिंदुसथान ॥ ३० ॥
तिहिँ जनपद[1] गुड़वान१ अरु, खानदेस२ लिय जित्ति ॥
हाकिम पंडित भासकर, रक्ख्यो तँहँ करि कित्ति ॥ ३१ ॥
पच्छो पुनि दक्खिन गयो, मृत सुनि बाजेराय ॥

१काका २ नीति से ॥ २१ ॥ ३ राजा के छोटे भाई सेरसिंह को ॥ २२ ॥ २३ ॥
॥ २४ ॥ ४ बड़ा ॥२५॥ साहू की ५ दादी. संभा का ६ पुत्र ७ सदृश ८ हाथी
॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ १ देश ॥ ३१ ॥



सोव रह्यो श्रीमंत सुत, नन्द न जानैं न्याय ॥ ३२ ॥
नन्द हुकम लै छन्न तब, कतिक पिसुन भट ओर ॥
खानदेस गुड़वानमैं, आये बनि बरजोर ॥ ३३ ॥
तत्थ रघू भट भासकर, मास्यो इन करि जंग ॥
अप्पन थानाँ रक्खि तँहँ, पास्यो देस प्रसंग ॥ ३४ ॥
बत्त यहै सुनि घुंसल्या, तबतैं धरत बिरोध ॥
अब आयउ श्रीमंतसों, जुद्ध रचन सजि जोध ॥ ३५ ॥
हुल्लकर पति तँहँ बीच परि, दोउन्न बैर मिटाय ॥
आनि रघू१ श्रीमंतकैं, दिन्नों पयन लगाय ॥ ३६ ॥

इतिश्रीवंशभास्करेमहाचम्पूकेउत्तरायणेसप्तमराशावुम्मेदसिंहचरित्रेबुन्दीन्द्रसितारापू:प्रस्थानतिरस्कृतमहाराष्ट्रमहिममेकलजोल्लङ्घनप्रतितीर्थस्नानमत्यर्चार्ऽर्चनविहितविधेयसम्भेरशमल्लाराऽधिष्ठानबापग्रामप्रविशनखण्डूसन्मुखाऽऽगमनाऽऽदितत्सत्करणश्रुततदुदन्तहुल्लकराऽऽगमनहड्डेन्द्रहरजनाऽमात्यदेशदु:खश्रवणप्रेषितत्सनाभिसेरसिंहवश्यवेष्टनहरजनाऽऽहूतकोटाकटकपूर्वभजनगरीभर्त्तृनिगृहीतबुंदीपुटभेदनतारादुर्गप्राकारप्रवेशनोम्मेदसिंहहुल्लकरसुताविवाहबहुवसुवितरणतत्त्यम्लेच्छमण्डलमहैकशीर्षोद्दसितारास्वामिसाहूस्म-

१ बालक ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

इतिश्री वंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह के चरित्र में बुन्दीन्द्र का सितारा नगर को प्रस्थान करना, मरहटों की महिमा का तिरस्कार करके नर्मदा को उल्लंघन करना, करने योग्य हरेक तीर्थ में स्नान और हरेक मूर्ति का पूजन करके रावराजा का मल्लार के स्थान बापगांव में प्रवेश करना, खंडू का सन्मुख आने आदि से उसका सत्कार करना, राजा के समाचार सुनकर हुल्लकर का आना, हड्डेन्द्र का हरजन के दिये देश के दु:ख को अमात्यों से सुनकर अपने भाई सेरसिंह को भेजकर हरजन को पकड़ने के लिये घेरना, हरजन की बुलाई कोटा की सेना के आने से पहिले भजनेरी के पति (सेरसिंह) से पकड़ेहुए (हरजन) को बुन्दी नगर के तारागढ के किले में कैद करना, उम्मेदसिंह का हुल्लकर की बेटी के विवाह में

शानसदनसमासादनश्रवणापैत्र्यर्णापपकरणाठ्याजनीताऽवसरहार जनिकोटाऽऽगमनप्रहृष्टपुणयापुरसदाशिवसत्कृतमल्लारोम्मेदशसिता रासम्प्रापणश्रीमन्तसन्मुखाऽऽगमनपनालापतिरामराजाऽधिपत्याऽ भिषेचनतद्बुन्दीन्द्रसम्मिलनतदेकाऽऽसनसन्निविशननन्हराससराव- निवाहनमहाराष्ट्रमण्डनसितारेशसुभटरणारसिकरघूपूर्वाऽपमानसूच नतत्कुपिततद्योधनाऽऽगमनमल्लारतद्वियहपरासनरघूश्रीमन्तचरणापा तनं त्रयस्त्रिंशो३३मयूखः ॥ ३३ ॥ आदितः॥३१४॥

॥ प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा—हरजन पुत्त दलेल इत, कोटा जाय प्रमत्त ॥
पठये लिखि नृप अनुज प्रति, बापगाँव इम पत्त ॥ १ ॥
अप्प रहहु मम संग अरु, कोटा आवहु दीप[1] ॥
तो बुंदिय पुर तखत धरि, मन्नैं तुमहिं महीप ॥ २ ॥
दीपसिंह ए पत्र द्रुतैं[2], पठये अग्रज पास ॥
लखि तिन्ह मंद दलेलको, सुपहु तज्यो बिसवास ॥ ३ ॥

॥ षट्पात् ॥

नगर सितारा नीच हक्क नाहर हरदाउत ॥
निज नृप सम्मति बिनुहिं जानि अप्पहिं सु बुद्ध जुत ॥

बहुत द्रव्य देना, वहांके मुसलमानों के मंडल को मारनेवाले सीसोदिया सिताराके स्वामी साहूका मरघट में घर करना (मरना) सुनना, पिता के ऋण को दूर करने के मिस से अवसर पाकर हरजन के पुत्र का कोटे आना, सदाशिव से सत्कार किये हुए मल्लार और उम्मेदसिंह का पूना देखकर सितारे जाना, श्रीमन्त का सन्मुख आना, पलाना के पति रामराजा का राज्याभिषेक होना, उससे बुन्दी के राजा का मिलना, मरहठों के मंडन सितारा के स्वामी के सुभट रणारसिक रघूके पूर्व अपमान को सूचित करना, उसका कुपित होकर युद्ध करने को आना, मल्लार का उसके वैरको मिटाना, रघूको श्रीमन्त के चरणों में गिराने का तेतीसवां मयूख समाप्त हुआ ।३३। और आदि से तीन सौ चौदह मयूख समाप्त हुए ॥३१४॥

॥ १ ॥ १ हे दीपसिंह ॥ २ ॥ २ शीघ्र ॥ ३ ॥

हुल्लकर प्रति किय अरज अग्ग नभ बसु सत्रह१७८०सक ॥
टोडा लिय जयसिंह डारि मिच्छन पर ओदक ॥
आवाँ पुरी रु दुन्नी१ उभयर थान लये इमरेहु तब ॥
टोडा सु दिन्न तुम माधवहिं तो बखसहु मम भुन्नहु अब ॥४॥

॥ दोहा ॥

कुप्प्यो हुल्लकर सुनत यह, सोर रह्यो पुर छाय ॥
अक्खी नृप कहते हमहिं, तो बनतोहु उपाय ॥५॥
हम सन भिन्न प्रबुद्ध२ह्वै, बिगराई निज बत्त ॥
भनि इम नाहरतैं भयो, बुंदियभूप बिरत्त३ ॥६॥
अग्गैं नन्न्ह अमात्य इत, रामचंद्र अघरत्त ॥
रानहि सम्मलि लैनकौं, पठये कोटा पत्त ॥७॥
हुत विश्वेश्वरनाम द्विज, निज वकील कोटेस ॥
उदयनैर पठयो तबहि, फोरन रान नरेस ॥८॥
तानैं मिलि जगतेसको, लिन्नौं मन पलटाय ॥
दक्खिन देस प्रधानपैं, दिय इम पत्र लिखाय ॥९॥
दै बुंदिय उम्मेद हित, अनुचित हुल्लकर कीन ॥
करहु कथित कोटेसको, तो हम सर्व अधीन ॥१०॥
जोलौं ए दल दूत लै, निकसैं नैर बिहाय ॥
तोलौं अक्खिय रान प्रति, दयाराम द्विजराय ॥११॥
कोटेसहिं जानहु कुहक, मिल्यो सु जैपुर माँहिं ॥
सुनिहो रंचक दिननमैं, है तुमतैं हित नाँहिं ॥१२॥
सु सुनि रान चलमति कहिय, कछु दिन परख बिधाय ॥
दक्खिन पत्र पठायहैं, तोलग देहु धराय ॥१३॥
भैंसरोर पति स्वसुरहो, चुंडाउत भट लाल ॥

---

१ भय ॥ ४ ॥ ५ ॥ २समझदार होकर ३विरक्त ॥६॥ ४पहुंचा ॥७॥८॥९॥५ कहना ॥ १० ॥ ६ पत्र ॥ ११ ॥ ७ कपटी ८ थोड़े दिनोंमें ॥ १२ ॥ ९ करके ॥ १३ ॥

ता पँहँ कृष्ण[1] दलेल सुत, इत दिय पत्र उताल[2] ॥ १४ ॥
पत्र रावराजोपपद, रानाँको लिखवाय ॥
सो ममढिग भेजहु स्वसुर, प्यारे अवसर पाय ॥ १५ ॥
इम लिखि पठयो उदयपुर, अप्पन बनिक वकील ॥
सोहु मिलायो रान सन, करि हट लाल कुसील[3] ॥ १६ ॥
लघुमति[4] पत्र लिखाय दिय, कृष्ण कथित परिमान ॥
जल कुल्ल्या[5] जिम रान मन, फेरयो फिरत अजान ॥ ॥१७॥
बखतसिंह नागोर पति, इत सठ मंडि मरोर ॥
दिल्ली दल[6] बुल्ल्यो[7] बहुरि, दैन जोधपुर जोर ॥१८॥
अरजी अहमदसाह सुनि, पुनि पठयो बल[8] पूर ॥
जवन सलावतखान जहँ, सेनानी[9] करि सूर ॥ १९ ॥
कूरम ईश्वरिसिंहकी, तनयाँ सन[10] विख्यात ॥
रामसिंह मरुराजको, पहिलैं सगपन जात[11] ॥ २० ॥
यातैं आवत जोधपुर, सुनि दिल्लिय दल सोर ॥
कुम्महिं मरुपति मीरकोँ, बुल्ल्यो गिनि बरजोर ॥ २१ ॥
तब कूरम आमेर पति, उत्तर पठयो एह ॥
फोज खरच भेजहु ततो, आवहिं मीर सनेह ॥ २२ ॥

॥ षट्पात् ॥

अग्गैं नृप करते सहाय सुनि बिपति परस्पर ॥
फौजखरच लेते न जदपि होतो भर संगर[12] ॥
जामातौं[13] सन कुम्म मेटि रीति सु धन मंगिय ॥
तब मरुभूप सनेमैं[14] लक्ख१५००००दम्मन भरनाँ दिय ॥

१ कृष्णसिंह २ शीघ्र ॥ १४ ॥ १५ ॥ ३ बुरे स्वभाववाला ॥ १६ ॥ ४ तुच्छ बुद्धिवाले (चंद्रमाधा) ने ५ नहर ॥ १७ ॥ ६ सेना ७ बुलाई ॥ १८ ॥ ८ सेना ९ सेनापति ॥ १९ ॥ १० बेटी से ११ हुआ था ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ २२ ॥ १२ युद्ध का भार १३ जमाई से १४ आधे सहित एक लाख अर्थात् डेढ लाख

सजि तब अनीक जयसिंह सुव कोटा भेजिय कग्गरहिं[1]
हम संग होय जवनन हनहु तो बुंदिय तुम बस करहिं २
यह कहाय करि कुंच चल्यो मरुपति सहाय पर ॥
मरुपतिसौं अति मोद मिल्यो तीरथगुरु पुक्खर[2] ॥
नगर मेरता तदनु[3] जाय दोउन रमिलान दिय ॥
इत दिल्ली दल ईस उदयपत्तन दल[4] भेजिय ॥
हम संग होहु जगतेस नृप सह माधव सेवानुरत[5] ॥
अग्रजहिं[6] मारि अप्पहिं हमहु तो अनुजहिं[7] जैपुर तखत॥२
यह सुनि सज्जिय रान होन दिल्लिय दल सम्मलि ॥
इत कोटा अधिराज कुम्म कग्गर बंचिय बलि ॥
हुव तयार तब हड्ड करन कूरम किंकर पन ॥
बुंदिय लोभ विधाय[9] रचन दिल्लिय दलतैं रन ॥
पुरजन कितेक कछु काम तँहँ कोटाके गय उदयपुर ॥
तिन कहिय जात कोटेस सजि जैपुर सम्मलि दल प्रचुर[10] २५
दयाराम द्विज तबहि रान यह सुनत सिराह्यो ॥
अक्खिय हम सन हेत नाँहि कोटेस निबाह्यो ॥
यह सुनाय वे पत्र लिखे दक्खिन पहुँचावन ॥
दिन्नैं ते द्विज हत्थ प्रीति बुंदियपर लावन ॥
द्विज दयाराम ते दल सँकल[11] सहर सितारा मुक्कलिय ॥
तब उभय हड्ड हुलकर तमकि[12] कग्गर बंचत[13] कोप किय ।२६।

॥ दोहा ॥

पुनि मलार खिजि नन्न्ह पर, रुठि चल्ल्यो निज देस ॥
सुनत नन्न्ह अह्लो फिरयो, बुल्ल्यो विनय बिसेस ॥२७॥

---

१ पत्र ॥ २३ ॥ २ पुष्कर में ३ जिसपीछे ४ पत्र भेजा ५ सेवा में प्रीति करके ६ ईश्वरीसिंह को ७ माधवसिंह का ॥ २४ ॥ ८ पति ९ बुन्दी का लोभ करके १० बहुत सेना ॥२५॥ ११ सब पत्र १२ खिजकर १३ पत्र बांचते हीं ॥२६॥२७॥

छमहु कोप मल्लार छमें, सुनहु बत्त मम एक ॥
सचिव अट्ठ८ यह मुख्यहे, अग्गैं बिहित बिबेक ॥ २८ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

श्रीपतिराव१ हुते सबमैं इनें[2], प्रतिनिधि[3]को उपपद पायो जिन ॥
तिन मुख अग्गैं मम प्रपितामह, बिश्वनाथ१ बितये अनेक अह[4] २९
बाला २ हुव पुनि बिश्वनाथ सुत, तेहु रहे मुख अग्ग बिनय जुत ॥
श्रीपति संग पेसें[5] रहिबे सन, तिनहिं पेसवा कहन लगे जन ॥३०॥
बाजेराय३ भये बालासुत, मामक[6] जनक पेसवा नय जुत ॥
श्रीपतिराव मरे प्रतिनिधि जब, तुम पंचन हमरो जस किय तब ३१
श्रीपतिकी तब मुख्य सचिव गति, बाजेरायहिं दई छत्रपति ॥
अंक छाप जिम खनि[7]तैं उघारे, सो तुम सुनहु गंद्यकरि सारे ॥३२॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

श्रीसाहूराजाछत्रपति हर्षनिधान बाजेराय बालाजी पंडितप्रधान ए अंक छापमैं खुदाय हमारे पिता पेसवा बाजेराय छत्रपतिनैं मुख्य प्रधान कीनैं ॥

अरु उनके देहांतके अनंतर श्रीसाहूराजाछत्रपति हर्षनिधान नन्हांजीवाजेराय पंडितप्रधान ए अंक सितारेश्वरनैं छापमैं खुदाय दीनैं ॥

तदनंतर जब छत्रपति साहू परलोक गये ॥
तब पनालागढसों पितृव्यक संभाके पुत्र राजाराम आयकैं सितारा के अधीस भये ॥ ३३ ॥

अब वेही अंक नईछापमैं राजारामके नाम सहित खैंनाये[12] ॥
सो सब इत्यादिक अभ्युदयके[13] फल तुम पंचननैं प्रसंसापूर्वक

१ समर्थ ॥ २८ ॥ २ पति ३ कायम मुकाम का ४ दिन ॥ २९ ॥ ५ आधीन रहने से ॥ ३० ॥ ६ मेरे पिता ॥ ३१ ॥ ७ खुदवाकर ८ आगेवाले गद्य छन्द से ॥ ३२ ॥ ९ पीछे १० जिसपीछे ११ काका ॥ ३३ ॥ १२ खुदाये १३ ऐश्वर्य

मिलाये ॥

तुमहीनैं हैदराबादके नवाब निजामनमुलकको जेर करि रुप-
ऱ्येमैं सिक्का अपने अंकको खुदाय जागीरी पटामें हैदराबादही
पच्छो उनकों दिवाय बंदगी सितारेकी कराई ॥

अरु गुजरातको मालिक दामा गायग्वाल[1] साठिहजार६००००
सेनाको सिरदार फिराऊ भयो ताकों कैदकरि दंडलै रु गुजरात
कों अपनैं अधीन बनाई ॥ ३४ ॥

तुमारे प्रतापतैं इत्यादिक अभ्युदय देखि सबननैं सितारेकों
कुमारिके[2]श्वर कह्यो ॥

तिनके रूठि गयें रामराजाके राज्यमें स्वामिधर्मी सचिव कोन
रह्यो ॥

ऐसो आदेस श्रीमंतको सुनि हुलकरनैं दयाराम द्विजके पठा-
ये दल दिखाये ॥

अरु कही कोटादिक कूर बुंदीससों बैर करैं सो पापिष्ठ पंडि-
त रामचंदके सिखाये ॥ ३५ ॥

॥ दोहा ॥

सुनत पत्र[3] श्रीमंत करि, रामचंद्र पर रीस॥
सज्जित हिंदुसथानपर, किन्नों हुलकर ईस ॥ ३६ ॥
कछुदिन पहिलैं नन्हसों, रामचंद्र कहि बत्त ॥
संध्याको अधिकार सब, छिन्न्यों पिसुन[4] प्रमत्त ॥ ३७ ॥
निंदा बहुरि मलारकी, कहि कहि कितव कुढार[5] ॥
अप्पहिं हिंदुसथानपर, हुव मालिक हुसियार ॥ ३८ ॥

---

१ इस शब्द का अपभ्रंश गायकवाड़ हुआ है अर्थात् ये लोग पहिले गउओं के चराने से गायकवाले कहाते थे ॥ ३४ ॥ २ जिस देश में वर्ण व्यवस्था है उसका नाम कुमारिका है ३ पत्र ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ४ चुगल ॥ ३७ ॥ ५ बुरी भांति ॥ ३८ ॥

अब ताको यह कपट लखि, नन्ह दयो हु निवारि ॥
छिप तयार मल्लार कहँ, बंछि बिस्वास बधारि ॥३९॥
राजोरा सटवा १ तबहि, हुलकर निज उमराव ॥
दस हजार १०००० दल संगदै, पठयो अग्ग सचाव ॥ ४० ॥
अक्खी तुम पहिलैं चलहु, दब्बहु हिंदुसथान ॥
चातुरमास बिताय हम, आवहिं कटक अमान ॥ ४१ ॥
तब सटवा दरकुंच करि, लंघि नगर उज्जैन ॥
आयो सुनि दिस दिस उठिय, ओदक भूपन ऐन ॥ ४२ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे कोटागतहारजनिदलेलसिंहबुन्दीन्द्रसोदरदीपसिंहभेदनपत्रलिखनदृष्टाऽनुजप्रेषितपत्रसितारासंस्थितरावराडमात्यविश्वासत्यजननिजपुराऽऽवा १ दूणयु २ करणाहरदाउत्तनाहरसिंहमल्लारविज्ञापनकोपतत्तदनूरीकरणाश्रुतैनबुन्देन्द्रस्वभटकुत्सनसमवगतश्रीमन्ताऽमात्यपण्डितरामचन्द्रराणाभेदनपत्रकोटेशविप्रविश्वेश्वरोदयपुरप्रेषणाभिमित्सुमायामूढराणाबुन्दीदुर्जनशल्यदापनपत्रलिखनप्रस्थिततद्द्विजदयारामनिवारणदालेलिश्वशुरचुंडाउत्तलालसिंहजामातृ-

१ पुनि ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ २ भय ३ राजाओं के घरों में ॥ ४२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह के चरित्र में, कोटा में गये हुए हरजन के पुत्र दलेलसिंह का बुन्दी के पति के छोटे भाई दीपसिंह को फोड़ने का पत्र लिखना १ छोटे भाई के भेजे हुए उसके पत्र को देखकर सितारा में ठहरे हुए रावराजा का अमात्य का विश्वास छोडना २ अपने पुर आँवाँ और दूणी के निकालने की हरदाउत नाहरसिंह का मल्लार से अरज करना और उसका क्रोध सहित अस्वीकार करना सुन कर बुन्देन्द्र का अपने उस उमराव की निन्दा करना ३ श्रीमन्त के अमात्य रामचन्द्र का राणा को फोड़ने का पत्र प्राप्त करके कोटा के पति का ब्राह्मण विश्वेश्वर को उदयपुर भेजना और उसकी माया में मूर्ख राणा का दुर्जनशाल को बुन्दी देने की सम्मति का पत्र लिखकर भेजने में ब्राह्मण दयाराम का रोकना ४ दलेलसिंह के श्वशुर चूंडा लालसिंह का जमाई के अर्थ राणा से रावराजा

हितराणाशवराट्पदपत्रलेखननागोरपुरेशरट्ठोड़बखतसिंहस्वसहायदिल्लीसैन्याऽऽह्वयनतदूगीतयोधपुरेशरट्ठोडरामसिंहस्वीयश्वशुरकूर्मराजाऽऽह्वानानीतसार्द्धलक्ष १५०००० मुद्रासितजामातृदण्यसमाहूतमहारावप्रस्थितजायसिंहिपुष्करक्षेत्रजामातृमिलननृपद्वय २ मेरतापुरपृतनापातनप्राप्तदिल्लीशसेनानीपत्रराणाजिगमिषुभवनश्रुतकोटेशशत्रुभावराणापूर्वलिखितदयारामाऽर्पणापुरातत्सितारापेषणाश्रीमन्तश्रुतैतदुदन्तकुपितपिपासुहुलकर १ हड्डेन्द्रा २ ऽनुनयनज्ञातरामचन्द्रकौहक्यनन्हतदधिकारमल्लाराऽऽर्पणमल्लारस्वभटसटवाहिंदुस्थानागमनं चतुस्त्रिंशो ३४ मयूखः ॥ आदितः ॥३१५॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

इत कोटापतिको बहिकायो, बुंदिय लरन कृष्ण[1] वह आयो ॥
दै घेरा तोपन रन मंडिय, खोमै[2] बरणा[3] कपिसिर[4] कछु खंडिय ॥ १ ॥
लग्गे कहन सेस दिग्गज गन, बिरचहु बाहुज[5] नास बिरंचन[6] ॥

के पदका पत्र लिखाना ५ नागोर पुर के पति राठोड़ बखतसिंह का अपनी सहायको दिल्ली की सेना को बुलाना और वह सुनकर जोधपुर के पति राठोड़ रामसिंह का अपने श्वसुर कछवाहा राजा (ईश्वरीसिंह) को बुलाना ६ जमाई से डेढ लाख रुपये लेकर कोटा के महाराव को बुलाकर जयसिंह के पुत्र का पुष्कर क्षेत्र में जमाई से मिलना ७ दोनों राजाओं का मेड़ता नगर में मुकाम करना और दिल्ली के सेनापति का पत्र पाकर राणा का जानेकी इच्छा वाला होना और कोटा के पति का शत्रु भाव सुनकर पहिले लिखे पत्रों का दयाराम को देना ८ उसका उन पत्रों को सितारापुर भेजना और श्रीमन्त का उस वृत्तान्त को सुनकर कोप से जानेवाले हुलकर और उम्मेदसिंह को नहीं जाने देना ९ रामचन्द्र का छल जानकर नन्ह का उसका अधिकार मल्लार को देना और मल्लार और अपने उमराव सटवा का हिंदुस्थान में आने का चौतीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ३४ ॥ और आदि से तीन सौ पन्द्रह मयूख समाप्त हुए ॥ ३१५ ॥

१कृष्णसिंह २खोम (बुरज) ३कोट ४कांगुरे ॥१॥ ५क्षत्रियों का नाश करो ६हे ब्रह्मा

इनको बीज रहैं छिति जोलौं, रंचक चैंन हमे नहिं तोलौं ॥२॥
दिस दिस यह कोलाहल अद्भुत, बुंदिय इम बिंटिय दलेल सुत ॥
नहिं नृप*तदपि कढ्यो अंतर दल,चालुक१कायथ२हत्थ चलाचल

॥ षट्पात् ॥

सोलंखी संग्रामसिंह १ जोराउर नंदन ॥
कायथ मोजीराम २ कढे अरि करन निकंदन ॥
मारे के रन अपर झारि निर्भर समसेरन ॥
देर न किय दालेलि भज्यो भीरुक तजि डेरन ॥
नैनवा मग्ग लिय रुक्कि इन तब सु जाय कोटा रहिय ॥
कोटेस हितु दै द्रुत कटक करहु भीर अब इम कहिय॥४॥

॥ दोहा ॥

गो बुंदिय तुम्हरे कहैं, आयो रैखत लुटाय ॥
बल बिनु बैर न बाहुरत, सत्वर देहु सहाय ॥ ५ ॥
दुजनसल्ल उत्तर दयो, दिवस भीरके एन ॥
कछुक काल छन्नैं रहहु, सटवा आत ससैंन ॥ ६ ॥
राजोरा दरकुंच रचि, कोटा सन लहि दंड ॥
द्रुत पहुँच्यो अजमेर दिस, मंडत अमल अखंड ॥ ७ ॥
खत्री केसवदासकैं, पठये सटवा पत्र ॥
बखतसिंह सन बैर तुम, अनुचित करहु न अत्र ॥ ८ ॥
कूरम प्रति केसव कहिय, बरजत तुमहिं मलार ॥
जो चहिहैं अब जंग तो, ढहिहैं सब ढुंढार ॥ ९ ॥
बरज्यो इत बखतेसहू, मरहट्ठन भय मानि ॥
लै बहु धन मरुपालसौं, बुल्ल्यो न लरन बानि ॥ १० ॥

॥ २ ॥ * उम्मेदसिंह नहीं था तोभी १ भीतर की सेना निकली २ चपल ॥ ३ ॥ ३ नाश ४ निर्भर (बहुत) ५ दलेलसिंह के पुत्र ने ॥ ४ ॥ ६ सामग्री ७ शीघ्र ॥ ५ ॥ ८ सेना सहित ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ ९ मारवाड़ के राजा से

सुनि तब ईश्वरिसिंहहू, रैटवा नीति सुनाय ॥
कयौ पुनि पुनि दिल्लिय कटक, नासिर वीर बुलाय ॥ ११ ॥
हुक्कारको यह सुनि हुकम, तब नवाब टरि तत्र ॥
सब्यद खान सलाबतहु, पठयो दिल्लिय पत्र ॥ १२ ॥
कुम्भहिं जानि सहाय कर, रामसिंह महराज ॥
केसव हठि रोक्यो कलह, इहिं कारन अकुलाय ॥ १३ ॥
सम्मति हरगोविंदकी, लै कवंध नृप राम ॥
कुम्भहिं अक्खिय केसवहु, है यह स्वामि हराम ॥ १४ ॥
माधव१ अरु उम्मेद२ सों, याकी प्रीति अजस्र ॥
इन्नें आवत जात इहँ, घनें गये हम घस्र ॥ १५ ॥
कोउक पत्र फरेब करि, लिपि ताकी लिखवाय ॥
तसोही लिखि कुम्भको, दिन्नों विदित दिखाय ॥ १६ ॥
सु लखि पत्र जयसिंह सुव, मन्नी सत्यहि मुह्र ॥
मुह्रि सभा अंतर वन्यों, केसव उप्पर क्रुद्ध ॥ १७ ॥
केसव अक्खिय जोरि कर, इतरनको छल गुह्र ॥
असु कीजें तनु अंतरित, निकसें जो मन छोह ॥ १८ ॥
मन्नी तदपि न मातुसुअ, सुनहु राम नृप हाय ॥
करि हठ दिन्नों केसवहिं, पापी गरल पिवाय ॥ १९ ॥
कुल्ल्यो तहँ जयसिंह सुव, हे पामर मतिहीन ॥
मिलि तहँ मल्लारसौं, कार जपुर लिय खान ॥ २० ॥
नवासि८ परगन मोदसहिं, टक्र हि मुंडिन देस ॥
किय किराये सैंह नारि, थाकौ फल नहि लेस ॥ २१ ॥

कहाँ सहायक तव कुमति, मूरख वह मल्लार ॥
याहि बचावन प्रान अब, बुल्लहु क्यों न लबार ॥ २२ ॥
सुनि आकिस्थ केसव सुमति, स्वामि हनैं जब दास ॥
त्राता कौन द्वितीय२ तँहँ, गिलत सिंह गज ग्रास ॥ २३ ॥
केसव केसव ध्यान करि, पुनि पुनि बिरचि प्रनाम ॥
गहि भाजन पिन्नौं गरल, रटि अच्युत हरि राम ॥ २४ ॥
होत जहर आवत लहर, नील नँहर यह भाखि ॥
विनु आगस जो देत बिख, सो पावत श्रुति साखि ॥ २५ ॥
इम कहि इक१घटिका अवधि, केसव छोरयो काय ॥
बहुताँ छिन्नि ताको बिभव, लाँई कूरम लाय ॥ २६ ॥
आयो जैपुर कुम्म इम, मंत्री पटु निज मारि ॥
सटवा यह बदनीति सुनि, बिबिध लिखिय बिसतारि ॥२७॥
सुनि हुलकर श्रीमंतसों, अकरयो यह अपराध ॥
हठ पूरब लिन्नौं हुकम, बिरचन जैपुर बाध ॥ २८ ॥
हुलकर१ हड्ड २ रु नन्न्ह ३ पुनि, तजिग सितारा तत्त ॥
सक हय नभ धृति १८०७ चैत्र सित, पुरायापत्तन पत्त ।२९॥
तनय स्वीय उपवीत तँहँ, बलि निज अनुज बिवाह ॥
पुराया किय श्रीमंत प्रभु, अति हित उभय उछाह ॥ ३० ॥
महिमानी उम्मेदकी, बहु श्रीमंत बनाय ॥
प्रीति सहित अनुकूल पन, दिन दिन अधिक दिखाय ॥३१॥
रामचंदके कथित करि, संध्याको अधिकार ॥

॥ २२ ॥ १ रक्षा करनेवाला ॥ २३ ॥ केशवदास ने २ श्रीकृष्ण का ध्यान करके ३ पात्र लेकर विष पीगया ॥ २४ ॥ ४ उस नीले नखोंवाले ने यह कहा "जहर खानेवाले के नख नीले होजाते हैं" ५ अपराध ६यही पीछा पाता है यह वेद की साक्षी है ॥ २५ ॥ ७ बहुत ८ कछवाहे ने लाय लगाई ॥२६॥२७॥ ॥ २८ ॥ ९ पूना नगर में प्राप्त हुए ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥

भयो खालसै किन्न अब, ताकी अरज मलार ॥ ३२ ॥

॥ षट्पात् ॥

सुनहु नन्न्ह हम अग्ग लियउ मालव जवनन सन ॥
तब पत्तन उज्जैन महाकालेस निकेतन ॥
परमार सु आनंद१ मैं२ रु संध्या राणांजिय३॥
तीनन३ तजि हिय गंठि सत्थ इहिं रीति सपथ किय ॥
इक१चित्त स्वामि कारिज करहिं अरु जो होवहिं काल बसि ॥
तो तास सुतन जीवैं सु जन हिय लगाय पालहिं हुलसि॥३३॥

॥ दोहा ॥

यह करार जो भुल्लि अरु, चलिहै कुमति कुचाल ॥
ताहि महाकालेश्वरहु, प्रगट करहिं पैमाल ॥ ३४ ॥
हमरे हुव संधा यह सु, जानत तुमहु अजेय ॥
रामचंदके कथित करि, संध्या नहिं अपमेय ॥३५॥
रुप्पय पैंसठि लक्ख ६५०००००तब, दै मलार बिच रक्खि॥
संध्या सन श्रीमंत लिय, सेनापति तिहिं रक्खि ॥ ३६ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

हुलकरको श्रीमंत कथित किय, संध्या जया लगावन निज हिय॥
नाम चमारगौंद तस पत्तन, आयउ ताहि मनावन अप्पन ॥ ३७ ॥
लै तिहिं संग गये पुराथा जब, रचिय मंत्र हुलकर १ संध्या२ तब ॥
हिन्दुसथान माँहिं अप्पन दुव२, स्वामी नन्न्ह तयार करे ध्रुव॥३८॥
रह्यो परंतु उहाँको बहुतर, वित्त हायनिक रामचंदकर ॥
जो न रहै अप्पन बस यह धन, तो करैंहि वह दुष्ट दुष्टपन ॥ ३९॥

---

१ मंदिर में २ सोगन किये थे ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३ प्रतिज्ञा ४ अपमान (अनादर) करने योग्य ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ५ कहना ६ जया नामक सिन्धिया का ७ सिन्धिया के पुर का नाम चमारगोंदा था ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ८ अत्यन्त ९ वार्षिक (सालाना) धन ॥ ३९ ॥

यह तब दुहुँन २ नन्हपति अक्खिय, आब्दिक कर अपनैं कर रक्खिय ॥
श्रीमंतहु यह अरज मन्नि लिय, हिंदुसथान अधीन दुहुँन२किय४०

॥ दोहा ॥

तबतैं हिंदुसथानकी, खरनीको कर सर्व ॥
हुलकर संध्याऽधीन हुव, आब्दिक बित्त अखर्ब ॥ ४१ ॥
सिक्खदैन श्रीमंत पुनि, संभर डेरन आय ॥
तरल निवेदे दस १० तुरग, करटी हुव२ अतिकाय ॥
भूखन मनिन अनर्घ दुव२, दस १० सिरूपाव उदार ॥
दिन्नी बुंदिय सिक्ख इम, करि संभर सतकार ॥ ४३ ॥
सक मुनि नभ बसु इंदु १८०७ सम, सावन पंचमि५स्याम॥
बुंदिय आयो करि बिजय, धरनीपति निज धाम ॥ ४४ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे कोटेशप्रेरितदालेलिकृष्णसिंहबुन्दीवेष्टनरावराट्सुभटसोलंखिसंग्राम १ कायस्थमोजीराम २ तदभिभवनकृष्णसिंहकोटासहायप्रार्थनदुर्ज्जनशल्यतदनङ्गीकरणराजोरासटवाबखतसिंहे २श्वरीसिंह २ युद्धवारणश्रुतपैशून्यकूर्म्मराजखलिकेशवगरलदापनजा

१ सालाना खिराज २ अपने हाथ में ॥ ४० ॥ ३ आधीन ४ बहुत धन ॥४१॥ ५ हाथी ॥ ४२ ॥ ६ अमूल्य ॥ ४३ ॥ ७ विक्रम के शक का सम्वत् ॥ ४४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह चरित्र में कोटा के पति की प्रेरणा से दलेलसिंह के पुत्र कृष्णसिंह का बुन्दी घेरना और रावराजा के भट सोलंखी संग्रामसिंह और कायस्थ मोजीराम का उस के सम्मुख होना १ कृष्णसिंह का सहाय के अर्थ कोटा के पति की प्रार्थना करना और उसका अस्वीकार करना २ राजोरा सटवा का बखतसिंह और ईश्वरीसिंह का युद्ध रोकना और चुगली सुनकर कछवाहों के राजाका केशवदास को जहर देना ३ यह वृत्तान्त जानकर हुलकर का जयपुर को

ततदुदन्तहुलकरजयपुरध्वंसिनीनन्हाऽऽज्ञानयनतदनुश्रीमन्त १ हद्ड
२ हुलकर ३ पुण्यापुराऽऽगमनकृततनयोपवीता १ऽनुजविवाहो २
स्सवनन्हमल्लारवचनाऽनुकूलसन्ध्याजयासेनाऽधिकाराऽर्पणमल्लार१
जया २ हिंदुस्थानप्रेषणाोरीकरणनन्हबुन्दीन्द्रशिबिरागमनतुरगदश
क १० करटियुग २ मणिभूषणादया २ ऽऽदिनिवेदनरावराट्बुन्द्या
ऽऽगमनं पञ्चत्रिंशो ३५ मयूखः ॥ आदितः ॥ ११६ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

कोटापति संकल्प सब, करे नियति प्रतिकूल ॥
रामचंद्र सन हित रच्यो, मोघ भयो सु समूल ॥ १ ॥
पलटायो जगतेस पुनि, सावधान हुव सोहि ॥
बुंदी पठयो कृष्ण वलि, भजि सु पराजित मोहि ॥ २ ॥
जैपुर सम्मलि पुनि जुरन, लग्गो करन प्रयान ॥
बरज्यो सटवा कुम्भ तब, थकि बैठो निज थान ॥
ऐसो अनुचित्त ईरखा, किन्नौं जड़ कोटेस ॥
न फल्यो उद्यम नीचको, सोक रह्यो अवसेस ॥ ४ ॥
उदयनैर सन रान इत, दयाराम द्विज संग ॥
पठयो टीका उपकरन, अनुसारि प्रीति उमंग ॥ ५ ॥

नाश करने की नन्हकी आज्ञा लेना और जिसपीछे श्रीमन्त, उम्मेदसिंह और हुलकर का पूना नगर में आना ४ पुत्र की जनेऊ और छोटे भाई का विवाह करके नन्ह का मल्लार के वचनों के अनुकूल सिन्धिया को जया नामक सेना का अधिकार देना और मल्लार व जया को हिन्दुस्थान में भेजना मंजूर करना ५ नन्ह का बुन्दी के राजा के डेरे आना और दश घोड़े, दो हाथी, दो जड़ाऊ भूषण आदि भेट करना और रावराजा का बुन्दी आने का पैंतीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ३५ ॥ और आदि से तीन सौ सौलह मयूख हुए ॥३१६॥

१ भाग्य ने उलटे कर दिये २ निरर्थक ॥ १ ॥ ३ कृष्णसिंह को ॥ २ ॥ ३ ॥
४ बाकी ॥ ४ ॥ ५ सामग्री ॥ ५ ॥ ३

हाटक१ साखति उभय२ हय, मैदकल इक१ मातंग ॥
सूचीमुखे३ सिरपेच इक१, दुव२ सिरुपाव सुरंग ॥ ६ ॥
टीकाको यह साज दिय, दयाराम द्विज सत्थ ॥
परंपरा दसतूर पुनि, सुनिये राम समत्थ ॥ ७ ॥
अग्गैं सुपहु सुभांड सुत, नृप नारायनदास ॥
रन रानाँ संग्रामकी, टारी दुस्सह त्रास ॥ ८ ॥
मंडूपुरप नबाबको, इक्का भट लिय मारि ॥
संभरको सीसोद तब, बहु आसान बिचारि ॥ ९ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

प्रथम रान संग्राम भीर करि, बाबरको बहु कटक हन्यों लरि ॥
च्यारि अग्ग चालीस४४घाय सहि, बिजय कियो बुंदीस धर्म४ गहि१०
इक्का मुगल यहैं पुनि मारयो, अपनैं सिर उपकार बिचारयो ॥
भटन सहित यह मंत्र रान किय, बिनई पुनि बुंदीसहिं बुल्लिय ११
तुम हमतैं कछु भेट अब्द प्रति, इच्छत लेहु रक्खि निज उन्नति॥
रचि तब नर्म५ कह्यो संभर पहु, पट्टिस६खग्ग१ कोसं दुव२भेसहु१२
बेर तीन३ हायन बिच लैहैं, तब तुम पर हहुन हित ह्वैहैं ॥
भेजहु प्रथम बिजयदसमी१० दिन१, पुनि गुनगोरि३ दिवस२ आहुँठ इन ॥ १३ ॥
बरसगांठि दिन३ बहुरि पठावहु, तो हमहेत गिनैं तुमसे बहु ॥
यह नृप नर्म रान स्वीकृत किय, अवरहु प्रीति रीति इम बंधिय१४
हाटक८ साज उपेत९ इक्क१ हय, इक१ तरवारि मुट्ठि तिहिं मनिमय॥
इक्क१ निखंग इक्क१ बिसिखासन१०, चीरा इक्क१ मूल सिति जास न१५

१ सुवर्ण की २ मस्त हाथी ३ हीरों का ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ६ ॥ ४ धर्म धारण करके ॥ १० ॥ ११ ॥ ५ हंसी करके ६ कटार और खड्ग के दो म्यान भेजो ॥ १२ ॥ ७ हे आहड़ नगर के पति अथवा अहाड़ा क्षत्रियों के पति "आहड़ पुर में राज्य रहने के कारण शीषोदिया क्षत्रियों को अहाड़ा तथा आहड़ा कहते हैं"॥१३॥१४॥ ८ सुवर्ण के साज़ ९ सहित १० धनुष ॥१५॥

असि१ पट्टिस१ के कोस२ सहित चहि, इक१ सिरुपेच इते८ भेजन
कहि ॥
तबतैं चली रीति वह आई, सो रानहिँ नहिँ मिटत सुहाई ॥१६॥
दयाराम द्विज तत्थ रान अब, टीँका संग ए९हु पठये सब ॥
बुंदिय रान सचिव१ द्विज २ लाये, विजयदसमि १० दिन नजरि
कराये ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

उज्ज अमा[illegible] निस तदनु, चोकीदारन फोरि ॥
तारागढ सन कढि गयउ, इरजन वह छल जोरि ॥ १८ ॥
इत दक्खिन अब वे उभय२, मुनि नभ धृति१८०७इसमास॥
हुलकर संध्या सज्ज हुव, लगि दिगविजय हुलास ॥ १९ ॥

॥ षट्पात् ॥

विजयदसमि१० दिन बीर सेन हंकिय सागर सम ॥
संध्या तँहँ हुलकरहिँ कहिय कछु काम गेह मम ॥
मैं चमारगौंदा प्रवेसि वह करि द्रुत आवत ॥
अप्प चलहु इत अग्ग अवनि सत्रुन अपनावत ॥
यह कहि जया सु गय निज नगर इत मलार हंकिय कटक
दिस विदिस वत्त फुट्टिय दुसह रचहिँ कोन दक्खिन रटक२०
हुलकर सुत जुत हंकि लंघि चम्मलि इत आयउ ॥
वृत्त सुनत बुंदीस जाय सम्मुह गृह लायउ ॥
अरु हय नभ धृति१८०७अब्द मास अगहन पख उज्जल ॥
दुहुँन नैनवा जाय विंटि तोपन किय कंदल ॥
तब सठ दलेल सुत कृष्ण वह अंतहपुर तजि भज्जि गय ॥
हड्ड१ रु मलार२ ताकी तियन पठई पीहर विरचि नय ॥२१॥

॥१६॥१ओर२कार्तिक मास की३जिसपीछे ॥१८॥३आश्विन मास में ॥१९॥४सिन्धिया के पुर का नाम है ५भूमि ॥२०॥६वृत्तान्त७युद्ध किया८जनाने को छोड़कर॥२१॥

॥ दोहा ॥

नगर समीधी१ नैनवा२, करउर३ ए सब लिन्न ॥
तिनमें नृप बुन्दीस तब, अमल अप्पनों किन्न ॥ २२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे कोटेशयत्ननिष्फलीभवनराणातिलकोपहारबुन्दीप्रेषणहर्जनकारानिष्क्रसनमल्लारहिंदुस्थानाऽऽगमननयनपुरयुद्धकरणदालेलिपलायनबुन्दीन्द्रतद्भूम्युद्धरणं षट्त्रिंशो मयूखः ॥ ३६ ॥ आदितः ॥ ३१७ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ निःशाणी ॥

इम सुत भीरु दलेलका तजि तियन पलाया१ ॥
ताके देस असेसमैं नृप अमल विधाया२ ॥
पुनि हुलकर संभर सहित अमरख उफनाया ॥
खत्री केसव बैरपैं जयनेर चलाया ॥
फट्टी३ पन्नग संकुली फन पलटि फिराया ॥
खुल्ले नैंन महेसके नवँ माल लुभाया ॥
लग्गा बावन५२ संगही रन कौतुक आया ॥

॥ २२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह चरित्र में, कोटा के पति का यत्न निष्फल होना १ राणा का तिलक की सामग्री बुन्दी भेजना २ हरजन का कैद से निकलना ३ मल्लार का हिन्दुस्थान में आना "सामान्य रीति से सभी भारत वर्ष का नाम हिन्दुस्थान है परन्तु विशेष करके भारत वर्ष के पूर्वी प्रान्त को हिन्दुस्थान कहते हैं" नैणवा पुर में युद्ध करना और दलेलसिंह के पुत्र कृष्णसिंह का भागना तथा बुन्दी के पति का उसकी भूमि लेने का छत्तीसवां मयूख समाप्त हुआ।३६। और आदि से तीन सौ सत्रह ३१७ मयूख हुए ॥

१ भागा २ किया ॥ १ ॥ ३ शेषनाग की सांकल (पीठ की लंबी हड्डी) फटी ४नवीन मुंडमाला का लोभ लगने से शिव के नेत्र खुले युद्ध का खेल देखने

जाल बनाया जुग्गिनी कर ताल बजाया ॥ २ ॥
गिद्धनि चिल्हनि गैनमैं गन के गहकाया ॥
धूरि बिलग्गी भानुकैं सब भानु छिपाया ॥
शृंग सचक्के मेरुके धर खंड धुजाया॥
हाक नकीबनकी मची दल डाक लगाया ॥
सुनि आवत दक्खिन कटक कूरम अकुलाया ॥
दूत कग्गर बुंदीसपैं लिखवाय पठाया ॥
छंडी कौर्निस रावरी हम साम बनाया ॥
हुलकर सम्मिलि होय क्यों अब दंड उपाया ॥ ४ ॥
किन्नों प्रथम करार जो नहिं नैंक मिटाया ॥
अब कैसे अपराधपैं मल्लार कुपाया ॥
केसव आपस नाँ किया इम मारि गिराया ॥
दास तदपि आमेरका इनका न नसाया ॥ ५ ॥
अग्गें रंचक दोसपैं अतिदंड न गाया ॥
समुझावहु तुम संभरी हुल्कर हठ आया ॥
एकाकी अब अप्पको अवलंब बनाया ॥
ए कग्गर आमेरका मुनसीन सुनाया ॥ ६ ॥
बिनय भरे सुनि बैन ए संभर सकुचाया ॥
मंत्र बिरचि मल्लारतैं हिय गूढ खुलाए ॥
हुलकर अरुबी भूपतैं नहिं बैर सिवाया ॥
दक्खिन सिंधा अहदी बलि दर्प बढाया ॥ ७ ॥
मारन केसवदासकों इन बैन लगाया ॥

---

१० मनुष्य और अंश रूप योगिनियों ने समूह बनाकर हाथ की तालियां बजाईं ॥ २ ॥ गिद्धनियों और चीलनियों के समूह १ आकाश में २ चमत्कार को प्राप्त भये, ३ और ४ धूलि की [illegible] के धूलि उड़कर सब ५ सूर्य को छिपा दिया ६ मेरु को [illegible] दिलाया ॥ ३ ॥ ७ चक्र ८ ध्वनि ॥ ४ ॥ ९ केशवदास ने कहीं [illegible] इस कारण ॥ ५ ॥ १० अपने [illegible] आपका ॥ ६ ॥ ७ ॥

जिहिँ बलतैं बुंदी बहुरि चउ४ देस गुमाया ॥
सो हुलकर तेरो कहाँ अब अंतक आया ॥
ऐसैं कहि अपराध बिनु पटु सचिव नसाया ॥ ८ ॥
ताहीके दृढ दोसपैं इत मैं चलि आया ॥
मारनका नहि मंत्र पैं अति दर्प छकाया ॥
यातैं रुप्पय दंडका लैहैं मनभाया ॥
बुंदीपति सुनि बैन ए प्रतिबैन लिखाया ॥ ९ ॥
कूरम हम तुमरैं कहैं हुलकर समुझाया ॥
पै पिसुननकी मन्निकैं तुम दर्प दिखाया ॥
यातैं आयस नन्हका लहि कटक चलाया ॥
केसवदास बिनासका इन ओगुन गाया ॥ १० ॥
मारनका नहिँ मंत्र पै धन लैन धकाया ॥
प्रत्यागत इच्छैं नहीं एहू हठ आया ॥
यातैं अप्पहु अप्पहू दंम दम्म सिवाया ॥
लै तिनकौं टरिजाँहिंगे दल खरच दुखाया ॥ ११ ॥
ए कग्गर कूरम सुनत इत मंत्र उपाया ॥
देनाँ दम्म न उच्चित करि लरनाँ चित लाया ॥
अक्खी हरगोबिंदसौं रनहीं मन भाया ॥
बीरन बुल्लहु बेगही दल सजवं सुहाया ॥ १२ ॥
कूरम याकी कन्यका रक्खी करि जाया ॥
यातैं हरगोविंदहू अवसर यह पाया ॥
बुल्ल्यो मेरी जेबमैं दल लक्ख १००००० सजाया ॥
जब चाहैं तब लीजिये भट संगर भाया ॥ १३ ॥

१काल॥८॥२उत्तर ॥९॥३चुगलों की४घमंड ५नन्ह का हुकम लेकर ॥१०॥६पीछा जाना नहीं चाहता ८ आपभी ९ दंड के रुपये ७ दो ॥११॥ १०शीघ्र ॥१२॥ ११ हरगोबिन्द नाटानी की कन्या को १२स्त्री ॥ १३ ॥

मरहट्ठे मन भीरुहै जब बाजि उठाया ॥
तबही पायन लग्गिहै [1]ओदक अकुलाया ॥
तुम आमेर अधीसव्है सिर छत्र धराया ॥
वे अनुचर द्विज दीनकी इत आत सिखाया ॥ १४ ॥
भिच्छा[2] मंगनहारका जिन ओदन[3] खाया ॥
ते प्रभुकौं पहुँचे नहीं असि त्रास डराया ॥
कहाँ जेठ दिनंकर[4] कहाँ खद्योतं[5] खिसाया ॥
कहाँ सिंह गज्जरिपु कहाँ किखि[6] दुब्बल काया ॥ १५ ॥
कहि कहि हरगोबिंद इम कूरम बहिकाया ॥
हरिनारायन पुत्र निज पंख[7] १५ पुब्ब सिखाया ॥
सब जैपुर पतिके सुभट सुत संग दिवाया ॥
सेखावाटी मुलकमैं पहिलैंहि पठाया ॥ १६ ॥
अच्छे तोप तुरंग गन सब तत्थ चलाया ॥
कूरम जब मंग्यो कटक[8] मंडी तब माया[9] ॥
मो ढिग लक्ख १००००० अनीक है यह छंद्म[10] रचाया ॥
दक्खिनका उत पत्रदै बल[11] बेग बुलाया ॥ १७ ॥
आवैं जितनैं अंतरँगैं[12] इम दिवस गुमाया ॥
इततैं हुल्लकर हड्ड नृप दरकुंच चलाया ॥
जैपुरतैं त्रय३ कोसपैं निज दल उतराया ॥
झिलि[13] झल्लाँनाँ[14] कुंडपैं झंडाल झुकाया[15] ॥ १८ ॥
नट्टानी[16] तब सचिव निज कच्छवाह बुलाया ॥

१भय से ॥१४॥ जिसने२भिक्षा मांगनेवाले(ब्राह्मण)का३अन्न खाया४ज्येष्ठ मास का सूर्य५जुगनू (आगिया). दुर्बल शरीरवाला ६बन्दर ॥१५॥७एक पक्ष पहिले ही ॥ १६ ॥ ८ सेना ९ इन्द्रजाल १०छल ११सेना ॥ १७ ॥ १२बीच में १३ ठहर कर (प्रसन्नता पूर्वक ठहरनेको डिंगल भाषा में झिलना कहते हैं). १४झलाना नामक कुंड पर१५झंडे खड़े किये(डिंगल भाषा में अत्यन्त ऊंचा करने को अथवा खड़ा करने को झुकाना कहते हैं) ॥ १८ ॥ १६ नाटानी जाति का वैश्य

बुल्ल्यो तैं तव जेबमैं दल लक्ख १००००० बताया ॥
वाकों कहहु पार अब अरि[1] अंतिक आया ॥
बिनु उद्यम तेरे कहैं दिन बीस बिताया ॥१९॥
बुल्ल्यो हरगोबिंद तब तुम आखु[2] लगाया ॥
तिन कट्टी मम जेब ओ बल सब बिखराया ॥
नट्टानी यह जंपिकैं निज गेह पलाया[3] ॥
इत आमैर अधीसकौं अब त्रास दबाया ॥ २० ॥
हय अंबर धृति १८०७ पोस बदि नवमी९ दिन पाया ॥
तास निसाके जाम[4] जुग२ नृप निठ्ठि गुमाया ॥
जानी बनिक बिरोधकैं भावी बिगराया ॥ २१ ॥
छन्नैं[5] गरल[6] अमत्र इक मतिमंद[7] मँगाया॥
सुत्तो ताको पान करि दुव२ नैंन मिचाया ॥
काहू नाँहिं जानी यहै नृपनैं बिख खाया ॥
खात समैं इक पत्रमैं इम अंक लगाया ॥ २२ ॥
सुनिये संभर[8] प्रांत जे अनुचरन[9] उठाया ॥
ईश्वर लेहँ[10] मिटैं नहीं जुग जुग जे गाया ॥
प्याला केसवदासकौं पीया[11] सुहि पाया[12] ॥
ऐसैं लिखि आमैरपति इम बेर[13] बिहाया ॥ २३ ॥
जानी सचिवन प्रात जब पुर द्वार लगाया ॥
इत खंडू हुलकर तनय नृप डेरन आया ॥
अक्खी चढि अप्पन चलैं भट लै मन भाया ॥
बाहिरतैं लखि आयहै पुर सुनत सुहाया ॥ २४ ॥

---

१ समीप ॥ १९ ॥ २ चूहे ३ भगा ॥ २० ॥ ४ उस दिन की रात्रि के दो पहर कठिनाई से बिताये ॥ २१ ॥ ५ जहर का ६ पात्र ७ मूर्ख ने ॥ २२ ॥ ८ हे चहुवाण रामसिंह सुनो ९ सेवकों ने १० लेख ११ जो विष का प्याला केशवदास को पिलाया सो ही पीछा १२ मिला १३ शरीर छोडा ॥ २३ ॥ २४ ॥

सह खंडू नृप संभरी चढि तबहि चलाया॥
संग लये भट तीन सत३०० निज परख गिनाया ॥
जैपुरके प्राकार ढिग रहि तुरग बिहाया ॥
इक्क अटा चढिकैं सकल पुर त्यौं हग लाया ॥ २५ ॥
जैसैं जैपुर सिल्पमत जयसिंह बसाया ॥
भेदी कोउक अंग ते कहि भिन्न बताया ॥
यह कूरम सचिवन सुनी दुवर देखन आया ॥
तब पुर दक्खिन द्वारका द्रुत अरर खुलाया ॥ २६ ॥
सिविका हरगोबिंद१ चढि बाहिर कढि धाया ॥
बिद्याधर१ त्यौंही बहुरि दुवर सम्मुख चलाया ॥
आय निकट बुंदीससौं सब वृत्त कहाया ॥
जैसी बिधि गर रत्तिमैं नृप गरल चढाया ॥ २७ ॥
दोहूर सचिवनकौं सुनत इन सँपथ कराया ॥
तब सच्ची गिनि सेनमैं यह वृत्त पठाया ॥
सो सुनि हुलकर सैन लै जैपुर ढिग आया ॥
करि मुकाम प्राकार तट निज थूंल तनाया ॥ २८ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे हुलकर१ हड्डेन्द्र२जयपुरप्रस्थानप्राप्तकूर्मराजपत्ररावराजमल्लाराऽनुनयनकथितकेशवदासवैरहुलकरजैपुरगमनमंत्रिहरगो-

१कोट के पास रहकर घोड़ों से उतरे २ छत पर चढकर सब नगर देखा ॥२५॥ ३ नगर के उन अंगों को ४कपाट ॥ २६ ॥ ५ पालखी पर६राजा ने विष खाया ॥ २७ ॥ ७ सौगन कराये ८ वृत्तान्त ६ डेरा ॥ २८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह चरित्र में, हुलकर और हाडा चत्रियों के इन्द्र का जयपुर पर गमन करना १ कछवाहों के राजा का पत्र पाकर रावराजा का हुलकर से विनय करना २ कहे हुए केशवदास के वैर पर हुलकर का जयपुर जाना ३ मंत्री हरगोविन्द का पीठ पीछे सेना को निकाल कर जयसिंह के पुत्र को विश्वास देना ४ शत्रु

विन्दपरोद्धसैन्यनिष्कासनजाथसिंहविश्वसनज्ञातशत्रुसामीप्यसैन्य रहितपीतगरलकूर्म्मराजदेहत्यजनबौधसिंहि १ मल्लारि २ जयपुर बहिर्दर्शनजयपुरसचिवतत्सम्मिलनहुलकरा ऽऽहानप्राकाराऽधःपृत नापातनं सप्तत्रिंशो ३७ मयूखः ॥ ३७ ॥ आदितः ॥ ३१८ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

पोस असित[1] दसमी१० दिवस, इम जयपत्तन आय॥
पुनि प्रबंध अपनों करन, लिय बुंदीस बुलाय ॥ १ ॥
अक्खी तुम जावहु नृपति, लखि पुर राजनिकाय[2] ॥
अंतहपुर[3] जुत अप्पनाँ, जागिक[4] देहु जमाय ॥ २ ॥
तब पुर अंतर जाय नृप, धरि चोकी सब ठाम ॥
कहिय आय मल्लार प्रति, भये नृपहिं खट६ जाम[5] ॥ ३ ॥
उचित दाह कछवाहको, अब न बिलंब बिधेय ॥
इते काल रंक न रहैं, श्रुति[6] अक्खत सुहि श्रेय ॥ ४ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

सुनि हुलकर कछु सोक सहित हुव, जैपुर सचिव बुलाये वे दुव२॥
हरगोविंद१ बहुरि बिद्याधर१, तिनहिं कह्यो दाहहु नृप सत्वर[7] ५
तब तिन अरज मलारहिं किन्नीं, चोकी तुम अप्पन धरि दिन्नीं॥
कोस[8] सबहि नहिं हत्थ हमारैं, किहिं ठाँ[9] सन उपकरन[10] निकारैं६

को समीप जानकर सेना रहित कछवाहे राजा का जहर पीकर शरीर छोड़ना ५ बुधसिंह के पुत्र और मल्लार के पुत्र का जयपुर को बाहर से देखना ६ जयपुर सचिवों का उनसे मिलना और हुलकर को बुलाना और कोट के नीचे सेना का पड़ाव करने का सैंतीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥३७॥ और आदि से तीन सौ अठारह ३१८ मयूख हुए ॥

१ बदि ॥ १ ॥ २ राजमन्दिर (महल) ३ जनाना सहित ४ अपने पहरायत ॥ २ ॥ ५ राजा को मरे छः पहर होगये हैं ॥ ३ ॥ ६ वेद कहता है सो ही श्रेष्ठ है ॥ ४ ॥ ७ शीघ्र ॥ ५ ॥ ८ खजाने ९ किस जगह से १० सामग्री ॥ ६ ॥

इन अक्खिय इम सन लै जावहु, नहिं*निदेस किम कोस खुलावहु
यह सुनाय निज कोसनतैं तब, सामग्री हुलकर पठई सब ॥७॥
ताहि संग बनिक१ रु विद्याधर१, लै तब उभय२ गये पुर अंदर ॥
राज्य बडो कछु काम न आयो, हुलकरतैं खंपनं नृप पायो ॥८॥

॥ दोहा ॥

महलन बिच निष्कुट२ रुचिर, जयनिवास अभिधान३ ॥
किन्न दाह कछवाहको, तिहिं ढिग विहित विधान४ ॥ ९ ॥
बिगरी ईश्वरिसिंह मति, बरस इक्क१ पहिलैंहि ॥
सुपहु राम सोपे सुनहु, नर कच्चे इम ठैंहि ॥ १० ॥
मत्त भयो जयसिंह सुव, जैपुर गद्दिय पाय ॥
खान१ नाम इभपाल५ इक, किन्नौं सचिव बढाय॥ ११ ॥
जवन वहै उनमत्त भो, नृपको हेत निहारि ॥
अति अनीति लग्गो करन, पर नारिन घर डारि ॥ १२ ॥
कूरम आँसव पान करि६, इकदिन बुल्ल्यो वाहि७ ॥
मंदिर श्रीगोबिंदके, चित कछु मंत्रन चाहि८ ॥ १३ ॥
बरज्यो इतरनं९ तदपि तँहँ, किन्नों कुम्भ अजान ॥
आधोरंनके१० हत्थतैं, पानकरसंको११ पान ॥ १४ ॥
पुनि वासौं गलबाँहँ करि, फिर्‍यो निरंकुस होय ॥
जब आसव मद उत्तर्‍यो, सोच्यो तब सठ रोय ॥ १५ ॥
दिवाकीर्ति१२ इक दैधिषव१३, बारी संभुवर नाम ॥
सोहु बढायो सचिव करि, दै सिविका गज गाम ॥ १६ ॥

*हुकम ॥ ७ ॥ १ मुरदे को ओढाने (ढकने) का वस्त्र ॥ ८ ॥ २ गृहवाटिका (घर का बगीचा) ३ नाम ४ उचित विधि से ॥ ९ ॥ १० ॥ ५ महावत को ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ६ मद्य पीकर ७ उस महावतको बुलाया ८ सलाह करने की इच्छा से ॥ १३ ॥ ९ अन्य लोगों ने मना किया तोभी १० हाथी के महावत के हाथ से उस मंदिर में ११ मद्य पान किया ॥ १४ ॥ १२नाई १३अविवाहिता(नातेवाली)

अंत्यज लोक अनेक इम, रक्खे ढिग पटु जानि ॥
मरयो सु कूरम लै गरल, यहँ दक्खिन भय आनि ॥ १७ ॥
*बारनारि इक रूप [1]बसु, मन्नी तिय करि मेल ॥
सोहु जरी रचि सहगमन, जयनिवास [2]गृहवेल्ल ॥ १८ ॥
दूजेदिन हुलकर तनय, किन्नौं खंडुव बत्त ॥
कूरम गृह सुंदर सुनत, पातुरि बहु गुन रत्त ॥ १९ ॥
लखि अच्छी तिनमाँहिंसौं, चुनि चुनि काल्हि मँगाय ॥
घर हम सुग्गन रक्खिहैं, गिनत समर्थ न न्याय ॥ २० ॥
यह [3]उदंतें [4]अवरोध गत, सुनि पातुरि भय पग्गि ॥
एकादसि [5]बासर जरी, एकादस ११ लहि अग्गि ॥ २१ ॥
रानिनहू यह भय सुनत, इक गृह सोर बिछाय ॥
सबन बिचारी उडनकी, करन प्रान बिनु [6]काय ॥ २२ ॥
तब आतुर नाजर जनन, अक्खी बाहिर आय ॥
जो न बनैं [7]सत्वर जतन, रानी जन उडि जाय ॥ २३ ॥
आये हुलकर संग यहँ, माधवकेहु वकील ॥
बनिक कन्ह [8]कोबिर्द बहुरि, कूरम प्रेम [9]कुसील ॥ २४ ॥
तिन यह सुनि बुंदीस प्रति, अक्ख्यो अनुचित कर्म ॥
भूप सुनत अति कोप भरि, धरयो लरन भट धर्म ॥ २५ ॥

॥ षट्पात् ॥

[10]असनायित हरि अंग मनहुँ [11]बिच्छिय [12]अल मारिय ॥
[13]साँगर सापन असह अंखि जनु [14]कपिलँ उघारिय ॥

स्त्री का पुत्र ॥ १६ ॥ १७ ॥ *वेश्या रूप ही है १ धन जिसके २ घर (महलों) के बाग में ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ ३वृत्तान्त ४जनाने में गया ५ एकादशी के दिन ॥ २१ ॥ ६ शरीर को विना प्राण करने के लिये ॥ २२ ॥ ७शीघ्र उपाय नहीं होवेगा तो ॥ २३ ॥ ८ चतुर ९ खोटे स्वभाववाला ॥ २४ ॥ २५ ॥ मानों १० भूखे सिंह के शरीर में ११ बीछू ने १२डंक मारा किंवा १३ सगर के पुत्रों को श्राप देने को १४ कपिलदेव ने नेत्र खोले, मानों कालिका ने शुंभ असुर के ऊपर

काली मनहुँ कराल सुंभ उप्पर त्रिसूल लिय ॥
दलन जंभ दंभोलि पकरि पलट्यो कि सचीप्रिय ॥
श्रीवत्सधर कि सिसुपालके अंतिम आगसँ उज्झलिय ॥
इम भूप सुनत खंडुव अनय करखि मुच्छ बुल्लिय बलिय२६
सुनहु बत्त मल्लार सल्ल मिच्छन उर अप्पन ॥
पठये तुम पुराधेस धर्म हिंदुन दृढ थप्पन ॥
अनय अज्ज इक सुनिय तनय भवदीय कहत यह ॥
नृप जैपुर पति नारि गेह डारहिं करि अंग्गह ॥
सब ठाम लज्ज एकहि समुझि अब खंडुव बरजन उचित॥
उनमाँहिं हमहु नहिंतो अबहि हहुन हिय तुमतैं न हित ॥२७॥

॥ दोहा ॥

हैं हमरी बेटी बहिनि, उनके आलय माँहिं ॥
त्यौंहि समझहु चतुर तुम, उनकी हम घर आँहिं ॥ २८ ॥
अज्ज बिपत्ति जु एक बिच, सो दूजे बिच सोहि ॥
मनुजनको तब जब मरन, तो बर अवसर कोहि ॥ २९ ॥
हम सिर तुम आसान किय, इन पर डारि चपेट ॥
जो समुझहु कृतघन हमहिं, तो बुंदिय वह भेट ॥ ३० ॥
यह अनीति जो नीति करि, मन्नैं हमहु प्रमत्त ॥

भयंकर त्रिशूल लिया, किंवा जंभासुर को मारने के लिये १ वज्र पकड़ कर २ इन्द्र पलटा, किंवा ३ श्रीकृष्ण शिशुपाल के अंतिम ४ अपराध पर बढे "श्रीकृष्ण ने शिशुपाल की माता को वरदान दियाथा" कि शिशुपाल हमारे सौ अपराध करेगा तबतक हम उसको नहीं मारेंगे सो युधिष्ठिर के यज्ञ में एक सौ एक अपराध करने पर उसको मारा था इस प्रकार बुंदी का राजा (उम्मेदसिंह) खंडू की अनीति को सुनकर मूंछ ५ खैंचकर वह बलवान् बोला ॥ २६ ॥ ६ अपन यवनों के उर में साल हैं ७ पूना के पति ने ८ आज एक अनीति सुनी है ९ आप का १० आग्रह ॥ २७ ॥ ११ घर में. हमारे घर में १२हैं ॥ २८ ॥ १३ मनुष्यों को. अवसर का मरना ही १४श्रेष्ठ है ॥ २९ ॥ ३० ॥

अखिल दिखावैं अंगुलिन, बिरख्ख बिरुख्ख कहि वत्त ॥ ३१ ॥
धरम चलावत नयधरन, तुम सहाय भुव लीन ॥
अधरम करि लैबो उचित, पाक दमन पदवी न ॥ ३२ ॥
सोदरतैंहु सखा अधिक, सो कूरम १ तुम १ सूर ॥
यातैं खंडुव मात वे, तिनकौं तक्कत कूर ॥ ३३ ॥
नृपति अंखि सच्ची निरखि, जानी यह मरिजाय ॥
हित करि हुलकर हड्डकौं, लिन्नौं हृदय लगाय ॥ ३४ ॥
काल देस आलोच करि, चित्त धरम दृढ चाहि ॥
तरज्यो अप्पन पुत्रकौं, संभर नृपहि सिराहि ॥ ३५ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे कूर्म्मराजमरणज्ञानाऽनन्तरहड्डेन्द्रपूर्वकमहाराष्ट्रजामिकजयपुरदत्तणादत्तस्वोपहारहुलकरकूर्म्मराजदाहनतत्पूर्वाऽनाचारकथनैकवारस्त्रीतत्सहगमनमाल्लारिकूर्म्माऽन्तःपुरलुट्टनमननश्रततदुदन्तैकादश ११ भुजिष्याज्वलनानिवसनसर्वराज्ञीजनवन्हिविशनविचारणज्ञाततद्वृत्तान्तहड्डेन्द्ररोपाऽरुणीभवनमल्लारशिक्षादानवाक्प्रतोदप्र

१नकटा नकटा कहकर ॥३१॥ धर्मको चलाने और २ नीतिको धारण करने को बुंदी की भूमि पीछी ली है ३ बुढापा ४ बिगाड़ने की पदवी लेना उचित नहीं है।३२। ५ सगे भाई से भी मित्र अधिक होता है सो ईश्वरीसिंह और तुम पाव ,बदल कर सखा हुए हो ६ इस कारण ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ७ विचार कर ८ धमकाया ॥ ३५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में, उम्मेदसिंह चरित्र में, कछवाहों के राजा के मरने का ज्ञान हुए पीछे हड्डेन्द्र आदि का (मरहटों के पहरायत रखना १ हुलकर का सामग्री देने से कूर्मराज का दाह होना और उसके पहिले के दुराचारों का कहना २ उसके साथ एक वेश्या का सती होना ३ मल्हार के पुत्र का कछवाहे के जनाने को लूटने का विचार करने का वृत्तान्त सुनकर ग्यारह पासवान स्त्रियों का अग्नि में प्रवेश करना और सब राणियों का अग्नि में प्रवेश करने का विचार करना ४ वह वृत्तान्त जानकर हड्डेन्द्र का क्रोध में लाल होना और मल्हार को शिक्षा देने रूपी वचनों के चाबुक से समझाये हुए हुलकर का हड्डेन्द्र को हृदय लगाना ५ अपने पुत्र खंडु को

बोधितहुलकरहड्डेन्द्रहृदयाऽऽश्लेषणास्वपुत्रखण्डूतर्जनमष्टत्रिंशो मयूखः ॥ ३८ ॥ आदितः ॥३१९॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ षट्पात् ॥

सुनि अक्खिय मल्लार प्रबिसि जैपुर बुंदियपति ॥
कूरम सचिवन कहहु मोद रक्खहु [1]लासहु मति ॥
प्रकट जाय [2]प्रच्छन्न कुम्भ नृप तियन कहावहु ॥
धन्य सती तुम धरम सोहु हम तियन सिखावहु ॥
कछु [3]बोधहीन खंडुव कहिय आगस [4]बखसहु मोहि यह ॥
[5]निजनाथ मित्र मम सिर निडर सासन करहु सखीन सह॥१॥

॥ दोहा ॥

सुनि इम हड्ड नरेस तब, बिस्वासे सब जाय ॥
अक्खी डरहु न नैक अब, हम तुम संग सहाय ॥ २ ॥
तबहि पाय बिस्वास तिन, प्रतिउत्तर दिय एह ॥
उपकारहिं अपकार पर, नृप तुम किन्न सनेह ॥ ३ ॥
[6]स्वापतेय अब दंडको, मंगहिं यह मल्लार ॥
कछुक घटावहु जतन करि, सोपै संभरवार ॥ ४ ॥
कोटि पंच५००००००० हुलकर कहे, लैन दम्म हठ लाय ॥
बुल्ल्यो तँहँ नृप करि बिनय, जुलम सह्यो किम जाय॥५॥
बहुत बेर दक्खिन दलनँ, कूरम दंडित कीन ॥
लखि श्रद्धा वसु लीजिये, इन्ह गिनि निबल अधीन ॥ ६ ॥

धमकाने का अड़तीसवाँ मयूख समाप्त हुआ ॥३८॥ और आदि से तीन सौ उन्नीस ३१९ मयूख हुए ॥

१ डरो मत २ जनानी ड्योढी पर ३ बिना विचार से ४ अपराध ५ मैं तुम्हारे पति का मित्र हूं सो निर्भय होकर मेरे मस्तक पर आज्ञा करो ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ६ धन ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ सेना ने ८ धन ॥ ६ ॥

कारिज[1] पर खरचत कला[2], मूलहिँ रक्खि समग्ग[3] ॥
अरथ[4] पटुनकी रीति यह, अक्खी वृद्धन अग्ग ॥
कला बढत पुनि मूलकरि, मूल मिटैँ सु मिटाय॥
जैसैँ रैंजका[5] मूल जुत, लयो न पुनि लहराय[6] ॥ ८ ॥
जातैँ पुनि बसु उप्पजहिँ, ऐसो रक्खि उपाय ॥
अक्खहु दम श्रद्धा उचित, हठ तजि हुलकर राय ॥ ९ ॥
हम मन्नहिँ आसान यह, देखहु सक्ति उदार ॥
कुँल्ल्या[7] जल होय न कबहु, पूरन पारावार[8]॥ १० ॥
तब निहारि भूपति बिनय, काल१ देस१ अरु काज१ ॥
दम्म कोटि इक१००००००० दंडके, रक्खे हुलकर राज ॥११॥
तीन३ अंस श्रीमंतके, चोथो४ निज करि चित्त ॥
ऐसे क्रम आमेर सन, बंटन मंग्यो बित्त ॥ १२ ॥
कतिक[9] दम्म मनि गन कतिक, भूखन कतिक नवीन ॥
करि किम्मति गज हय कतिक, दंड माँहिँ तब दीन ॥१३॥
बारी[10] संभुव१ खान२ बलि, पीलुंपाल[11] पकराय ॥
दम्म घटे तिनमैँ दये, हरगोबिंद कहाय ॥ १४ ॥
कीलित[12] तब दोऊन२ करि; लै लक्खन हठ लग्गि॥
कोटि अंक१००००००० पूरन कियउ, प्रकट लोभ बस पग्गि
इत माधव कछु अध्वभव[13], खेद उदैपुर टारि ॥
पत्तो पत्तन रामपुर, पाय परग्गन च्यारि४॥ १६ ॥
निज पतनी रट्ठोरि लिय, दोहँद[14] लच्छन धारि ॥

१कार्य पर२व्याज(सूद)खरच करते हैं३समग्र४धन में चतुर लोकों की ॥७॥ मूल रहने से ही व्याज बढता है और मूल के मिटने से व्याज (सूद) उसके साथ ही इस तरह मिटजाता है जैसे ५ रजके (घास विशेष) को मूल सहित ले लेने से फिर ६ हरा नहीं होता ॥ ८ ॥ ९ ॥ ७ नहर के पानी से ८ समुद्र नहीं भरता॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ ९ कितनेक तो रुपये ॥ १३ ॥ १० पुनि ११ महावत को ॥ १४ ॥ १२ कैद करके ॥ १५ ॥ १३ मार्ग से पैदा हुआ ॥ १६ ॥ १४ गर्भ

कूरम उद्धव¹ तास किय, अष्टम८ मास उतारि ॥ १७ ॥
यातैं हुलकर संग इत, आयो नहिं कछवाह ॥
कन्ह१ रु प्रेम१ वकील दुव२, लखनैं² पठाये लाह ॥ १८ ॥

॥ षट्पात् ॥

ईश्वरिसिंह निपात सुनत हुलकर³ दल मुक्लि ॥
बुल्लिय माधव वेग बंचि पत्र सु आयो चलि ॥
संगानेर समीप रह्यो कति दिन मुकाम करि ॥
बारह१२ दिवस बिताय गयो जयनैर गर्ब भरि ॥
सुनि आत कटक जयपुर सहित बुंदिय पति१ हुलकर२ वलिय
जद्दव नरेस३ खंडुव४ सजव हत्थिन चढि सम्मुह हलिय॥१९॥

॥ दोहा ॥

जद्दव नृप गोपाल जँहँ, नगर करोली नाह ॥
मंत्र करन मल्लार सन, आयो मिलन उछाह ॥ २० ॥
वह१ अरु खंडुव इक्क१ इभ⁴, बैठि चले तिहिं बेर ॥
प्रथम कहे तेर२ रहि पृथक, फैलत फोजन फेर ॥ २१ ॥
मिले परसपर मन मुदित, सबै विहित⁵ सतकार ॥
इक्क१ अनेकप⁶ आरुह, माधव१ अरु मल्लार२ ॥ २२ ॥
कुम्भ कह्यो न मुहूर्त अब, प्रबिसैं नहिं पुर पोरि ॥
अब प्रबिसहु हुलकर कहिय, सँध्या आत बहोरि ॥ २३ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

इम कहि नगर प्रवेस करायो, निज महलन माधव नृप आयो ॥
पहुँचावन मल्लार आदि सव, गये जलेवचोक लगि ए तव ॥२४॥
चढे गजन डेरन पुनि आये, वलि उत्तरि कटिवंध विहाये ॥

१ उत्सव ॥१७॥ २ लाभ देखने को ॥ १८ ॥ ३ पत्र भेज कर ॥ १९ ॥ २० ॥ ४ एक हाथी पर ॥ २१ ॥ ५ उचित ६ एक हाथी पर माधवसिंह और मल्लार चढे ॥२२॥ ७ फिर जया नामक सिंधिया आता है ॥ २३ ॥ २४ ॥ ८ कमरबंध खोले

हुलकर निज बुल्ले जोमिक जन, माधव अमल कियो जयपत्तन२५

दोहा–संध्या पुनि राणांजि सुत, सजि दुद्धर बहु सैन ॥
जयपत्तन आयो जया, अति जव छेकत अैन[3] ॥ २६ ॥

॥ गीतिका ॥

सुनिकैं जया जयनैर आवत दुहु १ कूरम २ हू चढे ॥
दलमैं नकीवन दोरि[4] आरव जान सम्मुहके[5] पढे ॥
सह भूप जद्दव १ पुत्र खंडुव २ लै मलार १ हु संक्रम्यों[6] ॥
इम च्यारि ४ चक्कन[7] चालतैं भय च्यारि ४ चक्कनमैं[8] भ्रम्यौं २७
मुदपाय मुत्तियडुंगरी तक जाय सम्मुह ए मिले ॥
सब पुच्छि मंगल माँहि माँहिं बहोरि पत्तन त्यौं पिले ॥
अरु चंदपोरि मुकाम अप्पन दै जया तँहँ उत्तरयो ॥
पुनि मंत[9] मित्तं[10] मलारतैं दंम[11] बित्त बंटनको करयो ॥ २८ ॥
तबही मलार पचीस लक्ख२५०००००लये ति[12] दोउ रन बंटये
श्रियमंतके पुनि पंचसप्तति लक्ख७५०००००दक्खिन प्रेरये ॥
अरु जैपुरेस दुहून २ सौं महिमानि जिम्मनकी कही ॥
सुनिये महीपति राम जो इक१ हाँ चही इक१ नाँ चही ॥२९॥

दोहा–हुलकर १ बत्त सु आदरिय, पै संध्या १ किय नाँहिं ॥
बुल्ल्यो जैपुर देत बिख, मिठी[13] कहि खिनमाँहिं ॥ ३० ॥
देखि रीत बुंदीसकी, आरंभत तुम एह ॥
पै दुहु अकपट प्रथित[14], गाढ कुहक[15] यह गेह ॥ ३१ ॥

हुलकर ने जयपुर के खजानों पर अपने १ पहरायत रक्खे थे सो बुलालिये २जयपुर में ॥२५॥ ३मार्ग को ॥ २६ ॥ ५ सम्मुख जाने के ४ शब्द पढे ६ चला ७ चतुरंगिणी सेना के चलने से ८ चारों दिशाओं में भय फैला ॥ २७ ॥ ९ मंत्र. अपने १० मित्र मलार से जया ने ११ दंड के धन को बांट लेने के लिये कहा ॥ २८ ॥ १२ते (वे) ॥ २९ ॥ १३ मीठी बातें कहकर ॥ ३० ॥ १४ कपट रहित प्रसिद्ध हैं १५ जयपुर का घर बडा छली है ॥ ३१ ॥

॥ षट्पात् ॥

सोदर १ कहँ जयसिंह अग्ग हालाहल अप्पिय ॥
मारे पुत्र २ रु मात ३ तदपि पप्पिय नन तप्पियँ[4] ॥
मानँ[5] हनिय मारूफ ६ जलधि बिस्वास निमँ[7]ज्जत ॥
ढुंढाहरके ढोल बिदित याही गति बज्जत ॥
तातैं न हमहि निश्चय तुलत स्वागत हम मन्न्यौं सकल ॥
कछु बित्त तुरग पुनि भेट करि कुंच करावहु छोरि छल ॥३२॥
तदनंतर मरहट्ठ[8] द्रंग[9] अंतर दूजे दिन ॥
क्रय[10] विक्रय कछु करन बहुत प्रबिसे संका बिन ॥
तिनकी बंधन तोरि इक्क १ बड़वी[11] पुर आई ॥
सो सेखाउत सठन छन्न ग्रह बंधि छुपाई ॥
लखि ताहि खुल्लि लावन लगे उन तब झारिय खग्ग औरै[12]॥
यह हक्क मचिग पत्तन अखिल अरु द्वारन लग्गे औरर[13] ॥३३॥
सुनत सोर गहि सजव लोक पत्थर असि लट्ठन ॥
पुरके मिलि मिलि प्रचुर लगे मारन मरहट्ठन ॥
है जन च्यारि हजारि ४००० च्यारि तिनके बिभाग करि ॥
अंस तीन ३ अँ[14]सुहीन भये लवँ[15] इक्क १ घाय भरि ॥
बाहिर गये ति पुरजन बहुत भजत हनैं दक्खिन भटन ॥
बुंदीस कटक आय रु बचे करि कितेक अतिजँव[16] अटन ॥३४॥

॥ दोहा ॥

आनत बाँ[17]सी अप्पनी, दक्खिन लोक अदोस ॥

१सगे भाई विजयसिंह को२जहर दिया था ३तोभी पापी४तृप्त नहीं हुआ ५मानसिंह ने ६ विश्वास रूपी समुद्र में ७डूबते हुए को ॥३२॥८जिस पीछे ९नगर में १०लेन देन को ११घोड़ी बंधन तुड़ाकर शहर में चली आई १२ शीघ्र तरवार चलाई१३दरवाजों के किवाड़ लगगये ॥ ३३ ॥१४तीन पांती के मारेगये १५एक पांती के घायल हुए १६ शीघ्रता से भगकर ॥ ३४ ॥ १७ अपनी घोड़ी लाने में

अपराधी जैपुर जनन, रच्यो *अलीकहि रोस ॥ ३५ ॥
मनुज समर्थनके मरत, तक्क्यो माधव त्रास ॥
भावी निज चिंतत भयो, संतत[1] डारि निसास ॥ ३६ ॥
हुलकरराज समीपहो, कुम्म[2] सचिव इहिं काल ॥
प्रान बचन पायन परयो, बनिक सु कन्ह बिहाल ॥ ३७ ॥
देखि ताहि हुलकर सदय[3], कुंदिय सचिव बुलाय ॥
अक्खी संभर पास इहिं, धरहु जिवावन जाय ॥ ३८ ॥
दक्खिन जन नहिंतो दुमन, अब आयस[4] इच्छै न ॥
ढुंढत जन ढुंढारके, हनत फिरत रुकिहै न ॥ ३९ ॥
मयाराम१ कायस्थ तब, दयाराम२ द्विजराज ॥
पत्ते लै बुंदीस प्रति, कन्ह जिवावन काज ॥ ४० ॥
संध्या कुप्पित[5] एह सुनि, बिरचन जैपुर बाध[6] ॥
बहु माधव थप्पिय बिनय, अप्पिय तब अपराध ॥ ४१ ॥
प्रचुर[7] बित्त लिय दंड पुनि, अरु पठई कहि एह ॥
यहँ[8] भेजहु घायल अखिल, दाह करहु मृत देह ॥ ४२ ॥
जन हजार१००० घायल जबहि, दल पठाय सब दिन्न ॥
तिन्न सहँस३०००कुणपन[9] त्वरित,कर्म उचित बिधि किन्न४३
गढके गोलंदाज इक१, दिन्नी तोप दगाय ॥
निज रुचिसों कि निदेससों, जानी सो नहिं जाय ॥ ४४ ॥
फुरत बँन्हि[10] पैर[11] फौजमैं, लग्ग्यो गोलक लोल[12] ॥
बहुरि तास बिग्रह बढ्यो, कूरम चुक्यो कोल ॥ ४५ ॥
कुंच तबहि दुव२ सेन करि, संध्या१ हुलकर१ सत्थ ॥

* झूठा क्रोध रचा ॥३५॥ १निरंतर ॥३६॥ २माधवसिंह का कामदार॥३७॥ ३ दया सहित ॥ ३८ ॥ ४ हुकम नहीं चाहते ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ५ सिंधिया कोपित हुआ ६नाश करने को ॥ ४१ ॥ ७फिर दंड का बहुत धन लिया ॥ ४२ ॥८सेना में भेज दिये ९ मुरदों का ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ १० अग्नि लगते ही ११ पराई (मरहठों की) सेना में १२ चपल गोला लगा ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

भंकरोर जाय रु भये, संगर रचन समत्थ ॥ ४६ ॥
धुज्जि तबहि जयनैर धंव, संध्या१ हुलकर१ पास ॥
गोलंदाजहिं लै गयो, आतुर नम्र उदास ॥ ४७ ॥
छुल्ल्यो इहिं किय हुक्कम बिनु, है मम दोस यहै न ॥
दोऊ२ तुम सागस दमन, नमनै कियँ हित नैन ॥ ४८ ॥
विनय पिक्खि दोउ२न बहुरि, दुव लक्ख२०००००हि लिय दम्म ॥
आगसँ किन्नों माफ वह, कारिय कुंच जय कम्मँ ॥ ४९ ॥
आयो तब करि सिक्ख इत, निजपुर संभर नाह ॥
टींका जैपुर मुक्कलिय, रक्खि सनातन राह ॥ ५० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रेबुन्दीशकूर्म्मशुद्धान्तत्रासध्वंसनकोटि १००००००द्रम्म कूर्म्मदराडदापनरामपुरेशमाधवसिंहपत्नीरट्ठोडिदोहदलक्षणासीमन्तोत्सवकरणप्राप्तमल्लारपत्रतज्जयपुराऽऽगमनराज्यप्रापणाऽनन्तरसन्ध्याजयाऽऽगमनकूर्म्मगृहभोजनानङ्गीकरणावडवानिमित्तबहुलमहाराष्ट्रजनमरणातत्क्रुद्धहुलकर १ सन्ध्यार पुनर्दराडनयनकूर्म्मनिजनालीयन्त्रप्रेरकतन्निवेदनपुनर्नीतलक्षद्वय २००००० द्रम्मदक्षिणासैन्य

१जयपुर का पति ॥४७॥तुम दोनों २ अपराधी को दंड देनेवाले हो ३ हित के नेत्रों से मैंने नमस्कार किया है ॥ ४८ ॥ ४ अपराध ५ जय करने को ॥४९॥५०॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह चरित्र में बुन्दी के पति का कछवाहे के जनाने के त्रास को मिटाना और कछवाहे का दंड के क्रोड़ रुपये देना १ रामपुरा के पति माधवसिंह की स्त्री राठोड़ी का गर्भ के आठ मास का उत्सव करना २ मल्लार का पत्र पाकर उस (माधवसिंह) का जयपुर आना और राज्य पाये पीछे जया नामक सिंधिया का आना ३ कछवाहे के घर में भोजन करने का अस्वीकार करना और घोड़ी के कारण बहुत मरहठों का मरना, उस क्रोध से हुलकर और सिंधिया का फिर दंड लेना ४ कछवाहे का अपनी तोप को चलानेवाले को नजर करना, फिर दो लाख रुपये लेकर दक्षिण की सेना का गमन और रावराजा का बुन्दी आकर टीकाकी सामग्री जयपुर भेजने का उनचालीसवां मयूख समाप्त हुआ।३९।

प्रस्थानरावराड्बुन्धाऽऽगमनातिलकोपहारजयपुरप्रेषणामेकोनचत्वारिंशो ३९ मयूखः ॥ ३९ ॥ आदितः ॥३२०॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ पादाकुलकम् ॥

इत मनसूरअली अभिधानक, अहमदसाह बजीर अचानक ॥
पठयो कटक रचन घमसानन, हनन फ़ुरक्काबाद पठानन ॥ १ ॥
नवलराय कायथ सेनानी, तिँहिँ इत जाय रारि तब तानी ॥
बंगस खानमुहम्मद बीबी, गज्जैं उतहु धरैं न गरीबी ॥ २ ॥
अवलोपन नहिँ नैंक उघारैं, राज्य फ़ुरक्काबाद सम्हारैं ॥
नवलराय तिँहिँ सन किन्नौं रन, नारि सवल बस तदपि भई ननाः३।
कायथ तब करि सपथ संधि किय, दै बिसास दल तास लुट्टि लिय
बीबी तिहिँ दुवरमास टारि बलि, किन्नों आनि वजीर हितु कलिं४
नवलराय कायत्थ हन्यौं तब,सहँस पचास५००००कटक लुट्यो सब
लखि यह भीरु बजीर पँलायो, अति आतुर दिल्लिय पर आयो ॥५॥
कछु रुप्पय तिहिँ दैन कहाये, बलि सहाय मरहट्ठ बुलाये ॥
राजा जुगलकिसोर१ भट्ट जन, बहुरि दिवान रामनारायन१ ॥६॥
ए दुव२ लैन दक्खिनिन आये, सन्ध्या१ हुलकर१ संग सिधाये ॥
भूँति अवेरि जानि बीबी भय, प्रविसी जाय कमाऊ पब्बय ॥ ७ ॥
लहि वजीर सन खरच एहु तब, बीबी बिंटन उतहि गये सब ॥
रामसिंह इत धँन्वधरापति, इकदिन कहिय लैन सिर आपति ।८।
भट रट्ठोर सभा जब आवत, तिनके लोचन मोहि डरावत ॥
लगत बुरे मोकौं सठ सारे, कैसी विधि अब जाय निकारे ॥९॥

और आदि से तीन सौ बीस ३२० मयूख हुए ॥

१नामवाला२युद्ध करने को सेना भेजी ॥१॥२॥ ३खोपन ४लोभी ॥३॥ ५ सौगन करने ६ वजीर से युद्ध किया ॥ ४ ॥ ७ भागा ॥ ५ ॥ ६ ॥ ८ ऐश्वर्य अवेर कर कमाऊं का पर्वत ॥ ७ ॥ ९ बजीर से १० मारवाड़ का पति ॥ ८ ॥ ९ ॥

दह्री अमिय कह्यो बनि संक्खी, तुमरे जनक[2] यहै इन्ह अक्खी ॥
चंपाउत कुसलेस कह्यो तब, यह सुत अधम भयो तोहू अब १०
जब डेरन परवाय हमारे, दुदुक्कारहिं[3] तब कढहिं निकारे ॥
सुहि इनको करि वेग बिडारहु, ठहै बिलंब तो इन करि हारहु ।११।
अनुग[4] पठाय अनय[5] सुहि धारयो, डेरन पारि कुसल[6] दुदुकारयो ॥
अँर चढि तब नागोर गयो यह, मन्न्यौं सुनि बखतेस महामह ॥१२॥
सम्मुह पठयो बिजयसिंह सुत, जिहिँ लिय कुसल बधाय बिनय जुत
कथन यहै वखतेस कहायों, आये तुम सु जोधपुर आयो ॥१३॥
बढ्यो तबहि दोरहू दिस बिग्रह, चाहँ करन परस्पर निग्रह ॥
रामसिंह सन सबहि रिसाये, इतर भटहु निज निज घर आये ॥१४॥
इक[1] बदल्यो न सेर[1] दूदाउत, रह्यो अनादरहू लहि राउत ॥
सेना बहुरि उभय[2] दिस सज्जिय, बंब पँणाव आनक रन बज्जिय१५
चलत बेर सृत[11] सेर तुरंगम, किय सब अरज दैन हय नृप सँम ॥
बुल्ल्यो मरुप[13] उचित तुमरे हय, हेरहु रँजक[14] कुलालन आलय ।१६।
भीखम[15] धुर धोरी अँचत भर, सेर सुपे सहि भो अग्रेसर[16] ॥
जान्यौं नृप मतिमंद न जानैं, पै हम स्वामिधर्म पहिचानैं ॥१७॥
चले उभय पुनि कटक खेत चढि, पटके वाजि भटन हरि हरि पढि
हल्लिय आँलुक[17] भोग हजारा, धुज्जिय पहुमि तुरंगम धारा[18] ॥१८॥

१साची बनाकर २तुम्हारे पिता ने ॥१०॥ ३ निकालो ॥११॥४नौकर को भेजकर ५यही अनीति की ६कुशलसिंह को धिक्कार दिया "डिंगलभाषा में धिक्कार देकर अनादर पूर्वक निकालने को दुदुकारना कहते हैं" ७ शीघ्र चढकर बखतसिंह ने ८ बडा उत्सव माना अथवा बडा उत्सव करके इसका मान किया ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ९कैद ॥ १४ ॥१०नगारे, मर्दल और ढोल बजे ॥ १५ ॥११चलते समय सेरसिंह का घोड़ा मरगया तब १२ राजा रामसिंह से घोड़ा देने की अर्ज की इस पर १३ मारवाड़ का राजा बोला कि तुमारे उचित घोड़ा तो १४ धोबी और कुम्हारों के घर में हेरो ॥ १६ ॥ १५ भीष्म की धुर को धारण करनेवाला (खैंचनेवाला) धोरी, वीर शेरसिंह उसको भी सहकर १६ आगे हुआ ॥ १७ ॥ १७ शेषनाग के फणों का हजारा हिला अर्थात् हजार फण हिले १८ घोड़ों की

दसन लगे तुट्टन दिगदंतिन, तुमुल राग सिंधुव हुव तंतिन ॥
कंकट फट्टत बाढ करवालन, मुंडन खोजि रचत हर मालन ॥१९॥
रुंड नचत कति रविहिँ रिझावत, आयुध तजि बाथन कति आवत
कतिकन फट्टत हृदय कलेजे, भिदत मत्थ कढ्ढत कहुँ भेजे॥ २० ॥
अंखि तिरत सोनित कहुँ अच्छी, मनहु श्रोत विच रोहित मच्छी।
सायक कहुँ लगि नाभि सुहावत, पिंडुल लट्ठि कलहुव छबि पा-
वत ॥ २१ ॥
एडी कटि कटि कहुँक उछट्टत, फाँक नागरंगकँ जनु फट्टत ॥
ओठ कहुँक कटि कटि भुव आवैं,बिंब मनहु असि घन बरसावैं२२
कहुँक दंत गिरि रोचि प्रकासैं, भूमि मनहु हीरैन गन भासैं ॥
नयन गडी कहुँ मुच्छ निहारैं, मीन वदंनें बनसी छबि मारैं ॥२३॥
इत कहुँ रीढक भिन्न उलट्टत, कँदली छदन दंड जनु कट्टत ॥
कहुँक भरत करतैं करभनँ कुल,मँहिला जनन ऊरु जनु मंजुल२४

दौड़ से भूमि धूजी ॥ १८ ॥ दिग्गजों के दांत टूटने लगे, तांतों में भयंकर सिंधवी रागिणी हुई २ तरवारों की धाराओं से १ कवच फटे, महादेव मुंडों को खोज कर माला बनाने लगे ॥ १९ ॥ कई रुंड नचकर सूर्य को प्रसन्न करते हैं और कई वीर शस्त्र त्याग कर बाहुयुद्ध करते हैं और कितनों ही के हृदय और कलेजे फटते हैं एवं कइयों ही के मस्तक फूट कर भेजे निकलते हैं ॥ २० ॥ कितने ही सुंदर नेत्र ३ रुधिर में तिरते हैं सो मानों जल के प्रवाह में ४लाल मच्छी तिरती है. कहीं पर नाभि में तीर लगकर शोभा देता है सो मानों ५कोल्हू (घाणी) में ६ मोटी लाठ शोभा देती है॥ २१ ॥ कहीं पर एड़ियां कट कर उछलती हैं सो मानों ७नारंगी की फांकें फटती हैं, कहीं पर होठ कट२ कर भूमि पर गिरते हैं सो मानों ८ तरवार रूपी मेघ ९बिंबफल बरसाता है ॥२२॥ कहीं पर दन्त गिरकर १०प्रकाश करते हैं सो मानों भूमि पर ११हीरे दीखते हैं नेत्रों में गड़ीहुई मूछें दीखती हैं सो मानों मच्छी के१२मुख में कांटा शोभा देता है ॥ २३ ॥ कहीं पर कई वीर १३ पीठ कट कर उलटते हैं सो मानों १४ केल के दंड पर से पत्र कटते हैं, कहीं पर हाथों से१५गुंडे कटते हैं "मणिबंधा-द्याकनिष्ठं करस्य करभो बहिः" इत्यमरः॥ सो मानों १६स्त्रियों की सुंदर जंघायें

लोला[1] कहुँक पुरीतति[2] लोहित, सलिल अरुन अलगर्द[3] कि सोहित
अवनि लसैं धमनीगन[4] असे, कुवलय[5] नाल घनात्यय[6] कैसे ॥२५॥
आंखि कातिक भुव लसत गिरी इम, रुचिर कोकनद[7]की पखुरी जिम।
विच तारा[8]चल[9] असित विराजत, लखत मरंद[10] मत्त अलि लाजत२६
भुव कहुँ क्लोम[11]१ कलेजा२ भासत, पाउस[12] जनु छत्राक प्रकासत ॥
लोटत सिर कहुँ छत्र विलाये, ढवतन[13] जनु नारेल ढुराये ॥२७॥
उरझी कहुँक सिखा कटि असैं, जाल असित[14] रेसम भव जैसैं ॥
भिरि कहुँ टोप बजत असि भारी, झल्लरि हरिमंदिर जनु झारी॥२८॥
संचर छुरिका[15] धसत सुहानी, पिचकारिन छुट्टत जनु पानी ॥
लोहित फलक[16] तिरत कहुँ डोलत, कमठ बिसेस कि सलिल कि-
लोलत ॥ २९ ॥
पार निकसि पट्टिस[17] छवि पावत, दड्ढ[18] मनुहुँ जम लपन दिखावत॥

हैं ॥ २४ ॥ कहीं पर रुधिर में १ चपलता युक्त २ आंतें पड़ी हैं सो मानों लाल पानी में ३ जल के सांप शोभा देते हैं अथवा कटी हुई जीभें और आंतें ही जल सर्प हैं भूमि पर ४ नाड़ियां ऐसी शोभा देती हैं मानों ६ शरद ऋतु में ५ श्वेत कमल (गड़ूल, नीलोफर) की नालियां हैं ॥ २५ ॥ कटेहुए कई नेत्र भूमि पर ऐसे शोभित होते हैं मानों सुंदर७कमलकी पंखुडियें हैं उन कटे हुए नेत्रों में ९ श्याम रंग की चपल ८ नेत्रों की पुतलियां विशेष शोभती हैं जिनको देखकर १० पुष्परस से मस्त भँवरे लज्जित होते हैं ॥ २६ ॥ पृथ्वी पर कहीं ११तिल्ली और कलेजे पड़े हुए दीखते हैं सो मानों १२ छत्रोटे(वर्षा ऋतु में उगनेवाली ढालें, छत्राक) दीखते हैं. कहीं पर छत्रों का नाश होकर मस्तक लुढकते हैं सो मानों लुढकाये हुए नारियल १३ नहीं ठहरते हैं ॥ २७ ॥ कहीं पर शिखाएं (चोटियां) कट कर ऐसी उलझी हैं मानों १४ काले रेशम की बनी हुई जाली है. कहीं पर टोप से भिड़ कर तलवार ऐसी बजती है जैसे विष्णु के मंदिर में झालर बजे ॥२८॥१५छुरी चलकर घुस कर ऐसी शोभती है मानों पिचकारी से पानी छूटता है, कहीं पर लोहू में तैरती हुई १६ ढालें फिरती हैं मानों जल में कछुए आदि क्रीड़ा करते हैं ॥ २९ ॥१७कटारी पार निकल कर ऐसी शोभा देती है मानों यमराज१८अपने मुख में दाढ़ दिखाता है कहीं

सरपूरन कहुँ गिरत सैंराश्रय, उडत कि पिच्छै छोरि सिखि आश्र-
य ॥ ३० ॥

खग्ग कहुँक हड्डन खटकावैं, बढई तरु कि कुठार बजावैं ॥
दंसन अटकत तेग दुधारी, कटैं बन जनु कूर कबारी ॥ ३१ ॥
कहुँक देत सिरसौं सिर टक्कर, दुवर उद्धत जनु भिरत पृथूदर ॥
कहुँ गुटिका गन धसत कपालन, जनु सिरंघा प्रबिसत मधुजा-
लन ॥ ३२ ॥

दमकत इलौ तनुत्र बिदारैं, मृगपति बाल कला छबि मारैं ॥
तोमर धसत कुंजरन तिक्खे, सैलन बेध बेणु जनु सिक्खे ॥३३॥
जुट्टे इम नागोर जोधपुर, धोरी कुसल सेरैं ऐंचत धुर ॥
खोजन चंपाउतहिं खिजायो, अरिदल मध्य सेर धसि आयो ।३४।
इक १ जंबूर लग्यो याके उर, फारि कढ्यो सु दुसह रीढक १
कुर २ ॥

इहिँ छत मोह लहत दूदाउत, आयउ कढि उततैं चंपाउत ॥३५॥

तीरों से भरेहुए १आधे ऐसे गिरते हैं मानों मयूर अपने आश्रय के १पूंछ छोड़कर उड़ते हैं ॥ ३० ॥ कहीं हड्डियों पर तलवारें खटकती हैं सो मानों खाती वृक्ष पर कुठार बजाता है, ३ कवचों में दुधारे खड्ग अटकते हैं सो मानों घर छाने के काष्ठों के बेचनेवाला मूर्ख बन काटता है ॥ ३१ ॥ कहीं पर मस्तक से मस्तक टक्कर मारते हैं सो मानों दो निरंकुश ४ भींढे भिड़ते हैं कहीं गोलियों के समूह कपालों में धसते हैं सो मानों ५ मधुमक्खियां ६ छत्ते में घुसती हैं ॥ ३२ ॥ कवच काटकर ७ तरवार चमकती है सो मानों द्वितीया का ८ चन्द्रमा शोभा देता है ९ हाथियों के शरीरों में तीखे भाले घुसते हैं सो मानों १० बांस के वृक्ष पर्वतों को फोड़ना सीखते हैं ॥ ३३ ॥ इस प्रकार नागोर और जोधपुरवाले लड़े जिनमें धुर को खैंचनेवाले धोरी कुशलसिंह और ११ सेरसिंह थे जिनमें शेरसिंह क्रोध करके चांपावत कुशलसिंह को हेरने के लिये शत्रु की सेना में घुस आया ॥३४॥ जिसकी छाती में नहीं सहने योग्य एक जंबूर का गोला लगा सो १२ पीठ और १३ हाड को फोड़कर निकलगया १४ इस घाव से दूदाउत शेरसिंह मूर्छा को प्राप्त होगया उस समय उधर से निकलकर चांपावत कुशलसिंह आया ॥३५॥

दाउत १ पाउत २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥

*सुज्जमल्ल तब सेर सहोदर, बुल्ल्यो कुसलहु भ्रात भ्रात बर ॥
सावधान हुव सेर यहै सुनि, पकरि खग्ग सम्मुह हंक्यो पुनि॥३६॥
दुहुँन२ धीरता मिलत दिखाई, नागफेन मलुहारि बनाई ॥
तदहुँ सेर बुल्ल्यो रन तंडत, मुच्छ कँचन उक्त कर मंडत ॥३७॥
अब इत आवहु कुसल अस्वारैं, जहर जरैं न तुमहिं वह जारैं ॥
बीज बुसइ अग्गैं तुम बाये, अब चक्खहु तिनकैं फल आये॥३८॥
झपटिसेरैं इम कहि असि झारिय, फारि टोप मस्तक सब फारिय
छोहितै कुसल सँगि इत छुट्टिय, फबत सेर छत्तिय लागि फुट्टिय३९
बेर दुहुँन २ तिहिं बेर बिहाये, पुंरायलोक इच्छित तिन पाये ॥
सुभट मरे दुहुँओर पंचसत५००, घायल परे अट्ठसत८००घुम्मत४०
सेरकहिय अग्गैं मरुपति सन, प्रबिस्यो त्रिदिवै निबाहि वह पन॥
कलि इम बखतसिंह जय किन्नौं, लगि हठ आनि जोधपुर लिन्नौं४१
बैठि तखत जय-पँटह बजाये, साज बहुरि रनकाज सजाये ॥
हुव यह रन नव नभ धृति १८०९ हायन, पाप रौम किय हारि प-
लायन ॥ ४२ ॥
जिहिं ढिग इक्क पुरोहित जग्गुव १, हठी द्वितीय २ खीमसर पति१
हुव ॥
अरहठन सन नृपहिं मिलावन, अब किय दुहुँन२ कमाऊँ आवन४३

* तब शेरसिंह के छोटे भाई * सूर्यमल्ल ने कहा कि हे श्रेष्ठ भाई ! कुशल सिंह आता है यह सुनकर शेरसिंह सावधान हुआ और खड्ग लेकर सन्मुख चला ॥ ३६ ॥ १ बल की २ जिसपीछे ३ युद्ध में गर्जना करता हुआ ४ मूछों के केसों को हाथ से ऊंचे करता हुआ शेरसिंह बोला ॥३७॥३८॥ यह कहकर ५ शेरसिंह ने दौड़कर तरवार चलाई ६ क्रोधित कुशलसिंह की ७बरछी ॥३९॥ ९ उसी समय ८ दोनों ने शरीर छोड़े १० स्वर्ग ॥ ४० ॥ ११ स्वर्ग में गया १२ युद्ध में ॥ ४१ ॥ १३ विजय के ढोल १४ संवत में २१ पापी रामसिंह १६ भागा ॥ ४२ ॥ १७ पर्वत का नाम है ॥ ४३ ॥

जया१ मल्लार२ गये सम्मुह जब, आन्यौं*सिविर रामसिंहहिं अब
संध्याकौं तँहँ कुमति सुहाई, मूढ †मरुपसन किय मित्राई ॥४४॥
पग्घ पलटि कहि तव सुख पैहैं, ‡द्रुत जब तुमहि जोधपुर दैहैं ॥
इत जगतेस रानके आमय, बढ्यो अतीव असाध्य जराबय ॥४५॥
कुमर प्रताप हुतो कारा तब, इहिं ग्राहकैं भट च्यारि ४ मिले अब
नाथ१ रान जगतेस सहोदर, झल्ला राघवदेव२ पापपर ॥ ४६ ॥
भारतसिंह३ रान दल स्वामी, देवगढप जसवंत४ हरामी ॥
बुल्लिय चउ४ अब मंत्र बिचारहिं, किय अप्पन तव कैद कुमारहिं
कारामैंहि प्रतापकैहु सुव, राजसिंह अभिधान कुमर हुव ॥
आयो रानकोहि अवसान न, पै संसय अपनैंहू प्रानन ॥ ४८ ॥
सो नृप होय वैर अनुसरिहै, कुलजुत कंदन अप्पनों करिहै ॥
यौंहि छन्न यातैं बिख अप्पहु, थिर यह नाथ भूप करि थप्पहु॥४९।
बैर बिचारि यहै च्यारिन४ बलि, साहिपुरप५ पंचम५ लिय सम्मलि
सोचि रान जगतेस यहै सुनि, पठयो हुक्म बिचारि नीति पुनि५०
जो तुम स्वामिधरम्म हित जानत, पंच५हि भट मम हुक्म प्रमानत
जवंजुन तो चढि चढि घर जावहु,रहि नहि यत्थ बिरोध रचावहु५१
कहन तिन पठयो दल यह कहि, चढि चढि घरन गये तव पंच५हि
तदनु बसु ख धृति १८०८ सक्क बिक्कम कृत, मास जेठ जगतेस
रान मृत ॥ ५२ ॥

* डेरे में † मारवाड़ के पति से ॥ ४४ ॥ ‡ शीघ्र १ रोग २ वृद्धावस्था से ॥ ४५ ॥ ३ कैद में ४ पहिले कुमर प्रतापसिंह को पकड़ा था वे ५ राणा जगतसिंह का सगा भाई नाथसिंह ६ परम पापी ॥ ४६ ॥ ७ सेनापति ॥ ४७ ॥ ८ कैद में ही ९ सुत १० नाम ११ केवल राणा का ही अन्त नहीं आया है परन्तु अपने प्राणों का भी सन्देह है ॥ ४८ ॥ १२ नाश १३ कुमर प्रतापसिंह को १४ नाथसिंह को ॥ ४९ ॥ ५० ॥ १५ जल्दी से १६ यहां ॥ ५१ ॥ इनको निकालने को १७ सेना भेजी १८ जिसपीछे ॥ ५२ ॥

इतिश्रीवंशभास्करेमहाचम्पूकेउत्तरायणेसप्तम७राशावुम्मेदसिंह चरित्रे दिल्लीशसचिवप्रेषितससैन्यसेनानिकायस्थनवलरायफुरक्काबाद पतिवङ्गसयवनमुहुम्मदखानबीबीयुद्धकरणकृतसमकायस्थतद्विभव लुण्टनदत्तमासद्वया २न्तरबीबीनवलरायमारणहारितरणविभवयवने न्द्रसचिवमनसूरअलीपलायनदत्तवाहिनीव्ययवसुदिल्लीशहुलकर१सं-ध्या२ऽऽह्वानप्रद्रुतबीबीकमाऊपर्वतप्रविशनदक्षिणासैन्यतद्वेष्टनमरुपति रामसिंहस्वभटचम्पाउत्तकुशलसिंहनिष्कासनतन्नागोरेशबखतसिंह सम्मिलनभ्रातृज१पितृव्यक२महारणभवनसोढस्वामितिरस्कृतिसेर सिंह१कुकृत्यकुपितकुशलसिंह२मरणविजितबखतसिंहयोधपुरप्रभूभ वनपलायितरामसिंहकमाऊकुण्डलनजया१मल्लार२प्रार्थनकृतमैत्रीभा वसंध्याप्रभुपसहायाऽङ्गीकरणनिष्कासितदुष्टभटमहाराणराणाजग त्सिंहमरणं चत्वारिंशो मयूखः ॥ ४० ॥ आदितः॥३२१॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह के चरित्र में, दिल्ली के वजीर के भेजे हुए सेना सहित सेनापति कायथ नवलराय का फुरकाबाद की मालिक बंगस यवन मुहम्मदखान बीबी से युद्ध करना और मिलाप करके कायस्थ का उसका वैभव लूटना १ दो मासबीचमें देकर बीबी का नवलराय को मारना, युद्ध का वैभव छोडकर बादशाह के वजीर मनसूरअली का भागना २ सेना के खरच का धन देकर बादशाह का हुलकर और सिन्धिया को बुलाना और बीबी का भागकर कमाऊँ पर्वत में जाना ३ दक्षिण की सेना का उसको घेरना ४ मारवाड़ के पति रामसिंह के उमराव चाँपावत कुशलसिंह को निकालना और उसका नागोर के पति बखतसिंह से मिलना ५ भतीजे और काका के बडा युद्ध होना और स्वामी के तिरस्कार को क्षमा करनेवाले शेरसिंह और कुकृत्य से कोपेहुए कुशलसिंह का मरना ६ विजय किये हुए बखतसिंह का जोधपुर का पति होना और भागे हुए रामसिंह का कमाऊँ पर्वत को घेरनेवाले जया और मल्लार से प्रार्थना करना ७ सिन्धिया का मित्रता करके मारवाड़ के पति की सहाय स्वीकार ८ दुष्ट उमरावों को निकालनेवाले राणा जगतसिंह का मरने का चालीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ४० ॥ और आदि से तीन सौ इकीस ३२१ मयूख हुए॥

॥ पादाकुलकम् ॥

यह सुनि बुंदिय सोक उपज्जिय, जामें च्यारि४नउबत्ति न बज्जिय॥
इत भट सलूमरिप चुंडाउत, रानां करन कुमारेंहिं राउत ॥ १ ॥
कारा जाय प्रतापहिं कढ्ढिय, बहु भय सुनत ग्राहकन बढ्ढिय ॥
सो अब रान उदैपुर स्वामी, नय जुत भयो छत्रधरि नामी ॥ २ ॥
जेर कियो परताप जनकें जब, ताको खान पान सद्धन तब ॥
अमरचंद पूरबिपा इक९ द्विज, निकट वहै रक्ख्यो सेवक निज।३।
सेवा जिहिं तनमन धन सद्धी, अंतर किन्न घरी नहिं अद्धी ॥
अब नृप होय प्रताप बिप्र वह, सचिव मुख्य किय अतुल प्रीति सह४
सिविका१ गज२ ताजीम३ समप्पिय, थिर सु बिप्र ठाकुरकहि थप्पिय
सन्नत बंदि निर्लय सेवन मति, अमरचंद बसि रान भयो अति ।५।
बलि वे ग्राहकें च्यारि४ बुलाये, लेस खिज्यो नहि हृदय लगाये ॥
इकदिन अंभ्रं अभ्र घुमडे अति, कहिय प्रताप तबहि काकों प्रति६
सुनहु जनकें सासन अनुसारी, मचक जाँनु जिहिं दिन तुम मारी॥
सो रीढक संधिग अब सल्लत, घन जब होत तबहि दुख घल्लत।७।
यह नृप सहज सरलपन अक्खी, रिस गिनि नाथ हृदय धरि रक्खी
आतुर सठ नाहक अकुलायो, स्वीय नगर बग्घोर सिधायो ॥ ८ ॥
सक नव नभ धृति १८०९ समय होत सठ, हिय भय धारि बिरचि
अनुचित हठ ॥
पुत्र भीम जुत नाथ पलायो, अतिजव नगर सादड़ी आयो॥९॥

१ पहर २ कुमर प्रतापसिंह को राणा करने के लिये ॥ १ ॥ ३ कैद में जाकर ४ कुमर को पकड़नेवालों को ५ नीति युक्त ॥२॥ ६ प्रतापसिंह के पिता को कैद किया तब ७ ब्राह्मण ॥ ३ ॥ ४ ॥ ८कैद घर (जेलखाने) में सेवा की जिसको मानकर ॥ ५ ॥ ९ पकड़नेवालों को १०आकाश में ११मेघ १२ नाथसिंह ॥६॥ १३हे पिता की आज्ञा के साथ चलनेवाले १४घुटने की १५ पीठकी सन्धि में गई हुई ॥७॥ १६सीधेपन से कही १७शीघ्र १८अपने नगर बागोर गया॥ ८ ॥ १९ भागा ॥ ९ ॥

तँहँ टिक्यो न करि पुनि त्वँरिताई, देवलिपा पहुँच्यो गरदाई ॥
उम्मट घँर तदनंतर आयो, व्याहन रगपन तत्थ विधायो ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

उम्मटकी कन्या उभय, परनि पिता१ अरु पुत्र२ ॥
बुंदी पुर आये बहुरि, तक्कत नृपहिँ तनुत्रँ ॥ ११ ॥

॥ षट्पात् ॥

सक नव नभ धृति १८०९ समय श्रामें श्रावन पँहँ आये ॥
देवपुरा लग समुख जाय बुंदीस बधाये ॥
चलन द्रम्म सत चारि ४०० दये संभर नृप दिनप्रति ॥
बारह१२ बासरँ रक्खि बिदा क्रिय बखसि बाजि कति ॥
तब नाथ१ भीम२ लनक रु तनय आये दुवर कुंढार इत ॥
माधव१ नरेस बखतेस२ जँहँ द्वे सम्मलि कछु काज हित ॥

॥ दोहा ॥

बखतसिंह१ मरुईस अरु, माधव१ जैपुर ईस ॥
मरहट्ठन मेटन अमल, उभय२ मिले अवनीस ॥ १३ ॥
मालपुरा सन इक१ मिजल, भूपोलाव तड़ाग ॥
पँहु कछवाह१ कबंधपति२, जत्थ मिले जय लाग ॥ १४ ॥

॥ षट्पात् ॥

सूँनु सहित सीसोद नाथ तिन प्रति प्रयान किय ॥
सुनि माधव१ बखतेस२ जाय सम्मुह वधाय लिय ॥
तदनु मरुप बखतेस छली तत्थँहि वपु छोर्‌यो ॥
न्याय रहित सठ नाथ मिलत माधवँ मन मोर्‌यो ॥

१ शीघ्रता २ कुमर प्रतापसिंह को जहर देने की इच्छावाला ३ नरसिंह गढ़ ॥ १० ॥ ४ उम्मेदसिंह को रक्षक देखकर ॥ ११ ॥ ५ श्रावण मास में ६ बुन्दी की चलन के ७ दिन ॥ १२ ॥ १३ ॥ ८ तलाब ९ प्रभु ॥ १४ ॥ १० पुत्र सहित ११ मारवाड़ के राजा छली बखतसिंह ने वहाँ पर शरीर छोड़ा तापसिंह ने १२ माधवसिंह के मनको मोड़ दिया

कछवाह कहिय सीसोद सन करहिं तुमहिं मेवार पति ॥
परताप नाँहिं नृपता उचित गहहु ताहि तुम पुव्वगति[1]॥१५॥
अग्ग रान जगतेस अति, कूरम माधव काज ॥
कोटि१००००००दम्म निज खरच किय, रोकन जैपुर राज१६
ऊरजे हरगोविंदके, कहँ सु उपकृत भुल्लि ॥
कूरम नृप कृतघन भयो, लैन उदैपुर खुल्लि ॥ १७ ॥
बरज्यो जदपि ऋलाय पति, कुसलसिंह कछवाह ॥
मन्नी तदपि न मंदमति, अघ हिय धारि अथाह ॥ १८ ॥
नाथ मीर कूरम नृपहिं, सुनि भारत जसवंत२ ॥
राघवदेव३ उमेद४ ए, मिले आनि हठ मंत ॥ १९ ॥
कनक[5] छत्र धरि नाथ सिर, चामर विसद[6] ढुराय ॥
मिलि इतनैं रानाँ मुलक, लूटन लग्गे आय ॥ २० ॥
बखतसिंहके मरत इत, विजयसिंह अवनीस[7] ॥
तखतजोधपुरको लह्यो, सुभग छत्र धरि सीस ॥ २१ ॥
याही बरस उमेद नृप, स्वीय सहोदर दीप[8] ॥
परिनायो सावर नगर, मंडि उछाह महीप ॥ २२ ॥
सगताउत सगतेसकी, कन्या अनुप कुमारि ॥
दुलहनि दीप बिबाहि तब, आयो निलय[9] पधारि ॥ २३ ॥
इत बुंदीस उमेदकी, संतत[10] सुहागिनि नारि ॥
ऊदाउति रानिय लयो, दोहँद[11]लच्छन धारि ॥ २४ ॥
ताके अष्टम८ मासको, उच्छव मंडि अनंत ॥
समरसिंह नृप कुल सकल, किय इक्कत मतिमंत ॥२५॥
तदनंतर नव ख धृति१८०९ सक्क, माघ त्रयोदसि१३ सेत[12] ॥

१ जैसे पहिले पकड़ा था तैसे फिर पकड़ लो ॥ १५ ॥ १६ ॥ २ वैश्य ३उपकार भूलकर ॥ १७ ॥ १८ ॥ ४ भारतसिंह और जसवंतसिंह ॥ १९ ॥ ५ सुवर्ण का ६ स्वेत चमर ॥ २० ॥ ७ भूपति ॥ २१ ॥ ८ दीपसिंह को ॥ २२ ॥ ९ अपने घर ॥ २३ ॥ १० निरन्तर ११ गर्भ ॥ २४ ॥ २५ ॥ १२शुक्ल पक्ष की

अजितसिंह नृपके कुमर, हुव सुभ अंक उपेत ॥ २६ ॥
जातकरम तब तास किय, निगमं उक्त रचि न्याय ॥
नांदीमुख सुख श्राद्ध करि, लक्खन दिन्न लुटाय ॥ २७ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे कुमारप्रतापसिंहराणापट्टप्रापणनिजसेवकविप्राऽमरचन्द्रसचिवीकरणस्वनियाहकसुभटचतुष्क ४ समाऽऽश्वासनराणाकर्तृकमृत्युभ्रान्तपलायितस्वसुतपितृव्यकनाथसिंहबुन्द्याऽऽगमनबुन्दीशसत्कृतनाथसिंहजयपुरजनपदस्थकूर्मराजमाधवसिंह १ कबन्धराजबखतसिंह २ सम्मिलनकृतकुकृत्यमरुपाऽजितसिंहमरणाजायसिंहक्लिन्नधीभवननाथसिंहसहायार्थोदयपुरदापनाऽभ्युपगमनश्रुतैतद्भारतसिंहाऽऽदिचतुष्टय ४ नाथसिंहसहायीभवनच्छत्रचामराऽऽदितदर्पणराणाराज्यमेदपाटलुण्टनबखतसिंहविजयसिंहयोधपुरगद्दिकोपविशनबुन्दीन्द्राऽनुजदीपसिंहसावरपुरेशशीशोदिशार्दूलसिंहकन्योद्वहनरावराजू

१ राजा उम्मेदसिंह के ॥ २६ ॥ २ खादि ॥ २७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह के चरित्र में, कुमार प्रतापसिंह का राणा के पाट को पाना और अपने सेवक ब्राह्मण अमरचन्द को सचिव करना १ अपने पकड़नेवाले चारों उमरावों को विश्वास देना और राणा से मृत्यु का सन्देह करनेवाले काका नाथसिंह का पुत्र सहित भागकर बुन्दी आना २ बुन्दी के पति से सत्कार किये हुए नाथसिंह का जयपुर के देश में स्थित कछवाहे राजा माधवसिंह और राठौड़ राजा बखतसिंह से मिलना ३ पाप करनेवाले मारवाड़ के पति अजीतसिंह के पुत्र (बखतसिंह) का मरना ४ जयसिंह के पुत्र (माधवसिंह) का खुशदिल होकर नाथसिंह की सहाय के अर्थ उदयपुर देने का स्वीकार सुनकर भारतसिंह आदि चारों का नाथसिंह की सहाय होना और उनको छत्र चमर आदि देकर राणा के राज्य मेवाड़ को लूटना ५ बखतसिंह के पुत्र विजयसिंह का जोधपुर की गद्दी पर बैठना और बुन्दी के पति के छोटे भाई दीपसिंह का सावरपुर के पति सीसोदिया शार्दूलसिंह की पुत्री से विवाह करना ६ रावराजा की राणी कछवाही का गर्भ धारण करना और उनके दास बालक (बालकों) का जन्मपत्र लिख पीछे उसके राज कुमार अजीतसिंह के जन्म का उत्सवादि-

राइपूद्दाउत्तिदोहदलक्षणधरभ्रातृसीमन्तमहोत्सवाऽनुष्ठानसमयान्त सेद्राजकुमाराऽजितसिंहोद्गमनमेकचत्वारिंशो ४१ मयूखः ॥ ४१ ॥ आदितः॥३२२॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

तदनंतर[1] सक ख ससि धृति १८१०, बिसद चतुर्दसि राध[2] ॥
सोदर दीप सिकार गय, बिरचि भ्रात हित बाध[3] ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

मृगया[4] मिस प्रच्छन्न प्रात कढि दीप[5] सहोदर॥
कोटा गय चल बुद्ध अप्प१ इक१ हय इक१ अनुचर ॥
कोटापति सुनि सचिव झल्ल[6] मदनेस पठायो ॥
लैबेकौं नटि दीप नगर तबतो नहिँ आयो ॥
कायत्थ अखैराम सु बहुरि आय याहि पुर लैगयउ॥
पुनि जाहि कुमर पदवी महल दुजन सल्ल रक्खत भयउ॥२॥
इत यह सुनि बुंदीस लैन निज सचिव पठाये ॥
तबहु दीप नटि तिनहिँ तरजिँ पच्छे पहुँचाये ॥
गागरनीपुर अभयसिंह रठौर सुता सुनि ॥
परनि ताहि हुत जाय दीप आयउ कोटा पुनि ॥
बुंदीस हिंतु[11] नाहक बिमँन कछु दिन तत्थ अतीत करि ॥
गो पुनि सँबाम[12] पुर इंद्रगढ देव कथित[13] दृढ चित्त धरि ॥३॥

॥ दोहा ॥

अभयसिंह रठौरको, देवसिंह हो भाँम ॥

सवाँ मयूख समाप्त हुआ ॥४१॥ और आदि से तीन सौ बाईस३२२मयूख हुए॥

१ जिस पीछे २ वैशाख सुदि ३ भाई से विरोध करके ॥ १ ॥ ४ शिकार के मिस से ५ दीपसिंह ६ झाला मदनसिंह को भेजा ॥ २ ॥ ७ धमकाकर ८ पुत्री ९ से १०उदास११बिताकर१२स्त्री सहित१३देवसिंह का कहना ॥३॥१४बहिनोई

पतनीके[1] परतंत तिहिँ, किन्नौँ अनुचित काम ॥ ४ ॥
पत्तन कोटा दीप प्रति, पठये यागति पत्र ॥
तुमकौँ बुंदिय हौँस[2] जो, आवहु तो द्रुत अत्र ॥ ५ ॥
तुमरे उप्पर तनकहू, अग्रज अनुकंपा[3] न ॥
मंत्र करन हमसौँ मिलहु, थप्पहिँ ज्यौँ नृप थान ॥ ६ ॥
ए कग्गर सुनि इंद्रगढ, पहुँच्यो दीप प्रमत्त ॥
अग्रज हिंतु बिरोध इम, तक्क्यो बालिसेँ[4] तत्त[5] ॥ ७ ॥
करि अनिष्ट बुंदीसको, देवसिंह धरि द्वेस ॥
पठयो जैपुर दीपकौं, बिग्रह रचन बिसेस ॥ ८ ॥
सुनि माधव जैपुर सुपहु, आवत इहु उमाहि ॥
पठयो सम्मुह दीपके, सचिव मुख्य हरसाहि ॥ ९ ॥
कूरम गढ्ढिय कोन पर, बैठारयो सबिनोद ॥
पटा हजार पचास५०००० को, दयो नगर उकड़ोद ॥ १० ॥
आवत अंतरद्वारँतक[6], चामर तास चलाय ॥
इम बुंदीपतिको अनुज, रक्ख्यो जैपुर राय ॥ ११ ॥

॥ षट्पात् ॥

तदनंतर नभ चंद्र अष्ट अचला १८१० मित हायन ॥
माधवँ[7] दिल्लिय दंग पत्त बनि प्रीति परायन ॥
शासन अहमदसाह दयो करि सोहि दिखायो ॥
कछु बासरँ[8] तँहँ कढ्ढि सिक्ख लहि आलय आयो ॥
रघुनाथराय श्रीमंत सुत नन्ह अनुज जंबनेस जुत ॥
मग माँहिँ मिलत सम्मति रचिय हैरगोविंदहिँ[11] गहन द्रुत॥१२॥

---

१ स्त्री पराधीन ॥ ४ ॥ २ बुन्दी की चाहना है तो ॥ ५ ॥ ३ कृपा नहीं है ॥६॥ ४ मूर्ख ने ५ तहां ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ६ भीतर की ड्योढी तक ॥११॥ ७ माधवसिंह ८ मास हुआ ९ दिन १० बादशाह सहित ११ जयपुर के सचिव हरगोविन्द को शीघ्र पकड़ने के लिये ॥ १२ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

दिल्लिय गमन कुम्भ जब किन्नौं, बुंदिपपुर कग्गर[1] तब दिन्नौं ॥
कोऊ भट मम संग पठावहु, हितमैं नृप अंतर जिन लावहु ॥१३॥
तब भगवंतसिंह माधानी[2], पठयो भूपति प्रीति प्रमानी ॥
व्है दिल्लिय माधव घर आयो, रक्खयो सचिव[3] लोभ कछु छायो१४

॥ दोहा ॥

सिद्ध भयो नहिँ लोभ सो, सिक्खदई खिजि साह ॥
हरगोबिंद अमात्यहू, लग्गो जैपुर राह ॥ १५ ॥
रक्षक ताकी संगहो, माधानी भगवंत ॥
नन्द अनुज मगमैं मिलत, अमरख[4] किन्न अनंत ॥ १६ ॥
पकरन हरगोविंदकौं, बिट्यो कटक[5] बिथारि ॥
भूप सुनहु भगवंत भट, तहँ झारी तरवारि ॥ १७ ॥
मारि बहुत मरहट्ठ भट, जित्यो दुद्धर जंग ॥
कुम्भ सचिव गहन न दयो, आन्यों जैपुर संग ॥ १८ ॥
इत संध्या१ हुलकर१ उभय२, अचल[6] कमाऊ छोरि ॥
जट्टनके कुंभेरगढ, लग्गे लरन बहोरि ॥ १९ ॥
खंडू हुलकर पुत्रके, गोली लग्गिय मत्थ[7] ॥
ततकालहि अकुलाय तिहिँ, तज्यो कलेवर[8] तत्थ ॥ २० ॥
लै तब ताके बैरमैं, कोटि इक्क दमे दम्म[9] ॥
दिल्लीपर दोऊ चढे, करन नन्द जप कम्म[10] ॥ २१ ॥
जवनईस[11] सत्वर[12] जबहि, सुनि यह अहमदसाह ॥
मरहट्टन सम्मुह चल्यो, सजि निज कटक सिपाह ॥ २२ ॥

---

१ पत्र ॥ १३ ॥ २ माधोसिंहोत हाडा ३ हरगोविन्द को वहीं रक्खा ॥१४॥ ॥ १५ ॥ ४ क्रोध ॥ १६ ॥ ५ सेना का विस्तार ॥ १७ ॥ १८ ॥ ६ पर्वत ॥ १९ ॥ ७ मस्तक में ८ शरीर ॥ २० ॥ ९ दंड के रुपये १० नन्द के विजय की कामना से ॥ २१ ॥ ११ बादशाह १२ शीघ्र ॥ २२ ॥

॥ षट्पात् ॥

सक नभ ससि धृति१८१० समय प्रचुर लै दल दिल्लियपति॥
सन्धया हुलकर सम्मुख अनखि इंक्यो सत्वर गति ॥
मिलत सेन दुवर मचिग कलह दारुन करवालन ॥
लुत्थिन लुत्थि बिलग्गि ढंकि छोनिय गज ढालन ॥
चलि चउँ४प्रकार आयुध चपल बज्र अँचल जिम रीठ बजि॥
दक्खिन अनीक जित्यो दुसह भीरु गयउ जवनेस भजि२३

॥ दोहा ॥

अहमदसाह पलाप इम, पच्छो दिल्लिय पत्त ॥
खानकलीज हराम खल, पकर्यो स्वाँमि प्रमत्त ॥ २४ ॥
नयन फोरि जवनेसके, कारा पटक्यो क्रूर ॥
आलमगीर स नाम इक१, साह कियो बनि सूर ॥ २५ ॥
अग्गहि खानकलीज इहिं, लिन्नौं नादर बुल्लि ॥
अंध बंध अहमद कियो, खल विरोध अब खुल्लि ॥ २६ ॥
मरहट्ठे दब्बत मुलक, दिल्लिय पत्ते दोरि ॥
कछु दम दम्म कलीज दै, किन्नों साम बहोरि ॥ २७ ॥
अंबर ससि धृति१८१०अब्द इम, कितवं कलीज कुचाल ॥
गद्दी आलमगीरकों, बैठार्यो मति बाल ॥ २८ ॥
कछु सिवाय धन भेट करि, निलज कलीज नवाब ॥
मरहट्ठे दुवर मुक्कले, जेर करन पंजाब ॥ २९ ॥
मारकै नादरसाहको, अहमदखान पठान ॥

१ बहुत सेना लेकर २ तरवारों से ३ हाथियों के निशानों से अथवा हाथियों के गिरने से भूमि ढकगई ४ मुक्त, अमुक्त, मुक्तामुक्त, और यन्त्रमुक्त, ये चारों प्रकार के चंचल आयुध चल कर ५ पर्वत पर ॥ २३ ॥ ६ भगकर ७ अपने स्वामी (बादशाह) को ॥ २४ ॥ ८ कैद में ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ ९ छली १० बुद्धि में बालक ॥ २८ ॥ २९ ॥ ११ नादरशाह को मारनेवाला

उततैं वह उत्तरि अटक, आयो कटक अमान ॥ ३० ॥
जिहिं जनपद पंजाबमैं, लिन्नों अमल जमाय ॥
हाकिम निज धरि बाहुरयो, इतको अमल उठाय ॥ ३१ ॥
तिनसों मरहट्ठन तबहि, रची जाय द्रुत रारि ॥
उत किन्नों दिल्लिय अमल, थानाँ अपर बिडारि ॥ ३२ ॥
कतिक नगर पंजाबके, लुट्टि सहित लाहोर ॥
मरहट्ठे जय मत्त मन, आये जैपुर ओर ॥ ३३ ॥
मिलन काज मल्लारसों, नय पट्टु हड्ड नरेस ॥
बुंदीसन करि कुच्च बलि, पत्तो जैपुर देस॥ ३४ ॥
माधव१ हड्ड२मलार३ अरु, संध्या४बिहित बिबेक ॥
मिलि चपारिन४ सम्मलि रहत, कढे दिवस कितेक ॥३५॥
हरजन पुत्त दलेल तँहँ, हो जैपुरपति तत्थ ॥
लाय हृदय नृप१ ताहि लौ, आयो निलय समत्थ ॥ ३६ ॥
नृप माधव२ गो जयनगर, हुलकर३ दक्खिन देस ॥
रट्ठोरन उप्पर चल्यो, संध्या४ कुपित बिसेस ॥ ३७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तमराशावुम्मेदसिंहचरित्रे बुन्दीन्द्राऽनुजदीपसिंहनिष्कसनतत्कोटागमनगागरणीशराष्ट्रोडाऽभयसिंहकन्योद्वहनेन्द्रगढेशदेवसिंहभेदितचित्तदीपसिंहजयपुरप्रेषणसत्कृतहड्डेन्द्राऽनुजदिल्लीगतकूर्म्मराजमाधवसिंहप्रत्यागमनाऽन-

॥ ३० ॥ १ देश में ॥ ३१ ॥ २ अन्य थाने निकाल कर ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३उचित ॥ ३५ ॥ ४ बुन्दी ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह चरित्र में, बुन्दी के पति के छोटे भाई दीपसिंह का निकल कर कोटे जाना और गागरणी के पति राठोड़ अभयसिंह की पुत्री से विवाह करना १ इन्द्रगढ के पति देवसिंह का फोड़े हुए चित्त से दीपसिंह को जयपुर भेजना और हाडों के पति के छोटे भाई का सत्कार करके दिल्ली गये हुए कछवाहे राजा माधवसिंह का पीछा आना २ इस के पीछे आनेवाले सचिव हरगोविन्द को पकड़ने के

न्तराऽऽगच्छत्सचिवहरगोबिन्दनिग्रहश्रानिमित्तश्रीमन्तनन्हानुजरघुनाथराययुद्धकरणजितयुद्धमाधाणिहड्डभगवन्तसिंहहरगोविन्दजयपुरानयनत्यक्तकमाऊगिरिहुलकर १ संध्या २ जट्टदुर्गकुम्भेरवेष्टनतत्समरमल्लारपुत्रखण्डूमरणानीतकोटिद्रम्म १००००००० तद्वैरोद्दर्तृजया १ मल्लार २ दिल्लीशाऽहमदशाहविजयकलीजखानस्फोटितनयनयवनेशकाराक्षेपणतद्गद्दिकाऽऽलमगीरोपवेशनदत्तदमद्रव्यदाक्षिणसैन्यपञ्जाबप्रेषणपरास्तीकृतनादरघ्नदिल्लीशाऽधीनीकृतपञ्जाबहुलकर १ संध्या २ जयपुरजनपदाऽऽगमनहड्डेन्द्र १ कूर्मेन्द्र २ तत्सम्मिलननीतिहारजनिदलेलसिंहरावराड्बुन्द्याऽऽगमनमाधवसिंहजयपुरप्रविशनमल्लार १ दक्षिणागमनस्वमित्ररामसिंहसहायीभूतसंध्याजया २ तद्योधपुरदापनार्थसज्जीभवनं द्विचत्वारिंशो ४२ मयूखः ॥ ४२ ॥ आदितः ॥३२३॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ षट्पात् ॥

कारण श्रीमंत नन्ह के छोटे भाई रघुनाथराय का युद्ध करना और युद्ध जीतनेवाले माधोसिंहोत हाडा भगवंतसिंह का हरगोविंद को जयपुर लाना ३ कमाऊँ पर्वत को छोड़कर हुलकर और सिन्धिया का जाट के कुंभेर गढ को घेरना और उस युद्ध में मल्लार के पुत्र खंडू का मरना ४ उस के वैर में क्रोड़ रुपये लेकर जया और मल्लार का दिल्ली के पति अहमदशाह को विजय करना ५ कलीजखां का बादशाह के नेत्र फोड़कर कैद करना और उसकी गद्दी पर आलमगीरशाह को बिठाना ६ दंड का धन देकर दक्षिण की सेना का पंजाब में भेजना और नादरशाहके मारनेवाले को हराकर पंजाब को दिल्लीश के अधीन करके हुलकर और सिन्धिया का जयपुर के देश में आना ७ हाडों के इन्द्र और कछवाहों के इन्द्र का उनसे मिलना और हरजन के पुत्र दलेलसिंह को लेकर रावराजा का बुन्दी आना और माधवसिंह का जयपुर प्रवेश करना ८ मल्लार का दक्षिण में जाना और अपने मित्र रामसिंह का सहायक होकर जया नामक सिन्धिया का उसको जोधपुर देने के अर्थ सज्जित होने का बयालीसवां मयूख समाप्त हुआ ।४२। और आदि से तीन सौ तेईस मयूख हुए॥

रूपनगर नृप राजसिंह जब देह त्याग किय ॥
सूनु[1] ज्येष्ठ सामंतसिंह तब तास तखत लिय ॥
अनुज[2] बहादुर बहुरि भ्रात सामंत निकारयो ॥
लिन्नी गद्दिय छिन्नि छत्र अप्पन सिर धारयो ॥
सिरदारसिंह निज सुत सहित नृप सामंत बिपत्ति सहि ॥
लिय तबहि आय संध्या सरन राम मरुप[3] जिम दीन रहि॥१॥

॥ दोहा ॥

सक नभ ससि धृति १८१० समयही, उदयनैर इत एह ॥
रान प्रतापहु रोगबस, तजत भयो निज देह ॥ २ ॥
तब जो कारामाँहिँ[4] हुव, राजसिंह सुत तास ॥
सो नृप भो दस१० बरस बय, पै नहि नीति प्रकास ॥ ३ ॥

॥ षट्पात् ॥

रूपनगर नृप ससुत[5] संग सामंतसिंह १ अब ॥
त्योँहीँ मरुपति रामसिंह१ दोउन२ इस लै तब ॥
संध्या सेनहिँ सज्जि चल्यो इनके अरि मारन ॥
दोउन२ निज भुव दैन बिदित निज कित्ति बिथारन ॥
सुनि एह बहादुरसिंह इत बिजयसिंह सम्मिलि गयउ ॥
मेरता नगर दुव२ दल मिलत सक सिव धृति संगर[6] भयउ॥४॥

॥ दोहा ॥

बिजय बहादुर१ उभय२ उत, इत सामंत१ रु राम ॥
संध्या३ दुहुँन२ सहाय कर, कलिँ[7] मंडयो जय काम॥ ५ ॥

॥ सारङ्गः ॥

संध्या जपा ओ बिजैसिंह रट्ठोर, योँ मेरता खेत जुट्टे बडे जोर ॥

---

१ बडा पुत्र २छोटे भाई बहादुरसिंह ने ३ मारवाड़ के पति रामसिंह की भांति ॥ १ ॥ २ ॥ ४ कैद में ॥ ३ ॥ ५ पुत्र सहित ६ युद्ध हुआ ॥ ४ ॥ ७ युद्ध रचा ॥ ५ ॥ जपा नामक सिंधिया और जोधपुर के राजा विजयसिंह राठोड़ ने

भारी मच्यो सेसके सीसपै भार, भो*कुंडली सो†फटा डारि फुंकार६
बाराहकी दाढ़मैं पीरव्है पूर, होनैं लग्यो ‡कामठी पिट्ठिको चूर ॥
कंपे सबै §दिक्करी ×चिक्करी पारि, धुज्जी ¶धरित्रीहु भै कल्पको धारि७
आदित्य आभा गई धूलितैं ढंकि, लोकेस अट्ठों८परे सोकमैं संकि॥
घाँघाँ वढ्यो धूमकी धार अंधार, उलंघिवे सेतु लग्गे अकूपार।८।
यों सस्त्र संबाहिनी बाहिनी बेग, दोऊ२ मिली औ चली उज्जली तेग ॥
आकर्ण अैंचे करैं चाप टंकार, सन्नद्ध संधा करैं जुट्टि जुज्झार ९
फट्टैं गिरैं तुंड मूर्द्धा अलीकाऽऽलि, कट्टैं कढैं नेत्र औ उच्छटैं पौलि
भ्रूपक्ष्म औ कूर्प लुट्टैं मनों मेह, लोलौं करैं के कटी नासिका लेह
छोनी छुवैं गल्ल औ संखके तोम, सोहैं गिरे रत्तमैं मौसुरी लोम ॥
टुट्टैं उड़ैं तालु त्यों दाढ़ औ दंस, कट्टै कृकाटी कहों कंधरा अंस ११

मेड़ताके खेत में इस प्रकार बड़े बल से युद्ध किया और शेष के मस्तक पर बड़ा भार मचा. वह * सर्प † फणों को धारण करनेवाला. वाराह को दाढ में पूर्ण पीड़ा होकर ‡कमठ की पीठ का चूर्ण होने लगा और §दिशा के सब हाथी ×चीख मारकर धूजे, ¶ पृथ्वी भी १ प्रलय का भय करके धूजी ॥ ७ ॥ २ सूर्य की कांति धूलि से ढकगई, आठों लोकपाल भय भीत होकर शोक में पड़े धुएं की धारा से ३ दिशा दिशाओं में अंधेरा बढ़गया और ४ समुद्र भी सीमा लांघने लगा ॥ ८ ॥ इस प्रकार ५ शस्त्रों से अंगों को मर्दन करनेवाली दोनों सेना ६ घटा के वेग से चली जहां उजली तरवार चलने लगी ७ कान तक खैंचे हुए धनुष टंकार करते हैं और सज्जित हुए वीर युद्धकरके नहीं भगने की या विजय की ८ प्रतिज्ञा करते हैं ॥ ९ ॥ मुख ६ मस्तक १० ललाटों की पंक्तियां फट कर गिरती हैं, नेत्र कट कर निकलते हैं और ११ कानों के अग्र भाग उछलते हैं १२ भौंहें और १३ कुहनियां मेघ के समान बरसती हैं, कितनी ही कटीहुई १४ जिव्हाएं नासिका को १५ चाटती हैं ॥ १० ॥ १६ गाल और १७ सीचा के १८ समूह से भूमि ढकती है और रुधिर में गिरेहुए १९ मूछों के केश शोभा देते हैं इसी प्रकार तालुआ, दाढ और २० दांत टूटकर उड़ते हैं, कहीं पर २१ गले का मणिया (घोंटी) गर्दन और २२ कंधे कटते हैं ॥ ११ ॥

केते चिरैं कंकटी खग्गकी धार, जुज्झार केते करैं पार कट्टार ॥
कढ्ढै कहीं बीर मातंगके दंत, फट्टै कहीं पेट ओ उच्छटै अंत ।१२।
नच्चैं कहीं बिप्फुरे घुम्मि के रुंड, जच्चैं कहीं धुंज्जटी मालकौं मुंड॥
डोलैं कहीं डाकिनी रत्तसौं मत्त, मीँडैं कहीं जुग्गिनी गत्तसौं गत्त१३
जुट्टैं कहीं जोध के मल्ल संग्राम, फुट्टैं कहीं फीलमैं कुंत उद्दाम ॥
कुक्कैं कहीं भीरुव्है सेस कँकाल, हुक्कैं कहीं हायकैं घाय बेहाल१४
दग्गैं कहीं लोपकौं तोप बंदूक, लग्गैं कहीं उच्छलैं फाल मंडूक॥
चक्खैं कहीं गीद गिद्धी बडी चाह, अक्खैं कहीं साकिनी वाह वाह ॥ १५ ॥
कुद्दैं कहीं एकही पायतैं रुंड, मुद्दैं कहीं नैन के भू गिरे मुंड ॥
बज्जैं कहीं माधुरी नारदी बीन, पुज्जैं कहीं कालिका लै बपा पीन ॥ १६ ॥
फेरैं कहीं भूप है छत्रकी छाँह, गेरैं कहीं अच्छरी कंठमैं बाँह ॥

कितने ही १ कवच धारण करनेवाले खड्ग की धारा से चिरते हैं और कई योधा कटारों को पार करते हैं, कहीं पर वीर लोग २हाथियों के दंत निकालते हैं और कहीं पर पेट फटकर आंतें उछलती हैं ॥ १२ ॥ कितने ही क्रोधित रुंड घूम कर नचते हैं और कहीं पर मुंडमाला बनाने को ३ शिव मस्तक मांगते हैं कहीं पर डाकिनियां रक्त से मत्त होकर फिरती हैं और कहीं पर योगिनियां ४ शरीर से शरीर को रगड़ती हैं ॥ १३ ॥ कितने ही वीर कहीं पर मल्लयुद्ध करते हैं, कहीं पर ५ हाथियों में ६ रुकावट रहित भाले फूटते हैं, कितने ही कायर ७ अस्थि पंजर बाकी रह कर कूकते हैं और कहीं पर हाय हाय कहके व्याकुल होकर कूकते हैं ॥ १४ ॥ कहीं नाश करने को बंदूकें और तोपें चलती हैं जिनके लगने से कहीं पर ८ मैंडक की छलांग के समान उछलते हैं कहीं पर गिद्धनियां बडी चाह से मांस खाती हैं और कहीं पर शाकिनियां प्रशंसा करती हैं ॥ १५ ॥ कहीं पर रुंड एक पैर से कूदते हैं, कितने ही मुंड ९ भूमि पर गिरतेहुए नेत्र बंद करते हैं, कहीं पर १० नारद की मधुर वीणा बजती है और कहीं पर पुष्ट मज्जा लेकर वीर लोग काली को पूजते हैं ॥१६॥ कहीं पर राजा छत्र की छांह में ११ घोड़े फेरते हैं, कहीं पर अप्सराएं वीरों के कंठ में भुज डालती हैं, कहीं पर वीर आगे बढकर तलवार मारते हैं और कहीं पर

मारैं कहीं अग्ग ह्वै खग्ग सामंत, हारैं कहीं उच्चरैं हंत हाहंत ।१७।
झूमैं कहीं कुंभिके कंठसौं जाय, घुम्मैं कहीं वीर के तीरके घाय ।
रंगैं कहीं जोध के रत्तमैं मुच्छ, मंगैं कहीं प्रेतनी गोदके गुच्छ ।१८।
गैमत्थ चोफार फट्टैं कहीं तत्त, मानो जगन्नाथके भत्तके पत्त ॥
वज्जैं कहीं वृत्त सारँग विस्फार, उड्डैं कहीं सोरके जोर अंगार ।१९।
खज्जूरिसे तुट्टि झंडे झुकैं लोल, जंगी बजे गोमुखा भेरिका ढोल॥
हल्लै फिरैं निट्टिकैं भिन्न वेतंड, फल्लै फिरैं फेरवी कोकैं फेरंड ॥२०॥
बानैत कोते भरैं सूतको बत्थ, सोहैं घनैं मारते संकुले सत्थ ॥
कट्टैं कहीं उच्छटैं चौंर औ छत्र, पापी छकैं भैरवी लोहिताऽमत्र२१
यों सेरता खेत मंड्यो महाजुद्ध, जुट्टे भले दक्खिनी कालसे क्रुद्ध ॥
संधया जैया आत यों दत्त गो दोरि, नक्खी विजैसिंहकी फोज झं-
झोरि ॥ २२ ॥
दे मार रट्ठोर हारे घनैं कुट्टि, औ तोपखाना खजाना लये लुट्टि ॥
संधया पढ़ै जंग जित्ते वडे जोर, भज्ज्यो विजैसिंह गो दुग्ग नागोर२३

हारकर १ खेद से हाहाकार करते हैं ॥ १७ ॥ कहीं पर वीर लोग २हाथियों के कंठ से जा लगते हैं, कहीं पर बाणों के घावों से घूमजाते हैं, कहीं पर ३ रुधिर से मूछें रंगते हैं और कहीं प्रेतनियां ४ चरबी के समूह मांगती हैं ॥ १८ ॥ उस युद्ध में कहीं पर ५ हाथियों के मस्तक चार फांक होकर फटते हैं सो मानो जगन्नाथ के भात के ६ पात्र फूटते हैं, कहीं पर गोलाकार हुए ७ धनुष का ८ शब्द होता है और कहीं पर दारूद के बल से अंगारे उड़ते हैं ॥ १९ ॥ कहीं पर खजूर के समान ९ध्वजा और झंडे टूटते हैं और कहीं युद्ध संबंधी १० गोमुख (बाजाविशेष) ११ नौबत और ढोल बजते हैं १२ कटेहुए हाथी हलाने से [illegible] फिरते हैं और १३ गीदड़नियां (स्यालनियां) १४ वृक (भेड़िये) और १५ [illegible] कूकतेहुए फिरते हैं ॥ २० ॥ कितने ही बानाबंध (युद्ध से नहीं भागने की प्रतिज्ञा का चिन्ह रखनेवाले) शूरों के पांवों में गिरते हैं और १६ भरेहुए ([illegible]) [illegible] शत्रुओं को मारतेहुए शोभा पाते हैं, कहीं पर चंवर और छत्र कटकर गिरते हैं और पापी १७भैरवी लोहू से भराहुआ पात्र पीकर तृप्त होती है ॥ २१ ॥ १८ [illegible] नामक जया सिंधिया का भाई मारता हुआ गया ॥ २२ ॥ १९ विजयसिंह नागोर के गढ़ में भागगया ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

बिजयसिंह मरुभूप भजि, गयो नगर नागोर ॥
जाय बहादुरहू दुर्यो, रूपनगर रठोर ॥ २४ ॥
प्रथम बिजयसिंहहिं [1]दमन, जया तबहि बरजोर ॥
तोपन जाल कराल रचि, गढ घिर्यो नागोर ॥ २५ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशावुम्मेदसिंह चरित्रे रूपनगराऽधिराजसामंतसिंहस्वाऽनुजबहादुरसिंहविग्रहविस्तरणकलुषितकुहककनिष्ठनिष्कासितससूनुवग्रजसन्धाजयाशरणाऽऽसादनमेदपाटेशराणाप्रतापसिंहमरणतत्सुतराजसिंहोदयपुरपट्टप्रापणरामसिंह १ सामन्तसिंह २ जया ३ योधपुर १ रूपनगरो २ द्धरणाऽर्थप्रस्थानश्रुतेतत्सबहादुरसिंह १ मरुपविजयसिंह २ सन्मुखाऽऽगमनमेड़तानगरमहाऽऽयोधनविरचनलुंठितवैरिविभवजयाजयाऽनुधावनपलायितविजयनागोरदुर्गप्रविशनम्लानमुखबहादुरसिंहरूपनगराऽऽगमनप्रस्थितपार्ष्णिपीडनजयानागोरकोट्टाऽऽवरणाभवनं त्रिचत्वारिंशो ४३ मयूखः ॥ ४३ ॥ आदितः ॥३२४॥

॥ २४ ॥ १. दंड देनेको ॥ २५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह के चरित्र में, रूपनगर के पति सामन्तसिंह और छोटे भाई बहादुरसिंह का विग्रह बढना और पापी छली छोटे भाई के निकाले पुत्र सहित बडे भाई का सिन्धिया जया की शरण लेना १ मेवाड़ के पति राणा प्रतापसिंह का मरना और उसके पुत्र राजसिंह का उदयपुर का पाट पाना २ रामसिंह और सामन्तसिंह सहित जया का जोधपुर और रूपनगर के निकालने के अर्थ गमन सुन कर बहादुरसिंह सहित मारवाड़ के पति विजयसिंह का सन्मुख आना ३ मेड़ता नगर में बड़ा युद्ध करना और शत्रु के वैभव को लूटकर जया के जय करने से भागकर विजयसिंह का नागोर के गढ में प्रवेश करना और मलीन मुख बहादुरसिंह का रूपनगर में आना ४ एड़ी दबाते हुए जया का गमन करके नागोर को घेरने का तियालीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ४३ ॥ और आदि से तीन सौ चौईस ३२४ मयूख हुए॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा–बुंदी नृप उम्मेद इत, रामानुज मत धारि
देस बिथारी रीति दृढ, संपदाय अनुसारि ॥ १ ॥
प्रतिमा इक१ श्रीरंगकी, दक्खिन हिंतु[1] मँगाय ॥
सिव धृति१८११मित[2] सक सुक्र[3] बदि, एकादसि११तिथि पाय२
मंदिर महलनमाँहिं रचि, सिल्प बिबिध मत सक्त[4] ॥
बिरचि प्रतिष्ठा निगम बिधि, वह थप्पी अति भक्त ॥ ३ ॥
तबतैं यह श्रीरंगको, अतुल पट्ट उच्छाह ॥
जेठ अ[5]सित एकादसी११, होत राम नरनाह ॥ ४ ॥
याहि बरस १८११ को उर्ज[6] सित, छट्ठी६[7]बासर पाय ॥
भूप भुजि[8]याहू जन्यो, सुत गुमानजुत रा[9]व ॥ ५ ॥
नाम तास सिवसिंह दिय, जातक[10] द्विजन बिचारि ॥
तदनंतर जो वृत्त हुव, सुनहु भूप हित धारि ॥ ६ ॥
सक जगती धृति१८१२माघ सित, सुक्र[11] बार स्मर[12] दीह१३ ॥
ऊदाउति रानिय जन्यौं, कुमर बहादुरसीह ॥ ७ ॥
अजितसिंह१ अरु यह कुमर, सोदर दुव२ सु कुमार ॥
बाल छपाकर[13] जिम बढत, दिन दिन अधिक उदार ॥ ८ ॥
बिजयसिंह मरुपाल इत, रुंद्ध[14] नगर नागोर ॥
संध्याको संकट सहत, कछु न जनावत जोर ॥ ९ ॥
बरस इक१ घेरा रह्यो, तोपन लग्गो ताप ॥
संध्या नहिं जावृत सह्यो, दुपहर जेठ दिवाप[15] ॥ १० ॥
व्याकुल तब बखतेस सुत, चूक बिचारिय चित्त ॥

॥ १ ॥ १ से २ प्रमाणवाले सम्वत् में ३ ज्येष्ट बदि ॥ २ ॥ ४ नाना प्रकार के समर्थ मतों से ॥ ३ ॥ ५ बदि ॥ ४ ॥ ६ कार्तिक सुदि ७ दिन ८ राजा की ब्य सवान स्त्री ९ गुमानराय ॥ ५ ॥ १० जन्म ॥ ६ ॥ ११ ज्येष्ट मास १२ कामदेव के दिन (तेरस के दिन) को ॥ ७ ॥ १३ द्वितीया के चन्द्रमा के समान ॥ ८ ॥ १४ नागोर में घिरकर ॥ ९ ॥ १५ सूर्य ॥ १० ॥

दुवर२ *इंदे पड़िहार द्रुत, बुल्ले दे बहु †बित्त ॥ ११ ॥
अग्गैं सन इंदे रहत, मरु ‡जनपदके माँहि ॥
चूक करनमैं जे चतुर, न करैं मरतहु नाँहि ॥१२॥
पावैं मरुपतिके पटा, बिनु सेवा रहि गेह ॥
काम परैं जब चूकको, अप्पैं तब निज देह ॥ १३ ॥
करैं यहहि सेवा कठिन, जब तब संभव होय ॥
§इतर काल कहुँ घरन, खिजे देत असु खोय ॥ १४ ॥
अग्गैं जिन सुमियानगढ, बिजड़ जवन लिय मारि ॥
मरत डरे नहिं नैंक मन, बिरच्यो चूक बिचारि ॥ १५ ॥
अभयसिंह मरुईसको, पुनि निज आयस पाय ॥
पील्लू१ लखपति१ दक्खिनी, दुवर२ दिय मारि गिराय ॥१६॥
कोलौं हम या गति कहैं, इंदनको आचार ॥
जे रचि बाजी जीवकी, खेलहे अजब खिलहार ॥ १७ ॥
तिहिं कुलके दुवर२ बीर तब, इंदे बुल्लिय अत्थ ॥
कह्यो हनहु संध्या कुटिल, तिन प्रति धन्वप तत्थ ॥ १८ ॥
सुनत जयाकी सेनमैं, उभय२ वनिक बनि आय ॥
बनिज बिथारयो बंचकनँ, बिपणि बजार बनाय ॥ १९ ॥
दुवर२ हि लरे पुनि इक्क दिन, समुझ्झत क्रीत हिसाब ॥
कल्पित कछु अपराध करि, खिजि खिजि होत खराब ।२०।
बकत परस्पर जैन बनि, उभय२ तित्थगर आन ॥
पलटत पायन धौतिपट, होत पदत्रन हान ॥ २१ ॥
सिथिल पग्घ सिरतैं सरकि, उरझ्झी कंठन आय ॥

* इंदा शाखा के पड़िहार क्षत्रिय † धन ॥ ११ ॥ ‡ मारवाड़ देश में ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ § अन्य समय १ प्राण ॥ १४ ॥ २ सुमियाणा में ॥ १५ ॥ ३ हुकम ॥ १६ ॥ १७ ॥ ४ यहां बुलाये ५ मारवाड़ के पति ने ६ तहां ॥१८॥ ७ ठगों ने ८ दुकान ॥ १९ ॥ ९ क्रय करने (मोललेने) का हिसाब समझने को ॥२०॥ १० धोवती ११ जूतियों का दान (प्रहार) ॥ २१ ॥ १२ ढीली १३ पघड़ी

कल्लम गई गिरि कानतैं, मुख्ख गल्ल स्वास न माय ॥ २२ ॥
इक्क कहैं कढिहौं अबहि, गिनि रक्खी मैं गूढ ॥
*मोदक खावत मात तब, मार्यो †उंदुरु मूढ ॥ २३ ॥
जपैं ‡इतर तेरे जनक, छल्लौ §जिनोदित छोरि॥
मक्खी दस१० घृत माँहितैं, नक्खी जियत निचोरि ॥ २४ ॥
गहत इक्क पत्थर गड्यो, दैबेकौं करि दाव ॥
खैंचत बिटपन[1] इक्क खिजि, घल्लत गालिन घाव ॥ २५ ॥
जिम तिम बिरचत करि जतन, अधोबात[2] उतसर्ग ॥
लखि इत उत बिहसन लगे, बलौं[3] दक्खिन भट बर्ग ॥ २६ ॥
इक मारत मुट्ठी उछरि, खिजि इक दंतन खात ॥
संध्याकी डोढी गये, लरत प्रहारत लात ॥ २७ ॥
धौतँबसन[4] अंतर दुहुँन२, कछि[5] कूछि[6] दृढ कोपीन ॥
दुव२ असिधेनु दुराय तँहँ, लरन भये इम लीन ॥ २८ ॥
लरत बनिक कौतुक लखत, उलट्यो कटक अपार ॥
प्रहसन[7] रूपक जिम प्रचुर, प्रकट्यो हास्य प्रचार ॥ २९ ॥
स्मित१कति जन कति जन हसित२,बिहसित३कतिक बनात

॥ २२ ॥ * लड्डू खाते समय † चूहे को ॥ २३ ॥ ‡ दूसरा कहता है कि तेरे पिता ने § जिन (अर्हन्त) के कहने को छोडकर अर्थात् अर्हन्तों के कहेहुए अहिंसा धर्म को त्यागकर ॥ २४ ॥ १ वृक्षों को ॥ २५ ॥ २अपशब्द (गुदा के पवन) का निकालना ३ दक्षिण की सेना के ॥ २६ ॥ २७ ॥ ४धोती के भीतर ५ छुरियें ६ छुपाकर ॥ २८ ॥ ७ हास्य के नाटक के समान बहुत ॥ २९ ॥ रसतरंगिणी में हास्य रस के बारह भेद लिखे हैं सो हम भी रसतरंगिणी के सातवें तरंग के अनुसार लिखते हैं कि हास्य रस दो प्रकार का है जिन में एक तो स्वनिष्ठ (अपने आप हसना) और दूसरा परनिष्ठ (दूसरे का हसना) जो उत्तम मध्यम अधम पुरुषों में रहकर छः प्रकार का है। जिनमें छः प्रकार का स्वनिष्ठ और छः प्रकार का परनिष्ठ मिलकर बारह भेद हुए हैं। उत्तम पुरुषों में स्वनिष्ठ और परनिष्ठ दोनों में स्मित और हसित होता है। और मध्यम पुरुषों में स्वनिष्ठ, परनिष्ठ, बिहसित और उपहसित होता है।

कतिक करत बक्कोष्टिका४, कति अतिहास५जनात ।३०।
अट्टहास६ कतिकन उदित, आच्छुरितक७ कति अंग ॥
कतिकन अवहसित८ रु कतिन, पारि उपहसित९प्रसंग ।३१।
कहुँ दृग विकसन संकुचन, ओठ फुरकनहु उप्पि ॥
बढ्यो प्रमथदेवत्त सिसेद, दस संध्या दल रुप्पि ॥
करत दंतधावन करम, जया पँटालय जत्थ ॥
कोतुक यह अक्ख्यो कतिन, तासों जाय रु तत्थ ॥ ३३ ॥
बनिक लरत देखे बहुत, मुष्टी मल्लकें मार ॥
पै इक रारि अपुव्व प्रभु, दरसनीय निज द्वार ॥ ३४ ॥
देखत जन पक्करत उदर, दुस्सह हसन दुखात ॥
कोतूहल्ल यह लखनको, जुरे छुरैं नहिं जात ॥ ३५ ॥
संध्याके सिर यह सुनत, अंतकँ छायो आय ॥
बुल्ल्यो तब बुल्लहु बनिक, निरखि निबेरैं न्याय ॥ ३६ ॥
इम भाखत सँहँसन अनुर्ग, दंभिन लाये दोरि ॥

तथा अधम पुरुषों में स्वनिष्ठ और परनिष्ठ, अपहसित और अतिहसित होता है इनमें थोड़े से कपोल फूलने, दन्त नहीं दीखने और नेत्रों के प्रान्त से अच्छी तरह देखने को स्मित कहते हैं कपोलों का फूलना और थोड़े से दांतों का दीखना, इस हास्यको हसित कहते हैं। समय के अनुसार जिस हास्य में उत्तम शब्द होवें, मुख का मुकड़ना और मुख पर लाली दीखे,उसको विहसित कहते हैं नासिका फूलना, टेढी दृष्टि होना गरदन का सुकड़ना और स्पष्ट शब्द होना इसको उपहासित कहते हैं। उद्धत होवे, नेत्रों से अश्रुओं का उदय होवे, मस्तक हिलता होवे, अत्यन्त स्पष्ट शब्द होवे, उसको अपहसित कहते हैं। अत्यन्त उद्धत, बहुत आंसु आवे, बहुत अत्यन्त शब्द होता होवे पासमें होवे उसको पकड़लेवे, हाथ से ताल बजावे जिसको अतिहसित कहते हैं ॥३०॥३१॥यहां कहीं तो लक्ष्य से हास्य को बताया है और कहीं लक्षणसे बताया है सो पाठक लोग जान लेवें १ शिव है देवता जिसका और २ श्वेत है रंग जिसका ऐसा हास्य सिन्धिया की सेना में खड़ा हुआ ॥ ३२ ॥ ३ दातण (दतून) करता था ४ डेरे में ॥ ३३ ॥ ५ दन्त मारकर ६ देखने योग्य ॥ ३४ ॥ ३५ । ७ काल ॥ ३६ ॥८नौकर ॥ ३७ ॥

लातन नख दंतन लरत, झुकत गये झंझोरि ॥ ३७ ॥
अति समीप जावत अटक, प्रतिहारनें किय पूर ॥
रारि तदपि अद्भुत रचत, दंभी[2] न रहे दूर ॥ ३८ ॥
कहत इक्क अपराध करि, मारत यह पुनि मोहि ॥
इतर[3] कहत संध्या अधिप, करत न्याय सबकोहि ॥ ३९ ॥
तू सठ तोलत छद्म तकि, लुट्टि अजानन लेत ॥
घटिकादिक मनके धरत, दानन ऊनित[6] देत ॥ ४० ॥
पुनि कहि इम दंतन पयन, लरे नखन रिस लाय ॥
तालिन दे संध्या तकै, गालिन देत गिनाय ॥ ४१ ॥
कढ्ढि छुरिन जावत निकट, दई जया उर दोरि ॥
गटकत हिय कालिक[7] गई, फोरी पंजर फोरि ॥ ४२ ॥
देत समय बुल्ले दुवरहि, होत अचानक हाक ॥
कहिये संध्या न्याय करि, को हममाँहिं कजाक[8] ॥ ४३ ॥
भाखि यह रु सत्वर[9] भजत, मार्‌यो इक १ असि मार ॥
कढिगो इक १ रोवत कुहंक, इक्खहु यह अंधार ॥ ४४ ॥

॥ षट्पात् ॥

कोलाहल हुव कटक मरत संध्या कुल इनके ॥
भये रुदनके राग छिप्रें दुंदुभि छत्तिनके ॥
विजैसिंह मरुईस सुनत किय मोद सिवायो ॥
अभयसिंह सुत अधम पिहुँल आतुर दुख पायो ॥
सक दुव मृगांक वसु इक १८१२ समय धिट्ठन इम छल बेस धरि ॥
मरुपालों[13] साल संध्यामय सु कढ्ढ्यो इंदनैं[14] जतन करि ॥४५॥

१ द्वारपालों ने निकट जाने से बहुत रोका २ लोभी ॥ ३८ ॥ ३ अन्य ॥ ३९ ॥ ४ छल ५ पंचसेरी आदि ६ कमती ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ७ हृदय और कलेजे को निगल कर शरीर को हलकेपन से फोड़कर गई ॥ ४२ ॥ ८ युद्ध करनेवाला छली हममें कौन है ॥ ४३ ॥ ९ शीघ्र १० छली ॥ ४४ ॥ ११ शीघ्र १२ बहुत १३ मारवाड़ के पति को १४ ईंदा क्षत्रियों ने ॥४५॥

॥ दोहा ॥

जपा तनय जनकू जबहि, पट्ट जनकको पाय ॥
बिंटि रह्यो नागोर बलि, तोपन रारि, रचाय ॥ ४६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे बुन्दीश्वरनिजाऽऽलयरचितसुमन्दिरश्रीरङ्गप्रतिष्ठापननिजराज्ञ्यूदाउरयौरसराजकुमारबहादुरसिंहोद्भवनकुमारशिवसिंहसुजिष्याजठरजन्मप्रापणनागोरदुर्गस्थराठोडविजयसिंहव्याकुलीभवनतत्प्रेषितकृतवाग्वेशेन्दोपटाङ्किप्रतिहारद्वय २ जयामारणप्राप्तजनकाऽधिकारतत्पुत्रजनकूनागोररणरचनं चतुश्चत्वारिंशो ४४ मयूखः ॥ ४४ ॥ आदितः ॥३२५॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ रोला ॥

बिजयसिंहकों बिंटि कलह जनकू व्याकुल किय ॥
करि तब संधि कबंध दम्म दसलक्ख१००००००दंड दिय ॥
जनक गयो अजमेर अब सु पच्छो हारि अप्प्यो ॥
बलि संभरपुर थट थान बाथार्द्धहि थप्प्यो ॥ १ ॥
निर्दाय जयाके नाम बिबिध मंजुल बनवाये ॥
मेरता१ रु नागोर२ लराजे बहु दम्म लगाये ॥

---

१ फिर नागोर को घेरा ॥ ४६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में, उम्मेदसिंह के चरित्र में, बुन्दी के पति का अपने महलों में बनाये हुए श्रेष्ठ मंदिर में, श्रीरंग की प्रतिष्ठा करना और अपनी राणी ऊदावति के उदर से राजकुमार बहादुरसिंह का जन्म होना १ कुमर शिवसिंह का दासी के पेट से जन्म पाना २ नागोर के गढ में स्थित राठोड़ विजयसिंह का व्याकुल होना और उस के भेजे फकीरों के भेषवाले ईंदा पदवीवाले दो पड़िहारों का जपा को मारना ३ पिता का अधिकार पाकर उसके पुत्र जनकू का नागोर में युद्ध रचने का चमालीसवां मयूख समाप्त हुआ॥४४॥ और आदि से तीन सौ पचीस ३२५ मयूख हुए ॥

२ युद्ध में२ भाई(दायभाग पानेवाले) रामसिंह को ॥१॥ ४ मकान ५ सुन्दर ६ पूजकर

कारि जनकू अब कुंच अनखि पच्छो पुरि आयो ॥
रूपनगर सन रारि बिरचि रट्ठोर दबायो ॥ २ ॥
सकुचि बहादुरसिंह सन्धि अतिबल मरहट्ठन ॥
आनि मिल्यो डर आनि प्रकट दिखराय नम्रपन ॥
रूपनगर खाली कराय सामंतहिं दिन्नौं ॥
यौंहि कृष्णगढ अप्पि कुंच जनकू पुनि किन्नौं ॥ ३ ॥
काका दत्ता संग बहुरि समसेरबहादुर ॥
सुत बाजेरायसौं एह जनम्यौं अवनीउर ॥
इन दोउन२ जुत उलटि धंस्यो जनकू दक्खिन धर ॥
बुंदिय आवत भूप जाय सम्मुह लायो घर ॥ ४ ॥
सबको करि सतकार मंडि मंजुल महिमानी ॥
संभर दिय पुनि सिक्ख विहित हित मय कहि बानी ॥
कोटापति ईत कुमत्ति अधिक चक्खी आकूती ॥
बाजीकरन बिनोद आनि मंडन रत ऊती ॥५॥
तास नसा करि तबहि खेदहुव देह खपावन ॥
अतिजगती धृति १८१३ अब्द श्रामैं बरखा ऋतु श्रावन ॥
बेलके कृष्णाबिलास व्याधि करि देह बिहायो ॥
सचिव झल्ल मदनेस बेग तब अजितै बुलायो ॥ ६ ॥
द्विज इक दानतिराय संग अनता पठयो द्रुत ॥
विष्णुसिंह नंती सु अजित बुल्लयो पित्थल सुत ॥
याकौं तब द्विज एह लघुहि अनता सन लायो ॥
अब्द पचास५० अवस्थ वृद्ध गद्दिय बैठायो ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ २ ॥ १ बहादुरसिंह को ॥ ३ ॥ २ मुसलमानी के डर से ३दौड़ा (शीघ्रता से गया) ॥ ४ ॥ ४ सुन्दर ५ घोड़े के समान मैथुन करने को वैद्यक में बाजीकरण कहते हैं ६ क्रीड़ा ॥ ५ ॥ ७ श्रावण मास ८ कृष्णविलास नामक बाग में ९ अजितसिंह को ॥ ६ ॥ १० पोता ११ पृथ्वीसिंह का पुत्र १२शीघ्र ही ॥७॥

इत सन्ध्या उज्जैनतैं, यह सुनि दत्ता आय ॥
कोटा विंटिय अनख करि, सेना अयुत१००००सजाय॥ ८ ॥
बुल्ल्यो हमरे हुकम बिनु, अजितसिंह हुव ईस ॥
अप्पहु यातैं दंड अब, श्रीमंतहि गिनि सीस[१] ॥ ९ ॥
मुद्रा बारह लक्ख १२००००० मित, दिन्नी तब सहि दंड ॥
दक्खिनको फैल्यो दुसह, ऐसो तेहर अखंड ॥ १० ॥
आयो इत उत्तरि अटक, उद्धत कटक अमान[२] ॥
मारक नादरसाहको, अहमदसाह पठान ॥ ११ ॥
सक अतिजगती धृति १८१२ समा, व्यापत समय वसंत ॥
किन्नौँ जिहिं मथुरा कतल, हत्या पर सठ हंत ॥ १२ ॥
आतप कातर पुनि गयउ, ग्रीखम लग्गत गेह ॥
मनुज हजारन मारिकैं, ओतु स्वननँ जुत एह ॥ १३ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

पुर मकसूदाबाद१ ललामक, सुहि मुरसिदाबाद१ जुग२ नामक ॥
बंगदेस अंतर तद्वासक, जवन सिराजुद्दौला सासक ॥ १४ ॥
जिहिं इंग्रेज जमत इत जानैं, पुनि करि अमल बढते पहिचानैं ॥
सचिव कोहु तंस पुर ढाका सन, धुत्त अछुत्त लै भज्यो बहु धन१५
सुपै रह्यो अंग्रेजन सरनैं, बल जिनको सब सिर जग धरनैं ॥
इत्यादिक हेतुन नबाव यह, सज्जि पैठो कलकत्ता सग्रह ॥ १६ ॥
जित्ति पुर सु सहसन सेनाजुत, दुर्ग फोर्टविलियम१ लिन्नौं द्रुत ॥
पुर जिहिं रस चउ ससि१४६मित पाये, जे अंग्रेज प्रबलपक्रराये१७
अति संकट कारा ते अटके, पै माये न तदपि तहँ पटके ॥

॥ ८ ॥ ९ ॥ १ प्रताप ॥ १० ॥ २ अमाप ॥ ११ ॥ ३ परम हिंसा ४ दुःख ॥ १२ ॥ ५ गरमी (धूप) से कायर ६ बिल्ली ७ कुत्तों सहित ॥ १३ ॥ ८ वहां का रहनेवाला ९ हाकिम ॥ १४ ॥ १० उसका कोई सचिव ११ बहुत धूर्त अछूता धन लेकर भगा ॥ १५ ॥ १२ आग्रह सहित ॥१६॥ १३ कलकत्ते के किले का नाम है ॥ १७ ॥ १४ बडे सकडे (तंग) बंद घर में डाले, परन्तु उसमें नहीं

इहिं*संकट कैदी व्याकुल अति, गुन रवि १२३ मित दवि
कीटगति ॥ १८ ॥
जियत बचे तेईस२३ प्रात जिम, मंदराज यँहँ सुद्धि सुनी इम ॥
तब कर्नेल क्लैव१साहब तह, सज्जि लरन नवसत१०९गोरनसह१९
सत पंद्रह१५००मित अवर सिपाहन, हुत आयो अहितन हियदाहन
आश्रम ससि बसु ससि १८१४ सक आगम, समर रच्यो सुचि४ गिम्ह२ समागम ॥ २० ॥
कलकत्ता जित्ति सु अरि काढे, बलि नबाब उत्तर दल बाढे ॥
सत्त अयुत७००००बल सह अग्रेसर, सज्यो नबाब पैलासी संगर२१
भिरत भज्यो सु काल तोपन करि, लह्यो विजय अंग्रेज अतुल लरि
अमल कंपनीको तादिनँ उत, देस बंग बिच कछुक जम्यो हुत२२

॥ दोहा ॥

इंदगढाधिप देव इत, पाप कुमाय प्रमत्त ।
नृपके सोदर दीप पँहँ, पठये जैपुर पत्त ॥ २३ ॥
यह उदंत तिनमैं लिख्यो, अब डरि भूप उमेद ॥
अप्पहि लैन अमात्यकौं, भेजहि लखि हुत भेद ॥ २४ ॥
मनहु सनाथैं मति सुमति, रक्खहु धीरज रंच ॥
बिन्नति इम दक्खिन बिखैय, पठई नीति प्रपंच ॥ २५ ॥
कछु वँसु नजरि निवेदिकैं, लै श्रीमंत निदेस ॥
अप्पहिं इम करिहैं अरहि, बुंदीनगर नरेस ॥ २६ ॥

जावे तो भी उसमें जबरी से डाले * इस सकड़ाई में १एक सौ तेईस अंगरेज कीड़ों की तरह घुटकर मरगये ॥ १८ ॥ २ प्रभात समय ३ खबर॥१९॥ ४ शत्रुओं के हृदय जलाने को ५ आषाढ ६कृष्णपक्ष, यह मरुभाषा के नेम से गिम्ह हुआ है जिसका अर्थ पाप है और पाप का रंग श्याम है ॥ २० ॥ ७ सेना उत्तर दिशा में बढाई ८ आगे होकर ९ पलासी नामक नगर में ॥ २१ ॥१०काल रूपी तोपों से ११ उस दिन १२ बंगाले में ॥२२॥२३॥१३ वृत्तान्त १४ आपको ॥२४॥ १५ हे बुद्धिमान् १६ देश में ॥ २५ ॥ १७ धन १८ शीघ्र ही ॥ २६ ॥

भावी बसि ए भूपके, पाये नूतन पत्र ॥
नृप उमेद देवहिं गिन्यों, ए सुनि पाप *अमल ॥

॥ गीतिका ॥

इत सक्करी धृति १८१४ अब्द लग्गत सेन दक्खिनतैं चली ॥
रघुनाथ१ मालिक नन्ह सोदर अो मलार२ बढे बली ॥
दल आत बुंदियके समीप नरेस सम्मुह जातभो ॥
महिमानि दे इक१ रत्ति रक्खि रु देव पत्र दिखातभो ॥ २८ ॥
रघुनाथ पत्त मलार संजुत बंचिकैं नृपकैं कह्यो ॥
तुम ईस मारहु देवसिंहहि पाप पापिय ज्यों चह्यो ॥
करि कुंच यों कहि दक्खिनी जयनैर छोनिय संचरे ॥
गढ भोम नामक बिंटि कोपन जाल तोपनके जरे ॥ २९ ॥
कछवाहके भट ते भजे सब भोमदुग्गहिं छोरिकैं ॥
इन आन मंडिय अप्पनी ततकाल जो गढ तोरिकैं ॥
पुनि टौंक पत्तन घेरि यत्तन देस जैपुरको दल्यो ॥
कछवाह माधव भूप सो सुनि आँजिकौं नहिं उज्झल्यो ॥३०॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे जयावैरनिमित्तजनकूदण्डितविजयसिंहदमदम्मदशलक्ष शक १०००००० सहिताऽजमेरदङ्गमहाराष्ट्रनिवेदनसम्भरपुरविभाग रामसिंहाऽर्पणमेरता १ नागोर २ सन्ध्यासद्मनिर्मापनप्रस्थितजनकू रूपनगरभारक्षेपणतत्पुरसामन्तसिंहीयकरणबहादुरसिंहाऽर्थकृष्ण

*पाप का पान ॥ २७ ॥ २८ ॥ १ मालिक हो सो २ जयपुर की भूमि में गये ॥ २९ ॥ ३ युद्ध को ४ नहीं चढा ॥३०॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह के चरित्र में, जया के वैर के कारण विजयसिंह को दंड देकर जनकू का दंडके दश लाख रुपयों सहित अजमेर नगर मरहठों की भेट करना और रामसिंह को बंट में सांभर पुर देना १ मेड़ता और नागोर में सिंधिया के मकान बनाकर गमन कर के जनकू का रूपनगर पर भार डालना और उस पुर को सामन्तसिंह का

गढदापनबुन्दीदक्षिणायियासुससैन्यसन्ध्याभोजनकोटेशदुर्जनशल्य मातुलानीमत्तमृत्युप्रापणसचिवाऽऽदितत्पट्टाऽनतेशाऽजितसिंहबन्धन तन्निमित्तसन्ध्यादत्तद्वादशलक्ष १२००००० कोटादण्डद्रम्मसमुद्धर णालङ्घितकरतोयानादरषाहमारकपठानाऽहमदषाहकुमारिकागमन मथुरामहापुरीप्राणिमात्रप्राणवियोजनसोदरदीपसिंहसम्बन्धिदेवसिं हविरचितवर्णादूतबुन्दीन्द्रदर्शनसमल्लारनन्हाऽनुजरघुनाथरायोदगाग मनदर्शितदेवसिंहदलसम्भरेशतत्सन्मनननीतभौमदुर्गमहाराष्ट्रजयपु रदेशदलनं पंचचत्वारिंशो ४५ मयूखः ॥ ४५ ॥ आदितः ॥३२६॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

नृप उमेद करउर नगर, इत गय अवसर पाय ॥
देव१ रु दोलतसिंह१ दुव२, इहाँ जेनक सुत आय ॥ १ ॥
नैति जुत लग्गे नृपति पय, बैठे मिसल विचारि ॥
कह्यो भूप तुम हित करल, स्वामि धरम अनुसारि ॥ २ ॥
इंद्रगढेश्वर देव इह, बुल्ल्यो अनृत[3] बनाय ॥

करके बहादुरसिंह को कृष्णगढ देना १ दक्षिण की इच्छावाले सिन्धिया का सेना सहित बुन्दी में भोजन करना और कोटा के पति दुर्जनसाल का भांग (माजुम) में मस्त होकर मरना २ सचिव आदि का उसका पट्ट (सिरपेच) "प्राचीन काल में पांच आमली के सरपेच को राज्य चिन्ह मानते थे" ३सचिव आदि का उसका पट्ट अणता नगर के पति अजितसिंह के बांधना और उसके कारण सिन्धिया के दिये दंड के बारह लाख रुपये कोटा से लेना ४ अटक नदी लांघ कर नादरशाह के मारनेवाले पठान अहमदशाह का आर्यावर्त में आकर मथुरा में प्राणि मात्र के प्राणों का वियोग करना (मारना) ५ छोटे सगे भाई दीपसिंहके सम्बन्धी देवसिंह के रचेहुए पत्रों को बुन्दी के पति का देखना और मल्लार व नन्ह के छोटे भाई रघुनाथराव का उत्तर दिशा में आना १ देवसिंह के पत्र दिखाकर चहुवाणों के पति का उनका सन्मान करना और भोमगढ को लेकर मरहठों की सेना का जयपुर के देश को पीसने का पैंतालीसवाँ मयूख समाप्त हुआ ॥४५॥ और आदि से तीन सौ छाईस ३२६ मयूख हुए ॥

१ पिता और पुत्र ॥ १ ॥ २ नम्रता सहित ॥ २ ॥ ३ झूठ बोला

सेवक हम प्रभुके सकल, करैं हुकम मन काय ॥ ३ ॥

॥ मनहंसः ॥

सुनिकैं इतेक नरेस वे दल बुल्लिकैं,
उनकौं दये उनके लिखे सब खुल्लिकैं ॥
तिन्ह बंचि देव सिटाय नाँ कछु बुल्लयो ॥
तब भूप कुप्पि निदेस मारनको दयो ॥ ४ ॥
रु कही दयो हय नाँहिं सो हम भुल्लये ॥
तुमनैं तथापि बिरोध बीज इते बये ॥
कहि यौं हन्यौं वह देव सोक सम्हारतैं ॥
पकरयो सु दौलतसिंह खग्ग निकारतैं ॥ ५ ॥
करि कैद बुंदिय दुग्ग ताकँहँ प्रेसयो ॥
अरु अप्प इंद्रगढाख्य पत्तनमैं गयो ॥
निज आन मंडिय रक्खि हाकिम व्हाँ भले ॥
उनके वँधूजन नैनवाँ सब मुक्कले ॥ ६ ॥

॥ भ्रमरावली ॥

नृपनैं इम पत्तन इंद्रगढाख्य लयो, रहिकैं कछु वासर केतन गड्डि दयो ॥
पुनि लैन परग्गनकौं पृतना पठई, भट ता बिच सुख्य सु तोक भयो बिजई ॥ ७ ॥
ध्वजिनी यह बुंदिय आन रचंत फिरैं, भट कोउ न तासन सत्रु दकालि भिरैं ॥
सुनिकैं यह खत्तउली पति आतभयो, नृपके दलपैं सहसा रतिवाह दयो ॥ ८ ॥
वजि इक्क ललक्क वढी धमचक्क मची, निसमैं चउसट्ठि ६४ अचानक

॥३॥ १पत्र मंगाकर २हुकम ॥४॥ पहिले ३ घोड़ा नहीं दिया था सो तो ४तोभी ५शोक करते हुए को ॥ ५ ॥ ६ इन्द्रगढ नामक पुर में ७ झीजन ॥ ६ ॥ ८ कुछ दिन रहकर ९ ध्वजा रोप दी १० सेना ॥ ७ ॥ ११ सेना १२ अचानक ॥ ८ ॥

आय नची ॥
तजि निंद रु तोकहु लै समसेर चल्यो, सु मनों बड़वानल सागरपैं उफल्यो ॥ ९ ॥
उमड्यो जनु कन्ह कुसस्थलके रनपैं, पटक्यो वपु सत्रुनकी सम सेरनपैं ॥
हनुमंत किलंकहिं लैन मलंगि बढ्यो, कपिलेश्वरके मुखतैं जनु साप कढ्यो ॥ १० ॥
इम तोक रजोगुनमैं छकि रंग रुप्यो, लखिकैं तिहिं खंत्तवको दल जात लुप्यो ॥
बखतावर त्यों मुहकम्म कुलीन वली, भट सम्मुह जाय रची धम चक्क भली ॥ ११ ॥
बिनु घोटक दोउन२ की तरवारि बही, कवलों सु कही नृप राम न जात कही ॥
तरकैं समसेर विदारि वकत्तरकों, उछटैं सिर तुट्टि निरंतर अंबरकों ॥
फटि टोप गिरे बिखरे दसतान दिपैं, लगि लोहित छुट्टि छछक्कन छोनि लिपैं ॥
बरछीन कितेक महाबल बेध करैं, कमनैत कितेक कलंबन प्रान हरैं ॥ १३ ॥
तरवारि तनुत्रनमाँहिं दुरैं दमकैं, चुभि भद्द बलाहकमैं ज्यों महादिमनी चमकैं ॥
उछटैं गल गाल रु भाल कपाल कटैं, बिनु मस्तक केक कबंध कराल अटैं ॥ १४ ॥
भिरिकैं इम संहरि सत्रुनके भट के, बखतावर१ तोकर२ बनैं बट के बटके ॥

॥९॥ १कन्नोज के २ शरीर को शत्रुओं की तरवारों पर पटका ॥१०॥ ३ युद्ध में ४ कालोजी की सेना ५ कुलवाले ॥११॥ ६ विना घोड़ों के ७ आकाश में ॥१२॥ ८कवचि को ९भूमि १०बाणों से ॥१३॥ ११कवचों में १२भादवे के मेघ में १३बिजुली

गिरितैं दुवर२ बुंदियकी पृतना[1] बिगरी, पहुँची भजि संभर भूपति पैं
सिगरी ॥ १५ ॥
पुनि हड्डनके पति सेन घनी पठई, द्रुतही तिहिं बुंदिय आन फिरा
य दई ॥
कर लैन लगे फिरि हाकिम बुंदियके, हठ मोघ[2] भये सब सत्रुन
के हियके ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

अनघोरा१ अरु ढीपरी२, लै रु अमल निज कीन ॥
ग्राम इंद्रगढके सकल, किय इत्यादि अधीन ॥ १७ ॥
ग्राम ढीपरी माँहिं गढ१, बंध्यो नृप रन बट्ट ॥
त्योंहिं इंद्रगढ अद्रि[3]पर, रच्यो दुग्ग चतु[4]रट्ट२ ॥ १८ ॥
कृत्रिम इक१ आपत किय[5]उ, महलन मध्य निवान ॥
बलि बिम्भासनि देविगिरि, सुभग रचे सोपान[6] ॥ १९ ॥
संदानित[7] पुनि देव सुत, दौलतसिंह जु कीन ॥
तारागढ तहँ असु[8] तजे, आमय[9] कछुक अधीन ॥ २० ॥
नृपति पठाई नैनवा, याकी मात रु नारि ॥
याकै तहँ हुव पुत्र इक१, सोहु मरयो गंद[10] धारि॥ २१ ॥
द्रुत नृप बुल्ल्यो[11] देवको, भक्तराम तब भ्रात ॥
दयो कृपाकरि इंद्रगढ, जाहि अब्द त्रय जात ॥ २२ ॥
कछु यह हम भावी कह्यो, बलि क्रमतैं अब बत्त ॥
इम नृप लीनों इंद्रगढ, घल्लि घत्त[12] पर घत्त ॥ २३ ॥
वेद इंदु धृति१८१४ अब्द बिच, माधव[13] माधव[14] मास ॥
खत्तोली पतिहू दयो, इम नृप दल[15] सिर त्रास ॥ २४ ॥

---

१ सेना ॥ १५ ॥ २ व्यर्थ ॥ १६ ॥ १७ ॥ ३ पर्वत पर ४ चौ बुरजा (चार बुरजवाला) ॥ १८ ॥ ५ बनाया हुआ मोटा ६ पगथिये (सीढियें ॥ १९ ॥ ७ कैद ८ प्राण ९ रोग के अधीन ॥ २० ॥ १० रोग ॥ २१ ॥ ११ शीघ्र बुलाया ॥ २२ ॥ १२ घात पर घात ॥ २३ ॥ १३ वसन्त ऋतु १४ वैशाख मास में १५ सेना पर ॥ २४ ॥

तोक महासिंहोत तँहँ, जैतगढाधिप जोध ॥
तिल तिल तेगन तुट्टयो, रचि बहु सत्रुन रोध ॥ २५ ॥
अपराधीकौं मारि इम, नृप आयो निज नैर ॥
जैपुर पर मल्लार इत, बंध्यो दुद्दर बैर ॥ २६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे बुन्दीशकरउरद्रंगगमनसमाहूतदर्शिततत्पत्रेन्द्रगढेशदेवसिंहमारणतदीयतनुजदौलतसिंहदुर्गकाराक्षेपणतस्त्रीजननयनपुरप्रेषणरावराजेन्द्रगढगमनतद्भूमिशासनाऽर्थससैन्यतोकसिंहप्रेषणखत्तोलीशतत्सौप्तिकरचनतोकसिंहबखतावरसिंहमरणबुन्दीपृतनापलायनपुनःप्रेषितभटदेवसिंहदेशस्वीकरणडीपरी १ न्द्रगढ २ चतुरट्टदुर्गनिपाना ऽऽदिविन्ध्यवासिनीगिरिसोपानादिसमनुष्ठानसन्दानितदौलतसिंहकाराकलेवरहानजाततत्पुत्रनयनपुरमरणरावराड्बुन्द्याऽऽगमनमल्लारजयपुरवैरबन्धनं षट्चत्वारिंशो ४६ मयूखः ॥४६॥
आदितः ॥ ३२७ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

---

१ जैतगढ का पति ॥ २५ ॥ २३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह के चरित्र में बुन्दी के पति का करवर नगर में जाना, मंगायेहुए उसके पत्र दिखाकर इन्द्रगढ के पति देवसिंह को मारना १ उसके पुत्र दौलतसिंह को गढ में कैद करना और उसकी स्त्रियों को नैणवा पुर में भेजना २ रावराजा का इन्द्रगढ जाना और उसकी भूमि को आधीन करने के अर्थ अपनी सेना सहित तोकसिंह को भेजना २ खातोली के पति का उस पर रतिबाह देना और तोकसिंह व बखतावरसिंह का मरना ३ बुन्दी की सेना का भागना और फिर भेजेहुए वीरों का देवसिंह के देश को लेना, डीपरी और इन्द्रगढ में चार बुरजोंवाला गढ, जलाशय, विन्ध्यवासिनी के पर्वत पर सीढियें आदि करना ४ कैद किये हुए दौलतसिंह का कैद में मरना और उसके जन्मेहुए पुत्र का नैणवानगर में मरना ५ रावराजा का बुन्दी आना और मल्लार का जयपुर से वैर करने का छियालीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ४६ ॥ और आदि से तीन सौ सत्ताईस मयूख हुए ॥३२७॥

॥ षट्पात् ॥

अक्खी माधव अग्ग हमहु जैपुरपति व्हैहैं ॥
तबहि रामपुर तुमहिं दुवं२ हि हुलकरपति दैहैं ॥
बरस सत्त७ गय बित्ति ड्रंग२ कूरम नहि दिन्नैं ॥
यातैं हुलकर सज्ज कटक जैपुर पर किन्नैं ॥
माधव नरेस सुनि भीत मन दम्म लक्ख ग्यारह११००००० दये
बनि नम्र परग्गन जुत बहुरि ए दुव२ पत्तन अप्पये ॥

॥ दोहा ॥

पत्तन चन्द्राउतनको, रामपुरा१ सह देस ॥
जो लिन्नों जयसिंह सो, किन्नौं हुलकर पेस ॥ २ ॥
टौंक नगरके प्रांत ढिग, दूजो२ रामपुरा१ सु ॥
कहियत रायबसंतको, वह दिन्नौं डरि आसुं३ ॥ ३ ॥
दुव२ पुर जनपदं सहित दे, तब मेट्यो इम त्रास ॥
दक्खिनको दल टारि दिय, माधवं माधवं मास ॥४॥

॥ हरिगीतम् ॥

सक बान चन्द्र भुजंग भू १८१५जयनेर यौं जनकू बढ्यो ॥
सन्ध्या जया सुत सेन सज्जि रु देस दक्खिनतैं चढ्यो ॥
गोदावरी नदि लंघि त्यौं अवरंग पत्तन लंघयो ॥
बुरहान पत्तन लंघि बेग मिलान मेकलजा दयो ॥ ५ ॥
ओंकार ईसहिं पुज्जि यौं जनकू अवंतिय उत्तर्यो ॥
गढ भैंसरोर मुकाम दे दरकुंच हंकत जो पर्यो ॥
सुनि एह बुंदिय भूप तत्थहि जायकैं हित मंड्यो ॥
महिमानि जिम्मत जाहु यौं कहि नैर लावनकौं भयो ॥६॥
तँहँ इंद्रगढपति देवकी तिय पत्र विन्नति मुक्कली ॥

---

१ दोनों रामपुरे ॥ १ ॥ २ ॥ २ शीघ्र ॥ ३ ॥ ३ देश सहित ४ माधवसिंह ने
५ वैशाख मास में॥४॥ ६ इधर ७ अवरंगाबाद ८ नर्मदा नदी पर ॥ ५ ॥ ६ ॥

अरु यों लिखी तुम अद्ध छोनिय लेहु पिक्खहु जो भली ॥
तिहिं बंचिकैं जनकू कहे कटुबैन बुंदिय भूपसों ॥
हमरो सहाय बनायकैं तुम निक्खसे दुख कूपसौं ॥ ७ ॥
हमरो निदेस लयैं बिनाँ तुम इष्ट अप्पन नाँ करो ॥
उनकौं ब अप्पहु इंद्रगढ निज राज्य प्रभुपन जो धरो ॥
सुनि इह्न बुल्लिय पेसवा तुमरे जु मानन ईसहै ॥
तिनकौं सुनाय करी कही सुनि रावरी इत रीसहै ॥ ८ ॥
करनों तुम्हैं हितमाँहिं अहितहि तो ब हम घर जायहैं ॥
तुम सज्जि आवहु जंगकौं अब इह्न हत्थ दिखायहैं ॥
आयो यहै कहि भूप बुंदिय साज संगरके भये ॥
सुनि यों मलार१ रु नन्ह भ्रात२ निवारि दोउन२कौं दये ९
जनकू जया सुत कुंच कैं तब पत्त जैपुर बेगही ॥
कछु दम्म माधव दंड दै डरि नम्रता गति के गही ॥
पुनि सुक्कतालन जीवखाँ सन जायकैं जनकू लरयो ॥
नहिं तत्थ मिच्छ रुहिल्लसों मरहट्ठ भार सह्यो परयो ॥ १० ॥
नय३ अब्दसों रनथंभ गिरि इत फौज दक्खिनकी लरैं ॥
बिच साहके भट सज्ज ते नहिं दुर्ग छोरन अद्दरैं ॥
लरतैं परंतु छतीस३६ मास बिताय व्याकुल वे भये ॥
खंडारि जैपुर दुर्ग ही ढिग तत्थ कग्गर प्रेसये ॥ ११ ॥
कछवाह सेवक साहको इम ताहि हम गढ अप्पिहैं ॥
मरिजाहिं पै मरहट्ठकौं रनथंभमैं नहिं थप्पिहैं ॥
तुम छन्न आवहुँ रत्तिमैं हम दुग्गतैं कढि जायहैं ॥
पचरंग केतनं कुम्भ भूपतिकोहि अत्थ रुपायहैं ॥ १२ ॥

१आधी भूमि २अच्छी देखो सो लो ॥७॥ ३ अपना चाहा हुआ (भला) ४अपने राज्य का स्वामीपना चाहते हो तो ॥८॥९॥१०॥ ५ पत्र भेजा ॥११॥ ६कछवाहा बादशाह का सेवक है इस कारण ७ रात्रि में छुप कर आओ ८ ध्वजा ॥१२॥

खंडारि मुख्य अनोपसिंह हुतो पचेवरिको धनी ॥
खंगार बंसिय[1] बंचि जो दल[2] रत्ति गो सजिकैं[3] अनी ॥
लखि साह सेवक ताहि तब रनथंभ अंतर[4] लैगये ॥
तिंहिं झारि खग्गन नन्ह बीर भजाय बाहिरके दये ॥ १३ ॥
कढि साहके भट वर्ग दिल्लिय जाय वृत्त[5] निवेदयो ॥
इम बान भू धृति१८१५ पोस सित रनथंभ कूरमकै गयो ॥
संभार[6] खान१ रु पान२के तँहँ कुम्म संचित के करे ॥
बारूद१ सीसक२ बित्त३ रक्खि तड़ाग जीरण उद्धरे ॥१४॥

॥ दोहा ॥

बहुरि दुग्ग रनथंभ ढिग, जयपुर छबि अनुसार[7] ॥
निज नामक माधव नगर, रच्यो बिबिध बिसतार ॥ १५ ॥
हुलकर पँहँ पठयो हुकम, सुनत एह श्रीमंत ॥
दुर्ग लेहु रनथंभ द्रुत[8], अब करि जैपुर अंत ॥ १६ ॥
तंते वह पठयो तबहि, दे हुलकर दल[9] संग ॥
गंगाधर दरकुंच गति, जित्तन आयो जंग ॥ १७ ॥
जनपद[10] नागरचाल जिहिं, क्रमि[11] पत्तन ककोर ॥
कीनौं जैपुर कटकसौं, जुद्ध तुमुल बरजोर ॥ १८ ॥

॥ षट्पात् ॥

अतिजव हयन उठाय घेरयो परदल[12] गंगाधर ॥
मंड्यो आयुध मेह दुरयो बढि खेह दिवाकर[13] ॥
खुंदि पहुमि हय खुरन डुरन लग्गे सागर जल ॥
लग्गे पब्बय[14] गुरन मुरन अतलादि महीतल ॥
काहुको भयो नहिं जय कलह[15] पै बहु भट कटि कटि परिग

१ खंगारोत २ पत्र ३ सेना सजकर ४ भीतर ॥ १३ ॥ ५ यह वृत्तान्त (हाल) अरज किया ६ सामग्री ॥ १४ ॥ ७ सदृश ॥ १५ ॥ ८ शीघ्र ॥ १६ ॥ ९ सेना ॥ १७ ॥ १० देश ११ जाकर ॥ १८ ॥ १२ शत्रु की सेना में १३ सूर्य १४ पर्वत १५ युद्ध में

इम पहुमि लुत्थि छादित मनहु बनिजकार[1] टंडा ढरिग ॥१९॥

॥ दोहा ॥

सुभट मरे रन पंचसत५००, इत उतके अनुरत्त[2] ॥
घाय दुसह लग्गे घनें, गंगाधरके गत्त[3] ॥ २० ॥
जैपुर बड उमराव जुग२, परे भिन्न तजि प्रान ॥
सत्यासी८७ तिनके सुभट, मरे इतर[4] छकि मान[5] ॥ २१ ॥
जोधसिंह१ अभिधान[6] इक१ नाथाउत कछवाह ॥
मिसल दाहिनीको मुकुट, चोमू पत्तन नाह ॥ २२ ॥
बगरूपति दूजो२ बहुरि, कूरम चतुरभुजोत ॥
रन गुलाबसिंहहु रह्यो, बाम मिसल उद्योत ॥ २३ ॥
ए२ उमरावन अग्रणी, जैपुरके गिरि जात ॥
भये न सम्मुह इतर भट, दुर्मन[7] भाव दिखात ॥ २४ ॥
इत तंते गंगाधरहु, घन खग्गन सहि घाय ॥
तब मुरर्यो दक्खिन तरफ, करन अनामय काय[8] ॥ २५ ॥
समा[9] अष्टि धृति१८१६ प्रमित सक[10], लग्गत ऋतु हेमंत ॥
अगहनमैं ए कुम्म दुव२, हुव गतप्रान लरंत ॥ २६ ॥
इत गंगारधकौं मुर्यो, सुनि हुलकर मल्लार ॥
जैपुर पर हंक्यो जबहि, पहु[11] रचि कटक प्रसार ॥ २७ ॥

॥ षट्पात् ॥

दक्खिनधरको थंभ चढ्यो हुलकर जैपुरपर ॥
दरकुंचन करि दोर अवनि[12] दब्बत डारत डर ॥
जनपद[13] नागरचाल प्रथम बिंट्यो उनियारा ॥
भयो चकित भोगीस[14] धरनि फुट्टत हय धारा[15] ॥

मानों१बनजारों का बादल पड़ा है ॥१९॥ २प्रीति युक्त ३शरीर में ॥२०॥ ४अन्य ५इज्जत में छक कर ॥ २१ ॥ ६ नाम ॥ २२ ॥ २३ ॥ ७ उदासीनता ॥ २४ ॥ ८ शरीर को नैरोग्य करने को ॥ २५ ॥ ९ सम्वत १० विक्रम के शक का ॥ २६ ॥ ११प्रभु ॥२७॥ १२भूमि १३नागरचाल देश में १४ शेषनाग १५घोड़ों की दौड़से

सिरदारसिंह *नारव नमित [1]सयन जोरि लग्गो पयन॥
तिहिँ दंडि गमन अग्गैँ कियउ हुलकर लगि जैपुर अयन२८
कुसथल मृत फतमल्ल तास हुव रतनसिंह सुत ॥
ताको इक लघुपुत्र नाम बिक्रम साहस जुत ॥
जगतसिंह रट्ठोर हिंतु[2] सहसा रचि संगर ॥
छिन्नि नगर बरवाड़ भयो पति अप्प बंधि घर ॥
इहिंहेतु[3] आय मल्लार इत तोपन ताप चलायकैँ ॥
रट्ठोर अमल पच्छो रचिय गो कछवाह पलायकैँ[4] ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

दक्खिन१ जैपुर२ बैर सुनि, जगतसिंह अभिधान[5]॥
सुत कबंध सिवसिंहको, बैठो लै निज थान ॥ ३० ॥
तब कूरम रतनेस सुत, राजाउत करि रारि ॥
छिन्नि नगर बरवाड़ लिय, दिय रट्ठोर निकारि ॥ ३१ ॥
यातैं हुलकर भीर करि, वह कछवाह भजाय ॥
जगतसिंह बरवाड़ पुर, बहुरि दयो बैठाय ॥ ३२ ॥
सक रस ससि बसु ससि१८१६ बरस, श्राम[6] बलच्छ[7] सहस्य[8]॥
हुलकर सन बुंदीसहू, गो कछु करन रहस्य ॥ ३३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७ राशावुम्मेद सिंहचरित्रे माधवसिंहपूर्वप्रतिजातरामपुरद्वय २ मल्लारोपायनीकरण सन्ध्याजनकूदग्दिग्गमनसम्मुखप्रस्थितरावराट्तन्मिलनप्राप्तदेवसिंहपत्नीविज्ञप्तिपत्रसन्ध्याहडुन्दकुत्सनतत्कुद्दबुन्द्यागतबुन्दीशसमिदीह

* नरुका [1] हाथ जोड़ कर १ मार्ग ॥ २८ ॥ २ से ३ इस कारण ४ भागगया ॥ २९ ॥ ५ नाम ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ६ मास ७ सुदि ८ पौष ॥ ३३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह के चरित्र में, माधवसिंह का पहिले के दियेहुए दोनों रामपुरों को मल्लार की भेट करना और जनकू नामक सिंधिया का उत्तर दिशा में आना १ सम्मुख जाकर राव राजा का उस से मिलना और देवसिंह की स्त्री की अरजी पाकर सिन्धिया का

नश्रुतैतद्रघुनाथराय १ मह्लार २ युयुत्सुद्वय २ निवारणानीतजयपुरद
मद्रम्मजनकूशुक्रतालयुद्धविजयनरुहिल्लनजीवखानपलायनदिल्लीश
दुर्गेशदुर्गरणस्थम्भकूर्म्मराजनिवेदनजयपुरदक्षिणाविरोधवर्धनश्रीम
न्तशासितहुलकरगङ्गाधराऽऽदिपुरतःप्रेषणातज्जैपुरसैन्यसमायोधन-
माधवसिंहमुख्यसुभटनाथाउतयोधासिंह १ चतुर्भुजोतगुलाबसिंहा २
ऽदिमरणाक्षतक्षुरणगंगाधरदक्षिणाऽऽदिगमनश्रुतैतद्धुलकराऽऽगमनत
न्नारवसरदारसिंहदमनराजाउत्तविक्रमोकृतवरवाड़पुरराठोड़जगत्सिंहा
ऽऽर्पणसम्मतमल्लारमन्त्रणबुंदीन्द्रबरवाड़पूर्गमनं सप्तचत्वारिंशो४७
मयूखः ॥ ४७ ॥ आदितः॥३२८॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ पज्झटिका ॥

लिय अजितसिंह१ पट्टप कुमार, लघु पुत्र बहादुर२ बहुरि लार ॥
बुंदीस मिल्यो बरवाड़ जाय, सम्मुह मलार आयो सुभाय ॥१॥
करि उभयर रहे दिन दुवरमुकाम, तँहँ सुनिय सुद्धि पंजाब धाम॥

हाडों के पति को धमकाना १ उससे क्रुद्ध होकर बुन्दी में आये बुन्दी के पति को युद्ध की इच्छावाला सुनकर रघुनाथराव और मल्लार का युद्ध की इच्छा वाले उन दोनों को रोकना ३ जयपुर से दंड के रुपये लेकर जनकू का शुक्रताल के युद्ध में विजय करना और रुहिल्ला नजीबखान का भागना ४ दिल्ली के बादशाह के गढ के पति कारणतभँवरको कछवाह राजा(माधवसिंह) को देना और जयपुर और दक्षिण का विरोध बढना ५ श्रीमन्त के हुकम पाये हुए मल्लार का गंगाधर आदि को आगे भेजना और उसका जयपुर की सेना से युद्ध करना ६ माधवसिंह के मुख्य सुभट (उमराव) नाथाउत योधासिंह और चतुर्भुजोत गुलाबसिंह आदि का मरना और घावों से क्षीण गंगाधर का दक्षिण आदि में जाना ७ यह सुनकर हुलकर का आना और उसका नरूके सरदारसिंह को दंड देना८ राजाउत विक्रमसिंहके लिये बरवाड़ पुर को राठोड़ जगतसिंह को देने और मल्लार से सलाह करने को बुन्दीन्द्र का बरवाड़ जाने का सैंतालीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥४७॥ और आदि से तीन सौ अट्ठाईस मयूख हुए ॥ ३२८॥

१ श्रेष्ठ रीति से ॥ १ ॥ २ खबर

सजि सेन खानअहमद पठान, उल्लंघि अटक आयो *अमान॥२॥
पंजाब अमल अप्पन जमाय, दक्खिनके हाकिम दिय उठाय ॥
यह सुनत किन्न हुलकर पयान, चढि संग भयो नृप चाहुवान।३।
†सिसु जानि सिखावन सुतन नीति, लायो सु दिखावन राजनीति
वय सप्त७ बरस जेठो कुमार, लघु पुत्र अब्द चउ४ वेस धार॥४॥
तिनकों पुनि बुंदिय सिक्ख दिन्न, मल्लार संग नृप गमन किन्न ॥
मल्लार चट्टसू आदि नैर, लुट्टे जैपुरके बिरचि बैर ॥ ५ ॥
पंजाब अमल मंडत पठान, जयनेर[1] छोरि किय उत पयान ॥
इक बंधु[2] महासिंहोत तत्थ,किय तुपक झारि निस बिच अनत्थ[3]।६।
सुहरानिपति दसरथसिंह सुप्त[4], किन्नौं पयागसुत प्रान लुप्त ॥
खोज्यो वह मारक[5] सुनत भूप, सु मिल्यो न भज्यो परि लासकूप७
करि तदनु[6] हड्ड१ हुलकर२ पयान, पुर कोटपुत्तली दिय मिलान[7]॥
किय सेन पठानन सोस सज्ज, श्रीमंत बिजय रन करन कज्ज ॥८॥
गाजुद्दीखाँ इत ठहै हराम[8], मारयो प्रभु आलमगीर नाम ॥
यह सुनत मुलक पंजाब छोरि, इत नादर्रहन[9] आयो सु दौरि ॥ ९ ॥
तब त्रास निजामनमुल्क[10] पाय, मरहट्ठ सकल बुल्ले सहाय ॥
जित तित हुतो सु दक्खिन अनीकं[11],सब दिल्लिय आयो चहिसमीकं[11]
उततैं सु खानअहमद पठान, आयो सबेग दिल्लिय अमान ॥
सुनि हुलकर अक्खिय नृपहिं एह, भुव करत रंग तुम जाहु गेह११
गो बुंदिय तब संभर नृपाल, आयो मलार दिल्लिय उताल ॥
संकरदा पत्तन लूट ठानि, सज्ज्यो पठान सन जंग जानि ॥ १२ ॥

* प्रमाण रहित ॥ २ ॥ ३ ॥ † बालक जानकर अपने पुत्रों को नीति सिखाने के लिये ॥४॥ ५ ॥ १ जयपुर को छोड़कर २ भाई ३ अनर्थ ॥ ६ ॥ ४ सोतेहुए को ५ मारनेवाले को ॥ ७ ॥ ६ जिसपीछे ७ मुकाम किये ॥ ८ ॥ ८ नादरशाह को मारनेवाला ॥ ९ ॥ ९ यह पदवी है १० सेना ११ युद्ध ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥

जनकू३ हु जयासुत सुनत आय, दत्ता३ हु सैन आयो सजाय ॥
संभासुत४ आयो बहुरि सूर, *जव मंडि लरन संध्या जरूर॥ १३॥
अरु सठ [1]कलीज निज धर्म हीन, आलीगोहर दिल्लीस[2] कीन॥
दै पुनि मरहट्टन कोटि १०००००००[3] दम्म, किय तिन सहाय निज बिजय कम्म[4] ॥ १४ ॥

दिल्ली दल१दक्खिन दल२दुरंत[4], मिलि इक्क१ सज्यो अब बिरति मंत[5]
बज्जिग निसान[6] जितितित बिसेस, सज्जिग प्रबीर दल दक्खि देस१५
हुअ विविध तोप सज्जित हरोल, लहरात धुजा फहरात लोल[7] ॥
मृगराजमुखी[8] कति लंबमान[9], बाराहमुखी कति वर बिधान ॥१६॥
बिखधारमुखी[10] कति तंति[11] बिसाल, करिराज[12] मुखी कति अति कराल ॥

सिंदूर[13] लेपन लोहित सुहात, दगि प्रलय काल ततखिन दिखात१७
कति कांत[14] लोहमय पृथुलकाय[15], सुभ रीति सुल्वमय[16] कति सुहाय
किय सबल धातुमय सज्ज केक, इम पुनि गुबार[17] संचय अनेक१८
आरूढ निठुर[18] चरखन असेस, बिकराल ज्वाल जनु[19] काल बेस ॥
अंगार बमत खिन खिन अपार, हुव सज्ज छार गढ करनहार॥१९॥
मिलि दगत दिसा दैवंत[20] मिटाय, सतकोटि[21] नाद सज्जित सिटाय ॥
दुवसत २०० हरोल जिन्ह बेलदार, कुद्दाल हत्थ मग सुद्धकार[22]२०
सत दुव२०० कुठारधारक सु अग्ग, मेटत तरु रोध[23]क रचत मग्ग॥

*वेग रचकर।१३। [1]मूर्ख कलीजखां [2]दिल्ली का पति किया [3]रुपये [4]काम ।१४। [4]दूर है अन्त जिसका [5]मंत्र [6]नगारे ॥१५॥ [7]चपल [8]सिंहमुखी [9]लंबे प्रमाणवाली ॥ १६ ॥ [10] सर्पमुखी [11] लंबी पंक्तिवाली [12]हस्ती के मुखवाली [13]सिंदूर से शोभायमान लाल मुखवाली ॥ १७ ॥ [14] सुन्दर लोहे की [15] बडे शरीरवाली [16] तांबे की [17] तोप विशेष (गुबारा) ॥ १८ ॥ [18] कठोर चरखों पर [19] मानों ॥१९॥ [20]दिक्पालों सहित दिशाओं को मिटाती है; अथवा दिशाओं की मूर्ति को मिटाती है [21] वज्र का शब्द [22] मार्ग साफ करनेवाले ॥ २० ॥ [23] रोकन

ते तोप खिनहु अटकन न देत, लैजात *अद्रिसिर †मलप लेत॥२१॥
भुव धसत चक्र चरखन ‡भयार, त्रिसती३०० इम तोपन हुव तयार
दुवर१ दलन लक्ख१००००० घोटक दुरूह, सत्वर फिराक भति
भति समूह ॥ २२ ॥
जरजाल३ सज्ज पखराल४ जीन, नखराल चाल रय५ फाल लीन॥
नतगोधि६ चपल चपला७ समान, केतक कलीन उपमान कान॥२३॥
खुर रजतपत्त८ कृत नटन खेल, मनु ससि९ कलंक खुरतार मेल॥
प्रतिक्रमन१० खेह उड्डत अनूप, धरनी कि रच्छकन११ देत धूप॥२४॥
जे वैद्य पराजय१२ रोग जाल, अरु बिजय सिद्धि साधन उताल॥
अरि१३ पवन पिक्खि जित्यो असेस, थालहु१४ जिन सेवत पालबेस॥२५॥
धुनि१५ सीस लखत जिन फाँद धाप, प्राकार१६ रचन छोरत धराप१७॥
लखि जिन मलंग तिरछी लजंत, कुलटा कटाच्छ डारन तजंत॥२६॥

वाले वृक्षों को * पर्वत के ऊपर † कूदते हुए ॥ २१ ॥ ‡ भयङ्कर दोनों सेनाओं में १ कठिनाई से तर्कना में आवैं ऐसे लाख घोड़े तयार हुए जिन घोड़ों के समूह शीघ्रता के साथ २ भांति भांति से फिरते हैं ॥ २२ ॥ ३ जरी की जालियों और ४ पाखरोंवाले जीनों से सजे हुए नखरावाली चाल में और ५ वेग के साथ फांदने में लीन ६ झुके हुए ललाटवाले और ७ बिजली के समान चपल और केतकी की कली के समान कानवाले ॥ २३ ॥ ८ चांदी के पत्रोंवाले खुरों से नाचने का खेल करते हुए और जिनके खुरों से खुरताल का मेल है सो मानों ९ चंद्रमा से कलंक का अथवा राहु का मेल है १० उन घोड़ों के चलने से उपमा रहित खेह उठती है सो मानों भूमि अपने ११ रक्षकों (घोड़ों) को धूप देती है ॥ २४ ॥ जे (घोड़े) १२ पराजय (हार) रूपी रोग समूह के वैद्य और विजय रूपी सिद्धि के शीघ्र साधनेवाले १३ शत्रु देखकर सम्पूर्ण पवन को जिन्होंने विजय किया है १४ सर्प भी याल (केसवाली) के वेस में जिन की सेवा करते हैं ॥२५॥ १५ मस्तक धुनकर जिसको देखते हैं उसीको दौड़कर फांद जाते हैं १७ वे भूमि के पति (घोड़े) १६ कोट की रचना को छोड़कर फांद जाते हैं जिनकी मलंग देखकर कुलटा स्त्री तिरछी कटाक्ष डालने में लज्जित होकर छोड़ती है अर्थात् तिरछी कटाक्ष की शीघ्रता छोडती है ॥ २६ ॥

छेकत दयाल उड्डान आनि, जावत सह्यो न [1]भुव कंप जानि ॥
कसि कसि [2]अराल कोदंड कंध, [3]व्यर्थी करंत ज्या जेरबंध ॥२७॥
बिच ग्रीव [4]हेम शृंखल बिराजि, सोहत सुहि [5]त्सरुक छबिहिं साजि ॥
मिलि घालन [6]जूर्ग लंबमान, बहु भल्ल अजब सुहि इक्क बान ॥२८॥
[7]गुनं होत सिथिल ज्यों गति गहीर, त्योंत्योंहि [8]खिचत यह जानि तीर ॥
हद छबि [9]कलाप पृथु [10]बालहस्त, सोहत हय [11]धन्वी इम समस्त ॥२९॥
वर [12]नेत्रछादिनी दिय बखानि, [13]जवनी जजि सालिग्राम जानि ॥
वजि [14]प्रोथन प्रविसत [15]गंधवाह, दुरिजात पराजित जनु [16]सदाह ॥३०॥
[17]स्वचरन समेटि मलपत सुहात, जनु टारि [18]मेदिनी मर्मजात ॥
[19]आवर्त्त फिरत कति अति उताल, जलनिधि [20]अनीक सुहि भ्रमन जाल

१भूमि का कंप(धूजना)सहन नहीं होने के कारण मानों दया करके उड़ते जाते हैं, धनुष रूपी २ टेढे कंधे को खींच खींच कर जेरबंध रूपी ३ प्रत्यंचा को व्यर्थ करते हैं ॥ २७ ॥ गरदन के बीच में ४ सुवर्ण की सांकल शोभा देती है सोही उस धनुष की ५ मूंठ शोभायमान है और याल का लंबा ६ जूड़ा (केसपास) है सो बहुत भालोंवाला अपूर्व बाण है ॥ २८ ॥ गंभीर गति में ज्यों ज्यों ७ प्रत्यंचा ढीली होती जाती है त्यों त्यों ही ८ मानों वह तीर खिचता है ९ बड़ा वालछा (पूंछ) है सो ही उस धनुष का पूर्ण शोभावाला १० भाथा है ११ इस प्रकार के धनुषवाले सब वे घोड़े शोभायमान हैं ॥ २९ ॥ प्रशंसा करके श्रेष्ठ१२उजाली (नेत्रों के ऊपर का वस्त्र) "यथार्थमें इस का नाम अंधारी है परन्तु विरुद्ध लक्षणासे लौकिक में उजाली कहते हैं" लगाई है सो मानों सालिग्राम की पूजा में १३ कनात लगाई है, उन घोड़ों के १४ फुरणों (नासिकाओं) में घुसकर १५ पवन बजता है सो मानों वह पवन पराजित हो कर १६दाह युक्त छिपता है "यहां बजने के कारण सदाह लिखा है अर्थात् कूकता हुआ छिपता है" ॥३०॥ १७ अपने चरणों को सिमेटकर छलांग लेते हुए ऐसे शोभा देते हैं मानों १८ भूमि के मर्म स्थानों को बचाकर जाते हैं कि कहीं इस के चोट नहीं लगजावै कितने ही घोड़े शीघता पूर्वक १९ गोलकुंडा (चक्राकार) फिरते हैं सो ही २० सेना रूपी समुद्र में भ्रमियों का समूह है ॥ ३१ ॥

पलटत दराज गति बाज पूर, जम जनक[1] दर्प दारक जरूर ॥
आवृत[2] बपु रोमन छबि अखर्ब[3], सेवत कि चित्त रय पवन सर्ब ।३२।
दिल्ली रु सितारा मिलि दुरूह[4], जिन किय तयार इम बाजि जूह[5]
सतदोय २०० द्विरद[6] किय सज्ज संग, अंदुक[7] प्रलंब अंचत अभंग ३३
वारिधि जिहाज जिम लगत बात, हंके[8] इम पयपय भुव हलात ॥
गतिमंद झरत मद अवर[9] गात, बिजया[10]ऽभिसिक्त कटकाहि बनात
पृथु कुंभ[11] सिरी करि पिहित[12] पीन, कंचुकि उरोज जनु थगित[13] कीन
रन नगर उच्च अट्टाल[14] रूप, अतिसय बिसाल उच्छ्रय[15] अनूप ॥३५॥
दुव दुकुंभ कुंभ सिखरक्क दिपंत, मंजुलध्वज लंबित केतुमंत[16] ॥
जिन रक्खि बाम दक्खिन जरूर, सूतहि[17] सिखाय टरिजात सूर[18] ३६
घुम्मत घुमंडि घन सघन घोर, जावत मिटात पवमान[19] जोर ॥
सुंडा फटकारत नभ सुहात, जिहिं त्रास संकि सिसुमार जात ३७
मननंकि भ्रमर कुंभन भ्रमंत, किय पत्रभंगि तिय कुच कि कंत ॥

पूर्ण लंबी गति से घोड़े पलटते हैं सो अवश्य १ यमराज के पिता का घमंड मिटाते हैं २शरीर के केशों की भ्रमरियों की ३बड़ी शोभा है सो मानों सब के कथन से वे चित्त के वेग को धारण करती है अर्थात् चित्त का वेग घोड़े से आगे नहीं बढता॰ इसीकारण भ्रमरी रूप से उसी शरीर में गोलाकार फिरता है ॥ ३२ ॥ ४ कठिनाई से तर्कना में आवै ऐसे ५ घोड़ों का समूह ६ हाथी ७ लंबी जंजीरें ॥ ३३ ॥ पवन लगने से ८ जैसे समुद्र में जहाज हिलै तैसे पग पग प्रति भूमि को हिलाते हुए चले ९ अधम अथवा पिछले शरीर से मंद मंद मद (जल) झरता है सो मानों सेना का १० विजय होने का अभिषेक करता है ॥ ३४ ॥ ११ बड़े और पुष्ट कुंभस्थलों को सिरी (मस्तक भूषण) से १२ ढके हैं सो मानों कांचली से कुचोंको १३ढके हैं. युद्ध रूपी नगरकी १४बुरजें अत्यन्त लंबी और उपमा रहित १५ऊंची हैं ॥३५॥ दोनों कुंभ फलक हैं सो तो सुमेरु पर्वतके शिखर हैं और सुंदर १६ध्वजा है सो ही उसके ऊपर का केतुमान नामक खंड विशेष है १७सारथिको सिखाकर १८सूर्य वायां दहिना रखकर टलजाता है॥३६॥१९पवनका ॥३७॥२०मानों पति ने स्त्री के कुचों पर कस्तूरी आदि लेपन

पच्छिन हटात बमथून[1] पूर, गज्जत गुसैल[2] मंडत गरूर ॥ ३८ ॥
आटोप[3] रचत अंगुलि उठाय, काकोदर[4] भोग कि काल काय ॥
भासत कलाप[5] ग्रीवा प्रमान, मंदरगिरि[6] बासुकि घेर मान ॥ ३९ ॥
दोलायमान[7] श्रवनन दिखात, गिद्ध कि जटायु पच्छन हलात ॥
अंदुक[8] प्रलंब जो ह्वै न अंग, मारैं मलंगि[9] बाजिन[10] मलंग ॥४०॥
जंजीर जबर जिनके सुहात, पद्धति हल पद्धति[11] रचत जात ॥
साजि डाकेदार[12] हुव बिंटि संग, मारत बहु बेगा[13] रचि मलंग ।४१।
दुति स्याम मुक्त कच[14] दरस देत, पब्बय रहे कि गरदाय[15] प्रेत ॥
बारूद बिहित[16] चरखी बिसाल, जे करत डरत मग चित्र[17] जाल ।४२।
मग मत्त चरन डारत मरोर, अदभुत दिखात गति ओर ओर ॥
बारूद पूर्ण[18] जिम चलत बान, इम चलत स्वैर[19] जिततित अमान४३
इक१निमिख निवर्त्तन[20] अंतराय, दूजो[21] न बनत निकटहि दिखाय॥
पच्छिम सन पूरब पलटि जाय, ह्वै बायु[22] लेत नैर्ऋत निराय[23] ॥४४॥
सत दुव २०० इम जंगम अद्रि सज्जि, बल[24] हुव तयार रनतूर बज्जि

की रचना की है १ सुंड के जल कणों से २ गुस्से (क्रोध) में होकर ॥ ३८ ॥ ३ सुंड के अग्रभाग को उठाकर मस्तक पर टोप वा छत्र करते हैं सो मानों ४ काले शरीरवाला सर्प फण करता है ५ गरदन पर कलावा दीखता है सो ६ मंदर नामक पर्वत के बासुकि सर्प के घेरे के समान है ॥ ३९ ॥ ७ हिलते हुए ८ कान दीखते हैं सो मानों जटायु पच्छ हिलाता है जिन के शरीर पर लंबी ९ जंजीर नहीं होवे तो मलंग लगाकर १०घोड़ों की मलंग को दबादेवें ॥ ४० ॥ जिनके बडे जंजीर, हल (लांगल) के मार्ग के समान ११मार्ग करते जाते शोभा देते हैं १२सांटमार सज्जित होकर उनको घेर कर साथ हुए सो मलंग लगाकर १३भाले मारते चले ॥ ४१ ॥ उन सांटमारों की १४केश रहित काली कांति दीखती है सो मानों पर्वत को प्रेत १५घेर रहे हैं १६ बारूद की बनी बड़ी चरखियों से डरकर मार्ग में १७आश्चर्य करते हैं ॥ ४२ ॥ जैसे बारूद का १८ भरा हुआ बाण स्वतंत्र होकर जाता है तैसे १९ स्वतंत्र होकर इधर उधर जाते हैं॥ ४३ ॥२०पलटने में वे हाथी एक निमेष से२१दूसरा निमेष(क्षण) नहीं होने देते और समीपही दीखते हैं २२ वायु दिशा में होकर नैर्ऋत दिशा को २३समीप लेते हैं ॥ ४४ ॥ २४ सेना में तयार हुए ॥४५॥

जवनन कुरान पढि किय निमाज, जुरि हंकिय आरुहि बाजिराज
स्व वजीर निजामनमुल्लक सत्थ, सब साह सेन सज्जिग[1] समत्थ॥
इत हुव मल्लार१दत्ता२तक्कार, संभा३सुत जनकू४ रन सिंगार।४६।
जल गंग न्हाय करि दान जत्थ, पढि विष्णुकवच दस नाम पत्थ[2]॥
साजि यौं बनि दिल्लिप दल सहाय, लहि काल चले कर मुच्छ लाय॥ ४७॥
इततैं दरकुंचन भरि उडान, पहुँचपोहि आय दिल्लिप पठान॥
दलकौं पुर बाहिर कढत देर, नहिं मिलत भई दल[3] अपर नेर।४८।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम७राशावुम्मेद सिंहचरित्रे स्वसुतद्वय २ सन्धि १ यान २ विग्रहा ३ ऽऽदिशिशिक्ष यिषुबुन्दीन्द्रवरवाड़पुरगमनसम्मुखसमागतमल्लारसम्मिलनश्रुतप ठानअहमदषाहप्राप्तपंजावप्रास्थितहुलकरसम्मतपरस्त्यप्रेषितपुत्रराव राट्सहप्रयाणान्यक्कृतजयपुरजनपदलुण्टनहुलकरसहायीहहुेशसुप्त शिविरस्थसुभटसुहरणीशदशरथसिंहसनाभिशस्त्रमरणकोटपुत्तलीसै न्यशिविरस्थापननबावगाजुद्दीखानस्वामिदिल्लीशाऽऽलमगीरमारण

१ सजी॥ ४६॥ २ अर्जुन के दश नाम॥ ४७॥ सेना को नगर से कढते देर लगी परन्तु ३ सेना रूपी दूसरे नगर में मिलते देर नहीं लगी॥ ४८॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह के चरित्र में, अपने दोनों पुत्रों को सन्धि, यान, विग्रह आदि सिखाने की इच्छावाले बुन्दीन्द्र का वरवाड़ पुर में जाना और सामने आये हुए मल्लार से मिलना १ अहमदशाह पठान को पंजाब में आया हुआ सुनकर, हुलकर की सलाह से पुत्रों को घर भेजकर रावराजा का हुलकर के साथ जाना और जयपुर देश का अनादर करके लूटना २ हुलकर के सहाई हडेंद्र के डेरे में सोते हुए अपने उमराव सुहरणवाले दशरथसिंहका अपने सापिंडाभाईके शस्त्रसे मरना और कोट पूतली में सेना का डेरा होने पर नवाब गाजुद्दीखांका दिल्ली के स्वामी बादशाह आलमगीर को मारने की खबर सुनना ३ इस कारण से पंजाब को छोड़कर अहमदशाह का दिल्ली के मार्ग को लेना ४ बुन्दी के प[illegible] बुन्दी भेजकर

समाकर्णितैतत्पक्षपञ्जाबा ऽहमदपाहदिल्लीसराणिसमासरणाबु-न्दीप्रेषितबुन्दीन्द्रलुण्टितसङ्करदापुरमल्लार १ जनकू २ दत्ता ३ ऽऽदिदिल्लीसहायीभवननिवेदितमहाराष्ट्रोपायनीभूतदण्डद्रम्मकोटिगाजुद्दीखाना ऽऽलीगोहरदिल्लीगद्दिकोपविशनसज्जितसकलपुरप्राकारपिस्पर्शयिषुपठानपृतनामश्लेषणमष्टचत्वारिंशो ४८ मयूखः ॥ ४८ ॥ आदितः ॥३२९॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

लहलहमजनूँको ललित, तकिया बाहिर तत्थ ॥
मंडि मरन दुव दल मिले, सज्झन झारि समत्थ ॥ १ ॥
सक रस ससि वसु ससि१८१६सिसिर, आगम उदित अनेह
संकर[2]पँहँ पठयो समर[3], न्यूँता नूतन[4] नेह ॥ २ ॥
पृतना[5] इम मिलतैं प्रथम, लग्गी तोपन लाय ॥
रसना[6] इक१ सततीन३०००रँव, जे किम बरने जाय ॥ ३ ॥

॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

दग्यो तोप संदोह छोनी दरारी, वढ्यो धूम आवाज घाँघाँ बिथारी ॥
फबैं लोल गोला करी कुंभ फुट्टैं, पताकानके पुंज टुट्टैं विछुट्टैं ॥४॥

और संकरदा पुर लूटकर मल्लार, जनकू, दत्ता आदि का दिल्ली का सहाय होना, मरहठों की भेट के दंड के क्रोड़ रुपये नजर करके गाजुद्दीखां का आली गोहर को दिल्ली की गादी पर बिठाना ५ सब का सज कर पुर के कोट से पठानकी सेना को पीसने की इच्छावालोंका सेनासे मिलने का अड़तालीसवां मयूख समाप्त हुआ॥४८॥ और आदि से तीन सौ उनतीस३२९ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ समय २ शिव के पास ३ युद्ध का ४ नवीन स्नेह से ॥ २ ॥ ५ सेना. ग्रंथकर्ता कहते हैं कि मेरी एक ६जिन्हा से ७ तीन सौ तोपों के शब्द क्योंकर कहेजावैं ॥ ३ ॥ तोपों के ८ समूह के चलने से भूमि फटी और उन तोपों का धुआं बढ कर ९ दिशा दिशाओं में आवाज फैली शोभायमान चपल गोलों से१०हाथियों के कुंभस्थल फूटते हैं और ध्वजाओं के समूह टूटकर गिरते हैं।४।

बनैं फैरपैं फैर ज्यौं [1]बाक्यबादी, गिरैं चोटसैं लोट [2]सादी नि[3]सादी ॥
उडैंबाजि [4]आयास धारा बिसारैं, बि[5]मानावली बीच आयास डारैं ॥५॥
जगैं घोर अंधारमैं सोर ज्वाला, मनौं भद्दके [6]अद्दमैं बिज्जुमाला ॥
हलैं सेसको ज्यौं [7]फँटाको हजारा १०००, सिदैं [8]त्यौं मही [9]कान्त [10]कल्पाभिसारा ॥ ६ ॥
लगैं चोटपैं चोट मातंग [11]लोटैं, उडैं [12]पत्ति जोटैं बचैं कोन ओटैं॥
घनैं घुम्मि घाँघा झुकैं हत्थि घोरे, बनैं ज्वालमाला [13]अकूपार बोरे ७
कछू काल दै तोप यौं रारि किन्नी, लरे फेरि लै खग्ग है बग्ग लिन्नी॥
धसंकी धरा बाढकैं बाढ बज्ज्यो, बढ्यो बीरको भीरुको नीर लज्ज्यो ८
मिले दुग्ध पानीय ज्यौं जोध मत्ते, कला ऐं[14]द्रवीसे चले काल कत्ते॥
कटैं [15]कुंभ बाहित्थ सुंडा कलावा, कहीं रुंड घुम्मैं अटैं देत कावा ९

१ शास्त्रार्थ करनेवाले के वा नैयायिक के वचनों के समान तोपों के फैर होते हैं जिनकी चोट से २ घोड़ों के सवार और ३ हाथियों के सवार लुढकते हुए गिरते हैं घोड़े अपनी पांचों धाराओं (गतियों) को भूलकर ४ आकाश में उड़ते हैं सो ५ विमानों की पंक्ति में अम पटकते हैं ॥ ५ ॥ उस भयंकर अंधारे में बारूद की झाल जलती है सो मानों भादों (भाद्रवे) के ६ सजल मेघ में बिजुली का समूह चमकता है "यहां सामान्य तथा आर्द्र शब्द के कहने पर भी बिजुली के संबंध से मेघ का ग्रहण है" ज्यों शेषनाग के ७ फणों का हजारा (हजार फण) हिलता है त्यों भूमि ८ भीजती है और १० प्रलय के समान ९ लोह (शस्त्र) चलता है अर्थात् खड्ग चलते हैं ॥ ६ ॥ चोट पर चोट लगने से ११ हाथी लोटते हैं और १२ पैदलों के जोड़े उड़ते हैं सो किसकी आड़ में बचें. बहुत घूम कर ठाम ठाम हाथी घोड़े झुकते हैं और १३ अग्नि रूपी समुद्र में डुबोए हुए बनते हैं अर्थात् जलते हैं ॥ ७ ॥ कुछ समय तोपों से इस प्रकार युद्ध करके फिर तरवारें लेकर वीरों ने घोड़ों की वागें उठाईं जिससे भूमि धूजनेलगी और बाढ पर बाढ बजनेलगा वहां वीरों का पराक्रम बढनेलगा और कायर लज्जित होनेलगे ॥ ८ ॥ मस्त वीर पानी और दूध के समान मिलगये और १४ इन्द्र संबंधी (वज्र वा बिजुली) की भांति काल रूपी खड्ग चले अथवा द्वितीया के चन्द्रमा की कलावाले (उज्वल और टेढे) काल के समान खड्ग चले हाथियों के १५ कुंभस्थल, ललाट के अधोभाग शुंड और कलावे कटते हैं और कहीं पर रुंड घूमते और फिर कर गोलकुंडा लगाते

छिकैं *कंधरा जीन वाजीन छुट्टैं, फबैं लीन जालीनमैं †सांगि फुट्टैं॥
उडैं अस्थि ‡संघात के ओर ओरं, छले मेघ मानों घनैं§ग्राव छोरैं१०
कटैं उच्छटैं टोप जाली करक्कैं, फटैं पेट [1]नागोद फैलैं फरक्कैं ॥
कढैं नैन छोरैं [2]न लग्गी कनीनी, लसैं [3]षट्पदी फूल ज्यौं संगलीनी११
बरक्कैं भरैं [4]कंधरा [5]अंस बाहा, उडैं [6]मूर्द्ध मज्जा [8]दहीसार [7]आहा ॥
दिपैं वीर [9]सुंडिज्ज जुज्झैं दिखावैं, परैं सत्त्रमैं सत्त्र छेटी न पावैं१२
[10]धन्वीनके [11]दंसैं बेधैं, नमंती जुरैं कोटि [12]द्वैधार निसेधैं ॥
तकैं सूरहू [13]दूरवेधी तमासा, उडैं [14]वाँज के [15]वाँजके प्रान आसा१३
गिनैं [16]लसतकैं सत्रु ऽहै दूर गंऽया, लहैं [17]आँचि नीरैं [18]सुपैं मन्नि लंऽया
निहारो यहै चापमैं रीति [19]नंऽया, सुनैंही बनैं भीरु [20]संऽयाऽपसंऽया१४
बजैं [21]पैंगखा सोक त्यों मैं बिथारैं, [22]मैंहातूखाकी पूर्णाता दीप्ति मारैं

हैं ॥ ९ ॥ * घोड़ों के कंधे कटकर जीन खुलते हैं और कवचों में लीन होकर फूटीहुई † बर्छियां शोभती हैं. कितने ही ‡ हड्डियों के समूह चारों ओर उड़ते हैं सो मानों मेघ चढकर बहुत § पत्थर (ओले) बरसाता है ॥ १० ॥ टोप कट कर उछलते हैं और कवच कड़कते हैं, १ पेट का कवच (पेटी) फटकर पेट फैलता और फुरकता है. नेत्र की पुतली को नहीं २ छोड़कर नेत्र निकलते हैं सो फूल के साथ में ३ भ्रमर की शोभा लेती है ॥ ११ ॥ ४ गरदन ५ कंधा और बाहु कटकर गिरते हैं ६मस्तक का भेजा उड़ता है सो ही ८प्रशंसा योग्य ७मक्खन है वीर लोग ९ पराक्रम को युद्ध करके दिखाते और प्रकाशित होते हैं और छेटी नहीं पाकर शस्त्र पर शस्त्र पड़ते हैं ॥ १२ ॥ १० धनुषधारियों के छोड़ेहुए बाण ११ कवचों को काटते हैं और धनुष की दोनों कोटियां (नोकें) नम कर मिलती हैं जो१२दो होने (जुदायगी) का निषेध करती हैं शूर लोक१३ दूर से वेधन करने का तमाशा देखते हैं और १४ कितने ही घोड़े १५ सिकरे (पत्ती विशेष) के बलकी आशासे उड़ते हैं ॥ १३ ॥ १६ धनुष की मूठ तो शत्रु को दूर मानती है और १७ प्रत्यंचा उनको खैंच कर १८ छेदन करने के योग्य मानकर समीप लेती है. धनुष में यह १९ नवीन रीति देखो कि२०सुनते ही कायर बायें दाहिने होजाते हैं अर्थात् सन्मुख नहीं ठहर सकते॥ १४ ॥ ज्यों २१बाणों की खनखनाहट बजती है त्यों भय फैलता है और २२ बड़े भाथे

डसैं कर्त्तरी सिंजकों आनि ज्यौंज्यौं, तितिच्छूटरैंदुष्टतैंसाधु त्यौंत्यौं
नछोरैं तऊ तामसी वृत्ति धारैं, ज्यका कुप्पि ताकों तबैं दूर डारैं ॥
परैं हीन संग्राह के चर्म पंती, भली जो बिनाँ आंघ्रि दौलेय भंती।१६
बहैं सूल१ छूरी२ इली३ त्यों बरच्छी४, छबैं सालभी पंति ज्यों तीर५ पच्छी ॥
दिपैं भू खैलूरी बनी कोस द्वैद्वै२, हलैं मत्त घाँघाँ खरैं रुंड ठ्हैठ्है१७
महा तौरमैं प्रेत आलाप मारैं, नचैं जोगिनी लोंन भैरों उतारैं ॥
हसैं डाकिनी साकिनी घुम्मि हल्लैं, घनी रासमैं घुम्मरी घेर घल्लैं१८
जगी ज्वाल ज्यों कंतके दंत जारैं, मरी पैं डरी दिग्गजी चीह मारैं
अमों इंदुको रूप आदित्य धारयो, चिके चक्क चक्कीन हाहा उचारयो ॥ १९ ॥
फटैं खग्ग लग्गे बजे टोप कोरैं, घरयारी मनों प्रातकी घात घोरैं॥

पूर्णता प्रकाश करती है ज्यों ज्यों १तरवारें आकर २प्रत्यंचा को काटती हैं त्यों त्यों दुष्ट से ३ क्षमाशील साधु टलै इस प्रकार वे धनुषवाले तरवारवालों से टलते हैं ॥ १५ ॥ तोभी ४ तमोगुणी वृत्ति को धारण करके वे तरवारोंवाले धनुषवालों को नहीं छोड़ते तब ५प्रत्यंचा साधु के समान क्रोध करके उनको दूर डाल देती है. सूत से हीन होकर ६ ढालों की पंक्तियां पड़ी हैं सो मानों बिना ७ पैरोंवाले सुंदर ८ कछुओं की तरह हैं. जिस प्रकार शूल, छुरा, तरवार और बर्छी चलती है तिसी प्रकार ९टिड्डियों की पंक्ति के समान बाणरूपी पक्षी छाते हैं. वह भूमि दो दो कोस तक१०शस्त्राभ्यासकी भूमि(अखाड़ा) बनकर शोभती हैं जहां पर दिशा दिशाओं में मस्त होकर खड़े हुए रुंड चलते हैं ॥ १७ ॥ प्रेत ११ बड़े उच्च स्वर से गाते हैं, योगिनियां नाचती हैं और भैरव उन पर नोन (निमक) उतारते हैं. डाकिनियां और शाकिनियां घूमकर हसी के साथ चलती हैं और नृत्य में बहुतेरी घूमर का घेर घालती हैं ॥१८॥ जली हुई ज्वाला ज्यों ज्यों १२ हाथियों के दंतों को जलाती है त्यों त्यों डरी हुई दिशा की हथनियां मरी मरी कहकर चीखें मारती हैं. सूर्य ने १३ अमावास्या के चंद्रमा का रूप धारण किया अर्थात् सूर्य नहीं दीखा जिससे चूक (भूल) कर १४ चकवा चकवियों ने हाहाकार किया ॥१९॥ तरवारें लगने से फटे हुए टोप बजकर ऐसे शोभा देते हैं मानों घड़ियाल बजानेवाला प्रभातकी

मचे कोप१ उच्छाह२ थायी न मावैं, तथा हास३ बीभच्छ४ सोभा बतावैं २०
बिधाता बढी सृष्टितैं दर्प छंड्यो, मनों मोति बिक्रैय बाजार मंड्यो
कुहू रत्तिमैं झंपि गिद्धी किलोलैं, डुबे सिंधु अंधार जे भोर डोलैं २१
घनें बान जोधानके उद्ध चारैं, मनों पूजिबे अच्छरी फूल डारैं ॥
बढैं मारपैं मार बिस्फार बानी, भयंकार आचार मंडैं भवानी ॥२२॥
बनैं बावरीकुंभ बानैंत बुल्लैं, सतीकेरं नारेर व्है खीज खुल्लैं ॥
अनी प्रान के जानके होत सूनी, पुकारैं बढो रे बढो यों चमूनी२३
मरे रे मरे भीरु कुक्कैं पैलावैं, खरे रे खरे बीर अक्खैं टिकावैं ॥
अरैं संगि के संगितैं अग्र ऐसैं, जुरे वैदुषी कोटि द्वै तिक्ख जैसैं २४
घनें बीर सुत्तनकों भीरु घावैं, बकैं जीत भोरे बनीमैं बनावैं ॥
बिदूं दारि दंतीन बेधैं बरच्छी, अँधो व्है चलैं अस्त्रकी रेल अच्छी२५

घड़ियाल बजाता है. वीर रस मचकर उसका स्थायी उत्साह नहीं समाता इसी प्रकार हास्य और १वीभत्स रस भी शोभा दिखाते हैं ॥ २० ॥ २ ब्रह्मा ने बढी हुई सृष्टि का ३ घमंड छोडा और मृत्यु के ४ बेचने का बाजार रचा ५नष्टचंद्रा अमावास्या की रात्रि में झंप लेकर गिद्धनियां किलोलें करती हैं और ६ अंधेरे रूपी समुद्र में डुलकर भ्रमि रूप फिरती हैं ॥ २१ ॥ बहुत से वीरों के बा-ण ७ ऊपर चलते हैं सो मानों उन वीरों का पूजन करने को अप्सराएं फूल डालती हैं, मार पर मार होकर ८ धनुष के शब्द की वाणी बढती है अर्थात् धनुष का शब्द होता है और देवी रक्त पीने का भयंकर आचार रचती है ॥ २२ ॥ बानाबंध ९ पागल स्त्री के घड़े के समान होकर बोलते हैं और १० सती के हाथ के नारियल रूप होकर क्रोध करते हैं "पागल स्त्री मटका और सती का नारियल ये दोनों शीघ्र नष्ट होजाते हैं" सेना के प्राण जाने से वह सूनी होती जाती है और ११सेनापति 'बढो बढो' पुकारते हैं ॥२३॥ कायर 'म-रे मरे' कहकर १२भगते हैं और वीर लोग 'खड़े रहो खड़े रहो' कहकर उन्हें टिकाते हैं. १३ एक बरछी का अग्रभाग दूसरी के अग्रभाग से ऐसे मिलता है जैसे शास्त्रार्थ करनेवाले तीव्र १४ पंडितों की दो कोटि जुड़े ॥ २४ ॥ कई सोते (कटे) हुए वीरों को भगनेवाले कायर छूंदते हैं और अपनी बनी हुई आपत्ति में भोले स्वभाववाले बककर जीत बनाते हैं १५ हाथियों के १६ दांतवालों (कुं-भस्थलों के मध्यभागों) को विदारण करके बरछियां वेधती हैं सो १७ नीचे का १८रुधिर की उत्तम धार बहती है ॥ २५ ॥

सुही नारि वक्षोज[1] ह्वै मैं बिसाला, मनों बित्थरी लंब मानिक्य माला ॥
लगे सुंडिपैं स्याह के सेल[2] हल्लैं, किधों कन्ह कालीयपैं घूम[3] घल्लैं॥२६
भये रंग[4]१ कुल्हू१ भये लौहि[5]२ भाले२, बलीबर्द[6]३ भो बीर३ जी[7]४ इच्छु४ जाले ॥
किते पत्ति घोरेनकों मुंड मारैं, मनों धेनु ऊधन्य[8] बच्छा अहारैं २७
कहीं अच्छरी सूरकों मंडि माली, बनावैं गरैं बाँह गावैं बिसाली॥
कहीं भिन्न कुंभीन[10] लोही छछक्कैं, किधों तिंदुतैं[11] फाल फुल्लिंग तक्कैं ॥ २८ ॥
भनंकार भैंकार [12]भेरी बिथारैं, घटा भद्दकी जानि निर्घोस डारैं ॥
कहीं टोपकों खंडि खंडा[13] खटक्कैं, गुलाबी[14] कली प्रात मानों चटक्कैं ॥ २९ ॥
छिदे केक कुंभीनतैं [15]करणा छुट्टैं, ति ज्यों बाततैं तालतैं पत्तरण[16] तुट्टैं॥
कहीं क्रुद्ध बुक्केनकों [17]मींडि तोरैं, मनों सूपमैं[18] सूद[19] निंबू निचोरैं३०

सो ही स्त्री के १कुचों के भीतर मानों मानिककी लंबी माला फैली है. हाथी की सुंड पर कितने ही काले रंग के २भाले हिलते हैं सो मानों कालीनाग पर श्रीकृष्ण ३ घूमर लगाते हैं ॥२६॥ यह ४ युद्ध ही कोल्हू (घाणी) हुआ जिसमें भाले तो ५लाठ हैं और वीर रस इस कोल्हू में चलनेवाला ६ बैल और ७जीव ही इक्षु (गन्नों) के समूह हुए८ कितने ही पैदल घोड़ों के मस्तक की टक्कर मारते हैं सो मानों९गौ के स्तनों को बछड़ा पीता है॥२७॥ कहीं पर शूरों को अप्सराएं माला युक्त बनाकर गलबाहीं डाल कर लंबे स्वर से गाती हैं और कहीं कटेहुए १० हाथियों से लोहू की पिचकारियां उड़ती हैं सो मानों ११ तींदू वृक्ष से अग्निकण उड़ते हुए दीखते हैं ॥ २८ ॥ १२ नौबत भयकारी शब्द फैलाती है सो मानों भादों की घटा गाजती है कहीं पर टोप को काट कर १३ खांडा(सीधी तलवार) खटकता है सो मानों प्रभात समय में १४ गुलाब की कली चटकती है॥ २९ ॥ कई हाथियों के कटेहुए १५कान छूटते हैं सो मानों पवन से ताड़वृक्ष के १६पत्ते टूटते हैं कहीं पर क्रोधित हुए वीर वृकों गुरदों को तोड़कर १७ मसलते हैं सो मानों १८ दाल में १९ रसोईदार नींबू निचोड़ता है ॥ ३० ॥ कहीं पर बैठेहुए वीर बहुत घावों से घूमरहे हैं और कहीं पर दौड़ कर क्रोध से बोध लगती है

कहौं बीर बैठे घनैं घाय घुम्मैं, झपट्टैं कहौं लुत्थितैं लुत्थि झुम्मैं ॥
अहारैं कहौं ऐंचि गोमायु अंतौ, मयूरैं मनौं पन्नगी मार पंती ॥३१॥
कढैं डाकिनी लिप्त लोही कलेजो, रँगे पट्ट ज्यों मट्टतैं रंगरेजी ॥
हबक्कैं कहौं घाय बुल्लैं हजारैं, मनौं तेगके ताप आक्रंद मारैं ३२
बिनोदैं कहौं कंक बुल्लैं बनावैं, मनौं बंदि ईरानको जै मनावैं
तमंके इतै संग दिल्ली सितारे, उमंगे उतैं मिच्छ ईरानवारे ॥३३॥
दुहूँओर यों हत्थ अच्छे दिखाये, घने हत्थि त्यों सत्ति औ पत्ति घाये
सितारा रु दिल्ली थके दैव सारैं, मची आन ईरानकी भाँन मारैं३४
छक्यो लोह संभा तनैं १ देह छुट्टयो, तथा बीर दत्ता २ पर्यो तेग तुट्टयो ॥
जयानंद३कै जोरकै घाय लग्गे,भिरे दक्खिनी ए३घने हारिभग्गे३५
अछूती अनी डक्क मल्लार१ कढ्यो, बली देस ईरानको जोर बढ्यो
दुर्यो भज्जिकैं खान गाजुद्दि दिल्ली,पराजै भयो जुद्धकी हाँसपिल्ली

॥ दोहा ॥

पुनि तजि खान कनौज तजि, आलीगोहर साह॥
हुव सरनागत जट्टको, लग्गि भरतपुर राह ॥ ३७ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

मिले अवर दिल्लीपतिके तब, सत्रुनमाँहिं नवाव सुभट सब ॥
इक हाफिज रहमुतुल्ला१ सठ, बिरचि हरास सुजाहोला२ हठ ॥३८॥

कहीं पर १गीदड़ आंत को खैंचकर खाते हैं सो मानों मयूर २ सर्पों की पंक्ति को मारता है ॥ ३१ ॥ कहीं डाकिनियां लोहू से लिपे हुए कलेजे ऐसे निकालती हैं जैसे रंगरेज रंगेहुए वस्त्रों को माट से निकालता है कहीं पर हजारों घाव 'हबक हबक' बोलरहे हैं सो मानों तरवार के ताप से ३ कूकते हैं॥ ३२ ॥ कहीं ४ विलास करते हुए कंक पक्षी बोलते हैं सो मानों ५ भाट लोग ईरान का जय मनाते हैं इधर दिल्ली और सितारा के ६ साथियों ने क्रोध किया और उधर ईरान के यवन उत्साह युक्त हुए ॥ ३३ ॥ ७ सत्ति घोड़े ८ पैदल ९ भाग्य के आधीन होकर१०कांति ॥ ३४ ॥ ११संभा का पुत्र ॥३५॥३६॥३७॥३८॥

बहुरि नजीमुद्दोला३ वालिस, पुनि सादूल्लाखान४ मिलन मिस ॥
अहमदखान पठान माँहिं इम, जुल्मी मिलि सब भये दास जिम३९

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रेऽहमदषाहस्यविजयनसम्भासुत १ दत्ता २ वीरशय्याशयनजनकू ३ क्षतमापगणसपरिकरमल्लार ४ निष्कसनकान्दिशीककलीजखानभरतपुरजट्टशरणग्रहणहाफिजरहमुत्तुल्ला १ नबाबसुजाउद्दोला २ नजीमुद्दोला ३ साहुल्ला४ऽऽदिदिल्लीशपरिकरसपत्नपठानषाहभेदोपायत्रिषयीभवनमेकोनपंचाशत्तमो ४९ मयूखः ॥ ४९ ॥ आदितः ॥३३०॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

दल बिगरयो दिल्लीसको, मरहट्ठन गत मान ॥
बच्यो इक्क१ हुलकर बली, जित्यो अहमदखान ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

जित्यो अहमदखान साह नादरको मारक१ ॥
दिल्ली दक्खिन छंडि बढ्यो निज जय बिसतारक ॥
अंतरवेदी आदि बिखय२ मंडत अप्पन बस ॥
प्रबिस्यो पूरबमाँहिं रचत स्वाधीन हुकम रस ॥
गंगा रु जमुन बिच गयउ जब कलह बिजय कोतुक करत॥

---

१ मूर्ख ॥ ३९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह के चरित्र में अहमदशाह का युद्ध में विजय होना और संभा के पुत्र दत्ता का मारा जाना १ जनकूका घायल होना और परगह सहित मल्लार का निकलना २ कलीजखां का भाग कर भरतपुर में जाट का शरण लेना३ हाफिज रहमुत्तुल्ला, नवाब सुजाउद्दोला, नजीमुद्दोला, सादुल्ला आदि दिल्ली के पति की परगह का शत्रु पठान अहमदशाह के भेद उपाय से उसके वश में होने का उनचासवां मयूख समाप्त हुआ ॥४९॥ और आदि से तीन सौ तीस ३३० मयूख हुए ॥
॥ १ ॥ १ मारनेवाला २ देश

भूपाल प्राच्य हाजिरि भये सब अधीन हित अनुसरत॥२॥

॥ दोहा ॥

आलीगोहर साह इत, तुरकन पति हत तोर ॥
आहवँ जय ईरानको, जानि भयो गत जोर ॥ ३ ॥
संध्याकौं संग्रामतैं, इत मल्हार उठाय ॥
भिसंकनको आचरि भनित, दिन्नैं घाय दबाय ॥ ४ ॥
पठयो कग्गरँ नन्ह प्रति, द्रुत लिखि दक्खिन देस ॥
इहाँ पराजय अप्पनौं, सबविधि भयउ असेस ॥ ५ ॥

॥ षट्पात् ॥

सुनत तमकि श्रीमंतसेन पठयो बहोरि सजि ॥
सेनानी निज सूनु रच्यो विश्वासराव१ रजि ॥
निज काका पुनि निडर धीर चीमा१ अभिधानक ॥
भट दोउन२ सिर भीर अरपि दिय हुकम अचानक ॥
अँर जाहु पुत्र काका उभय२ दलहु जंग ईरान दल ॥
सत्तरि हजार ७०००० तुम संग भट खंडहु गाढ असेस खल ६
सुनि चीमा१ विश्वासराव१ दुव२ लै दल दुद्धर ॥
मुदित चले मरहट्ठ अवनि मिच्छन भँर उद्धर ॥
नाना रंग निसान उदित बज्जिग ध्वनि आयत ॥
कुंभिन नाना केतु खुल्लि हंकिय खेटायत ॥
पक्खर पसार छादित पहुमि प्रचुर कुंत अंबर पिहित ॥
आवाज सुत्तक फुट्टिय असह बढत सेन संगर बिहित ॥७
नागराज फन फटत कमठ दढ पिट्ठि करक्कत ॥
गिरन सार तजि गड्ड दड्ड बाराह बरक्कत ॥

१पूर्वदिशा के राजा ।४।१युद्ध में वैरियों का नाश करके ।२शरण प्राप्त ।।५।।१सेना पति ।अपने पुत्र को ।विश्वासराव नाम वाले को ।१चीमा नामवाले ।२दोनों ।६।।१... आर में भूमि का उद्धार करने के लिये ।२ध्वजा (युद्ध) करने वाले ।१... १आकाश को ढका ।१युद्ध करने को ।।७।।शेषनाग के फण फटकर ...

डरि दिग्गज डगमगत लगत वेपथु[1] लोकेसन ॥
छुट्टिग छितिपन[2] महल दहल फट्टिग सब देसन ॥
मेवास[4] त्रास संकित दुमद्द हेरत सब आलोचि हिय ॥
चतुरंग प्रचुर दक्खिन चढत किहिं सिर कोप कृतांत[6] किय॥८॥
गिरिन चूर मिलि ग्राव धूरि अंबर संकुलि थट ॥
मिटि दुग्गम मेवास बनत पद्धर बट उब्बट ॥
अति अलात झरि अग्गि लग्गि फैलत हय नालन ॥
तरु तालन तुंगत्व[11] ढह्यो जावत गज ढालन[12] ॥
बजि मंडु[13]१ बंब्ब२ प्रतिबाँदका[14]३पटह४बिजय मर्दल५पँखावद[15]॥
रस बीर बढत सिंधुड रुचिर राग अतुल आलाप रव[16] ॥९॥
फोजन लगि लगि फेट मुरत प्रतिहत रय मारुत[17] ॥
मिच्छन थर थर मुलक होत घरघर डर हारुत[18] ॥
वन्य सत्व[19] दल बीच रहत थकि थकि हत रंहस[20] ॥
महुरै[21] सलिल मिलाप तकत चंदोल[22] पंक तस ॥

पीठ तूटी, भार पड़ने से गाढ छोड़कर वाराह की दाढ तूटी, दिशा के हाथी डरकर हिलने लगे, लोकपालों को १ कंप होने लगा २राजाओं से महल छूटने लगे, दशों दिशाओं में ३ भय फैलगया, इस सेना की त्रास से शंका होकर ४लुटेरों के घरों में उदासीनता हुई और अपने हृदय में सब लोग यह५विचारने लगे कि दक्षिण की बहुत सेना चढ़ती है सो ६ यमराज ने किस पर कोप किया है ॥ ८ ॥ पर्वतों का चूर्ण होकर ७ पत्थर पिसकर उनकी धूलि के समूह से आकाश ८ भरगया, चारों ओर लुटेरों के ९ दुर्गम घरों का नाश होकर मार्ग और अमार्ग सीधे होगये, घोड़ों की नालें लगकर अत्यंत १० अग्नि झड़ी, तालवृक्षों की ११ ऊंचाई के समान १२हाथियों के झंडे गिरनेलगे १३वाद्य विशेष, नगारे, १४ मांगलिक बाजे, पटह नामक बाजे, मर्दल और १५ ढोल बजकर वीर रस बढ़ा और सुंदर सैंधवी रागिनी के बड़े आलाप का १६ शब्द हुआ ॥ ९ ॥ फौजों की फेट लगने से १७ पवन का वेग रुकने लगा, म्लेच्छों का मुल्क धूजकर भय से घर घर में १८ हाहाकार शब्द हुआ वन के १९ जीव २० हतवेग होकर थक थककर सेना के बीच में रहनेलगे जिस २१ सेना के आगेवालों को पानी मिलता है उसी के पीछेवालों को २२कीचड़

संतनुतनूज रन तल्प सम नभ सुहात तोमर निकर ॥
कै नभ निखंग रक्खिय कुपित श्रीमंतहिँ रन करन सर॥१०॥

॥ दोहा ॥

मरहट्ठन दल इम अमित, मत्थ घसत ब्रह्मंड ॥
हिंदुसथान प्रबिष्ट हुव, अरिगन हनन अखंड ॥ ११ ॥
अहमदखान पठान इत, बढिगो अंतरवेद ॥
दिल्लिय पहुँचे दक्खिनी, खलन प्रसारन खेद ॥ १२ ॥
दिल्लियपुर प्रबिसे दुसह, मरहट्ठे छक्क मत्त ॥
आलीगोहरकौं अटकिं, छितिप भये धरि छत्त ॥ १३ ॥
नन्ह पिँतृव्यक सूनुरसन, मिल्यो आनि मल्लार ॥
अक्खिय दिल्लिय करहु अब, सुद्ध धरम अनुसार ॥ १४ ॥
मुगलनके तब सब महल, धीरन लिन्न धुपाय ॥
गंव्यपंच जल गंग करि, दिय दिल्लिय छिरकाय ॥ १५ ॥
वाँस्तुकर्म अरु हँवन बलि, सुरपूजन करि सूर ॥
धारि निगँम हिंदुन धरम, प्रेर्‌यो दिल्लिय पूर॥ १६ ॥
ग्रीखम ऋतु मुनि ससि धृति१८१७ग, इम बनि दिल्लिय ईस॥
दल सज्जित किय दक्खिनिन, रचि सत्रुन सिर रीस ॥१७॥
अहमदखान पठान उत, बहुदिन अंतरबेद ॥
रह्यो अमल अप्पन रचत, भूपन डारत भेद ॥ १८ ॥
दिल्लीपति इत दक्खिनी, हुव सो सुनि हुसियार ॥

मिलता है १ भीष्म की शरशय्या के समान भालों के २समूह से आकाश शोभित होता है किधौं वह आकाश भालों से ऐसा दीखता है कि मानों श्रीमन्त ने क्रोध करके आकाश को ३ भाथा बनाकर उस में भाले रूपी बाण रक्खे हैं ॥ १० ॥ ४ सब ॥ ११ ॥ १२ ॥ आलीगोहर बादशाह को ५ रोककर ६ आप दिल्ली के राजा हुए ॥ १३ ॥ नन्ह के ७काका के ८ पुत्र से ॥ १४ ॥ ९ पंचगव्य से ॥ १५ ॥ १० नांगल (बास करने का मुहूर्त) ११ होम १२ देवपूजन १३ वेद के अनुसार ॥१६॥१७॥१८॥

पलटयो अहमदखान पुनि, कुल हिंदुन खय कार ॥ १९ ॥
सप्त चंद्र धृति१८१७ मान सक, माघ सिसिर लहि मेल ॥
मकर प्ररोहित अहिमकर, आये तुरुक अठेल ॥ २० ॥
घनलक्ख१००००० पठानकी, दिल्लीकी दुव२००००० लक्ख
जाय मिली सब इक्कजु र३००००० तमकि उठावन तक्ख २१

॥ पादाकुलकम् ॥

बढि इततैं बिस्वासराव१ बलि, चीमा२ अरु जनकू३ मलार४चलि ॥
नैन मिलत आसिबर करि नग्गे, लरन खान अहमद सन लग्गे।२२।

॥ प्लवङ्गमम् ॥

मिलि इततैं मरहट्ठ आतँ रन बित्थरयो, उततैं अहमदखान नक्खि हय उप्परयो ॥
वादी प्रतिवादी कि व्याकरन१ न्यायप२ के, कल्पक रचि रचि को टि भिरे पटु भायके ॥ २३ ॥

॥ चञ्चला ॥

यौं इरान१ दक्खिनी२ मिले चलाय द्वैर अनीकि ॥
सस्त्रके प्रहार घोर बित्थरे मच्यो समीकि ॥
उत्तमंग उच्छटैं कटैं कपाल भूरि भाल ॥
केक भिन्न ह्वै गिरैं सिपाह के भिरैं कराल ॥२४॥
अच्छरीनके छये बितान रूप लै बिमान ॥

॥ १९ ॥ १ मकर संक्रान्त पर चढ़ा २ छेद नहीं करनेवाला (सूर्य) ॥२०॥ ३ ताखे (घोड़े) उठाते हुए ॥ २१ ॥ २२ ॥ इधर से मरहटों के ४ समूह ने मिल कर युद्ध फैलाया और उधर से अहमदखां घोड़े उठाकर चला सो मानों ५ व्याकरण और ६ न्याय के वादी और प्रतिवादी ७ कल्पना की हुई कोटि रचरच कर ८ चतुरता की रीति से भिड़े ॥ २३ ॥ इस प्रकार ईरानी और दक्षिणी दोनों सेनाओं को चलाकर मिले शस्त्रों के घोर प्रहार फैलकर ९ युद्ध हुआ जिसमें १० मस्तक उछटनेलगे कपाल और ११ बहुत ललाट कटनेलगे कितने कट कर गिरने लगे और कई सिपाही भयंकर युद्ध करनेलगे ॥ २४ ॥ अप्सराओं के विमान १२ चंदुए की तरह छागये चीलहें, गिद्ध और सिचान

चापसौं रहे किलोलि चिल्ह१ गिद्ध२ त्यौं सिचान३ ॥
जुग्गिनीनकी जमाति आनिकैं नची जरूर ॥
साकिनीनके समूह उल्लसे सिराहि सूर ॥ २५ ॥
सिंहकौं अरोहि कालिका रु बैलकौं महेस ॥
आप संगही खरे बनैं तमासगीर बेस ॥
दान सुक्कि दिक्करी करंत चिक्करी पुकारि ॥
सेस औ बराह कुम्म होसकौं रहे बिसारि ॥ २६ ॥
रैत्तमैं भरे कँबंध मत्त के फिरैं उताल ॥
भूमिके तनूज जानि आनि ए नचैं बिसाल ॥
काचकी चुरी समान होत खंड खंड केक ॥
उल्लटैं प्रहार भीरु ही फटैं हटैं अनेक ॥ २७ ॥
कालखंज१ उच्छटे कटे गिरंत प्लीह२क्लोम३ ॥
होत खग्ग अग्गिमैं सुमार हीन प्रान होम ॥
जौ तजैं अनेक भीरु भज्जिबो बिचारि जंग ॥
ज्यौं निमग्ग बारि प्रान त्रानकौं गहैं तरंग ॥ २८ ॥

पक्षी उत्साह से किलोलें करने लगे. योगिनियों की जमात निश्चय ही नाचने लगी और शाकिनियों के समूह वीरों की प्रशंसा करके हर्ष युक्त हुए ॥ २५ ॥ कालिका सिंह पर और महादेव बैल पर १ चढकर आये और साथ ही अधिक तमासबीन बनकर खड़े रहे २ दिशाओं के हाथी मद सूखकर चीख मार कर पुकारने लगे. शेषनाग, वाराह और कच्छप चेत भूलगये ॥ २६ ॥ ३ रुधिर में भरेहुए कई मस्त ४ कबंध (विना माथे के क्रियावान् धड़) शीघ्रता से फिरनेलगे सो मानों कई ५ पृथ्वी के पुत्र (मंगल) आकर नाच करते हैं और कई वीर काच की चूड़ी के समान टूक टूक होते हैं और ६ कई कायर प्रहारों से उछटते हैं और हृदय फट कर हटजाते हैं ॥ २७ ॥ ७ कलेजे उछटते हैं और कटेहुए ८ तिल्ली और ९ फेफरे गिरते हैं १० खड्ग रूपी अग्नि में ११ गणना रहित प्राणों का होम होता है अनेक कायर युद्ध से भगना विचार कर १२ जीव छोड़ते हैं जैसे १३ पानी में डूबता हुआ प्राण की रक्षा के लिये १४ उसी पानी की लहर को पकड़ता है ॥ २८ ॥

*प्रोथ१ त्यौं हय †छटा२ कटैं ‡निगाल३ §कश्य४ पीन ॥
होत अंग हीन है गिरैं ¶बिभंग तंग१ जीन२ ॥
खग्गघात द्वार ह्वै चलैं अनेक रत्त खाल ॥
बप्प माप उच्चरैं फिरैं अनेक भै बिहाल ॥ २९ ॥
संदे केक भीरु भज्जि यौं टरैं सहै न मार ॥
ज्यौं कपीस मालकोसमैं ऋकार१ औ पंकार२ ॥
केक बीर हत्थकौं भले दिखात खग्ग आनि॥
षड्ज अंत्य मूर्च्छना बिलावली बनात जानि ॥ ३० ॥
टंकरैं अमाप चाप बानको बनैं बितान ॥
कालको निदान लैन ज्या लगैं प्रबीर कान॥
के चलैं कृपान१ सांगि२ कुंत३ त्यौं छुरी४ कटार५ ॥
कंकटी कराल सूर छिन्न ह्वै गिरैं कुठार ॥ ३१ ॥
हत्थदै महीं कितेक घुम्मिकैं उठैं हकंत ॥
छाक कापिसायनी मनौं गमार लै छकंत ॥
कालसे कराल खात के फिरैं छुटे कलंब ॥
कै बिंब चक्र के चलैं मनौं कि सक्र संब ॥ ३२ ॥

---

*फरने †गरदन ‡कंठ और §पुष्ट कमर, इन अंगों से हीन होकर कटेहुए घोड़े और ¶विशेष भंगहुए तंग और जीन गिरते हैं तरवारों के घावों के द्वारा रुधिर के अनेक नाले चलते हैं तहां भय से अनेक लोग बेहाल होकर 'बाप' 'मा' ऐसे उचारते फिरते हैं ॥२९॥ इस प्रकार कई१सूर्व और कायर भगकर ऐसे टलजाते और मार नहीं सहते हैं जैसे २हनुमान के मत के मालकोष राग में ३ ऋषभ और४पंचम स्वर टलजाते हैं कई वीर तरवार के अच्छे हाथ ऐसे दिखाते हैं मानों५षड्ज स्वर की अंतिम मूर्छना ६बिलावल रागिनी को बनाती है ॥३०॥ प्रमाण रहित धनुषों की ७ टंकार होकर बाणों का ८ वितान बनाता है और ९समय का कारण पूछने को १० प्रत्यंचा वीरों के कानों से लगती है कितने ही तलवार, बरछी, भाला, छुरी और कटार चलते हैं जिनसे ११कवच धारण क-रनेवाले भयंकर वीर कटकर १२ कुठार भांति गिरते हैं ॥ ३१ ॥ कितने ही वीर १३ भूमि पर हाथ देकर घूमते हुए उठकर चलते हैं सो मानों १४मद्य की छाक लेकर गवार छकते हैं कई १५बाण छूटकर काल के समान भयंकर होकर खाते फिरते हैं और कई१६टेढे बिंबवाले चक्र चलते हैं सो मानों इंद्र का१७वज्र है॥३२॥

उत्तमंग१ कंधरा२ गिरैं अतीव बाहु३ अंस४ ॥
बंस[५]पिट्ठि पंसुली लगी मनौं कि पत्र बंस ॥
तेगके प्रहार केक रत्त[६]के२ रचंत ताल ॥
सीस[७]ह्वै सरोज तत्थ कुंतलावली[८] सिवाल ॥ ३३ ॥
धीर के करीनतैं[९] मलंगि झंप यौं धरंत ॥
[१०]कूटतैं कि केहरी नटी कि तेहरी करंत ॥
बस्त्रहीन ह्वै किते दुरैं करीनि[११] पाय बीच ॥
नाथ श्रावकीनिके[१२] मनौं कि थंभ[१३] भौन नीच ॥ ३४ ॥
व्यंजनावली[१४] पिसाच सूद[१५] के करैं बिसाल ॥
पाहुनी बुलात न्यौंति जुग्गिनीन खेत्रपाल ॥
छुट्टिजात केनके[१६] गुमान बान पौन[१७] छ्वैहि ॥
[१८]लब्धवर्ण अग्ग ज्यौं कुकाव्य[१९] छिन्न भिन्न ह्वैहि ॥ ३५ ॥
होत सूर सोगुनैं उछाहमाँहिं दै प्रहार ॥
दैन लैन भिन्न पै[२०] बढैं कि बावनावतार ॥
होत अंग हानि पै कितेनके रुकै न पानि[२१] ॥

बहुत १ मस्तक २ गरदन, भुज और ३ कंध गिरते हैं और पीठ की हड्डी के लगीहुई पांसुली गिरती है सो मानों ५ बांस के हुआ पत्ता गिरता है तलवार के प्रहार से कई ६ रुधिर के तालाव बनते हैं जिन में मस्तक तो ७ कमल और ८ केशों की पंक्ति शैवाल (सैवाल) है ॥ ३३ ॥ कई धीर लोग ९ हाथियों से ऐसे कूदते हैं जैसे १० पर्वत से सिंह और तीन छलांग मारती हुई नटी कूदती है कई वस्त्र हीन होकर ११ हाथियों के पैरों में छुपते हैं सो मानों १२ जैनियों के देवता १३ मकानों के थंभों के नीचे स्थित होरहे हैं ॥ ३४ ॥ १५ रसोई पकानेवाले कई पिशाच १४ भोजन के पदार्थों की बड़ी पंक्ति बनाते हैं क्षेत्रपाल न्योता देकर योगिनियों को पाहुनी बुलाते हैं बाणों के पवन को १७ छूते ही १६ कइयों के घमंड ऐसे छूट जाते हैं जैसे १८ पंडित के आगे १९ खोटा काव्य छिन्न भिन्न होजाता है ॥ ३५ ॥ प्रहार देने में धीर लोग सौगुने उछाहवाले होजाते हैं जैसे देने और लेने में वा अवतार के २० पैर बढते हैं अंग की हानि होने पर भी कितनों ही के २१ हाथ ऐसे नहीं रुकते जैसे द्यूत (जुए) के खिलाड़ी हारने में भी, मिठास

जानि हारिमैं मिठास द्यूतके खिल्हार जानि॥ ३६ ॥
अद्धफार ह्वै गिरैं किते तुखार खग्ग ऊंति ॥
बंटि लेत भ्रात द्वैर मनौं कि बप्पकी बिभूति ॥
केतु रत्त लिप्त के करीनपैं करैं प्रकास ॥
लालरंग भास राधमासमैं मनौं पलास ॥ ३७ ॥
डाकिनी किती कि बीर अंत्र लेत कंठ डारि ॥
मालिनी बिडारि ज्यौं प्रमत्त लेत माल धारि ॥
के प्रबीर धीर कट्टि सत्रुकौं नये प्रकार ॥
चित्रकार बुद्धिमैं करैं ति चित्र चित्रकार ॥ ३८ ॥

प्रकार१ त्रकार२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

के गदा प्रहारकैं हनैं सकोप मत्थ इठ्ठ ॥
लोहकार कूटपैं मचैं मनौं कि लोह रिठ्ठ ॥
प्रेत के प्रतप्त गोदकौं सिरात वॅक्र पोन ॥
लेत के प्रबीर ब्याहि अच्छरी उतारि लोन ॥ ३९ ॥
रंगमांहिं बंदि के अनंदि बंदि देत रंग ॥
पिक्खि जंग जो रह्यो अनूरु रुक्किकैं पतंग ॥

खेलन सेनहीं रुकते ॥ ३६ ॥ १ कितने ही घोड़े तलवार की २ क्रीड़ा में ऐसे आधे कटकर गिरते हैं जैसे पिता के ३ऐश्वर्य को दो भाई बांट लेते हैं कई हाथियों पर ४ रुधिर से पुती हुई ध्वजाएं प्रकाश करती हैं सो मानों ५वैशाखमास में लालरंग से ढाक प्रकाशित होता है ॥ ३७ ॥ कितनी ही डाकिनियां वीरों की आंतें कंठ में ऐसे डाललेती हैं जैसे मस्त मालनियां फूलों की माला ६ निकाल कर धारण करलेती हैं कई धीर वीर शत्रु को नवीन रीति से काटते हैं सो ७ चितेरे की बुद्धि में ८चित्राम करने का आश्चर्य कराते हैं ॥ ३८ ॥ कितने ही गदा का प्रहार ९ इच्छानुसार मस्तक पर करते हैं सो मानों १० लुहार की ११ ऐरन पर १२ लोह मुद्गरों का निरंतर प्रहार होता है कई प्रेत १३ तपे हुए मांस को १४ मुख के पवन से ठंडा करते हैं और कई वीरों को अप्सराएं नौन (निमक) उतार कर व्याह लेती हैं ॥ ३९ ॥ १५ युद्ध में कई १६भाट प्रसन्न होकर १७ नमस्कार करके शाबासी देते हैं अर्थात् प्रशंसा करते हैं, जिस युद्ध को १८सूर्य १९अरुण नामक सारथि को रोक कर देख रहा है. कई तरवार

केक तंग मारदै हरैं करीन [1]उत्तमंग ॥
तोरि शृंग मेरुके चलैं मनौं कि धारगंग ॥
के प्रसन्न [2]गूंदतैं अघाय होत गिद्ध कंक ॥
त्यौं [3]मंछन्नद्वारके प्रवेस [4]खर्व ह्वै निसंक ॥
हत्थि घाय फारमैं [5]दुरैं कितेक भीरु हंत ॥
[6]ब्रध्नको उगान जानि चोर ज्यौं [7]दरी बसंत ॥ ४१ ॥
कुब्ज१ अंध२ खंज३ ह्वै नचैं पिसाच हास काज ॥
साकिनी बढाय दंत के करैं विरूप साज ॥
[10]ईसके हिये गयेहु सीस के कहैं उतारि ॥
[11]नाथ लेहु धारि नैंक [12]जुद्धदंतकौं निहारि ॥ ४२ ॥
[13]सैंद्य स्वीय रत्त डारि टोपमैं कितेक सूर ॥
होय [14]नम्रगात आत मात कालिका हजूर ॥
होत [15]सत्व छोरि एकवारके किते महीप ॥
[16]दीपिका करैं न तैलहीन ज्यों [17]दसा प्रदीप ॥ ४३ ॥
दोपर प्रेत अंतलै फिरैं कहौंक घेर देत ॥

मारकर हाथियों के मस्तक काटते हैं सो मानों सुमेरु का १ मस्तक तोड़ कर गंगा की धारा चलती है ॥ ४० ॥ कितने ही गिद्ध और कंक २ मांस से तृप्त होकर प्रसन्न होते हैं जैसे ३खिड़की के द्वार में ४ छोटे शरीर वाला शंका रहित प्रवेश करता है तैसे ये मांसभोजी पक्षी मृतक हाथी आदि के शरीरों में प्रवेश करते हैं कई कायर घायल हाथियों के ५घावों में ऐसे छुपते हैं जैसे ६सूर्य का उदय होना जानकर चोर ७ गुफाओं में घुसते हैं ॥ ४१ ॥ कई पिशाच हास्य करने को ८कुबड़े, अंधे और ९ खोड़े होकर नाचते हैं कितनी ही शाकिनियां दांत बढ़ाकर कुरूप साज बनाती हैं, १०शिव के हृदय पर (मुंडमाला में) गयेहुए भी कई मस्तक कहते हैं कि ११ हे नाथ हमको उतार कर कुछ १२दांतों का युद्ध भी देख लो "क्योंकि खाली मस्तक केवल दांतों का ही युद्ध करसकता है" ॥ ४२ ॥ कई वीर अपना १३तुर्न का रुधिर टोप में डालकर १४ झुककर कालिका माता के सामने आते हैं. कई राजा एक ही वार में १५पराक्रम छोड़ देते हैं जैसे तैल से हीन १६दीपक में १७ बत्ती प्रकाश नहीं करती ॥ ४३ ॥

खेतकार[1] लाटिबे लगैं जरीब जानि खेत ॥
जंगमैं मलंग केक मल्ल व्है लगात जोध ॥
रंग[2] माँहिं रंग[3] लै करैं कितेक जोध रोध ॥ ४४ ॥
सत्रुकंठ दंत दै पिबंत रक्त केक सूर ॥
गड्डरी पछारि सारदूल[4] ज्यों घनैं गरूर ॥
मेघव्है मिले अनीक[5] द्वैर प्रकोप बात[6] मेल ॥
खग्ग त्यों कटार२ कुंत३ सांगि४ बान५ बुंद[7] खेल ॥ ४५ ॥
के करीन[8] अंग लीन सस्त्रके करैं प्रकास ॥
भानु[9] अंधकारमैं करैं अनेक जानि भास[10] ॥
सोरकी सिखा सिलग्गि जोरकी सु गज्जि जात ॥
ओरकी कहाँ कितीक घोर[11]की घटा दबात ॥ ४६ ॥
होन जंग यौं लही समस्त दक्खिनीन हारि ॥
उद्यमी कहा करैं न दैव[12] भद्र आनुसारि ॥
वित्थरे[13] घुमंडिकैं इरान म्लिच्छ[14] जै बनाय ॥
खीजमैं भये गये घनैं अरीन प्रान खाय ॥ ४७ ॥

कुण्डलिका

कहीं पर आंत लेकर दो खेत घेरा देते फिरते हैं सो मानों १ खेती करनेवाले लाटने के लिये खेत में जरीब लगाते हैं कई युद्ध में मस्त होकर कूदते हैं और २युद्ध में ३ प्रशंसा पाकर कई वीर दूसरों को रोकते हैं ॥ ४४ ॥ कई वीर शत्रु के कंठ में दांत लगाकर ऐसे रक्त पीते हैं जैसे ४ सिंह बड़े घमंड से भेड़ को पछाड़ कर रक्त पीता है. क्रोध रूपी ६ पवन के मिलने से मेघ रूप होकर जैसे दोनों ५ सेना मिली तैसे ही तलवार, कटार, भाला, बरछी और बाणों की ७बूंदों से खेलहे ॥ ४५ ॥ कितने ही ८ हाथियों के अंगों में लीन हुए शस्त्र प्रकाश करते हैं सो मानों अंधकार में अनेक ९ सूर्य १० प्रकाश करते हैं, बारूदसे अग्नि लगकर जोरकी गर्जना करती है सो और की क्या कहूं ११ भयंकर घटा की गर्जना को दबाती है॥४६॥ इसप्रकार होते हुए युद्ध में दक्षिणियों की हार हुई सो १२भाग्य शुभ नहीं हो तो उद्यमी क्या करै १४ ईरान के म्लेच्छ जीतकर घुमंड कर १३ फैले और क्रोध में होकर बहुत शत्रुओं के प्राण खागये॥४७॥

पानिप करि जुज्झे प्रबल, इम दक्खिन ईरान ॥
करन[2] अजय दूरीकरन[3], करन[4] बिजय मतिमान ॥
करन बिजय मतिमान, रँग[5] कुरुखेत जंग रुचि ॥
रुचिधर[9] अहमदखान, जयो हुत अरि कृपान सुचि ॥
न सुचि[11] भजे मरहट्ठ, न सुचि[12] भज्जे स्यानिप[13] करि ॥
निपँ[14] करि लये बधाय, गये अच्छरि पाँनि[15] पकरि ॥ ४८ ॥

॥ दोहा ॥

चीमाके सिरको चटक[16], खोजि कँटक[17] रन खेत ॥
हारयो करि आयास[18] हर, हारयो तदपि[19] न हेत ॥ ४९ ॥
जथा तनय संध्या जिमहि, जनकू अमरख जग्गि ॥
न मिल्यो रंचक पँलचरन, गो तरवारिन लग्गि ॥ ५० ॥

॥ षट्पात् ॥

तनय नन्हके तिमहि बीर बिस्वासराव बढि ॥
नक्खे[21] तुरग निसंक पानै[22] पकरहु पठान बढि ॥

*ऊपर कहीहुई रीति से १पराक्रम करके२हाथों से पराजय को ३दूर करने और ४विजयकरने को दक्षिणी और ईरानी दोनों बुद्धिमान प्रबलता पूर्वक ऐसे लड़े जैसे बुद्धिमान् ५कर्ण और६अर्जुन ने कुलक्षेत्र के७युद्ध क्षेत्र में ८रुचि पूर्वक युद्ध किया था ९ क्रान्ति को धारण करनेवाले अमदखान ने तरवार रूपी १०अग्नि में शत्रुओं को होम करके जय किया, इधर मरहठों ने भी ११ शृंगार रस का सेवन नहीं किया और१२बुद्धिमानी करके१३मृत्यु से नहीं भगे "माघ काव्य के टीकाकार ने शुचि शब्द का अर्थ मृत्यु लिखा है" जिनको स्वर्ग में १४ कलश बंधाकर देवताओं ने बधा लिये और वे मरहठे अप्सराओं के १५हाथ पकड़कर गये ॥ ४८ ॥ चीमा के मस्तक के १६ टुकड़े को १७ सेना के युद्धक्षेत्र में हेरकर शिव १८ परिश्रम करके थक गये १९ तोभी उस (मस्तक के टुकड़े) से स्नेह न-हीं छोड़ा अर्थात् उसके नहीं मिलने पर भी हेरते ही रहे ॥ ४९ ॥ २० मांस खानेवालों को कुछ नहीं मिला ॥ ५० ॥ २१छोड़ डाले अर्थात् शत्रु की सेना में घोड़े उठाये, यहां विरुद्ध लक्षणासे घोड़े उठाये ऐसा अर्थ होता है"२२हाथों में

* ग्रन्थकर्त्ता (सूर्यमल्ल) के मत से कुण्डलिया छन्द में दोहे के अन्तिम चरण को पलटाने में अर्थभेद नहीं होवे तो उसको पुनरुक्ति मानते हैं जिसका ही उदाहरण यह कुण्डलिया है ॥४८॥

होरी जिम हुरिआर निडर झारी अँसि नागिनि ॥
करी बहुत लरि कुमर दुजन तिय दुसह दुहागिनि ॥
सुरलोक सँज्य अच्छरि सहित गंधर्बन गीत सु गयो ॥
श्रीमंत सुवन हारि न सम्रुझि तरवारिन तिल तिल भयो ५१

॥ दोहा ॥

रामराव१ नारुव२ रघुव३, बाला४ त्र्यंबक५ बीर ॥
रामचंद६ अंबा७ रतन८, सखाराम९ हमगीर ॥ ५२ ॥
इत्यादिक उमराव सब, दक्खिनके तजि देह ॥
नाक गये बंधन नवल, नाक कँलत्रन नेह ॥ ५३ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे लब्धजया ऽहमदखानसमस्थलीसंविशनानिवारितजनकूक्षतमल्लारपराजयपत्रदक्षिणाप्रेषणश्रीमन्तनन्हसुतविश्वासराव१ पितृव्यकचीमा २ मुख्यसप्ततिसहस्र ७०००० सैन्यप्रेषणतदालीगोहरनिग्रहणदिल्लीशुद्धसंस्करणश्रुतेतदहमदखानाऽऽगमनदिल्ली १ रान २ सेनैक्यमहाराष्ट्रसैन्यसहारणभवनससामन्तविश्वासराव १ चीमा २ जनकू ३ मरणयवनजयसंवर्द्धनं पञ्चाशत्तमो ५० मयूखः ॥५०॥ आदितः ॥ ३३१ ॥

पठानों को पकड़ा ऐसा कहकर १ होली के दिनों में फाग (गेंहर) खेलै तैसे २ नागणी रूपी तरवार ३ शत्रुओं की स्त्रियों को ४ अप्सरा को पांई तरफ लेकर ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५ स्वर्ग में ६ नवीन ७ स्वर्ग की स्त्रियों से ॥ ५३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशि में, उम्मेदसिंह के चरित्र में जय पाकर अहमदशाह का अन्तरवेद में जाना और जनकू के घाव, मिटाकर मल्हार का हारने का पत्र दक्षिण में भेजना १ श्रीमन्त नन्ह का पुत्र विश्वासराव और काका चीमा को मुख्य करके सत्तर हजार सेना को भेजना और उसका आलीगोहर को पकड़कर दिल्ली को शुद्ध करना सुनकर अहमदखां का आना २ दिल्ली और ईरान की सेना का एक होकर मरहटों की सेना से बड़ा युद्ध करना और उमरावों सहित विश्वासराव, चीमा, जनकू का मरना ३ यवनों की जय होने का पचासवां मयूख समाप्त हुआ ॥५०॥ और आदि से तीन

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

पहिलैं जिम हुलकर प्रथित, बच्यो आयु बल एक ॥
जाय भरतपुर जट्टकैं, किन्नों पायन सेक ॥ १ ॥
छोरि कलीजहु भरतपुर, सुनि मल्लारहिं आत ॥
गयो हैदराबाद भजि, आलयं निज अकुलात ॥ २ ॥
किय स्वागत मल्लारको, मुदित जट्ट रविमल्ल ॥
रक्खैं द्रव्य सब नजरि करि, ढल्यो दक्खिन ढल्ल ॥ ३ ॥
तब हुलकर कछु दिवस तहँ, रहि रचि कटक नवीन॥
भंडअटेरपुरादि सब, लूटि भदावर लीन ॥ ४ ॥
पुनि मगके गुरु लघु नृपन, दंडत विजय दिखाय ॥
गागरनो अभमल्ल गढ, जब करि विंध्यो जाय ॥ ५ ॥
कछुक रारि रठोर करि, दयो उचित पुनि दंड ॥
परि पायन मल्लारके, सह्यो हुकम अखंड ॥ ६ ॥
हुलकर बहुरि प्रयान करि, कोटा जनपदं आय ॥
दिन कछु घाटि मुकुंददर, रह्यो मुकाम रचाय ॥ ७ ॥
अहमदखान पठान इत, दक्खिन जित्ति दुरंत ॥
आलीगोहर साह पुनि, किय दिल्लिय तिय कंत ॥ ८ ॥
सुख्य वजीर नवाब करि, लखनेऊ नगरेसं ॥
मुगलन राज्य जमाय गो, लंघि अटक निज देस ॥ ९ ॥
इत दक्खिन श्रीमंत सुनि, स्वीय पराजय सोर ॥
चढि सत्वर अप्पुन चल्यो, जवननैं डारन जोर ॥ १० ॥

सौं हुलकारा ३३१ मयूख छुए ॥
१ प्रसिद्ध ॥ १ ॥ २ अपने घर ॥ २ ॥ ३ सूर्यमल्ल जाट ने ४ सामर्थ्य ५ दक्षिण की ओर का रुकना ॥ ३ ॥ ४ ॥ ६ बड़े छोटे ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ कोटा के देश में ८ मुकुंदरा के घाट में ॥ ७ ॥ ९ दिल्ली रूपी स्त्री का पति ॥ ८ ॥ १० लखनऊ नगर का पति ॥ ९ ॥ ११ यवनों पर ॥ १० ॥

षट्पात् ॥

संध्या जनकू पट्ट दयो केदारराव १ कहँ ॥
अरु दत्ताके पट्ट धरयो माहजि२ पतीर तहँ ॥
क्रम सन नाती१ पुत्र२ अडर राणांजीके थे ॥
दासी औरस हुव२ हि सचिव धन मन करि सेये ॥
सजि संग सुभट इत्यादि सब क्रम मगंच जित्तन करयो ॥
श्रीमन्त नन्ह बिरचन बिजय दिल्लिय उप्पर उप्परयो ॥११॥

॥ दोहा ॥

दक्खिनके बिपरीत दिन, हुक्कम बिगारन हार ॥
दैइव इंगरेजन उदित, करत अबहि करतार ॥ १२ ॥
करत मिजल श्रीमंत कछु, बढि वपु रोग बिसेस ॥
प्रानन तजि परलोक गत, साहू सुत सचिवेस ॥ १३ ॥
सब मरहट्टन धुरि तखत, निज प्रभुके सिर नाय ॥
सुत जेठो श्रीमंतको रक्खयो माधवराय ॥ १४ ॥

॥ रुचिरा ॥

बुल्लयो इत बुंदीस नृपति निज दीप अनुज जयनैर रह्यो ॥
अपकृत तास सकल बिस्मृत करि होय सदय अति हेत चह्यो ॥
रुप्पय लक्ख१०००००पटा जुत रैनरस रसिक कापरानि नगर दयो
परिखद बिरचि बुलाय बचन पट्ट अप्पि अभय हिय लाय लयो॥१५॥

॥ हीरकम् ॥

जैपुर नृप माधव इत वारितै कर जानिकैं ॥
नौरव सिरदारसिंह बिंटिय हुत आनिकैं ॥

---

१ पोता २ पहला तो दासी (पासवान) का और दूसरा विवाहिता स्त्री का पुत्र ॥ ११ ॥ ३ भाग्य ॥ १२ ॥ ४ सचिवों का पति ॥ १३ ॥ १४ ॥ ५ बुलाया ६ दीपसिंह को ७ अपकार सब ८ भूलकर ९ युद्ध के रसका रसिक १० सभा करके ११ हृदय से लगा लिया ॥१५॥ १२खिराज नहीं देना जानकर १३नरू का

कारन[1] रनथंभ अग्ग दक्खिन जयनेर ए ॥
हम्सरो हमरो उचारि कुप्पिग रचि बैर ए ॥१६॥
जैपुर उमरावन सन[2] माधव तब यौं कही ॥
दक्खिन सन मेल कोउ मम भट न करो सही ॥
नारव सिरदार तदंपि[3] हुलक्कर पति भिटयो ॥
सम्मुह कर जोरि गो रु रक्खन निज भू नयो[4] ॥ १७ ॥
मन्नि सु अपराध कुप्पि कूरम अब आयकैं ॥
बिंटिय उनियार[5] मार तोप मचकायकैं ॥
संबत धृति अह्न अवनि१८१८ पाउस गत कालमैं ॥
बिन्हल हुव नारव इम संगर बिकरालमैं ॥ १८ ॥
रन करि कछु काल बहुरि नारव भय संधिकैं ॥
माधव महिपालके पय लग्गिय सय[6] बंधिकैं ॥
दै कछु दम दंम्म[7] स्वामि आयस[8] सिर रक्खयो ॥
हो तुम असुनाथ[9] दास हैं हम इम अक्खयो ॥ १९ ॥

॥ चुलिआला ॥

उदयनैर नृप रान रान इत, राजसिंह दिय छोरि कलेवर ॥
सह अंतहपुर पुर सकल, तँहँ सहसा[10] हुव त्रास घोरंतर[11] २०
सोलह आदिक तब सुभट[12], अंतहपुर पच्छन्नद्वार[13] गत ॥
रानिन प्रति बिन्नति रचिय, मंडि उचितव्यवहारधर्म मत२१
अक्खिय नृप परतापको, अन्वय[14] क्रिय ईकलिंग[15] नष्ट अब ॥
पुच्छत हम पातैं प्रकट,सोलह१६अरु बत्तीस३२प्रमुख[16] सब२२

१ रणथंभ (रणतभँवर) के कारण ॥ १६ ॥ २से ३ तोभी ४ अपनी भूमि रखने को नमा ॥ १७ ॥ ५ उणियारा को घेरा ॥१८॥ ६हाथ बांधकर ७ दंड के रुपये ८ आज्ञा ९ प्राणनाथ ॥ १९ ॥ १०अचानक ११ अत्यन्त घोर ॥ २० ॥ १२ उमराव १३जनानी ड्योढी पर जाकर ॥ २१ ॥१४वंश १५मेवाड़ के राणा के इष्टदेव का नाम एकलिंग महादेव है १६आदि "मेवाड़ में पहले दरजे के उमरावों की गणना सोलह और दूसरे दरजे के उमरावों की गणना बत्तीस है" ॥२२॥

जो रानिय आधान[1] जुत, हो कोउक तो काल[2] निहारहिं ॥
यह नहि तो अरिसिंहकों, बैठारन हम पट्ट विचारहिं ।२३।
उत्तर तब अवरोध[3] सन, प्रकट सुनि रानीन पठायउ ॥
नहि दोहँदलच्छन[4] छिपत, क्यों तुम यह संदिग्ध[5] कहायउ२४
सुभटन यह उत्तर सुनत, रान प्रताप कनिष्ठ[6] भ्रात तब ॥
गहिय पति अरिसिंह किय, परि[7]पाटी व्यवहार सहि सब२५
अरिसिंहहु तब अरज यँह, पठई नृप परताप तियन प्रति ॥
तुम धारत आधान तो, रंचक नहिं मम राज्य माँहिं रति[8]२६
राज्यसिंह संतति रहत, ओहि[9] मात सब दासहि जानहु ॥
नृपता यह मम जोग्य नहिं, पटु[10] अप्पहु नहिं छद्म[11] प्रमानहु२७
पठई रानिन अक्खि पुनि, अब तुम नृप अरिसिंह उदयपुर॥
करहु नाँहिं संदेह कछु, धरहु राज्य अधिकार भार धुर २८
इत माधव जयपुर अधिप गिनि बिगरे मरहट्ठ लोभ गहि ॥
उनको हो निज ढिग अमल, किय सु देस स्वाधीन उचित कहि२९
सत्वर[12] यह कटु[13] बत्त सुनि, जयपुर सिर मरहट्ठ सजे जब ॥
पठयो बुंदिय पत्र लिखि, त्वरित दरित[14] कछवाह भूप तब ३०
करन भीर यह काल[15] है, पृतना निज मम पास पठावहु ॥
मरहट्ठन सन मंत्र रचि, वा उनको यह कोप उठावहु ॥३१॥
संभर पति इम पत्र सुनि, अजितसिंह निज पुत्र भेजिदिय॥
सहँसपंच५०००दल संग करि, कुम्म[16] कथित स्वीकारसकल किय३२
सक बिक्रम धृति १८१८समय, कुमर अजित इम बीर सिलह करि ॥

---

१ गर्भ सहित २ समय देखे ॥२३॥ ३ जनाने से ४ गर्भ छिपा नहीं रहता ५ संदेह युक्त ॥ २४ ॥ ६ राणा प्रतापसिंह का छोटा भाई ७ परस्पर का ॥२५॥ ८ प्रीति ॥ २६ ॥ ९ हे माताओ १० आप भी चतुर हो सो ११ छल मत जानो ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ १२ शीघ्र १३ कडुई बात सुनकर १४ डरकर ॥ ३० ॥ १५ समय है ॥ ३१ ॥ १६ कछवाहे (माधवसिंह) का कहना ॥ ३२ ॥

नव९ हायन बय बिच निडर, भीर गयो जयनैर हरख भरि ॥ ३३ ॥
सुनि माधव अति जव सम्मुख, अग्ग रीति सब लंघि रु आयउ ॥
सुत्तिय डुंगरि वार मिलि, बिबिध सद्धि सतकार बधायउ ॥ ३४ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७राशावुम्मेदसिंहचरित्रे आयुर्बलाऽवशिष्टमल्लारभरतपुरा ऽऽगमनतद्भीतकलीजखानहैदराबादपलायनस्वीकृतजट्टोपायनलुण्ठितभदावराऽऽदिदेशदण्डितगागरणीशाऽभयसिंहहुलकरकोटाजनपदमुकुन्ददरघट्टप्रपतनपठानाऽहमदखानाऽलीगोहर्दिल्लर्प्पणसुजाउद्दोलावजीरभवनाऽहमदखानेरानगमनश्रुतस्वपराजयजनकू१ दत्ता ९ स्थानाऽऽपन्नकेदारराव १ माहजि २ सहितदिल्लीविजयाऽर्थप्रस्थितश्रीमन्तमरणात्तत्सुतमाधवरायपितृपट्टप्रापणबुन्दीन्द्रसमाहूतसोदरदीपसिंहाऽर्थकापरणनगरदानकूर्मराजमाधवसिंहमल्लारमिलनसाऽऽगसनारुवसरदारसिंहनगरोणियाराबेष्टनतच्चरणपतनदण्डद्रव्यनिवेदनशीशोदराजोदयपुरेशराणाराजसिंहमरणपितृव्यकाऽरिसिंहतद्गद्दीनिविशनज्ञातनिर्बलमहाराष्ट्र-

---

१ वर्ष ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तम राशिमें उम्मेदसिंह के चरित्र में आयुर्बल के बाकी होने से मल्लार का भरतपुर आना और उसके भय से कलीजखां का हैदराबाद भागना १ जाट की दी हुई भेट को स्वीकार करके भदावर आदि लूटकर गागरनी के पति अभयसिंह का दंड देकर हुलकर का कोटा के देश, मुकन्दरा के घाट में मुकाम करना ७ पठान अहमदखां का आलीगोहर को दिल्ली देना और सुजाउद्दोला का बजीर होना २ अहमदखान का ईरान में जाना और अपना पराजय सुनकर जनकू और दत्ता के स्थानापन्न केदार राव और माहजी सहित दिल्ली को विजय करने के अर्थ प्रस्थान किये हुए श्रीमंतका मरना और उसके पुत्र माधवराव का पिता का पाट पाना ४ बुन्दीश के बुलाये हुए सगे भाई दीपसिंह के अर्थ कापरण नगर का देना और कछवाहे राजा माधवसिंह का हुलकर से मिलने के अपराध से नरूके सरदारसिंहके नगर उणियारा को घेरना और उसके चरणों में पड़कर दंड का धन नजर करना ५ सीसोदियों के राजा उदयपुर के पति राणा राजसिंह का मरना और उसके काका अरिसिंह का गद्दी बैठना ६ मरहठों को निर्बल जानकर जयपुर के पति

जयपुरेशतद्देशस्वीकरणश्रुतैतत्सज्जदक्षिणासेनाऽऽगममाधवसिंहबुन्दी सहायप्रार्थनरावराणामहाराजकुमाराऽजितसिंहजयपुरप्रेषणसंमुखा ऽऽगतजायसिंहितत्सन्मननमेकपञ्चाशत्तमो ५१ मयूखः॥ ५१ ॥ आदितः॥ ३३२ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

अजितसिंह मिलि कुमर इम, माधव सन सह मोद ॥
पहुँच्यो डेरन आनि पहु, बिरचत लरन बिनोद ॥ १ ॥
किय अपुब्ब माधव कहिय, बुंदिय पति यह बत्त ॥
सुनि रन पट्टप स्वीय सुत, यँहँ पठयो अनुरत्त ॥ २ ॥
कारन पाय बिसेस कछु, दक्खिन दल किय देर ॥
माधव सुनि रक्ख्यो मुदित, कुमर हडु नृप केर ॥ ३ ॥
क्रीड़ा बहु आखेट क्रम, दिन दिन सहल दिखाय ॥
सम्मुह रक्ख्यो तखत सिर, पुनि महलन पधराय ॥ ४ ॥
दयाराम तँहँ हडु द्विज, किय बिन्नति करजोरि ॥
जैपहरि लिय लिखवाय जब, नृप सन लिखित निहोरि ॥५॥
सुत व्हैहैं जु समप्पिहैं, हम तुमकौं कछवाह ॥
धरहिं अंक दायाद ध्रुव, चिंति रावरी चाह ॥ ६ ॥
लयो जनक तुमरे लिखित, उचित दैन अब एह ॥
नृप संभर अनुकूल गिनि, सद्दहु बिहितं सनेह ॥ ७ ॥

का उनका देश लेना यह सुनकर सजकर दक्षिण की सेना का आना ७ माधवसिंह का बुन्दी से सहाय की प्रार्थना करना और रावराजा का राजकुमार अजितसिंह को जयपुर भेजना ८ जयसिंह के पुत्र का उसके सन्मुख आकर सन्मान करने का इक्कावनवां ५१ मयूख समाप्त हुआ ॥ ५१ ॥ और आदि से तीनसौ बत्तीस३३२ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ अपूर्व २ अपने पाटवी पुत्र को ३ प्रीति करके भेजे ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ शिकार ५ तखत के ऊपर सम्मुख ॥ ४ ॥ ६ जयसिंह ने ७ राजा बुधसिंह से ॥५॥ ८ किसी भाई को गोद रख लेवेंगे ॥ ६ ॥ ९ तुम्हारे पिता ने १० उचित ॥ ७ ॥

हो मुहुकमसिंहोत तँहँ, गिहर छुड नगराज ॥
आश्रित कूरम ईसके, कारन स्वामि अन्य काज ॥ ८ ॥
तुल्ल्यो सोहु बिलंब अब, न करहु हित पहिचानि ॥
जैपुरपति यह सुनि सजव, अप्प्यो लिखित सु आनि ॥ ९ ॥
दक्खिन कटक बिलंब लखि, जानि सघन बिनु जोर ॥
राजकुमारहिं सिक्ख दिय, माधव कूरम मोर ॥ १० ॥
जाय पटालय[2] जैनक[3] जिम, किय कुमार सतकार ॥
अक्खिय हित बिच अंतर न, इत उत गिनहु उदार ॥ ११ ॥
इम कहि इक१ गज दुव२ अरब[4], दुव२ सिरुपाव सु साज ॥
नग भूखन इक१ रुचिर नव, किन्न नजरि हित काज ॥ १२ ॥
अरु दलेल उमराव निज, धूलापुरप समत्थ ॥
लछमन ताको पुत्र लघु, पहुँचावनि दिय सत्थ ॥ १३ ॥
दयाराम तँहँ अरज किय, कूरम प्रति पहु प्यार ॥
किय तुम शेट कुमारको, संभरपति सतकार[5] ॥ १४ ॥
नियम गिन्यौं हित माँहिं नहिं, यातैं यह दुव एह ॥
पै अब संभर भूपतैं, अर्द्ध लिखावहु लेह[6] ॥ १५ ॥
जयपुरके दफतर जयहि, लिय माधव लिखवाय ॥
सुनहु राम छितिपाल सो, सुनिबे योग्य सुभाय ॥ १६ ॥

॥ रोला ॥

संभरपतिके सम्मुह कोस इक१ आवहिं कूरम ॥
कुमर सम्मुख अधकोस सु पुनि आवहिं सनेह सँम ॥
कूरम डेरन इहु जात तोरन[7] लग आवहिं ॥
कुमरहि पायंदाज अंत रहि मिलि लै जावहिं ॥ १७ ॥
नृपति परस्पर द्वैरहि मिलत मस्तक कर आनैं ॥

॥ ८ ॥ १ शीघ्र ॥ ९ ॥ १० ॥ २ डेरे जाकर ३ पिता के जैसे ॥ ११ ॥ ४ घोड़े ॥ १२ ॥ १३ ॥ ५ बुन्दी के राजा को देने का सत्कार कुमर को दिया ॥ १४ ॥ ६ लेख में, राजा से कुमर के आधा लिखवाओ ॥ १५ ॥ १६ ॥ ७ से द्वार तक ॥ १७ ॥

खितबुधसिंहलेखप्रत्यर्पणबुन्दीन्द्रसत्काराऽर्द्धरीतिराजकुमारसत्कारलेखजयपुरलेखमन्दिरलेखनप्रीतिपूर्वककृतस्वसुभटसार्थाऽजितसिंहबुन्दीप्रतिप्रस्थापनं द्विपञ्चाशत्तमो५२मयूखः ॥ ५२ ॥ आदितः३३३

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

॥ दोहा ॥

संबत नव ससि धृति १८१९ समय, माधव कोउक काज॥
आयो गढ रनथंभ तँहँ, बुल्लयो संभरराज ॥
सचिव तास आये समुझि, गो बुंदियपति तत्थ ॥
पुर खंडारि समीप दुव२, सुपहु मिले हित सत्थ ॥ २ ॥
संभरनृपके कुम्म सन, सुभट मिले इकसट्ठि ६१ ॥
उभय२ मिलत नृप अरिनको, नूर गयो सब नट्ठि ॥ ३ ॥
दिय लिय गज तुरगादि सब, किय कछु दीह मुकाम ॥
इत बुंदिय नृप अंगना, सुरूप गई सुरधाम ॥ ४ ॥
पहिलैँ सक खट ख धृति १८०६ पर, लहि प्रतिपद१ बैसाख॥
ईडरपतिजा भोगिनी, मरी सु मेचक पाख ॥ ५ ॥
पुनि सत्रह धृति १८१७ साल पर, अगहन मेचक पाय ॥
ऊदाउति गतअसुँ भई, छट्ठी६ दिन गद छाय ॥ ६ ॥
अब बसु ससि धृति १८१८ अब्दके, पुण्णिम१५ चैत अनेह ।
मँहिषी हड्ड महीपकी, दिय झल्लिय तजि देह ॥ ७ ॥
खबरि तास खंडारिही, पहुँची संभर पास ॥
नृप हुव लखि अनुचित नियति, अंतर कछुक उदास ॥८॥

सत्कार से आधी रीति राजकुमार के सत्कार की जयपुर के दफतर में लिखवाना २ प्रीति पूर्वक अपने उमराव को साथ करके, बुन्दी के कुमर अजितसिंह को पीछा बुंदी भेजने का बावनवां ५२ मयूख समाप्त हुआ ॥ ५२ ॥ और आदि से तीन सौ तेतीस ३३३ मयूख हुए ॥

१ माधवसिंह २ बुलाया ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ३स्त्री ॥ ४ ॥ ४ ईडर के पति की पुत्री ५ छोटी रानी ॥ ५ ॥ ६ कृष्णपक्ष ७ गतप्राण ८ रोग छाकर ॥ ६ ॥ ९ समय १० पाटवी राणी ॥ ७ ॥ ११ भाग्य के ॥ ८ ॥

सुपहु दुहुँन[2] तत्थहिँ सुन्यौं, अब दक्खिन दल[1] आत ॥
केदार[1] रु माहजि[2] क्रमिग, घल्लन संध्या घात ॥ ९ ॥
सुनि माधव जयपुर गयउ, आयउ स्वपुर उमेद ॥
दिस दिस मचि दक्खिन दहल, भूपन सिखवत भेद ॥१०॥

॥ रोला ॥

इत संध्या उज्जैन आय मालव निज बस किय ॥
अपन दोय[2] रहि तत्थ दाव मरुधर जित्तन दिय ॥
चिंति जयाको बैर चंड सजि कटक चलाये ॥
यँहँ सब नृपन वकील इष्ट[3] सद्धन द्रुत आये ॥ ११ ॥
इम सवेग अजमेर पत्त रन खुल्लि[4] पताकन ॥
बिजयसिंह सन बिजय लैन किय मंत्र कँजाकन[5] ॥
यह सुनि मरुधर ईस भीरु बुंदिप पुर भूपति ॥
बुल्ल्यो दै[6] दल बिहित मडि मंत्रन जुज्झन मति ॥ १२ ॥
इत प्राति धृति धृति१८१९अब्द, असित सुचि[7] छट्ठि[8] अरक जुत
भूप भुजिष्या[9] बहुरि जनिंग[10] संग्रामसिंह सुत ॥
बलि[11] मरुपति दल बीच हड्ड हंकिय सहाय हित ॥
सम्मुह आयउ बिजयसिंह चाहत प्रमोद चित ॥ १३ ॥
दिय डेरा बुंदीस सूरसागर तडागँ[12] तट ॥
दक्खिन दलकी देर भनत भूपाल तिमहि भट ॥
यँहँ वकील अजमेर भेजि मरुराज साम सन ॥
अट्ठलक्ख दै दम्भ द्रोह मिट्टयो मरहट्ठन ॥ १४ ॥
तब दक्खन ढुंढार चल्यो दक्खिन दल[13] सत्वर ॥
लुट्टिय पुर मोजाद चारु आपनँ[14] धन चैत्वर[15] ॥

१ सेना २ चले ॥९॥१०॥ ३ वांछित साधने के लिये ॥११॥ ४ युद्ध की पताका खोलकर ५ युद्ध करनेवालों ने ६ पत्र देकर बुलाया ॥ १२ ॥ ७ आपाढ यदि ८ अदीतवार सहित ९ दासी (पासवान स्त्री) १० जना ११ पुनि ॥ १३ ॥ १२ तलाव के किनारे ॥१४॥ १३ सेना शीघ्रचली १४ बिक्री का बजार १५ चौहटा

स्वीय पितृव्यक[1] सुता बुल्लि ईडरपुर सन यँहँ ॥
उदयकुमारि अभिधान[2] मरुप[3] व्याहन संभर कँहँ ॥ १५ ॥
अतिधृति धृति १८१६ आषाढ नवमि९ अवदाता[4] लग्न पर ।
बुंदीसहिँ सविनोद दई दुलहनि बिवाहि वर ॥
रक्ख्यो निज आवास[5] नृपहिँ सनमानि पक्ख त्रय३ ॥
हुव प्रतिदिन मुद दुहुँन२ दोजि२ सितपक्ख चँद्रोदय[6] ॥१६
पुँटभेदन[7] मोजाद इत सु कोटेस सचिव गय ॥
अखैराम कायत्थ मिलन मरहठ्ठन अघ मय ॥
संध्या माहजि श्रवन[8] पिसुन पूरे अवसर लहि ॥
संभर मरुप सहाय होन कारन अनेक कहि ॥ १७ ॥
दै कछु छन्नैं दम्म मोरि जित तित माहजि मन ॥
बुंदिय उप्पर बेग प्रथित[9] आन्यौं कराय पन ॥
कटक्क अचानक दुरि चाहि हड्डन दंडन चित ॥
आनी बिबिध उम्माहिय[10] भद्दव लहरू मित ॥ १८ ॥
दंग आत दक्खिनिन सुनत मरुधर तजि संभर ॥
आयो बुंदिय अरहि[11] सज्यो दुद्धर चहि संगर ॥
पुटभेदन[12] प्राकार सज्जि चाहत अरि आगम ॥
मानहु चातक मत्त सघन घन भद्द समागम ॥ १९ ॥
चित माहजि लहि चाह दोरि इत वपु[13] दक्खिन दल ॥
बुंदिय सहसा[14] बिंटि कियउ तोपन कलकलाकल[15] ॥
अखैराम दल अप्पि[16] सजन बुल्ल्यो कोटेसहिँ ॥

१ अपने काका की पुत्री को बुलाकर २ नाम ३ मारवाड़ के राजा ने ॥ १५ ॥ ४ सुदि ५ अपने महलों में ६ शुक्लपक्ष की द्वितीया के चन्द्रमा के उदय के मान ॥ १६ ॥ ७ मोजाद नामक पुर में ८ उस चुगल ने माहजी सिंधिया के कान भरे ॥ १७ ॥ ९ विदित १० भादवे के मेघ की लहरों के समान ॥ १८ ॥ ११ शीघ्र १२ नगर के कोट को ॥ १९ ॥ १३ दक्षिण की सेना रूपी शरीर दौड़कर १४ अचानक १५ अत्यन्त कोलाहल १६ पत्र देकर कोटा के पति को

सत्तुसल्ल दल सुनत चल्यो दब्बत द्रुत देसहिं ॥ २० ॥
अनतापुरपति अजित प्रथम जो हुवकोटापति ॥
पट्ट तास यह पाय आय बुंदिय रन किय अति ॥
संध्याके भरि अवल बन्यौं जैयकार तास बल ॥
गिलिग लहि डुंख जानि आखु मारत मारन अल ॥ २१ ॥
इम माहजि अपनाय बेढि माधवहर बुंदिय ॥
संध्याकौं साबात सोरकौं कूँल ज्वलन किय॥
दक्खिन१ पूरब२ दुव२हि तरफ तापन मचि दीपन॥
कुल गोलन प्राकार लगे कोपन रैय लोपन ॥२२॥
थाल सलिल गति थरक्कि मही डुंगर डगमग्गत ॥
अतल बितल बसवानें लाजि सुतलप पय लग्गत ॥
बनि बनि आनन पिसुन बीररस बाढत नारद ॥
धमि धमि तोपन धूम सहज छावत घन सारद॥ २३ ॥
तुट्टत निज सिर त्वरित सूर न चहैं हु चहैं सिव ॥
इत मारन अरि अतुल उत सु हिंसन अनिच्छ इव॥

शीघ्र बुलाया १ पत्र सुनते ही ॥ २० ॥ २ अजितसिंह ३ इस (शत्रुशाल) ने उस (अजितसिंह) का पाट पाकर उस सिन्धिया के बल से ४ जय करनेवाला हुआ ५ मानों सर्प को चूहे को पकड़ा हुआ जानकर ६ बिच्छू ७डंक मारता है "सर्प के मुख में चूहा होने के कारण अपने मरने का भय छोडकर बिच्छू उस सर्प के डंक मारता है" ॥ २१ ॥ ८ माधवसिंह हाडा के वंशवाला बुन्दी को घेर कर ९ सिन्धिया रूपी बारूद के १० किनारे में आग लगाई "यहां सिन्धिया की अति प्रबलता दिखाने को वीप्सार्थ में साबात और सोर दोनों एकार्थवाची शब्दों का प्रयोग किया है" गोलों के समूह ११ कोट का १२ क्रोध के वेग से लोप करने लगे ॥ २ ॥ थाल में भरेहुए १३जल की भांति १४वास करनेवाले लज्जित होकर १५ सुतल के पति के पैरों लगते हैं १६ प्राणों की चुगली करके १७ शरद ऋतु के बद्दल ॥ २३ ॥ १८ शीघ्र तूटे हुए अपने मस्तकों को वीर नहीं चाहते और मुंडमाल करने को शिव चाहते हैं, इधर (बुन्दीवालों) शत्रुओं को मारने में तुलना रहित हैं और उधर हिंसा करने में १९ इच्छा रहित की भांति हैं.

काली खप्पर कतिन[1] गोद गत तदपि नटन[2] गहि ॥
पीवनदेत न पलल करहु उपवास पचन कहि ॥ २४ ॥
सुरभि[3] पराग समान खेह रवि मधुप[4] दृगन खिरि॥
अंधी करत अनूरु[5] सहित कर्दम[6] विधाय[7] किरि॥
तारागढ सिर तोप लौन[8] कचमाल उतारत॥
बंदी गिद्धनि[9] बुल्लि सूर गति गिरिहि[10] सिंगारत ॥ २५ ॥
अंक[11] गलिन जिम अहत तिमिर[12] फारत गोले तिम ॥
तोप अदितिके तनुज[13] करहिं संख्या पावन[14] किम ।
देत निसैनिन दौरि सूर आरोहत कपिसिर[15]॥
इतके अरि आघात[16] बछि डारत तिन्ह बाहिर ॥ २६ ॥
तकि तकि छिदन तोपदार बधत अग्गु गोलन ॥
पब्बय[17] तिनके पात[18] झुकत घुम्मत झकझोलन ॥
धमकि खनंकत धूजि पृथुल[19] बलभिन पर खप्पर ॥
बिथुरत जरि बाजार छार टप्पर कठछप्पर ॥ २७ ॥
भीरुन[20] मुख छवि भाँति नटत जल दंग निवानन ॥

१ कालिका के खप्पर में गया हुआ वीरों का मांस २ नृत्य करके उसको रुधिर नहीं पीने देता है सो मानों उससे कहता है कि यह रुधिर पाचन (हजम) नहीं होवेगा सो उपवास कर ॥ २४ ॥ ३ वसन्तऋतु के पुष्प रज के समान धूलि सूर्य रूपी ४ भ्रमर के नेत्रों में खिरकर ५सूर्य के सारथिको अंधा करती है और कायर है सो वराह को ६ कीचड़ सहित ७ करता है ८ केसों की माला को काटती है "लुञ् छेदने" इस धातु से, लौन का अर्थ काटना है" ९ गीधों रूपी भाटों को बुलाकर १० बुन्दी के पर्वत तक वीरों की तरह शृंगार कराता है ॥२५॥ ११जैसे सूर्य१२अन्धेरे को फाड़ता है तैसे गोले गलियों में फिरते हैं १३ तोप रूपी अदिती के पुत्र (देवों रूपी गोलों) की संख्याको कैसे१४पासक्ते हैं अर्थात् जैसे देवताओंकी गणना नहीं होसक्ती तैसे ही गोलों की गणना भी नहीं होसक्ती!५कंगुरों पर चढते हैं१६नरवारों के प्रहारों से ॥ २६ ॥ १७पर्वत१८उन गोलों के पड़ने से१९बडी मियालों (घरके छाने के बड़ काष्ठ) पर ॥ २७ ॥ २०कायरों के मुख की शोभा नष्ट होवे तैसे नगर के निवाणों का जल नष्ट होता है

सोदागर रसबीर रच्यो बिक्रय इम प्रानन ॥
बिरहिनिके उर बिबिध भये तपि तपि भुवमंडल ॥
कै जिम मनि रबिकांत फरस ग्रीखम दाहक फल ॥ २८ ॥
अट्ट रु गोपुर उडत थंभ मंडप थहरावत ॥
गगन गिद्ध गति ग्राव लोल चढत रु लहरावत ॥
माघ त्रयोदसि१३असित अंक ससि धृति१८१९सक अंतर ॥
माहजिकों मिलवाय सज्यो बुंदिय इम संभर ॥ २९ ॥
सुनि यह दैन सहाय कटक पठयो कूरमपति ॥
कह्यो हड्ड जय करहु हेतिबल करहु सत्रु हति ॥
पामँडहेडापुरप होय कूरम सेनानी ॥
राजाउत द्वारकादास आयो अभिमानी ॥ ३० ॥
साहिपुरप उम्मेदँ त्यौंहिं पठयो सहाय दल ॥
सुत लघु मालिमसिंह बिरचि सेनेस महाबल ॥
बिजयसिंह मरुराज जदपि बुंदिय रन जान्यौं ॥
भेजी तदपि न भीर मूढ कृतघन पन मान्यौं ॥ ३१ ॥
अट्ठ८ पहर इत हड्ड भूप कटिबंध न खोलत ॥
पलपल बिच प्राकार भटन ललकारत डोलत ॥
सुत हुव पृथ्वीसिंह भूप जैपुरपतिके जँहँ ॥
तास बधाई जंग होत आई बुंदिय तँहँ ॥ ३२ ॥
उच्छव ताको अतुल सुनत संभर नरेस किय ॥
मरन मंडि रन तुमुल वहुत दिन किय निसंक हिय ॥

---

१ वीर रस रूपी सौदागर ने इसप्रकार प्राणों का २ व्यापार रचा।३विरहिणी स्त्रियों के हृदय के समान भांति भांति से४अथवा जैसे ग्रीष्मऋतुमें सूर्यकान्त मणि का फल फर्श (बिछोना) दाहनेवाला होवै तैसे ॥ २८ ॥ ५ बुरजें और शहर के दरवाजे ६ आकाश में ग्रीधों की भांति चपल पत्थर चढकर लहराते हैं ७ कृष्ण पक्ष ॥ २९ ॥ ८ जयपुर के राजा माधवसिंह ने ९ शस्त्रों के बल से ॥३०॥ १० उम्मेदसिंह ने ११सेनापति करके ॥३१॥ १२कोट पर ॥३२॥१३भयंकर

जान्यौं तुट्टत नाँहिं नैर बुंदिय माहजि जब ॥
श्रद्दरि साम उपाय पत्र पठयो नृप प्रति तब ॥ ३३ ॥
कोटापतिको कथित मन्नि संगर पैँ मंड्यो ॥
अप्प मिलहु अब आय छुद्र साँहस हम छंड्यो ॥
सुनि नृप अरि कृत साम चिंति नय मिलन बिचारिय ॥
माधानी भगवंत दुग्ग रक्ख्यो रखवारिय ॥ ३४ ॥
अक्खिय हमकौं मारि नगर अरि लैन बिचारहिं ॥
तो भाई मरि तुमहु देहु पुनि सूबेदारहिं ॥
माहजि हितु मिलाप कियैं नृप निकसि यहै कहि ॥
आयउ तोरन अवधि सम्मुख संध्याहु तोर सहि ॥ ३५ ॥
हथजोरी करि हुलसि जाय बैठे परिखं हुव ॥
साँपराध संध्या समेत हड्डन बिनोद हुव ॥
करन जोरि तब कहिय नम्र माहजि आगस निज ॥
सुनि हित जुत संभरहु बिकंच किन्नैं दृग बारिज ॥ ३६ ॥
अक्खिय तुम कोटेस कुटिलको क्यौं न इष्ट किय ॥
सुनि जोरे तस सयँन पिक्खि पुनि नृप बुल्लिय प्रिय ॥
खरनीके कछु दम्म चढे आदिक गिनि दिन्ने ॥
हित अन्योन्यं बढाय बिदा मरहट्ठन किन्ने ॥ ३७ ॥
याहि बरस १८११ बुंदीसकेर सिरदारसिंह सुव ॥
ईडरपतिजा उदयकुमरि रानी औरँस हुव ॥
चैत्रमास मुख असित पक्ख संगत अष्टमि दिन ॥
उच्छव तिहिं दिन अतुल बहुरि बिरचिय हड्डन इन ॥ ३८ ॥

युक्त ॥३३॥ १कहना मानकर २तुच्छ हठको ३शत्रु के कियेहुए मिलाप को नीति से विचारकर ॥३४॥ ४द्वार पर्यन्त ५प्रताप को सहकर ॥३५॥ ६सभा में ७अपराधी ८सिन्धिया सहित ९अपना अपराध १०प्रफुल्लित किये ११नेत्र कमल ॥३६॥ १२अनुकूलता (चाहना) अर्थात् भलाई १३दोनों हाथ जोड़े १४परस्पर ॥३७॥ १५ईडर के पति की पुत्री के १६उदर से १७कृष्ण पक्ष १८बहुत १९हाडाओं के पति ने ॥३८॥

कोटेसहु आनन[1] बिगारि अतिसय सिटाय हिय ॥
अखैराम सठ सचिव सहित कोटा प्रवेस किय ॥
बिजयसिंह मरु ईस बुद्धि इत हड्ड महीपति ॥
दीपकुमरि निज बहिनि ताहि व्याहिय मंजुल[2] मति ॥३९॥
सक कृति धृति१८२०मित समा[3] राँध[4] अवदात दसमि१० दिन
अति हित करि उच्छाह लगन सज्जिय कबंध ईन[5] ॥
साल प्रकृति धृति १८२१ समय तीज३ फग्गुन सुदि बासर[6] ॥
ईडरपति लघु सुता दीप सोदर[7] व्याह्यो बर ॥ ४० ॥
जोधपुरहि यह बिजयसिंह मरुपाल व्याह किय ॥
नाम भवानकुमरि बहिनि उच्छव करि व्याहिय ॥
याहि बरस १८२२ श्रीमंत माधवहु देह बिहायो ॥
पट्ट नरायनराव अनुज ताको तब पायो ॥ ४१ ॥
तिहिँ काका रघुनाथराव पर बैर बिथारिय ॥
तानै भजि तब सरन इंगरेजन द्रुत धारिय ॥
सक इहिँ१८२१ कथित[8] समीप साह आलम ४९।१दिल्ली पति
दिय इंग्रेजन अर्थ तीन३ सूबा सहाय मति ॥ ४२ ॥
बंगाला१ रु बिहार२ तथा उड्डीसा३ ए त्रय३ ॥
इनमैं तब अंग्रेज भये हाकिम जमात जय ॥
सूबा त्रयं३ सिर साह रुद्ध निज गति जब जानी[9] ॥
इस्तमरारी आंकि दई इनकौं दीवानी ॥ ४३ ॥
प्रथम रुहेला सचिव नजीबुद्दोलाके भय ॥
दिल्लीतैं भजि साह बंग[10] अंतर बचिबे गय ॥
कछु हायन[11] तँहँ कढि मरयो सुनि कथित[12] रुहेला ॥

---

१ मुख बिगाड़कर २ श्रेष्ठ बुद्धिवाली ॥ ३९ ॥ ३ सम्वत् ४ वैशाख सुदि ५ राठौड़ों के पति ने ६ दिन ७ उम्मेदसिंह का सगा भाई दीपसिंह ॥४०॥४१॥ ८इस कहेहुए सम्वत के समीप ॥४२॥९अपनी गति रुकीहुई जानी; जब ॥४३॥ १०बंगाले में ११ कुछ वर्ष १२नजीबुद्दोला रुहेला को मरा सुनकर

लहि मरहट्ठ सहाय बिस्यो[1] दिल्लिय लखि बेला[2] ॥ ४४ ॥
नजफखान जिहिँ नाम जवन सो किय वजीर जब ॥
सक लिपि[3] अंतर ननहु अधिक प्रभु राम२०३।४ इहाँ अब ॥
सिवप्रसाद मुनसी जु[4] आहि अधुना[5] अंग्रेजन ॥
जिहिँ दुव२ ग्रंथ बनाइ बिदित किन्ने छापा सन ॥ ४५ ॥
जिनमैं इक भूगोल आदि[6] हस्तामल१ जानहु ॥
तँहँ इन्ह सूबा तीन३ मिलन सूचित १८२१ सक मानहु ॥
ताहीनैं इतिहासतिमिरनासक२ प्रबंध किय ॥
तामैं पावन पट्ट साह आलम ३९।४को सक लिय ॥ ४६ ॥
सो हय दुव बसु सोम १८२७ कितो अंतर अब इक्खहु[8] ॥
ओरनमैं इहिँ रीति परत अंतर प्रभु पिक्खहु ॥
मुद्रित किय इक१ ग्रंथ बिदित पंडित बंसीधर ॥
सो भारतवर्षीय आदि इतिहास३ नाम पर ॥ ४७ ॥
तामैं बैठन तख्त साल आलम ४९।१ सक्क सूचिय ॥
सो हय दुव बसु सोम १८२७ प्रमित जानहु पुहवीपिय[9] ॥
बढि१ घटि२ अंतर बिबिध लेखकारहि[10] इम लावत ॥
है[11] तँस दोस न हमहिँ लेख अनुसार लिखावत ॥ ४८ ॥
परि इम बत्त प्रसंग अन्यठामहु कहि आये ॥
बर्त्तमान अब वृत्त[12] सुनहु प्रभु सबन सुहाये ॥
जट्ट जवाहिरमल्ल याहि हायनँ[13] १८२१ प्रकुप्पि अब ॥
लुट्टी दिल्लिय जाय साह धन कोस सहित सब ॥ ४९ ॥
अग्ग जँनक[14] रविमल्ल मरयो दिल्लिय रन अंतर[15] ॥

१ प्रवेश हुआ २ समय देखकर ॥४४॥ ३ सम्वतों के लेख का अन्तर सुनो ४ है ५इस समय में अंगरेजों का ॥४५॥ ६भूगोल है आदि में जिसके ऐसा हस्तामल अर्थात् भूगोलहस्तामल ७ ग्रन्थ ॥४६॥ ८देखो ॥४७॥ ९हे भूपति १० लिखनेवाले ११ इसका दोष हमको नहीं है क्योंकि हम लिखेहुए के अनुसार लिखते हैं ॥ ४८ ॥ १२ वृत्तान्त १३ इसी वर्ष में ॥ ४९ ॥ १४इसका पिता सूर्यमल्ल १५युद्ध में

ताको बैर विधाय[1] करिय यह जट्ट जवाहर ॥
इत मेवारे भटन सठन तसकरपन[2] धारयो ॥
बुंदिय[3] जनपद बीच बिबिध वसु[4] हरन बिथारयो ॥५०॥
कुप्पि तबहि बुंदीस सेन सज्जिय तिन उप्पर ॥
लये पकरि सीसोद झारि असिवर निज[5] तसकर ॥
निवसथ[6] टहला१ मंगटला२ टिंटहरा३के पति ॥
कन्हाउत ए कैद किये अवरहु सागस[7] कति ॥ ५१ ॥
मुंडित डह्ढी मुच्छ करि रु डारे कारा[8]घर ॥
परयो पयन सगताउत स्यामपुरेस जोरि कर ॥
सु सुनि रान अरिसिंह सचिव पठयो निज बुंदिय ॥
कन्हाउतन छुरान काज उपाय सन तिन किय ॥ ५२ ॥
सुनि नृप तिनकी अरज चोर कारा[9] वाहिर किय ॥
अद्धामित सबसोंहि दम्म[10] इनके अलुब्ध[11] लिय ॥
यह रानां अरिसिंह कथित करि दुष्कर कीनी ॥
नतो नृपहिं नहिं लोभ धर्म रीतिहि चित चीनी ॥ ५३ ॥
झंझोली१ बीखरनि२ नैर वंक्करपुरा[12]३दि सब ॥
सद्दन लग्गे संभरेस आदेस नमू तव ॥
इम संभर उम्मेद मुलक तसकर सब मेटिय ॥
कलिजुग बिच नय[13] धर्म कर्म पांडव[14] नृप ज्यों किय ॥ ५४ ॥
दोहा—अमरगढप १ वक्करपुरप२, कन्हाउत इन्ह आदि ॥
सगताउत पुरबीखरनि१, झंझोला२ऽऽदि प्रमादि ॥ ५५ ॥
तदनंतर खइराड़के, मैनैन[15] किय अति मान ॥
लुट्टन बुंदिय देस लगि, थिर उज्जर[16] किय थान ॥ ५६ ॥

---

१ बैर करके २ चोरपन ३ बुन्दी के देश में ४ धन ॥ ५० ॥ ५ अपने चोरों को ६ ग्राम ७ अपराधी ॥ ५१ ॥ ८ कैद में ॥५२॥ ९ कैद से १० दंड के रुपये ११ लोभ रहित ॥ ५३ ॥ १२ पाकरां १३ नीति १४ युधिष्ठिर के समान ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ १५ खैराड़ प्रदेश के मीणों ने १६ ऊजड़ (शून्य) ॥ ५६ ॥ ५७ ॥

हिंडोलीपुर आनि किय, मिलि मैंनन अति रारि ॥
चैनसिंह हम्मीरहर, नत्थू सुत लिय मारि ॥ ५७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे निजदुर्गरणस्तम्भगतकूर्मराजमाधवसिंहहड्डेन्द्राऽऽह्वयनप्रीतिजिगमिषूम्मेदसिंहविपद्मित्रसम्मिलनकौर्मस्मृगयाऽदिखेलद्रावराणिनजमहिषीझल्लीराज्ञीमृत्युश्रवणश्रुतागच्छद्दक्षिणसैन्यमाधवसिंहजयपुरप्रविशनबुन्दीन्द्रबुन्द्यागमनसन्धपाकेदारराव १ माहजि २ मालववशीकरणविचारितयोधपुरेशविजयसिंहविजिताकरणाऽजमेरद्रङ्गाऽऽगमनसहायार्थाऽऽहूतहड्डेन्द्रगमनधन्वेशसन्धपादण्डद्रम्माऽष्टलक्ष८०००००निवेदनजयपुरजनपदाऽऽगतमाहजिमोजादनगरलुण्टनरावराणमरुपतिपितृव्यकेडरपुरेशराठोड़रायसिंहसुतोदयकुमारीयोधपुरविवाहनकोटेशसचिवकायस्थाऽऽखयराममोजादपुराऽऽगमनश्रावितमरुपतिसहायकारणबुन्दीन्द्रदत्तप्रच्छन्नद्रव्यकायस्थमाहजिबुन्द्यानयनश्रुतैतत्सज्जीभूतबुन्दीन्द्रस्वपुराऽऽगमनसमागतकोटेशशत्रुशल्यसहितसन्धपेशहड्डेशसङ्ग्रामसुखाऽनुभवनकूर्मराजस्वसुभ

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायणके सप्तमराशिमें, उम्मेदसिंह के चरित्र में, अपने गढ रणस्थंभ में गये हुए कछवाहों के राजा माधवसिंह का हाडों के पति को बुलाना और प्रीति की इच्छावाले उम्मेदसिंह का आपदा के समय मित्र से मिलना १ कछवाहे का शिकार आदि खेलना और रावराजा का अपनी पाटवी राणी झाली का मरना सुनना २ दक्षिण की सेना का आना सुनकर माधवसिंह का जयपुर में प्रवेश करना और बुन्दी के पति का बुन्दी आना ३ सिन्धिया केदारराव, माहजी का मालवा देश को आधीन करना और जोधपुर के पति विजयसिंह को जीतना विचार कर अजमेर नगर में आना ४ सहाय के अर्थ बुलायेहुए हड्डेन्द्र का जाना और मारवाड़ के पति का सिंधिया को दंड के आठ लाख रुपये देना ५ जयपुर के देश में आयेहुए माहजी का मोजाद नगर को लूटना और रावराजा का मारवाड़ के पति के काका ईडरपुर के पति राठौड़ रायसिंह की पुत्री उदयकुमारी को जोधपुर में विवाहना ६ कोटा के पति के सचिव कायथ अखयराम का मोजादपुर में आना और मारवाड़ के पति की सहाय जाने का बुन्दीन्द्र का कारण सुनाकर छाने धन देकर कायथ का माहजी को बुन्दी लाना सुनकर सज्ज होकर बुन्दी के पति का अपने पुर में

द्वारकादाससाहिपुरेशोम्मेदसिंहस्वकनिष्ठसुतमालिमसिंहबुन्दीसहा
पार्थप्रेषणंकृतघ्नमरुपतिकिमप्यप्रेषणंयुध्यद्रावराड्जयपुरेशपुत्रपृथ्वी
सिंहोद्भवश्रवणंज्ञाततदुर्गदुर्गत्वमाहजिसमाहूतबुन्दीन्द्रसम्मिलननीता
ऽऽब्दिककरंपतत्प्रस्थानहड्डेन्द्रभोगिन्यौरसकुमारसरदारसिंहोद्भवनस
म्भरराजस्वभगिनीदीपकुमारीराठौड़राजविजयसिंहविवाहनसम्भर-
दीपसिंहस्वाऽग्रजराज्ञ्यनुजाभवानकुमारीयोधपुरोद्वहनंश्रीमन्तमाधव
रायमरणंतदनुजनारायणरावश्रीमन्तीभवनपितृव्यरघुनाथरावनि
ष्काशनतदिंगरेजशरणंभरतपुरेशजट्टजवाहरमल्लदिल्लीलुण्टनसी
मासमीपस्थराणासामन्तबुन्दीदेशविरोधनरावराट्तत्सर्वनिग्रहणंरा-
णाऽरिसिंहप्रार्थनामुक्तदुष्टस्वाधीनीकरणंमैणागणंबुन्दीदेशलुण्टन
हिंडोलीशहम्मीरवंशीहठुचैनसिंहमारणं त्रिपञ्चाशत्तमो ५३ मयूखः॥

आना ७ आयेहुए कोटा के पति सहित सिन्धया के पति और हाड़ों के पति का संग्राम के सुख को अनुभव करना ८ कछवाहों के राजा का अपने उमराव द्वारकादास और शाहपुरा के पति उम्मेदसिंह का अपने छोटे पुत्र मालमसिंह को बुन्दी की सहाय में भेजना और किये उपकार को भूलनेवाले मारवाड़ के पति का कुछ नहीं भेजना ८ उस युद्ध में रावराजा का जयपुर के पति के पुत्र पृथ्वीसिंह के जन्म को सुनना और गढ का नहीं मिलना जानकर माहजी का बुन्दी के पति को बुलाकर मिलना ९ सालाना खिराज लेकर उस का जाना और हड्डेन्द्र की छोटी राणी के उदर से कुमार सरदारसिंह का जन्म होना १० चहुवाणों के राजा का अपनी बहिन दीपकुमरि को राठौड़ों के राजा विजयसिंह को व्याहना और चहुवाण दीपसिंह का अपने बडे भाई की राणी की छोटी बहिन भवानकुमारी से जोधपुर में विवाह करना ११ श्रीमन्त माधवराव का मरना और उस के छोटे भाई नारायणराव का श्रीमन्त होना, काका रघुनाथराव को निकालना और उसका अंगरेजों की शरण लेना १२ भरतपुर के पति जाट जवाहरमल्ल का दिल्ली लूटना और सीमा के समीप रहनेवाले राणा के उमरावों का बुन्दी के देश में विरोध करना, रावराजा का उन सबको पकड़ना और राणा अरिसिंह की प्रार्थना से उन दुष्टों को छोड़कर स्वाधीन करना १३ मैणों के समूह का बुन्दी के देश को लूटना और हिंडोली के पति हम्मीरसिंह के वंशवाले चैनसिंह को मारने का तिरपनवां ५३ मयूख समाप्त हुआ ॥ ५३ ॥

॥ ५३ ॥ आदितः ॥३३४॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ रोला ॥

तब संभर नृप तमकि सेन मैंनन सिर सज्जिय ॥
वैरिन झारन बाढ गाढ[1]रव पणव गरज्जिय ॥
हरिणा निं[2]दकवि ग्राम लंघि घेरयो द्रुत ऊमर ॥
मैंने द्वैसत २०० मारि थान किन्नौं तरऊपर ॥ १ ॥
पुनि खेड़ा लिय घेरि दुष्ट तँहँ हनिय इक्कसत१०० ॥
वहुरि लुहारी बिंटि अडर लुट्टी रन उद्धत ॥
[3]सजव कुप्पि च्यारिसत ४०० मारि मैंनँ जय मंडिय ॥
[4]गँहोली पुनि ग्राम खुंदि खग्गन सब खंडिय ॥ २ ॥
दारिम रंग [5]दुकूल मत्थ धवपत्त[6] किलंगिय ॥
दुवर[7] गव्व्याँ कोदंड जुरत हुडू[8] कारि जंगिय ॥
वंसुरि भयदं[9] वजात पिट्ठि दुवर[10] धरत निखंगन ॥
डारत फोजन फारि मारि कट्टार [11]तुरंगन ॥ ३ ॥
इम मैंनँ रन करत हनिय द्वै सत२०० गह्वोलिय ॥
आयो बुंदिय बिजय मंडि वंदिय[12] जस बोलिय ॥
मैंननके सिर मैंनिनँ[13]के सिर दये करंडन[14] ॥
वधाई गवावत लायो पुरलग तिन रंडन[15] ॥ ४ ॥

और आदि से तीन सौ चौतीस मयूख ३३४ हुए ॥
१ पडे शब्द से ढोल बजा २ आप के कवि (सूर्यमल्ल) का ग्राम ॥ १ ॥ ३ शीघ्र ४गाहोली ॥ २ ॥ ५ दाड़िम के रंग के वस्त्र ६ मस्तक पर धोकड़ा वृक्ष के पत्तों की किलंगी ७ दो प्रत्यंचा के धनुष ८ मैणों के लड़ाई करने का सांकेतिक शब्द है ९ भयंकर १० भाथे ११ घोड़ों को कटारियों से मारकर ॥ ३ ॥ १२ भाटों की यश की बोली करवाकर उन मैणों के मस्तकों को १३ मैंणियों के मस्तकों पर१४टोकरों (छपलियों) में भरवाकर१५उनकी रांडों को बुंदी लाया॥४॥

करंडन१ नरंडन२ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
सक आकृति धृति समय१८२२ भयो यह रन *सरदागम॥
सेवन सब सीमार लगे रचि सनति समागम ॥
पाछि बरस१८२२के माघ मास द्वादसि१२मैचक जुत ॥
दीपसिंहकै भयो नाम सुरताणसिंह सुत ॥ ५ ॥
करि अग्गैं कोटेस कथित माहजि यह रन किय ॥
नाथाउत उद्योतसिंह तब अरिन मिलन किय ॥
रनकिय१ लनकिय२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
नगर पगाराँ छोरि स्वामि मन्नैं मरहट्ठन ॥
सत्रु होय किय समर लूटि लीनैं कछु रंट्ठन ॥ ६ ॥
याको काका बखतसिंह मन्न्यौं तब भूपति ॥
दयो पगाराँ ताहि मंडि सनमान महामति ॥
अब सु विकृति धृति१८२३ अब्द माँहिं उद्योत सु आयो ॥
नगर पगाराँ लैन भूप प्रति कथन कहायो ॥ ७ ॥
बुंदीपति तब कुप्पि सुभट पठये तिहिं मारन ॥
मारयो आनि बजार मध्य कहि तिन अघ कारन ॥
याहि बिकृति धृति१८२३ अब्द माँहिं हुलकर बपु छोरिय ॥
तब तस नाती मालराव इंदोर तखत लिय ॥ ८ ॥
सुनि यह टीका साज भूप पठयो तह हित घन ॥
दुव२ हय दुव२ सिरुपाव इक्क१ गज इक१ मनि भूखन ॥
संकृति धृति१८२४ मित साल मालरावहु हुलकर मृत ॥
तब ताको दायाद नाम तक्कू गद्दिय धृत ॥ ९ ॥
रुप्पय आतिकृति लक्ख२५,०००००दये श्रीमंत अरथद्रुत ॥

---

* शरद ऋतु के आने पर १ नम्रता सहित सुख से आना २ कृष्णपक्ष सहित ॥ ५ ॥ ३ राष्ट्रों (देशों) को ॥ ६ ॥ ७ ॥ ४ पाप करनेवाला ५ उसके पोते ॥ ८ ॥ ६ पुत्र ॥ ९ ॥

इम गद्दिय इंदोर लही तक्कुव सु मंत्र जुत ॥
रूपनगरपुर सुता भूप सामंतसिंह घर ॥
नाम किसोरकुमारि इत सु ब्याह्यो नृप सोदर ॥ १० ॥
संकृति धृति१८२४मित साक बिरचि उच्छव बहु दिन तक
ब्याह बहादुरसिंह कियउ यह दुलहि पितृव्यक ॥
याहि साल१८२४ बिच नृप सपत्न जननी कछु गद[3] लहि ॥
बंसबहाला पतिजा[4] बपु दिय छोरि उपाधि सहि ॥ ११ ॥
बुंदीपति मासुरि बिहीन बनि प्रेत करम किय ॥
द्विजन सु भोजन दान दै रु निगमोक्त[6] सद्धि लिय ॥
संकृति धृति मित याहि साल इत जट्ट जवाहर ॥
जैपुर ऊपर जोर दैन मंड्यो डारन डर ॥ १२ ॥
याको भ्रात सु अग्ग नाम नाहर कछु कारन ॥
आयो जैपुर सरन नारि निज बिपति निवारन ॥
याकै ही इक१ युवति रूप गुन अधिक अपूरब ॥
ताहि जवाहर जट्ट लैन तक्क्यो कामुक[10] जब ॥
इहिं तब जैपुर आय सरन कूरम पतिको लिय ॥
माधव[11] नगर निवाई को परगनाँ ताहि दिय ॥
नाहरसिंह बिताय काल कछु तत्थ गयो मरि ॥
तबहि जवाहर कहिय लैन ताकी वह सुंदरि ॥ १४ ॥
सो सुनि माधव ताहि भरतपुर लग्यो पठावन ॥
बुल्ली तब जट्टनिय उचित है नहिं मम जावन ॥
मोकौं वह गृह डारि कूर रक्खहि बनिता[12] कारि ॥

---

१ राजा का सगा भाई दीपसिंह ॥ १० ॥ २ दुलहन के काका ने ३ रोग ४ बांसवाड़ा के पति की पुत्री ॥ ११ ॥ ५ दाढी मूछों के बालों बिना (चौर) होकर ६ वेद का कहाहुआ ७ भय डालने को ॥ १२ ॥ ८ अपनी स्त्री की ९ यौवन वती स्त्री १० कामी ॥ १३ ॥ ११ माधवसिंह ने ॥१४॥ १२ स्त्री करके रक्खेगा

यातैं भेजहु नाँहिं सती जानहु हित अनुसारि ॥ १५ ॥
तबहि भरतपुर मंहि पत्र माधव पठवायो॥
याकौं आवन उहाँ इ[1]ष्ट नहिं नैंक सुहायो ॥
जट्ट जवाहरमल्ल सु सुनि पठयो प्रतिउत्तर ॥
मम बंधव म[2]हिलाहिं तुम सु चाहत रक्खन घर ॥ १५ ॥
यह सुनि जैपुर ईस मन्नि अ[3]भिसाप असह मति ॥
निकसाई वह नारि गई बिख खाय उचित गति॥
इहिं कारन अब अतुल बैर गहि जट्ट जवाहर ॥
जैपुर उप्पर जोर दैन सज्जे दल दुद्धर ॥ १७ ॥
विजयसिंह यह जानि ज[4]ट्ट जैपुर चढि आवन ॥
आयो पुष्कर अ[5]रहिं मिलन अरु मंत्र बनावन ॥
उदयपुर रु आमेर ज्यौंहिं बुंदिय मंडैंजिम ॥
[6]समता गिनि सतकार स्व[7]कर लिखि दल[8] पठयेइम ॥ १८॥
जट्ट जवाहरमल्ल अडर अति बल हो तुम जब ॥
लियउ आगरा१ छिन्नि दब्बि दिल्लिय प्रदेस२ सब ॥
अब हमसौं तुम आय मिलहु पुष्कर बिधाय [9]बल ॥
इक्क तखत बैठिहैं जेर करिहैं अरि मंडल ॥ १९ ॥
इम संकृति धृति १८२४ अब्द बंचि दल जट्ट जवाहर ॥
[10]ऊर्ज पुरिणमा१५ दिवस मिलन आयो द्रुत पुष्कर ॥
मरुपति ताके सिविर प्रथम पहुँच्यो लहि सासन ॥
सिर कर धरि समका[11]लि उभयर बैठ एकास[12]न ॥ २० ॥
चमर मोरछल छत्र लगे होवन दोउनर पर ॥
पुनि मरुपतिके सिविर जट्ट द[13]र्प्पित गय दुद्धर ॥

॥१५॥ १प्रिय २स्त्री को ॥१६॥ ३झूठा दोष ॥१७॥ ४जाट का ५शीघ्र ६बराबर का ७अपने हाथ से ८पत्र ॥१८॥ ९सेना रचकर ॥१९॥ १०कार्तिक की पूर्णिमा को ११ एक समय में दोनों माथे के हाथ लगाकर १२एक गद्दी पर बैठे ॥२०॥ १३घमंड से

*समताको सतकार कियउ [1]पूरब जिम मरुपति ॥
पलटि पग्घ रट्ठोर जट्ट हुव सुहृद कुसंगति ॥ २१ ॥
तदनु जोधपुर नाह पत्र पठये जयपत्तन ॥
मित्र याहि गिनि तुमहु मिलहु बैठहु इक आसन ॥
तब कूरमपति तमकि एह पठयो प्रतिउत्तर ॥
मित्र होय किम मुद्ध जट्ट जैपुरको किंकर ॥ २२ ॥
सेवन आत सदैव पिक्खि हमरे परवानाँ ॥
मम समताके मित्र रावराजा१ तुम२ रानाँ३ ॥
सु सुनि जट्ट दिय पत्र ओलि[3] जैपुर लिखि आडी ॥
दोयर परगना देहु हमहिं खोहरी१ पहाडीर ॥ २३ ॥
रचहु न तो अब रारि तुमहिं दंडन हम तक्कत ॥
सुनि पठयो निज सेन कुम्म अर्ककहिं रज ढक्कत ॥
तब माउंडा खेत मिले जट्ट रु जैपुर दल ॥
फैलिय हेतिनं फाग राग सिंधुन कोलाहल ॥ २४ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे बुन्दीन्द्रमैणाविजयप्रस्थानतद्ग्रामोमर १ खेडा २ लुहारी ३ गड्डोल्या ४ऽऽदिविध्वंसनहतनवशत ९०० मैणागणपुनःस्वपुराऽऽविशनसोदरदीपसिंहकुमारसुरताणसिंहोद्भवनसंभरराजचालक्यनाथाउत्तोद्योतसिंहमारणातत्पितृव्यकबखतसिंहपगारपुराऽर्पणा

*बराबर का[1]पहिले के माफिक१मित्र२खोटी संगति से अर्थात् क्षत्रियों से जाटों के मित्र होने की संगति नहीं है ॥२१॥२२॥३आडी ओळी (पत्रकी आयुर्दा) में ॥२३॥ ४सूर्य को ५ सेना ६ शस्त्रों का फाग ७सिंधवी (बडा) राग का ॥२४॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणके सप्तमराशिमें, उम्मेदसिंह के चरित्र में बुन्दी के पति का मैनों को विजय करने को गमन करके उन के गाम ऊमर, खेड़ा, लुहारी, गाडोली, आदि का नाश करना और नो सौ मैनों के को मारकर अपने पुर में प्रवेश करना १ सगे भाई दीपसिंह के कुमर सुरताण सिंह का जन्म होना और चहुवाण राजा का सोलंखी नाथावत उद्योतसिंह

हुलकरमल्लाररावदेहत्यजननप्तृमालरावतदधिकारप्रापणबुन्दीन्द्र-टीकोपाख्यतत्सत्कारप्रेषणमालरावमरणाऽनंतरदत्ताऽतिकृतिलक्त २५००००० द्रम्मतद्दायादहुलकरतक्कूहौलकरपुरेन्दोरगादिकोपविशन बुन्दीन्द्राऽनुजदीपसिंहरूपनगराऽधिराजराठोड़सामन्तसिंहसुताकिशोरकुमारीविवाहनरावराट्सपत्नजननीमरणतत्प्रेतक्रियाऽनुष्ठानपूर्वोदन्तविवृद्धवैरजट्टेन्द्रजवाहरमल्लजयपुरजिगीषुभवनपुष्करक्षेत्राऽऽगत मरुपतिविजयसिंह १ समाहूतजवाहरमल्लसजातीयनृपसमससत्कारसम्मिलनकृतजट्टातिरस्कारजयपुरसैन्य १ जट्टसैन्य २ माउण्डाग्रामरङ्गसम्मिलनं चतुःपञ्चाशत्तमो ५४ मयूखः ॥५४॥ आदितः३३५॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

कटक ईस कछवाहको, धूलापुर पै दलेल१ ॥
लघु सुत लछमन२ जुत लग्यो, खंडन मंडव खेल ॥ १ ॥
दल बखसी गुरुसाहि१ द्रुत, सचिव बीर हरसाहि २ ॥

का मारना २ उस के काका बखतसिंह को पगारां पुर देना, हुलकर मल्लारराव का मरना और पोते मालराव का उस का अधिकार पाना ३ बुन्दीन्द्रका उस को टीका नामक सत्कार भेजना और मालरावके मरे पीछे पच्चीस लाख रुपये देकर उसके पुत्र तक्कू का हुलकर के पुर इंदोर कीगद्दी पर बैठना४ बुन्दी के पति के छोटे भाई दीपसिंह का रूपनगर के पति राठोड़ सामन्तसिंह की पुत्री किशोरकुमारी से विवाह करना और रावराजा की सौतेली माता का मरना, उस की विधि पूर्वक क्रिया करना४ पहिले वृत्तान्त के कारण वैर बंध कर जाटों के पति जवाहरमल्ल का जयपुर को जीतने की इच्छावाला होना और पुष्कर क्षेत्र में आये हुए मारवाड़ के पति विजयसिंह का जवाहरमल्ल को बुलाकर अपनी जाति के राजाओं के बराबर सत्कार करके मिलना ६ जाट का तिरस्कार करके जयपुर की और जाट की सेनाओं का माउंडा ग्राम के युद्ध क्षेत्र में मिलने का चौपनवां मयूख समाप्त हुआ ॥५४॥ और आदि से तीन सौ पैंतीस ३३५ मयूख हुए ॥

१ सेनापति २ पति ॥ १ ॥ ३ फौजबख्शी

एहु खरे खत्री उभयर, चंडे[1] करन रन चाहि ॥ २ ॥
इततैं जट्टहु उप्परयो, तोपन बिरचत ताप ॥
भट फिरंगि डारत भयो, समरु कापिल[2] साप ॥ ३ ॥

॥ भ्रमरावली ॥

करकि करकि कोप तरकि तरकि तोप,
लरकि[3] लरकि लोप करनलगी ॥
करखिं[4] करखि कत्ति परखि[5] परखि पत्ति,
हरखि हरखि सत्ति[6] हरन लगी ॥
समर[7] लखन आप अमर[8] गगन छाप,
भ्रमर सुमन[9] भाप निकर[10] जुरे ॥
सरजि[11] सरजि सोक लरजि[12] लरजि लोक,
बरजि बरजि ओक[13] दिगन दुरे ॥ ४ ॥
बढिग त्वरित[14] वीर पढिग दरित[15] पीर,
चढिग सरित[16] सीर रुहिर[17] रची ॥
सिलत उरन सेल मिलत फुरन[18] मेल,
ठिलत खुरन ठेल मलप मची ॥
पिलत धुरन[19] पेल भिलत छुरन[20] भेल,
खिलत सुरन[21] खेल लखन लगे ॥

१भयंकर युद्ध करने की चाह से ॥२॥ २कापिलदेव का श्राप ॥ ३ ॥ कोप सहित गर्जना कर करके तोपें चल चल कर ३गिरा गिराकरलोप करनेलगीं ४तलवारें खैंच खैंच कर ५ पैदलों की परीक्षा कर करके प्रसन्न हो हो कर ६ शक्ति हरने लगी ८ देवता ७ युद्ध देखने को आ आ कर और आकाश में छा छा कर ९ पुष्पों पर भ्रमरों की भांति उनके १०समूह जुड़गये १२ लोग धूज धूज कर ११ शोक उत्पन्न कर करके १३ घर छोड़ छोड़ कर दिशाओं में घुस गये ॥४॥ वीर १४शीघ्र बढे और १५डरनेवाले पीड़ा के वचन बोले।१६चढीहुई नदी के समान १७रुधिरकी धारा चली भाले छातियोंको फोड़ते हैं१८घोड़ोंके फुरने मिलते हैं और खुरों की टक्करों से हटाते हुए मलंग लेते हैं १९आगे (धुर) वालों की मदत पर भेजते हैं और२०छुरियों से भिलजाते हैं सो प्रसन्न होकर २१देवता

हरखि हरखि हूर परखि परखि पूर[1],
करखि करखि सूर रखन लगे ॥ ५ ॥
गहत गँवरि[2] गैल बहत गिरिस[3] बैल,
सहत भरन[4] सैल कहत फटैं ॥
चहत भटन चैल[5] दहत मनु कि तैल,
महत[6] फवत फैल अगनि अटैं[7] ॥
त्रिउकसि[8] त्रिउकसि तेग विकसिं[9] विकसि वेग,
निकसि निकसि नेगं[10] असुन लहैं ॥
रपटि रपटि रौंजि[11] झपटि झपटि आजि[12],
दपटि दपटि बाजि[13] गजन गहैं ॥ ६ ॥
सँरत[14] जहर सूक टरत अँहर[15] टूक,
करत कँहर[16] कूक ककुपँ[17] करी ॥
खिसकि खिसकि हत्थ चिसकि चिसकि मत्थ,
सिसकि सिसकि सत्थ दुरत दँरी[18]॥
छलत विसिखँ[19] छाय घलत त्रिसिखँ[20] घाय,

खल देखते हैं "देवता शब्द स्त्री लिंग है परंतु लोक रूढि से पुल्लिंग लिखाजाता है" अप्सराएं प्रसन्न हो हो कर १ पूर्ण परीक्षा कर करके वीरों को खैंच खैंच कर रखनेलगीं ॥ ५ ॥ २ पार्वती को साथ में लेकर ३ महादेव बैल पर चढते हैं जो वीरों के ४ भाले सहते हैं और अपना फटना कहते हैं फिर मरे हुए वीरों के ५ वस्त्र तैल के समान जलते हैं और बडे फैलाव से ६ शोभित होकर ७ अग्नि फिरती है ८ तीन तीन तलवारें कस कर ९ प्रफुल्लित हो हो कर और १० भाले शीघ्र पार निकल निकल कर प्राण लेते हैं वीरों की ११ पंक्तियां दौड़ दौड़ कर १२ युद्ध में शीघ्र शीघ्र १३ घोड़े दौड़ा दौड़ा कर हाथियों को पकड़ते हैं ॥ ६ ॥ १४ शेषनाग चलायमान होकर टलता है और १५ अधरों (ओठों) को काटता है १६ इस जुल्म से १७ दिशाओं के हाथी कूक मारते हैं. हाथ फिसल फिसल कर, माथे दूख दूख कर साथवाले कई सिसक सिसक कर १८ गुफाओं में घुसते हैं कई १९ बाणों को खाकर पडते हैं और २० त्रिशूलों का घाव

कलत निसिख काय भटनकिते ॥
पकरि पकरि पाय जकरि जकरि काय,
नकरि नकरि हाय जपत जिते ॥ ७ ॥
मचकि मचकि मुंड लचकि लचकि सुंड,
मचकि मचकि रुंड उछटि कटैं ॥
भरकि भरकि भेट खरकि खरकि खेटैं,
धरकि धरकि पेट फलक फटैं ॥
खटकि खटकि खग्गं चटकि चटकि अग्गं,
लटकि लटकि झग्ग मुखन झरैं ॥
अटकि अटकि इद्ध गटकि गटकि गिद्ध,
छटकि छटकि बिद्धं बिसिखं धरैं ॥ ८ ॥
भटकि भटकि घुम्मि झटकि झटकि झुम्मि,
पटकि पटकि भुम्मि घुंटन घसैं ॥
बटकि बटकि गुंडं मटकि मटकि तुंडं,
रटकि रटकि झुंडं हुलसि हसैं ॥
बिरंचि बिरचि बान मिरचि मिरचि मान,

घालते हैं जो १ तीखे त्रिशूल कई वीरों के शरीरों में घुसते हैं तहां कई वीर औरों के पैरों को पकड़ पकड़ कर और २ शरीरों को बांध बांध कर हाय ३नहीं करके बोलते हैं ॥ ७ ॥ मस्तकों की टक्कर लगा लगा कर, हाथियों की शुंडों को नमा नमा कर रुंड मचक मचक उछलते फिरते हैं मिलने से चमक चमक ४ ढालों पर कड़के (शब्द) होकर पेट में धकधकी लगकर ५ ढालें वा आकाश फटता है ६तरवारों के खटके हो हो कर और ७अग्रभागों के टुकड़े हो हो कर८झाग लटक लटक कर मुखों से झड़ते हैं गिद्ध ९बहुत अटक अटक कर खाते हैं१०बंधेहुए कई गिर गिर कर भी११बाणों को धारण करते हैं ॥८॥ घूमते हुए वृथा फिर फिर कर कई बहुतों को खेंच खेंच कर लगते हैं और एक दूसरेको भूमि पर पटक पटक कर१२घुटनों से रगड़ते हैं१३तरवार आदि के म्यान टूट टूट कर १४मुख को मटका मटका कट दौड़ दौड़ कर वा टक्करें लगा लगा कर प्रसन्न हो हो कर वीरों के कई१५समूह हँसते हैं१६बाणों को रचरच(चला चला) कर मिरची मिरची के १७ समान कानों के टुकड़े टुकड़े गिराने लगे थे।

किरचि किरचि कान किरन[1] लगे ॥
ललकि ललकि लाल[2] झलकि झलकि हाल[3],
खलकि खलकि खाल[4] फिरन लगे ॥ ९ ॥
झनकि झनकि झौंर[5] सनकि सुरभि सौंर[6],
भनकि गुटिन[7] भौंर भ्रमन लगे ॥
तरस खंयद[8] खेत परस रेयद[9] प्रेत,
दरस भंयद[10] देत दमन लगे ॥

॥

॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

जयपुर दल अरु जट्ट दल, रचि कछु तोपन रारि ॥
ऐंचि[11] मिले पुनि असिन इम, झुकि झुकि धारन झारि ॥११॥

॥ प्रकृतिः ॥

सचिव सुरूप खत्री हरसाहि१, अरु बखसी गुरुसाहि९[12] उमाहि ॥
मिलि अधिबीर[13] जट्ट बहुमारि, तूटि गिरे झारत तरवारि ॥१२॥

॥ षट्पात् ॥

धूला[14]पुरप दलेल३ सुपहु कूरम सेनानी[15] ॥
आति जव[16] हयन उठाय मिल्यो जट्टन बिच मानी ॥
सिविका[17] दंड समान करे बहु अरि नारिन कर ॥

१ गिरनेलगे और २ क्रोध में लाल हुए ललकारें कर करके ३ वर्तमान में (युद्ध में) बढ बढ कर ४ नाले बहा बहा कर वा बह बह कर कई वीर फिरने लगे ॥ ९ ॥ ५ गुच्छों पर झनकार कर करके ६ वसंत ऋतु में भ्रमरों के उडने का शब्द होवे तैसे ७ गोली रूपी भ्रमर भ्रमने लगे और युद्ध क्षेत्र में ८ नाश को देनेवाले प्रेत स्पर्श करने से धुजा धुजा कर ९ वेग के साथ १० भयङ्कर दर्शन देकर दंड देनेलगे ॥ १० ॥ ११ तलवारों को खैंचकर ॥ ११ ॥ १२ उत्साह करके १३ वीरों के पति ॥ १२ ॥ १४ धूला पुर का पति दलेलसिंह १५ सेनापति १६ वेग से १७ पालखी के डांडे के समान (चूड़ियों रहित)

सिर ताको लहि सुभग हुलासि किन्नौं भूखन हर[1] ॥
संक्रमि निसंक तोपन सम्मुख कातर[2] वैंच[3] रंच न कढ्यो ॥
भल भल दलेल जयनैर भट रन बिच बनि तिल तिल रढ्यो ॥

॥ दोहा ॥

लछमन[4] याको पुत्र लघु, राजाउत रचि रीस ॥
अधिक उथप्पिय अरिन असु, सिवहिं समप्पिय सीस ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

साँवलदास बंसि सेखाउत, नाम गुमान[5] बंदि ब्रिरुदन[4] थुत ॥
सो बढि नगर पचाहर स्वामी, निडर लरयो मस्तक बिनु नामी ॥
सीकरपति सिवको कनिष्ठ सुत, जुरयो तिनहिं बुधसिंह[6] हरख उत ॥
उर[5] दुंदुभि करि बहु अरि नारिन, तून गिनि वपु लग्गो तरवारिन ॥
सेखाउत झुंझनु पत्तन पति, नवलसिंह[7] भज्यो दिखात नति ॥
सेखाउत सिवदाससिंह[8] पुनि, भानुंती पति परयो खग्ग धुनि ॥
सेखाउत मुंडरा गाम ईन, रघुनाथ[9] हु तुट्टयो तरवारिन ॥
इंटावा पति तिम नाथाउत, नाहरसिंह[10] परयो रन राउत ॥१८॥
महासिंह[11] कलमंडा नायक, सुरतानोत परयो घन घायक ॥
जयपुरके इत्यादि सुभट बहु, परे बिहाय देह संगर पहु[11] ॥ १९ ॥
खग्गन अमित जट्ट भट खाये, भीरु बचे तिन्ह मारि भजाये ॥
छिज्जत कटक जट्ट पय छुट्टे, तेगन[12] पिक्खि सिपाहन तुट्टे॥ २० ॥
समरू[13] रहयो फिरंगी सम्मुह, तोप तड़ित[14] झारत अरि भूरुह[15] ॥

१शिव ने प्रसन्न होकर २चलकर ३कायर वचन ॥१३॥१४॥ ४ भाटों के बिरुदों स्तुतियों योग्य ॥१५॥५शिवसिंह का ६ज्ञातियों रूपी नगारे ७शरीर को ॥१६॥ नम्रता दिखाकर ॥ १७ ॥ ९ पति ॥ १८ ॥ १० शत्रुओं को मारनेवाला ११ के प्रभु ॥ १९ ॥ १२ तरवारों से सिपाहों को टूटे हुए देखकर जाट ॥२०॥१३समरू को सामान्य रीति से फिरंगी लिखा है नहीं तो यह फरासीस था १४ तोप रूपी बिजुली से १५ शत्रुओं रूपी वृक्षों को गिराकर

लन कूरम कटक गिरायो, प्रभुहिं भरतपत्तन पहुँचायो ॥२१॥

॥ षट्पात् ॥

तखत१ छत्र२ अरु तोप३ कोस४ लुट्टे कछवाहन ॥
भरतनेर गय भज्जि जट्ट मरवाय सिपाहन ॥
जित्ते कूरम जोध नाग जट्टन गिनि नाहर ॥
समरू रहे न जु संग जाय पक्करैहिं जवाहर ॥
संक्रांति भुजंग ससि १८२४ मान सक हेमंतक यह जंगहुव
जयनेर विजय जट्टन भजन भई बिदित आवाज भुव॥२२॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७राशावुम्मे-दसिंहचरित्रे जयपुरसैन्य १ जट्टजवाहरमल्ल २माउडाभामालाऽभि-सम्पाताऽनुष्ठानमाधवसिंहसेनानीसपुत्रदलेल १ सचिवखत्रिहरसा-हि २ गुरुसाहि ३ सुभटसेखाउतगुमानसिंह ४ बुधसिंहा ५ऽऽदि-मरणजट्टेन्द्रपलायनहतश्रीसामन्ताफिरङ्गिसमरूसमायोधनकूर्म्मेशज-विजयवर्द्धनच्छत्रकोशाऽऽदिजट्टवैभवलुण्टनं पञ्चपञ्चाशत्तमो५५ मयूखः ॥ ५५ ॥ आदितः॥३३६ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा

१कछवाहे की सेना को गिराकर अपने स्वामी को भरतपुर पुगाया॥ २१ ॥

१ खजाना ३ भरतपुर ४ जाट को हाथी जानकर, सिंह रूपी कछवाहे लड़े ५ हेमन्त ऋतु में ॥ २२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह के चरित्र में जयपुर की सेना और जाट जवाहरमल्ल का माउंडा के खेत में युद्ध करना१ माधवसिंह के सेनापति पुत्र सहित दलेलसिंह, सचिव खत्री हरसाहि और गुरुसाहि, सुभट सेखावत गुमानसिंह, बुधसिंह आदि का मरना २ जाटों के पति का हतश्री होकर भागना फिरंगी समरू का युद्ध करना ३ कछवाहे राजा का विजई होना और छत्र, खजाना आदि जाट के वैभव को लूटने का पचपनवां मयूख समाप्त हुआ॥५५॥ और आदि से तीन सौ छत्तीस ३३६ मयूख हुए॥

इहिं रन दैन सहाय इत, बडो तनय बुंदीस ॥
पठयो जैपुर *पुब्बही, मारन जट्ट महीस ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

राजकुमर रनमाँहिं नाँहिं माधव जावन दिय ॥
जात भई पुनि जानि काल अवसर उच्छव किय ॥
[2]नाहरगढ आमैर आदि निज दुर्ग दिखाये ॥
नाना सहल सिकार बिरचि अति लाड बढाये ॥
पुनि माघ बिसद[3] पंचमि५ दिवस सहि६०गजन आरुहि[4] सँभट[5]
बुंदीस कुमर जुत फाग बिधि मंडिय डारि गुलाल थट ॥२॥
कूरम नृप पुनि कहिय बुल्लि बुंदीस पुरोहित ॥
राजकुमारहिं रक्खि चहत ब्याहन मेरो चित ॥
अंक[6] झलाय अधीस सुता लैंलगन दिखावहिं ॥
चानि हम स्वसुर बिबाहि चतुर कुमरहिं पहुँचावहिं ॥
द्विज दयाराम सुनि किय अरज है अतुलित भवदीय हित ॥
पै इम न होय उपयर्म प्रथम बुंदिप सैन[9] ब्याहन उचित ॥३॥

॥ दोहा ॥

रहि तदनंतर सिसिर ऋतु, फग्गुन खेलत फाग ॥
कूरमपति संभर कुमर, अति मंडिय अनुंराग[10] ॥ ४ ॥
वंक्ति[11] मधु[12] मास बसंत बिच, बहुबिध हरख बिधाय[13] ॥
कुमरहिं लाड अनेक करि, रक्खयो कूरम राय ॥ ५ ॥
अतिकृति धृति१८२५ हायन[14] लगत, पुरिग्राम१५चैत्रिकैं[15] पाय॥

---

* पहिले ही ॥ १ ॥ १ समय "यहां समयवाची दो शब्द वीप्सा अर्थ में है. अर्थात् समय समय पर वा बहुत बेर उत्सव किया है" २जयपुर के गढ का नाम है ३ सुदि ४ चढकर ५ उमरावों सहित ॥ २ ॥ ६ गोद लेकर ७ आप का स्नेह ८ पहला विवाह ९ से ॥ ३ ॥ १० प्रीति ॥ ४ ॥ ११ पुनि १२ चैत्र १३ करके ॥ ५ ॥ १४ वर्ष १५ चैत्र मास की

कूरमपति लहि राग कछु, *बिग्रह दिन्न बिहाय ॥ ६ ॥
ताको सुत जेठो तबहि, पित्थल बैठो पट्ट ॥
अजितसिंह हित सिक्ख अब, दिन्नौं तिहिं बिधि नट्ट ॥ ७ ॥
इक१ नग भूखन द्विरद इक्क, दुव२ हय दुव२ सिरुपाव ॥
करि इम नजरि कुमारकी, भन्यौं गिनहु हित भाव ॥ ८ ॥

॥ षट्पात् ॥

अजितसिंह बुंदीसकुमर इम चलिय सिक्खकरि ॥
संगानैर सिकार खिल्हि हंकिय रंहस धरि ॥
रहिय चहुसुवँ रत्ति बहुरि दरकुंच बिरचि द्रुत ॥
बुंदी आयउ बीर समर पंडित भट संजुत ॥
परि जनकें पयन मंडिय प्रनति कुसल पुच्छि आसिख कहिय
अभिमन्न्यु लखत हरिभाम इम गुरु प्रमोद भूपहु गहिय ९

॥ दोहा ॥

तदनु कुमर उपयँम उचित, लखि नृप लगन लखाय ॥
पठयो व्याहन कृष्णगढ, बहुल बरात बनाय ॥ १० ॥
अतिकृति धृति१८२५ सक आगमन, सद्द्यो लगन सुढार॥
तीज३ राध अवदात तिथि, उदित बार अंगारं ॥ ११ ॥
सुपहु बहादुरसिंहकी, कन्न्या सुज्जकुँमारि ॥
अजितसिंह बुंदीस सुत, नँवल बिवाहिय नारि ॥ १२ ॥

॥ षट्पात् ॥

दंपति नल१ दमयंति२ पुंत्र१ पाटलि२ नितांत प्रिय ॥

*शरीर छोड़ दिया ॥ ६ ॥ ७ ॥ १कहा ॥ ८ ॥ २ वेग (शीघ्रता) से ३ चाटसू में रात को रहा ४ पिता के पैरों में पड़कर ५ श्रीकृष्ण के बहिनोई (अर्जुन) की भांति ॥ ९ ॥ ६ जिस पीछे ७ विवाह के उचित ८ बहुत ॥ १० ॥ ९वैशाख सुदि १० मंगलवार ॥ ११ ॥ ११सूर्यकुमारी १२ नवीन ॥ १२ ॥ १३ जोड़ा (पति और स्त्री) १४ जैसे पुत्र नामक राजा १५ पाटली नामक रानी १६ निरन्तर

मनहु सची[1]२ मघवान१ कन्ह[2]१रुकमिनि२ मिलाप किय ॥
बासवदत्ता२ बच्छराज[3]१ गिरिजा२ गंगाधर[4]१॥
अवनिसुता[5]२ रघुइंद[6]१दुल्लहि संज्ञा२ रु दिवाकर[7]१ ॥
रोहिनि२ सुधागु[8]१पंचेषु[9]१रति१पिलिप्पिजा[10]२बैकुंठपति[11]१ ॥
रट्ठोरि२ हड्ड२ रमनिय[12] रमन[13] इम मंडिय अनुराग[14] अति ॥१३॥

॥ दोहा ॥

आत भुजिष्या[15] जठर भव, स्वीय नाम संग्राम ॥
सोहु सुता सिरदारकी, व्याह्यो संगहि बाम ॥ १४ ॥
अभयकुमरि अभिधान[16] यह, जननि भुजिष्या जात ॥
इम बिबाहि आये उभय२, बुंदिय बिदित बरात ॥ १५ ॥

॥ षट्पात् ॥

याहि१८२५ बरस इत सुक्र[17] मास मरुपति जेठो सुत ॥
फतेसिंह अभिधान गयो व्याहन कोटा हुत ॥
महाराव तनया सु रान जगपति तनयांजा[18] ॥
हड्डी दुल्लहनि हत्थ रुचिर गहि दुल्लह[19]राजा ॥
आयो सु तदनु बुंदिय नगर नृप रक्खिय अति लाड करि॥
बासर बिताय पंद्रह१५प्रमित बिदा करिय हित अमित धरि१६
याहि बरस१८२५ आसाढ बिसंद[20] अष्टमि८ रविवासर[21] ॥
सुपहु भुजिष्या सूनु[22] नाम सिवसिंह बीरबर ॥

---

१ इन्द्र और इन्द्राणी २श्रीकृष्ण और रुक्मिणी ३ राजा वत्सराज और उसकी राणी वासवदत्ता ४ शिव और पार्वती ५ सीता और ६ रामचन्द्र ७ सूर्य और सूर्य की स्त्री संज्ञा ८ चन्द्रमा और रोहिणी ९ पांच बाणोंवाला (कामदेव) और रति ११ श्रीविष्णु भगवान् और १० लक्ष्मी का मिलाप हुआ तैसे राठोड़ी और हाडा १२दुलहन १३ दुलहे की १४ प्रीति रची ॥ १३ ॥ १५ पासवान के उदर से जन्म पानेवाला ॥ १४ ॥ १६ नाम ॥ १५ ॥ १७ ज्येष्ठ मास में १८ राणा जगतसिंह की पुत्री की पुत्री १९ बींद राजा ॥ १६ ॥ २० शुक्लपक्ष की २१ आदित्यवार २२ राजा की पासवान का पुत्र

मरुपति विजय खवासि सुता आत्हय पद्मावति ॥
जाय नगर जोधपुर परनि आयो जिम रतिपति ॥
मेवार मुलक इत दंद मचिलैन दुरित फल समय लहि ॥
अरिसिंह रान सँन भट अखिल फुट्टे कछुक फरेब कहि १७

॥ दोहा ॥

उद्धत गिनि अरिसिंहकों, मिलि सुभटन किय मंत्र ॥
कानूकौ इक[1] आनि सिसु, सो किय रान स्वतंत्र ॥
रानी झल्लियके उदर, राजसिंह सन जात ॥
रतनसिंह अभिधान यह, किलों इम बिख्यात ॥ १९ ॥
झल्ला भट जसवंत[1] निज, गोघुंदा पुर नाह ॥
तनया[9] ब्याहिय अग्ग तस, राजसिंह हित राह ॥ २० ॥
सुत ताको यह थप्पि सिसु, रतनसिंह रचि नाम ॥
मातामह[10] जसवंत[1] हुव, करन मूढ अघ[11] काम ॥ २१ ॥

॥ षट्पात् ॥

गोघुंदापति झल्ल मिल्यो जसवंत[1] मंद[12]मति ॥
सगताउतन[13] समेत पाप मुहुकमर भिंडर पति ॥
देवगढप जसवंत[3] सूनु[14] राघव[15] निज संजुत ॥

1 नाम 2 कामदेव 3 उपद्रव 4 पाप का फल 5 राणा अरिसिंह से 6 सब उमराव ॥ १७ ॥ १८ ॥ 7 राणा राजसिंह से हुआ 8 (*) नाम ॥ १९ ॥ 9 पुत्री ॥२०॥ 10 नाना 11 पाप का कार्य ॥ २१ ॥ 12 मूर्ख 13 सगतावतों सहित 14 पुत्र 15 राघवदेव सहित

(*)मेवाड़ के इतिहास वीरविनोद में लिखा है कि राणा राजसिंह का देहान्त हुआ तब राणी झाली को गर्भ था परन्तु अरिसिंह के भय से उसने गर्भ होने से नाहीं करदी, जिसपीछे रत्नसिंह का जन्म हुआ तब उसको गुप्त रखकर रत्नसिंह का नाना गोघूंदे का राजा जसवंतसिंह गोघूंदे लेगया और मेवाड़ के कई उमराव सरदार उन में मिलगये, यहां तक उन सर्दारोंका कोई अधर्म नहीं था परन्तु वह रत्नसिंह बालपन में ही मरगया तब उन सरदारों ने अरिसिंह की क्रूरता के कारण किसीके बालक को लाकर रत्नसिंह के नाम से रखदिया और रत्नसिंह का मरना प्रसिद्ध नहीं किया यह मेवाड़ के उन सरदारों का अधर्म हुआ'

फतैसिंह चहुवान४ दंग कुट्ठारं ईस हुत ॥
वेघम पुरेस भट मेघ५ वलि अग्रेसर ए पंच५ हुव ॥
वय बाल जाय किन्नौं अधिप धरि गढ कुंभिलमेरु ध्रुव २२

॥ दोहा ॥

देवपुरा हो तँहँ वनिक, किल्लादार वसंत१ ॥
सोहु मिल्यो सिसु माँहिं सठ, हानि धरम करि हंत ॥२३॥
समरसिंह राउल नृपति, दिल्लिय जाय उदग्ग ॥
भँगिनी पृथ्विपराजकी, पृथा विवाह्यो अग्ग ॥ २४ ॥
तव ताके दायज दिये, एहु वनिक चहुवान ॥
रहे हुकम अनुगत सदा, अब पलटे अघवान ॥ २५ ॥
जँहँ रानाँ अरिसिंहनैं, धरे दम्म कृति लक्ख२०००००० ॥
तेहु न दिन्नँ द्रोह तकि, प्रवल बंधि परपक्ख ॥ २६ ॥
रायसिंह१ झल्ला सुभट, नगर सादड़ी नाह ॥
देलवाड़ पति झल्ल पुनि, राघवदेव२ सचाह ॥ २७ ॥
पत्रन सनं ए दुव२ मिले, भट लहि कछु सिंसुं भेट ॥
उभय२ रहे अरिसिंहमैं, सलूमरि१ रु आमेट२ ॥ २८ ॥

॥ षट्पात् ॥

उदासीन भट ईतर रहे प्रकटन औनिमिख वसि ॥
कपटवाल लै संग सुभट उतके आयुध कसि ॥

---

१ कोठारिया नगर का पति ॥ २२ ॥ २ उस वैश्य की जाति के ३ खेद है ॥२३॥ ४ (✽)पृथ्वीराज की बहिन ॥ २४ ॥ ५ हुकम के आधीन ६ पापी ॥ २५ ॥ ७ शत्रु का पक्ष ॥ २६ ॥ ८ झाला ॥ २७ ॥ ९ पत्रों से १० रत्नसिंह से भेट (नजराना अर्थात् फौज खरच) ॥ २८ ॥ ११ अन्य उमराव तटस्थ रहे १२ समय के वश होकर अथवा निरंतर देखते रहकर

(✽) हम ऊपर लिख आये हैं कि रावल समरसिंह और पृथ्वीराज चौहान के समय में सौ वर्ष का अन्तर है इसकारण समरसिंह का पृथा से विवाह मानना सर्वथा मिथ्या है. यह मिथ्या कथा कपोलकल्पित नवीन रचित पृथ्वीराजरासा के कारण प्रसिद्ध हुई है॥

उदयनैर दिय आनि घेर तोपन कराल घन ॥
फैरन पर रचि फेर ज्वाल व्याकुल किय पुरजन ॥
तुट्टत निपान फुट्टत निलय गढन गाढ छुट्टत गहन ॥
प्राचीनवरहि पुत्रन मनहु तजिय बँन्हि बिटपन दहन ॥२९ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे जट्टरणाकूर्मविजयसहायार्थबुन्दीन्द्रपूर्वप्रेषितराजकुमाराऽजितसिंहजैपुरनिवसनयुयुत्सुतन्माधवसिंहाऽवरोधनजट्टजयाऽनन्तरनानाविलासविलसन द्विजदयारामकुमारवर्यश्वशुरीभवितुकामजायसिंहिसम्बोधनसमनन्तरतच्चैत्रपूर्णिमा१५ माधवसिंहमरणपृथ्वीसिंहजयपुरगद्दिकोपविशनविहितव्यवहारौम्मेदसिंहिबुन्द्यागमनराधाऽवदाततृतीया ३ सदासेविभ्रातृसंग्रामसिंहमहाराजकुमाराऽजितसिंहकृष्णगढविवाहनशुक्रमासलग्नमरुराजविजयसिंहकुमारफतैसिंहको

१अग्नि से २ उपजलाशय (खेली आदि निवान) ३ मकान ४प्रचेताओं ने मानों वृक्षों को जलाने को अग्नि छोडी (यह कथा भागवत में इस प्रकार है कि प्राचीनबर्हि के पुत्र प्रचेता तप करने को गये थे तब पीछे से नारद के उपदेश से प्राचीनबर्हि भी वन में तप करने को चलागया इस कारण देश में अराजकता होकर संपूर्ण पृथ्वी को वृक्षों ने ढक ली, तदनंतर प्रचेता जब तप करके पीछे आये तब अग्नि फैलाकर उन वृक्षों को जलाया)॥२९॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के उत्तरायण के सप्तमराशि में उम्मेदसिंह के चरित्र में, जाट के युद्ध में सहाय देने के अर्थ बुन्दी के पति के पहिले भेजे हुए राजकुमार अजितसिंह का जयपुर में रहना और उस युद्ध की इच्छावाले को माधवसिंह का रोकना१ जाट से विजय हुए पीछे अनेक प्रकार के विलास करना और ब्राह्मण दयाराम का कुमर के श्वशुर होने की कामनावाले जयसिंह के पुत्र (माधवसिंह) को समझाना२ उस सम्वत् के पूर्ण हुए पीछे चैत्र मास की पूर्णिमा को माधवसिंह का मरना और पृथ्वीसिंह का जयपुर की गद्दी पर बैठना ३ उचित व्यवहार के साथ उम्मेदसिंह के पुत्र का बुन्दी आना और वैशाख सुदि तीज को सदैव सेवा करनेवाले भाई संग्रामसिंह और महाराज कुमार अजितसिंह का कृष्णगढ विवाह करना ४ ज्येष्ठ मास के लग्न पर मारवाड़के राजा विजयसिंह के कुमर फतहसिंह का कोटा के पति की पुत्री से

टेशसुताविवाहनमौजिष्येयबुंदीन्द्रकुमारशिवसिंहमौजिष्येयधन्वेश
बखतसिंहसुतोद्वहनमेदपाटदेशस्वामिसामंतविग्रहवर्द्धनराणाराज
सिंहव्याजपुत्ररत्नसिंहकुम्भलमेरुदुर्गप्रकटभवनगोघुन्दशझल्लाजस
वंतसिंह १ स्वकुलसहितभिंडरेशसगताउत्तमुहुःकर्म्मसिंह२ सपुत्र
देवगढेशचुंडाउत्तजसवन्तसिंह३ कुठारेशचाहुवाणफतेसिंह ४ वेघ
मेशचुंडाउत्तमेघसिंह ५ दुर्गाऽध्यक्षवणिग्वसन्तरामा ६ ऽऽदिच्छद्म-
शिशुप्राकट्यसेवनसादड़ीशझल्लारायसिंह१ देलवाड़ेशझल्लाराघवदे
व२ प्रच्छन्नशिशुस्वामित्वस्वीकरणोदयपुरचमूवेष्टनतत्तोपरणाराणा
रिसिंहव्याकुलीभवनं षट्पञ्चाशत्तमो ५६ मयूखः ॥ ५६ ॥
आदितः ॥ ३३८ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

इत हुलकर तक्कू अडर, आयो हिंदुसथान ॥
आगम पख फग्गुन असित[1], सक अतिकृति धृति१८२५मान॥१॥
तक्कू पँहँ बुंदीस तब, सब टीका बिधि साजि ॥

विवाह करना और बुन्दी के पति के दासीसुत शिवसिंह का मारवाड़के पति बखतसिंह के पुत्र (विजयसिंह) की पासवान की पुत्री को विवाहना५ मेवाड़ देशमें स्वामी और उमरावोंमें विरोध बढना, राणा राजसिंहके झूठे पुत्र रत्नसिंह का कुंभलमेर के किले में प्रसिद्ध होना६ गोघुंदा के पति झाला जसवन्तसिंह, अपने कुल सहित भींडर पुर के पति सगतावत मुहुकमसिंह, पुत्र सहित देवगढ के पति चुंडावत जसवन्तसिंह, कोठारिया के पति चहुवाण फतहसिंह, वेघम के पति चुंडावत मेघसिंह, और किलेदार बनिया वसन्तराम आदि का छलवाले बालक को प्रकट करना ७ सेवा करने को सादड़ी के पति झाला रायसिंह, देलवाड़े के पति झाला राघवदेव का छिपेहुए बालक का स्वामीपन स्वीकार करना ८ सेना से उदयपुर को घेरना और उस तोप युद्ध से अरिसिंह के व्याकुल होने का छप्पनवां ५६ मयूख समाप्त हुआ ॥५६॥ और आदि से तीन सौ सैंतीस ३३७ मयूख हुए ॥

१ फागण वदि ॥ १ ॥

पठई कुल पहिरावनी, *बलि भूखन१ गज२ बाजि३॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

याहि बरस१८७५ बिच अजितसिंह बुन्दीस कुमारहु ॥
सुनि जनपद[1] निज सोर[2] बित्त लुट्टन सैनन बहु॥
चढ्यो कुपित चहुवान जनक[3] आदेस पाय जँहँ ॥
बारह १२ खेटन[4] बिंटि ताप किय अतुल उग्र तँहँ ॥
करि कैद[6] अखिल तसकर[5] कुमति कारा बिच डारिय कुमर
जय द्विरद[7] बंधि भुज[8] आलान भुज धन्न्य धन्न्य हुव सकल धर[9]३

॥ दोहा ॥

इंद्रकुमरि१ अरु व्रजकुमरि२, जननि भुजिष्या[10] जात॥
दुहिता[11] निज बुन्दीस हुव२, व्याहिय इत बिख्यात॥ ४ ॥
अजितसिंह मरु ईसको, सुत लघु हो जु किसोर ॥
सुभमति तास खवासि सुत, जैतसिंह१ रन जोर ॥ ५ ॥
बुल्लि राजगढसन बिदित, वाहि अतुल उच्छाह ॥
दुहिता[11] व्रजकुमरि सु दई, रचि बिबाह हित राह ॥ ६ ॥
नगर करोली नृप तनय, कुसलसिंह दासेय[12] ॥
सुत ताको जयसिंह२ सो, पुनि बुल्ल्यो प्रभु प्रेय[13] ॥ ७ ॥
इंद्रकुमरि ताकँहँ दई, अखिल सिद्धि अवधान[14] ॥
दायज द्रव्य अनेक दिय, चित्त उदधि चहुवान ॥ ८ ॥
बहुरि बहादुरसिंह१ अरु, स्वीय कुमर सिरदार२ ॥
गगरौड[15] व्याहे उभय२, लगन रीति इक१ लार ॥ ९ ॥

*पुनि ॥ २ ॥१ अपने देश में २ सैनों के बहुत धन लेने का ३ पिता के हुकम से ४ खेड़ों को घेरकर ५ चोरों को ६ कैद में ७ जय रूपी हाथी का ८ भुजों रूपी हाथी बांधने के खंभे से बांधकर ९ सब भूमि में ॥ ३ ॥ पासवान माता से १० उत्पन्न ॥ ४ ॥ ५ ॥ ११ पुत्री ॥ ६ ॥ १२ दासी का पुत्र १३ स्वामी का प्यारा ॥ ७ ॥ १४ सब मनोयोग्य (वांछित) साधकर ॥ ८ ॥ १५ गगरोट ॥ ९ ॥

बिक्रम सक पंचीस धृति १८२५, पंचमि५ माघ *वलच्छ ॥
†भृगुजपुरोहित वीर दिन, उदय रासि लिय अच्छ ॥१०॥
बखतसिंह रावत सुता, चंद्रकुमरि१ अभिधान ॥
परनि बहादुरसिंह१ लिय, तिय झल्लिय मतिमान ॥ ११ ॥
जोराउर राउत सुता, अक्षयकुमरि२ गुन[1] झार ॥
दुलहनि अंचल[2] गंठि दै, सो व्याहिय सिरदार ॥ १२ ॥
कुमर बहादुरसिंह१ हित, दयो तदनु नृप दाय[3] ॥
नगर गोठड़ा जुत पटा, असी सहँस ८०००० मित आय[4] १३
सुत कनिष्ठ सिरदार हित, दिय तदनंतर दाय ॥
पुरी दुधारी जुट पटा, अग्र लिखित८०००० मित आय १४
सक अतिकृति धृति१८२५प्रमित सम[5], पिक्खि उचित नृप पास॥
[6]थंभायत छट्ठो६ किपउ, मानिकराम सु व्यास ॥ १५ ॥
प्रथम पुरोहित१ व्यास२ पुनि, ए उत्तम दुव२ जानि ॥
त्योंही चारन३ भट्ट४ ए, दुव२ मध्यस्थ बखानि ॥ १६ ॥
बारिय५ तिम ढम्मामि६ बलि, उभय२ अधम ए आहि ॥
[7]बेहत वृत्ति बुंदीसकी, थंभायत खट६ चाहि ॥ १७ ॥

॥ षट्पात ॥

रान भटैन[10] इत रचि फरेब रतनेस रान किय ॥
सजि प्रचंड निज सेन उदयपुर आनि बिंटि लिय ॥
अधिक रान अरिसिंह जंग सन हुव व्याकुल जब ॥
[11]जालम१ झल्ला करि वकील पठयो [12]अवंति तब ॥
अरु अगरचंद२ महता बनिक इन दोउन२ द्रुत जाय तित॥

---

* शुक्लपक्ष † शुक्रवार ॥ १० ॥ ११ ॥ १ गुणों की समूह २ वस्त्र की गांठ देकर (गंठजोड़ा करके) ॥ १२ ॥ ३ दायभाग (भाईबंट) ४ आमद ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ५ सम्वत् ६ नेगी (नेग पानेवाला) ॥ १५ ॥ १६ ॥ ७ ढोली नहीं रपाते हैं ॥१७॥१०राणा के उमरावों ने११झाला जालमसिंह को१२उज्जैन भेजा

पठवाये अरज श्रीमंत पहँ लिय आदेस[1] सहाय हित ॥१८॥
दोहा–सुनत अरज श्रीमंत लिखि, दिय कग्गर[2] उज्जैन ॥
राघव१ दोला२ रानकी, करहु भीर सह सैन ॥ १९ ॥
पायगिया मरहट्ठ तव, राघव१ लखि पहु पत्त[3] ॥
जिमहिं वीर दोला२ जवन, ते हुव२ सज्जिय तत्त ॥ २० ॥
पंद्रह सहँस १५००० अनीक पति, दोउन२ सुंकर[4] दिखाय ॥
झाला जालमसिंह ले, हंकिय रान सहाय ॥ २१ ॥
॥ षट्पात् ॥
अग्गैं नृप अनिरुद्ध समय झाला भट माधव[5]॥
तजि जनपद[6] गुजरात इत सु आयो चलि अति जव[7] ॥
सब कुटुंब निज संग द्विरद१ सिविका२ रथ३ जेवर४ ॥
बुंदिय आवत बेर गयो सम्मुह नृप संभर ॥
सिर कर लगाय मिलि प्रीतिसन रक्खिय तब कछुदिन रहिय
पुनि जान अरज किय तब सुपहु डेरा जाय रु सिक्ख दिय२२
॥ दोहा ॥
कोटा माधव झल्ल गय, तदनु दिष्ट[8] अनुसार ॥
रामसिंह कोटेस यह, रक्खिय सह सतकार ॥ २३ ॥
रामसिंह जाजव मरयो, भीम भयो जव भूप ॥
वानैंहू माधव यहै, रक्ख्यो हित अनुरूप ॥ २४ ॥
॥ पादाकुलकम् ॥
माधवके सुत मदनसिंह२ हुव, दुज्जनसल्ल सु सचिव किन्न धुव॥
दुज्जनसल्ल सिंच्चु[9] जव पायो, तिहिं अनतासन अजितं[10] बुलायो२५

१ हुकम लिया ॥ १८ ॥ २ पत्र ॥ १९ ॥ ३ स्वामी का पत्र देखकर ॥ २० ॥ ४ अपने श्रेष्ट हाथ दिखाकर ॥२१॥ ५ माधवसिंह ६ देश ७ शीघ्र ॥२२॥ ८ भाग्य के अनुसार ॥ २३ ॥ २४ ॥ ९ मृत्यु १० अजितसिंह को ॥ २५ ॥

पृथ्वीसिंह३ मदन भल्ला सुत, सत्रुसल्ल मन्न्यो सु मोद जुत
सत्रुसल्ल विनु सुत वपु तजि दिय, तव तस अनुज[1] गुमान लिय ॥ २६ ॥
पृथ्वीसिंह झल्ल सुत जालम४, यह व्है हैं जाहिर अब आलम[2]
ताकै कछु कोटापतिसौं तब, अनख भई सु रह्यो न तत्थ अब २
छोरि गुमानसिंह कोटा पति, उदयनैर आयो प्रपंच मति ॥
सु अरिसिंह रानहु सनमान्यौं, अति हित जाय समुख पुर आन्यौं२
तखतसिंह जयसिंह रान सुव, ताके सुत अज्ञात[3] नाम हुव ॥
ताकी सुता व्याहि जालम कँहँ,इम सनमानि रान रक्खिय तँहँ२
दयो राज्य उपटंक[4] मुदित मन, पुनि पर चित्ताखेड़ परग्गन ॥
सो जालम यँहँ रान सहायक, लै मरहट्ठ कटक्क रन लायक[5]॥३०
छोरि अवंति स्वामि हित छायो, अगरचंद महता जुत आयो ॥
अगरचंदको जनक[6] अग्ग जव, बीकानैर नृपहिँ विख[7] दै तब ॥३१
मांडलगढ[8] तिय जुत भजि आयो, ताको सुत यह रान बधायो ॥
इत रानहु रन हित कटि बंधी[9], रक्खे जवन सहँस खट६००० सैं[10]

॥ दोहा ॥

आये दल[11] उज्जैनतैं, सुनि मरहट्ठ सहाय ॥
पुरतैं रानहु पिल्लयो[12], दल निज जित्तन दाय ॥ ३३ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशि ।उ सिंहचरित्रे हुलकरतक्कूदगागमनबुन्दीन्द्रतत्सत्करणमह ... कु ऽजितसिंह १ मैणागणविध्वंसनरावराड्भोजिष्येपीसुताद्य २ भो-

१छोटा भाई ॥२६॥२संसार में॥२७॥२८॥३जिसका नाम मालूम नहीं हुआ॥२९॥
४राज की पदवी ५ श्रेष्ट ॥ ३० ॥ ६ पिता ७ जहर ॥ ३१ ॥ ८ मांडलगढ में
९कमर बांधी १० सिन्धदेश के यवन ॥ ३२ ॥ ११ सेना १२ सेना भेजी ॥३३॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायण के सप्तमराशि में, उम्मेदसिंह के चरित्र में, हुलकर तक्कू का उत्तर दिशा में आना और बुन्दी के पति का उसका सत्कार करना १ महाराज कुमार अजितसिंह का युद्ध में मैनों को मारना

जिष्येयरठ्ठोड़जैतसिंह १ यादवजयसिंह २ विवाहनराजकुमारबहादुरसिंह १ शरदारसिंह २ गर्गराटोद्वाहनाऽनन्तरकुमारद्वय २ दायविभाजनव्यासमाणिक्यरामपरस्परभिक्षुकपञ्चक ४ समानसन्मननच्छलबालसेनावेष्टनव्याकुलराणाऽरिसिंहश्रीमन्तसहायप्रार्थनझल्लाजालमसिंह १ वणिगगरचन्द्र २ प्रेषणाज्ञाततद्विज्ञप्तिपत्रश्रीमन्तमहाराष्ट्रराघव १ यवनदोला २ ऽरिसिंहसहायप्रस्थापनझल्लाजालमसिंहप्रपितामहाऽऽगमाऽऽदिपूर्वोदन्तवर्णनवणिगगरचन्द्रजनकमहापापत्वसूचनसमात्तश्रीमन्तसहायराणाऽरिसिंहस्वसैन्यप्रेषणं सप्तपञ्चाशत्तमो ५७ मयूखः ॥ ५७ ॥ आदितः ॥३३८॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ हरिगीतम् ॥

पुर सलूमरि पति भीम भ्रात पहाड़१ लै दल निक्खस्यो ॥
अरु फतैसिंह२ हु चोडहर आमेटपुर पति उल्लस्यो ॥
घाणोर पति रट्ठोर वीरमदेव३ संगहि सज्जयो ॥
रट्ठोर अक्खयसिंह ४ तिम बधनोर पुर पति गज्जयो ॥ १ ॥

और रावराजा की दो पासवान की पुत्रियों को पासवानिये राठोड़ जैतसिंह और जादव जयसिंह को विवाहना २ राजकुमार बहादुरसिंह और सरदारसिंह को गर्गराट पुर में विवाह करने पीछे भाईबंट देना और व्यास माणिकराम को परस्पर पांच याचकों में बराबर मानना ३ झूठे (फरेबी) बालक की सेना से घिर कर राणा अरिसिंह का श्रीमन्त से सहाय के अर्थ प्रार्थना करना और झाला जालमसिंह और महता अगरचंद को भेजना ४ इन की अरजी जानकर श्रीमंत का मरहठा रघू और दोलामियां को अरिसिंह की सहाय में भेजना५ झाला जालमसिंहके प्रपितामह के आने आदि पहिले वृत्तान्त का कहना और बनिये अगरचन्द के पिता के महापाप की सूचना करना ७ श्रीमन्त की सहाय पाकर राणा अरिसिंह का अपनी सेना भेजने का सत्तावनवां ५७ मयूख समाप्त हुआ॥५७॥ और आदि से तीन सौ अड़तीस३३८ मयूख हुए ॥

१ पहाड़सिंह ॥ १ ॥

बनहड़ापति नृपरायसिंहहु ५ रानबंसिय उज्झल्यो ॥
उम्मेद६ साहिपुरेस भूप सुजानवंसिय उज्जल्यो ॥
बिंझोलि पति सुरकर्ण७ त्यों परमार असिवर संग्रह्यो ॥
बलि चौंडबंसिय भैंसरोर पुरेस मानहु८ उम्मह्यो॥२॥
इत्यादि सूर सिपाह संधिन लै उदैपुरतैं कढे ॥
सह झल्ल जालमसिंह दक्खिन बीर वे उततैं बढे ॥
दुहुँ ओर आत अनीक लखि सिसुकौं सहायक लै भजे
चित्तोरकौं कछु भेद सौं लहि दुग्गमैं हठ व्है सजे ॥ ३ ॥
दोला मियाँ१ मरहठ्ठ राघव२ ए उदैपुरमैं रहे ॥
छलबालके प्रतिपाल जे तिनके न नैंक भये चहे ॥
इहिं बीच माहजि संधिया पहुँच्यो अवंतिय आनिकैं ॥
तिहिं जानिकैं सिसु पच्छके भट भीरं लैन प्रमानिकैं ॥४॥
चित्तोर छंडन सुरतसिंहहि दै रु लै सिसुकौं चले ॥
सुनि आय सम्मुह संधिया इन्ह लेगयो सु चहे फले ॥
तिन बाल माहजि अंकमैं धरि द्वो सरराय यहै कही ॥
सुनि यों उदैपुर देनकी इहिं बत्त माहजिहू चही ॥ ५ ॥
दोला१ रु राघव१ हे उदैपुर व्हाँ यहै तिनमैं सुनी ॥
सिसुपक्ख लग्गिय संधिया अब सेन सज्जहु सोगुनी ॥
हम जायकैं छल मंत्रमैं तिहिं लै रु सत्वर मारिहैं ॥
गहि बाल जो अरि रावरो तिहिं कैद आलय डारिहैं ॥६॥
हठ मंत्र राघव१ रान२ के इत यौं उदैपुरमैं भयो ॥

१ श्रेष्ठ तरवार पकड़ी २ मानसिंह भी ॥ २ ॥ ३ सेना ४ रत्नसिंह को ॥३॥ छल से बनाये हुए बालक रत्नसिंह की ५ पालना करनेवाले ६ उज्जैन में ७ रत्नसिंह के पक्ष के उमराव ८ सहायता ॥ ४ ॥ ९ चैत्य १० रत्नसिंह को ११ गोद में रखकर ॥ ५ ॥ १२ बालक (रत्नसिंह) के पक्ष पर १३ माधजी को शीघ्र मारेंगे ॥ ६ ॥

सब दच्छ[1] दूतन भेजिकैं यह जानि माहजिहू लयो ॥
दोला१ रु राघव२ के कुटुंब हुते अवंतिय[2]मैं जहाँ ॥
करि कैद पुत्र कलत्र[3] कोपित संधियाहु सज्यो तहाँ ॥७॥
यह जानि ये[4] अरिसिंहको दल लै उदैपुरतैं चले ॥
खुरतार बाजिन मार मत्थ हजार आलुक[5]के हले ॥
फहरात लोहित[6] रंग केतन[7] मत्त हत्थिनपैं धरे ॥
वट१ अंबर२ जंबु३ कदंब४ ज्यौं[8] कुमुदादि[9] अद्रि४नपैं खरे ॥८॥
डगमग्गि सैल[10]न शृंग त्यौं भैर[11] भंग तुट्टन के लगे ॥
सब ऐन[12] संकत सैन हंकत नैन संकरके जगे ॥
चढि सिंह कालिय संग चालिय गैन गिद्धनि वित्थरी ॥
पहुँची अवंतिय यौं चमू अरु हल्ल कित्तनकौं करी ॥ ९ ॥
उततैंहु माहजि सज्ज व्है सिसु[13]पच्छके भट लै चढ्यो ॥
जिम जेठ सूरज ताव यौं तरकाव तोपनको बढ्यो ॥
दुहुँ ओरके रन बाजि कुंजर[14] अंभ[15]मैं उडनैं लगे॥
खिल[16] सोक गोलन तोक[17] घायल घुम्म लैन घनैं लगे १०

उडनैंलगे१ घनैंलगे२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

अतलादि भू पुट व्है थरत्थर नीर सिंधुनतैं छल्यो ॥
दिगधेनु[18] च्यारि४हु ऐन[19]लौं चिकि फेन आननमैं फल्यो ॥

---

१ दक्ष (चतुर) २ उज्जैन में ३स्त्रियों को ॥७॥ ४ये (रघु और दोला) दोनों अरिसिंह की सेना लेकर ५सर्प (हजार फणों के सम्बन्ध से यहां शेषनाग जानना चाहिये) ६ लाल रंग की ७ ध्वजायें ८ जैसे ये चारों वृक्ष सुमेरु के शिखर ९ कुमुद आदि पर खड़े हैं तैसे ॥ ८ ॥ १० पर्वतों के शिखर ११ भार से १२स्थान ॥ ९ ॥ १३ रत्नसिंह के पक्ष के उमरावों को लेकर १४ हाथी १५ आकाश में १६बाकी के गोलों की शोक से १७बालक (रत्नसिंह) के बहुत घायल वा घायलों के समूह घूमने लगे ॥ १० ॥ १८ दिशा की हथनियें (दिग्गजों की स्त्रियें) "यह युद्ध दक्षिण में हुआ इससे चार दिशाकी हथनियों को कष्ट होना लिखा और उत्तर आदि चार दिशा की हथनियें इस कष्ट से बाहर रहीं" १९ हरिण

चउसट्ठि६४ जुग्गिनि जंग चच्चर रास मंडत रंगमैं ॥
महती बजावनहारहू कलिकार घुम्मत संगमैं ॥ ११ ॥
आखाढ मारुत खेह सम्मिँत धूम छादित लोक भो ॥
तम थोक रोकन ओकँ ओकन कोकँ कोकिन सोकभो॥
जल बात पोमिनि पात ज्यौं भुव सेसके सिरपैं नचैं ॥
कालीय पन्नग भोगपैं जदुनाथ तंडव ज्यौं रचैं ॥ १२ ॥
हनुमान पावकँ लंक ज्यौं दिव ज्वाल ज्यौं नभ बित्थरैं ॥
नगरी अवंतियमैं हु मानव जूह रक्खस ज्यौं जरैं ॥
सिप्रा नदी लगि तोप तुट्टन नक्र मच्छ गन आवटे ॥
जिम लोह कप्पर तैलमैं गन पूपके खग लावटे ॥१३॥
इम होत लोलन जंग गोलन सेन माहजिकी लँची ॥
छलबालकी तब फौज होय हरोल रारि भली रची ॥
कछुकाल तोपन ज्वाल यौं रचि वग्ग वाजिनकी लई ॥
दुहुँ२ ओर धीर प्रबीर भिलि भट भीर सस्त्रनकी भई ।१४।

के समान चकित होकर, कुल में भाग होने लगे, चौसठ ही योगिनियों ने १उस युद्ध के२चौक (क्षेत्र) में युद्ध में आदार ३नृत्य रचा महती नामक वीणा को ४बजानेवाला और५युद्ध करानेवाला नारद मुनि उसके साथ में घूमने लगा ॥ ११ ॥ आषाढ के ६ पवन से रज उड़ै जिसके ७ सदृश धूम से लोक छागया ८ उस अंधेरे के समूह ने ९घर घर को रोकदिया जिससे १० चकवा चकवियों को शोक हुआ जैसे पानी में ११ पवन लगने से १२ पद्मिनी (कुमोदनी) हिलै तैसे शेष के मस्तक पर भूमि नची अथवा कालीनाग के १३फणों पर १४श्रीकृष्ण ने नृत्य किया त्यों नची ॥ १२ ॥ जिसप्रकार हनुमान ने लंका में १५ अग्नि लगाई तिसप्रकार आकाश में अग्नि फैली उस अग्नि से उज्जैन में राक्षसों के समान मनुष्यों का १६ समूह जलने लगा और १७सिप्रा नदी का पानी टूटकर मगर मच्छ ऐसे उबले जैसे तेल से भरे लोहे के १८ कड़ाह में १९ पुवों का समूह अथवा २० लावा पक्षी उबलें ॥ १३ ॥ इसप्रकार २१ चपल गोलों से युद्ध होते माहजी (माधोराव) सिंधिया की सेना २२ भागी तब २३ रतनसिंह की सेना ने आगे होकर अच्छा युद्ध किया २४ घोड़ों की बागें

छुलबाजको देत सोधियः छाडि ... सत्तुनको भयो ॥
बरमाल लै ततकाल अंबर[2] जाल अच्छरिको छयो ॥
कटि मुंड१ तुंड[3]२ कलाप३ कंठ४ ललाट५ के किरने[4] लगे ॥
बलि मत्त पीवन रत्त फेरव[6] फेरवी[7] फिरनैं लगे॥ १५ ॥
भट खैंचि कानन देत बानन लेत प्रानन सोधिकैं ॥
अति कोप छुट्टत रोप फुट्टत टोप संजुत गोधिकैं ॥
तरवारि बाहुलं[10] लग्गि होत उपेंद्र[11] मंदिर झल्लरी ॥
नस[12] जाल लुंबत देह दारितं[13] जानि अंबर बल्लरी[14] ॥ १६ ॥
उलटैं तुरंगारे[15] प्रहारतैं असवार ऊरध[16] उच्छटैं ॥
फरकैं कलेज रु फिफ्फर फलतैं द्वार छत्तिनके फटैं ॥
घटके[17] बनें बटके लगें झटके[18] उडैं भट के नये ॥
लटके परैं अटके रकावन रूप के नटके भये ॥ १७ ॥
कटि धार मारन भद्र बोरन[19] माथ मुत्तिय उच्छलैं ॥
घन कल्पके[20] घरका महा जरका मनों करकों[21] चलैं ॥

उठाई ॥ १४ ॥ १ रत्नसिंह की सेना का लेकर सिन्धिया शत्रुओं के बीच में हुआ उस समय तुरंत वरमाला लेकर अप्सराओं का समूह २ आकाश में छागया वहां कितने ही मस्तक ३ मुख, हाथियों का कलावा, कंठ, ललाट ४ गिरने लगे ५ फिर प्रसन्न होकर रुधिर पीने को ६ स्याल (गीदड़) ७स्यालनियां (गीदड़नियां) फिरने लगीं ॥१५॥ वीर लोग कान तक खैंचकर बाण छोड़तेहैं सो घेर कर प्राणों को हरते हैं अत्यन्त कोप से छूटे हुए ८ बाणों से टोप सहित ९ ललाट फूटते हैं१०हस्तानों पर लगकर तलवार ११विष्णु के मंदिर की झालर के समान बजती हैं १३कटे हुए शरीरों से १४ आकाश की बेल के समान१२ नसों का समूह लटकता है ॥१६॥ प्रहार होने से१५घोड़े उलटते हैं और सवार १६ऊपर उछलते हैं छाती के कपाट फट कर कलेजे और फेफरे फैलते हैं कितने ही वीरों के १८ खड्ग लगकर १७ शरीरों के टुकड़े होते हैं रकाबों में लटक कर कई वीर नट के रूप के समान होते हैं ॥ १७ ॥ तलवारों की मार से भद्र १९ जातिवाले हाथियों के मस्तक फट कर मोती उछलते हैं सो मानों २० प्रलय के मेघ के घर से मोटी झड़ी के २१ ओले गिरते हैं गोलियों के

भट्टनात गोलिन भ्रात के ऋतुराजमैं अलिराज ज्यौं ॥
असि केक मारत झुंड झारत दबि तित्तिर बाज ज्यौं ॥१८॥
छिकि पार तोमर लार लोहित धार हत्थिनतैं परैं ॥
अरुनोदका रसकी नदी जनु मंदराचलतैं ढरैं ॥
ध्वजदंड खंड उडैं अनेक मयूर सावन मास ज्यों ॥
हय जीन ज्वालनमैं जरैं दंव जेठ पब्बयँ घास ज्यों ॥ १९ ॥
फटि घाय सोनित गैनमैं चढि जात जावक जंत्र ज्यों ॥
भखि प्रेत बीरनके बँसा गल औंचि डारत अंत्र ज्यों ॥
अति जोरतैं दुरहुँ ओर घोर कटार कंकटपैं बजैं ॥
हमगीर धीरनको बढैं तँहँ नीर भीरुनको लजैं॥ २० ॥
असवार केक उडाय अब्बनैं हत्थि हौदनपैं अरे ॥
पवमानके रैंय भानके हय मानसोत्तर ज्यौं खरे॥
प्रसरैं फुलिंग झरैं सु पावक हेति हेतिनसौं घसैं ॥
लगि अंत लुंवत पंसुली जनु नाग चंदनपैं लसैं ॥ २१ ॥

१समूह२वसंत ऋतु में३भ्रमरों की भांति चलते हैं और कई तलवार मारकर समूहों को गिराते हैं और बाज पक्षी तीतर को दबावै तैसे दबाते हैं ॥ १८ ॥ ४ भाले पार फूट कर हाथियों से रुधिर की धारा गिरती है सो मानों मंदराचल से ५ अमरस की नदी चलती है. कई ध्वजा दंड कटकर श्रावण मास के मयूरों के समान उड़ते हैं और ६ ज्येष्ठ मास की अग्नि में जैसे ७ पर्वत का घास जलै तैसे घोड़ों के जीन अग्नि में जलते हैं ॥ १९ ॥ घाव फटकर १० जावक के फुहारे के समान ९ आकाश में ८ रुधिर उछलता है, वीरों की ११ चरबी खाकर भूत गले में आंतें डालते हैं दोनों ओर से बढे बल से भयंकर कटार १२ कवचों पर बजते हैं जहां हमगीर और धीरों का पराक्रम बढता और कायरों का लज्जित होता है ॥ २० ॥ कई सवार १३ घोड़ों को उड़ाकर हाथियों के होदों पर अड़ते हैं सो मानों पवन के १४ वेगवाले १५सूर्यके घोड़े सुमेरु पर्वत पर खड़े हैं।१७शस्त्रों से शस्त्र घिस कर अग्नि गिरकर१६अग्निकण फैलते हैं आंत पंसुलि के लगकर ऐसी लटकती है जैसे चंदन पर १८ सर्प शोभते हैं ॥ २१ ॥

गिरि ढाल लोहितै[1] ताल चक्र कुलालके[2] निभ[3] के भ्रमैं ॥
तिनपैं परैं फटि तुंड[4] के कटि मुंड[5] जे कुट[6] ज्यौं जमैं ॥
निकसैं अलोहित[7] सान लीढक[8] लंब रीढक[9] तोरिकैं ॥
मनु फारि सैवंल[10] मंजरी सफरी[11] उडैं जल छोरिकैं ॥ २२ ॥
भट सत्थ के दुव२हत्थलै अरि मत्थ पौं पटकैं गदा ॥
सुं[12] मकी निकारन लट्ठ मारनकी गँवारनकी अँदा[13] ॥
भट प्रान छुट्टत स्वास तुट्टत के गिरे हिचकीभरैं ॥
तुतरात बैन फिरात नैन किरौंततैं[14] मृग ज्यौं करैं ॥ २३ ॥
कति झारि कत्तिनकौं[15] निराय[16] भिराय छत्तिनकौं भिलैं ॥
मनु मित्र हर्ष[17] हवाल[18] के चिरकालके[19] बिछुरे मिलैं ॥
गुटिका१ रु गोलक२ सिल्प कोबिद[20] केक मंडत चातुरी ॥
बिसिखा[21] बजार बनायकैं बिधिसौं बसावत जैपुरी[22] ॥ २४ ॥
बिडरात[23] गात डरात दंतन हूंत[24] भूत हसे परैं ॥

ढालें गिरकर १ रुधिर के तलाव में २ कुम्हार के चाक के ३ सदृस भ्रमती हैं जिन पर कई फटेहुए ४ मुख और कटेहुए ५ मस्तक गिरते हैं सो ६ घड़ों के समान जमते हैं ८ सान से चाटी हुई तरवारें ९ लंबी पीठ को तोड़कर ७ बिना लोहू लगे साफ निकलती हैं सो मानों १० शैवाल की मंजरी को फाड़ कर जल को छोड़कर ११मच्छी उडती है ॥ २२ ॥ कई वीरों के समूह दोनों हाथोंसे शत्रुओंके मस्तकों पर गदा पटकते हैं१२सो ग्रामीण लोगों के मक्की (धान्य विशेष) निकालने में लठ्ठ मार ने की १३ तरह दीखते हैं वीर लोग श्वास तूटकर प्राण छूटते समय गिरकर हिचकियां लेते हैं और तुतलाते हुए वचन बोलकर १४ शिकारी के आगे मृग के समान नेत्र फेरते हैं ॥ २३ ॥ कितने ही १५ तलवारें चलाकर १६ समीप लेकर छातियां भिड़ाकर मिलते हैं सो मानों १७मिलने के हर्षके अथवा वियोग के खेद के१८वृत्तान्त से १९ बहुत समय के बिछड़े हुए मित्र मिलते हैं कई गोलियां और गोले शिल्प विद्या के २०पंडित होकर चतुराई रचते हैं और २१ गलियां और बाजार बनाकर २२बिधि पूर्वक विजय की पुरी बसाते हैं अथवा जयपुर के समान पुरी बसाते हैं ॥ २४ ॥ २३ डरावने शरीरों से और दांतों से डराकर २४ बुलाये

पट्टु स्वाद हेरत त्तेत्रपालक नेत्र जे निकसे परैं ॥
उडिजात के बिनु पग्घ मस्तक लंब *मान सिखा धरैं ॥
खनि मालिनी जनु गैंद खेल सपत्र सूरनके करैं ॥ २५ ॥
सरैं ईतिकारक सालभी तति रूप अंबर उल्लसैं ॥
भैर भीतिकारक कालभी तति जंग गोलनकों ग्रसैं ॥
कति बँधप जानन पुंख बानन बात काननतैं करैं ॥
अपसव्य हत्थ सगव्यकों तँहँ सव्य कातर उच्चरैं ॥ २६ ॥
गज गात ठेलन संगि सेलन गात पैठत यों लसैं ॥
जनु वज्र संगहि बीजुरी धकि स्याम बद्दलमैं धसैं ॥
अरिसिंह१ माहजिर२ के उभैर दल यों अवंतिप आहुरे ॥
वल जानि सत्रुनको उदैपुरके लजे अब बाहुरे ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

चम उदैपुरकी चली, जीवनतैं हित जानि ॥
संग लगे माहजि सुभट, प्रबल दिखावत पानि ॥ २८ ॥
मेवारे दल माँहिसों, तुरग मुरे तहँ नोरन ॥

हुए वा हू हू करके भूत हंसते हैं चतुर क्षेत्रपाल स्वाद हेरते फिरते हैं जिनके नेत्र निकले पड़ते हैं कई मस्तक लम्बे * माप की (लंबी) चोटीको धारण किये हुए पगड़ी विना होकर पड़ने हैं सो मानों मालिन २ पत्रों सहित ३ सूरण [कन्द विशेष] को १ खोदकर गेंद खेलती है ॥ २५ ॥ ५ ईति करनेवाली टीड़ियों की पंक्ति के रूप से आकाश में ४ बाण चढ़ते हैं ७ वीरों को ८ भय देनेवाले ९ काल की पंक्ति के समान गोले युद्ध में उन्हें ग्रसते हैं कई १० मारने योग्य जानने के लिये बाणों के ११पंख कानों से बात करते हैं और १३सव्यसाहित १२ दहिने हाथ को १४ बायां हाथ [बांये हाथ] पीछे रहने के कारण कायर कहता है ॥ २६ ॥ हाथियों के १५ शरीर को ठेलने के लिये १६ बरछियां और भालों के १७ समूह घुसते हुए ऐसे शोभा देते हैं कि मानों वज्र के साथ बिजुली चलकर काले बद्दलमें घुसती है१८उज्जैन में इस कारण माहजी और अरिसिंह की सेना खड़ी तहां उदयपुर की सेना लज्जित होकर १९ भागी ॥ २७ ॥ २० हाथ ॥ २८ ॥ मेवाड़ की भगी हुई सेना में से

जिम भचक्र पच्छिम चलत, ग्रह थन पूरब गोन ॥ २९ ॥

॥ षट्पात् ॥

इक राघव१ मरहट्ठ जवन दोला२ द्वितीय जँहँ ॥
झल्ला जालमसिंह३ चौंड बंसिय पहाड़४ तँहँ ॥
साहिपुरप उम्मेद५ मान६ भट भैंसरोर पति ॥
अकलेय७ वीरमदेव८ उभय२ रट्ठोर मरन मति ॥
परमार सुभट सुभकर्ण९ पुनि ए सुररे दल भजत सन ॥
नव९सफर जानि अतिवल निडर गहरओत किय प्रतिगमन३०
साहिपुरप उम्मेदसिंह१ असिवर हद झारिय ॥
खूब विरचि रन खेल प्रचुर मरहट्ठ प्रहारिय ॥
करि उज्जल सीसोद कुलहिं तिल तिल मित तुट्टिग ॥
रविमंडल बिच होय लाह सुरपुर सुख लुट्टिग ॥
तिमही पहाड़२ भट चौंड हर ईसहिं दैन न अहरिय ॥
बल फारि मारि मरहट्ठ बहु कलह सीस रज रज करिय ३१

॥ दोहा ॥

दोला१ राघव२ एहु हुव२, सत्रु बहुत संहारि ॥
पृथुल रारि बिच कटि परे, अतुल मारि तरवारि ॥ ३२ ॥
इक१ परमार कबंध उभर२, टरे कछुक छतवान ॥
मरहट्ठन लिन्ने पकरि, जालमसिंह रु मान ॥ ३३ ॥

नौ (*)घोड़े इस तरह पीछे मुड़े जैसे१संपूर्ण तारा मंडल तो पश्चिम को जाता है और उनमें से (‡)नौ ग्रह पीछे पूर्व को जाते हैं ॥ २९ ॥ २ पहाड़सिंह३उम्मेदसिंह ४मानसिंह ५अजयसिंह ६ मच्छ ७ गहरे ओते में ८ उलटे चले ॥ ३० ॥ ९ बहुत१०तिल तिल माफिक११स्वर्ग का१२शिव को मस्तक देना स्वीकार नहीं किया१३युद्ध में ॥ ३१ ॥ १४बड़े युद्ध में ॥ ३२ ॥१५घायल१६मानसिंह को ॥३३॥

(*)यहां अजहत्स्वार्था लक्षणा से घोड़ों के सवार जानने चाहिये ॥

(‡) नौ ग्रहों की सामान्य गति तो संपूर्ण तारा मंडल के साथ पश्चिम में जाने की है परंतु विशेष गति से नौ ही ग्रह प्रतिदिन पूरब की ओर हटते जाते हैं ॥

बिगरयो [illegible] अरिसिंहको, जिरयो माहजि जंग ॥
सिसु पक्खी हरखे सुभट, आवन राज्य उमंग ॥ ३४ ॥
दम्म लक्ख१०००००अरु बीस२०गज, तोप छतीस३६नवीन
लूटमाँहिँ माहजि लये, तुरग सहँस पुनि तीन ३००० ।३५।

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणो सप्तम ७ राशावुम्मेदसिंहचरित्रे ज्ञातससहायसमागताऽरिसिंहसैन्यछलबालसहिततत्पक्षसुभटभेदोपायचित्तोडदुर्गप्रविशनमाहज्यवन्त्यागमनश्रुतैतच्छलपक्षसन्ध्याशरणग्रहणमाहजिदोला १ राघव २ पुत्रकलत्राऽऽदिनिग्रहणातत्सहायराणाऽरिसिंहसैन्य १ सन्ध्यासहायच्छलशिशुसैन्य २ शिप्रातटमहारणकरणसाहिपुराऽधिराडुम्मेदसिंह १ सलूमरीशभीमाऽनुजपहाड़सिंह २ यवनदोला ३ महाराष्ट्रराघव ४ मरणपरमार १ कबन्ध २।३ सक्षतीभवनझल्लाजालमसिंह १ चुंडाउतमानसिंह २ कारान्यसनराणासैन्यपलायनच्छलपक्षसहायीभूतमाहजिविजय

१ रत्नसिंह के पक्षवाले ॥ ३४ ॥ २ रुपये ॥ ३५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणके सप्तमराशिमें, उम्मेदसिंहके चरित्र में सहाय पर आईहुई और अरिसिंह की सेना को जानकर छलवाले बालक सहित उसके पक्ष के उमरावों का भेद उपाय से चित्तौड़ के गढ में घुसना १ माहजी का उज्जैन आना सुनकर उन छल पक्षवालों का उसकी शरण लेना२ माहजीका दोला और रघु के पुत्र और स्त्रियों आदि को कैद करना और उनकी सहाय पर राणा अरिसिंह की सेना और सिंधियाकी सहायता से रत्नसिंह की सेना का शफरा नदी के किनारे महा युद्ध करना ३ शाहपुरा के पति उम्मेदसिंह, सलूमर के पति भीमसिंह के छोटे भाई(*)पहाड़सिंह, यवन दोला और मरहठा राघव का मरना और पँवार और राठोड़ का घायल होना, झाला जालमसिंह और चुंडावत मानसिंह का पकड़ा जाना, राणा की सेना का भागना ४ छलपक्ष की सहाय करनेवाले माहजी का विजय पाना और शत्रु के डेरों का वैभव लूटने का अठावनवां मयूख समाप्त हुआ ।।५८।। और आदि से

(*)सलूमर के रावत भीमसिंह को महाराणा अरिसिंह ने जहर देकर नाहरमगरे में मार डाला तब उसका छोटा भाई पहाड़सिंह भीमसिंह के पाट बैठ गया इसकारण इस समय वह सलूमर का ही रावत था यहां सलूमर के पति भीमसिंह का छोटा भाई लिखा सो अनुचित है ॥

मापबापराशिविरवैभवलुण्टनमष्टपञ्चाशत्तमो ५८ मयूखः ॥ ५८ ॥

आदितः ॥३३९॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा—मदलैं[1] जालमसिंहकैं, सट्ठि सहँस ६०००० दै दम्म ॥
मित्र इक्क मरहट्ठनैं, टारयो कैद कुकम्म[2] ॥ १ ॥
चुंडाउत छुट्ट्यो न वह, भैंसरोर पति मान ॥
छलसिसु जान्यों छिप्रहीं[3], रहिहौं ठहै अब रान ॥ २ ॥
दोला१ राघव१ दुहुँ[4]रनके, लीनें सीस कटाय ॥
रोपे नगर अवंति बिच, सेलन अग्र चिपाय ॥ ३ ॥
उदयनैर उप्पर बहुरि, सज्जिय माहजि सैन ॥
उतकृति धृति १८२६ आखाढ बिच, लग्ग्यो पत्तन लैन ॥४॥
रसना जिम संकट रैंदन, जरि इम तोपन जाल ॥
संध्या खिजि बिंटिय शहर, करि रन दंमन कराल ॥ ५ ॥
भैंसरोर पति मान तँहँ, बिधि कछु कैद बिहाय ॥
जासिकँ[6] दिट्ठि बचायकैं, दुरयो उदैपुर जाय ॥ ६ ॥
बहुत काल घेरा रह्यो, भयो उदयपुर त्रस्त ॥
संध्याको घन बुंठि[7] करि, बिगरयो बिभव समस्त ॥ ७ ॥
सेन खरच छलबालसौं, मंग्यो माहजि तत्थ ॥
देहु उदयपुर उन कहिय, लेहु उचित तुम अत्थ[8] ॥ ८ ॥
सुनिय रान अरिसिंह यह, अनख परस्पर होत ॥
कथितँ[10] दंड स्वीकारि कहिय, पकरि लेह छलपोतँ[11] ॥ ९ ॥

तीन सौ उनचालीस ३३९ मयूख हुए ॥

१ रुपये २ कुकर्म ॥ १ ॥ ३ शीघ्र ही ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ४ दाँतों के घेरे में ५ दंड देने को ॥ ५ ॥ ६ पहरायतों की नजर बचाकर ॥ ६ ॥ ७ मेघ की वृष्टि से ॥ ७ ॥ ८ रत्नसिंह से ९ अर्थ (धन) ॥ ८ ॥ १० सिंधिया ने कहा जितना ११ छलबाल (रत्नसिंह) को ॥ ९ ॥

जब माहजि पकरन जतन, किय सो सुनि तत्काल ॥
किल्ला कुंभिलमेरु गय, सह परिकर[1] वह वाल ॥ १० ॥
दंड रान अरिसिंह दिय, भूखन दम्म तुरंग ॥
अवसेसन[2] हित ओलि दिय, झल्ला जालम संग ॥ ११ ॥
जालमकौं माहजि जवहि, आयउ लै उज्जैन ॥
वरस याहि१८२६ऋतु सरद विच, साजिस अतुलित सैन१२
महाराव कोटा पुरप, नृप गुमान यह जानि ॥
मोच्यो[3] जालम दम्मदै, परिकर[4] स्वीय प्रमानि ॥ १३ ॥
इत रक्खे अरिसिंहनैं, संधी जवन सिपाह ॥
च्यारि लक्ख४००००० तिनके चढे, हक[5] रुप्पय नय[6] राह१४
फोरे कुंभिलमेरु के, फुट्टे संधिप नाँहिं ॥
पै इक मंगन दंद किय, मुलक उदैपुर माँहिं ॥ १५ ॥
दम्म भये नहिं दैनकौं, तब अरिसिंह सिटाय ॥
आयो व्याहन रीति कछु, संधिनकौं समुझाय ॥ १६ ॥
सुता बहादुरसिंहकी, परनि कृष्णागढ ढंग ॥
रान संकि तत्थहि रह्यो, संधिन दंद प्रसंग ॥ १७ ॥
तदनंतर[10] मुनि नेत्र धृति१८२७, बुंदिय नगर नरेस ॥
भयो उदास प्रवृत्ति[11] सन, वढि वैराग्य विसेस ॥ १८ ॥
रांध[12] विसद द्वादसि१२ रुचिर, रविवासर सुभ रूप ॥
अजितसिंह जेठो कुमर, किन्नौं बुंदिय भूप ॥ १९ ॥
प्रथम पुरोहित किय तिलक, निज कर झितुवराम ॥

---

१ परगह सहित ॥ १० ॥ २ बाकी रहे जिनमें जालमसिंह को ओल (रुपयों के एवज की कैद) में दिया ॥ ११ ॥ १२ ॥ ३ छुडाया ४अपनी परगह वाला जान कर ॥ १३ ॥ ५तनखाह के ६ नीति के मार्ग से ॥१४॥७यहां कछवाा से कुंभिल मेरुवालों को जानना चाहिये ८ उपद्रव ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ९ डरकर ॥ १७ ॥ १० जिसपीछे ११ कर्म मार्ग से ॥ १८ ॥ १२ वैशाख सुदि ॥ १९ ॥

बहुरि व्यास आसिख बिहित, रचि किय मानिकराम ॥२०॥
निज कटि[1]को असिवर नृपति, बंधायउ निज हत्थ ॥
[2]नृपता दे निज पुत्रकौं, हुव [3]बिरत्त मन तत्थ ॥ २१ ॥
रक्ख्यो नगर बड़ोदिया, निज परिकर व्यय[4] काज ॥
श्रीजित पद अप्पुन[5] गहिय, तजिदिय पद [6]नरराज ॥ २२ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

जाके काज बिपति बिताई बहु कष्ट सहि,
द्वैर द्वैर छिन माँहिं मेटि [7]जाठर दुसह दाह ॥
मरन बिचारि मारि मारि तरवारि झारि,
झंडे पचरंग जंग मंडे चहुवान नाह ॥
जैपुरकौं जीति नीति दुलभ दिखाई सब,
भूपन दिखाई भूप आदि रजपूती राह ॥
श्रीजित समर बुंदी अष्टम[8] उमेद मनु,
[9]कासी जानि लीनी [10]तृनु कासी जानि लीनी वाह ॥ २३ ॥

दोहा—इंद्रगढव उमराव तँहँ, भक्तराम१ अभिधान ॥
पुनि खत्तोली नगर पति, रतनसिंह चहुवान ॥ २४ ॥
बलवनपति मालम३ बहुरि, बैरिसल्ल भव बंस ॥
ज्यौंही भरतसिंह४ जँहँ, खेड़ानगर वतंस ॥२५॥
दुर्गसिंह५ सुहुकम कुलज, अंतरदा नगरेस ॥
महासिंह गजसिंह६ जिहिं, पुर जज्जाउर पेसं[11] ॥ २६ ॥
तिमहि भवानीसिंह ७ तँहँ, धोवड़ पत्तन नाह ॥

॥ २० ॥ १ अपनी कमर का २ राजापन देकर ३ विरक्त ॥ २१ ॥ ४ खर्च के लिये ५ अपना पद श्रीजित रक्खा ६ राजा का पद छोड़दिया ॥२२॥ ७ पेट की ८ उम्मेदसिंह रूपी आठवें मनु ने ९ बुन्दी को ही काशी जान ली और राज्य छोड़ने में उस बुन्दी को १० तृण के समान जान ली सो प्रशंसा है ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ ११ आधीन ॥ २६ ॥

भगवंत८ सु सीलोर पति, माधानी हित चाह ॥ २७ ॥
सेरसिंह९ सामंत हर, भजनेरी पुर भान ॥
महासिंह हर बीर पुनि, थानाँ पुर प खुमान१० ॥ २८ ॥
तिम समुदसिंह११हु सुभट, सुहरनि पति वरबीर ॥
नगर जैतगढ नाह पुनि, बाघसिंह१२ रन बीर ॥ २९ ॥
भट खुसाल१३ सामंत हर, नगर नादनाँ ईस ॥
मिसल दाहिनीके मिले, भट इत्यादि बत्तीस ॥ ३० ॥
वाम मिसल उमराव बलि, सोलंखी जयसीह१ ॥
नाथाउत निम्मान पति, पित्थल सुत नय लीह ॥ ३१ ॥
नाथाउत बखतेस२ बलि, नगर पगाराँ मोर ॥
अभयसिंह३ अमरेस सुत, पति अलोद रट्ठोर ॥ ३२ ॥
इत्यादिक सुभटन[2] नजरि, किन्नें हय सिरुपाव ॥
पठये टीका नृपन पुनि, सुनि यह बत्त सचाव ॥ ३३ ॥
उदयनेर अरिसिंह१ नृप, पित्थल२ जयपुर ईस ॥
विजयसिंह३ रट्ठोर बलि, जनपद धन्व[1] अधीस ॥ ३४ ॥
कोटापुर प गुमान४ नृप, छन्न कितव छल जाल ॥
इमहि करोली पुर अधिप, जद्दव मानिकपाल५ ॥ ३५ ॥
बीकानैर अधीस बलि, सुरतसिंह६ नरनाह ॥
रामसिंह७ नैषध[2] अधिप, नरउरपति कछवाह ॥ ३६ ॥
भूप बहादुरसिंह८ तिम, कृष्णगढप रट्ठोर ॥
गोरवंस अवतंस पुनि, सोपुर नृपति किसोर९ ॥ ३७ ॥
इत्यादिक सब नृपनके, टीको गज१ हयराज२ ॥
मनिभूखन३ सिरुपाव४ मिलि, सह आये सुभ साज ॥ ३८ ॥

॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ १ नीति के मार्ग में ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ २ उमरावों ने ॥ ३३ ॥ १ मारवाड़ देश का पति ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ २ निषध देश का पति ॥ ३६ ॥ ५ मुकुट ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

सुनि टौंका श्रीमंतहू, दयो नरायनराव१ ॥
हुलकर तक्कू१ संधिया, माहजिरहू भल भाव ॥ ३९ ॥
इम श्रीजित उम्मेद पँहँ, किय नृप ज्येष्ठ कुमार ॥
लयो महाराजोपपद, बहादुर१ रु सिरदार ॥ ४० ॥
रक्खे कछु निज ढिग सुभट, नाम सुनहु जिन नाह ॥
इक१ थाँनाँपतिको अनुज२, बिक्रम१ सुमन३ सिपाह ॥४१॥
बैरिसल्ल कुल उद्धरन, सुभट नाम सोभाग२ ॥
भट किसोर३ नाथाउत सु, अति जिहिं रन अनुराग ॥४२॥
दयानाथ४ रासू५ हुवरहु, महासिंह कुल जात ॥
बीर खुसाल६ निहाल७ वर, हर सामंत सुहात ॥ ४३ ॥
झल्ला वीर दलेल सुत, चंद्रासिंह८ जय चोर ॥
बीर सिवाईसिंह९ बलि, अमरचंद रट्ठोर ॥ ४४ ॥
हड्ड खजूरीको बहुरि, दोलतसिंह१० स नाम ॥
ए निज ढिग रक्खे सुभट, श्रीजित बिहित६ बिराम७ ॥ ४५ ॥
बुंदिपतैं ईसान दिस, कोस इक्क१ मतिमान ॥
सिव केदार निकेत तँहँ, रहन बिचार्यो थान ॥ ४६ ॥
महलनमैं उम्मेद २०० नृप, मंदिर उभय२ बनाइ ॥
श्रीरंग१ रु आनंदघन२, प्रभु दिन्नैं पधराइ ॥ ४७ ॥
तिनके ढिग उत्तर४१७ तरफ, नाना कुकुर निकेत ॥
रुचिर चित्रसाला३ रची, सब सुभ चित्र समेत ॥ ४८ ॥
प्राची१ दिस तस हिट्ठ१० पुनि, नाना द्रुम११न निवास ॥

॥३९॥१महाराजकी पदवी बहादुरसिंह और सरदारसिंह ने ली॥४०॥२छोटा भाई ३श्रेष्ठ मनवाला ॥ ४१ ॥ जिसको युद्ध से बहुत ४प्रीति थी॥४२॥४३॥५विजय को चोरनेवाला ॥ ४४ ॥ ६ उचित ७ प्राप्ति के उपराम में ॥ ४५ ॥ ८ केदार नामक शिव का मंदिर ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ९काचमहल ॥ ४८ ॥ १०उस के नीचे ११नाना भांति के वृक्षों का

क्रीड़ा उपबन[1] नाम करि, बिरच्यो रंगबिलास४ ॥ ४९ ॥
ताके उत्तर४।७ प्रांत पर, तीन३ निलय[2] किय तत्थ ॥
अच्छवाट१।५ अरु असनघर२।६, मुकुर महल[3]३।७ तिन मत्थ५०
तारागढ बिच हरि सदन१।८, [4]आयत कोसर।९ निवान ३१०।
बिष्णुसिंह२०।२।२ नृप चरित विच, रचित कहे अप३थान५१
कृत गनेसघंटी[5]१।४।२१ कहिय, चोथी४ ताहि चरित्र ॥
नव्य[6] अँधो महलन निलय, बरनत सुनहु विचित्र ॥ ५२ ॥
राजमहल प्रासाद सन, दक्खिन२।३ दिश थिर थान ॥
तीन बनाये भूप तिन्ह, अब जानहु अभिधान[8] ॥ ५३ ॥
रुचिर निबकोराउला१।१२। इक बहु महल उपेत ॥
तस दक्खिन२।३ दूजो२ अतुल, जहँ कुलदेवि निकेत[9]२।१३ ॥५४॥
कहत राउला कूपको३।१४, तासों दक्खिन२।३ तत्थ ॥
तीन३नमें प्रासाद तंति[10], सब अति उन्नति[11] सत्थ ॥ ५५ ॥
तिन्ह तोरन[12] बाहिर तहाँ, सोल्हाबापिय पास ॥
तीराथिपा ह्यकी रची, प्रतिमा१।१५ अट्ट[13] प्रकास ॥ ५६ ॥
सिव केदार समीप किय, तीजे३ आश्रम[14] बास ॥
तहँ बिरच्यो उत्तर ४।७ तरफ, उपबन[15] देवबिलास१।१६।५७।
तास ढिगहि सिखिकोन[16]२ तहँ, रचित कुंड२।१७ अभिराम ॥
तासों लागि आवाह्वप२।३ तट, धवल तुंग[18] निज धाम ॥ ५८ ॥
जो सिकारबुरज३।१८हि बजत, आलय प्रचुर[19] उपेत ॥

१ बगीचा ॥ ४९ ॥ २ मकान ३ काचमहल इन के ऊपर है ॥ ५० ॥ ४ मोटा ॥ ५१ ॥ ५ गणेशघाटी ६ नवीन ७ नीचे के महलों में ॥ ५२ ॥ ८ उन के नाम ॥ ५३ ॥ ९ मंदिर ॥ ५४ ॥ १० महलों की पंक्ति ११ ऊंचेपन सहित॥ ५५ ॥ १२ उनके दरवाजे के बाहर १३ बुरज पर चौड़े ॥५६॥ १४ वानप्रस्थ १५ बाग ॥५७॥ १६ अग्नि कोण में १७ दक्षिण के किनारे १८ श्वेत रंग का ऊँचा अपना महल ॥५८॥ १९ बहुत मकानों सहित

आमति१ जीवन२ अप्प इह, निवस्यो रुचिर निकेत ॥५९॥
तँह गुलावबाटी१।१९ तिमहिँ, मारुति छत्री२।२० मंजु ॥
कुल्या३।२१ग्रावन जटित किय, कुंड मिलित चित कंजु६०
बहुरि मंदुरा४।२२आदि बहु, थप्पे कति लघु थान ॥
वैखानस३तँहँ वास करि, बिलस्यो निगम बिधान ॥ ६१ ॥
जो खवासि नृपकै निपुन, कही रूपरसराय ॥
तस नामहु इक१ बाग तँहँ, चतुर रच्यो जस चाय ॥ ६२ ॥
सिव केदार समीप सो, बज्जहिँ रूपबिलास१।२३ ॥
नदी बानगंगा निकट, इत दक्खिन२।३ तट आस ॥ ६३ ॥
बेघम नृप बुधसिंह१९को, चौंरा१।२४ रुचिर रचाइ ॥
किन्नौं जस व्यय अतुल करि, मंह१सह दान२मचाइ ।६४।
बुंदीतैं चहुँ४घाँ बिदित, मृगया बुरज महीप ॥
बिरची तिनमैं सुभ बुरज१।२५, दिस प्राँची सब दीप ॥ ६५ ॥
बहुरी२।२६ कोठा३।२७ आदि इम, बहु पुर निकट१बनाइ ॥
दूरहु भीमलता२।२८ दि भुव, पटु मृगया रस पाइ ॥ ६६ ॥
सत्रुसल्ल१९६।१ तजिकैं सुपहु, व्यय ऐसी करि वित्तँ ॥
काहूनैं न रचे निलय, इम उदार चाहि चित्त ॥ ६७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे सप्तम ७ राशावुम्मे

१ बुद्धि पर्यन्त और जीवन पर्यन्त आप यहां २ सुन्दर मकान में (*) रहा ॥ ५९ ॥ ३ गुलाबबाड़ी ४ पत्थरों की जड़ी हुई नहर, ५ बहते हुए जलवाली ॥ ६० ॥ ६ हयशाला ७ उस वानप्रस्थ ने ८ वेद विधि से विलास किया ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ९ हुआ ॥ ६३ ॥ १० उत्सव सहित ॥ ६४ ॥ ११ शिकार की १२ पूर्व दिशा में सब को प्रकाश करनेवाली है ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ १३ धन खरच करके १४ मकान ॥ ६७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके उत्तरायणके सप्तमराशि में, उम्मेदसिंहके चरित्र

(*)रावराजा उम्मेदसिंह अंत समय में केदारेश्वर मे ही मूर्छित होगये थे जिस के बाद उनको महलों में लेगये परंतु जब तक बुद्धि(होस)रही तब तक वे केदारेश्वर में ही रहे इसी कारण यहां आमति जीवन कहा है.

दसिंहचरित्रे मित्रमहाराष्ट्रझल्लाजालमसिंहकारामोक्षणमाहजिवा-
हिन्युदयपुरवेष्टनचुण्डावतमानसिंहकौहकपान्तःपुरमाविशनज्ञातलु
लुप्सारुष्टमाहजिसपक्षच्छलडिम्भकुंभिलमेरुदुर्गगमनराणाऽरिसिंह
माहजिदण्डद्रम्मा ऽर्पणाखिलद्रम्माऽवधिझल्लाजालमसिंहसार्थीक
रणादत्तद्रम्मकोटेशगुमानसिंहतन्मोक्षणासंधिभृत्यद्रव्यशङ्किताऽरि-
सिंहबहादुरसिंहसुतोद्वाहनिमित्तकृष्णगढनिवसनरावराडुम्मेदसिंह
महाराजकुमाराऽजितसिंहाऽर्थराज्याऽर्पणास्वपंश्रीजिदुपटङ्कधारण
सर्वभूभृट्टीकोपाख्यव्यवहारप्रेषणास्वल्पसार्थसहितश्रीजित्केदारेश्वर
स्थाननिवसनमेकोनपञ्चाशत्तमो ५९ मयूखः ॥ ५९ ॥
आदितः ॥ ३४० ॥

इतिश्रीमदखिलमहीभृन्मुकुटमल्लीमाल्यमकरन्दमद्यमत्तमिलिंद
मुखरितचरणचिन्हिताऽऽरातिचूडबुन्दीपूर्विलासिनीविलासिचाहुवा
णचूडामणिभारतीभागधेयहट्टोपटङ्किमहाराजाऽधिराजमहारावराजे

में, मरहठे मित्र का झाला जालमसिंह को कैद से छुड़ाना और माहजी का सेना से उदयपुर को घेरना १ चुंडावत मानसिंह का छल से पुर के भीतर जाना और लोभ से माहजी को क्रुद्ध जानकर पक्ष सहित छलबालक का कुंभलमेरु के गढ में जाना २ राणा अरिसिंह का माहजी को दंड के रुपये देना और बाकी के रुपयों की अवधि पर्यन्त झाला जालमसिंह को साथ देना ३ कोटा के पति गुमानसिंह का रुपये देकर जालमसिंह को छुड़ाना ४ सिन्धियों की तनखाह के द्रव्य से डरकर अरिसिंह का बहादुरसिंह की पुत्री के विवाह के कारण से कृष्णगढ में निवास करना ५ रावराजा उम्मेदसिंह का महाराज कुमार अजितसिंह के अर्थ राज्य देना और अपना श्रीजित् की पदवी धारण करना ६ सब राजाओं का टीका नामक व्यवहार भेजना और थोड़े साथ सहित श्रीजित् के केदारेश्वर स्थान में निवास करने का उनसठवां ५९ मयूख समाप्त हुआ ॥ ५९ ॥ और आदि से तीन सौ चालीस३४० मयूख हुए ॥

श्रीमान् सब राजाओं के मुकटों में रहेहुए मोगरे के पुष्प संबंधी मकरंद (पुष्प रस) रूप मद्य से मस्त हुए भ्रमरों से शब्दायमान चरण से चिन्ह युक्त किये हैं शत्रुओं के मस्तक जिन्होंने, बुन्दी पुरी रूपी स्त्री के विलासी, चहुवाणों के शिरोमणि, सरस्वती है दायभाग में जिनके अथवा सरस्वती से कर लेनेवाले

श्रीरामसिंहदेवाऽऽज्ञप्तगीर्वाणगीरादिषड् ६ भाषावेशसुभ्रूभुजङ्ग-काव्याऽकूपारकर्णधारवीरमूर्त्तिचक्रिचरणारविन्दचञ्चरीकचारुचम-त्कृतचेतनचारणचक्रचण्डांशुचण्डीदानात्मजामिश्रणसुकविसूर्यमल्ल विहितवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे रावराडुम्मेदसिंहचरित्र समयसमानाधिकरणकोदन्तवर्णनं सप्तमो ७ राशिस्समाप्तः॥ ७ ॥

इतिश्री नीतिनिपुण–बुद्धिविशारद–सज्जनशिरोमणि–हरिभ-क्तिपरायण–धर्ममूर्ति–वीर–वदान्य–सोदाबारहठ–चारणकुलावतंस शापुहराप्रतोलीपात्र–सुयोग्यपितुरवनाड़सिंहस्याऽऽत्मजेन, विदुष्याः शृङ्गारनाम्नजनन्याः प्राप्तप्रसवपालनबालशिक्षोपदेशेन, सुशिक्षितैरा-ज्ञाकारिभिरात्मजैः केसरीसिंह–किशोरसिंह–जोरावरसिंहै-र्विगत–भाव्याधिना, कविकोविदनिजमातुलकविराजश्यामलदासाऽऽप्त–काव्यशिक्षेण, सन्तोषाऽऽदिसद्गुणसम्पन्न-विद्वच्छिरोमणि-परमवै

अर्थात् पूर्ण विद्वान् हाथी पदवीवाले, महाराजाधिराज महारावराजेन्द्र श्री-रामसिंहदेव की आज्ञा से, संस्कृत भाषा आदि छः भाषा रूपी गणिकाओं के पति, काव्य रूपी समुद्र के कैवर्तक (खेवटिए) वीरमूर्ति, विष्णु भगवान् के च-रणारविन्द के भ्रमर, मनोहर चमत्कारिक बुद्धिवाले, चारण गण के सूर्य, चण्डी-दान के पुत्र, मिश्रण (मीसण) शाखा के श्रेष्ठ कवि सूर्यमल्ल के रचे हुए वंशभा-स्कर नामक महाचम्पू के उत्तरायण में रावराजा उम्मेदसिंह के चरित्रके समय के बराबर है अधिकार जिनका ऐसे वृत्तान्तों के वर्णन का सातवां राशि समाप्त हुआ ॥ ७ ॥

श्रीयुतनीतिनिपुण–बुद्धिविशारद–सज्जनशिरोमणि-हरिभक्तिपरायण-धर्म मूर्ति-वीर-उदार-सोदाबारहठ शाखा के चारण कुल के मुकुट शाहपुरा के पोळ पात्र (शाहपुरा के राज द्वार पर नेग 'दस्तूर' लेनेवालों में पात्र) सुयोग्य पिता ओनाड़ (अनड़) सिंह के पुत्र ने, पंडिता शृंगार बाई नामक माता से पाया है जन्म पालन और बालपन की शिक्षा जिसने, श्रेष्ठ शिक्षा पायेहुए आज्ञाकारी पुत्र केशरीसिंह, किशोरसिंह, जोरावरसिंह से मिटगई है आनेवाले समय में होनेवाली मानसिक चिन्ता जिसकी, पण्डित कवि अपने मामा कविराज श्यामलदास से पाई है काव्य शिक्षा जिसने, सन्तोष आदि गुणों से युक्त

ष्णव-रामानुजसम्प्रदायिनः श्रीमदाचार्य-सीतारामाऽऽख्यगुरोरासादितसंस्कृतविद्येन, सूर्यवंशोद्भव-रघुवंशीय-राणोत्त-शाहपुराधिप-राजाधिराजोपटंकिनाहरसिंहवर्म, आर्यदिवाकर-रविकुलशिरोरत्न-रघुवंशीयगुहिलोत्त मेदपाटदेशाऽधिपोदयपुराऽधीश-सज्जनतादिसद्गुणसम्पन्न-महाराणासज्जनसिंहवर्म, तथातदुत्तराधिकारि महाराणा-फतहसिंहवर्म्म, भानुवंशभूषण-राष्ट्रकूटकुलाऽवतंस-मरुधराधिप जोधपुरेश-राजराजेश्वर-महाराज-यशवन्तसिंहवर्म्मभ्यो लब्धाऽतीव दान-मान-स्वर्णरचितपादभूषणाऽऽदिसत्कारेण, तथा तदुत्तराधिकारि-तत्तुल्यप्रीतिपुरःसरप्रतिपालकमरुधराधीशश्रीसरदारसिंहवर्मा-श्रितेन, अधीतविद्यां सफलयितुं प्राप्तावसरेण, विद्वद्भिर्निजमित्रै-र्लब्धसहायोत्साहेन, शाहपुरानिवासिना कविवर-बारहठ-कृष्णसिंहेन विरचितायामुदधिमन्थनीटीकायां सप्तमो राशिः समाप्तः ॥७॥

विद्वानोंके शिरोमणि परमवैष्णव रामानुज सम्प्रदायी श्रीमत् आचार्य सीताराम गुरु से प्राप्त की है संस्कृत विद्या जिसने, सूर्यवंश में पैदाहुए रघुवंशीय राणा वत्त शाहपुरा के पति राजाधिराज पदवीवाले नाहरसिंहवर्मा, और आर्यों के सूर्य सूर्यकुल के शिरोमणि रघुवंशी गुहिल राजा के वंशवाले मेवाड़ देश के पति उदयपुर के स्वामी सज्जनता आदि सद्गुणों की समृद्धिवाले महाराणा सज्जनसिंह वर्मा, तथा उनकी गद्दी पर बैठनेवाले महाराणा फतहसिंह वर्मा, और सूर्यवंश के भूषण राठोड़ कुल के मुकुट मारवाड़ भूमि के पति जोधपुर के स्वामी राजराजेश्वर महाराजाधिराज जशवन्तसिंह वर्मा से पाया है दान, बड़प्पन (पूज्यपन) और पैरों में सुवर्ण के भूषण आदि आदर जिसने, तथा उनके उत्तराधिकारी उनके समान प्रीति पूर्वक प्रतिपालक मरुधराधीश श्रीसरदारसिंह वर्मा का आश्रित, मिलगया है पढ़ी हुई विद्या को सफल करने का समय जिसको, पाया है अपने विद्वान् मित्रों से सहाय और उत्साह जिसने, शाहपुरा के रहनेवाले ऐसे सुकवि बारहठ कृष्णसिंह की रची हुई उदधिमन्थनी नामक टीका में सप्तम राशि समाप्त हुआ ॥७॥